सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

६१

(२५ अप्रैलसे ३० सितम्बर, १९३५)

बोरसद के एक प्लेग-पीड़ित गाँवमें

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

भूमिका

इस खण्डमे जिस अवधि (२५ अप्रैलसे ३० सितम्बर, १९३५)की सामग्री दी जा रही है उसके दौरान राजनीतिक क्षेत्रमे कोई विशेष सरगरमी नही रही। केन्द्रीय विधान-सभामे काग्रेस सरकारी कारवाइयोके प्रति राष्ट्रका विरोध प्रकट करने के लिए जो-कुछ कर रही थी, उसके सिवाय कोई सार्वजनिक प्रवृत्ति नही दिखाई दे रही थी। जवाहरलाल नेहरू जेलमे थे, और "सरकारकी ओरसे ऐसी हठधर्मी पहले कभी" नही की गई थी जैसी उन दिनो "देखने मे आ रही" थी (पृ० २२)। सविनय अवज्ञाका स्थगन भी इस बातका एक कारण था कि "सवत्र निराशा-ही-निराशा छा गई" थी (पृ० ९४)। लेकिन गाधीजी की जोरदार अपीलके परिणामस्वरूप सरकारने जर्मनीकी एक आरोग्यशालामे रोग-शय्यापर पडी अपनी पत्नी कमला नेहरूसे मिलने के लिए जवाहरलाल नेहरूको ३ सितम्बरको बिना शत रिहा कर दिया। सरकारके इस सद्भावनापूर्ण कार्यको कृतज्ञताके भावसे स्वीकार करते हुए अगाथा हैरिसनके नाम अपने पत्रमे गाधीजी ने लिखा कि जवाहरलालकी रिहाई "अन्धकार और अवसादके बीच एक प्रकाश-बिन्दुके समान चमक रही है" (पृ० ४६२)। स्वय गाधीजी उस चतुर्दिक अवसादसे अछूते रहकर ग्राम-सेवामे निमग्न थे। उनकी ऐसी श्रद्धा थी कि "अगर हमारे मनमे सच्चा प्रेम अर्थात् अहिसा है तो सब ठीक ही होगा" (पृ० २२)। वे मात्र राजनीतिक धरातलपर सरकारसे लडने से अधिक महत्त्व आन्तरिक शक्तिके विकासको देते थे। इसलिए जब "पूरा रचनात्मक कायक्रम" लोगोके "सामने पडा हुआ" था, तब वे निराश और किंकर्त्तव्यविमूढ क्यो हो, यह बात उनकी समझमे नही आती थी (पृ० ९४)। यह काय "इतने अधिक श्रमकी अपेक्षा" रखनेवाला और "इतना दुष्कर" था कि अगर गाधीजी का बस चलता तो वे "सभी किस्मका लिखना बन्द करके, अपने-आपको किसी एक गाँवमे खपा" देते "और अपनी सामथ्य-भर वही काम" करते रहते (पृ० ३९७)। विगत कई महीनोसे "ग्रामोद्योग सघका" यह "कार्य सुनिश्चित ढगसे चल रहा" था, लेकिन "उसके सम्बन्धमे बताने को कोई बहुत बडी बात" नही थी (पृ० ९१)। इसके लिए ऐसे समर्पित कार्यकर्त्ताओकी आवश्यकता थी, जो बाधाओको देखकर भागे नही, इतना ही नही, बल्कि दृढताके साथ उनका सामना करे। किन्तु गाधीजी को दिखाई यह दे रहा था कि "हम सबमे क्षात्रवृत्तिकी अत्यधिक कमी है। हमारे मनमे तुरन्त कायरता आ जाती है" (४६८)।

ग्राम-सेवकोके लिए गाधीजी ने जो एक विशेष कठिन शर्त रखी वह यह थी कि उन्हे गॉवोमे अपना पसीना बहाकर अपनी रोटी कमानी चाहिए। "गाँवोकी

ओर जाने का अर्थ" गाधीजी की दृष्टिमे यह था कि "शरीर-श्रमके धर्मको, उसके सारे फलितार्थोके साथ, स्वीकार कर लिया जाये।" उनका विश्वास था कि "शरीर-श्रमके नियमपर चलने से" "अस्तित्वके निमित्त सघर्षके स्थानपर पारस्परिक सेवाकी प्रतिस्पर्धा" और "पाशविक नियम" के स्थानपर "मानवी नियम" की प्रतिष्ठा होगी और इस तरह "समाजमे एक शान्तिमय क्रान्ति पैदा होगी" (पृ० २२६)। एक ग्राम-सेवकने गाधीजी के सामने अपनी परेशानी रखते हुए बताया था कि "अपनी रोटी शरीर-श्रमसे कमाने" के नियमका पालन करने के फलस्वरूप स्वयसेवकोके पास ग्रामवासियोकी अन्य उपयोगी सेवा करने का समय ही नही बच पाता। इसका उत्तर देते हुए उन्होने लिखा कि "बुद्धिपूर्वक किया गया श्रम उच्चसे-उच्च प्रकारकी सेवा है। कारण यह है कि यदि कोई मनुष्य अपने शारीरिक श्रमसे देशकी उपयोगी सम्पत्तिमे वृद्धि करता है तो उससे उत्तम और हो ही क्या सकता है?" उन्होने इस सिद्धान्तके मर्मको आगे समझाते हुए बताया कि "'होना' ही 'करना' है।" "सदा सन्मार्गपर चलकर" सेवक अपनी "सेवाकी सुगन्ध" आसपास फैलायेगे ओर "वह सक्रामक सिद्ध होगी। कालान्तरमे यह सेवा-भावना समस्त भारतमे और फिर अखिल विश्वमे व्याप्त हो जायेगी।" इसलिए "इस सेवामे एकके कल्याणम सबका कल्याण निहित है।" व्यावहारिक दृष्टिकोणसे भी गाधीजी ने समाधानोन्मेषी कार्यकर्त्ताको आश्वस्त किया कि "ये सेवक जब कुशलता प्राप्त कर लेगे, तब आजकी अपेक्षा बहुत कम समयमे वे अपने अन्न-वस्त्रके लायक कमा लेगे, और हरिजन-सेवा तथा किसी दूसरे काममे वे अपनी शक्तिको बिना किसी बाधाके लगा सकेंगे" (पृ० १३५-३६)।

जब अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघका कार्यक्रम गति पकडने लगा तब गाधीजी के सामने हर वर्गके ग्रामीण कारीगरके लिए मानक मजदूरी तय करने की समस्या आ खडी हुई। वर्षोसे वे इस बातको एक आदर्शकी तरह लोगोके सामने रखते आये थे कि हर प्रकारके श्रमको समान रूपसे मूल्यवान मानना चाहिए और उसका पारिश्रमिक भी तदनुसार दिया जाना चाहिए। इसलिए उन्होने आग्रहपूर्वक कहा कि "अब वह समय आ गया है जब सघको उसकी देख-रेखमे किये जानेवाले सभी प्रकारके श्रमके पारिश्रमिकको एक-सा बना देना चाहिए" (पृ० २५१)। उनका विचार था कि "अखिल भारतीय चरखा सघ और अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ-जैसी परोपकारी सस्थाओके लिए इस व्यापारिक नियमका अनुसरण करना ठीक नही है कि सबसे सस्ता खरीदे और सबसे सस्ता बेचे।" क्योकि ग्रामोद्योग सघका उद्देश्य यह नही था कि "गाँवकी चीजे सस्तेसे-सस्तेमे तैयार की जाये", बल्कि यह था कि "जीने के लिए काफी मजदूरीपर बेकार ग्रामवासियोको काम दिया जाये।" सघ जो करना चाहता था वह था "झूठे और मानव-कल्याणका खयाल न करनेवाले अर्थशास्त्रके स्थान पर सच्चे और मानव-हित का खयाल करनेवाले अर्थशास्त्र" का प्रतिष्ठापन। और गाधीजी का कहना था कि यदि हर कारीगरको निर्वाह-योग्य मजदूरी देना "अव्याव-

हारिक दिखाई देता हो तो सबका प्रयत्न उसे व्यावहारिक बनाने का होना चाहिए।" इसे व्यावहारिक नही बनाया जा सकता हो, यह मानने को गाधीजी तैयार नही थे, क्योकि यह एक सत्य था और "सत्य सदा व्यावहारिक होता है।" आवश्यकता सिफ इस बातकी थी कि ग्राहकोको सही स्थिति समझाकर अनुकूल लोकमत तैयार किया जाये (पृ० २६९-७०)। इस प्रस्तावको व्यावहारिक बनाने के लिए सबसे जरूरी कायकर्त्ताओके अन्दर इस बोधका उदय होना था कि "वे अधभूखी अवस्थामे" रहनेवाले "या ठीक भोजन न पानेवाले कारीगरो और मजदूरोके एक विशाल परिवारके ही मामूली सदस्य है" (पृ० ३०८)। गाधीजी ने खरीदारोसे भी यह याद रखने का अनुरोध किया कि "वे उस महान् ट्रस्ट", अर्थात् अखिल भारतीय चरखा सघ, "के सदस्य है, भले ही उनका नाम कागजपर दज न हो।" उन्होने उनसे सदा इस सत्यको ध्यानमे रखने को कहा कि "कत्तिनोका हर तरहसे खयाल रखना उनका धर्म है" (पृ० ३४९)। ग्रामोद्योग कायक्रमकी साथकताके प्रति शकालु और बडे पैमानेके औद्योगीकरणके हिमायती एक समाजवादी मित्रको उत्तर देते हुए उन्होने अपना वह चिर-परिचित वाक्य दुहराया कि "हिन्दुस्तानके सात लाख गाँवोमे फैले हुए ग्रामीण जन-रूपी करोडो जीवित यन्त्रोके विरुद्ध इन जड यन्त्रोको प्रतिद्वन्द्वितामे नही लाना चाहिए" (पृ० ४४९)। वे यन्त्र-मात्रके विरोधी कदापि नही थे। उनका कहना था कि "मनुष्य-मात्रके लाभके लिए विज्ञानके जो आविष्कार है, उन सबको मै अत्यन्त मूल्यवान समझता हूँ।" सच तो यह है कि "सार्वजनिक उपयोगके जो काम मनुष्यके हाथकी मेहनतसे नही हो सकते उनके लिए भारी मशीनोके उपयोग" पर भी उन्हे कोई आपत्ति नही थी, बशर्ते कि उन मशीनोपर "आधिपत्य सरकारका" हो और "उनका उपयोग केवल लोक-कल्याणके लिए" किया जाये (पृ० २००)।

गाधीजी को इस बातकी बडी चिन्ता थी कि जब भारत स्वतन्त्र हो तब उसके पास अपनी एक सम्पक-भाषा हो——ऐसी सम्पर्क-भाषा जो जनसाधारण तथा विशिष्ट वर्गोके बीच भेदकी दीवार न खडी करे। इसलिए उन्होने अन्तर्प्रान्तीय व्यवहारकी भाषाके रूपमे उत्तरके आम लोगो द्वारा बोली जानेवाली हिन्दीकी हिमायत की। २०-२३ अप्रैलको इन्दौरमे सम्पन्न अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन (खण्ड ६०)के बाद सम्पक-भाषाकी समस्या एक ज्वलन्त प्रश्न बन गई। अधिवेशन ने, गाधीजी के शब्दोमे, "दो महत्त्वपूण प्रस्ताव" पास किये थे। इनमे से एक मे हिन्दीकी ऐसी व्यापक परिभाषा की गई थी जिससे उसमे वह भाषा भी शामिल हो जाती थी "जो लिखी तो उर्दू लिपिमे जाती है, पर जिसे मुसलमान और हिन्दू दोनो ही समझ लेते है।" इस प्रस्तावमे यह तथ्य निर्दशित कराया गया था कि "हिन्दी प्रान्तीय भाषाओको नष्ट नही करना चाहती, बल्कि उनकी पूरक बनना चाहती है" (पृ० ३३)।

धर्मान्तरण-जैसी किसी भी चीजको असम्भव मानते हुए उन्होने स्पष्ट शब्दोमे घोषणा की, "जिस प्रकार मै खुद अपना धर्म बदलने की कल्पना नही कर सकता,

उसी प्रकार किसी ईसाई या यहूदीसे अपना धम बदलने को कहने की सोच भी नही सकता। अपने आचरणको अपनी श्रद्धाकी ऊँचाई तक ले जाने मे [ही] मेरी सामर्थ्यकी कसौटी हो रही है " (पृ० ४९४)। स्वदेशी और स्वधर्म के सामान्य सिद्धान्तकी दृष्टिसे देखते हुए गाधीजी को यही प्रतीत होता था कि हर व्यक्तिका धम उसके लिए "काफी अच्छा" है (पृ० ४९३)। इसलिए उन्हे श्रेयस्कर मार्ग यह लगता था कि "बडी-बडी और समृद्ध ईसाई धमप्रचारक सस्थाएँ अपनी प्रवृत्तियाँ केवल मानव-दयासे प्रेरित सेवा-काय तक ही सीमित" रखे और "भारतको या कमसे-कम भारतके भोले-भाले ग्रामीण लोगोको ईसाई बना लेने" के प्रच्छन्न उद्देश्यको त्याग दे, अन्यथा "वे उसके सामाजिक ढाँचेको ध्वस्त कर देगे " (पृ० ४९४)।

गाधीजी की बोरसद-यात्रा समापनपर थी कि तभी क्वेटामे भारी भूकम्प हुआ। जैसा व्यापक और भयकर विनाश हुआ उसे "देखकर मानव-बुद्धि स्तम्भित रह" गई। पलक झपकते पचास हजार लोग जीते-जी जमीदोज हो गये। इस दारुण विपत्तिकी वेलामे भी गाधीजी क्वेटा-वासियोको सहायता और सान्त्वना देने उस तरह वहाँ नही पहुँच सकते थे जिस तरह १९३४ के भूकम्पके बाद बिहार-वासियोकी पुकारपर पहुँचे थे, क्योकि सरदार पटेल और गाधीजी-जैसे लोगोको क्वेटामे प्रवेश करने की अनुमति नही थी। किन्तु गाधीजी यह मानते थे कि कुछ ऐसे भी अवसर होते है जब व्यवहारत सहायता पहुँचाना न पर्याप्त होता है और न सम्भव, जब भयकर विनाश और विध्वस हमे हमारी स्थितिका स्मरण कराते है, हमे प्रार्थनामे प्रवृत्त होने और विनम्र बनने की प्रेरणा देते है तथा आत्म-शुद्धि एव आत्म-निरीक्षणके लिए तत्पर करते है (पृ० १४८)। उनका विश्वास था कि भौतिक विपत्तियाँ व्यक्तियो तथा राष्ट्रो दोनोके लिए दैवी दण्ड-रूप होती है, और "समझदार मनुष्य" को "विनम्र होकर भगवान्का स्मरण करने" की प्रेरणा देती है (पृ० १७२)। किन्तु इसका मतलब यह नही कि ऐसे समयमे प्रार्थना और प्रभु-स्मरण ही मनुष्यके कर्त्तव्यकी इति है। सच तो यह है कि "सच्ची प्रार्थनासे अकर्मण्यता कदापि उत्पन्न नही होती। उससे तो निरन्तर निष्काम कम करने के लिए शक्ति तथा उत्साह उत्पन्न होता है" (पृ० १७२)। लेकिन साथ ही वे यह स्वीकार करते थे कि "जिस प्रयत्नके पीछे ईश्वरका आशीर्वाद न हो, वह कितना ही अच्छा क्यो न हो, निष्फल होता है" (पृ० १४८)।

सेवा-कार्यकी ही तरह, अपने आदर्शोंके आचरणमे भी गाधीजी मानव-प्रयत्नोकी मर्यादासे अवगत थे। उन्हे यह मानने में कोई सकोच नही था कि "साँप, बिच्छू, बाघ और प्लेगके चूहो तथा पिस्सुओसे" उन्हे डर लगता था। किन्तु इसीलिए वे अपने अहिंसाके उच्चादर्शका त्याग करनेवाले नही थे, क्योकि "जीवन एक उच्चाकाक्षा है। उसका ध्येय पूर्णता अर्थात् आत्म-साक्षात्कारके लिए प्रयत्न करना है। अपनी निबलताओ या अपूणताओके कारण हमे अपना आदश नीचा नही करना

चाहिए।" इसलिए एक ओर तो उन्होने महामारी-ग्रस्त बोरसदमे चूहो और पिस्सुओके विनाशकी अनुमति ही नही, इस कार्यको बढावा भी दिया, लेकिन दूसरी ओर पूर्ण अहिंसा और जीव-मात्रकी अनघ्यता तथा बन्धुत्वमे भी अपनी आस्था दुहराई। श्रद्धा और आचरण के बीच इस विरोधको स्वीकार करत हुए, उन्होने विनाशके क्षेत्रको सीमित करने और जीवन तथा प्रेमकी परिधिको विस्तृत करने का प्रयत्न किया। उन्हे असफलता भी अवश्य मिलती रही, किन्तु इसकी चिन्ता उन्हे नही थी, क्योकि उनकी "प्रत्येक असफलता" उन्हे "उस सिद्धान्तके पूर्ण आचरणके अधिकसे अधिक समीप ले जाती थी" (पृ० २०४)।

अपने आदशमे न कोई शिथिलता आने देने ओर न उसका त्याग करने के सकल्पके कारण ही गाधीजी अपने पुत्र हरिलाल गाधीको हृदयसे अपना नही सके और न उनकी पुर्नविवाहकी इच्छाका अनुमोदन कर सके। हरिलाल काफी भटकने के बाद अगस्त १९३४मे गाधीजी के पास लौट आये थे और उन्होने अपनेको सुधारने की भी आशा दिलाई थी। किन्तु अब वे पुर्नविवाह करना चाहते थे, जिस पर गाधीजी की प्रतिक्रिया इन शब्दोमे व्यक्त हुई, "मुझे लगता है कि ऐसा नही हो सकता है कि वह विवाह करके मेरे साथ रहे। उसका विवाह मै सहन तो कर सकता हूँ, लेकिन उसका स्वागत नही कर सकता, उसे पसन्द नही कर सकता" (पृ० ३९)। और जब आगे उन्हे यह भी लगने लगा कि हरिलालने दरअसल अपनेमे कोई सुधार नही किया है तो उन्होने नारणदास गाधीको स्पष्ट शब्दोमे लिखा, "रक्त-सम्बन्ध हमे अनीतिकी ओर प्रवृत्त करे, यह नही होने देना चाहिए। जहाँ जितना अधिक रक्त-सम्बन्ध हो वहा सख्ती भी उतनी ही अधिक बरती जानी चाहिए। ऐसा करके ही हम शुद्ध न्याय कर सकते है" (पृ० २२१)। इस प्रकार पिता-पुत्रके अचिर पुर्नमिलनका दु खद अन्त हुआ। हरिलालकी भटकन एक बार फिर शुरू हो गई, लेकिन जो कोमल भावनाएँ और हषकी अनुभूतिया पिताके रूपमे गाधीजी के अन्दर वष-भर पूर्व जाग्रत हुई थी उन्हे उन्होने पूणत दमित कर दिया और नारणदास गाधीको लिखा, "उसका जो होना होगा सो होगा" (पृ० २६२)।

अपनोकी चूकोके प्रति गाधीजी के असहिष्णु रुखका परिचय हरिलाल गाधीके पुत्र कान्तिलाल गाधीको लिखे इन शब्दोमे भी मिलता है, "कडवे शब्दोके पीछे प्रेम भरा था, यह तू नही देख सका तो यह दोष तेरा है या मेरा? अहिसाका पुजारी होने के नाते मुझे दोष अपना मानना पडता है, किन्तु पिता होने के नाते तेरा मानता हूँ" (पृ० ३७)। इस प्रकार अपने आदशकी अहिंसाका आचरण गाधीजी के लिए एक सतत सघर्ष था। एक प्रश्नकर्त्ताको उन्होने निस्सकोच बताया, "यह बात तो नही है कि क्रोध नही आता। बात यह है कि मै क्रोधको प्रकट नही होने देता। धैर्यके गुणका मै अक्रोधके रूपमे अभ्यास करता रहता हूँ, और साधारणतया उसमे मुझे सफलता भी मिली है" (पृ० ४७)। जान पडता है, सार्वजनिक जीवनमे गाधीजी ने धैयके गुणको पूर्णत सिद्ध कर लिया था, क्योकि

उसी प्रकार किसी ईसाई या यहूदीसे अपना धम बदलने को कहने की सोच भी नही सकता। अपने आचरणको अपनी श्रद्धाकी ऊँचाई तक ले जाने मे [ही] मेरी सामर्थ्यकी कसौटी हो रही है " (पृ० ४९४)। स्वदेशी और स्वधम के सामान्य सिद्धान्तकी दृष्टिसे देखते हुए गाधीजी को यही प्रतीत होता था कि हर व्यक्तिका धर्म उसके लिए "काफी अच्छा" है (पृ० ४९३)। इसलिए उन्हे श्रेयस्कर मार्ग यह लगता था कि "बडी-बडी और समृद्ध ईसाई धर्मप्रचारक सस्थाएँ अपनी प्रवृत्तिया केवल मानव-दयासे प्रेरित सेवा-कार्य तक ही सीमित" रखे और "भारतको या कमसे-कम भारतके भोले-भाले ग्रामीण लोगोको ईसाई बना लेने" के प्रच्छन्न उद्देश्यको त्याग दे, अन्यथा "वे उसके सामाजिक ढाँचेको ध्वस्त कर देगे " (पृ० ४९४)।

गाधीजी की बोरसद-यात्रा समापनपर थी कि तभी क्वेटामे भारी भूकम्प हुआ। जैसा व्यापक और भयकर विनाश हुआ उसे "देखकर मानव-बुद्धि स्तम्भित रह" गई। पलक झपकते पचास हजार लोग जीते-जी जमीदोज हो गये। इस दारुण विपत्तिकी वेलामे भी गाधीजी क्वेटा-वासियोको सहायता और सान्त्वना देने उस तरह वहाँ नही पहुँच सकते थे जिस तरह १९३४ के भूकम्पके बाद बिहार-वासियोकी पुकारपर पहुँचे थे, क्योकि सरदार पटेल और गाधीजी-जैसे लोगोको क्वेटामे प्रवेश करने की अनुमति नही थी। किन्तु गाधीजी यह मानते थे कि कुछ ऐसे भी अवसर होते है जब व्यवहारत सहायता पहुँचाना न पर्याप्त होता है और न सम्भव, जब भयकर विनाश और विध्वस हमे हमारी स्थितिका स्मरण कराते है, हमे प्रार्थनामे प्रवृत्त होने और विनम्र बनने की प्रेरणा देते है तथा आत्म-शुद्धि एव आत्म-निरीक्षणके लिए तत्पर करते है (पृ० १४८)। उनका विश्वास था कि भौतिक विपत्तियाँ व्यक्तियो तथा राष्ट्रो दोनोके लिए दैवी दण्ड-रूप होती है, और "समझदार मनुष्य" को "विनम्र होकर भगवान्का स्मरण करने" की प्रेरणा देती है (पृ० १७२)। किन्तु इसका मतलब यह नही कि ऐसे समयमे प्रार्थना और प्रभु-स्मरण ही मनुष्यके कत्तव्यकी इति है। सच तो यह है कि "सच्ची प्राथनासे अकर्मण्यता कदापि उत्पन्न नही होती। उससे तो निरन्तर निष्काम कर्म करने के लिए शक्ति तथा उत्साह उत्पन्न होता है" (पृ० १७२)। लेकिन साथ ही वे यह स्वीकार करते थे कि "जिस प्रयत्नके पीछे ईश्वरका आशीर्वाद न हो, वह कितना ही अच्छा क्यो न हो, निष्फल होता है" (पृ० १४८)।

सेवा-कार्यकी ही तरह, अपने आदर्शोंके आचरणमे भी गाधीजी मानव-प्रयत्नोकी मर्यादासे अवगत थे। उन्हे यह मानने मे कोई सकोच नही था कि "साँप, बिच्छू, बाघ और प्लेगके चूहो तथा पिस्सुओसे" उन्हे डर लगता था। किन्तु इसीलिए वे अपने अहिसाके उच्चादशका त्याग करनेवाले नही थे, क्योकि "जीवन एक उच्चाकाक्षा है। उसका ध्येय पूर्णता अर्थात् आत्म-साक्षात्कारके लिए प्रयत्न करना है। अपनी निर्बलताओ या अपूर्णताओके कारण हमें अपना आदर्श नीचा नही करना

चाहिए।" इसलिए एक ओर तो उन्होने महामारी-ग्रस्त बोरसदमे चूहो और पिस्सुओके विनाशकी अनुमति ही नही, इस कार्यको बढावा भी दिया, लेकिन दूसरी ओर पूर्ण अहिसा और जीव-मात्रकी अनघ्यता तथा बन्धुत्वमे भी अपनी आस्था दुहराई। श्रद्धा और आचरण के बीच इस विरोधको स्वीकार करते हुए, उन्होने विनाशके क्षेत्रको सीमित करने और जीवन तथा प्रेमकी परिधिको विस्तृत करने का प्रयत्न किया। उन्हे असफलता भी अवश्य मिलती रही, किन्तु इसकी चिन्ता उन्हे नही थी, क्योकि उनकी "प्रत्येक असफलता" उन्हे "उस सिद्धान्तके पूण आचरणके अधिकसे अधिक समीप ले जाती थी" (पृ० २०४)।

अपने आदशमे न कोई शिथिलता आने देने ओर न उसका त्याग करने के सकल्पके कारण ही गाधीजी अपने पुत्र हरिलाल गाधीको हृदयसे अपना नही सके और न उनकी पुनर्विवाहकी इच्छाका अनुमोदन कर सके। हरिलाल काफी भटकने के बाद अगस्त १९३४मे गाधीजी के पास लौट आये थे और उन्होने अपनेको सुधारने की भी आशा दिलाई थी। किन्तु अब वे पुनर्विवाह करना चाहते थे, जिस पर गाधीजी की प्रतिक्रिया इन शब्दोमे व्यक्त हुई, "मुझे लगता है कि ऐसा नही हो सकता है कि वह विवाह करके मेरे साथ रहे। उसका विवाह मै सहन तो कर सकता हूँ, लेकिन उसका स्वागत नही कर सकता, उसे पसन्द नही कर सकता" (पृ० ३९)। और जब आगे उन्हे यह भी लगने लगा कि हरिलालने दरअसल अपनेमे कोई सुधार नही किया है तो उन्होने नारणदास गाधीको स्पष्ट शब्दोमे लिखा, "रक्त-सम्बन्ध हमे अनीतिकी ओर प्रवृत्त करे, यह नही होने देना चाहिए। जहाँ जितना अधिक रक्त-सम्बन्ध हो वहाँ सख्ती भी उतनी ही अधिक बरती जानी चाहिए। ऐसा करके ही हम शुद्ध न्याय कर सकते है" (पृ० २२१)। इस प्रकार पिता-पुत्रके अचिर पुनर्मिलनका दु खद अन्त हुआ। हरिलालकी भटकन एक बार फिर शुरू हो गई, लेकिन जो कोमल भावनाएँ और हषकी अनुभूतियाँ पिताके रूपमे गाधीजी के अन्दर वर्ष-भर पूर्व जाग्रत हुई थी उन्हे उन्होने पूणत दमित कर दिया और नारणदास गाधीको लिखा, "उसका जो होना होगा सो होगा" (पृ० २६२)।

अपनोकी चूकोके प्रति गाधीजी के असहिष्णु रुखका परिचय हरिलाल गाधीके पुत्र कान्तिलाल गाधीको लिखे इन शब्दोमे भी मिलता है, "कडवे शब्दोके पीछे प्रेम भरा था, यह तू नही देख सका तो यह दोष तेरा है या मेरा? अहिसाका पुजारी होने के नाते मुझे दोष अपना मानना पडता है, किन्तु पिता होने के नाते तेरा मानता हूँ" (पृ० ३७)। इस प्रकार अपने आदर्शकी अहिंसाका आचरण गाधीजी के लिए एक सतत सघर्ष था। एक प्रश्नकर्त्ताको उन्होने निस्सकोच बताया, "यह बात तो नही है कि क्रोध नही आता। बात यह है कि मै क्रोधको प्रकट नही होने देता। धैर्यके गुणका मै अक्रोधके रूपमे अभ्यास करता रहता हूँ, और साधारणतया उसमे मुझे सफलता भी मिली है" (पृ० ४७)। जान पडता है, सार्वजनिक जीवनमे गाधीजी ने धैर्यके गुणको पूर्णत सिद्ध कर लिया था, क्योकि

सम्भवत अपने अनुभवके आधारपर ही उन्होने प्रोफेसर मलकानीको निम्न सुझाव दिया होगा, "तुमको जब तब अनेक मालिकोसे मिलनेवाली निराशा और झिड़कियोके बीच भी अपनी शान्ति कायम रखनी होगी और विनोदशीलता बनाये रखनी पडेगी। फटकारे सुननी-सहनी पडेगी और उसपर भी कहना पडेगा 'धन्यवाद, श्रीमान्!'" (पृ० ३५३)।

इस खण्डसे सम्बन्धित अवधिमे गाधीजी ने जो एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया वह उनके पूर्ण ब्रह्मचर्यके आदर्शके विषयमे था। भारतीय परम्परामे पत्नीके अतिरिक्त किसी भी स्त्रीके साथ पुरुषका सम्पर्क आपत्तिजनक माना जाता रहा है। किन्तु गाधीजी "ऐसे ब्रह्मचर्यमे विश्वास नही" करते थे "जिसके निर्वाहके लिए स्त्रीका पुरुषके स्पर्शसे और पुरुषका स्त्रीके स्पर्शसे बराबर बचते रहना आवश्यक हो।" इसलिए आश्रमकी वयस्क लडकियोके कन्धोपर हाथ रखकर घूमने मे उन्हे कोई दोष दिखाई नही देता था। किन्तु जब उन्हे मालूम हुआ कि आश्रमका "एक तेजस्वी छात्र एकान्तमे एक लडकीके साथ", जो उसके प्रभावमे थी, "तरह-तरहका अमर्यादित व्यवहार करता" था तब वे विचारमे पड गये, और अन्तमे उन्होने अपनी इस आदतको छोड दिया, क्योकि अपने आचरणके समर्थनके लिए कोई इस चीजका एक बहानेकी तरह दुरुपयोग भी कर सकता था। अपने इस निर्णयका स्पष्टीकरण देते हुए गाधीजी ने लिखा, "मेरे हर कामपर हजारो स्त्री-पुरुषोकी निगाह लगी रहती है, क्योकि मै एक ऐसा प्रयोग कर रहा हूँ जिसके लिए लगातार चौकसी रखना जरूरी है। मुझे ऐसा काम करने से बचना चाहिए जिसका औचित्य सिद्ध करने के लिए दलील देने की जरूरत पडे" (पृ० ४३७)। इस विषयको लेकर आगे गाधीजी के मनमे काफी ऊहापोह चलता रहा।

गाधीजी का ज्ञान और कर्मका समन्वय इतना अधिक मौलिक था कि "या तो यह सही है या वह"—इस प्रकारकी विभेदकारी बुद्धिकी पकडमे वह आता ही नही था। जगतमे फैले पापकी समस्याकी चर्चाके दौरान गाधीजी को निरुत्तर करने को सचेष्ट एक वेदान्तीको उन्होने "ग्रामीणका"-सा उत्तर देते हुए कहा, "जगत्मे प्रकाश है तो अन्धकार भी है। इसी तरह जहाँ पुण्य है, वहाँ पाप होगा ही।" किन्तु पाप और पुण्य-जैसे भेद तो मनुष्यकी सीमित बुद्धि करती है। "ईश्वरके आगे तो पाप और पुण्य-जैसी कोई चीज ही नही है।" वेदान्तकी यह व्याख्या भी कि "जगत् मायारूप है" गाधीजी के अनुसार, "अपूर्ण मानवकी तोतली वाणीमे ही किया गया निरूपण है।" वे ऐसी बातोमे पडते ही नही थे। उनका कहना था, "मै तो, मेरे आगे जो कर्त्तव्य है, उसे करके ही सन्तोष मानता हूँ। जो-कुछ है या रहा है, वह क्यो और कैसे, इन सब प्रश्नोकी चिन्तामे मै क्यो पडू?" मनकी ऐसी वृत्तिका आधार उनकी यह श्रद्धा थी कि "मनुष्य जो-कुछ अच्छा काम करता है, उसमे ईश्वर निरन्तर उसके साथ रहता है।" अपनी मनोवृत्तिकी इस व्याख्याको भी गाधीजी ने "ग्रामवासीका ही निरूपण" बताया (पृ० ४२३-२४)। और यह श्रद्धा कहाँसे प्राप्त होती है? गाधीजी ने इसका समाधान करते हुए लिखा, "श्रद्धा बुद्धिकी पकडमे आनेवाली चीज नही है, वह मन स्थिति है जिसतक हमे उठना, विकास करना होता है। और यह विकास अन्तरसे प्रस्फुटित होता है" (पृ० ३१)।

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित सस्थाओ, व्यक्तियो, पुस्तकोके प्रकाशको तथा पत्र-पत्रिकाओके आभारी है

सस्थाएँ साबरमती आश्रम सरक्षक तथा स्मारक न्यास एव सग्रहालय (साबरमती आश्रम प्रिजर्वेशन ऐण्ड मेमोरियल ट्रस्ट), नवजीवन न्यास तथा गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद, भारत कला-भवन, वाराणसी, आन्ध्र प्रदेश सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, गाधी स्मारक निधि और सग्रहालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

व्यक्ति राजकुमारी अमृतकौर, शिमला, श्री आनन्द टी० हिंगोरानी, इलाहाबाद, श्रीमती एफ० मेरी बार, श्री एल० आर० डूचा, हैदराबाद, श्रीमती एस० अम्बुजम्माल, मद्रास, श्री क० मा० मुशी, बम्बई, श्री कान्तिलाल गाधी, बम्बई, श्री घनश्यामदास बिडला, कलकत्ता, श्री जयरामदास दौलतराम, नई दिल्ली, श्री जी० एन० कानिटकर, पूना, श्री जी० सीताराम शास्त्री, गुटूर, श्रीमती तहमीना खम्भाता, बम्बई, श्री नारणदास गाधी, राजकोट, श्री नारायण देसाई, वाराणसी, श्री नारायण जेठालाल सम्पत, अहमदाबाद, श्री परशुराम मेहरोत्रा, नई दिल्ली, श्री परीक्षितलाल ल० मजमूदार, अहमदाबाद, श्री पुरुषोत्तम एल० बाविशी, ग्वालियर, श्री प्यारेलाल नैयर, नई दिल्ली, श्री प्रभुदास गाधी, राजकोट, श्रीमती प्रेमाबहन कटक, सासवड, श्री बनारसीलाल बजाज, वाराणसी, श्री भगवानजी ए० मेहता, राजकोट, श्री भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या, वर्धा, श्रीमती मनुबहन मशरूवाला, बम्बई, श्री महेश पट्टणी, बम्बई, श्रीमती मीराबहन, आस्ट्रिया, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, पटना, श्री रामनारायण एन० पाठक, अहमदाबाद, श्री रामस्वामी अय्यगार, श्री लालचन्द जे० वोरा, श्रीमती लीलावती आसर, बम्बई, श्रीमती वनमाला देसाई, नई दिल्ली, श्रीमती वसुमती पण्डित, सूरत, श्री वालजी गो० देसाई, पूना, श्रीमती विजयाबहन पचोली, सनोसरा, श्री शान्तिकुमार मोरारजी, बम्बई, श्री शिवाभाई जी० पटेल, बोचासण, श्री श्रीपाद दा० सातवलेकर, पार्डी तथा श्रीमती सुशीला गाधी, बम्बई।

पत्र-पत्रिकाएँ 'अमतबाजार पत्रिका', 'गुजराती', 'बॉम्बे क्रॉनिकल', 'लीडर', 'वीणा' (श्रद्धाजलि अक), 'हरिजन', 'हरिजनबन्धु', 'हिन्दुस्तान टाइम्स' और 'हिन्दू'।

पुस्तके 'गाधी ऐण्ड द अमेरिकन सीन', 'पाँचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद', 'बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने', 'बापुना पत्रो – ४ मणिबहेन पटेलने', 'बापुना पत्रो – ६ ग० स्व० गगाबहेनने', 'बापुनी प्रसादी', 'बापूकी छायामे मेरे जीवनके सोलह वप १९३२-४८', 'बापूज लेटस टु मीरा' एव 'महात्मा गाधी ओर जबलपुर'।

अनुसन्धान व सन्दभ-सम्बन्धी सुविधाओके लिए अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी पुस्तकालय, इण्डियन कौसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयस पुस्तकालय, सूचना एव प्रसारण मन्त्रालयका अनुसन्धान और सन्दर्भ विभाग (रिसच ऐण्ड रेफरेस डिवी-जन), राष्ट्रीय अभिलेखागार और प्यारेलाल, नई दिल्ली, हमारे धन्यवादके पात्र है। प्रलेखोकी फोटो-नकल तैयार करने मे मदद देने के लिए हम सूचना एव प्रसारण मन्त्रालयके फोटो-विभाग (नई दिल्ली)के आभारी है।

पाठकोको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमे गाधीजी के स्वाक्षरोमे मिली है, उसे अविकल रूपमे दिया गया है। किन्तु दूसरो द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमे हिज्जोकी स्पष्ट भूलोको सुधारकर दिया गया है।

अग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करने मे अनुवादको मूलके समीप रखने का पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनाने का भी पूरा ध्यान रखा गया है। छापेकी स्पष्ट भूले सुधारने के बाद अनुवाद किया गया है, और मूलमे शब्दोके सक्षिप्त रूप यथासम्भव पूरे करके दिये गये है। नामोको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखने की नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोके उच्चारण मे सशय था उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गाधीजी ने अपने गुजराती लेखोमे लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठको मे दी गई सामग्री सम्पादकीय है। गाधीजी ने किसी लेख, भाषण आदिका जो अश मूल रूपमे उद्धृत किया है, वह हाशिया छोडकर गहरी स्याहीमे छापा गया है, लेकिन यदि कोई ऐसा अश उन्होने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोडकर साधारण टाइप मे छापा गया है। भाषणकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गाधीजी के कहे हुए नही है, बिना हाशिया छोडे गहरी स्याहीमे छापे गये है। भाषण और भेट की रिपोर्टोके उन अशोमे, जो गाधीजी के नही है, कुछ परिवतन किया गया है और कही-कही कुछ छोड भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि जहाँ उपलब्ध है वहाँ दाये कोनेमे ऊपर दे दी गई है। परन्तु जहा वह उपलब्ध नही है वहाँ उसकी पूर्ति अनुमानसे चौकोर कोष्ठकोमे की गई है, और आवश्यक होनेपर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोमे केवल मास या वर्षका उल्लेख है उन्हे आवश्यकतानुसार मास या वर्षके अन्तमे रखा गया है। शीर्षकके अन्तमे साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशनकी है। गाधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहा ऐसा सम्भव नही हुआ, वहाँ प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये है।

इस ग्रथमालामे प्रकाशित प्रथम खडका जहा-जहाँ उल्लेख किया गया है वह जून १९७० का सस्करण है।

साधन-सूत्रोमे 'एस० एन०' सकेत साबरमती सग्रहालय, अहमदाबादमे उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' गाधी स्मारक निधि और सग्रहालय, नई दिल्लीमे उपलब्ध कागज-पत्रोका, 'एम० एम० यू०' मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिटका, 'एस० जी०' सेवाग्राममे सुरक्षित सामग्रीका और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गाधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाधी) द्वारा सगृहीत पत्रोका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमिका परिचय देनेके लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट भी दिये गये है। अन्तमे साधन-सूत्रोकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई है।

विषय-सूची

१ पत्र रा० रं० दिवाकरको

२५ अप्रैल, १९३५

हाँ, यदि हम अहिंसाकी कला सीखना चाहते है, तो हमे कडेसे-कडे आदेशोको[1] भी मानना पडेगा। और इसीलिए हमे प्रफुल्लित मन और विवेकशीलताके साथ उनको मानना पडेगा।

[अग्रेजीसे]
महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई

२ पत्र अगाथा हैरिसनको

वर्धा
२५ अप्रैल, १९३५

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा पत्र मिला। 'हरिजन'की अतिरिक्त प्रतियाँ तुम्हे भेज दी जायेगी। लन्दनके दक्षिण-पूवमे हुई सभाका तुम्हारा वणन मनोरजक है।

मुझसे तुम दूसरी आत्मकथा लिखनेकी उम्मीद मत रखो, हाँ काफी लम्बे अर्सेके लिए मुझे जेल भिजवा दो और वहा बैठकर उसे लिखनेकी आवश्यक अनुमति भी दिला दो तो दूसरी बात है। सामग्रीका सकलन तथा प्रकाशन अवश्य ही किया जा सकता है। महादेव इस कामको सबसे अच्छी तरह कर सकता है। लेकिन उसपर कामका बोझ बहुत अधिक है। फिर भी मै देखूगा कि क्या-कुछ करना सम्भव है।

उम्मीद है कि एन्ड्रयूज अपनी बहनोके पास पहुँच गये होगे। हा, यह अच्छा ही है कि वे वहा दो सप्ताहके लिए रुकनेकी सोचते थे। उनके तारके अनुसार, वे इस पत्रके तुम्हारे पास पहुँचनेके पहले ही रवाना हो चुके होगे। अगर वही हो, तो उनसे कह देना कि वे चाहे तो कुछ समय और वहा रुक सकते है। फिलहाल मैंने अपने-आपको खुलेमे जीवन बितानेके लिए राजी कर लिया है।

मीरा सुबहसे लेकर शामको काफी देरतक बगीचेके काममे ही खोई रहती है। अभी कुछ समयतक उससे पत्रकी अपेक्षा मत रखना। देख ही रही हो कि हम ग्रामवासी बननेकी कोशिश कर रहे है, लेकिन अभी इस लक्ष्यसे बहुत दूर है। हम सबके बीच वही एक ऐसी है जो जिस कामको भी लेती है, उसमे प्राणपणसे जुट जाती है।

१ जिलाधीशके आदेशसे अकोला-जिलेमें उनका प्रवेश वर्जित कर दिया गया था।

मैं जान-बूझकर एन्ड्रूज़की कुछ भी नही लिख रहा हूँ, क्योकि मै सोचता हूँ कि इस पत्रके तुम्हे प्राप्त होनेसे पूव ही वे रवाना हो चुके होगे।

सस्नेह,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४८९) से।

३. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
२६ अप्रैल, १९३५

चि० मेरी,

अगर तुमने मुझसे कह दिया होता कि कितनी राशि भेजनी है तो उतनी मै तुम्हे भेज चुका होता। लेकिन वहा तुम मित्रोके बीच ही रह रही हो। बिल आने दो, हर हालतमे उनका भुगतान कर दिया जायेगा। अगर तुम चाहती हो कि मै रुपये भेज दू तो लिख देना।[1]

मैंने अपने तारमे तुम्हे लिखा था कि मै बडी आसानीसे बम्बई या नागपुरमे तुम्हारी जॉचका प्रबन्ध करा सकता हूँ। मेरा खयाल है कि वर्धामे भी उसकी मशीन है। लेकिन अगर वहॉके मित्रोकी सलाह कुछ दूसरी हो, तो उसीपर अमल करना।

हम सबको डकनसे[2] मिलकर खुशी हुई। वह अधिक स्वस्थ नही दिखाई देता। वह यहॉ दो दिन रुकेगा।

चन्द्रा स्वार्थी है। वह ऐसे फशपर चलना पसन्द करती है जिसपर फिसलनेका खतरा ही न हो। और उसको यह देखनेमे बडा मजा आयेगा कि मै फिसलकर फशपर गिरूँ और मेरे माथेपर गूमडा भी पड जाये। उससे कह देना मै उसकी किसी चालमे आनेवाला नही।

सस्नेह,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०३६) से। सी० डब्ल्यू० ३३६६ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१ एफ० मेरी बार अस्वस्थ हो गई थी। उनके इलाजका सारा खर्च गांधीजी उठा रहे थे।

२ डंकन ग्रीनलीज।

४. पत्र : अमृतकौरको

२६ अप्रैल, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम जितनी जल्दी शिमला चली जाओ, उतना ही अच्छा। तुम जो भी कर सको, वहीसे करना। अपनी मर्यादा जान लेना अच्छा रहता है और स्पष्ट ही तुम दोनोको जलवायु-परिवतनकी जरूरत भी है।

तुम्हारा सूत जरूर इस्तेमाल किया जायेगा। इस गतिसे तुम्हे अभी कई महीने तक सूत कातना होगा, तब जाकर बा को एक साडी और मुझे एक कटि-वस्त्र मिल पायेगा। लेकिन वह इस समय सोचनेकी बात नही है। वह सब तो यहाँ तुम्हारे दूसरी बारके प्रशिक्षणके बाद ही होगा। बडे खेदकी बात है कि सारे जालन्धरमे तुम्हे ऐसा कोई व्यक्ति नही मिल सका जो इसकी सभी विधियाँ जानता हो। इसपर गौर करो तो लगता है कि तथाकथित सुसस्कृत वर्गोंमे कताईके कामकी प्रगति बहुत ही कम हुई है।

दलीपसिंह जब हरिजनोके बीच जमकर काम करने लगेगा, तब देखेगा कि उनके अन्दर जीविकोपाजनका कौशल तो पर्याप्त है, लेकिन एक श्रमिकके नाते उन्हे उतनी जल्दी काम नही मिलता जितनी जल्दी दूसरोको, और दस्तकारोके रूपमे उनको दस्तकारीकी अपनी तैयार वस्तुओके लिए खरीदार ही नही मिलते। इसमे शक नही कि चमडा कमानेके हरिजनोके तरीकेमे सुधार किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। लेकिन यह तभी होगा जब वह जमकर काम करने लगेगा। उसको हमारे सगठनके एक प्रतिनिधिके रूपमे काय करनेकी जरूरत नही है। वह स्वतन्त्र रूपसे अपना काय कर सकता है, और अपनी आवश्यकतानुसार सभी तकनीकी सहायता हमसे, हमारी सामर्थ्यके अनुसार, पा सकता है।

वर्षाने इन्दौरमे हमारे काममे बाधा तो उत्पन्न की थी, पर अधिक नही। सहायक कायक्रमके रूपमे आयोजित ग्राम-शिल्पी प्रदशनीको इससे हानि पहुँची। महिलाओ की सभा भी बडे अच्छे ढगसे सम्पन्न हो गई। हजारो महिलाएँ उसमे सम्मिलित होने आईं, अधिकाश शायद अपने जीवनमे पहली बार इस प्रकारके आयोजनमें सम्मिलित हुई थीं।

सस्नेह,

तुम्हारा,
बापू

[पुनश्च]

पत्र लौटा रहा हूँ।

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३०) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३३९ से भी

५ पत्र : नारणदास गाधीको

२६ अप्रैल, १९३५

चि० नारणदास,

इसके साथ मैथ्यूका पत्र है। मैंने उसे लिखा है कि उसे फिलहाल तो ६५ रुपयेकी आशा न रखनी चाहिए। मैंने जितना कहा है उससे ज्यादा नही दिया जा सकता। और अभी तो उसे यहाँ आकर मजदूरकी तरह ही काम करना होगा। उसमे वह योग्य सिद्ध हुआ और परिस्थितिया अनुकूल हुई तो विचार किया जायेगा। यह भी कहा है कि यदि यहा उसका कोई पैसा बाकी हुआ तो वह उसे भेज दिया जायेगा अन्यथा रेल-भाडेका पैसा भी उसे वहीसे जुटाना होगा।

एक लाख रुपयेका इनाम किसीको दिया नही गया, किन्तु हम जैसा चाहते है वैसा चरखा मिला तो यह इनाम दिया जा सकता है। निणयकी नकल अभी मेरे पास नही आई। उसमे मुख्य मुद्दे तीन है इसे 'हैंडी' नही कहा जा सकता। 'हैंडी' तो उसे ही कह सकते है जो इतना छोटा हो कि गावके घरोमे आसानीसे बैठाया जा सके, और जिसे रोज उठाकर यहाँ-वहाँ रखा जा सके। फिर, यह ऐसा है कि १५० रुपयेमे नही बन सकता और यह सवाल भी है कि क्या समय-समयपर उसकी मरम्मत करनी होगी? और क्या मरम्मत करवानेका खच प्रतिवष उसकी कीमतके ५ प्रतिशतसे भी अधिक होगा? विनोबा और काकासाहबने इस [यन्त्र]के खिलाफ विशेष आपत्तिया उठाई है उनकी नकल मै इसके साथ भेज रहा हूँ। यदि केशू[1] उन दोषोको दूर कर सके तो करे। कालेका यन्त्र मेरे पास नही है। वह अहमदाबाद भेजा गया था। मैंने उसे वापस मगवाया है। लेकिन शायद वापस नही आयेगा और इसलिए मै उसे नही देख पाऊँगा। केशू वहाँ रहकर अपना प्रयोग करता रहे, यह अच्छा है। तुम्हारे ही पास रहे। प्रयोगोमे होनेवाले खचकी सीमा बाँध ले। यदि वह मेरे पास आना चाहता हो तो अवश्य आ जाये। किन्तु मै उसे ज्यादा न बता सकूगा और न इस काममे उसका कोई मागदशन कर सकूगा। इस प्रयोगके बारेमे कहनेके लिए और कुछ नही रह जाता। उसका प्रयोग एक लाखके इनामके योग्य न हो तो भी वह जिन सुधारो की खोज करेगा वे तो हमारे लिए उपयोगी होगे ही।

१ केशव गांधी, मगनलाल गांधीके पुत्र।

पूनियाँ बनानेका यन्त्र भी यदि सुसम्पूर्ण हो गया हो तो यह भी बहुत अच्छी बात है। इस यन्त्रमे उसने कहाँतक प्रगति की है, इसका वर्णन वह मुझे विस्तारसे लिख भेजे। इस विषयपर मुझे जो कहना था वह सब मैने यही कह दिया है इसलिए अब मै उसे अलगसे पत्र नही लिख रहा हूँ।

शालाके विषयमे अब तुम्हे जो भी व्यवस्था करनी हो सो करना। यदि शाला हमारे कामके लिए उपयोगी टेक्निकल इस्टीट्यूट बन जाये तो यह उत्तम होगा। भाषाका ज्ञान भिन्न दृष्टिकोणसे दिया जाना चाहिए। अभी वह साहित्यकी दृष्टिसे दिया जाता है। हम तो यह शिक्षा भाषा सिखानेकी हदतक ही दे। भाषाओमे गुजराती, हिन्दी और अग्रेजी ही रखे। इनके साथ यदि सरल सस्कृत भी रख दी जाये तो पर्याप्त है। उर्दू लिपि सिखानी चाहिए। ये सब विषय आसान ढग से सिखाये जाने चाहिए। विद्यार्थियोको उद्योगका शिक्षण देते हुए इतना किया जा सकता है। और उद्योग ऐसा होना चाहिए कि जिनसे बालक अर्थोपाजन कर सके। फीस न रखी जाये। फीसके बजाय बालक जो उद्योग करे वही उनकी फीस मानी जाये। एक निश्चत सीमाके बाद अपने उद्योग से वे जो-कुछ उत्पादन करे वह विद्यार्थियोका माना जाना चाहिए। फीसमे सब खर्चोंका समावेश होना चाहिए।

ये सारे परिवतन तुम बिना किसी आडम्बरके या घोषणाके धीरे-धीरे कर सकते हो। सम्भव हो तो शिक्षक और कायकर्त्ता वही ढूढ निकालो। कोई ज्यादा वेतन लेनेवाला न हो। कुसुम,[1] लीलावती[2] आदि जो भी लोग सीखकर तैयार हो गये है वे ही तुम्हारे कार्यकर्त्ता है। केशू इसमे यदि तुम्हारी मदद करे तो क्या कहना! इस सुझावपर विचार करना। मेरे साथ और विचार-विमर्श करना हो तो करना।

टाइटसके[3] कामके निरीक्षणकी बात जल्दी निपटा देना।

[पुनश्च]

बापूके आशीर्वाद

इसके साथ यन्त्र-चरखाके विषयमे विनोबाकी राय भेज रहा हूँ। रघुनाथ शास्त्री को लिख रहा हूँ।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४३९ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१ कुसुम गांधी।
२ लीलावती आसर।
३ आश्रम दुग्धशालाके प्रबन्धक, टी० टाइटस

६ पत्र : बलवर्तसिंहको

[२६ अप्रैल, १९३५के पश्चात्][1]

चि० बलवर्तसिंह,

मैंने तेहकीकात की। तुमारी बात सही है। मुझको तो बिना पूछे हुए जो खबर मिली उससे दुःख हुआ। अब महादेवको पूछने पर पता चलता है कि कातिने समजाया था। यहासे जानेके पहले तुमने कह रखा था? इतना तो अभी भी है कि वे खानेको तैयार तो थे ही।

बापु

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७५) से।

७ चर्चा : जयकृष्ण भणसालीसे[2]

[२७ अप्रैल, १९३५ के पूर्व]

गांधीजी : बोलो, कल तुमने कितना सूत काता?

भणसाली : जरा भी नहीं, मुझे दुःख है।

गा० : पर, मेरा तो ऐसा खयाल था कि तुम थोडा-थोडा कातने लगे हो?

भ० : हाँ, उस दिन पचासेक गज मुश्किलसे काता होगा। बस।

गा० : तुम मेरे लिए एक कटि-वस्त्र बना दो तो कितना अच्छा हो! अगर एक जोडी बना दो तो मुझे बहुत खुशी होगी, लेकिन एकसे भी काम चल जायेगा।

भ० : यह मेरा परम सौभाग्य होगा कि मैं आपके कटि-वस्त्रके लिए सूत कात सकूं। पर आप मेरी मनःस्थिति जानते ही हैं।

दूसरे दिन फिर इसी विषयपर बातें हुईं। बालोचित भोलेपनके साथ भणसालीजी ने गांधीजी से पूछा, "आप कटि-वस्त्र नहीं चाहते हैं, बापू। मैं समझ गया, आप तो मुझसे कुछ काम कराना चाहते हैं। है न यही बात?"

१ बलवन्तसिंह इस तारीखको मगनवाड़ी छोड़ चुके थे।

२ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत।

गा० तुम्हारा खयाल ठीक है। पर तुम्हे जब काम करना ही है, तो फिर मेरे लिए यह काम क्यो न करो ?

भ० मुझे काम करना ही है तो मुझसे आप कोई दूसरा काम क्यो नहीं लेते ? मुझमें वह पात्रता ही कहाँ कि आपके प्रीत्यर्थ मै यह पवित्र काम कर सकू।

गा० पर इसका मुझे विश्वास है कि मै जिनके काते हुए सूतका कपडा पहनता हूँ, वे तुमसे किसी भी कदर अधिक पवित्र नही है।

भ० नहीं बापू। मै तो तुच्छातितुच्छ हूँ, उनके चरणोकी धूलसे भी तुच्छ हूँ मै।[1]

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २७-४-१९३५

८ बढता हुआ दुराचार ?

सनातन-धम कॉलेज, लाहौरके प्रिसिपल लिखते है

इसके साथ मै जो कतरन और विज्ञप्तियाँ वगैरा भेज रहा हूँ उन्हे देखनेकी आपसे प्रार्थना करता हूँ। आपको सारी बातका पता इन कागजोसे ही लग जायेगा। यहाँ पजाबमें युवक हितकारी-सघ बहुत उपयोगी काम कर रहा है। विद्वत्-समाज एव अधिकारी-वर्गका इसकी ओर ध्यान आकृष्ट हुआ है, और बालकोके प्रबुद्ध माता-पिताआन भी सघमें दिलचस्पी दिखाई है। बिहारके पण्डित सीतारामदासजी इस आन्दोलनके प्रेरणा स्रोत है, इस आन्दोलनके प्रश्रयदाताओमें यहाँके अनेक प्रतिष्ठित सज्जनोके नाम गिनाये जा सकते है।

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि कोमल वयके बालकोको फँसानेका यह दुराचार भारतके दूसरे भागोकी अपेक्षा इधर पजाब और उत्तर-पश्चिमी सीमा-प्रान्तमें ज्यादा है।

क्या आप कृपा कर 'हरिजन' अथवा किसी दूसरे अखबारमें लेख या पत्र लिखकर इस बुराईकी तरफ देशका ध्यान आकर्षित करेंगे ?

१ इसके अतमें महादेव देसाई लिखते है "इसके दूसरे दिन काकासाहब जैसे पुराने साथियोंने प्रयत्न किया। पर भणसाली बराबर अपनी अयोग्यता बताते रहे। काकासाहबने कहा, 'मान लो कि बापू एक गिलास पानी लानेके लिए किसीसे कहें और हम सबके-सब उनसे यह कहने लगें कि बापू, हमें खेद है, हम अपवित्र मनुष्य आपकी कोई सेवा करने योग्य नही, तो फिर बापूका क्या हाल होगा ?' काकासाहबका यह निशाना सीधा बैठ गया। भणसालीने लिखकर दिया (क्योंकि वे बोलते केवल बापूसे ही हैं) 'ठीक है, मैं काता करूँगा। भूल ही करनी है तो ऐसी क्यों न करूँ जिसमें कोई जोखिम न हो।' और अब वे नियमसे कात रहे हैं।"

इस अत्यन्त नाजुक प्रश्नके सम्बन्धमे, बहुत दिन हुए, युवक-सघके मन्त्री ने मुझे लिखा था। उनका पत्र आनेपर मैने डॉ० गोपीचन्दके[1] साथ पत्र-व्यवहार शुरू किया। और उनसे यह मालूम हुआ कि सघके मन्त्रीने जो बाते अपने पत्रमे लिखी है वे सब सच्ची है। लेकिन मुझे यह स्पष्ट नही सूझ रहा था कि इस प्रश्नकी 'हरिजन' या किसी दूसरे पत्रमे चर्चा करूँ या नही। इस दुराचारका मुझे पता था, मगर मुझे इस बातका विश्वास नही था कि अखबारोमे इसकी चर्चा करनेसे कोई लाभ हो सकेगा या नही। विश्वास अब भी नही हे। किन्तु कॉलेजके प्रिसिपल साहबने जो प्रार्थना की है उसकी मै अवहेलना नही करना चाहता।

यह दुराचार नया नही है। यह बहुत दूर-दूर तक फैला हुआ है। चूकि उसे गुप्त रखा जाता है, इसलिए वह आसानीसे पकडमे नही आ सकता। जहाँ विलासपूण जीवन होगा वहाँ यह दुराचार होगा। प्रिसिपल साहबके बताये हुए किस्सेसे तो यह प्रकट होता है कि अध्यापक ही अपने विद्यार्थियोको भ्रष्ट करनेके दोषी है। बाड जब खुद ही खेतको चर जाये तो फिर रखवालीकी आशा किससे करे? बाइबिलमे कहा है कि नमक जब खुद अलोना हो जाये तब कौन-सी चीज उसे नमकीन बना सकती है?

यह प्रश्न ऐसा है कि इसे न तो कोई जाँच-कमेटी हल कर सकती है, न सरकार ही। यह तो एक नैतिक सुधारका काम है। माता-पिताओके दिलमे अपने उत्तरदायित्वका भाव पैदा करना चाहिए। विद्यार्थियोको शुद्ध-स्वच्छ रहन-सहनके घनिष्ठ सम्पकमे लाना चाहिए। सदाचार और निर्विकार जीवन ही सच्ची शिक्षाका आधार-स्तम्भ है, इस विचारका गम्भीरताके साथ प्रचार करना चाहिए। शिक्षण-सस्थाओके न्यासियोको अध्यापकोके चुनावमे बहुत ही सावधानी बरतनी चाहिए, और अध्यापकोको चुननेके बाद भी उनके आचरणका ध्यान रखा जाना चाहिए। मैने तो थोडे-से उपाय बतलाये। इन उपायोके सहारे यह भयकर दुराचार निर्मूल न हो तो कमसे-कम काबूमे तो आ ही सकता है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २७-४-१९३५

1. डॉ० गोपीचन्द भार्गव, पंजाबके काग्रेसी नेता और बादमें मत्री।

९ पत्र जी० वी० गुरजलेको

वर्धा

२७ अप्रैल, १९३५

प्रिय गुरजले,[१]

अपनी पत्नीसे कुछ गोपनीय मत रखो। भली-भाति समझ लो कि उसके प्रति वफादारी रखना ही तुम्हारा सबसे अचूक कवच है। तुम अवश्य विजयी होगे।

तुम्हारा,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३८१) से।

१० पत्र - जमनालाल बजाजको

२७ अप्रैल, १९३५

चि० जमनालाल,

कमलनयन[२] यहाँसे इलाहाबादकी ओर रवाना हुआ है। मैने [३]को लिखा है कि अगर वह यहाँ आ जाये तो अच्छा हो। सम्बन्ध जुडनेके पहले मै उससे मिल लू। रामकृष्ण[४] मेरे साथ इन्दौर आया था। वहाँ उसे दो-तीन दिनके लिए गुलाबने रोक लिया है। उज्जैन और आसपासके अन्य स्थान देख लेगा। आज उन दोनोको आना चाहिए।

प्रभावतीके[५] नाम ब्रजकिशोर बाबूका[६] पत्र है। उन्होने लिखा है कि जब वे कहे तब बिहार जाये। इसलिए सम्भव है, छुट्टीके दिनोके अलावा भी जाना पड जाये। प्रभावतीने लिखा दिया है कि जब वे बुलायेगे तब जानेके लिए तैयार रहेगी।

चौधरी यहाँ आया है। [७] और तुम्हारे बीच क्या बात हुई, मुझे पता नही है। उसके तथा वालुजकरके कहनेसे मै समझा हूँ कि उसकी पत्नीको सूतिका-गृहका काम करनेके लिए तुम उसे सौ रुपये देनेको तैयार हो। इस सम्बन्धमे तुम्हारे साथ मेरी बात हुई हो, ऐसा याद नही है। चौधरीने मुझसे कहा था, यह याद है।

१ भिक्षु निर्मलानदके नामसे भी जाने जाते है।
२ और ४ जमनालाल बजाजके पुत्र।
३ नाम नही दिया जा रहा है।
५ जयप्रकाश नारायणकी पत्नी।
६ प्रभावतीके पिता।
७ साधन सूत्रमें नाम छोड दिया गया है।

इस बातके आधारपर उसकी पत्नीने पूनाके सेवा-सदनसे त्याग-पत्र दे दिया। चौधरी यहाँ आ गया है। अब उसकी पत्नी आनेवाली है। वालुजकरके नाम लिखे तुम्हारे कार्डसे ऐसा मालूम होता है कि तुमने कोई निश्चय नही किया और यह कि इस बहनको तुम पहचानते भी नही हो। अब इस सम्बन्धमे तुम्हारी क्या इच्छा है, सो लिखना। फिलहाल उसकी पत्नीको बगीचेमे रखा जा सकता है। [1]को कदाचित न लिया जा सके। सूतिकागृह तो बनवाना पडेगा और वह बगीचेमे बनवाया जा सकता है या नही, इसपर विचार करना पडेगा। यदि इस बहनको रखना हो तो प्रसूतिके लिए या तो पुराने बँगलेका ऊपरका कोई हिस्सा देना पडेगा या नये बँगलेका वह हिस्सा, जिसमे तुम रहते हो। तबतक पहले यह बहन सामान्य केस लोगोके घरोमे जाकर देखे, बहनोकी दवा करे और गाँवकी बहनोसे मिले आदि-आदि। सूतिका-गृह शुरू करनेके लिए तो खाटो आदिके लिए भी खर्च करना चाहिए। यह सब तो तुम यहाँ आओ और इसपर विचार करो, तभी होगा। मूल बात तो यह है कि इस बहनको रखना है या नही। चौधरीको सौ रुपये उद्योग सघसे नही दिये जा सकते। सघ तो उसे ज्यादासे-ज्यादा २५) मासिक दे सकता है, क्योकि इसका महत्त्व हमारे हाथ-कागजके प्रयोग जितना ही हो सकता है।

कमलासे[2] मिलनेके लिए कुछ समयके लिए बम्बई हो आऊँगा। रास्तेमे उससे मिलनेके लिए जाना मुझे मुश्किल मालूम होता है।

मदालसा[3] वहाँ पहुँची होगी। मोटर-रेलका कुछ समयके लिए त्याग करो, वह मुझे अच्छा लगेगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६५) से।

११. पत्र : लीलावती आसरको

२७ अप्रैल, १९३५

चि० लीलावती,

मुझे सफर तो करना ही नही है। शायद बोरसद जाना पडे। मईके आरम्भमे तो मै यही रहूँगा।

यहाँ मेरे साथ बगीचेमे रहना होगा। कोठरी नही है। हम लोग बरामदेमे रहते है। कोठरी सामान रखने-भरके लिए काफी है। यह समझकर ही आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६८१) से।

१ साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिया गया है।

२ कमला नेहरू, जो डॉक्टरोंके सुझावपर २३ मईको यूरोपके लिए रवाना होनेवाली थी।

३ जमनालाल बजाजकी कन्या।

१२ पत्र · घनश्यामदास बिडलाको

२७ अप्रैल, १९३५

भाई घनश्यामदास,

खुर्जाके शर्माका नाम तो तुमको मैंने दिया है। वह नैसर्गिक उपाय थोडा जानता है। मैं उसे वर्षोंसे पहचानता हू। उसका इरादा बेटलक्रीक मे जाकर अनुभव लेनेका है और बादमे यूरोपके नैसर्गिक दवालय देखनेका। उसने इसके लिये १।। वषकी मुद्दत बना रखी है। वह त्यागी है, हुशियार है। कुछ विचित्र प्रकृतिका है। सेवा भाव खूब भरा है। अपनी इस्पीताल रखता था। सो फूक दी है, किताबे छपाई थी वह भी जला दी क्योकि उसमे अनुभव-ज्ञान कम था। जो रुपये मुझे इस वषके लिये देनेका तुमने इरादा कर रखा है उसमेसे खच निकालकर शर्माको अमरीका-यूरोप भेजनेकी इच्छा है। अगर इसमे तुम्हारी सम्मति हो तो तलाशकर मुझे बताइये कि बेटलक्रीक जानेका क्या खच होगा। किस रास्तेसे जाना सुभीता होगा? वह तो थड या डेक जो मिलता होगा वही पेसेज लेगा। गरीबीसे रहनेका खच वहा कितना लगता है। बेटलक्रीकमे विद्यार्थीको लेते है? उसका जापानके रास्तेसे जाना ठीक होगा क्या?

तुमारा शरीर अब कैसे रहता है?

मैंने हिन्दी साहित्य-सम्मेलनका बोज उठा लिया है सो देखा होगा।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८००९) से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

१३ पत्र हीरालाल शर्माको

२७ अप्रैल, १९३५

चि० शर्मा,

कैसी बात? छोटी ही चीज थी उसमे परिणाम बडे भरे थे। तुमारी बातपर मैंने ध्यान दिया था। तुमसे उठ सके उससे ज्यादा बोज था। इस कारण तुमको मददकी आवश्यकता थी। यही मेरा दुःख। हम तो गरीब लोग है। हमारे पास इतना बोज क्यो? तुमारे साथ तो एक किताब, एक कम्बल, एक गमछा, एक लोटा, एक कटोरा, एक चद्दर, धोती, कुरता और टोपीके सिवाय और कुछ होना नही चाहिये था। उससे अधिक क्यो लाये? लाये तो चुपकीसे एक हेलकरीको बुलाकर जाना था

अथवा जैसे मैंने कहा ज्यादा चीज थी वह छोड जाना था। न भगवानजी को आना था न किशोरप्रसादको। दोनो काममे थे लेकिन दोनो सामान उठानेके लिये गये। किशोरप्रसादके नाम खत था सो तो अलग बात है। तुमारे दुखी होनेका तनिक भी कारण नही था। शिक्षा पानेका था। जब भी पाये हो तो यह हादसा भले ही हुआ। मेरा खत चला गया है।[1]

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

तुमारा खत वापिस जाता है।

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १५६-५७ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

१४ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

[२८ अप्रैल, १९३५ के पूर्व][2]

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। उसे पढकर टाइटसको तार किया है कि तुरन्त तुम्हे चाज सौपे, तथा नारणदासके आनेतक वहाँ रुके, और उसके बाद यहाँ आये।

मैंने उन्हे पत्र भी लिखा है। तुम्हे उसकी प्रामाणिकताके बारेमे सन्देह है क्या? हो सके तो मेरा उसे निबाह ले जानेका इरादा है। अत तुम मेरा मागदशन करना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

वनमालाकी[3] तबीयत कैसी है? तुम्हारो तबीयत कसी है?

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७७) से।

१ साधन-सूत्रमें हीरालाल शर्मा बताते है कि पत्र बैटल क्रीकके डॉ० क० एच० केलॉगको लिखा गया था।

२ टाइटसके उल्लेखसे, देखिए अगले दो शीर्षक भी।

३ नरहरि परीखकी पुत्री।

१५ पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
२८ अप्रैल, १९३५

चि० नारणदास,

जीवनलाल आदि शालाके सम्बन्धमे मुझसे जरूर मिल जाये। मै बाहर गया तो थोडे ही दिनोके लिए जाऊँगा। केवल बोरसद जानेकी बात वल्लभभाई की इच्छापर निभर है। गया तो १५ मईके बाद ही जाऊँगा।

थरपारकरका पैसा तो जैसा तुमने लिखा है उसी तरह बाट दिया गया है। वह पैसा तुम जिस खातेसे निकालना चाहो निकाल लेना।

मैथ्यूके विषयमे मै तुम्हे लिख चुका हूँ। टाइटसको साबरमतीसे मुक्त कर दिया गया है। नरहरिको उसकी शक्तिमे बिलकुल विश्वास नही है। मैने उसे यहाँ बुलाया है, आयेगा तो रखूगा और उसकी जाँच करूँगा। तुम उसके हिसाबकी जाँच कर ही आना। केशूका पत्र स्वच्छ मनसे लिखा गया है। उसे ३०० रुपये और दे देना। लेकिन अब सीमा निर्धारित करना। उसका पत्र अच्छा है।

जमनाको[१] लिखे हुए पत्रमे मैने भापसे भोजन पकानेके विषयमे सकेत किया था। यह सुझाव सावधानीसे विचार करने योग्य है। हम यहा किस तरह करते है यह तुम्हे कनु बतायेगा। यह बहुत आसान है और बहुत सस्ता पडता है। नये बर-तनोकी कोई जरूरत नही होती। ब्राह्मण लोग क्यो आयेगे? जिस तरह भगीका कोई धन्धा नही होता उसी तरह रसोइयेका भी नही हो सकता। ब्राह्मण ही रसोइया होना चाहिए यह बात अज्ञानजन्य है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४० से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१ नारणदास गांधीकी पत्नी।

१६ पत्र . नरहरि द्वा० परीखको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० नरहरि,

टाइटसने चार्ज दे दिया होगा।[1] न दिया हो, तो मुझे तार करना। मैं उसे फिर तार करूँगा। उसने मेरा पत्र तुम्हे दिया होगा।

गोशालाको सफल बना सको तो समझूगा, तुमने बडे महत्त्वका काम पूरा किया।

अपनी नाकका इलाज करना। मुझे लगता है, सादे उपचारसे ठीक हो जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

तुमने यहाँसे साडियाँ और खादी क्यो मगवाई है? यह मुझे तो ठीक नही लगता। बाकी बाते महादेव लिखेगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७६) से।

१७. पत्र : जमनालाल बजाजको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला।

मदालसा चाहे तो उबाला हुआ दूध पिये और हजम हो तो रोटी भी खाये। अपने शरीरकी सभाल रखकर जो चाहे वह खाये, पर चार बारसे अधिक नही। बीचमे भी कुछ नही। यह समझमे आ सकता है कि वह कसरत करेगी तो भोजनका परिमाण बढेगा।

क्या कानका मवाद बन्द हुआ? राजेन्द्रबाबू और राजा[2] आज आ गये। राजा बहुत थक गये है, इसलिए अब वह जा रहे हैं।

१ देखिए पिछले दो शीर्षक भी।

२ चक्रवर्ती राजगोपालाचारी।

प्रोफेसर भी आ गये।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

प्यारेलालके विषयमे तारादेवीको लिख चुका हूँ।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६६) से।

१८ पत्र : मदालसा बजाजको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० मदालसा,

तेरा पत्र मिला है। आहारके बारेमे कल तार दूगा। स्वास्थ्य सुधारना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३१६

१९ पत्र : मनु गाधीको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० मनुडी,[1]

ठीक है, अब तू मुझे पत्र लिखना भी बन्द कर दे। बम्बई जानेके लिए मेरी अनुमति चाहिए ही, तो वह तो है ही, बशर्ते मौसीकी[2] भी यही इच्छा हो।

तू सुखी रहे, और भली बने तो मेरा काम हो गया।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४१) से, सौजन्य मनुबहन मशरूवाला

१ हरिलाल गांधीकी पुत्री।

२ बलीबहन अडालजा।

२०. पत्र विजया गांधीको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० विजया,[१]

कल जमनाका पत्र मिला। उससे मालूम हुआ कि तू अच्छी तरह बीमारीसे पार पा गई है। अब स्वस्थ रहनेकी कला सीख ले। खाना दवा समझकर खाना चाहिए, स्वादके लिए नही। फैक्टरीकी शक्कर तो खानी ही नही चाहिए। रोज मेथी-जैसी किसी भाजीके कोमल पत्ते (की कोपले) भोजनके साथ खानी चाहिए। नारगी, अगूर-जैसे रसभरे फल खाने चाहिए। साँस लेना सीखना चाहिए। जितना बने, खुली हवामे रहना चाहिए।

पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० विजयाबहन
मार्फत श्री हुरकचन्द मोतीचन्द
चोरवड
सोनगढ रियासत, काठियावाड

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

२१. पत्र वसुमती पण्डितको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० वसुमती,

तू मुझसे लम्बे पत्रकी आशा करती है, भला यह कैसे सधेगा? भणसाली यहा है। कच्चा आटा और नीमकी पत्तियाँ खाता है। खूब कातता है। अमतुस्सलाम यहा आई है। अच्छी तरह है। बाकी, लोगोका आना-जाना तो लगा ही रहता है। हा, इस बारका काम जरा ज्यादा मुश्किल कर लिया है। किसीको रहनेके लिए अलग कोठरी मिलती ही नही।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६४५)से, सौजन्य वसुमती पण्डित। एस० एन० ९३९९ से भी

१ पुरुषोत्तम गांधीकी पत्नी और नारणदास गांधीकी पुत्रवधू।

२२ पत्र : विजयाबहन पटेलको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० विजया,

तेरा पत्र मिला। मेरे पास अलग कोठरी नही है। पूरे दिनकी मजूरी है। बिना मसालेका खाना है। यह सब बर्दाश्त हो तो आ जाना। आये तो पहनने-ओढनेके कपडे तथा थाली, कटोरा, लोटा लेती आना। अगर समझे कि काम नही कर सकेगी, तो मत आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७०५९) से। सी० डब्ल्यू० ४५५१ से भी, सौजन्य विजयाबहन एम० पचोली

२३ पत्र : गगाबहन वैद्यको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० गगाबहन,

तुम्हारी बात समझ गया। अधिकाधिक सेवा करती जाओ। पाँच वषतक एक स्थानपर स्थिर होकर रहनेकी तुम्हारी प्रतिज्ञा फलवती हो। हकीमजी तुम्हे कौन-सी सादी दवाएँ सिखा गये ?

मैत्रीके[1] भी ठिकाने लग जानेकी बात सुनी। दोनोका विवाह कब होगा ? इस कुटुम्बको तो, कहा जा सकता है, तुम्हीने पार उबारा।

तुम्हारा शरीर तो ठीक रहता है न ?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ६ ग० स्व० गगाबहेनने, पृ० ८४

१ मैत्री गिरि।

२८ एक पत्र

३० अप्रैल, १९३५

यह ठीक है कि ईश्वर तक पहुँचनेके कई मार्ग हैं लेकिन सबका मूल स्रोत एक ही है। हो सकता है कि अस्पृश्यता-निवारणके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति उस व्यक्तिकी अपेक्षा अधिक प्रभावशाली काम कर रहा हो जो हरिजनोके बीच काम करता है। मेरे कहनेका मतलब यह है कि सेवा-कार्यके बिना मात्र प्रार्थना करना लाखो व्यक्तियोके लिए एक मौखिक प्रयत्न-भर है।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई

२९ पत्र हुकमचन्दको

वर्धा
३० अप्रैल, १९३५

श्री हुकमचन्दजी,[1]

अबतक आपके तरफसे मुझे कुछ नही मिला। यह दु:खकी बात है। अब भी मैं अवश्य आशा रखूंगा कि हिन्दी-प्रचारके लिए मुझे एक अच्छी हुंडी मिल जायेगी।

इसके साथ मजदूरोने दिया हुआ खत भेजता हूँ। यदि इस पत्रमे लिखी हुई बात सही है तो उसका इलाज भी शीघ्र करना आवश्यक और उचित समझता हूँ। कोई कारण नही कि आपके यहा आदर्श स्थापित न हो।

आपका,
मो० क० गांधी

वीणा, श्रद्धांजलि अंक, अप्रैल-मई १९६९

१ स्वागताध्यक्ष, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर।

३० पत्र जौहरीलाल मित्तलको

३० अप्रैल, १९३५

भाईश्री मित्तल,

मैं नित्य आपके तरफसे कुछ खतकी और कुछ हुडीकी प्रतीक्षा करता हूँ। गुजरातीके ५०० और बडवासके १०१ के [सिवा] यहा तो कुछ भी अबतक मुझे नही मिला है।

आपका,
मो० क० गाधी

श्री प्रधान मन्त्री
स्वा० समिति
हि० सा० सम्मेलन
इन्दौर

वीणा, श्रद्धाजलि अक, अप्रैल-मई १९६९

३१ पत्र एफ० मेरी बारको

वर्धा
१ मई, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे मालूम नही कि तुम्हारे पास कौन-से मित्र आये थे और न मुझे इस बातकी ही कोई जानकारी है कि तुमको हाथका बना कागज दरकार है। तुमने किसे लिखा था? लडकिया छुट्टीपर गई हुई है। छोटेलाल[1] मधुमक्खी-पालनका तरीका सीखने दक्षिण गया है। जबतक मुझे तुम्हारी तरफसे कोई सूचना नही मिलती, मैं तुमको कुछ भी नही भेजूगा। डकन चार दिन यहाँ रहा। वह अब भी बिलकुल ठीक ढगसे काम नही कर रहा था।

१ छोटेलाल जैन, वर्धा आश्रमके प्रबधक।

३५ पत्र : पद्मावतीको

१ मई, १९३५

प्रिय बहन,

मैंने रामचन्द्रनको पत्र लिखा है, वह तुमको दिखा देगा। कान्ति तुमको कुछ भाने लगा है। मुझे आशा है, वह इसके योग्य सिद्ध होगा। मैं कान्तिके साथ तुम्हारी पुत्रीके विवाहका स्वागत करूंगा, यदि वह विवाहका समय आनेपर अपनेको उसके योग्य सिद्ध कर देगा। बीचका समय दोनो पक्षोके लिए एक पवित्र कार्यकी तैयारीका समय बन जाना चाहिए। हाँ, एक आग्रह मेरा है। लडकीको हमारे इरादोके बारेमे कुछ भी पता न चले। उसे वयस्कता प्राप्त करनेपर स्वय अपना चुनाव करनेके लिए बिलकुल स्वतन्त्र रहना चाहिए।

मै जानता हूँ कि कान्तिके साथ तुम्हारा पत्र-व्यवहार बहुधा चलता रहा है। रामचन्द्रनसे इसके बारेमे कुछ भी छिपाना नही है। कान्ति यदि लडकीके सम्बन्धमे कुछ करता है या रामचन्द्रनसे छिपाकर तुमसे पत्र-व्यवहार करता है तो वह विश्वास भग करनेका दोषी होगा। अगर ऐसा कुछ भी हुआ तो मै स्वयको कभी क्षमा नही कर पाऊँगा।

सस्नेह,

बापू

अग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७४१) से, सौजन्य कान्तिलाल गाधी

३६ पत्र जी० रामचन्द्रनको

१ मई, १९३५

प्रिय रामचन्द्रन,

मैने जान-बूझकर कान्तिके सम्बन्धमे तुम्हारे पत्रका उत्तर अबतक नही दिया था। अब मै तुम्हारे पत्रका उत्तर दे सकता हूँ। लडकी जबतक पूण वयस्क नही हो जाती, उसे हमारे इरादोके सम्बन्धमे कुछ भी ज्ञात नही होना चाहिए। कान्ति ऐसा इरादा रख सकता है लेकिन उसके वयस्क होनेके पहले उसके साथ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष किसी प्रकारका पत्र-व्यवहार नही कर सकता है।[1] वह तुम्हारी बहनको पत्र लिख सकता है, जैसाकि वह करता ही रहा है, लेकिन उसका कुछ भी तुमसे छिपा नही रहना चाहिए। जब और जिस समय तुम चाहो, उसके सब पत्र तुम्हारे देखनेके लिए सुलभ रहने चाहिए। दोनोमे से प्रत्येकको एक-दूसरेके योग्य बनना है। इसलिए, यदि लडकीको कान्तिके योग्य बनाना है, तो कान्तिको भी स्वयको लडकीके और तुम्हारे योग्य बनाने की तैयारी करनी पडेगी। और विवाहका समय आनेपर यदि कान्ति इस दिशामे की गई अपनी प्रगतिमे अयोग्य साबित हो, तो तुम यह मानकर लडकीको उसके सम्पकसे निश्चय ही अलग रख सकते हो कि वयस्कता प्राप्त करनेपर वह तुम्हारी बात सुन-समझकर मान लेगी। तुम और मै इस प्रस्तावित सम्बन्धको तभी सहन कर सकेगे, जब यह दूसरोके लिए अनुकरणीय बन जाये। इसलिए इसे सेवा-भावनासे ही विकसित होना चाहिए। इस तरह विकसित होनेका मतलब है, अपेक्षाकृत अधिक सादगी, अधिक आत्म-त्याग, सत्य और अहिंसाकी ओर अपेक्षाकृत अधिक प्रगति और मन, वचन तथा कमसे पूण ब्रह्मचर्यका पालन। कान्तिके लिए लडकीके बारेमे सोचनेका मतलब ही यह होना चाहिए कि यौन-भावनाकी तुष्टिके लिए अन्य किसी स्त्रीका ध्यान भी उसके मनमे न आये।

अगर ये शर्ते पूरी कर दी जाती है, तो मै इस गठ-बन्धनका स्वागत करूँगा। मुझे तो लगता है कि इस सम्बन्धमे आरम्भसे कोई दोष नही रहा है। कान्तिने इस लडकीके प्रति आकषण अनुभव करते ही पूरी ईमानदारीसे वह-सब स्वीकार कर लिया था। बादका उसका आचरण भी मुझे ऐसा नही लगता जिसपर उँगली उठाई जा सके।

इस पत्रको कान्ति देखेगा और बादमे तुम्हारे पास भेज देगा। अगर पत्रमे ऐसी कोई बात हो जिससे तुम सहमत न होओ, तो मुझे बताना। मै कान्तिको इस पत्रकी

१ साधन सूत्रमें यह वाक्य अधूरा लगता है, उसका अर्थ स्पष्ट करनेके लिए कुछ शब्द जोड़े जा रहे हैं।

४०. प्रस्तावना 'गुजरात एड इट्स लिटरेचर' की

[२ मई, १९३५ के पूर्व][1]

श्री मुशी-जैसे लेखकके साहित्यिक ग्रथकी भूमिका लिखने के लिए मुझसे कहनेका केवल एक ही कारण हो सकता है कि मै 'महात्मा' कहलाता हूँ। मै किसी भी प्रकार साहित्यिक होनेका दावा नही कर सकता। इसमे मेरा कोई दोष नही है कि गुजरातीके साहित्यसे, बल्कि दरअसल किसी भी भाषाके साहित्यसे मेरा परिचय लगभग शून्य है। लगभग किशोरावस्थासे ही कर्म-क्षेत्रमे व्यस्त हो जानेके कारण दक्षिण आफ्रिका और भारतमे सिवा जेलोके मुझे पढनेका अवसर ही नही मिल पाया। गुजराती साहित्यके श्री मुशी द्वारा किये गये इस सर्वेक्षणको पढनेमे मुझे आनन्द आया है। लेखकोके जो सक्षिप्त शब्द-चित्र उन्होने खीचे है, पाठकोको उनसे उनकी रचनाओकी पर्याप्त झॉकी मिल जाती है।

श्री मुशीने हमारी साहित्यिक उपलब्धियोका जो मूल्याकन किया है, वह मुझे बहुत प्रामाणिक लगता है। स्वभावत सर्वेक्षणका क्षेत्र वह गुजराती भाषा है जो मध्यमवर्गके लोगोके बीच बोली और समझी जाती है। आत्म-सतुष्ट और व्यापारी-वृत्तिके होनेके कारण इनकी भाषा 'कोमल और रसीली' है। जन-भाषाके बारेमे तो हम लगभग कुछ नही जानते। हम उनकी बोली शायद ही समझ पाते है। हम मध्यम वर्गके लोगो और उनके बीच जो खाई है वह इतनी चौडी है कि हम उन्हें नही जानते और हम जो सोचते या कहते है उसे वे तो और भी कम जानते है।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थीके सौम्य आग्रहके कारण मैने लोकगीतोके उनके विशिष्ट सग्रहको थोडा-बहुत देखा है जो उन्होने विभिन्न प्रान्तोमे घूम-घूमकर तैयार किया है। इस लेखकसे मिलनेकी याद तो मुझे नही है। लोकगीत ही लोगोका साहित्य है। ये गीत जिन प्रान्तोके है, उन प्रान्तोके मध्यमवर्गीय लोगोका इनसे उसी प्रकार कोई नाता नही है, जिस प्रकार गुजरातके मध्यमवर्गीय लोगोका लोकगीतो अर्थात् गुजरातकी जनताकी भाषासे सम्पर्क नही है। सौराष्ट्रके मेघाणीने काठियावाडकी लोककथाओको लेकर शोध-कार्य किया है। इस शोध-कार्यसे जनभाषा और हमारी भाषाके बीच जो खाई है, वह स्पष्ट होती है।

किन्तु लोककथा आदि उस व्यवस्थाके अग है जो यदि विलीन नही हो गई है तो तेजीसे विलीन होती जा रही है। जनतामे एक जागृति आ रही है। उनमे परिवर्तनका प्रारम्भ विचारसे नही कर्मसे हुआ है। मेरी समझमे जनताका तरीका ही यह है। उसकी भाषाको निश्चित स्वरूप ग्रहण करना बाकी है। यह रूप थोडा-बहुत

1 देखिए "पत्र क० मा० मुशीको", ० ३०१।

समाचार-पत्रोमे ढल रहा है, किताबोमे नही। इसलिए कहा जा सकता है जो कृति मेरे सामने है, उससे श्री मुशीका काम शुरू-भर होता है। वह आवश्यक था। किन्तु इस सुन्दर प्रारम्भके बाद उन्हे इसे आगे बढाते रहना है। अपने कामके प्रति आवश्यक लगन उनमे है। यदि स्वास्थ्य साथ दे तो अब उन्हे सीधे जनताके बीच जाना चाहिए और समझना चाहिए कि वह किस तरह सोच रही ह। फिर उन्हे चाहिए कि वे उन विचारोको अभिव्यक्ति दे। गुजराती भाषा सम्पन्न बेशक नही है किन्तु यह तो उस जनताकी गरीबीका चिह्न ही है। पर वास्तवमे कोई भी भाषा दरिद्र नही होती। हमने जबसे काम करना शुरू किया है, तबसे बोलनेका तो मानो हमे समय ही नही मिला। सारे भारतकी तरह गुजरात भी सोचमे डूबा है। भाषा स्वरूप ग्रहण कर रही है। हमारे इस लेखककी तरह और लेखकोके सामने भी पर्याप्त काम पडा हुआ है।

मुशी ने पारसी-गुजरातीका उल्लेख किया है, सो तो है। यह एक दुर्भाग्यकी बात है कि पारसी-गुजराती-जैसी चीज हे। यह भाषा बारह आना सीरीजके सनसनीखेज उपन्यासो और कहानियोतक सीमित है। उनका उद्देश्य खाली समय काटना है। उनमे भाषापर बलात्कार करके उसका स्वरूप विकृत कर दिया जाता है। पारसी-गुजरातीकी तरह, भले ही काफी छोटे पैमानेपर क्यो न हो, मुस्लिम-गुजराती भी है। इन धाराओकी उपेक्षा नही की जा सकती। ये दूषित धाराएँ है, जिनमे गुजराती साहित्यका निमल जल नही मिल सकता। लेकिन गुजराती साहित्यका कोई भी समीक्षक ऐसी पुस्तकोकी उपेक्षा नही कर सकता जिन्हे हजारो नही तो कमसे-कम सैकडो पारसी और मुसलमान पाठक पढते हो और जिन्हें पढकर वे अशत ही सही अपना आचरण ढालते हो।

मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
गुजरात ऐंड इट्स लिटरेचर

४१. एक पत्र[1]

२ मई, १९३५

फोडे-फुन्सियोको हम जितना छेडते है, वे उतने ही बिगडते जाते है। हिन्दू-मुस्लिम तनाव ऐसा ही एक फोडा है। इसीलिए मै इसके समाधान के लिए ईश्वरसे प्राथना करता हूँ। मै इसके बारेमे कुछ भी कहना नही चाहता।

[अग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई

१ पत्र लेखक ने लिखा था कि चूँकि हिंदू मुस्लिम एकताके बिना स्वराज्य सम्भव नही है, इसलिए गाधीजी को केवल इसी समस्याके समाधानपर अपनी सारी शक्ति केन्द्रित करनी चाहिए।

४६ पत्र : पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

३ मई, १९३५

भाई पुरुषोत्तमदास,[1]

आपका पत्र आज ही मिला। आज ही मैं अहमदाबादसे आया। आपका भेजा लेख पढ गया। उसके अन्तमे डाले गये आँसू उचित नही है। सरकार जाग्रत है तो हम भी उसी तरह क्यो न जागे? जगानेवाले आप-जैसे चाहिए। किन्तु आप ही यदि दूसरेसे आशा करे, तो क्या यही नही कहा जायेगा कि समुद्र ही अपना खारापन खो बैठा है और अब रोता है? आप जाये, रास्ता दिखाये तो दूसरे भी पीछे चलेगे।

'एक्सचेज' वगैरा 'हाई फिनेन्स' कहा जाता है। उसमे काग्रेस क्या कर सकती है? उस विषयको जाननेवाले इसमे शामिल नही होते, शामिल हो भी नही सकते। जो इसमे है, स्वाभाविक है कि उनमे से बहुत-से इस विषयकी बाते नही जानते। यह काम ही पैसेवालोका है। उन्हे इसके लिए एक विशेष सस्थाकी स्थापना करके आवश्यक कदम उठाना चाहिए।

(उस) लेखकका कहना है कि जब देश स्वणमानसे अलग हुआ, तब यदि हिन्दुस्तान जाग्रत होता तो यह न हो पाता। तब क्या करना चाहिए था?

आज क्या करे कि सही नीति व्यवहारमे लाई जा सके?

क्या आप समझते है कि ग्रामोद्योगका इस समस्याके साथ कोई सम्बन्ध है? सही नीतिका व्यवहार हो या न हो, गाँवोको स्वच्छ-साफ तो होना ही पडेगा न? उचित खुराकका ज्ञान प्राप्त करना ही पडेगा न? यदि वहाँके उद्योगोका पुनरुद्धार हो सकता हो, तो वह होना चाहिए न? यह काम चलता रहे, तो क्या करेन्सीका काम रुक जायेगा? करेन्सीके विशेषज्ञ तो शायद ही कोई इस काममे अटके हो। यदि अटके भी हो, तो इसमे रहते हुए भी वे दूसरा काम कर सकते है।

यह बोझ यदि पैसेवाले नही उठाते, तो इसका क्या उपाय है? उन्हे कौन जगायेगा? इस विषयका मेरा ज्ञान इतना नही है कि मै उन्हे जगा सकू।

सीमेटकी बात समझा। अर्जी भेजनेके लिए बापाको[2] लिख रहा हूँ।

मोहनदासके व० मा०

[गुजरातीसे]

पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास पेपर्स फाइल न० १५९/१९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१ अर्थशास्त्री और इडियन सेंट्रल बैंकिंग इन्क्वाइरी कमेटीके उपाध्यक्ष।

२ अमृतलाल वि० ठक्कर।

४७ पत्र : हीरालाल शर्माको'

३ मई, १९३५

मै डाक्टर गोपीचन्दको लिख रहा हूँ। यहा तुमारे हिसाबमे ५३ रुपया निकलते है। ४२ रुपया रेल किराये का है। मुझे सब स्मरण नही है। मेरी सलाह है भले १०० रुपया ऐसे ही रहे।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, पृ० १५७-५८

४८ दो महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव

इन्दौरके अ० भा० हिन्दी साहित्य-सम्मेलनमे कुछ खास उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत हुए। एकमे तो हिन्दी भाषाकी परिभाषा बताई गई है, और दूसरेमे यह मत प्रकट किया गया है कि उन समस्त भाषाओको देवनागरी लिपिमे ही लिखना चाहिए, जो या तो सस्कृतसे निकली है या जिनपर सस्कृतका बहुत अधिक प्रभाव है।

पहला प्रस्ताव इस तथ्यपर जोर देता है कि हिन्दी प्रान्तीय भाषाओको नष्ट नही करना चाहती, बल्कि उनकी पूरक बनना चाहती है, और अखिल भारतीय स्तरपर सेवा करनेवाले जो लोग इसे बोलते है उनके ज्ञान तथा उपयोगिताको बढाती है। वह भाषा भी हिन्दी ही है जो लिखी तो उर्दू लिपिमे जाती है, पर जिसे मुसलमान और हिन्दू दोनो ही समझ लेते है,—इस बातको स्वीकार करके सम्मेलनने इस सन्देहको दूर कर दिया है कि उर्दू लिपिके प्रति सम्मेलनकी कोई दुर्भावना है। तो भी सम्मेलन की प्रामाणिक लिपि तो देवनागरी ही रहेगी। पजाब तथा दूसरे प्रान्तोके हिन्दुओके बीच देवनागरी लिपिका प्रचार अब भी जारी रहेगा। यह प्रस्ताव किसी भी प्रकारसे देवनागरी लिपिके महत्त्वको कम नही करता। वह तो मुसलमानोके इस अधिकारको स्वीकार करता है कि अबतक जिस उर्दू लिपिमे वे हिन्दुस्तानी भाषा लिखते आ रहे है उसमे अब भी लिख सकते है।

दूसरे प्रस्तावको व्यावहारिक रूप देनेकी दृष्टिसे एक समिति बना दी गई है, जिसके अध्यक्ष और सयोजक काकासाहब कालेलकर है। इस समितिका काम देवनागरी

१ महादेव देसाई द्वारा हीरालाल शर्माको लिखे पत्रके अन्तमें गाधीजी ने ये पंक्तियाँ लिखी थीं। उक्त पत्रमें महादेव देसाईने लाहौरकी एक दुकानका पता देते हुए लिखा था कि गाधीजी की जरूरतकी वे पुस्तकें डॉ० गोपीचदके द्वारा खरीदी जायें, ताकि उनकी कीमतोंपर कुछ रिआयत मिल जाये।

लिपिमे ऐसे परिवतन और परिवर्धन दाखिल करनेकी सम्भावनाका पता लगाना और तदनुसार एसे परिवतन और परिवर्धन करना होगा जो उसे और भी आसानीके साथ लिखनेके लिए आवश्यक होगे, और मौजूदा अक्षरोसे जो शब्द-ध्वनि व्यक्त नही हो सकती उसे व्यक्त करनेके लिए देवनागरी लिपिको और भी पूण बनायेंगे।

हमे अगर अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्कको बढाना है, और अगर हिन्दीको प्रान्तोके आपसी सम्बन्धका माध्यम बनाना है तो उसमे इस प्रकारका परिवतन आवश्यक है। इस दूसरी बातको तो हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके सिद्धान्तोमे विश्वास रखनेवाले लोग गत पच्चीस वर्षोसे मानकर चल रहे है। लिपि-सम्बन्धी प्रश्नपर चर्चा तो अक्सर हुई, पर गम्भीरता-पूवक वह कभी हाथ मे नही लिया गया। फिर भी यह पहली मान्यताका स्वाभाविक परिणाम प्रतीत होता है। [एक लिपि हो जानेपर] भगिनी-भाषाओको सीखना अत्य-धिक सरल और आसान हो जाता है। बगला लिपिमे लिखी हुई 'गीताजलि' को सिवा बगालियोके और पढेगा ही कौन? अगर वह देवनागरी लिपिमे लिखी जाये तो उसे सभी लोग पढ सकते है। सस्कृतके तत्सम और तद्भव शब्द उसमे बहुत अधिक है, जिन्हे दूसरे प्रान्तोके लोग आसानीसे समझ सकते है। मेरे इस कथनकी सत्यताको हरएक जाँच सकता है। हमे अपने बालकोको विभिन्न प्रान्तीय लिपियोको सीखनेका व्यथ कष्ट नही देना चाहिए। यह निर्दयता नही तो क्या है कि तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, उडिया और बगला सीखनेकी इच्छा रखनेवालोसे देवनागरीके अलावा इन छह लिपियोको —और अगर वे अपने मुसलमान भाइयोके चिन्तन और कार्योको उनके लेखो आदिसे जानना चाहे तो उर्दू लिपिको भी —सीखनेकी अपेक्षा की जाये? जो अपने देश या मनुष्य-मात्रका प्रेमी है उसके सामने मैने यह कोई बडा प्रचण्ड कार्यक्रम नही रख दिया है। आज तो अगर कोई प्रान्तीय भाषाएँ सीखना चाहे और कोई प्रान्तीय भाषा-भाषी हिन्दी पढना चाहे तो यह लिपियोका अभेद्य प्रतिबन्ध ही उसके मागमे कठिनाई उपस्थित करता है। काकासाहबकी यह समिति एक ओर तो इस सुधारके पक्षमे लोकमत तैयार करेगी, और दूसरी ओर उसे प्रयोगमे लाकर उसकी इस महान् उपयोगिताको प्रत्यक्ष करके दिखायेगी कि जो लोग हिन्दी या प्रान्तीय भाषाओको सीखना चाहते है, उनका समय और उनकी शक्ति इससे बच सकती है। किसीको भूलकर भी यह कल्पना नही करनी चाहिए कि यह लिपि-सुधार प्रान्तीय भाषाओके महत्त्वको कम कर देगा। सच पूछिए तो वह तो उनकी उसी प्रकार श्रीवृद्धि करेगा, जिस प्रकार कि एक सामान्य लिपि स्वीकार कर लेनेके फलस्वरूप प्रान्तीय व्यवहार-विनिमय सरल हो जानेसे यूरोपकी तमाम भाषाएँ समृद्ध हो गई है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-५-१९३५

४९ आय दूनी कैसे की जाये ?

चरखेका आन्दोलन यद्यपि सत्रह सालसे चल रहा है, और उससे हर साल एक लाख बीस हजार स्त्रियोको थोडी किन्तु स्थायी आमदनी हो जाती है, तो भी हमारे कायकर्त्ताओके कताई-विज्ञानके शोचनीय अज्ञानके कारण आमदनी जितनी होनी चाहिए उससे बहुत कम होती है। खराब रुईको अनाडीपनेसे धुनेंगे, और फिर हिलते डुलते चरखेपर तकुएके चक्करोका खयाल रखे बगैर कातेंगे, तो सूत तो कम निकलेगा ही। एक-एक चीजपर ध्यान दिया जाये तो सहज ही सूत दूना उतरे और इससे आमदनी भी दूनी बढ जाये। कपास ठीक तरहसे चुनी जाये, हाथसे ओटी जाये और फिर रुईको अच्छी तरह धुना जाये तो सूत तो अधिक उतरेगा ही, वह ज्यादा मजबूत और इकसार भी होगा। तकुएके चक्करोपर, अर्थात् चरखेके पहियेके प्रत्येक घुमावसे तकुआ जितने चक्कर खाता है, इसपर सूत निकलनेकी गति, सूतकी मजबूती, समानता तथा अक शायद सबसे अधिक निभर करते है। इसका हिसाब लगानेका आसान तरीका यह है कि तकुएकी गरारीपर एक खडी लकीर खीच दी जाये, और पहिया इतना धीरे-धीरे घुमाया जाये कि जिससे तकुएके चक्कर आसानीसे गिने जा सके। पहियेके एक चक्करके मुकाबले तकुएके सौ चक्करसे कम तो होने ही नही चाहिए। किन्तु श्री शकरलाल बैकरने यह रिपोट दी है कि उन्होने अपने दौरेमे सिफ ३५ ही चक्कर लगानेवाले तकुए देखे है। अब अगर सूत बहुत ही कम और कच्चा तथा रोएँदार उतरे तो इसमे कोई अचरजकी बात नही। तकुएके चक्कर बढानेकी तरकीब यह है कि मालको अपनी ठीक जगहपर रखनेवाली तकुएकी साडीकी मोटाई कम कर दी जाये। स्थानीय कायकर्त्ताओको अपने गॉवके प्रत्येक चरखेकी जाच-पडताल करके उसके तकुए तथा दूसरे हिस्सोमे, जहॉ आवश्यक जान पडे वहा, हेरफेर कर देना चाहिए। यह भी सम्भव है कि अन्तमे तकली सूतकी उत्पत्तिका सबसे बढिया साधन साबित हो। इसमे कमसे-कम ध्यान देनेकी जरूरत रहती है, और तकली चलानेकी नई पद्धति से प्रति घटा औसतन २०० तार अर्थात् २६६ गज सूत कतता है और ४४० तार तककी गति बढ सकती है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ४-५-१९३५

५०. पत्र : नारायणदास मलकानीको

वर्धा
४ मई, १९३५

प्रिय मलकानी[१],

हमारी बातचीतके तुमने जो नोट तैयार किये हैं, उनको जाचनेमे मुझे काफी समय लगाना पडा। तुम देखोगे कि मैंने काफी रद्दोबदल की है और कुछ पूरे-के-पूरे पैरे हटा दिये है। दूसरोके बारेमें किये गये सभी उल्लेख् हटा दिये गये हैं, होना भी यही चाहिए था।

उम्मीद है, तुम्हारा कलकत्ता-प्रवास उपयोगी रहा होगा।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०९) से।

५१. पत्र : कान्ति गाधीको

४ मई, १९३५

चि० कान्ति,

जैसा मूर्खतासे भरा पत्र तूने लिखा है, वैसा ही कनुने लिखा था। उसका समाधान एक क्षणमे हो गया, वैसे ही तेरा भी हो जायेगा। मनुष्य बिना मौतके रोज मरता है, और जब सच्ची मौत आती है तब दु खी होता है। मनुष्य अपने-आप ही दु ख पाता है। मै तुम दोनोमे से एकको भी यहाँ दफन करना नही चाहता। इस बार भी महादेवने जवाब क्यो दिया, मुझे नही मालूम। मैंने जान-बूझकर तुम दोनोमे से एकको भी रसोईघरका काम न सौपनेका निश्चय किया है, जिससे जब मै सचमुच सफरपर जाऊँ तब दोमे से एकको साथ ले जा सकू। यो मेरी इच्छा तो दोनोको ले जानेकी है। समय और कामकी मजबूरीसे अगर कुछ न कर सकू, तो तुम दोनो समझ जाओगे। इस बरस तो मुझे सफर नही ही करना है। यहीका सब काम व्यवस्थित करना है। जिन्दा रहा, तो अगले वर्ष सफर करना है — जिन्दा दोनो अर्थोमे, जेल जाना एक प्रकारका मरण ही कहलाता है न? अग्रेजीमे इसे 'सिविल-डेथ'[२] कहते हैं, अर्थात् सार्वजनिक नागरिक जीवनकी दृष्टिसे मरण। यह तो मेरे भाग्यमे बदा ही है न?

१ हरिजन सेवक सघके सयुक्त मन्त्री।
२ मूलमें ये दो शब्द अग्रेजीमें हैं।

तुझे जैसे उलाहना दिया, वैसे ही बालको भी दिया है। वह मुझसे पत्र चाहता है, इसलिए उसे मिलते है। तूने मुझे पत्रोका उत्तर देनेसे मुक्त कर दिया है, इसलिए तुझे कम लिखे है। देवदासको कितने लिखता हूँ? मै पत्र लोगोकी आवश्यकताके अनुसार भेजता हूँ।

मेरी बातोसे तू 'सन्न' रह जाता है, इसका अर्थ तू समझता है? इसका अर्थ तो यह हुआ कि तू अपनेको मुझसे हजारो योजन दूर मानता है। कडवे शब्दोके पीछे प्रेम भरा था, यह तू नही देख सका, तो यह दोष तेरा है या मेरा? अहिसाका पुजारी होनेके नाते मुझे दोष अपना मानना पडता है, किन्तु पिता होनेके नाते तेरा मानता हूँ। तुझसे बोलते हुए मुझे नाप-तोलकर बोलना पडे, और भाषापर नियन्त्रण रखना पडे कि कही तू नाराज न हो जाये, तो यह कैसी विचित्र बात है?

तुझमे शुरूसे ही एक प्रकारका उजड्डपन अथवा अविवेक रहा है। वह तूने बहुत-कुछ कम कर लिया है। फिर भी अभी उसके कुछ छीटे तो है ही। मुझे लिखे इस पत्रमे तो कुछ भी नही है। हाँ, उस रोज छतपर थे। यो मैंने तो अपना समाधान कर ही लिया था। आश्चर्यकी बात है, हरिलाल समझता है कि तू मेरी नजरोसे गिर गया है। मुझे इसका थोडा दुःख भी है। कारण यह है कि तू तो जानता है, मेरी नजरमे तेरी कीमत बहुत है। मेरा मन तो कहता है, मै तेरी सार-सँभाल एक फूलके समान कर रहा हूँ। तेरे कामसे मुझे सन्तोष ही हुआ है। तेरी होशियारी तेरे चेहरेसे झलकती है। देवदासको मै तो समझा रहा हूँ कि वह कुछ भूल कर रहा है। रामचन्द्रनको जो पत्र लिखा है, वह भी क्या सिद्ध करता है? मेरी नजरमे तेरी कीमत बहुत है, यह समझ ले। मेरे पास आनेमे तुझे सकोच होता है, यह मेरे और तेरे दोनोके लिए शर्मकी बात है। इस प्रकारकी शर्मका कोई कारण तो नही है।

इलायची, तेल और टूथपेस्ट, इन तीनमे से एककी भी जरूरत नही है। जले कडोकी मैदा-जैसी महीन राख और नमक अथवा नीमकी दातौन दाँतोको उम्दा रखते है। खोपरेका तेल बालोके लिए सबसे बढिया होता है। उसमे नीबूके रसकी कुछ बूदे डाल दी जाये, तो वह और बढिया हो जाता है। इलायचीकी अपेक्षा नीमकी पत्तियाँ अधिक अच्छी होती है, गाँववाले उन्हे मुख-शुद्धिके लिए काममे लाते है।

जहाँ तुझे शादी[1] करनी है, वहाँ भरतके चारित्र्यकी आवश्यकता है। तेरा विवाह सयमका उदाहरण प्रस्तुत करेगा, मै ऐसी आशा सँजोये हुए हूँ।

तुझे किसी भी प्रकारका असन्तोष नही होना चाहिए, अध्ययन-सम्बन्धी भी नही। यहाके क्लेश सहन कर गया, तो आदमी बन जायेगा। नही सहन कर सका, तो भी दुनियादार तो बन ही जायेगा। मेरे पास रहते हुए पृथुराज सूख कर काँटा हो गया था, और रुपए-पैसेकी इफरात होते ही उसका वजन बढकर १३५ पौड हो गया। इस सबसे मुझे तो बहुत-कुछ सीखनेको मिलता है। तू मेरे पास पूर्ण

१ देखिए पृ० २४६ भी।

आनन्दमे रहना। अपना शरीर क्षीण करके रहे, इससे तो मुझे यह बर्दाश्त होगा कि तू मुझसे दूर रहे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

यह दुबारा नही पढा है। समझमे न आये, तो फिर पूछना। कुछ छूट गया हो तो पूरा कराना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९६) से, सौजन्य कान्ति गाधी

५२ पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
५ मई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा तार मिला। २५ तारीखको मै वहाँ[1] पहुँच जाऊँगा। यदि २३ तारीखको पहुँचूँ तो हज तो नही है न? अगर २२ तारीखको बम्बईमे कमलासे मिला, तो शायद २३ तारीखको सवेरे वहाँ पहुँचूगा। लिखना, वहाँ कितने दिन रोकनेका विचार है। कमसे-कम दिन रोकना।

राजाजी की थकावटका पार नही है। इसमे उनका दोष भी क्या बताया जाये? जिसका मन थक जायँ, उसे क्या जबरन् रखा जा सकता है?[2] तुम और राजेन्द्रबाबू वगैरा किसे त्यागपत्र दोगे? जो है वे जबतक काम चले, चलाये। किसी दलसे किया जा सके तो वह खुशीसे काग्रेसपर कब्जा कर ले।[3]

जयप्रकाशने तुमको जो पत्र भेजा है, उसकी नकल मुझे दिखानेके लिए उसने प्रभावतीको भेजी है। वह किस बारेमे है? तुम ऐसा क्या बोले हो?

आठवले यहाँ आये थे। वे चले गये। मुझसे भी उन्होने वही बात कही थी, जो तुमको लिखी है।

अब तो प्लेगका जोर कम हो गया होगा। क्या तुममे ताकत आ गई?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–२ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६५

१ बोरसद।

२ चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ११ मई, १९३५ को अस्थायी तौरपर सक्रिय राजनीतिसे अलग हो गये थे।

३ अपने २ मईके पत्रमें वल्लभभाई पटेलने लिखा था कि एकके-बाद एक सदस्यके काग्रेस छोड़ते चले जानेसे उन्हें कितनी कठिनाई हो रही थी।

५३ पत्र : नारणदास गांधीको

५ मई, १९३५

चि० नारणदास,

चि० हरिलाल फिर राजकोट वापस जा रहा है। उसे ब्याह तो करना ही है। योग्य संगिनी मिलनेकी शर्त जरूर रखी है। मुझे लगता है कि ऐसा नहीं हो सकता है कि वह विवाह करके मेरे साथ रहे। उसका विवाह मैं सहन तो कर सकता हूँ, लेकिन उसका स्वागत नहीं कर सकता, उसे पसन्द नहीं कर सकता। उसका विवाहित जीवन सुखी हो, ऐसी कामना तो करता ही हूँ। हमारी अनेक प्रवृत्तियोंमें से किसीमें लगकर वह अपना गुजारा करे, इसमें तो कोई आपत्ति नहीं हो सकती, बल्कि यह मुझे अच्छा ही लगेगा। लेकिन मैं उसकी सिफारिश नहीं कर सकता। हरिलालकी इच्छा फिलहाल तो तुम्हारे दिये कमरेमें ही रहनेकी है। अगर तुम्हें यह ठीक लगे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन यह उचित है या अनुचित, इसका विचार तुम्हींको करना है। मैं परिस्थिति तो जानता ही नहीं। अब तुम्हें हरिलालको मासिक खर्चके लिए कुछ नहीं देना है, लेकिन १०० रुपयेतक एक मुश्त या जैसे वह कहे वैसे दे देना। इससे ज्यादाकी जरूरत होगी तो वह खुद कमा लेगा। उसका विचार कोई नौकरी ढूंढने अथवा व्यापार करनेका है। मुझे कुछ सूझ नहीं रहा। उसका यहाँ रहना मुझे अच्छा लगता था। यथाशक्ति काम करता था। सबके साथ घुल-मिलकर रहता रहा। कहता है कि उसकी शराबकी लत छूट गई है। और मैंने यह समझा है कि विवाह तो वह करना चाहेगा किन्तु विषय-भोगकी वासनासे वह मुक्त हो गया है। इस सम्बन्धमें उससे कोई खोद-खोदकर पूछताछ नहीं की है। धूम्रपानका व्यसन उसे अब भी है और मुझसे अनुमति लेकर वह रोज तीन बीड़ियाँ पीता है। मैं मानता हूँ कि वह तीनकी सीमाकी रक्षा करता रहा है।

तो यह रही हरिलालकी कथा। अब भाग्य उसे जिधर ले जाये, ले जाये। आया धन खो न जाये तो भी ईश्वरकी कृपा मानूंगा।

मैथ्यूके सामने जो शर्तें[1] रखी गई हैं, उनपर वह आनेको तैयार है। अब वह वर्धा आश्रमसे पैसा माँग रहा है, ताकि उसमें से वह यात्रा-व्यय निकाल सके। मैं आश्रमको स्थिति बतानेको लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४१ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

१ देखिए पृ० ४ भी।

५४ पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

५ मई, १९३५

चि० अम्बुजम,[१]

तुमारा खत मिला। पिताजी के स्वास्थ्यके बारेमे मुझे खबर देते रहो।

तुमने चावल भेजे वह बहूत अच्छे थे। लेकिन थोडे पोलिश थे। पोलिश बिलकुल नही होने चाहिये।

क्रिश्नास्वामी[२] के लिये लडकी ढुढनेकी कोशीश अवश्य करो। लेकिन उसकी चिंता कैसे? चितासे लडकी थोडे ही मिलनेवाली है। वह तो प्रयत्नसे ही मिलेगी।

व्रतक श्लोक यह है

> **अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असग्रह,**
> **शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन।**
> **सर्वधर्मी समानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना[३],**
> **ही एकादश सेवावी नम्रत्व व्रत निश्चये॥[४]**

यह पढ सकती है?

साथका पत्र पिताजी का देना।

बापुके आशीर्वाद

मूलपत्रसे अम्बुजम्माल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१ एस० श्रीनिवास अय्यंगारकी पुत्री। वे बालिका उच्च विद्यालय, मद्रासकी प्रधान थी।

२ एस० अम्बुजम्मालके पुत्र।

३ अस्पृश्यताके प्रति सही दृष्टिकोण।

४ ये दो सस्कृत श्लोक विनोबा भावेने रचे थे और आश्रमकी प्रार्थनामें इनका गायन किया जाता था।

५५. पत्र : हीरालाल शर्माको

५ मई, १९३५

चि० शर्मा,

तुमको कल एक खत भेजा। अब स्टीमरके बारेमे उत्तर[1] आ गया है, सो उसके पीछे है,[2] ठीक है ना? [3] कार्गो बोटकी मुसाफिरी बिलकुल खराब नही है। मैं मुबईसे सीलोन तक कार्गो बोटमे ही गया था।[4] मुझे ज्यादा अच्छा लगा था। एकान्त थी।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १५८

५६. पत्र : बलीबहन एम० अडालजाको

६ मई, १९३५

चि० बली,

मेरे पत्रमे क्रोध नही था। हरिलालने मुझसे ऊँच-नीच कुछ नही कहा। मनुके पत्रके आधारपर ही मैंने वह-सब पूछा था, सो भी अपनी जानकारीके लिए। हरिलाल भी अगर इसमे बीचमे पडता है, तो मुझे क्या लेना-देना है? रामीकी सगाई भी तूने और हरिलालने की थी। विवाह कर देना तो फिर मेरे सिरपर आ पडा था, क्योकि हरिलालका उस समय दिमाग ठिकाने नही था। मनुका विवाह तू और हरिलाल कर दे, इसमे मुझे कोई एतराज नही है। यदि मुझे करना पडे, तो मनुको मेरे पास होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४२) से, सौजन्य मनुबहन मशरूवाला

१ घनश्यामदास बिड़लाका।

२ अर्थात् पत्रके पीछे। दरअसल गांधीजी ने यह पत्र घनश्यामदास बिड़लासे प्राप्त उत्तरकी दूसरी ओर लिखा था।

३ साधन सूत्रके अनुसार।

४ नवम्बर १९२७ में, देखिए खण्ड ३५।

५७ पत्र घनश्यामदास बिडलाको

वर्धा
६ मई, १९३५

भाई घनश्यामदास,

तुमारे खत मिले हैं। १७-१८ के नजदीक आ जाओगे तो अच्छा होगा। १६ उससे भी अच्छा। १८ को हिन्दी-सम्मेलनकी स्थायी समितिकी सभा होगी तो भी समय तो निकालुगा। २१ को मुझे भी मुबई जाना होगा। कमला नेहरूको मिलनेके लिये। वह तुमारी ही जहाजमे जायेगी। एसफेल्ट लाइनकी स्टीमर कलकत्तेसे जाती है। सीधी न्यूयार्क जाती है?

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मीराबहनकी मधुमाखीकी किताब वापिस चाहिये।

मूल (सी० डब्ल्यू० ८०१०) से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

५८ पत्र · अवधेशदत्त अवस्थीको

७ मई, १९३५

चि० अवधेश,

तुलसीदासने ही कहा है ना कि रामसे नाम बडा है। अर्थात् देहधारी रामसे देहातीत अरूपी, अनामी राम बडा है। दशरथनन्दन सीतापति राम सही तदपि हमारी कल्पनाके पूर्ण पुरुषोत्तम राम क्योकि [अव्यक्त है, अत] अव्यक्त भी व्यक्तसे भिन्न नही है। अव्यक्तकी ही यह सब माया है। राम शब्द पर मेरा कोई आग्रह नही। भले ओकार, कृष्ण, ईश्वर क्यो नही।

क्रोध तो आता है, उस पर क्रोध करता हू। पूर्ण विजय आत्म-दशन से ही सम्भव है।

हमको कोई कैसे भी नीच माने उनपर प्रेम करे, वही अहिंसा, बाकी सब माया।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१२) से।

५९ पत्र छगनलाल जोशीको

वर्धा
८ मई, १९३५

चि० छगनलाल,

बहुत दिन बाद तुम्हारा पत्र मिला है। तुम्हारे खिलाफ शिकायत तो आई थी, पर उसमे मुझे लिखनेकी कोई बात नजर नही आयी। जीवणलालके यहाँ आने पर कुछ लिखने लायक होगा तो लिखूगा। तुमने क्या सेवा-धर्म किसीकी खातिर अपनाया है? जबतक चल सके, चलाओ। तुम निश्चिन्त रहना। आखिरमे यदि कुछ करनेकी जरूरत जान पडी तो करेगे। तुम्हारा मानभग नही होने दूगा। तुम अपने काममे तन्मय रहना। व्यर्थका उद्वेग न करना।

आशा है, रमा[1] और बच्चे मजेमे होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५२९) से।

६०. पत्र : परीक्षितलाल ल० मजमूदारको

८ मई, १९३५

ाई परीक्षितलाल,

हरिभाईके सम्बन्धकी बात ठीक समझ गया। उसे एक पैसा भी देना मै अनुचित समझता हूँ। उसका भला इसीमे है कि उसे उसके प्रयत्नोपर छोड दिया जाये। यदि जमीन बेचकर वह वहाँसे आ जाये, तो उसे आगे बढानेमे कोई कठिनाई नही होगी। उसका सचीनके पास पडे रहना तो चाबुक बनानेके लिए भैसकी जान लेने-जैसा है। तुम्हारा कर्त्तव्य भी यही है कि उसे सचीनसे[2] अलग करो।

गुजरातके खर्चवाला तुम्हारा दूसरा पत्र ध्यानपूर्वक पढकर उसपर विचार कर रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९५९) से।

१ छगनलाल जोशीकी पत्नी।
२ देखिए पृ० १९।

६१. पत्र : उदयप्रसादको

८ मई, १९३५

भाई उदयप्रसाद,[1]

आपके पद्य कुछ याद तो आते हैं। मैंने पढे नही क्योकि भाई किशोरलाल व काकासाहेबने कहा उसमे पढनेके लायक कुछ बहुत नही है। १५ मिनिट भी कहासे?

मो० क० गाधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७५३) से।

६२. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
९ मई, १९३५

चि० मेरी,

डॉ० टैण्डीका[2] लिखा पत्र नत्थी कर रहा हूँ। उनका बिल ८७ रुपयेका बना है। मैने इसे चुकता करनेको कह दिया है।

तुमने मिरज जानेकी उनकी सलाहके बारेमे क्या सोचा है? अगर तुम पूरी तरह आराम करो और ठीक पौष्टिक आहार लेती रहो तो शायद और कुछ करनेकी जरूरत ही न पडे। मुझे सविस्तार लिखना।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च]

मैंने तुम्हे लिखा था या नही कि छोटेलाल मधुमक्खी-पालनका काय सीखनेको कोयम्बटूर गया है? देखता हूँ कि मनीआर्डर तुम्हे भेज दिया गया है। मुझे अफ्सोस है। डॉ० टैण्डीको वह राशि अब तुमको ही भेजनी पडेगी।

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४०) से। सी० डब्ल्यू० ३३७२ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१ बोडेगाँव, मध्य प्रान्तके।

२ डॉ० टैण्डी एफ० मेरी बारका इलाज कर रही थीं।

६३. पत्र : नारणदास गांधीको

९ मई, १९३५

चि० नारणदास,

साथमें भगवानजीका[1] पत्र है। इनकी सहायता करनेके लिए तुम जाना या किसी और को भेजना। आसपासके गावोमे जाना कोई बड़ी बात नही है। जाकर इनसे मिलना। वे सज्जन व्यक्ति हैं और बहुत-कुछ करनेकी इच्छा रखते हैं। यदि शालाको समय देनेकी इच्छा प्रकट करे तो उनकी सेवा स्वीकार करना। अलबत्ता, तुम्हारा अनुभव विपरीत हो तो छोड देना।

लीलावतीका पत्र साथमे है। केशूकी क्या खबर है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४३ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

६४. पत्र : नारणदास गाधीको

९ मई, १९३५

टाइटसके बारेमे तुम्हारा पत्र मिला। अगर आश्रममे गोशाला कायम न ही रह सके तो वह [टाइटस] बखूबी चला जाये।

बापू

[पुनश्च]

मैथ्यूको फिर लिखना ही है।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ९ श्री नारणदास गाधीने, भाग-२, पृ० १९०। सी० डब्ल्यू० ८४४२ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१ राजकोटके एक वकील भगवानजी अनूपचन्द मेहता।

६५. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

९ मई, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। क्या गायके बिना हरिजन आश्रम चल सकता है? मेरी धारणा यह है कि आश्रममें गायके साथ साँड़ रखना चाहिए, बाकीके ढोर पिंजरापोलको सौंप देने चाहिए। बीड़जका क्या करना चाहिए, यह सोच लेना। यदि सम्भव हो, तो मुझसे बिना पूछे, मगर ट्रस्टियोंसे पूछकर, ढोर बेखटके रामभाईको सौंप देना। क्या वे इतनी कीमत देंगे?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७८) से।

६६. पत्र : कृष्णचन्द्रको

९ मई, १९३५

चि० कृष्णचन्द्र,

तुमारा उद्देश तो आत्म-दर्शन है। उसके लिये एकादश व्रत[1] जिसका चितवन हम नित्य करते हैं, आवश्यक हैं। इसलिए आज तुमारे रास्तेमें थोड़ी [असुविधा] है। कौटुंबिक कर्ज भरनेका एक हदतक फर्ज बन गया सा है। सरल प्रयत्नसे यह भर दिया जा सकता है तो किया जाय। इसके लिये भी तुमारे पंच महाव्रत[2] तो आवश्यक है। मेरी आशा है कि प्रफुल्लित [चित्तसे] सब व्रतों पर कायम रहोगे।

एक वर्ष तक अभ्यास छोड़कर शरीरको अच्छा बना लो और बुद्धिको ताजा कर दो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२६८) से।

१. देखिए "पत्र : कृष्णचन्द्रको", पृ० ६७।

२. अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

६७ पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

वर्धा
१० मई, १९३५

चि० ठक्कर बापा,[1]

चन्द्रशेखरको लिखा आपका पत्र पढा। मेरे किस पत्रसे आपने यह निष्कष निकाला? ३,७४२-३-८ रुपये बट्टे खातेमे डाल दिये। इतना रुपया बट्टेखातेमे डाल देनेका मतलब हुआ कि 'हरिजन' ने दिवाला निकाला दिया। क्या यह रुपया 'हरिजन' कोडबाकमको भेट कर दे? जहातक मुझे याद है, मेरी आपके साथ कोडपत्रके बारेमे चर्चा हुई है। 'हरिजन' को जारी रखनेके लिए आप तो मुझे पैसा देनेको तैयार थे। अब आप 'हरिजन' पर बोझ डालना चाहते है? उसके पास पैसा हो जाये, तो जरूर डालिए।

४,००० रुपयेका नुकसान भुगताइयेगा, तो 'हरिजन' बन्द करनेकी नौबत आ जायेगी। ग्राहक बढानेके लिए किसीको कुछ न लिखे, यह मै ठीक ही समझता हूँ। उसमे कुछ सार होगा, ता लोग खरीदेगे। अन्यथा खत्म होता है तो हो जाये।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११५६)से।

६८ भेंट एक मिशनरी नर्सको[2]

[११ मई, १९३५ के पूव]

[नर्स] **मैंने सुना है कि आपको कभी क्रोध नहीं आता। क्या यह बात ठीक है?**

[गाधीजी] यह बात तो नही है कि मुझे क्रोध नही आता। बात यह है कि मै क्रोधको प्रकट नही होने देता। धैर्यके गुणका मै अक्रोधके रूपमे अभ्यास करता रहता हूँ, और साधारणतया उसमे मुझे सफलता भी मिली है। पर वास्तवमे जब क्रोध आता है, तब मै उसे दबा-भर देता हूँ। यह पूछना व्यर्थ ही होगा कि मै किस तरह उसे दबा पाता हूँ। अभ्याससे यह आदत प्रत्येक मनुष्य डाल सकता है और निरन्तर अभ्याससे उसमे उसे सफलता भी मिल सकती है।

आपने अपने अन्तरमें दीन-दुखियोंके प्रति प्रेमका अनुभव कब किया? क्या आप मुझे वह समय अथवा प्रसग बतला सकेंगे?

१ हरिजन सेवक सघके महामत्री।

२ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत।

आदिसे ही दीन-दुखियोके प्रति प्रचुर प्रेम मेरे जीवनका अभिन्न अग रहा है। अपने अतीत कालके जीवनमे से दृष्टान्त देने बैठू तो मै बतला सकता हूँ कि मेरा यह स्वभाव एक जन्मजात वस्तु है। यह मैने कभी माना नही कि मेरे और गरीबोके बीचमे किसी तरहका कोई भेद है। उन्हे सदा अपना सगा-सम्बन्धी ही माना है।

गन्दगी और कूडा-करकट क्या आपके मनमें घृणा पैदा नहीं करते?

मेरे मनमे गन्दे लोगोके लिए तो घृणाकी भावना पैदा नही होती, पर गन्दगी देखकर मै काप जाता हूँ। मै गन्दी थालीमे नही खा सकता, न गन्दा चम्मच या रूमाल छू सकता हूँ। पर कचरेको उसके योग्य स्थानपर ले जाकर डाल देना मै ठीक समझता हूँ। वहा वह कचरा कचरा नही रहता।[1]

यह मुझे जरूर लगता है कि भिक्षावृत्तिको प्रोत्साहन देना अच्छा नही, तो भी मै भिखारीसे काम लेकर उसे भोजन दिये बिना नही जाने दूगा। अगर वह काम न करे तो उसे भूखा चला जाने दूगा। जो अपग है, लूले-लँगडे या अन्धे है उनकी परवरिश सरकार को करनी चाहिए। पर अन्धेपनके ढोगके नामपर या सचमुचके अन्धेपनके नामपर आज भारी दगाबाजी चल रही है। कितने ही अधे अनुचित रीतिसे पैसा पैदा करके धनी बन गये है। उन्हे इस लोभ-पकमे फँसानेसे तो यह कही अच्छा है कि उन्हे किसी अनाथाश्रममे भरती कर दिया जाये।

क्या आप लोगोका धर्मान्तिरण करनेके लिए मिशनरियोके भारत-आगमनपर रोक लगा देना चाहेगे?

उन्हे रोकनेवाला मै कौन होता हूँ? अगर मेरे हाथमे सत्ता हो और मै कानून बना सकू तो मै धर्मान्तरणका यह सारा कारोबार ही बन्द करा दूँ। इससे वग-वर्गके बीच निश्चय ही निरथक कलह और मिशनरियोके बीच बेकारका द्वेष बढता है। यो किसी भी राष्ट्रके लोग शुद्ध सेवा-भावसे आये तो मै उनका स्वागत करूँगा। हिन्दू-कुटुम्बोमे मिशनरीके प्रवेशसे वेश-भूषा, रीति-रिवाज, भाषा और खानपानतक मे परिवतन हो गया है और इस सबका नतीजा यह हुआ है कि सुन्दर हरे-भरे कुटम्ब छिन्न-भिन्न हो गये।

आप जो कहते है वह तो पुराने जमानेकी बात है। अब धर्म-परिवर्तनके साथ इन सब चीजोका सम्बन्ध नहीं है।

बाह्य स्थिति शायद बदल गई होगी, पर आन्तरिक स्थिति तो अधिकतर अब भी वैसी ही है। हिन्दू-धमकी निन्दा दबी जबानसे आज भी की जाती है। मिशनरियो की दृष्टिमे अगर आमूल परिवतन हो गया होता तो क्या आज भी मिशनोकी दुकानो पर मरडोककी किताबे बिकने दी जाती? क्या मिशनरियोके सघोने किताबोके बेचे जानेकी मनाही कर दी है? इन किताबोमे सिवा हिन्दू-धर्मकी निन्दाके और है ही क्या? आप कहती है कि उस पुरानी कल्पनाके लिए अब स्थान नही रहा। अभी कुछ ही दिन हुए, एक मिशनरी एक दुर्भिक्ष-पीडित अचलमे पैसा लेकर पहुँच गया, अकाल-पीडितोको उसने पैसा बाँटा, उन्हे ईसाई बनाया, फिर उनका मन्दिर हथिया

१ यहाँ महादेव देसाई लिखते हैं कि इसके बाद मुलाकातीने भिखारियोंकी समस्याकी चर्चा छेडी।

लिया, और उसे तुडवा डाला। यह अत्याचार नही तो क्या है? जिन हिन्दुओने ईसाई धम ग्रहण कर लिया था उनका अधिकार तो उस मन्दिरपर रहा नही था, और ईसाई मिशनरीका भी उसपर कोई हक नही था। पर वह मिशनरी वहा पहुँचता है, और जो लोग कुछ ही समय पहले यह मानते थे कि उस मन्दिरमे ईश्वरका वास है, उन्हीके हाथसे उसे तुडवा डालता है।

पर गाधीजी, आप धर्म-परिवर्तन-मात्रके विरुद्ध क्यो हैं? हम तो लोगोको और भी अच्छा जीवन बितानेके लिए आमन्त्रण देते हैं, क्या उसके लिए बाइबिलमें प्रमाण नहीं है?

हाँ, है, पर उसका यह अथ नही है कि उन्हे आप ईसाई धममें दीक्षित कर ले। आप अगर अपने धमवचनोका ऐसा अथ करने लग जाये जैसाकि किया जा रहा है तो इसका यह मतलब हुआ कि आप लोग मानव-समाजके उस विशाल हिस्सेको पतित मानते है जिसका विश्वास वैसा नही है जैसा आपका है। ईसा मसीह यदि आज पृथ्वीपर पुन अवतीण हो तो ईसाई धमके नामपर जो बाते आज हो रही है उनमे से बहुत-सी बातोको वे निषिद्ध ठहरा दे। जो मुखसे 'प्रभो, प्रभो' उच्चारण करता है, वह ईसाई नही है, सच्चा ईसाई वह है जो "प्रभुकी इच्छाके अनुसार आचरण करता है"। जिस मनुष्यने ईसा मसीहका नाम नही सुना, क्या वह प्रभुकी इच्छाके अनुसार आचरण नही कर सकता?

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ११-५-१९३५

६९ घोर दुर्व्यवहार

करीब चार महीनेसे मै हरिजन सेवक सघकी ओरसे एक बस्तीमे काम कर रहा था। मेरे काम शुरू करनेसे पहले नैतिक अपराध करनेपर एक हरिजनको बस्तीसे निकाल दिया गया था। एक दिन वह हरिजन अपने लडकेको, जो हमारी पाठशालामे पढ रहा था, देखने बस्तीमे वापस आया। मैने उसे अपने साथ ठहरा लिया। रातमे वह पाठशालाके ओसारेमे पडा हुआ था। मै किसी कामसे बाहर गया था। इस बीच जिसे उसने फुसलाया था उस औरतके पाँच नजदीकी नातेदार और कुछ तथाकथित सवण हिन्दू वहाँ चढ आये, और विवाहित स्त्रीको फुसलानेके उस पुराने अपराधपर उस हरिजनको उन लोगोने बहुत बुरी तरह पीटा, और घसीटकर उसे ओसारेसे बाहर कर दिया। ज्यो ही मुझे इसका पता लगा, मै उन लोगोके पास पहुँचा, जिन्होने कानूनको अपने हाथमे ले लिया था। मैने उनके उस दुव्यवहारका विरोध किया, और उस हरिजनको फिरसे बस्तीमे दाखिल कर लेनेके लिए उनसे कहा। उन्होने साफ इन्कार कर दिया। इसलिए मैने वहाँ रहना ठीक नही समझा, और उस गाँवको छोडकर चला आया।

एक लम्बे पत्रका यह बहुत ही सक्षिप्त रूप है। इस बयानकी सत्यताका मै कोई दावा नही कर सकता। किन्तु जैसा कहा गया है, वह यदि सही है, तो निश्चय ही लोगोका उस हरिजनको उस तरह पीटना एकदम अनुचित था। अगर उसने कोई जुर्म किया था तो उसपर मुकदमा चलाना चाहिए था। पर इस तरह कानूनको खुद अपने हाथमे ले लेनेका, खुद ही मुसिफ बन जानेका किसीको कोई अधिकार नही था। जो बस्ती इतना मामूली-सा इन्साफ करनेको भी तैयार नही थी, वहा इस हरिजन-सेवकने न रहना मुनासिब समझा तो अच्छा ही किया। मै आशा करता हूँ कि यह मामला स्थानीय सघके आगे रखा गया होगा और सघने इस बातका प्रयत्न किया होगा कि लाग उस हरिजनके प्रति सद्व्यवहार करने लगे। इस सारे मामलेकी तहकीकात बहुत अच्छी तरह होनी चाहिए। ऐसे मामले शायद अक्सर और काफी तादादमे होते रहते है। यह हरिजन-सेवकोका काम है कि एक ओर तो वे अत्याचार-पीडितोकी रक्षा करे, और दूसरी ओर जहाँ उनके चरित्रमे कोई दोष देखे वहा उन्हे सदाचारका मार्ग दिखाये। अपराधियोकी कोई खास जाति नही होती। दूधका धोया कोई नही है। अपराधियोके हृदयपर केवल सुयोग्य और सच्चरित्र जन-सेवकोका ही प्रभाव पड सकता है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ११-५-१९३५

७० हरिजनोके लिए कुएँ

बम्बई-सरकारने बम्बई सूबेमे हरिजनोके लिए कुएँ बनवानेका जो निर्णय किया है, उसके लिए उसे धन्यवाद दिया जाना चाहिए। कामको देखते हुए तो उसके लिए रकम बहुत ही कम रखी गई है। यह तो हम सबको भलीभाँति विदित है कि वर्षोंसे काग्रेस द्वारा स्थापित भूतपूर्व अस्पृश्यता-निवारक बोर्डकी तरफसे, और अब सन् १९३२ से हरिजन सेवक सघकी ओरसे गुजरातमे हरिजनोके लिए कुएँ बनवाये जा रहे है। सघका कूप-निर्माणका कार्यक्रम काफी व्यापक है। चुपचाप काम करनेवाले महान् जन-सेवक श्रीयुत जूथाभाईने भी इस सुन्दर धर्म-कार्यपर ध्यान देनेका निश्चय किया है। क्या ही अच्छा हो कि इस एक ही उद्देश्यको लेकर काम करनेवाली भिन्न-भिन्न सस्थाओमे पूरा-पूरा सहयोग रहे। अगर सहकारी प्रयत्न सम्भव न हो, तो कमसे-कम श्रम और कार्यक्षेत्रका विभाजन तो होना ही चाहिए। किसी भी अवस्थामे जो-कुछ भी काम किया जाये उसमे यह ध्यान रहे कि काम शीघ्रता से हो, अच्छा हो, और पैसा कमसे-कम खर्च हो। सस्तेसे-सस्ता काम तो तभी हो सकता है, जब हरिजन हिन्दू या सवर्ण हिन्दू अथवा दोनो ही स्वेच्छापूर्वक इस धर्म-कार्यमे अपने शारीरिक श्रमका योग दे।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ११-५-१९३५

७१ एक ग्राम-सेवकके प्रश्न

एक ग्राम-सेवक लिखता है

१ सौ-एक घरके एक छोटे-से गाँवमें मै काम कर रहा हूँ। आपने कहा है कि दवा-दारू देनेके पहले ग्राम-सेवकोको स्वच्छतापर ध्यान देना चाहिए। लेकिन जब कोई ज्वर-पीडित ग्रामवासी मदद माँगने आये, तब ग्राम-सेवकका क्या कर्त्तव्य है? अबतक तो मै उन्हे गाँवकी दुकानोंमें मिलनेवाली देशी जडी-बूटियोको ही काममें लानेकी सलाह देता आया हूँ।

२ बरसातके दिनोमें मैलेका क्या करना चाहिए?

३ मैला क्या सभी फसलोमें काम दे सकता है?

४ शक्करके बजाय गुड खानेमें क्या लाभ है?

जहा ज्वर, कब्ज या इसी प्रकारके सामान्य रोगोके रोगी ग्राम-सेवकोकी मदद लेने आये, वहाँ वे उनकी जो मदद कर सके, जरूर करे। रोगका निदान अगर सही हो गया हो तो बेशक गॉवमे उस रोगकी सस्तीसे-सस्ती और अच्छीसे-अच्छी दवा मिल जायेगी। दवाइयॉ कोई अपने पास रखना ही चाहता है तो अण्डीका तेल, कुनैन और उबला हुआ गरम पानी सबसे बढिया दवाइया है। अण्डीका तेल सभी जगह मिल सकता है। सनायकी पत्तीसे भी वही काम निकल सकता है। कुनैनका कम ही उपयोग करना चाहिए। प्रत्येक प्रकारके ज्वरमे कुनैन देनेकी जरूरत नही और न प्रत्येक ज्वर कुनैनसे काबूमे आता ही है। अधिकाश ज्वर तो पूर्ण या अध-उपवाससे ही शान्त हो जाते है। अन्न और दूधको छोड देना और फलोका रस अथवा मुनक्के का उबला हुआ पानी लेना और नीबूके ताजे रस या इमलीके साथ गुडका उबला हुआ पानी लेना भी अध-उपवास है। उबला हुआ पानी तो रामबाण औषधि है। आतोको वह खलबला डालता है और पसीना लाता है, जिससे बुखारका जोर कम हो जाता है। यह एक ऐसी रोगाणुनाशक औषध है, जिसमे किसी भी तरहकी जोखिम नही और सस्ती इतनी कि एक कौडी भी खच नही होती। हर हालतमे जब भी पानी पीना हो तो उसे कुछ सिराकर पीना चाहिए। उतना ही गरम पीना चाहिए जितना अच्छी तरह सहन हो सके। उबालनेका मतलब सिर्फ गरम करना नही है। पानीमे जब बुलबुले उठने लगे और उससे भाप निकलने लगे, तभी उसे उबला हुआ समझना चाहिए।

जहॉ ग्राम-सेवक खुद किसी निश्चयपर न पहुँचें वहाँ रोगीको पूरी तरह स्थानीय वैद्य पर छोड देना चाहिए। जहाँ वैद्य न हो अथवा हो तो भरोसेका न हो और ग्राम-सेवक पडोसके किसी परमार्थी डॉक्टरको जानते हो, तो उससे जरूर मदद लेनी चाहिए।

पर वे देखेंगे कि रोगके उपचारमे भी स्वच्छताका स्थान सबसे महत्त्वका है। उन्हे यह याद रखना चाहिए कि सवश्रेष्ठ वैद्य तो प्रकृति ही है। इस बातका वे विश्वास रखे कि मनुष्य जिसे बिगाड देता है, प्रकृति उसे सँवारती रहती है। लाचार तो वह उस समय मालूम पडती है जब मनुष्य लगातार उसकी अवहेलना करता है। तब जो असाध्य हो जाता है, उसे नष्ट कर डालनेके लिए वह अपने अन्तिम और अटल दूत मृत्युको भेजती है और उस देहधारीको नया चोला पहना देती है।

२ बरसातके दिनोमे भी गाँववालोको ऐसी जगहोपर शौच करना चाहिए जहा मनुष्यके आने-जानेका रास्ता न हो। मैलेको गाड जरूर देना चाहिए। पर ग्रामवासियो को परम्परासे जो भ्रामक शिक्षा मिली है, उसके कारण मैलेको गाडनेका यह प्रश्न सबसे कठिन है। सिदी गाँवमे हम लोगोको यह समझानेका प्रयत्न कर रहे हैं कि वे सडकोपर पाखाना न करे बल्कि पासके खेतोमे जाये और अपने पाखानेपर सूखी-साफ मिट्टी डाल दिया करे। दो महीनेकी लगातार मेहनत और नगरपालिकाके सदस्यो तथा दूसरे लोगोके सहयोगका इतना परिणाम तो हुआ है कि वे साधारणतया सडकोको खराब नही करते। इसके बजाय पासके खेतोमे चले जाते है और उन खेतोके मालिकोने भी उन्हे इसके लिए अपने खेतोके इस्तेमालकी इजाजत देनेकी भलमनसाहत दिखाई है। मगर लोगोसे कितना ही क्यो न कहा जाये, मिट्टी तो वे अब भी अपने मल-मूत्रपर नही डालते। पूछिए तो यह जवाब देते हैं कि यह तो भगीका ही काम है, मैलेको देखना ही पाप है, फिर उसपर मिट्टी डालना, यह तो घोर पाप हुआ। उन्हे शिक्षा ही ऐसी मिली है। यह विचित्र विश्वास उसी शिक्षाका फल है। इसलिए ग्राम-सेवकोको सिफ नव-सस्कारकी ही रचना नही करनी है। ग्रामवासियोके हृदयपर नया सस्कार जमानेके पहले ग्राम-सेवकोको उनके इन रूढिगत सस्कारोको एकदम मिटा देना होगा। अगर हमारा अपने कार्यक्रममे दृढ विश्वास है, अगर हममे नित्य सवेरे झाडू आदि लगानेका काम चलाते रहनेका पर्याप्त धैय है और सबसे बडी बात यह कि अगर हम गाँव-वालोके इन कुसस्कारोपर चिढते नही हैं, तो उनके ये सब मिथ्या विश्वास इस प्रकार लुप्त हो जायेगे, जिस प्रकार सूयके प्रकाशसे कोहरा नष्ट हो जाता है। युगोका यह वज्र-अज्ञान कही आपके दो-चार महीनेके पदाथ-पाठसे दूर हो सकता है?

सिंदी गावमे हम वर्षाका सामना करनेकी भी तैयारी कर रहे हैं। अपनी खेतीकी रखवाली तो किसान करेगे ही। तब इस तरह वे लोगोको शौचके लिए अपने खेतोमे थोडे ही आने देंगे, जिस तरह अभी आने देते हैं। हमने लोगोके सामने यह तजवीज रखी है कि वे खेतीकी हदबन्दीके अन्दर कुछ जमीनको बिलकुल अलग करके उसमे बाड लगाये। वे जो चन्द फुट जमीन छोड देंगे उसमे चौमासेके अन्तमे काफी खाद तैयार हो जायेगी। वह वक्त आ रहा है जब खेती करनेवाले खुद ही लोगोसे अपने खेतोमे शौच करनेको कहेगे। अगर डॉ० फाउलरके हिसाबको मान ले तो किसी भी खेतमे बिला नागा शौच-क्रिया करनेवाला मनुष्य वषमें दो रुपयेकी खाद उस खेतको दे देता है। ठीक दो ही रुपयेकी खाद हासिल होती है या कुछ कम-ज्यादा, इसमे सन्देह हो सकता है, पर इसमे जरा भी सन्देह नही कि मल-मूत्रके सचयसे खेतको फायदा होता है।

३ यह सलाह तो किसीने दी नही है कि मैला ज्यो-का-त्यो सभी फसलोके लिए बतौर खादके काममे आ सकता है। मतलब सिर्फ इतना है कि मैला मिट्टीके साथ मिलकर एक नियत समयके बाद सुन्दर खादमे परिणत हो जाता है। मिट्टीमे मिलनेके बाद मैला कई प्रक्रियाओसे गुजरता है, तभी वह जमीन जोतने-बोने लायक होती है। जहाँ मैला दबाया गया हो, उस जमीनको नियत समयके बाद खोदनेपर अगर मिट्टीसे कोई दुगन्ध न आती हो और उसमे मैलेका नामोनिशानतक न हो तो समझ लेना चाहिए कि उस जमीनमे अब बीज बोया जा सकता है। मै पिछले तीस सालसे इसी प्रकार मैलेकी खादका उपयोग हर तरहकी फसलके लिए करता रहा हूँ और इससे अधिकसे-अधिक लाभ हुआ है।

४ इस बातको सभी विशेषज्ञ एक स्वरसे मानते है कि शक्करसे गुड अधिक ताकतवर है, क्योकि गुडमे जो क्षार और विटामिन है, वे शक्करमे नही है। जिस प्रकार मिलके पिसे-छने आटेसे चक्कीका बिना छना आटा अथवा पालिशदार चावलसे बिना कुटा, बिना पालिशका चावल अच्छा होता है, उसी प्रकार शक्करके मुकाबले गुड तो अच्छा होगा ही।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ११-५-१९३५

७२. पत्र : टी० प्रकाशम्‌को

वर्धा

११ मई, १९३५

प्रिय प्रकाशम्,

मैने आपकी टिप्पणी पढ ली है। मै वस्तु-विनिमय-प्रणालीमे विश्वास करता हूँ। वह केवल ग्रामीण समाजपर लागू हो सकती है। प्रणाली है ही कुछ इस ढगकी कि वह छोटे-छोटे मानव-समुदायोके बीच ही चल सकती है। ग्राम-आन्दोलन अगर सफल होता है[1] तो उसका यही परिणाम निकलना चाहिए कि गाँवोके लोग अपनी-अपनी वस्तुओका परस्पर विनिमय करने लगे। इसका प्रचार केवल उपदेश देनेसे नही, बल्कि जहाँ भी मुमकिन हो, इसे अमली रूप देनेसे ही होगा।

हृदयसे आपका,

मो० क० गाधी

१ मूलमें इस वाक्यांशके कुछ शब्द पढ़े नही जा सके। इसे अनुमानसे पूरा करके अनुवाद किया गया है।

७३ पत्र जयरामदास दौलतरामको

११ मई, १९३५

प्रिय जयरामदास,

यह सब क्या है? आनन्दका[1] क्या रहा? तुम्हारा कैसा चल रहा है? क्या तुम चाहते हो कि मै आनन्दको अदायगी करना फिर शुरू कर दू? तुम अपने काय-कलापकी जानकारी मुझे अवश्य देते रहना।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च]

मलकानी यही है। साँपके काटनेकी बातको लेकर चिन्ता करनेकी जरूरत नही।[2]

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९७१४) से, सौजन्य जयरामदाम दौलतराम

७४ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

११ मई, १९३५

चि० अम्बुजम,

तुम अपने लडकेकी शादीकी चिन्ता बेकार ही करती जान पडती हो। यह तो बिलकुल ऐसा मामला है जो तुम्हे पूरी तरह माता-पितापर छोड देना चाहिए। वे जैसा ठीक समझेगे वैसा करेगे। यह बात कठिन है। लेकिन लगता है, उन्होने हर कठिनाईपर पार पा लिया है। तुम्हे चिन्तासे बचना चाहिए।

सस्नेह,

बापू

मूल अग्रेजीसे अम्बुजम्माल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१ आनन्द टी० हिंगोरानी।

२ देखिए 'पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको", ११ ५ १९३५ और "पत्र जमनालाल बजाजको", १३ ५-१९३५।

७५ पत्र जमनालाल बजाजको

[११ मई, १९३५][1]

चि० जमनालाल,

तुम्हारे पत्र मिले। महादेव वल्लभभाईके बुलाने पर बोरसद गया है। दो-चार दिनमे वापस आयेगा। मेरीबहन बहुत बीमार हो गई थी। इटारसीके अस्पतालमे थी। उसका ८७ रुपयेका बिल मैंने चुका दिया है। सम्भव है, उसे क्षय हो गया हो। इटारसीकी डाक्टरनी कहती है, उसे मिरज भेजना चाहिए। अभी तो वह बैतूलमे है।

मुझे शायद २४को बोरसद जाना पडेगा। कमलासे मिलने बम्बई तो जाना ही होगा, सो २१को यहासे रवाना हो जाऊँगा।

किशोरलाल और गोमती कल आये। गोमतीको थोडा बुखार आया, इससे कमजोर हो गई है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी स्थायी समितिकी बैठक १८को यही रखी ,गई है।

रामकृष्णका काम चल रहा है। लगता है, ओम[2] अपने काममे डूबी हुई है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

सम्मेलनमे एक लाख नही मिला, यह तो जानते हो न? जिसे ठीक समझो, उसे लिखना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६८) से।

१ जमनालाल बजाजने साधन-सूत्रमें इस पत्रकी प्राप्ति तिथि १४ ५ १९३५ दी है। किशोरलाल मशरूवाला और उनकी पत्नी वर्धा १० मई, १९३५को पहुँची थी। देखिए "पत्र मणिलाल और सुशीला गाधीको", १३ ५ १९३५ भी।

२ उमा, जमनालाल बजाजकी पुत्री।

७६ पत्र . अमृतलाल वि० ठक्करको[1]

११ मई, १९३५

भाई ठक्कर बापा,

[2]के बारेमे मुझे तो पहलेसे ही सन्देह था। मुझे उसका काम साफ नही लगा। ढोरोसे जो मिला, उसमे से शुक्ल आदिकी राय विरुद्ध होते हुए भी कुछ देना शायद ठीक नही होगा। अत यदि आपको उसके ऊपर पूरा भरोसा हो, तो जो दूसरा पैसा मेरे नाम पडा है, उसमे से दे दीजिए।

मलकानीके सम्बन्धमे कल ही तो तार किया था। आज दूसरा करना पडा।

वह नालवाडी काम देखने गया था। वहासे लौटते हुए अँधेरेमे किसीने[3] काट लिया। साथमे आदि थे। उन्होने स्थानपर रखा। वाहन मिलनेपर अस्पताल ले गये। वहा चीरा लगाकर लहू निकाला गया। रात ठीक बीती।

दो-एक दिन तो अस्पतालमे लगेंगे ही। इसके सिवा मुझे लगता है कि आप दोनोमे से कोई दिल्लीमे न हो, यह ठीक नही है। आप देख आये हो उस परसे जो अमलमे लाना हो आपकी गैरहाजिरीमे जो हुआ हो योजना बनाई जाये, आदि बहुत आवश्यक है। कुएँका एक तो है ही। ऐसे अन्य भी बहुत काम होने चाहिए। अत मेरे सुझावोपर विचार कीजिएगा। मैंने तो मलकानीसे भी कल यही कहा था, और फिर आपको तार किया। किन्तु इसमे आपको कोई वैचारिक दोष दिखाई दे, तो मुझसे पूछिएगा।

चन्द्रशकरको आपने जो जवाब लिखा है, उससे सम्बद्ध अपना विचार[4] मैंने आपको कल भेजा है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० २२७६५) से।

१ पेन्सिलसे लिखे इस पत्रकी फोटो नकल बहुत धुँधली है और उसमें कुछ शब्द पढ़े नही जाते। फोटो नकलके साथ पत्रकी एक अपूर्ण प्रतिलिपि भी नत्थी है। यह प्रतिलिपि शायद मूलके आधारपर तैयार की गई है। अनुवाद उसी प्रतिलिपिसे किया गया है। इसी कारण अनुवादमें यत्र तत्र स्थान रिक्त छोड़ने पड़े है।

२ नाम छोड़ दिया गया है।

३ साँप, देखिए "पत्र जयरामदास दौलतरामको", ११ ५ १९३५।

४ देखिए "पत्र अमृतलाल वि० ठक्कर को", १०-५ १९३५।

७७ पत्र : कासिम अलीको

११ मई, १९३५

भाई कासिम अली,

'शिवा बावनी'[1] के बारेमे मैंने तजवीज की थी अबी भी हो रही है।

ग्राम उद्योग सघके तरफसे तुमको उत्तर दे दिया है। ग्राम उद्योगके काममे किसीको रुकावट तो है ही नही।

दरमाह तो दिया नही जाता है।

मो० क० गाधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७५१) से।

७८ पत्र छगनलाल जोशीको

वर्धा
१२ मई, १९३५

चि० छगनलाल,

तुम्हारे पत्र पढ गया — मेरे नाम लिखा पत्र, ठक्कर बापाको लिखा पत्र और 'रोशनी'[2] मे लिखा लेख भी। भाई जीवणलालसे[3] भी बात की। उस समय भाई नानालाल उपस्थित थे। बापाको लिखा तुम्हारा पत्र और 'रोशनी' मे लिखा तुम्हारा लेख मुझे ठीक नही लगा।

तुम्हारे कामकी मर्यादा तय कर दिये जानेकी जरूरत मै मानता हू। तुम्हारी स्वतन्त्रताकी रक्षा होनी चाहिए। जो वैमनस्य चल रहा है, उसका कारण मुझे केवल लोगोके स्वभावकी भिन्नता दिखाई देती है। सघसे तुम्हारे निकल जानेमे मुझे कोई लाभ दिखाई नही देता और न भाई जीवणलालके निकल जानेमे ही। अमीर और गरीब साथ मिलकर काम न कर सके, यह हमारे लिए शर्मकी बात है। भाई जीवण-

१ शिवाजी की प्रशस्ति में लिखा भूषणका काव्य ग्रन्थ।

२ उन दिनों सौराष्ट्रसे प्रकाशित होनेवाला एक गुजराती साप्ताहिक।

३ जीवणलाल मोतीचद शाह, कलकत्ताके एक उद्योगपति, जिन्होंने गाधीजी की खादी और हरिजन विषयक प्रवृत्तियोंके लिए आर्थिक सहायता दी थी।

लाल तुम्हे सहन करे और तुम उन्हे सहन करो, ऐसा होना चाहिए। भाई जीवण-लालसे सलाह किये बिना तुम कुछ करना चाहते हो, ऐसा तो मुझे मालूम नही होता। और मुझे यह भी नही लगता कि जीवणलाल तुम्हारे साथ सलाह-मशविरा नही करना चाहते। इसलिए आज तो मै इतना ही लिखकर निबटाना चाहता हूँ कि तुम दोनो यह निश्चय कर लो कि जिस तरह सगे भाई साथ मिलकर काम करते हैं उसी तरह तुम दोनोको भी साथ मिलकर ही काम करना है। मैंने भाई जीवणलालसे भी यही कहा है। यह पत्र भी उन्हे दिखा दिया है। इसकी नकल ठक्कर बापाको भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३०) से।

७९. पत्र एस० अम्बुजम्मालको

१२ मई, १९३५

चि० अम्बुजम,

तुमारा खत और रु० ११० मिले। कृष्णाके लिये चिता कुछ भी न की जाय। मुझे ठडे प्रदेशमे जानेकी आवश्यकता नही है। और यहा काम इतना पडा है कि मै निकल भी नही सकता।

एकादश व्रत है वह देश सेवाके साधन है। इसलिये देश सेवा व्रतमे वही रखी गई।[1]

पिताजी को शीघ्र पहाडमे ले जाओ।

बापुके आशीर्वाद

मूल से अम्बुजम्माल पेपस, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१ देखिए पृ० ४०।

८० पत्र अमृतकौरको

वर्धा
१३ मई, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा पत्र मैने सी० एफ० ए[न्ड्रयूज]को दिखा दिया है। वे शायद इस महीनेकी २५ तारीखसे पहले तुम्हारे यहाँ नही पहुच सकेंगे। सेरेसोल[1] तथा विलकिन्सन[2] १६ तारीखको यहाँ आ रहे है। वे २३ तारीखको समुद्री मार्ग द्वारा यूरोपके लिए रवाना होगे।

तुमने जो दो किस्मके नमूने यहाँ छोडे थे वैसे कुछ और लिफाफे तथा पत्र लिखनेके कागज मै बनवा रहा हूँ। अगर तुम्हे और भी किसी किस्मके चाहिए तो उसके नमूने भेज दो। मै तुम्हे और अधिक तभी भेजूगा जब तुम्हारा आर्डर आयेगा। मै तुम्हारे लिए उनका स्टाक रखूगा। जो पैकेट तुम्हे भेजा गया है, उसके दाम तुम यहाँ आनेपर अदा करोगी।

आशा है, मै कुछ ही दिनोमे काफी मात्रामे पूनियाँ भेज दूँगा।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३२) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३४१ से भी

१ पिअरे सेरेसोल, स्विट्जरलैंडके एक इंजीनियर और इंटरनेशनल वॉलंटरी सर्विस (अन्तर्राष्ट्रीय स्वयसेवक दल) के अध्यक्ष। १९३४ में सी० एफ० एन्ड्रयूजकी अपीलपर बिहारके भूकम्प पीड़ितोके लिए राहत-कार्य करनेके लिए ये भारत आ गये थे।

२ जो विलकिन्सन भी सी० एफ० एन्ड्रयूजके कहनेपर ही भारत आये थे।

८१ पत्र : जमनालाल बजाजको

१३ मई, १९३५

चि० जमनालाल,

राधाकृष्णके[1] नाम तुम्हारा पत्र मिला है। मेरा विश्वास है कि तुम्हे इस तरहके काममे पडनेकी कोई जरूरत नही है। यह काम अब लगभग समाप्त हो गया जान पडता है। तुम्हारा कत्तव्य वहाँ रहकर शरीरको पूरी तौरसे स्वस्थ कर लेना है। जूनके अन्ततक नीचे उतरना ही नही है। जो-कुछ हुआ है, वह विपरीत तो हुआ है, पर उसमे ऐसी उलझने है कि बीचमे पडनेसे बहुत सार नही निकल सकता। जो-कुछ हो रहा है, सो होते रहने देना ठीक है। दूर बैठकर जो सलाह दी जा सकती है, सो हम दे।

इन्दौरसे कुछ नही मिला, यह लिख चुका हूँ।[2] अब तुम्हे जिनको लिखना हो उन्हे लिखो।

की[3] बात समझता हूँ। उसे लिखा मेरा पत्र तुम्हे मिल गया होगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी स्थायी समितिकी बैठक यहाँ १८ तारीखको होगी। सदस्योको बँगलेमे ठहरानेके लिए राधाकृष्णसे कह दिया है।

एन्ड्रचूज यही है। उन्हे मगनवाडीमे ठहराया है। मलकानी भी यही है। उसे साँपने काट लिया था। वह भी अब ठीक है, क्योकि तुरन्त उपचार किया जा सका था।

[पुनश्च]

मदालसाका पत्र नियमित रूपसे मिलना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६७) से।

१ राधाकृष्ण बजाज, जमनालाल बजाजके भतीजे।

२ देखिए पृ० ५५।

३ नाम छोड दिया गया है।

८२ पत्र. मणिलाल और सुशीला गाधीको

१३ मई, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्र मिले। आखिर मेरे सूतका कपडा समयपर तैयार नही ही हुआ। किसी दिन तो हो ही जायेगा।

फीनिक्ससे मैंने जिस तरह रोगको निकाल बाहर किया, उसी तरह तुम भी कर सकते हो। केवल भोजनमे और खेतकी उपजमे रद्दोबदल कर देनेसे रोग चला गया था। मलेरिया तो शायद ही कभी होता था। उन दिनो दूध तो हम लोग लेते ही नही थे।

तुम्हे क्या रद्दोबदल करनी चाहिए, यह तो तुम्हीको सोचना पडेगा। किशोरलाल, गोमती और अनसूया[1] तीन दिन पहले ही यहा आये है। छुट्टी पूरी होने पर अनसूया चली जायेगी। सफरमे किशोरलालकी तबीअत कुल मिलाकर ठीक ही रही।

रामदास बम्बईमे बस जाने के लिए खट रहा है। उसने भी छापाखानेमे काम करना शुरू कर दिया है।

हरिलालको पुर्नविवाह करना है, इसलिए वह राजकोट गया है। वहाँ प्रयत्न करेगा और कोई धन्धा भी खोजेगा। और तरहसे तो वह ठीक लगता है।

कान्ति,[2] कनु[3] अभीतक तो यही है। एन्ड्रचूज परसो आये। देवदास दिल्लीमे है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

ठक्करबापा ने गोकलदास गराचको पहुँच भेजी होगी।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३७)से।

१ हरिलाल गाधीकी दौहित्री।

२ हरिलाल गाधीके पुत्र।

३ नारणदास गाधीके पुत्र।

८३ पत्र : महावीर गिरिको

१३ मई, १९३५

चि० महावीर,

तेरे पत्रको विवाहका निमन्त्रण मानू न? मैत्री,[1] दुर्गा,[2] सत्यदेवीके[3] पत्र भी मिले हैं। सबको अलग-अलग जवाब देनेका समय नहीं है। दुर्गा और उसके पति दीर्घायु हो, सादा और सेवामय जीवन बिताये तथा आश्रमका नाम ऊँचा करे, यही मेरी इच्छा और आशीर्वाद है। शादीके बाद दुर्गा मुझे भूल न जाये।

मैत्रीको अपना कब्ज दूर करना चाहिए। उसका ब्याह कब होगा? रक्तके सगे न हो, तो चिन्ता मत करना। हमे तो सबको अपना सगा समझना चाहिए। सगा और पराया, ये सब भेद मनकी मान्यता है।

सत्यदेवीने मेरा अच्छा मजाक उडाया है। लगता है, मै जब उसकी हस्तलिपि की आलोचना करता था, उसकी याद दिला रही है। ऐसा लिखकर उसने मुझे हरा दिया, मुझसे यही कहलाना चाहती है न? मै तो चाहता हू, इसी प्रकार सब मुझे हराये। वह जैसी चतुर है, वैसी ही पवित्र बने और रहे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मै २२ तारीखको बम्बईमे रहूगा, उस समय तुम सब मुझसे मिनट-दो मिनटके लिए मिल सकोगे। उसी रात मै बोरसदके लिए रवाना हो जाऊँगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२४२) से।

१, २ व ३ महावीर गिरिकी बहनें।

८४. पत्र प्रेमाबहन कटकको

१३ मई, १९३५

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। उपाय यह हो सकता है कि गहने अथवा उनके पैसे तेरे लिए पिताजी मुझे सौप दे।[1] इसका अथ यह हुआ कि उससे जो मासिक आय हो वह मै तेरे लिए काममे लू। तेरी मृत्युके बाद आश्रमके ट्रस्टी उसका उपयोग आश्रमके लिए करे। ऐसा करनेमे तुझपर कोई दोष नही आता। तू तो अपना जीवन ईश्वर पर ही अवलम्बित रखती है। पिताजी के ओर मेरे बीच जो समझौता हो उसके प्रति तू अलिप्त रह सकनी है। मीराबहनका यही तो होता है। उसके लिए १५० से २०० पौड आते है। वे आश्रमके खातेमे जाते है। उसका खच आश्रम उठाता है। मेरे सुझावसे पिता निभय रह सकते है, और तू अलिप्त रह सकती है।

मै वहा २२ तारीखको आऊगा। उसी रातको बोरसदके लिए रवाना हो जाऊगा। तू बम्बईमे तो मिलेगी ही। परन्तु बोरसद आना हो तो आ सकती है। वर्षा तो है ही।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

क्या किसन[2] घोडेकी तरह मजबूत हो गई? सुशी[3] [4] दिखाई पडती है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७२) से। सी० डब्ल्यू० ६८११ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

१ प्रेमाबहन कटकके पिता और पितामहकी इच्छा थी कि माँके छोडे गहनोका न्यास बनाकर प्रेमाबहनके लिए नियमित आमदनीका प्रबन्ध कर दिया जाये। प्रेमाबहन यह नही चाहती थी। वे गहनोंकी बिक्रीसे प्राप्त होनेवाली पूरी राशि गाधीजी को दे देना चाहती थी।

२ किसन घुमतकर।

३ सुशीला पै।

४ साधन-सूत्रमें अस्पष्ट है।

८५. पत्र : ठाकुरप्रसाद शर्माको

१३ मई, १९३५

भाई ठाकुरप्रसाद शर्मा,

दोष छुपाकर हम इत्तेफाक नही बढा सकते है। यदि दोनो पक्ष मिलकर पच नियत करे तो अदालत छोडे। यदि ऐसे नही हो सकता है तो अदालती न्याय लेनेकी कोशीश करनेमे कोई दोष नही माना। ऐसे कामोमे कोई निश्चित सिद्धान्त नही हो सकता है। प्रत्येक केसका निणय उसके गुण-दोषपर निभर रहता है।

मो० क० गाधी

श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा
जालपा देवी
बनारस सिटी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १५६) से। सी० डब्ल्यू० ९७५४से भी, सौजन्य भारत कला भवन

८६ पत्र : हिन्दी साहित्य सम्मेलनके मन्त्रीको

वर्धा
१४ मई, १९३५

प्रधान मन्त्रीजी,

आपका पत्र मिला है। मैंने स्वतन्त्रतया ऐसे तो नही कहा है कि समिति बन्धन-मुक्त है। मैंने ऐसे कहा था कि यदि हरिभाऊ व कोतवालने आपको यह कहा कि आप इन्दौरके विश्वविद्यालयका धन भी एक लाखमे गिन सकते हैं तो आप बन्धन-मुक्त हैं। लेकिन मैं इस बहसमे न पडना चाहता हू न आपको तकलीफ देना चाहता हू। आखरमे जिम्मेवारी तो शेठ जमनालालजी ने ली है। वे चाहे सो करे। टण्डनजी ने जो कहा और किया उसमे उनका दोष मैंने नही पाया। बाहिरके आन्दोलनको रोकनेकी मेरी न शक्ति थी, न इच्छा थी। अन्तमे जो मैंने किया उससे दूसरा करना मेरे लिये असम्भवित था।

आपका,
मो० क० गाधी

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३७५

८७. पत्र : रामस्वामी अय्यगारको

१४ मई, १९३५

प्रिय रामस्वामी,

आपने जो बडा काम हाथमे लिया है, मै उसकी सफलताकी कामना करता हू। इस बातका ध्यान रखिए कि जिस कामको शुरू किया है, उसे बीचमे नही छोडना है।

आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९२३४) से, सौजन्य रामस्वामी अय्यगार

८८. पत्र : जी० सीताराम शास्त्रीको

[१४ मई, १९३५][1]

प्रिय सीताराम शास्त्री,

मै चीजके बदले चीज देकर व्यापार करनेकी पुरानी प्रणालीपर निबन्ध आमन्त्रित करनेके सुझावका समर्थन करता हूँ। मगर उसके लिए जो पुरस्कार निश्चित किया गया है वह आकर्षक नही है। उसके निर्णयकर्त्ता कौन होगे? वे विशेष [योग्यता][2] वाले [व्यक्ति][3] होने चाहिए। [मै][4] अभी उनके [सम्बन्धमे][5] कुछ विचार नही कर पाऊँगा।

हृदयसे आपका,
बापू

श्री जी० सीताराम शास्त्री
विनय आश्रम
गुटूर जिला, पो० आ० चदोल

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९१७५) से, सौजन्य आन्ध्र प्रदेश सरकार

१ डाककी मोहरसे।
२ से ५ ये स्थल मूल प्रतिमें फटे हुए हैं।

८९ पत्र : जमनालाल बजाजको

१४ मई, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हे इन्दौरके बारेमे वहाँ[1] बैठे हुए भी परेशानी उठानी पड रही है। वहाँसे कुछ मिलेगा, ऐसा नही लगता। साथका पत्र पढ लेना। मै अपने जवाबकी[2] नकल भेज रहा हू। वहाँ मेरी तो किसीसे जान-पहचान है नही, तुम्हारे ऊपर ही सब छोड दिया है। उसमे भी यदि कुछ नही हो सका तो समझ लेगे सुलट गया। तुम्हे इसके लिए चिन्तामे नही पडना है। वहाँ बैठे-बैठे कुछ हो सके या किसीको लिख सको तो लिखकर काम कर देना। फिलहाल यदि ऐसा न हो सके तो इसे भूल जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६९) से।

९०. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

१४ मई, १९३५

भाई मूलचद,

सब चीज 'हरिजन' मे आनेसे दुरुस्त हो सकती है, ऐसा मानना भ्रम है। बाल-विवाहकी कुप्रथाको दूर करनेके लिये बहुत परिश्रमकी आवश्यकता रहेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५६) से।

१ भुवाली।
२ देखिए "पत्र हिन्दी साहित्य सम्मेलनके मन्त्रीको", १४-५-१९३५।

९१ पत्र : कृष्णचन्द्रको

१८ मई, १९३५

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह, शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन, सर्वधर्मी, समानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना ही एकादश सेवावी नम्रत्वे व्रतनिश्चये।

'गीता' तुम्हारी जीवन-दोरी बनो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२६९) से। एस० जी० ४३ से भी

९२ पत्र : समीरमलको

१४ मई, १९३५

भाई समीरमल,

तुमारी और श्री वायुलालकी उम्मर कितनी है, शरीर दोनोका कैसा है, अभ्यास कहाँतक है, अपना खर्च दे सकते हैं? इ० हकीकत भेजो। यहाँ मजदूरीका ही कार्य है।

मो० क० गांधी

श्री समीरमल
दफरिया
जावरा, मालवा

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १२९२) से।

९३ तार : रामेश्वरदास पोद्दारको

वर्धा
१५ मई, १९३५

सेठ रामेश्वरदास
धूलिया

गगाके[1] पुत्री हुई है। दोनो सकुशल है।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४१) से।

९४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१५ मई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

'दिल्लीके कौवे कितने' वाला मजाक मै ठीक नही मानता। इससे लोगोको कुछ मिलता नही है। अभी लडाई तो चल नही रही है।

अमृतलालका[2] पत्र मिल गया। मैने लिखा है कि यदि वह अपने अखबारमें खेद प्रकट करे तो अच्छा होगा।

बाकी तुम महादेवके पत्रसे जानोगे। इस वक्त तो काममे खूब व्यस्त हूँ। एन्ड्रयूज यहाँ है। सेरेसोल और विलकिन्सन कल आये है। और लोग भी आ रहे है। मै २१ तारीखको मुश्किलसे तैयार हो पाऊगा। महादेवको साथ लाना असम्भव दीखता है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६७

१ रामेश्वरदास पोद्दारकी पत्नी।

२ अमृतलाल सेठ, बम्बईसे प्रकाशित होनेवाले दैनिक जन्मभूमिके सम्पादक।

९५ पत्र अवधेशदत्त अवस्थीको

१५ मई, १९३५

चि० अवधेश,

अपना देश सब नैतिक बातमे सर्वोत्कृष्ट बने और रहे। मनुष्यका स्वाभिमान है कि वह आत्मोन्नति करे और करनेमें मृत्युसे भी न डरे।

स्वाभिमान और गौरवकी रक्षाके लिये अथवा कुचेष्टा दूर करनेके लिये क्रोध क्यो चाहिये। मुझे कोई कहता है नाक घसीटो। मै क्रोध न करू लेकिन नाक न रगडु, इसके लिये जो दण्ड मिले उसे प्रसन्नतासे सहन करू।

धर्म उसे कहते है जो आत्माको ऊचे ले जाता है। ईश्वर सत्यका नाम है। सत्य रूप है ऐसी कल्पना करे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१७) से।

९६. पत्र: एफ० मेरी बारको

वर्धा
१६ मई, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम कही भी रहो, पूरी तरहसे आराम करना जरूरी है। अपने हाथकी बात न रह जाये, उससे पहले ही क्यो नही करती? मिरजकी बजाय तुम बम्बईमे ही स्वास्थ्यकी जाँच क्यो नही करा लेती? मिरज जाते हुए तुम बम्बईके पाससे ही तो गुजरोगी। बम्बईमे जाँच भी हो जायेगी और पैसे भी खर्च नही होगे। बम्बईमे सबसे योग्य चिकित्सक मौजूद है। जो भी हो, तुम्हे शीघ्र स्वस्थ हो जाना चाहिए।[1]

सस्नेह,

बापू

३३७० से भी,

९७. पत्र : ग्लेडिस ओवेनको

१६ मई, १९३५

प्रिय ग्लेडिस,

मुझे आपका पत्र [पढकर प्रसन्नता][1] हुई। यह आज ही मुझे दिया गया और अभी पियरे सैरेसोलके पहुँचनेके बाद। उनसे सम्बन्धित अंश मैंने उन्हे सुना दिया। इससे वे प्रसन्न हुए। वे निश्चय ही यह काम हाथमे लेगे माग . उनके सम्मुख है।

हम सभीको से प्रसन्नता होगी और म्यूरियलके साथ आपका स्वागत करेगे। सी० एफ० एन्ड्रयूज मेरे साथ ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१९१) से।

९८. पत्र : एस० सत्यमूर्तिको[2]

१६ मई, १९३५

आप ललचानेमे बडे कुशल है। लेकिन मुझे लालचमे नही पडना है। मेरे आशीर्वादके बिना भी आपका काम ठीक चलता रहेगा। आपने ठीक ही कहा है कि यदि आपमें सफल होनेकी योग्यता होगी तो आप सफलता प्राप्त कर ही लेगे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २०-५-१९३५

१ साधन सूत्रमें ये शब्द बहुत अस्पष्ट है और कई स्थानोंपर लिखावट पढ़ी नही जाती।

२ सत्यमूर्तिने तमिलनाडु प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीका अध्यक्ष बननेपर गांधीजी का आशीर्वाद माँगा था।

९९ पत्र : निर्मलकुमार बोसको

१६ मई, १९३५

प्रिय निर्मलबाबू,

इतना ही है कि मेरे पास काम बहुत ज्यादा रहा है। पुनरीक्षण समाप्त करते ही मै पाडुलिपि लौटा दूगा। आप बखूबी उसे 'मॉडन रिव्यू'को भेज सकते है।

आपका,
मो० क० गाधी

श्री निर्मलकुमार बोस
६/१ ए, ब्रिटिश इडियन स्ट्रीट
कलकत्ता

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५२०) से।

१०० पत्र : क० मा० मुशीको

१६ मई, १९३५

भाई मुशी,

आपका पत्र मिला। वही[1] रहकर स्वास्थ्य सुधारना ठीक होगा। स्थायी समितिकी बैठक १८को है। देखूं, उसमे क्या होता है। जीजी मां ने[2] ठीक याद किया, उन्हें मेरे नमन।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५७३) से, सौजन्य क० मा० मुशी

१ पचगनी।
२ क० मा० मुशीकी माता।

१०१ चर्चा · पियरे सेरेसोल और जो विलकिन्सन से[1]

[१६ मई, १९३५][2]

फिर सेरेसोल उन पुस्तकोके विषयमें कहने लगे जो उन्होने उन्हीं दिनो पढी थीं। उन्होने एक पुस्तक 'इडिया इन दि डार्क वुड' के बारेमें बताया कि इसमें कहा गया है कि "हिन्दू दर्शनका मुख्य ढाँचा तोड डालना चाहिए।" उन्होने दूसरी एक भिन्न प्रकारकी पुस्तक फ्रेंक लौनवुड कृत 'जीसस लॉर्ड और लीडर' की बात की और बताया कि उसमें इस बात का खण्डन किया गया है कि ईसाई धर्म ही अन्तिम धर्म है और कहा गया है कि "आज जहाँतक हम पहुँचे है उससे भी अधिक पूर्ण और उच्च धर्म अभी आयेगा, और ईश्वर अन्य धर्मों तथा अनेक जातियो द्वारा आविष्कृत सत्यो और सस्थाओका भी उपयोग करके मनुष्य जातिकी विचार-सम्पत्तिको और समृद्ध बनायेगा।" उन्होने बताया कि बाइबिल जो प्रेरणा देती है वह दूसरी प्रेरणाओकी अपेक्षा श्रेष्ठ है, इस दावेको छोड देनेमें उक्त लेखक निश्चित लाभ देखता है, और कहता है कि "मै उन लोगोमें से हूँ जो ईसा मसीहको एक सद्गुरु मानते हैं, परमप्रभु नही।" गाधीजी ने कहा

ऐसा लगता है कि चढावके बाद अब उतारकी क्रिया चल रही है। हमारे यहाँ एक ईसाई सज्जन हैं जो कहते है कि बाइबिलके 'न्यू टेस्टामेट' का उपदेश जीवनमे किस प्रकार उतारा जा सकता है, यह बात मुझे 'गीता' मे मिली है, और 'न्यू टेस्टामेट' के कितने ही वचन जो मुझे गूढ मालूम होते थे उनका अर्थ अब 'गीता' के अध्ययनसे खुलता जा रहा है।

तो भी सेरेसोल यह महसूस करते हैं कि प्रत्येक मनुष्यको अपने ही धर्मसे समाधान मिलना चाहिए। हमारी प्रात और सायकालकी प्रार्थनाओमें वे नियमित रूपसे आते थे। किन्तु एक दिन साँझको कहने लगे, "एक ही चीजका जो यह बार-बार पाठ होता है वह मेरे कानोको कुछ रुचता नहीं। हो सकता है कि यह मेरे बुद्धिवादी, गणितीय स्वभावका दोष हो, लेकिन चाहे जिस कारणसे भी हो, पुनरावृत्ति मुझे पसन्द नहीं आ सकती।"

गाधीजी पर आपके गणितमे क्या पुनरावृत्ति दशमलव नही होता?

पियरे सेरेसोल किन्तु प्रत्येक दशमलव से एक नवीन ही वस्तु निकलती है।

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। अपने लेखमें महादेव देसाई बताते है "पियरे सेरेसोल और जो विलकिन्सन बिहारके भूकम्प पीडित क्षेत्रका दौरा करके लौटे थे और रास्तेमें वे वर्धामें रुके थे।"

२ गांधीजी १९१५-१९४८ — ए डिटेल्ड क्रॉनोलॉजी से।

गा० इसी प्रकार प्रत्येक जपमें नूतन अर्थ रहता है। प्रत्येक जप मनुष्यको भगवान्के अधिक समीप ले जाता है। यह बिलकुल सच्ची बात है, और जब मैं आपसे यह कहता हूँ तब आपको यह जानना चाहिए कि आप किसी सिद्धान्तवादीसे नही बल्कि एक ऐसे व्यक्तिसे बात कर रहे है जिसने इस वस्तुका अनुभव जीवनके प्रत्येक क्षणमे किया है। मै तो यहाँतक कहूगा कि किसी बार यह तो हो सकता है कि मेरे हृदयका स्पन्दन एकाएक रुक जाये पर इस अविराम-क्रियाका बन्द हो जाना इतना आसान नही है। यह हमारी आत्माकी भूख है।

पि० से० मै इसे अच्छी तरह समझ सकता हूँ, पर साधारण मनुष्यके लिए तो यह एक अथशून्य विधि है।

गा० मै मानता हूँ, पर अच्छीसे-अच्छी चीजका भी दुरुपयोग हो सकता है। इसम चाहे जितने दम्भके लिए गुजाइश हो, पर वह दम्भ भी तो सदाचारकी स्तुति ही है न! और मै यह जानता हू कि अगर दस हजार दम्भी मनुष्य मिलते है तो ऐसे करोडो सरल श्रद्धालु भी होगे जिन्हे ईश्वरके इस नाम-रटनसे शान्ति मिलती होगी। मकान बनाते समय पाड बाँधनेकी जरूरत पडती है न—यह ठीक वैसी ही चीज है।

पि० से० मगर मै आपकी दी हुई इस उपमाको जरा और आगे ले जाऊँ तो आप यह मान लेगे न कि जब मकान तैयार हो जाये तब उस पाडको गिरा देना चाहिए?

गा० हाँ, जब शरीर-पात हो जायेगा तब वह भी दूर हो जायेगी।

पि० से० यह क्यो?

जो विलकिन्सन यह इसलिए कि हम निरन्तर निर्माण ही करते रहते हैं।

गा० इसलिए कि हम निरन्तर पूणताके लिए प्रयत्न करते रहते है। केवल ईश्वर ही पूर्ण है, मनुष्य कभी पूण नही होता।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २५-५-१९३५

१०२. पत्र : आर० बी० ग्रेगको

वर्धा
१७ मई, १९३५

प्रिय गोविन्द,

बेशक, मैं जानता हूँ कि पत्र न आनेका मतलब यह नहीं है कि हमारे प्रेममें कोई कमी आ गई है। मैं जानता हूँ कि तुम प्रेम-धर्मके प्रसारके लिए क्या कर रहे हो। तुमको अपनी समूची शक्ति खपानी पड़ रही होगी।

अगर अमरीकी लोग अपने यहाँ खादीके समान ही किसी वस्तुको अपना सकें, तो यह एक बड़ी बात होगी।

एन्ड्रयूज, पियरे सेरेसोल तथा उनके साथी जो विलकिन्सन, अभी इस समय यहीं हैं। एन्ड्रयूज कविगुरुके साथ कुछ [महीने][1] भारतमें ही रहेंगे। सेरेसोल यूरोपके लिए २३ तारीखको प्रस्थान करेंगे।

ग्रामोद्योगका कार्य चल रहा है।

हीरालाल शर्मा एक प्राकृतिक चिकित्सक हैं। वे अपने ज्ञानको अधिक पूर्ण बनानेके लिए बैटल क्रीक जाना चाहते हैं। वे अपने ज्ञानका उपयोग विशुद्ध परमार्थके लिए करना चाहते हैं। मैं उनके लिए एक वजीफेका प्रबन्ध कर रहा हूँ। वहाँ अगर वे कुछ समय काम करके अपने खाने और रहनेका खर्च निकाल सकें, तो अच्छा रहेगा। क्या उनके सम्बन्धमें तुम कोई सलाह दे सकते हो?

तुमको और राधाको स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४६६६) से।

१ साधन सूत्रमें बहुत अस्पष्ट है।

१०३ पत्र अमृतकौरको

१७ मई, १९३५

प्रिय अमृत,

पत्रका तुम्हारा कागज साटनकी तरह चिकना लगता है।

दलीपसिंहका[1] पत्र अच्छा है।

अभी इस समय हमारा परिवार बहुत भरा-पूरा है। सी० एफ० एन्ड्रयूज, सेरेसोल, विलकिन्सन, मलकानी, श्रीमती मलकानी, उनके मित्र और एक पुत्र तथा दो छात्र — खासी वृद्धि है न! और तुम्हे याद ही होगा कि हमारे पास थालो और प्यालियोकी कितनी कमी है। लेकिन हम काम चला लेते है, खुश रहते है।

हाँ, यहाँ गर्मी काफी पड रही है।

लिफाफो पर लगा गोद बगीचेके एक वृक्षकी छाल का है। मै देखूगा कि आगे और लिफाफोके लिए क्या प्रबन्ध हो सकता है।

सस्नेह,

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३३) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३४२ से भी

१०४ अपील नगरपालिकाओसे

हरिजन सेवक सघके सयुक्त-मत्री आचार्य मलकानी द्वारा नगरपालिकाओके लिए निम्न अपील जारी की गई[2]

आशा करनी चाहिए कि नगरपालिकाएँ इसके उत्तर में कारगर ढगसे कार्रवाई करेगी।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १८-५-१९३५

१ अमृतकौरके भाई।

२ अपील यहाँ उद्धृत नहीं की जा रही है, उसमें नगरपालिकाओको सुझाव दिया गया था कि मेहतरों तथा सफाई आदि करनेवाले कर्मचारियोंको निवास सम्बन्धी सुविधाएँ, बेहतर सेवाके अवसर, बीमारी, आकस्मिक तथा प्रसव आदिकी छुट्टियाँ दी जानी चाहिए।

१०५ हरिजनोकी शिक्षा

माध्यमिक और कॉलेजकी शिक्षासे प्राथमिक शिक्षाका प्रश्न अनेक दृष्टियोसे कही अधिक कठिन है। और हरिजनोकी शिक्षा तो सबसे अधिक कठिन है। भले ही वह कच्चा हो, पर कुछ-न-कुछ सस्कार तो हरिजनेतर बालकको घरपर मिलता ही है। हरिजन बालकको ऐसा सस्कार बिलकुल ही नही मिलता, क्योकि समाजके साथ उनका सम्पक नही रहता। इसलिए जब तमाम प्राथमिक पाठशालाएँ हरिजन बालकोके लिए खुल जायेगी — देर-सबेर उन्हे खुलना तो है ही, और मेरी रायमे दरसे नही, सबेरे ही उन्हे खुलना है — तब भी, यदि हरिजन बालकोको पिछडी हुई दशामे नही रखा जाना है तो उनके लिए प्राथमिक पाठशालाओकी आवश्यकता तो पडेगी ही। यह प्रारम्भिक शिक्षा-प्रणाली किस प्रकारकी होनी चाहिए, इसकी खोज-बीनकी जा सकती है, और हरिजन सेवक सघोकी ओरसे समस्त भारतवर्षमे जो सैकडो हरिजन पाठशालाएँ चल रही है, उनमे उस प्रणालीका परीक्षण भी हो सकता है। हरिजन बालकोकी इस प्रारम्भिक शिक्षामे शिष्टाचार, सुन्दर वाणी और सद्व्यवहारका समावेश अवश्य होना चाहिए। हरिजन बालकको आज बैठने-उठने, कपडा पहननेका सलीका नही होता। उसकी आँखो, कानो, दाँतो और नाखनोमे अक्सर मैल भरा रहता है। बहुतेरोको तो यह भी पता नही कि नहाना-धोना किसे कहते है। मुझे सन १९१५की वह बात आज भी याद है कि जब मै ट्राकीबारसे एक हरिजन लडकेको कोचरबके आश्रममे लाया था। सबसे पहले मैने उसका मुण्डन कराया, फिर अच्छी तरह नहलाया और पहननेको उसे सादी, साफ धोती, कुरता और टोपी दी। चन्द मिनटोमे ही वह मैला-कुचैला लडका सस्कारी घरके किसी भी बालकसे जरा भी भिन्न मालूम नही पडता था। उसका सिर, आँखे, कान-नाक सब खूब अच्छी तरह साफ कर दिये गये थे। उसके नाखूनोमे मैल-ही-मैल भरा हुआ था। उन्हे मैने कटवाकर साफ कराया। उसके पैर, जिनपर धूलकी तहे जम गई थी, रगड-रगडकर साफ कराये गये। जरूरत पडे तो पाठशालाओमे आनेवाले हरिजन बालकोके पूरे शरीरकी सफाई नित्य इसी तरह करनी चाहिए। तीन महीने तक तो उन्हे स्वच्छताकी शिक्षा देनी चाहिए, हालाकि यह वाक्य लिखते हुए मुझे उडीसाकी पैदल यात्राका[1] एक दृश्य याद आ रहा है। उस यात्रामे कुछ-एक स्थानोपर हरिजन बालको और वयस्को को भोजन कराया गया था, उन्होने औरोकी अपेक्षा अधिक स्वच्छतासे खाया था। दूसरे लोग सानने-सूननेमे उगलिया खराब कर लेते थे, और जहाँ-तहाँ जूठन छोडकर जगह गन्दी करके उठते थे। हरिजन अपनी पत्तल या थालीमे कुछ भी नही छोडते

१ १९३४ में।

थे, उसे बिलकुल साफ कर देते थे। भोजनके समय हर कौरपर वे अपनी उँगलियोको चाटकर साफ कर लेते थे। यह मै जानता हूँ कि मैने जिनका यह वर्णन किया है, सब हरिजन बालक उनकी-जैसी स्वच्छतासे नही खाते।

अगर इस प्रारम्भिक शिक्षाका आयोजन समस्त हरिजन पाठशालाओमे करना है, तो अध्यापकोके लिए उनकी भाषामे विस्तृत आदेशोकी पत्रिकाएँ तैयार करके बँटवानी चाहिए। साथ ही पाठशालाओके निरीक्षकोको यह आदेश दे दिया जाये कि वे पाठ-शालाओका मुआइना करते समय अध्यापको तथा विद्यार्थियो की इस विषयमे परीक्षा लिया करे और इस दिशामे जो प्रगति हो उसकी पूरी-पूरी रिपोट भज दिया करे।

नये अध्यापकोकी नियुक्ति तथा वतमान अध्यापकोके प्रशिक्षणपर ध्यान रखनेसे ही यह कार्यक्रम सफल हो सकेगा। मगर सघको यदि उन हजारो हरिजन बालकोके प्रति अपना फर्ज अदा करना है, जिनकी सार-सँभालका दायित्व उसने ले रखा है, तो उसे इस सबपर ध्यान देना ही होगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १८-५-१९३५

१०६. पत्र : नारणदास गाधीको

१८ मई, १९३५

चि० नारणदास,

धीरुका[1] क्या समाचार है? उसका खच कौन चलाता है? उसकी प्रगति कैसी है? उसका अध्ययन कबतक पूरा होगा? उसने जो लिखकर दिया है, वह क्या तुम्हारे पास है?

हरिलाल कैसा है?

पाठशालाके बारेमे तो सब तय कर लिया है। सब यह मानते है कि तुम्हारी योजना बिलकुल ठीक है।

पुरुषोत्तम[2] कैसा है? क्या उसको चोरवाड माफिक आया?

जमनाको मैने यह लिखा है या नही कि विजयाको पत्र लिख दिया था?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मै २३ से ३१ मईतक बोरसदमे रहूँगा।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू० / २) से। सी० डब्ल्यू० ८४४४ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१ धीरू गाधी, ब्रजलाल गाधीके पुत्र। ये शान्तिनिकेतनमें चित्रकलाकी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।

२ नारणदास गाधीके पुत्र।

१०७ पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
१८ मई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

जबतक महादेव तुम्हारे पास थे, तबतक मैंने पत्र लिखनेमें ढिलाई की। फिर उनके आनेमें मजबूरन दो दिन लग गये। इसलिए यहाके पत्रोमें गडबडी हो गई।

मोहनलाल पडयाके बारेमें तुम्हारा लिखना यथाथ है।[१] पिछले सस्मरण ठीक वैसे ही है। परन्तु दु ख माननेसे क्या होता है? साथी आते है और जाते है। तुमको लगता है कि साथी जाते ही है, आते नही। यदि ऐसा हो तो भी क्या? ईश्वर तो नही जाता न? वह है तो सब है। यदि वह न हो तो और सब किस कामके? —जीवरहित देह? इसलिए तुमको साथीके वियोगका दुखडा नही रोना चाहिए। हमसे तो जो हो सके, सो कर दें।

मैं २१ तारीखसे पहले नही छूट सकता। २२ को सुबह बम्बई पहुँचूगा। २० तारीखको सोमवार है। २१ को मुझे यहाँ रहना ही चाहिए। साथमें बहुत करके अकेली बा होगी। मजबूर हो जाने पर ही मीराबहन रहेगी। वह आनेका हठ करेगी, तो लाचारीमें ही उसे लाऊगा और शायद एक आदमी और होगा। मेरे लिए तो बकरीके दूधके अतिरिक्त नीमके पत्ते और स्थानीय फल काफी होगे। बम्बईसे कुछ मत मंगवाना। यहाँ भी ऐसा ही चल रहा है। नीबूके बदले मैं इमलीका रस और हरी भाजीके बदले नीमके पत्ते पीसकर लेता हूँ। आजकल यहीके बगीचेकी अमिया लेता हूँ। बम्बईकी तो चखीतक नही। ऐसा मैं बम्बईमें करूँगा, बोरसदमें हरगिज नही।

महादेवको यहाँ छोडनेके सिवा कोई चारा नही। यदि जरूरत हुई तो मेरे यहाँ लौटनेपर महादेवको भेज दूंगा। शेष सब मिलनेपर।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६८-६९

१ देखिए "भाषण बाल-मन्दिरके उद्घाटनके अवसरपर", ३१-५-१९३५।

१०८ पत्र · बलवंतसिहको

१८ मई, १९३५

चि० बलवतसिह,

मेरे मनमे थोडा-सा भी शक नही है कि तुमारे किसी देहातमे स्थिर होना उत्तम वस्तु है। वहाँ रहकर श्रमसे अपना निर्वाह करना और मनसे, वाचासे, कमसे ग्रामवासीयोकी सेवा करना, उसके लिये एकादश व्रतका पालन करना। घडीकी कोई आवश्यकता नही है। और है तो पानी या रेतसे घडी बना सकते हो। उसमें एक कोडी-का भी खच नही है। हाँ, जब मेरे पास आनका जी चाहे तब आनेकी इजाजत है लेकिन याद रखो हमारे पास रेलका किराया व्यर्थ खचनेके लिये पैसे नही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७६) से।

१०९. पत्र . कुँवरजी के० पारेखको

१९ मई, १९३५

चि० कुँवरजी,[1]

तुम्हारा पत्र मिला। यहाँ तो हरिलालके व्यवहारके विषयमे कहने-जसी कोई बात नही दिखी। यदि तुम्हारा शक ठीक ठहरे तो दुखकी बात है। मनुको उसके हाथमें सौपनेकी कोई बात ही नही है। आशा है, तुम सब कुशल होगे।

बा और मै बुधवारको वहाँ होगे। आ सको तो कुछ मिनट दे दूगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७२१) से।

१ हरिलाल गांधीके दामाद और रामीके पति।

११०. पत्र : मनु गांधीको[1]

१९ मई, १९३५

चि० मनु,

तेरा पत्र मिला। मैं बुधवारको बम्बईमें रहूँगा। बा भी होगी। आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७२१) से।

१११. पत्र : डाह्याभाई एम० पटेलको

वर्धा

१९ मई, १९३५

भाई डाह्याभाई,

तुम्हारे २५-६-३५ के[2] पत्रपर इतने दिन विचार करनेके बाद आखिर थककर इस पत्रसे यह प्रकरण समाप्त करता हूँ। तुम्हारा पत्र मिलनेके बाद ऐसी घटनाएँ और जगहोंपर भी हुई हैं। लिख-लिखकर थक गया। उसका कुछ असर हुआ होगा, लेकिन नहीं के बराबर। इन मामलोंमें प्रत्येक स्थानीय व्यक्तिको अपनी शक्तिके अनुसार जो बने करते रहना चाहिए। हाँ, मुझ-जैसोंको सम्बन्धित समाचार तो देते ही रहना चाहिए। हमें अपनी मर्यादा समझनी चाहिए, हम सुधारक हैं, पुलिसके सिपाही नहीं। पुलिस हमें बनना भी नहीं है। सुधारक मरकर सुधार कराता है, पुलिस मारकर। एक ही व्यक्ति दोनों नीतियाँ साथ-साथ नहीं अपना सकता, इसीसे राजतन्त्रकी उत्पत्ति होती है। किन्तु हम राजतन्त्रको सहयोग नहीं देते, इसलिए उसकी मदद हमें थोड़े ही मिल सकती है। बिना अपमानित हुए जहाँ हम ऐसी मदद ले सकते हों, वहाँ ले।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २७०६) से, सौजन्य डाह्याभाई एम० पटेल

१ यह पत्र पिछले शीर्षक "पत्र कुँवरजी के० पारेखको" के पीछे लिखा पाया गया है, देखिए पिछला शीर्षक।

२ मूलके अनुसार।

११२ पत्र : शालिग्राम वर्माको

१९ मई, १९३५

भाई शालिग्राम वर्मा,

मैंने जो-कुछ कहा वह निर्दोष भावसे था। जो दलील पेश की गई थी उसे सुनकर मेरेपर जो असर हुआ मैंने कह दिया। उसमे किसीपर आक्षेप तो हो ही नही सकता था। मैंने राय ली उस बारेमे मै कह चुका था कि वह 'इनफोमल' थी। मै तो बादमे समझ भी गया था कि प्रकाशकोको मत्रीपदसे मुक्त ही रखना योग्य नही होगा। आपको सबध छोडनेका कोई कारण नही है। मेरी आशा है कि आप इस्तीफा भेजनेका इरादा छोड देगे।

आपका,

मो० क० गाधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२१९) से। सी० डब्ल्यू० ५६३४से भी

११३ पत्र : हीरालाल शर्माको[1]

वर्धा

२० मई, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारी टिकिटका ओर्डर तो आ गया। लेकिन पासपोटमे मुश्किल है। पासपोटके लिये अर्जी प्रत्येक मनुष्यको अपने लिये करनी पडती है। इसलिये तुमारे शायद दिल्ली जाना पडे। सभव है कि खुर्जाके मजिस्ट्रेट के यहा अर्जीका फाम मिल सके। तुमारी अर्जी जानेके बादमे लिख सकूगा। यदि आवश्यकता होगी तो। पासपोट मिलनेके बाद कलकत्तेके अमेरिकन कोनसलका प्रमाणपत्र चाहियेगा। वह तो मै ले सकूगा ऐसी उम्मीद रखता हू। अब तो तुमारे पासपोर्टका तजवीज करना है।

साथके खत वापिस किये जाये। मै कल बोरसद जाता हू। २ जूनको वापस। बोरसद — वाया — आनन्द। बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे। ठिकाना २३ तारीखसे ३१ तक समझो।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, पृ० १६०-६१

१ यह पत्र सुबह तीन बजे लिखा गया था, देखिए "पत्र हीरालाल शर्माको", २०५१९३५।

११४. पत्र अमृतकौरको

२० मई, १९३५

प्रिय अमृत,

पिछले पाच दिनोसे मै तुम्हे पत्र नही लिख सका। मेहमानोने मेरा सारा समय ले लिया।

चार्लीका तार अभी-अभी आया हे। तुम्हारा पत्र मुझे मिलनेसे पहले हममे से कोई भी नही समझ पाया था कि तुम किस तरह बाल-बाल बची। तुमन अबतक जो सेवाएँ की है, उनसे भी बडी सेवाएँ तुम्हे करनी है। दुघटना घातक जान पडती थी और उससे तुम्हारी रक्षा करनेमे ईश्वरकी यही इच्छा मुझे दिखाई देती है। इस दुघटनासे हमे यही सीख लेनी चाहिए कि ईश्वर हमें जीवनके जो भी क्षण प्रदान करता है, हम उन सबका सदुपयोग करे।

मै तुम्हारे लिए पूनिया और पत्र लिखनेके कागज तैयार करवा रहा हूँ। उनको यथासमय तुम्हारे पास भेज दिया जायेगा।

मेरा खयाल है कि तुम पुरीको काफी अर्सेसे जानती हो। अगर तुम्हे वह भरोसेके लायक लगा हो, तो उससे तुमको काफी मदद मिल सकती है। वह वहा क्या कर रहा है?

क्या शम्मीको फालसा नामक फलके वृक्षकी जानकारी है? फल बेरकी जातिका है और मटरके दानेके आकारका होता है। क्या वह मुझे उसके गूदे और बीजोके गुणोका विवरण दे सकता है? इसका वनस्पतिशास्त्रीय नाम क्या है? मै इन सब सुलभ फलो और इनकी पत्तियोकी आहार-सम्बन्धी उपयोगिता समझनेकी कोशिश कर रहा हूँ। मुझे उनमे काफी बडी सम्भावनाएँ नजर आती है। मै चाहूँगा कि शम्मी इस कार्य-विशेषमे विशेषज्ञता प्राप्त कर ले। विशेषज्ञोतक उसकी जितनी पहुँच है, उतनी चन्द ही लोगोकी है।

तुम तीनोको स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३४) से, सौजन्य राजकुमारी अमृतकोर। जी० एन० ६३४३ से भी

११५ पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२० मई, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। रामजीभाईको गाय भेजनेके बारेमे मैं तो तुम्हे पूरी आजादी दे चुका हूँ।[1] जो तुम्हारा मन कहे, वही करना। इस मामलेमे अपनी इच्छाका मैं कोई मूल्य नही मानता। काम करो तुम और मरजी मेरी चले, इसका क्या मतलब?

पारनेरकरको[2] जो मवेशी बेचना ठीक समझो, बेच देना। मतलब यह कि इस सम्बन्धमे तुम्हे पूरी आजादी है। जो करोगे वह मेरे कानम तो डालोगे ही, यह मैं माने लेता हूँ।

वनूकी[3] बीमारी भी कैसी लम्बी चली? मुझे २३ को बोरसद पहुँचना है। मणि की दाढके कारण तुम्हे भडौच भी जाना पडेगा, यह कैसी झझट है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७९) से।

११६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२० मई, १९३५

भाईश्री वल्लभभाई,

तुम्हारे बारेमे विचार बना ही रहता है। काका अभी यही है। उनके हाथमे सब-कुछ सौपकर महादेवको साथ ला रहा हूँ। मुझे यह खयाल परशान कर रहा था कि तुमको यदि अभी काम है, तो बादमे उन्हे भेजकर क्या करूँगा। इसलिए मैंने काकासे बात की और उन्होने भार उठाना स्वीकार कर लिया।

१ देखिए "पत्र नरहरि द्वा० परीखको", ९-५-१९३५।

२ यशवन्त महादेव पारनेरकर।

३ वनमाला परीख, नरहरि परीखकी कन्या।

४ मणिबहन परीख, नरहरि परीखकी पत्नी।

और बातें तो हम जब मिलेंगे तब या ठेठ बोरसदमें करेंगे। बुधवारके दिन तो शायद लोग तुम्हें और मुझे बातें करनेका जरा भी वक्त ही न दें।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६९

११७. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

२० मई, १९३५

चि० अम्बुजम,

जितनी शीघ्रतासे पिताजी पहाड़ोंपर जा सके उतना अच्छा रहेगा। लेकिन समयका निर्णय तो दाक्तर ही कर सकता है। हम सब प्रार्थना करें कि पिताजी को शीघ्र पूर्ण आराम हो जाय।

कृष्णस्वामीकी शादीकी बात हो गई सो अच्छा हुआ। हम आशा करें कि यह संबंध दोनोंको सुखदायक होगा।

अब [अभी] तो बादाम है। मैं यहांसे कल निकलुंगा। २ जुन वापिस आऊंगा। ठिकाना बोरसद वाया आनन्द बी० बी० ऐंड० सी० आई० आर०[1] किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

मूलसे : अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

११८. पत्र : समीरमलको

२० मई, १९३५

भाई समीरमल,

ता० १० जुनके बाद मुझे खबर देकर दोनों आ सकते हैं। मेरे पास एक भी कमरा नहीं है। वरांदेमें पडा रहना पडता है। नित्य मजदूरी ही करनी पडती है। यदि आओ तो साथमें बिस्तरके उपरांत थाली, लोटा, कटोरा, गमछा इ० ले आना। निकम्मा सामान नहीं लाना। संदूक अनावश्यक है।

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १२९१) से।

१. यह पता अंग्रेजीमें है।

११९ पत्र : हीरालाल शर्माको

२० मई, १९३५

चि० शर्मा,

साथका खत[1] तो प्रात काल तीन बजे लिखा। दोपहर तुमारा खत आया। उसी डाकसे खबर आई कि तुमने गवाही देनेके लिए रु० ५,००० मागा था।[2] मैने इस बातपर वजन नही दिया। इतनेमे तुमारा खत पढा। उसमे उसी बारेमे और बात। तुमको निराशा कैसे हुई? जजको कैसे निराशा हुई? क्यो, खुर्जा क्यो छोडना? दुनिया कुछ भी कहे इससे क्या?[3] जोइट पोलीसीके बारेमें मुझको पूरा समझा दोगे तो मैं अवश्य कुछ छापूगा। अबतक मै समझा नही हू। तुम तो जानते हो मै बीमा करानेका विरोधी हू। लेकिन खास जोइटका क्यो? बीमामे जहर देनेका तो अकसर हुआ ही करता है। जोइटमे कुछ विशेषता मै नही पाता।

तुमको फोडे कहा है? मिट्टीसे शीघ्र आराम न हो तो उसे छोडना चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

कोई बात आवेशमें न की जाय।

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६२

१ देखिए "पत्र हीरालाल शर्माको", २०-५-१९३५।

२ बीमेके दावेके एक मामलेमें।

३ साधन सूत्रके अनुसार।

१२० भेंट . एक ईसाई विद्यार्थीको[1]

[२१ मई, १९३५ या उसके पूर्व][2]

गाधीजी जिस सेवा-कार्यमे स्वाथकी लेश-मात्र गन्ध न हो, वह तो स्वय ही परम धम है।

विद्यार्थी किन्तु मनुष्यकी क्या किसी एकके प्रति निष्ठा होनी ही चाहिए?

हाँ, अवश्य। सत्यके प्रति उसकी निष्ठा होनी चाहिए। मै सिवा सत्यके और किसीका भक्त नही हूँ और सत्यके सिवा मै किसी और का अनुशासन नही मानता।

पर इस सामान्य कल्पनासे मनुष्यको प्रेरणा कैसे मिल सकती है?

इसका यही अथ हुआ कि तुम एक ऐसे ईश्वरको चाहते हो जिसका कि कोई आकार हो, और सत्य तुम्हारे लिए एक अत्यन्त अमूर्त वस्तु है। बात यह है कि मृति-पूजा मानव-प्रकृतिका मानो एक अभिन्न अग है। किन्तु यदि तुम सत्यको ईश्वरके रूपमे नही पूज सकते तो ईश्वरको सत्यके रूपमे पूज सकते हो। ईश्वर सत्य तो है ही, किन्तु ईश्वरके और भी अनेक रूप हैं। इसीसे मै यह कहना पसन्द करता हूँ कि सत्य ही ईश्वर है। लेकिन तुम्हे मेरा यह कथन शायद रहस्यवादियोकी गूढोक्तियो-जैसा लगेगा, इसलिए तुम उसे समझनेकी झझटमे मत पडो। तुम तो केवल उसीको पूजो जो तुम्हे सत्य जान पडे, क्योकि सत्य सापेक्ष रूपमे ही भासित होता है। केवल यह स्मरण रखो कि सत्य उन अनेक गुणोमे से एक नही है जिनके हम नाम लेते हैं। सत्य तो ईश्वरका साक्षात् स्वरूप है, और यही जीवन है, और मै सत्यको पूणतम जीवनके रूपमे देखता हूँ, और इसी कारण वह साकार बन जाता है, क्योकि यह समस्त सृष्टि, यह सारी हस्ती ही ईश्वर है, और जो-कुछ भी है, जो-कुछ भी 'सत्य' है, उस सबकी सेवा ईश्वरकी ही सेवा है।

पर हम ईसाई विद्यार्थी गाँवोमें किस तरह जायें? शायद वे लोग हमसे दूर रहे, हमसे बचे, क्योकि हम लोग ईसाई जो है।

तुम लोग उनसे कहो कि 'हम बेशक ईसाई हैं, पर तुम्हे हमसे डरनेकी जरूरत नही। जिस तरह तुम्हारे हिन्दू होनेसे हम तुमसे नही डरते, उसी तरह तुम भी

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। इस भेंटका प्रसंग बताते हुए महादेव देसाई कहते है एक ईसाई विद्यार्थीने जो आजकल हमारे साथ ग्रामोंकी स्थितिका अध्ययन कर रहा है, और अपनेको ग्रामसेवा काथके योग्य बना रहा है, एक दिन गाधीजी से पूछा कि क्या बगैर धमके भी कोई सेवा हो सकती है?

२ गांधीजी बोरसद जानेके लिए २१ ५ १९३५ को बम्बई बम्बई रवाना हुए थे।

हमसे मत डरो। तुम्हारे पास हम कोई स्वार्थपूर्ण हेतु लेकर नही आये है, और हम जानते है कि हमारे प्रति तुम्हारे दिलमे कोई दुरभिसन्धि नही है। हम चाहते है कि तुम और भी अच्छे हिन्दू बनो, जिस तरह कि तुम्हारे ससगमे आनेसे हम और भी अच्छे ईसाई वन जायेगे।' उनके पास जाकर उनकी सेवा करनेका यह तरीका है। ईसाई धम-प्रचारकोका यह कहना कि वे लोगोको ईश्वरके पक्षमे खीच रहे है, बिलकुल व्यथ है। अरे, सवशक्तिमान् ईश्वर क्या इतना असहाय है कि वह मनुष्योको अपनी ओर नही खीच सकता? प्रत्येक मनुष्यका धर्म उसकी अपनी चीज है। मै हिन्दू-धमका उपदेश नही कर सकता, मै तो केवल उसपर आचरण ही कर सकता हूँ।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २५-५-१९३५

१२१ बातचीत : जयरामदास दौलतरामसे

[२१][1] मई, १९३५ [या उसके पूर्व]

यह तो बिलकुल जवाहरलाल नेहरू-जैसी ही बात है। उसका इसमे कोई खास मतलब नही है। वेस्टमिन्स्टरके कानूनके सम्बन्धमे मेरे विचारोपर उसने कोई चर्चा आमन्त्रित नही की थी। लेकिन हम उसका मिजाज जानते है। और इसलिए हमे उसको खुशी-खुशी बरदाश्त करना सीखना चाहिए।

मैने आनन्दको पत्र लिखा है। उसने अपना यह दु ख आप ही मोल लिया है। उसके पिताको राजी करनका सबसे अच्छा तरीका उसे भुला देना है। उसको सान्त्वना देने और उसकी सेवा करनेका भी सबसे अच्छा तरीका यही है। उसे अपनी माँ से दृढतापूर्वक कहना चाहिए कि उसे यह वियोग सहना ही है। उसे लोगो या समाजकी चर्चाकी परवाह नही करनी चाहिए। हो सकता है कि वह उसकी बात न सुने। लेकिन उसके यह सलाह देनेके बाद भी यदि उसकी मा अपना दु ख पालती रहे तो आनन्दको उसकी चिन्ता नही करनी चाहिए। जहाँतक विद्याका प्रश्न है मै इस बातमे विश्वास नही करता कि अस्तित्वको चाहे जिस कीमतपर और बिना किसी प्रयोजनके कायम रखा जाये। तथाकथित विज्ञानमे अत्यन्त कृत्रिम ढगकी जो सहायता सुलभ करा रखी है, उसकी उपेक्षा करके जल्दी ही मृत्युको प्राप्त हो जाना तिल-तिल कर मरनेकी अपेक्षा अच्छा है। मैने आनन्दको इस लहजेमे पत्र लिखा है। उसे शरीर-रक्षाके सम्बन्धमे मेरे इस विचारको सुनकर शायद कुछ आघात भी लगेगा लेकिन मेरा यह विचार वर्षोंसे रहा है और मै इसपर अमल भी करता

१ गाधीजी वर्धासे बम्बईके लिए इसी दिन रवाना हुए थे।

रहा हूँ। जब मीरा और नानावटीके शरीरके विषयमे कहा गया था कि उनके शरीर बिलकुल छीजते जा रहे है तब उनके सम्बन्धमे भी यही किया था।

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्म से, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द टी० हिंगोरानी

१२२ पत्र : छगनलाल जोशीको

वर्धा
२१ मई, १९३५

चि० छगनलाल,

तुम्हे कुएँके बारेमे अनुमति मिल गई होगी। अब देखो कि क्या होता है। धीरजका फल मीठा होता है। तुम्हे अनुमति नही मिली, यह तो मै कबका जान गया था। मै तो भूल भी गया था। क्या ऐसा नही हो सकता कि तुमसे मिलनेके लिए मुझे ईश्वर किसी बहाने उधर ले जाये?

भाई नानजीको[1] अभी कुछ नही लिख रहा हूँ। जरूरत पडी तो बादमें देखूगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३१) से।

१२३ पत्र : कृष्णचद्रको

२१ मई, १९३५

चि० कृष्णचद्र,

तुमारी सब शुभेच्छा पूण हो। मैंने तो तुमको कबसे अपना रखा है। लेकिन कहा तक रहोगे सो तो तुम जानो या प्रभु जानता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७१) से।

१ पोरबन्दर-निवासी नानजी कालीदास मेहता।

१२४ चर्चा . पियरे सेरेसोलसे[1]

[२१ मई, १९३५]

पियरे सेरेसोल धनिकोके लिए उनके रहन-सहनका कोई नियम क्या हम निश्चित कर सकते हैं? अर्थात्, क्या यह निश्चित किया जा सकता है कि धनिकोका अधिकार कितने धनपर है और कितनेपर नहीं?

गाधीजी हाँ, यह निश्चित किया जा सकता है। धनी मनुष्य अपने खर्चेके लिए ५ प्रतिशत या १० प्रतिशत अथवा १५ प्रतिशत ले सकता है।

पर ८५ प्रतिशत नहीं?

मै तो २५ प्रतिशततक जानेका विचार कर रहा था। पर ८५ प्रतिशतकी बात तो किसी शोषकको भी नही सोचनी चाहिए।

यही साम्यवादियोके साथ मेरा मतभेद है।[2] मेरे लिए तो अहिंसा ही अन्तिम कसौटी है। हमे यह हमेशा याद रखना चाहिए कि एक दिन हम लोग भी धनियो-जैसी ही स्थितिमे थे। हमे अपनी सम्पत्तिका त्याग करना आसान नही मालूम पडता था। हमने जिस तरह अपने प्रति धीरज रखा, उसी तरह दूसरोके प्रति भी रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त मुझे यह मान लेनेका कोई हक नही कि मै सही हूँ और वह गलत। जबतक मै उसके गले अपनी बात नही उतार सकता, तबतक मुझे राह देखनी ही चाहिए। इस बीच अगर वह कहे कि 'मै २५ प्रतिशत अपने लिए रखकर बाकी ७५ प्रतिशत परोपकारी कामोमे लगानेको तैयार हूँ', तो मै उसकी बात मान लूगा। क्योकि मैं जानता हूँ कि सगीनके भयसे दिये हुए १०० फीसदी धनसे स्वेच्छापूवक दिया हुआ ७५ फीसदीका यह दान कही अच्छा है। ऐसा करके हम सबके साथ न्याय करते है। अहिंसाका अचल तो हम दोनोको ही पकडे रहना चाहिए।

इसपर शायद आप यह कहे कि जो मनुष्य आज जोर-जबर्दस्तीसे अपना धन सुपुर्द कर देता है वह इस स्थितिको कल अपनी इच्छासे स्वीकार कर लेगा। यह सम्भावना मुझे बहुत दूरकी मालूम देती है, और इसपर मै अधिक निर्भर नही करता।

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। यह चर्चा रेलगाडीमें हुई थी। गाधीजी वर्धासे बम्बई जा रहे थे और सेरेसोल, जो २३ मईको वहाँसे यूरोपके लिए रवाना होनेवाले थे, इस यात्रामें उनके साथ थे।

२ एक साम्यवादी लेखकने यह मत व्यक्त किया था कि गरीबोंके प्रति गांधीजी की सहानुभूति "धनिकोंके प्रति उनकी सच्ची सहानुभूतिका आवरण मात्र" थी। महादेव देसाईके अनुसार सेरेसोलकी असल कठिनाई यह थी कि धनिकोंके गले यह बात उतारनेके लिए हमें कबतक राह देखनी चाहिए।

इतनी बात पक्की है कि यदि मै आज हिंसाका प्रयोग करता हूँ, तो कल निश्चय ही मुझे भारी हिंसाका सामना करना पडेगा। अहिंसाको अगर हम नियम बना लेते हैं तो इसमे सन्देह नही कि जीवनमे हमे अनेक समझौते करने पडेगे। किन्तु अनन्त-अखड कलहकी अपेक्षा यह स्थिति अच्छी है।

धनाढ्य मनुष्यकी न्यायसम्मत स्थितिका वर्णन एक शब्दमें आप किस प्रकार करेंगे?

वह ट्रस्टी है। मै ऐसे कितने ही मित्रोको जानता हू जो गरीबोके लिए पैसा कमाते और खच करते है, और अपनेको अपनी सम्पत्तिका स्वामी नही, किन्तु ट्रस्टी मानते है।

मेरे भी कुछ अमीर और गरीब मित्र है। मेरी अपनी कोई सम्पत्ति नही है, पर मेरे धनी मित्र जो धन मुझे देते है, उसे मै स्वीकार कर लेता हूँ। इस बातको मै किस तरह न्यायसगत मानूँ?

आप खुद अपने लिए कुछ भी स्वीकार न करे। सैर-सपाटेकी गर्जसे स्विट्जरलैड जानेके लिए आप चेक स्वीकार न करे, पर हरिजनोके लिए कुएँ या स्कूल अथवा औषधालय बनवानेके लिए आप उनके लाख रुपये भी स्वीकार कर ले। स्वाथकी भावना खत्म हुई कि यह प्रश्न सहज ही हल हो जाता है।

पर मेरा निजी खर्च कैसे चलेगा?

आपको इस सिद्धान्तके अनुसार चलना होगा कि हरएक मजदूरको उसकी मजदूरी मिलनी चाहिए। आपको अपनी न्यूनतम मजदूरी लेनेमें कोई सकोच नही होना चाहिए। हम सब यही तो करते है। भणसालीकी मजदूरी केवल गेहूँका आटा और नीमकी पत्तियाँ है। हम सब भणसाली तो हो नही सकते, मगर वे जैसी जिन्दगी बसर कर रहे है, उसके नजदीक पहुचनेका प्रयत्न तो हम कर सकते है। मै अपनी आजीविका प्राप्त होनेपर सन्तोष मान लूगा, पर मै किसी धनी आदमीसे यह सिफारिश नही कर सकता कि वह मेरे लडकेको अपने यहा किसी अच्छी-सी जगह रख ले। मुझे तो इतनी ही चिन्ता रखनेकी जरूरत है कि जबतक समाज-सेवा करता रहूँ तबतक यह शरीर टिका रहे।

किन्तु जबतक मै किसी धनवानके यहाँसे अपने निर्वाहका खच लेता हूँ तब तक निरन्तर उससे यह कहते रहना क्या मेरा कर्त्तव्य नही है कि उसकी स्थिति बहुत स्पृहणीय नही है और यह कि सिर्फ उसके गुजारेके लिए जितना जरूरी हो उसे छोडकर बाकीकी सम्पत्तिसे उसे अपना स्वामित्व उठा लेना चाहिए?

हाँ, अवश्य, यह आपका कर्त्तव्य है।

पर ये धनी मनुष्य भी सब एक-जैसे नही होते? उनमें से कुछएक तो शराबके व्यापारसे मालामाल बने होते हैं।

हाँ, भेद आप अवश्य करे। आप खुद कलवारका पैसा न ले, पर आपने अगर किसी सेवा-कायके अर्थ धनकी अपील निकाली हो तो आप क्या करेंगे? लोगोसे क्या आप यह कहते फिरेगे कि जिन्होने न्याय-पथपर चलकर पैसा कमाया हो, केवल

वे ही उस कोषमे दान दे? मै तो इस शर्तपर पैसा मिलनेकी आशा रखनेके बजाय अपीलको ही वापस ले लेना पसन्द करूँगा। यह निर्णय कौन करेगा कि अमुक मनुष्य न्याय-परायण है और अमुक नही। और यह न्याय भी तो एक सापेक्ष वस्तु है। हम अपने ही दिलसे पूछे तो यह पता चलेगा कि हम अपने तमाम जीवनमे धर्म या न्यायका अनुकरण करके नही चले। 'गीता' मे कुछ ऐसा कहा है कि सबका एक ही लेखा है, इसलिए दूसरोके गुण-दोष देखते फिरने के बजाय दुनियामे अलिप्त बनकर रहो। अहभावका नाश ही सच्चा जीवन-रहस्य है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १-६-१९३५

१२५. भेंट: 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के प्रतिनिधिको

[२२ मई, १९३५][1]

भेंट-वार्त्ता प्रारम्भ होनेसे पहले हमारे प्रतिनिधिने गाधीजी से कहा कि मुझे हिदायत कर दी गई है कि मै आपसे राजनीतिसे सम्बन्धित कोई भी प्रश्न न पूछूँ। गाधीजी ने कहा

गाधीजी: बिलकुल सही है। तो क्या आपके पास प्रश्न तैयार है? आप मुझसे क्या कहनेको कहते है?

प्रतिनिधि सर्वप्रथम तो मैं चाहूँगा कि आप अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके बारेमें मुझे कुछ बतायें। जब दस माह पूर्व उसकी स्थापना हुई, तबसे यह क्या काम करता रहा है?

ग्रामोद्योग सघका कार्य सुनिश्चित ढगसे चल रहा है। उसके सम्बन्धमे बतानेको कोई बहुत बडी बात नही है। लेकिन इसके आरम्भके समय जो भी कार्यक्रम निर्धारित किया गया था, उसे लागू करनेकी कोशिश हर क्षण की जा रही है। हालाँकि हमारे सम्मुख प्रत्याशित और अप्रत्याशित सभी प्रकारकी बाधाएँ आ रही है, लेकिन अब भी मूल कार्यक्रममे मेरी आस्था पूरी तरह बनी हुई है। मै मानता हूँ कि दुनियामे मानव-शरीरसे अच्छा प्रगतिका कोई भी साधन नही है और अगर मानव-शरीर ही दुर्बल है, और आतरिक तथा बाहरी कारणोसे दिन-दिन और भी दुर्बल होता जा रहा है तो हम बडे परिणामोकी आशा नही कर सकते। इसलिए हम भोजन और स्वास्थ्य-सफाईके प्रश्नोको हल करनेकी कोशिश कर रहे है। और क्योकि पहले घरमे चिराग जलाया जाता है, फिर अन्यत्र, इसलिए हम केन्द्रमे वह सब कर रहे है जिसे बादमे हम भारतके प्रत्येक गावमे होते देखना चाहेगे।

इसके साथ-साथ हमने अपने केन्द्रके सबसे समीपके एक गाँवको इस प्रयोगके लिए चुन लिया है। मै चाहूगा कि समाचार-पत्र इस आन्दोलनके गम्भीर महत्त्वको

1. यह भेंट-वार्त्ता कलकत्ता मेलमें उस समय हुई थी जब गाड़ी सुबहके वक्त बम्बई पहुँचनेको थी।

पहचाने और इसे अपना विवेकपूर्ण समथन दे। विवेकपूर्ण समर्थन देनेसे मेरा मतलब है कि महत्त्वपूर्ण समाचार-पत्र अपने कर्मचारियोंमे विशेषज्ञोकी नियुक्ति करे, जो ऐसे शिक्षाप्रद लेख लिखे जिनसे पाठक फायदा उठा सके। आप देखेंगे कि इस कार्यक्रमके बारेमे, जो सतही तौरपर देखनेवालो को नीरस लगेगा किन्तु जो वास्तवमें बहुत रुचिकर है, मतभेदकी कोई गुजाइश नही है। सारे पक्षो और सब व्यक्तियोको इस प्राथमिक आवश्यकताको समझना चाहिए कि भारतके करोडो लोगोको पौष्टिक भोजन या डॉ० तिलकके शब्दोमे 'युक्ताहार' और स्वास्थ्यप्रद परिवेश प्राप्त होना चाहिए। मेरा खयाल है कि हमे दिन-दिन खोखला बनाती जा रही हमारी गरीबीके बावजूद ये दोनो वस्तुएँ सुलभ कराना सम्भव है।

जब गाधीजी को यह बताया गया कि इस सघको स्थापित हुए दस माह बीत चुकनेपर भी इसकी ओरसे शायद वर्धा और पनवेलमें किये जानेवाले कामको छोडकर उसके बारेमें कुछ सुनाई नहीं देता, तब उन्होने कहा कि सारे देशमें मूक रूपसे काम किया जा रहा है। इसके कार्यकर्त्ता इस बातका पता लगा रहे हैं कि इसका कार्य किस गहराईतक ले जाया जा सकता है। समाचार-पत्रोको प्रतिदिन या प्रति सप्ताह बताने लायक कार्य नही हो रहा है। जैसे-जैसे उपयुक्त कार्यकर्त्ता मिलते जा रहे है, विभिन्न प्रश्नोको हल करनेका प्रयत्न किया जा रहा है।

यह पूछे जानेपर कि सघके उद्देश्य तथा कायको विस्तार देनेके लिए क्या गांधीजी के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे निकट भविष्यमें सारे भारतका दौरा करें, उन्होने कहा कि मेरे विचारसे अभी यह जरूरी नहीं है। उन्होने आगे कहा

अभी तो सारे भारतका दौरा इस कार्यको गहराईमे ले जानेके बजाय इसे विस्तार देनेके लिए ही किया जा सकता है। इसमें सन्देह नही कि ऐसा करनेसे धन प्राप्त होगा और मै कार्यके सम्बन्धमे सतही ढगसे निर्देश भी दे पाऊँगा, मगर वह निर्देश भी, ग्रामसेवकोके सम्मुख जो कठिनाइयाँ आती है, उन्हे जाने बिना ही दे पाऊँगा।

इस समय मै केन्द्र तथा आसपासके गाँवोमें ही अपना प्रयत्न केन्द्रित करनेकी कोशिश कर रहा हूँ ताकि खुद मुझे और साथी कायकर्त्ताओको भी अनुभवपर आधारित निर्देश प्राप्त हो सके। अन्य केन्द्रोमे दूसरे कायकर्त्ता भी इसी प्रकारसे काय कर रहे है। जब हम प्राथमिक प्रशिक्षण ग्रहण कर लेगे तब अगर आवश्यक हुआ तो मै सारे भारतका दौरा करूँगा। याद रखिए कि यह एक प्रकारसे सामूहिक रूपसे प्रौढोको शिक्षित बनानेका ही काम है, यह हमारे बिना पहलेसे तैयारी किये नही किया जा सकता। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके बारेमे मुझे जो-कुछ कहना है वह सब मैने कह दिया है। बस।

हमारे प्रतिनिधिने कहा कि वह उनसे एक या दो छोटे-से सवाल और पूछेगा, और उसके बाद वह उन्हे और कोई कष्ट नहीं देगा। गाधीजी को ग्रामीणकला तथा अ० भा० ग्रा० स० के बारेमें डॉ० ठाकुरके भेजे उस सन्देशका स्मरण दिलाया

गया जिसमें कविने कहा था कि सघ द्वारा जिस केन्द्रीय सग्रहालयकी स्थापना की जानेवाली है, उसे केवल ग्रामोद्योगोतक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। उन्होने कहा था "किसी राष्ट्रका आर्थिक जीवन, जैसा महात्माजी सोचते है, उस तरह से उसके जीवनके अन्य पहलुओसे सर्वथा अलग-थलग चीज नहीं है। आज आर्थिक दीनताके साथ-साथ हम सास्कृतिक रूपसे भी दीन है। यह दीनता हमारे लिए लज्जास्पद है। और जब हम यह सोचते है कि एक समय हम सास्कृतिक दृष्टिसे कितने समृद्ध थे तो उससे हमारी यह दीनताजनित लज्जा कुछ कम नहीं हो जाती। आज हमारी कलाके नमूने विदेशोके सग्राहालयोमें पडे हुए है और हमारे ग्राम-कलाकार मिटते जा रहे है। महात्माजी से कहिए कि कला कोई श्रीसम्पन्न लोगोकी विलासिता का साधन नहीं है। गरीबोको भी इसकी उतनी ही जरूरत है।"

डॉ० ठाकुरकी ओरसे आनेवाले हर सन्देशपर मै आवश्यक रूपसे ध्यानपूर्वक विचार करता हूँ। मैं भी यह मानता हूँ कि ग्रामीण कलाका ध्यान रखा जाना चाहिए और जब उनकी सहायता मिलेगी तो हम उसकी भी उपेक्षा नही होने देगे। अगर हम अपना कत्तव्य भूल जाये, तब भी वे इसकी उपेक्षा हमे नही करने देगे। उन्होने श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ कर की सहायता प्रदान भी की है। श्रीयुत कर वस्तु-स्थितिको प्रारम्भिक तौरपर देख लेनेके विचारसे एक बार यहाँ हो भी गये है और इधर मै दीनबन्धु सी० एफ० एन्ड्रयूजके साथ पूरे विषयपर चर्चा कर चुका हूँ। अब वे इस सम्बन्धमे गुरुदेवसे बाते करेगे।[1]

गाधीजी से पूछा गया कि क्या वे ऐसा चाहते है कि जन-व्यवहारकी भाषा हिन्दुस्तानी, देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियोमें लिखी जाये। गाधीजी ने कहा :

स्वाभाविक है कि एक विशाल जन-समाज हिन्दुस्तानीको देवनागरी लिपिमे लिखेगा, लेकिन मुसलमान लोग एक अर्सेतक या शायद हमेशा इसे उर्दू लिपिमे ही लिखना चाहेगे। इसीलिए इसकी परिभाषा देते समय हमने लिखा है कि हिन्दुस्तानी उत्तर भारतके लोगो द्वारा बोली जानेवाली भाषा है और देवनागरी अथवा उर्दू लिपि मे लिखी जाती है। लेकिन मुझे यह उम्मीद है कि जब धार्मिक मतभेद समाप्त हो जायेगा और धार्मिक मेलजोल पुख्ता हो जायेगा तथा हिन्दुओ और मुसलमानोके बीच हार्दिक सौहार्दकी भावना स्थापित हो जायेगी, तब दुनियाकी सब लिपियोसे अधिक वैज्ञानिक देवनागरी लिपिको उसका उचित गौरव अवश्य प्राप्त होगा, अर्थात् इसे सारे भारतमें सर्वत्र अपना लिया जायेगा।[2]

"मै जानता हूँ कि मुझे जो हिदायतें दी गई है उनके तहत मुझे यह प्रश्न तो नहीं पूछना चाहिए, क्योकि यह निश्चित रूपसे एक राजनीतिक प्रश्न है।" गाधीजी ने कहा

१ साधन-सूत्रके अनुसार "गाड़ी अबतक कल्याण पहुँच चुकी थी और रामदास गांधी तथा कुछ और लोग डिब्बेमें आ गये थे।"

२ इसके बाद महादेव देसाईने भेंटकर्त्ताको समय समाप्त हो चुकनेका स्मरण दिलाया तो उन्होने एक और अन्तिम प्रश्न पूछनेकी इजाजत माँगते हुए कहा

नही, नही, पूछिए।

[प्र०] **श्रीयुत भूलाभाई देसाईने अभी कुछ ही दिन हुए कहा था कि प्रत्येक व्यक्तिको यह प्रयत्न करना चाहिए कि गाधीजी काग्रेस और राजनीतिमें वापस लौट आये। आप काग्रेसमे वापस कब आ रहे है?**

अगर आपकी परमात्मातक सीधी पहुँच है, तो यह प्रश्न आप उसीसे पूछिए कि मै काग्रेसमे कब आऊँगा। मै यह इसलिए कह रहा हूँ कि मुझे स्वय ही यह मालूम नही है।[1]

[अग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रानिकल, २३-५-१९३५

१२६ भाषण प्रार्थना-सभामे[2]

बम्बई
२२ मई, १९३५

आप लोगोको आश्चर्य होगा कि जब अनेक मनुष्योके लिए ईश्वरका अस्तित्व भी सन्देहका विषय हो रहा है, तब मैने बम्बईमे प्राथना-सभा करनेके लिए क्यो हामी भर दी। ऐसे भी लोग है, जिनका यह कहना है कि "अगर ईश्वरका वास प्रत्येकके हृदयमे है, तो फिर कौन किसकी प्राथना करे और कौन किसका नाम-स्मरण?" मै यहाँ इन दिमागी पहेलियोको सुलझाने नही आया हूँ। मै तो इतना ही कह सकता हूँ कि मेरे बचपनसे ही यह प्रार्थना मुझे सान्त्वना और बल प्रदान करती आ रही है।

मुझसे लोग कहते है कि जबसे जेल जानेकी मनाही कर दी गई, तबसे सर्वत्र निराशा-ही-निराशा छा गई है। मैने सुना है कि लोग किकत्तव्यविमूढ हो रहे है। न जाने क्यो उन्हे अपना कर्त्तव्य नही सूझ रहा है, जबकि पूरा रचनात्मक कार्य-क्रम उनके सामने पडा हुआ है। जब जेल जानेका कायक्रम चल रहा था, तब दम्भ, जोर-जबरदस्ती और हिसाके लिए स्थान था। मौजदा रचनात्मक कायक्रममे इन चीजो के लिए कोई गुजाइश ही नही है। ओर न इसमे हताश होनेका ही कोई कारण है। फिर भी लोग सशयग्रस्त और हताश हो रहे है। ऐसे लोगोके लिए ईश्वरका नाम ही सहारा है। प्रभुका यह वचन है कि जो भी अपनेको निबल और असहाय समझकर उसकी शरण मे जाता है, उसकी तमाम निबलताको वह हर लेता है।

१ इस भेंटवार्त्ताके अंतमें बताया गया है कि उपर्युक्त प्रश्नका उत्तर पानेके बाद भेंटकर्त्ताने जाने की अनुमति माँगी। इसपर गाधीजी ने उससे फोटोग्राफरोंसे अपना कमीशन वसूल करको देनेको कहा। उसने फोटोग्राफरोंसे कुछ पैसे, जो एक रुपयेसे कम ही थे, इकट्ठे करके गाधीजी को दे दिये।

२ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। यह प्रार्थना सभा कांग्रेस भवनके अहातेमें हुई थी और इसमें हजारो लोग उपस्थित थे।

भक्त सूरदासने यही तो गाया है कि "सुने री मैने निबलके बल राम।" यह बल अस्त्र-शस्त्रोसे या इसी प्रकारके अन्य साधनोसे प्राप्त नही होनेका। यह बल तो उस अशरण-शरण रामके नाम-स्मरणमे सवतोभावेन तन्मय हो जानेसे ही प्राप्त हो सकता है। राम तो भगवान्का केवल एक नाम है। उसे आप 'गॉड' या 'अल्लाह' या जिस नामसे पुकारना चाहे पुकार सकते है। उसी क्षण आपमे शक्ति आ जायेगी, आपकी सारी निराशा दूर हो जायेगी, जब आप सर्वाश्रय छोडकर एक ईश्वरका ही आश्रय ले लेगे। सूरदासके इस भजनमे जो यह आया है कि—"जब लगि गजबल अपनो बरत्यो नेक सरचो नहि काम, निबल ह्वै बल राम पुकारचो आये आधे नाम"—उसपर आप मनन कीजिए। आपको यह तो मालूम ही होगा कि गजेन्द्रको जब ग्राहने ग्रस लिया, तब पैर छुडानेका उसने बहुतेरा जतन किया, पर सब बेकार गया। गजेन्द्रकी सिफ सूड-भर जलके ऊपर रह गई थी। उसने अन्तमे अपनेको सवथा निबल-नि सहाय पाकर ज्योही हरिका नाम स्मरण किया, त्यो ही भगवान्ने उसे छुडा लिया। गजेन्द्र-मोक्ष तो एक रूपक-मात्र है। पर इसके अन्दर एक महान् सत्य छिपा हुआ है। मैने अपने जीवनमे बार-बार उस सत्यका अनुभव किया है। घोरसे-भी-घोर निराशाके समय जब इस दुनियामे न तो कोई हमारा सहायक दीखता है और न कोई सहारा, तब भगवान्का अमोघ नाम ही हमे बल ओर स्फूर्ति प्रदान करता है और हमारे तमाम सशय तथा हमारी निराशाको एक क्षणमे दूर कर देता है। हो सकता है कि आज निराशाकी काली-काली घटाएँ घिरी दिखाई देती हो, पर उन्हे छिन्न-भिन्न कर देनेके लिए हमारे अन्तस्तलसे निकली हुई प्राथना काफी है। इस प्राथनाकी ही बदौलत मैने अपने जीवनमे निराशा-जैसी चीजको कभी जाना ही नही। यद्यपि आज मै काग्रेससे अलग हो गया हूँ, तो भी मै सब देखता हूँ, सब सुनता हूँ। मेरे चारो ओर जो-कुछ हो रहा है उस सबका मुझे पता है, और अगर यह सब देख-सुनकर किसी मनुष्यको निराशा हो सकती है, तो वह मुझे ही होनी चाहिए। लेकिन निराशा तो मैने कभी जानी ही नही। तब फिर आप लोग क्यो निराश हो रहे है? भगवान्से आज हम यह प्राथना करे कि वह हमारे हृदयसे क्षुद्रता, नीचता और वचकताको दूर कर दे। निश्चय ही वह हमारी इस प्राथनाको सुनेगा। मै जानता हूँ कि अनेकोको इस प्राथनाके सहारे निश्चय ही बल मिला है।

स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। जबतक हम उस अधिकारको खुद ही नही छोड देते, तबतक हमारे हाथसे उसे कौन छीन सकता है? हमने अपने इस जन्मसिद्ध अधिकारको छोड दिया है और हमे उसे आज फिरसे प्राप्त करना है। स्वराज महज जेल जानेपर निभर नही करता। अगर ऐसा होता, तो आज भी तो हजारो कैदी जेलमे पडे हुए है। वह तो प्रत्येक मनुष्यके अपने कार्यपर निर्भर करता है। उस कायकी दिशा आपको बतला दी गई है। गॉवोमे जाकर अपना डेरा जमाइए, ग्रामवासियोकी ही तरह वहॉ रहिए, हरिजनोको अपनाइए और हिन्दू-मुस्लिम-एकताको वास्तविक रूप दीजिए। देशमे जो हिन्दू-मुस्लिम दगे हो रहे है उनसे आप हरगिज हताश न हो, आप तो अपना निर्धारित काय करते चले जाइए,

और यह यकीन रखिए कि वह तारनहार प्रभु निश्चय ही आपकी नैयाको पार लगा देगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १-६-१९३५। **बॉम्बे क्रॉनिकल**, २३-५-१९३५ से भी।

१२७ पत्र: मीराबहनको[1]

बोरसद

[२३][2] मई, १९३५

चि० मीरा,

हम यहाँ पौने छह बजे पहुचे। अब सुबहके ८-२० हुए है। मौसम बिलकुल ठण्डा है। मन्द-मन्द हवा चल रही है। आनन्दी[3] और बाल[4] बम्बईमे हमारे साथ हो गये थे। इस प्रकार हम पाँच हो गये है। बालने मेरी सेवाका काम सँभाल लिया है। यहाँ बहुत-से पुराने परिचित लोग है, जो मेरी जरूरते पहलेसे ही समझ लेते है। इसलिए तुम्हे मेरे लिए कुछ भी चिन्ता करनेकी जरूरत नही है। मेरे मनमे जरा भी सन्देह नही कि तुम्हे अपने साथ न लाकर मैंने अच्छा किया। परन्तु यह आगेके लिए कोई उदाहरण नही है। और हर सूरतमे अन्तिम निर्णय तो तुम्हारा ही रहेगा।

आशा है, तुम्हे जितने फलोकी जरूरत होती होगी, मिल जाते होगे। जिस किसी चीजकी जरूरत हो, मँगवा लेनेमे सकोच न करना।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०२) से, सौजन्य मीराबहन। जी० एन० ९७६८ से भी

१ **बापूज़ लेटर्स टु मीरा**में मीराबहन बताती है "यूरोपसे लौटनेपर मै वर्धा आश्रममे बापूसे मिली। उसके कुछ ही दिन बाद बापू अपना आवास मगनवाड़ी ले गये, जहाँ उन दिनों ग्रामोद्योग सघकी जड़ें जमाई जा रही थीं। जब बापूने पत्र लिखा तब मै वही ठहरी हुई थी।"

२ साधन सूत्रमें "२२" लिखा है जो स्पष्टत गलत है, क्योंकि गांधीजी बोरसद इसी तारीखको पहुँचे थे।

३ आनन्दी आसर।

४ बाल कालेलकर।

१२८. पत्र : नारणदास गांधीको

२३ मई, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र आज मिला। केशूको भेजनेके लिए तुम्हे तार किया है। मुझे याद नही आता कि तुमने मेरी अनुमति मागी थी।

घडियो[1] [के कारोबार] के बारेमे हरिलालकी बात मुझे जरा भी अच्छी नही लगी। तुम समझाना। इसके बावजूद वह ऐसा करे, तो भले करे।

मैथ्यू आनेके लिए छटपटा रहा है। आश्रमके पास उसका कुछ बकाया नही है। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो हम उसे आनेके लिए किरायेका पैसा भेज दे। मेरी इच्छा तो नही है। यदि उसकी आनेकी तीव्र इच्छा होगी तो आयेगा। उसे मै लिख रहा हूँ कि अगर वह जल्दी नही आता तो उसे रखा नही जा सकेगा।

टाइटस छुट्टीपर नही गया है। वह तो हमेशाके लिए चला गया है। यात्रा-व्यय उसे दे दिया गया। मैने उसे वर्धामे रखनेकी हामी भर दी थी। उसमे इसकी कोई खास इच्छा दिखाई नही दी। लेकिन त्रावणकोरसे जवाब लिखेगा। किसी अन्य के नाम उसे सिफारिशका पत्र देनेसे मैने इकार कर दिया।

थरपारकरका पैसा अभी तो आश्रमके खातेमे से ही निकाल लो। बादमे जरूरी लगा तो दूसरे किसी खातेमे से दे दूगा।

मेरी दृष्टिमे चिमनलाल[2] ज्यादा खर्च करता है। लेकिन चूकि हमने दूसरोका भी ऐसा खर्च बरदाश्त किया है, इसलिए उसका भी बरदाश्त करना चाहिए। जीने और स्वस्थ होनेका थोडा-बहुत लालच हम सबको लगा रहता है। किसीने अपनी कोई मर्यादा बना रखी है, तो किसीने कोई। चिमनलाल तो वेरावल जाकर और तलवलकरसे[3] इजेक्शन लेकर ही सन्तुष्ट है। लेकिन हमने दूसरोके लिए इससे ज्यादा खर्च किया है। इसलिए जो पुराने कार्यकर्त्ता है उनपर ज्यादा प्रतिबन्ध लगानेकी मेरी इच्छा नही होती। वे खुद जितने सयमका पालन कर सके उतना काफी है। इस सम्बन्धमे तुम्हे कुछ और तो नही सुझाना है?

मै समझ गया कि ब्याज नही मिलेगा।

१ हरिलाल गांधी घडियोंका कारोबार शुरू करना चाहते थे, देखिए "पत्र मणिलाल और सुशीला गांधीको", २४-५-१९३५।

२ एक वृद्ध आश्रमवासी चिमनलाल एन० शाह।

३ अहमदाबाद निवासी डॉ० तलवलकर।

लगता है, यह भूल हो गई कि गजाननको पैसा दिया गया। उसने तो अध्ययन भी छोड दिया था। धीरूका भी बन्द होना चाहिए। धीरूने जो कागज लिखकर दिया था, उसकी नकल उसके पास होगी। शायद छगनलालके पास भी हो। देखना।

लीलावतीको दिया मेरा सुझाव ठीक है न ?

पिताश्री[1] को अलगसे लिख रहा हूँ।

प्रेमा आकर मिल गई थी। अपने कुछ गहने दे गई। बात तो हो ही नही सकी। यदि तुमने प्रेमाके पिछले दो पत्र सुरक्षित रख छोडे हो तो वे गोमतीको पढनेको दे देना (वह वर्धामे है)।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से, सी० डब्ल्यू० ८४४५ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१२९. पत्र : खुशालचन्द गाधीको

२३ मई, १९३५

आदरणीय भाईसाहबकी सेवामे,

चि० नारणदासने लिखा है कि हालाकि आपने बहुत बाँचा, बहुत मनन किया है, किन्तु इस समय वह सब किसी काम नही आ रहा है, और मन निबल हो गया लगता है। ऐसा सबके साथ होता है, अत मुझे कोई आश्चय नही हो रहा है। तथापि, आपसे मैंने कुछ ओर ही आशा की थी। जिसका मन ईश्वरमे रम गया हो, उसे फिर बुढापा नही आता। हाँ, शरीर क्षीण होता है, किन्तु यह तो उसका धर्म ही है। मनका क्षीण होना जरूरी नही है। वह तो लगातार आगे बढता हुआ अन्तमे ईश्वरमे लीन हो जाता है। यही अथ —

एषा ब्राह्मी स्थिति पार्थ नैना प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ।।[2]

का है। जो अन्ततक टिके, वही तो ब्राह्मी स्थिति कही जायेगी न ? इस स्थितितक पहुँचनेके लिए निर्बल हुआ मन क्या करेगा ? इसका एकमात्र उत्तर तो नामस्मरण ही है। अत मेरी तो यह प्रार्थना है कि दृढ सकल्पपूवक सभी वस्तुओसे चित्तको हटा कर केवल नामस्मरण करते हुए बने तो 'नत्वह कामये राज्य'[3] — इस श्लोकको

१ खुशालच द गाधी, देखिए अगला शीर्षक।
२ भगवद्गीता, २/७२, देखिए खण्ड ३२, पृ० १४४।
३ आश्रम भजनावलि, पद १०, देखिए खण्ड ४४, पृ० ३९६।

दुहराये। किन्तु यदि यह सम्भव न हो तो नामस्मरण ही काफी होगा। यह मनको सवथा तेजस्वी बना देगा, मनकी जीर्णावस्था मिट जायेगी और युवावस्था की अनुभूति होगी। किसी भी प्राणी अथवा वस्तुके विषयमें 'ममत्व' हो, तो मेरी प्राथना है कि उसे बिलकुल निकाल दे।

मोहनदासके दडवत् प्रणाम

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से।

१३० पत्र मदालसा बजाजको

२३ मई, १९३५

चि० मदालसा,

तेरा पत्र भले लम्बा हो जाये मुझे सब खबर मिलनी ही चाहिए। जानकी-बहनसे[1] कहना कि वह घोडेपर न बैठें। यदि वह गिर पडी तो अच्छा होनेमें देर लगेगी। तेरे बारेमें ऐसा डर नही है। और घोडेपर चढनेवाला गिरता भी है, ऐसा कायदा तो है ही न?

तेरे फोडेका इलाज ढूँढना ही होगा। नमक जरूर खाकर देखना, हालाँकि मैं नही मानता कि इसके साथ उसका कुछ सम्बन्ध होता है। नीमका सेवन कर देखना। मैं उसके प्रयोग कर रहा हूँ। दो बार खानेके बाद आधा तोला [नीमकी] पत्ती चबाकर देखना। इससे भख ज्यादा लगेगी और रक्त शुद्ध होगा। परिणाम सूचित करना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३१७

१ मदालसा बजाजकी माँ।

१३१. पत्र : कान्ति और कनु गांधीको

२३ मई, १९३५

चि० कान्ति और कनु,

यह समझ लो कि तुम्हे साथ लानेकी मेरी बडी इच्छा थी, लेकिन मैंने उसे दबा लिया। यह ठीक हुआ, इसमे सन्देह नही है। किन्तु इसमें भी सन्देह नही है कि तुम्हारी मेरे साथ सफर करनेकी इच्छा है। आशा है, सब काम ठीक चल रहा होगा। प्रार्थनामे जितना रस-आनन्द भर सको, भरना। कनुको 'गीता' के अध्याय मुखाग्र कर लेने चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९७) से, सौजन्य कान्तिलाल गांधी

१३२ पत्र : बलवन्तसिंहको

२३ मई, १९३५

चि० बलवन्तसिह,

तुमारी २१ तारीखकी अव्यवस्था देखकर मे परेशान हूआ। लेकिन अच्छा हूआ कि मैंने तुमारी इतनी निर्बलता जान ली। अब तुमारे स्थिरचित्त होकर अपने को समझ लेना चाहिये। किशोरलाल और काकासाहबसे बात करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७७) से।

१३३. पत्र : राजकिशोरी त्यागीको

२३ मई, १९३५

चि० राजकिशोरी,[1]

तुमको मैं साथ नही ले चला उसका मुझको दु:ख था। लेकिन तुमारा कल्याण तुमको वही रखनेमें था। लेकिन कोई अवसर आवेगा जब मेरे साथ ही चलेगी, खुश होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६३६) से। सी० डब्ल्यू० ४२८४ से भी।

१३४. पत्र : अमतुस्सलामको

२३ मई, १९३५

प्यारी बेटी,

मेरी उमीद है कि खुश होगी और सब कुछ अच्छी तरह चलता होगा। तुम्हारा वजन बढता होगा। किसी बातकी फिक्र होनी नही चाहिये।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२६) से।

१ चन्द त्यागी की पुत्रवधू।

१३५. भाषण : बोरसदमें[1]

[२३ मई, १९३५ को या उसके पश्चात्][2]

चूहे और पिस्सू छूत फैलाते है, इसलिए डाक्टरोका कहना है कि चूहो और पिस्सुओको नष्ट कर देना चाहिए। पर चूहे और पिस्सू तो ईश्वरके सन्देशवाहक है। इनके द्वारा ईश्वर हमे चेतावनी देता है। मै प्रत्यक्ष अपनी आँखोसे देखता हूँ कि जिन गावोमे आपको प्रकृतिने अच्छेसे-अच्छा जलवायु और स्वास्थ्यकर जमीन प्रदान की है वहाँ आप प्रकृतिके नियमोको इस तरह भग करते है कि लगता है वहाँ महामारीने हमेशाके लिए अपना डेरा जमा रखा है। आप कुछ चूहो और पिस्सुओको तो नष्ट कर देगे, पर यदि आपने अपने घरो और आगनोको इतना साफ न रखा कि चूहे और पिस्सू पैदा ही न हो, तो वे तो वहाँ बारबार पैदा होगे ही। उन्हे मारनेसे क्या होगा? मुझ-जैसा अहिसाव्रती मनुष्य तो यही कहेगा कि चूहो और पिस्सुओको भी जीनेका उतना ही अधिकार है जितना कि मुझे है, और इसका तो कोई कारण नही दीखता कि उनका नाश करनेके बजाय मै अपना ही नाश क्यो न हो जाने दू। लेकिन अपने इस जीवनमे मै अहिसाकी उक्त मजिलतक पहुँचनेकी आशा नही करता। यो तो एकाधिक जीवनोमे भी शायद ही ऐसा कर पाऊँ। आप भी अपने लिए शायद ऐसी कोई आशा नही रखते होगे। लेकिन आप अपने आसपास ऐसी परिस्थितियोका निर्माण अवश्य कर सकते है जिनमे चूहे और पिस्सू पैदा ही न हो। मै चाहता हू कि आप ऐसी परिस्थितियोका निर्माण करे। मै चाहता हू कि इन स्वयसेवकोने गाँवोकी सफाई और रास्तोको झाडने-बुहारनेकी जो मुहिम शुरू की है उसे आप एक स्थायी चीज बना दे। और मै चाहता हूँ कि आप अपने घरोमे चूहोके बिलोको खोलकर नष्ट कर दे और ऐसे फर्श बनाये जिनमे चूहे अपने घर न बना सके।[3]

जिस मनुष्यम प्लेगके कीटाणु प्रवेश कर गये है वह ऐसे कीटाणुओसे ग्रसित चूहे या पिस्सूसे बदतर है, और जबतक आप अपने शरीरको ऐसा नही बना लेते जिससे रोगाणुओका उसपर कोई असर न हो तबतक आप महामारियोको समाप्त नही कर सकते। प्रकृतिने हमे रोग-प्रतिरोधकी पर्याप्त क्षमता दी है। लेकिन हमने

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। महादेव देसाईके कथनानुसार गांधीजी ने विभिन्न गाँवोमें लगभग दस सभाओमें भाषण दिये थे, और अपने भाषणोमें उन्होंने लोगोसे कहा था कि "वे अपने शत्रुके भाग जानेसे ही सतुष्ट न हो जायें बल्कि ऐसी व्यवस्था करें जिससे वह दुबारा उनकी ओर रुख ही न करे।"

२ गांधीजी २३ मईको बोरसद पहुँचे थे।

३ आगेके अनुच्छेदकी रिपोर्ट महादेव देसाईने गांधीजी के "एक भाषणके अश" के रूपमें दी थी।

उसके नियमोकी उपेक्षा करके स्वय ही वह क्षमता नष्ट कर ली है। हमे रहन-सहन तथा खान-पानमे आरोग्यप्रद और स्वच्छ आदते अपनानेकी यह क्षमता फिर प्राप्त करनी होगी।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ८-६-१९३५

१३६ पत्र : एफ० मेरी बारको

२४ मई, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारे सम्बन्धमे खुर्शीदसे मेरी बात हुई थी। उसका सारा मकान करीब-करीब खाली हो जायेगा। इसलिए अगर तुम्हे मिरज जाना ही पसन्द हो, तो जरूर जाओ, और जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी जाओ। वैसे अगर केवल परीक्षा करवानेके लिए बम्बई जाना हो तब तो तुम्हे वहा कही भी ठहरनेमे कोई दिक्कत नही होगी। तुम्हारे स्वास्थ्यके लिए जो ठीक हो, वही करो।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४२) से। सी० डब्ल्यू० ३३७१ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१३७ पत्र : अगाथा हैरिसनको

वर्धा[1]
२४ मई, १९३५

प्रिय अगाथा,

जबतक सी० एफ० ए० यहाँ है, मुझे तुम्हे लिखनेकी कोई जरूरत नही है। लेकिन तुमने अपने जिस पत्रके साथ 'मैचेस्टर गार्जियन' को लिखे काल हीथका पत्र भेजा है, उसके बारेमे तो कुछ कहना ही है। उस पत्रका कोई असर नही हो रहा है, क्योकि सचाईको जिस रूपमे लोग यहा जानते है उसका इसमे कोई खयाल नही रखा गया। वहाँ राजा दलगत झगडोसे ऊपर है, या ऊपर हो सकता है। यहाँ तो सम्राटका मतलब शासनतत्र चलानेवाला अधिकारी-वग ही लगाया जाता है। वह अपने प्रतिनिधिके माध्यमसे शासन करता है। भारत कार्यालय वास्तविकतासे

१ स्थायी पता।

सर्वथा अलग पडे इस अनुच्छेदको देखकर उपहास कर रहा है। और सरकार उन कैदियोको क्यो आजाद करे जिनके मनमे न तो सम्राट्के रूपमे सम्राट्के प्रति और न साम्राज्यके ही प्रति कोई प्रेम है। मैने राजनीतिक कैदियोको छुडवानेके किसी आन्दोलनको कभी ठीक नही माना है। मैने सरकारके हठ-भरे इन्कारको समझ लिया है। उसका रवैया सगत भी है। असगत तो वह तभी होगा जब यह मान लिया जाये कि पूरी प्रणाली ही गलत है। काश, लोग तथ्योपर थोडा ध्यान देते।

सस्नेह,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४९१) से।

१३८. पत्र : अमृतकौरको

२४ मई, १९३५

प्रिय अमृत,

तो तुम पत्र लिखनेके समयतक — यानी इस २० तारीखतक भी — दुर्घटनाके प्रभावसे मुक्त नही हो पाई थी। मुझे उम्मीद है कि अब पूरी तरह मुक्त हो गई होगी।

यह जानकर खुशी हुई कि तुमने ग्रामवासियोके साथ सम्पर्क स्थापित कर लिया है। तुम्हे उनकी घरेलू हालतकी जानकारी लेनी चाहिए और उनके साथ इस तरह मेलजोल बढाना चाहिए जैसे वे तुम्हारे परिवारके सदस्य हो। अभी हमे उनकी नैतिक अवस्थाकी चिन्ता करनेकी जरूरत नही है। क्योकि उन्हे इस सम्बन्धमें अधिक ज्ञान ही नही है। उनके मनमें कोई कलुष नही है। इसलिए अगर हम उनके साथ सम्पर्क स्थापित करेगे तो उनको अपनी कुछ आदतोको छोडनेके लिए कहना आसान और असरदार हो जायेगा।

गर्मी तो है, पर बहुत ज्यादा दुखदायी नही।

मै चार्लीको अलगसे पत्र नही लिख रहा हूँ।

वहांके सभी लोगोको प्यार।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३५) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३४४ से भी

१३९. पत्र : मीराबहनको

२४ मई, १९३५

चि० मीरा,

एक अटेरन मैंने खुद ही साथमें रख लिया था। इसलिए कोई कठिनाई नहीं हुई। सूत अटेरनेवाले यहाँ काफी है, और पूनियाँ भी पर्याप्त मिल जाती है। पैर पोछनेवालोकी भी कमी नही है। भोजनका तो यह है कि बाल बकरियाँ दोहवा लाता है और आम खूब मिल जाते है। नीमके पेड तो सब जगह है ही। इसलिए मेरे लिए तो तुम्हे चिन्ता करनेकी जरूरत नही है।

तुम राघवैयाका इलाज करवा रही हो, यह जानकर खुशी हुई। रसोईघरमें हाथ बटा रही हो, यह भी अच्छा है।

कमला बिलकुल स्वस्थ और प्रसन्न थी।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०३) से, सौजन्य मीराबहन। जी० एन० ९७६९ से भी

१४०. पत्र : जमनालाल बजाजको

२४ मई, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला है। इन्दौरकी बातको भार-स्वरूप न होने देना। जब नीचे उतरो तो वहाँ जरूर हो आना।

गगादेवीकी खबर मिलती होगी। बोरसदमें सब ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७०) से।

१४१. पत्र : मणिलाल तथा सुशीला गाधीको

२४ मई, १९३५

चि० मणिलाल तथा सुशीला,

कल सरदारकी इच्छानुसार मै बोरसद आया। बा और महादेव साथ है। ३१ को वापस वर्धाके लिए रवाना हो जाऊँगा। बा बहुत करके लगभग महीने-भर के लिए इसी ओर रह जायेगी।

बडे दु खकी बात है, तुम्हारा गन्ना सूख गया। लेकिन किसानके भाग्यमे ऐसा होता ही रहता है। इस सबको मनमे रखकर ही खेती की जाती है। पाला पडनेसे क्या यहाँ इसी बरस करोडोकी सुनहरी फसल बर्बाद नही हो गई?

बा भले थोडी देर चिन्ता कर ले, किन्तु तुम्हे तो वहाँके सारे समाचार भेजने ही चाहिए। तभी तो, जहा आवश्यक हो, मै मागदशन कर सकता हू।

रामदास-सम्बन्धी तेरा सुझाव मुझे अच्छा लगा। तेरा पत्र उसे भेज रहा हूँ। वह आयेगा तो नही, लेकिन एजेंसी ज़रूर ले सकता है और उससे तुम दोनोको फायदा होगा। मै ऐसा करनेका सुझाव दे रहा हू।

हरिलाल अभी तो नई बहूकी खोजमे है। घडीका धन्धा करना चाहता है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

[१] जमनालालजी से जो पैसे उधार लिये थे, उनमे से तो एक पाई भी वापस नही दी। मेढने[२] जो पैसा भेजा था, वह भी हडप कर गया। इसलिए तुझे मेढको तो हर महीने एक पौड भेजना ही पडेगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३८) से।

१ नाम छोड दिया गया है।

२ सुरेन्द्रनाथ मेढ।

१४२ पत्र शान्तिकुमार मोरारजीको

२४ मई, १९३५

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम दीर्घायु होओ और खूब सेवा करो, सदाके लिए यही मेरी आशा है, सदाके लिए यही मेरा आशीर्वाद है।

सुमतिका[1] स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

मातुश्री को मेरे प्रणाम।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८००) से, सौजन्य शान्तिकुमार मोरारजी

१४३. पत्र : अवधेशदत्त अवस्थीको

२४ मई, १९३५

चि० अवधेश,

मनुष्य-जीवनका उद्देश्य प्राणी-मात्रकी सेवा माना जाय।

२ एकादश व्रतका पालन और उसके विरोधी वस्तुका त्याग आवश्यक है।

३ गरुडके वचनमें क्रोध अवश्य था। उसका अर्थ यह कभी नहीं है कि हम भी क्रोध करें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१५) से।

१ शान्तिकुमार मोरारजीकी पत्नी।

१४४. वैनलेस सैनेटोरियमके अधीक्षकको भेजे गये तारका मसविदा

[२४ मई, १९३५ के पश्चात्][१]

अधीक्षक
वैनलेस सैनेटोरियम
मिरज

कु० बारको बुखारके कारण कल रवाना न हो सका। शनिवारकी सुबह वहाँ पहुँचूँगा।

गाधी

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

१४५. एक लाख रुपया चाहिए

हरिजन सेवक सघका केन्द्रीय बोर्ड सेठ जुगलकिशोर बिडलाके दिये हुए रुपयेसे बहुत-से कुएँ हरिजनोके लिए बनवा चुका है। वह रुपया अब समाप्त हो चला है किन्तु हरिजनोके लिए कुएँ बनवानेकी आवश्यकता अब भी शेष है। सावजनिक कुओसे हरिजनोके पानी भरनेका विरोध अब भी अनेक स्थानोमे किया जा रहा है, और बेचारे हरिजनोको या तो मवेशियोके हौजोका पानी पीना पडता है, या लोग दया-वश उनके घडोमे दूरसे जो पानी डाल देते है उसके लिए उन्हे पैसा देना पडता है। इसलिए जितने भी नये कुएँ बनेगे उनसे निस्सन्देह हरिजनोका कष्ट-निवारण तो होगा ही, साथ ही, उनसे देशकी सम्पत्तिमे वृद्धि भी होगी। इस कामके लिए हरिजन सेवक सघके केन्द्रीय बोर्डने एक लाख रुपयेकी अपील निकालनेका निश्चय किया है। किस प्रान्तमे कितने कुओकी जरूरत है, इसके आँकडे जनताके सामने रखनेके लिए तैयार किये जा रहे है। इतनी बडी आवश्यकताको देखते हुए एक लाख रुपया कुछ भी नही है। किन्तु सघके पास कोई ऐसा जरिया नही कि जिससे वह कुओके बनवाने पर बडी-बडी रकमे खर्च कर सके। यह ऐसा काम है जो धीरे-धीरे ही होता है, और फिर उसमे विशेष बुद्धि-कौशल भी चाहिए। हर कोई

१ गांधीजी ने मेरी बारको २४ मईको जो पत्र लिखा था यह तारीख उसीके आधार पर निर्धारित की गई है। देखिए "पत्र एफ० मेरी बारको", २४-५-१९३५।

कुआँ नही बनवा सकता। फिर यह काम एक-दो जगहका तो है नही, तमाम प्रान्तोमे सैकडो जगह कुएँ बनवाने है, इसलिए कामकी ठीक-ठीक देखभाल रखना भी बहुत मुश्किल है। बोडकी यह नीति है कि जिस कामपर वह ठीक तरहसे पैसा खच नही कर सकता और जनताके आगे उसका ठीक-ठीक हिसाब-किताब नही रख सकता, उस कामके लिए वह पैसा माँगता ही नही। मै उम्मीद करता हूँ कि लोग इस छोटी-सी अपीलका तुरन्त पर्याप्त उत्तर देगे।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २५-५-१९३५

१४६ पत्र . भगवानजी पु० पण्ड्याको

२५ मई, १९३५

चि० भगवानजी,

हूबहू वणन देनेवाला तुम्हारा पत्र मिला था। अपने शरीरका खूब ध्यान रखना। वाडजको मत भूलना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३८७) से, सौजन्य भगवानजी पु० पण्ड्या

१४७ पत्र . विनायकप्रसाद पण्ड्याको

२५ मई, १९३५

भाईश्री विनायक,

आपके बहनोईको विनयपूवक समझाने-बुझानेके सिवा मै उनकी चाय और बीडी छुडवानेका और कोई उपाय नही देखता। यदि आप सबका प्रेम भी उन्हे द्रवित नही करता तो आपको उनकी इस आदतको बरदाश्त करना पडेगा।

मो० क० गाधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३६७) से।

१४८ पत्र : अन्नपूर्णाको

वर्धा [के पतेपर]
२५ मई, १९३५

चि० अन्नपूर्णा,

पिताजी ने उपवास क्यो किया? उपवासमे क्या किया? बहूत कष्ट हुआ था? अब क्या खाते है? उपवासका निवारण कैसे किया? सतीश बाबुके[1] आ जानेके बाद मुझे सब ब्यान लिखो। वैद्यनाथ क्या करता है? अब लडकिया कितनी हुई? देवकपास बोनेकी चेष्टा की जाय।

बापुके आशीर्वाद

श्री अन्नपूर्णा कुमारी
माफत श्री गोपबन्धु चौधरी
डा० बारी
जि० कटक

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७७८) से।

१४९ पत्र भगवानजी पु० पण्ड्याको

बोरसद
२६ मई, १९३५

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र सवेरे साढे तीन बजे मेरे हाथमे दिया गया, और पढकर मै तुरन्त ही जवाब लिखने बैठा हूँ। रोनेसे सावलीकी बहनोके दु ख दूर नही होगे। जितना तुम सोचते हो, उतनी खराब हालत सावलीकी हरिजन बहनोकी नही है। यह सिद्ध किया जा सकता है। तुम्हारी कल्पनाशक्ति तुम्हे बहुत दूर खीच ले जा सकती है, इस शक्तिको नियन्त्रित करना चाहिए। यह ससार दु खका सागर है। यदि इसीका विचार करते रहे, तो इसमे डूब जायेगे। इस जगत्का सिरजनहार और नियन्ता ईश्वर है तथा वह न्यायी हैं। अत हमारा माना हुआ दु ख दु ख नही है, बल्कि कुल मिलाकर सुख ही है, अर्थात् सत्यकी ही जय होती है, ऐसा मानकर मनको

१ सतीशचन्द्र दासगुप्त।

हलका रखना चाहिए। ऐसा करे, तो दूसरोके दु ख दूर करनेमे भी सहायता मिलती है। किन्तु इसके विपरीत यदि दु खका आकडा बढाकर रखे तो मोह उत्पन्न होता है और हम दु ख दूर करनेके लायक भी नही रह जाते।

सावलीके बारेमे मै जाच-पडताल तो करूँगा ही। लेकिन एक बात कह देता हूँ। पहले बहनाकी सूतसे कोई कमाई नही थी, उसके बदले अब इतनी हो गई, यह सन्तोषकी ही बात है। बहनाकी दूसरी आमदनी होती ही है। आखिर वे कुटुम्बमे से एक ही होती है। दूसरे कुटुम्बी भी कमाते है। इन बहनोसे अधिक गरीब तो इस देशमे असख्य है। उनकी गरीबीका विचार करके आँसू नही ढालने चाहिए, बल्कि छातीको पत्थर बनाकर गरीबी मिटानेका प्रयत्न करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३८८) से, सौजन्य भगवानजी पु० पण्ड्या

१५० पत्र · अमृतकौरको

वर्धा [के पतेपर]
२६ मई, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा सूत अब मुझे मिल गया है। बुरा नही है। अब तुमको ठीक बटदार धागा निकालना सीखना चाहिए। न सीखनेपर सूत कमजोर पड जाता है। देखता हूँ कि तुमने बहुत-सारे हजामतके ब्लेड भज दिये है, जिनमे से कुछ बिलकुल नये है। सूत भेजनेपर खर्च हुए डाक-खर्चकी पूर्ति उनसे हो गई। अब कोई पासल भेजनेसे पहले तुमको उसे काफी तादादमे जमा कर लेना चाहिए।

क्या लिफाफो और लिखनेके कागजोका पैकेट तुमको मिल गया? विशेषज्ञने अभीतक कागज बनानेका काम शुरू नही किया है। मैने उसको इन्दौरसे आई हुई सामग्रीसे पत्र आदि लिखनेका कागज इत्यादि तैयार करनेका काम सौपा है। वह जब बना लेगा, तुमको सूचना मिल जायेगी।

हाँ, शिमलाके बाजारके बारेमे मैने बात चलाई तो थी। मैने तुमको सुझाया था कि तुम खुद जाकर देखो कि वहा स्थानीय रूपसे कौन-कौन-सी सब्जिया तथा फल मिलते है और स्वास्थ्यकी दृष्टिसे वे कितने गुणकारी रहते है, और बाजारमे दूर-दूरके पहाडी इलाकोसे अपनी उपजाई वस्तुएँ बेचनेके लिए आनेवाले गरीबोकी हालत की भी जानकारी हासिल करो। तुम शिमलामे एक बडी तादादमे पहुँचनेवाले लोगोको कागज, खद्दर और इसी प्रकारकी अन्य वस्तुएँ भी बेच सकती हो।

आशा है कि तुम दोनो अब पर्वतीय प्रदेशके वायु-सेवनका लाभ महसूस करने लगे होगे।

एन्ड्रयूजको इसी सप्ताहमें यहाँ पहुँच जाना चाहिए।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३६) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३४५ से भी

१५१ पत्र : न० रा० मलकानीको

२६ मई, १९३५

प्रिय मलकानी,

तुम्हारे २३ तारीखके पत्रका हरिजी[1] बुरा मान गये लगते हैं। वह कोई शिष्टतापूर्ण पत्र नहीं है। उसका स्वर सचिवके लिखे पत्र जैसा नहीं, बल्कि किसी प्राध्यापकके लिखे पत्र-जैसा है। सचिवके सामने प्राध्यापककी तुलनामें अप्रिय बातें कहनेके प्रसंग बहुत अधिक आते हैं, और अगर वह अप्रिय बातोंको भी प्रिय ढंगसे न कह पाये तो फिर उसका सचिव होना व्यर्थ है।

मैंने बापाको लिखा है कि हरिजी के कारण वातावरणमें जो विक्षोभ पैदा हो गया है, उसे वही शान्त करें। हरिजी को मैं भी लिख रहा हूँ, और तुम भी एक विनयपूर्ण पत्र लिखकर उनसे कह सकते हो कि अगर अनजाने ही तुमसे कहीं अशिष्ट भाषाका प्रयोग हो गया हो तो उसके लिए वे क्षमा करें।

तुम्हारा,
बापू

[पुनश्च]

पानी-फण्डके[2] लिए दिये दान की सूची क्या तुम भेजते रहे हो?

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५३) से।

१ हृदयनाथ कुंजरू।

२ हरिजन बस्तियोंमें जल-आपूर्तिकी स्थिति सुधारनेके लिए जून, १९३३ में हरिजन सेवक संघ द्वारा आरम्भ किया गया जे० के० पानी फण्ड।

१५२ पत्र : मीराबहनको

२६ मई, १९३५

चि० मीरा,

तुम गगादेवीका मागदशन कर रही हो, इस बातसे मै बहुत खुश हूँ। उसे अभी कठिन परिश्रमका कोई काय नही करना चाहिए। आशा है, राघवैयाकी तबीयतमे सुधार हुआ होगा। सिन्दीकी सफाईका काम एक दिनके लिए भी बन्द नही होना चाहिए।[1] लेकिन साथ ही तुम्हे मौनपूर्वक पहाडीतक का अपना वह भ्रमण भी जारी रखना चाहिए।

सरदारने मेरे लिए बहुत हलका कायक्रम रखा है।

सस्नेह,

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०४) से, सौजन्य मीराबहन। जी० एन० ९७७० से भी

१५३ पत्र : कान्ति गाधीको

२६ मई, १९३५

चि० कान्ति,

तेरी कैफियत ठीक है। मै इतना ही समझा हूँ कि सब मिलाकर तू मेरे साथ रहनेमे ही अपना भला समझता है। मै यह नही मानता कि मेरे साथ जिस तरह रहना होता है उसीमे सच्ची शिक्षा निहित है, यह बात तेरे मनमे घर कर गई है। लेकिन यह मानता हूँ कि जो निणय तूने किया है, उससे तू प्रसन्न है। तेरा भला होगा, इसमे तो मुझे कोई सन्देह है ही नही। तेरा कायक्रम मै समझ गया हूँ। मै जब वहाँ आऊँगा, तब उसपर विचार कर लेगे। यदि खतौनी पूरी हो जाए,

१ सिन्दी गाँवके निवासी शौचके लिए गाँवके रास्तोंका उपयोग करते थे। मीराबहनकी शिकायत पर गाधीजी ने उन्हें, गाँववालोंको सफाईका पाठ पढ़ानेकी दृष्टिसे, इन गलियों और रास्तोंको प्रतिदिन साफ करनेकी सलाह दी थी।

तो एक काम निबट जायेगा। काकासाहबकी उपस्थितिका जितना भी लाभ लिया जा सकता हो, लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९८) से, सौजन्य कान्तिलाल गाधी

१५४ पत्र : प्रभावतीको

२६ मई, १९३५

चि० प्रभा,

तेरा पत्र मिला। तेरा बीमार पडना मुझे पसन्द नही आता। रोगसे मुक्त होना ही चाहिए। कमलाने लिखा है कि तू उससे मिलने गई थी। तू गई और जयप्रकाश के साथ भी कुछ दिनो रह आई, यह तूने ठीक किया। इसी तरह अगर वह शादी भी तय हो जाये तो तेरी सारी समस्याएँ सुलझ जाये। देखना, उसके पहले बीमार मत पड जाना। नीमकी पत्तियाँ खाना। कटि स्नान करना। नियमसे घूमने जाना। मै ३१ को बोरसदसे रवाना हो जाऊँगा और २ जूनको वर्धा पहुँचूगा। मेरा वजन १०४ पौड है। खुराकमे इन दिनो दूध, नीमकी पत्तियाँ और आमका रस ले रहा हूँ। फिलहाल इमली नही मिल रही है। इसकी जगह नीबूका रस ले लेता हूँ। मेरी तबीयत अच्छी है। साथमे सिफ बा और महादेव है। बा ओर आनन्दी बम्बई से साथ हुए। बहुत करके बा महीने-भर साथ रहेगी। बोचासणमे इन दिनो गगाबहन के[1] पास बहुत-सी लडकियाँ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४४९) से।

१५५. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२६ मई, १९३५

न तू मुझसे मिल सका, न मै कपिलको[2] देखने आ सका। महादेवको लिखा तेरा पत्र पढा। कपिलको आराम हो गया, बधाई!

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० १५८

१ गंगाबहन वैद्य।

२ मथुरादास त्रिकमजीका पुत्र।

१५६. पत्र : अमतुस्सलामको

२६ मई, १९३५

प्यारी बेटी,

तुम्हारा खत मिला। स्टेशन आकर[१] कोई ऐसा गुनाह तो नही किया। क्या खामखा परेशान होती है? तुमने सब खबर ठीक दी है। गगाबहन[२] खुश होगी। राजकिशोरीको[३] मेरा खत मिला होगा।[४] तुम्हारे तबीयतके बाहर काम न करना। मै दो तारीखको पहुँच जाऊँगा।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२७)से।

१५७. पत्र : मीराबहनको

२७ मई, १९३५

चि० मीरा,

तुम्हारे दो बढिया वर्णनात्मक पत्र मिले। उनसे पता चलता है कि आत्माभिव्यक्तिके लिए तुम्हे इस तरह अकेले घमनेकी कितनी जरूरत है। रोज नही तो अक्सर तुम्हे यह सैर करनी ही चाहिए। डाकका समय हो रहा है और मै लिख रहा हूँ। मेरा मुख्य भोजन यहाँ दो पौड दूध, दो तोले नीम, स्थानीय आमोका बडा कटोरा-भर रस और नीबू है। यहाँका मौसम वहाँसे बेशक बहुत ठण्डा है। हम समुद्रसे सिर्फ १५ मील दूर है।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०५)से, सौजन्य मीराबहन। जी० एन० ९७७१ से भी

१ गाधीजी जब कुछ दिन पहले ही बम्बईके लिए रवाना हुए तो अमतुस्सलाम उनसे मिलने वर्धा-स्टेशन गई थीं।

२ धूलियावाले रामेश्वरदास पोद्दारकी पत्नी।

३ चन्द्र त्यागीकी बहू।

४ देखिए "पत्र राजकिशोरी त्यागीको", २३-५-१९३५।

१५८. पत्र : कनु गांधीको

२७ मई, १९३५

चि० कनु,

तेरा पत्र मिला। 'गीता' विधिवत सीख रहा है, यह अच्छा है। यदि 'मार्गोपदेशिका'[1] ठीक तरहसे सीख ले, तो व्याकरण आ जायेगा। उससे उच्चारणमें भी सरलता होगी और स्मरणशक्ति भी बढ़ेगी। एक-एक मिनटका सदुपयोग कर, तो बहुत-कुछ सीख लेगा। आशा है, सब साफ-सुथरा तो रखता ही होगा। तीसरी चक्की आई थी, उसका क्या हुआ? जो टूट गई थी, उसके ठीक करवानेका क्या हुआ? आशा है, भेटमें जो आम वगैरह आये थे, उनका हिसाब रजिस्टरमें दर्ज किया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

१५९. पत्र : वैकुंठलाल एल० मेहताको

बोरसद

२७ मई, १९३५

भाई वै[कुंठ],[2]

भाई [म][3]थु[रा][4] दास विसनजी लिखते हैं कि आप हरिजन सेवक संघकी प्रतिज्ञापर हस्ताक्षर नहीं कर सकते, इसलिए त्यागपत्र देना चाहते हैं। यह क्या बात है? मुझे तो विश्वास नहीं हुआ। यह प्रतिज्ञा तो केवल हमारी मानसिक वृत्ति की सूचक है। इसके बिना कैसे चल सकता है? अगर आप ऐसी प्रतिज्ञा नहीं ले सकते, तो फिर वह किससे लिवाई जा सकती है? मैं तो समझता हूँ, भाई मथुरादास आपको [समझे नहीं है]। जैसी स्थिति हो [मुझे] समझाकर लिखिए। बम्बईका संघ सुव्यवस्थित हो जाना चाहिए।

बापू

[पुनश्च]

मैं ३१ को बोरसद छोड़ दूंगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३६२) से।

१ बच्चोंके लिए भाण्डारकर कृत संस्कृत व्याकरणका गुटका।

२ से ४ कोष्ठकबद्ध अंश उन स्थानोंका निर्देश करते हैं, जो मूल पत्रके क्षतिग्रस्त हो जानेसे साधन सूत्रमें ही अस्पष्ट हैं।

१६०. पत्र : विष्णु नारायण अभ्यकरको

२७ मई, १९३५

भाई विष्णु नारायण अभ्यकर,

आपका पत्र मैंने ध्यानसे पढ लिया। आपने जो दृढता और विश्वाससे खादी-काम किया है उसके लिए अनेक धन्यवाद। प्रजामडलने खादीकी दरी छोडकर मिलके धागेकी दरी ली यह जितना आश्चयजनक है इतना ही दु खद है। लेकिन हम जो खादीपर विश्वास रखते है अपना विश्वास कभी न छोडें।

आपका,

मो० क० गाधी

पत्रकी फोटो-नकल (एस० एन० १२७१) से।

१६१. पत्र · बलन्वतसिंहको

२७ मई, १९३५

चि० बलवतसिंह,

तुमको जब दोषदर्शन नही हुआ है तो क्लेश क्यो? भले कोई महात्मा भी हमारा दोष बतावे लेकिन जबतक हमको प्रतीति न हो तबतक न शोक होना चाहिये, न प्रायश्चित। मैंने तुम[मे] असत्य नही पाया है लेकिन विवेकशून्यता पाई है। जब तुमारे जाहेर पैसेसे जाना था तो जानेका कारण ही नही था। दिल्लीसे आना भी उचित था या नही यह सोचनेकी बात है। ऐसे ही रोटी व आमकी बात है। लेकिन इन सब बातोमे दु ख माननेकी बात नही है, सिफ समजनेकी बात है, मनपर अकुश रखनेकी बात है। अधिक मिलने पर। मेरी उमीद है कि १२ दिन जो मिल गये है उसका पूरा सदुपयोग किया होगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

तुमारा कागद वापिस करता हू।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७८) से।

१६२. पत्र : हीरालाल शर्माको

२७ मई, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला है। मैं समजा हू इस वखत तो तुमने पुस्तकोके पैसे दिये हैं। दूसरे आ जानेसे सबके पैसे तुमको जमा दूगा। पुस्तकोके पैसे तुमारे देनेकी कोई आवश्यकता नही है। कया दूकानदारने कुछ दाम कम लिया कि जो छापा था वही लिया? जो पुस्तक पढ सकते है आज सो तो ऐसे ही पढे जाय। दरम्यान अमरीकाका कया होता है सो देखे। वर्धा आकर तो अवश्य सीख सकते हो ये सब तो अमरीका पर निभर है। दा० केलागको लिखनेका मतलब यह नही है कि तुमारा जाना उनके उत्तरपर निर्भर है। यदि पासपोट हमारे पास रहता तो मैं तुमको ३१ तारीखको अवश्य रवाना कर देता। केलागके उत्तरकी प्रतीक्षा न करता। पासपोटका तो मैंने तुमको लिखा[1] सो हूआ। तुमारी अरजीके सिवा एक कदम भी आगे नही बढ सकते है।

मैं बोरसदमे हू। ३१ ता० को रवाना होकर २ जूनको वर्धा पहोचुगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

तुमारे फोडेका कया? कोरटके जजमेंट का कया?

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६२-६३ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

१६३. पत्र : अमतुस्सलामको

२७ मई, १९३५

प्यारी बेटी,

तुमने तो मुझे लिखनेकी मनाही की है, लेकिन मुझे लगता है कि मेरे खतसे तुमको खुशी होगी। मुझे लिखनेका वक्त है। वहाँ सब अच्छा चल रहा है, जानकर खुशी होती है। जापानी साधु[2] अच्छे होंगे।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२८) से।

१. देखिए "पत्र हीरालाल शर्माको", २०-५-१९३५।
२ गांधीजी ने उनका नाम आनन्द रखा था।

१६४. भाषण : बोरसदमें[1]

२७ मई, १९३५

यह शर्मकी बात है कि यहाँ प्लेग चार बरसतक बना रहा। खास बोरसदकी आबादी सिर्फ तेरह हजारकी है। और ताल्लुकेकी आबादी १,४४,००० की है। खास बोरसद और बोरसद ताल्लुकेसे प्लेगको नेस्तनाबूद कर देना कोई ऐसी बात नही जो अशक्य हो। पर पूरे शहरके लिए सिर्फ छह भंगी रखनेसे यह काम पूरा होनेका नही। आप सब लोग खुद भंगी न बनेंगे, खुद सफाईका काम न करेंगे, तो सरदार और उनके स्वयंसेवकोंके प्रयत्नके बावजूद यहाँ फिर प्लेग फैलेगा। सच बात तो यह है कि स्वयंसेवकोने यहाँ जो सहायता-कार्य किया और जो अब समाप्त हो गया है उससे आपकी जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है। आपने सफाईका यह काम चालू न रखा तो यह सारा परिश्रम व्यर्थ ही जायेगा। पहले मैं जब यहाँ आया तब आप लोगोंने सविनय अवज्ञा-आन्दोलनमें जो वीरता दिखाई थी और जो कष्ट सहन किये थे तथा त्याग किया था, उस सबके लिए आपको बधाई देने आया था। लेकिन आज मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि जो लोग सरकारके खिलाफ लड़ सकते हैं वे नहीं, बल्कि इस प्लेग-जैसे विकट संकटसे जो मोर्चा ले सकते हैं, वे ही स्वराज भोग सकेंगे। मैं आपको यह बताऊँ कि जबसे मैंने 'स्वराज' शब्द सीखा, तभीसे मैं इस किस्मके काममें रस लेता आया हूँ। सन् १८९३ से ही, जबसे मेरे सार्वजनिक जीवनका आरम्भ हुआ, मेरी मुख्य रुचि इस प्रकारके रचनात्मक कार्योंमें रही है। सरकारके साथ लड़नेका मौका तो मेरे जीवनमें बहुत देरसे आया। पर यह कहा जा सकता है कि यह अनेक वर्षोंके ठोस रचनात्मक कार्यकी पुख्ता नींवपर खड़ी की गई इमारत है। मैंने नगरपालिकाके हर कायदे-कानूनका यथाशक्ति पालन किया है, और जिस सरकारने मुझे अनेक बार जेलकी सजा दी है वह भी मेरी नियम-पालन करनेकी योग्यताको जानती है। मैंने पहले-पहल दक्षिण आफ्रिकामें जब भंगीका काम सीखा, तबसे मैं यह जोर देकर कहता चला आ रहा हूँ कि इस किस्मके कामसे ही हम स्वराज भोगनेके योग्य बनेंगे। आप यह तो नहीं कह सकते कि स्वराज प्राप्त हो जानेके बाद इन समस्याओंकी ओरसे निश्चिन्त होकर आप सो जायेंगे। स्वराजका अर्थ नियम-रहित स्थिति नहीं। आपको स्वराज मिलनेके बाद भी इन सब प्रश्नोंको हल करना ही पड़ेगा। याद रखिए कि जिस व्यक्तिने सविनय अवज्ञाकी आवाज उठाई थी, वही इस प्रकारके आवश्यक कामके लिए आपको आज आमन्त्रण दे रहा है। जबतक आप अपने शरीर और अपने घरको रोगोंके लिए

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत।

अभेद्य नही बना लेते तबतक आप खादीकी उत्पत्तिका तथा ग्रामोद्योगोको पुनरुज्जीवित करनेका रचनात्मक कार्य भी नही कर सकते, और इसलिए यह सफाई का काम तमाम रचनात्मक कार्योंका मूलाधार है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ८-६-१९३५ तथा **बॉम्बे क्रॉनिकल**, २८-५-१९३५

१६५. पत्र : कान्ति गांधीको

बोरसद
२८ मई, १९३५

चि० कान्ति,

तेरा विनोद-भरा पत्र मिला। रविशंकर[1] मिलता रहता है। यदि उसका सिखाया सूत्र तेरे कंठसे हृदयमें उतर गया हो तो समझ, तेरा बेडा पार हो गया। समय आनेपर वह सब होता रहेगा। बाल भी मिलेगा और शेष सब चीजें भी मिलेंगी। भूख-प्यास सबको लगती है, लेकिन भूख-प्यासमें भी जो मस्त रहे, उसीको मस्त कहते हैं।

मीराबहन-जैसी लकडीकी बाँसुरी यदि किसीके पास हो, तो अमतुस्सलाम को दे देना। मैं दूसरी प्राप्त करनेकी कोशिश कर रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९९) से, सौजन्य कान्तिलाल गांधी

१६६. पत्र : नारणदास गांधीको

२८ मई, १९३५

चि० नारणदास,

साथका पत्र पढकर हरिलालको दे देना। इसमें कुछ है, ऐसा तुम्हें लगता है या नहीं?

केशू बम्बई गया है। कुछ छात्रवृत्ति माँग रहा है। गजाननके बारेमें पण्डितजी[2] से मैंने कह दिया है। पण्डितजी उससे बात करेंगे। अभी देते रहो।[3]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू० / २) से, सी० डब्ल्यू० ८४४६ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

१ रविशंकर महाराजके नामसे प्रसिद्ध रविशंकर व्यास।
२ नारायण मोरेश्वर खरे।
३ देखिए "पत्र नारणदास गांधीको", २३-५-१९३५।

१६७ पत्र . प्रेमाबहन कटकको

२८ मई, १९३५

दुबारा नहीं पढ़ा

चि० प्रेमा,

तुझे पौन घटे कैसे ठहरना पडा? मगर मैंने यह नही सोचा था कि तू भाग जायेगी। बहुत दिन बाद मिली थी, इसलिए कुछ सवाल पूछने की और जी-भर तुझे देख लेनेकी इच्छा थी। तू अपने स्थानपर पहुँच गई, यह तो ठीक ही हुआ। उस दिन तो वहाँ रही ही थी, इसलिए मनमे लोभ था।

अरविन्दबाबूके बारेमे मै कुछ कहनेमे असमथ हू। इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे अपना माग फला है। हम जगतके काजी न बने। हाँ, इतना स्वीकार करे कि उनकी छायामे रहनेवाले २०० लोगोमे ऐसे भी हैं जिनके जीवनमे उनके सम्पकसे महान् परिवतन हुए है।

सब अपने-अपने स्वभावका अनुसरण करते है।

पश्चिममे व्यक्तिगत जीवनकी पवित्रताकी आवश्यकता नही मानी जाती, यह कहना पूरी तरह सही नही है। यह बात भी नही कि हमारे यहाँ सभी लोग उसकी आवश्यकताको मानते है। हम उसकी आवश्यकताको तो स्वीकार करते ही है, साथ ही यह भी मानते है कि अन्त शुद्धि-रहित बुद्धिसे होनेवाले कार्य कितने ही सुन्दर क्यो न लगते हो, उनमे स्थायित्व कभी नही रहेगा। तात्कालिक परिणामोके आधार पर ऐसे कार्योंकी तुलना की ही नही जा सकती। हाँ, उन कार्योंमे, जिनका नीतिके साथ सम्बन्ध न हो, अन्त शुद्धिकी जरूरत नही होती। व्यभिचारी बढई समकोणवाली मेज बना देगा। परन्तु अन्त शुद्धि-रहित मनुष्य अस्पृश्यताको नही मिटा सकता, न वह लोगोको चरखेकी तरफ मोड सकता है, क्योकि दोनोमे हृदयकी जरूरत होती है। ऐसे कामोमे समयकी गणना सार्थक नही होती। सत्यनिष्ठासे किये गये कामोके शुभ परिणाम अवश्य होगे, इस बारेमे शका ही नही हो सकती। यदि इतना विश्वास न हो तो हम नीतिकी रक्षा कभी कर ही नही सकते।

ईश्वर तो कल्पनातीत है। इसलिए हम जिसे भजते है वह हमारी कल्पनाका ईश्वर है। सच्चे ईश्वरको किसीने नही देखा और जिन्होने देखा है, वे भी उसका वर्णन नही कर सके है। मुझे कौन-सा स्वरूप विशेष प्रिय है, यह कहना कठिन है। परन्तु जिस स्वरूपको मै पूजता हूँ उसका नाम सत्य है। वह मूर्त है, अमूत है। अनेक प्रकारसे प्रकट होता है। अपूर्णको पूर्ण स्वरूप भला कैसे दिखाई दे सकता है?

गहनोंकी बात कहीं भी नहीं लिखूंगा। मेरी डायरीमें तो उसका उल्लेख हो गया है। तेरे पत्रके बाद नयी टिप्पणी लिखी जायेगी; वह तो मेरे अपने लिए होगी। तू इतना ही चाहती है न?

खादी आयेगी तब उसका उपयोग करूँगा।

लीलावती राजकोटसे आई है। इस बार उसका शरीर खूब अच्छा हो गया है। वजन भी बढ़ा है और खुश मालूम होती है।

यहाँसे ३१ तारीखको रवाना होकर २ तारीखको वर्धा पहुँचनेका विचार है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७३) से।

१६८. पत्र : कृष्णदासको

[वर्धाके पतेपर]
२९ मई, १९३५

प्रिय कृष्णदास,

मुझे इस बातका इल्म नहीं था कि गैरकानूनी अधिवेशन भी अन्य अधिवेशनों के साथ गिन लिये गये हैं। मेरी समझमें राजेन्द्रबाबूसे[1] उनका निर्णय जानकर तुम्हें इस विषयमें तदनुसार करना चाहिए। यदि उन्हें अधिवेशन गिना जाये तब तो उनके अध्यक्ष भी निःसन्देह प्राथमिक सदस्योंपर लागू होनेवाले नियमोंका अनुसरण करनेवाले हुए तो, अ० भा० कां० क० के सदस्य बन जाते हैं।

श्री श्रीनिवास अय्यंगारका नाम सूचीमें नहीं है क्योंकि मेरी समझमें उन्होंने चन्दा नहीं भरा है।

अगर सचमुच कांग्रेस अपने जीवनके ५० वर्ष पूरे कर चुकी है, तब तो बड़े पैमानेपर आयोजन होने ही चाहिए। कार्यक्रम खूब सोच-समझकर बनाया जाना चाहिए। इस विषयमें राजेन्द्रबाबूसे चर्चा करो।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च :]

सरदारने यह पत्र देख लिया है और वे सहमत हैं।

अंग्रेजीकी नकलसे : अ० भा० कां० क० फाइल, १९३१; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. जो उन दिनों कांग्रेसके अध्यक्ष थे और जिन्हें गांधीजी ने इस पत्रकी एक नकल भेजी थी।

१६९ पत्र : मीराबहनको

बोरसद
२९ मई, १९३५

चि० मीरा,

तुमने वहाँके मौसमका जो वर्णन किया है, उसे देखते हुए तो बोरसद स्वर्ग मालूम होता है। सुबह शाम सुहावनी ठण्ड पडती है। वर्धा तो दिन-रात भट्टीकी तरह तपता होगा। कुछ भी हो, सब ठीक चलता रहा तो हम लोग २ जूनको वहाँ पहुँच जायेंगे।

मुझे इस बातकी खुशी है कि जानकीप्रसाद अपनी ही मर्जीसे पार्टीमें शरीक हो गया।

अमतुस्सलामको अपने ही ढंगसे विकास करने देना चाहिए। वह विलक्षण लड़की है——कुदरतकी मौज है। अगर वह दीर्घजीवी हुई तो सम्भव है मानव-जाति की प्रथम श्रेणीकी सेविका बन जाये।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०६) से, सौजन्य मीराबहन। जी० एन० ९७७२ से भी

१७०. पत्र : विट्ठल ल० फडकेको

२९ मई, १९३५

चि० मामा,

तुम्हारा पत्र मैं कल रातको पढ पाया। कल रासमें मुकाम है। ३१ के सवेरे नडियाद। ९.२२ पर नडियादसे अहमदाबादकी गाडी पकडनी है। अहमदाबादमें बुधाभाईके यहाँ दिन बिताना है। फिर रातको वर्धाकी ट्रेन। अत: अब तो हम अहमदाबादमें ही मिल सकेंगे। सूरतमें चार घंटे कानजीभाईके[1] यहाँ बिताने होंगे। वहाँ भास्करकी[2] राह देखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८३१) से।

[1] कन्हैयालाल देसाई।
[2] डॉक्टर भास्कर पटेल।

१७१. पत्र . पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

२९ मई, १९३५

भाई पुरुषोत्तमदास,

हरिजन सेवक सघके पास हरिजनोके लिए कुएँ बनवानेकी एक बडी योजना है। कुएँ सीमेन्टसे बनवानेका इरादा है। क्या सीमेन्ट प्राप्त करनेमे आपसे मदद मिल सकेगी? ठक्कर बापा कहते है, बिहार रिलीफमे आपने ३० प्रतिशतकी छूट दी थी। मै समझता हूँ, इसमे भी जो सम्भव होगा, करेगे ही। बम्बईमे कुछ घण्टे बिताये, उस बीच आप भी वहाँ आये थे, यह खबर मुझे बोरसदमे मिली। न मिल सकनेका दुख हुआ।

आशा है, आपकी तबीयत बिलकुल ठीक रहती होगी।

मोहनदासके वन्देमातरम्

[गुजरातीसे]

पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास पेपर्स। फाइल न० १५९/१९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१७२. पत्र : हीरालाल शर्माको

[२९ मई, १९३५][1]

चि० शर्मा,

मै क्या करु? तुमको वर्धासे पासपोर्ट नही मिलेगा। जहातक मै जानता हू दिल्लीसे ही मिलेगा। मजिस्ट्रेटके [य]हा अरजी होगी। तलाश पोलीस कमिशनर करेगा। इसलिए तुमारे अरजीका फाम लेकर भरकर देना होगा। मेरी तो उमीद थी कि मै ही पासपोर्ट निकालुगा लेकिन कानुन ही ऐसा नही होता है। मुझको भी अरजी करनी पडी थी। फोटो देना पडा था और यह सब सीमलामे नही लेकिन मुम्बईमे। फरक इतना था कि मेरे लिये सीमलेसे रास्ता साफ कर दिया गया कयोकि मै राउड टेबलमे जा रहा था। तुमारे बारेमे काफी तलाश होगी जैसी सबके बारेमे हुआ करती है। इसमे न कुछ गभराहटकी बात है न कुछ और बात हे। ऐसे अमलदारोके सपर्कमे बहुत दफा तुमारे इधर-उधर आना ही पडेगा। अमरीकामे तो बहूत

१ साधन सूत्रमें यही तारीख दी गई है।

ही आना पडता है। हर जगह तेहकीकात और पूछताछ होती है। इसलिए यह काम का आरभ कर लो।

५००० की बात एक सज्जनने ही लिखी है।[1] अपना नाम प्रगट करना नही चाहता है। कम्पनी तो वही है। इसमे मुझको तो कोई धोका दिया जा सकता ही नही। न उसका मतलब ऐसा है। जब उनको मालुम हुआ कि मै तुमको अमरीका भेज रहा हू तो उसने मुझको सावधान करनेके लिये खत भेजा। मैने लिख दिया, मुझे सावधान होनेका कुछ है नही। तदपि तुमारे लिये कैसी बाते होती है यह तुमारे कानोतक पहोचानेका धर्म समझकर तुमको लिखी। इसमे कोई विचार करनेकी बात नही है।

जोईन्ट पोलिसीका समझा। इसमे कुछ कर नही सकते है ऐसा मुझे डर है। मेरे लेखसे एक भी पोलिसी रुक जानेका सभव नही है। उसकी भी फिकर न करे अगर लिखना कर्तव्य बन जाय तो। मै अब तो ऐसे प्रतीत करता हू कि लिखनेका कोई कर्तव्य नही है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६४ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१७३. पत्र : कोतवालको

३१ मई, १९३५

भाई कोतवाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने किसीको मुक्त किया ही नही। मैंने तो यह कहा था कि तुमने और हरिभाऊने गलत समझा दिया हो, तो कमेटीके सदस्य मुक्त हो जाये। किन्तु तुम दोनोने गलत समझाया हो, तब भी, जो तुम्हारे साथ आये थे, वे कैसे मुक्त हो सकते है? अत वास्तवमे मुक्त तो कोई नही होता। तुम्हारे लिए एक प्रायश्चित्त तो यह है कि तुम वहाँके लोगोको उनके कर्त्तव्यका भान कराओ और दूसरा यह कि आइन्दा तुम्हे अपनी शक्तिके बाहरकी जिम्मेदारी नही लेनी चाहिए। पैसा इकट्ठा करनेकी योग्यता तुममे नही है। तुम्हारे पास पैसा नही है, इसलिए तुम्हे पैसेकी बातमे पडना ही नही चाहिए था। इसके अतिरिक्त अन्य कोई प्रायश्चित्त नही है। तुमसे कुछ भी इकट्ठा न हो, तो भी कोई बात नही। तथापि, तुम्हे सौ-दो सौ देनेवाला भी मिले तो ले लेना। बूद-बूदसे तालाब भरता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३६१०) से।

१ देखिए "पत्र : हीरालाल शर्माको", २०-५-१९३५।

१७४. पत्र : विपिन डा० पटेलको

बोरसद
३१ मई, १९३५

चि० बाबा[1],

आज तो तेरा जन्म-दिन है, मणिबहनने ऐसा बताया। आज तू क्या करेगा? क्या कोई सेवाका काम नही करेगा? करना चाहे तो मणिबहनसे पूछना। तू बडा तो होगय ी। तुझे भला भी होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ मणिबहेन पटेलने, पृ० १६३

१७५. भाषण : विट्ठल कन्या विद्यालयके[2] उद्घाटनपर

३१ मई, १९३५

आज हम कन्या विद्यालयका उद्घाटन करने के लिए एकत्र हुए है। मै जैसे बाल-शिक्षणके विषयको घोटकर पी गया हूँ, वही बात कन्या-शिक्षणके सम्बन्धमे भी कह सकता हूँ। लेकिन बडे-बड धुरन्धर इस बातको क्यो मानेगे? मै भी अब यह दावा नही कर सकता। आजके वातावरणमे कन्या-शिक्षाकी बात करना सरल नही है। सब भले ही कहते रहे कि हम कन्याओको शिक्षा प्रदान कर सकते है। किन्तु मै तो उनसे पूछूगा, क्या आपने अपनी बे ी या पत्नीको शुद्ध शिक्षा दी है? जिसने अपनी स्त्री या बहन या माता या सासके प्रति अपने कर्त्तव्यका पालन नही किया, वह दूसरोकी बेटियो अथवा बहनोको क्या सिखाने चलेगा? शिक्षक बी० ए०, एम० ए० भले हो गये हो, किन्तु मै तो उन्हे इमी कसौटीपर कसूँगा। कन्या-शिक्षण सम्बन्धी पुस्तके लिखनेवालोके बारेमे मै जानना चाहूँगा कि वे स्वय कैसे पति है, कैसे पिता है।

आप मुझसे कहेगे कि विट्ठलभाईके स्मारकके रूपमे यह विद्यालय खोला जाना है तथापि, विट्ठलभाईके सम्बन्धमे तो आपने अभी कुछ कहा ही नही। विट्ठलभाईका

१ सरदार पटेलका नाती।
२ नडियाद स्थित।

स्मारक नडियादमे क्यो बनाया जाये? उनकी सेवाका क्षेत्र तो विशाल था। उन्होंने तो बम्बई नगर निगमके अध्यक्षकी गद्दीको सुशोभित किया था। बम्बई और शिमला मे भी राष्ट्रीय हितको आगे रखकर ही जूझे। विट्ठलभाई और मेरे बीच मतभेद चले ही आ रहे थे। तिसपर भी जो उन्होंने अमेरिकामे मेरी प्रशसाका शख फूका, उसका कारण यह है कि हम दोनोके बीच एक बात समान थी, और वह थी देशके लिए जीने और देशके लिए ही मरनेकी साध। उन्होंने एक पैसा भी अपने पास बचाकर नही रखा। जो जमा किया, वह देशके लिए छोड गये। कमाते थे, तब ४०,०००) रुपये दिये जिनका ब्याज आज भी आ रहा है। ऐसे व्यक्तिका स्मारक बनाना कोई खेल है? कन्या-शिक्षाका आदर्श तो यह है कि हमारे यहाँकी शिक्षित कन्या न गुडिया बने, न सुन्दर नतकी, वरन सुन्दर स्वयसेविका बने। आप लोगोने पाटीदार होनेके नाते यह स्मारक बनानेका निश्चय किया है। वे पाटीदार थे या क्या थे, यह तो भगवान् जाने। मै तो जब पहले उनसे मिला था, तब उनकी फैज टोपी और दाढी देखकर उन्हे मुसलमान समझा था। पूछनेकी आदत नही है, सो पूछा भी नही। सबको भाई माननेवाला जात-पाँत क्यो पूछे? आपको पाटीदार कहकर विट्ठलभाईका मजाक उडाना हो, तो भले उडाइये। उन्होंने पाटीदारोके किस रिवाज का पालन किया था? पाटीदारोका कौन-सा दल उन्हे अपने मे शामिल कर सकता है? विट्ठलभाई, वल्लभभाईको यदि आप लोगोने अपना माना तो ठीक समझिए, आप लोगोका दिवाला निकल जायेगा। आप लोग यदि विट्ठलभाईको अपना मानेगे, तो आपको ढेढ, भगी, धाराला सबको अपना मानना पडेगा। उन्होंने तो भगियो और पाटीदारोमे कभी भेद नही किया। उनका स्मारक बनाना चाहे, तो आपको इस सस्थाको ऐसा बनाना पडेगा, जो मात्र खेडाकी शोभा न हो, सारे हिन्दुस्तानकी शोभा हो। और हिन्दुस्तानकी सेवा करे, ऐसी सेविकाएँ उत्पन्न करनी पडेगी। यह आदर्श सामने रखकर यदि आप यह सस्था चलायेगे, तब समझा जायेगा कि आपने विट्ठलभाईका सच्चा स्मारक बनाया।

ऐसा करना सरल नही है। किन्तु आपके आग्रह तथा मोहके वश मै यहाँ आ गया। खेडा जिला, जिसके पुण्यस्मरण मेरी स्मृतिमें भरे पडे है, जहाँ मै गाडीमे घूमा हूँ, जहाँ पैदल घूमकर मैंने धूल खाई है, जहाँ मै एक बार मरणशय्या पर पडा था और जहाँ फूलचन्द-जैसे स्वयसेवकोने मेरा पाखाना उठाया था, वहाँ आनेके लिए मै मना कैसे कर सकता था, कैसे कह सकता था कि विद्यालयका उद्घाटन नही करूँगा? इस विद्यालयका उद्घाटन करनेके लिए मेरे मनमे कोई बडा उत्साह नही था, यह बात सच है, क्योकि मै दूधका जला हूँ। फिर भी, मैंने स्वीकार कर लिया क्योकि मै मानता हूँ कि विश्वासके बलपर जहाज चलते है।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, ९-६-१९३५

१७६. भाषण : बालमन्दिरके[1] उद्घाटनपर

३१ मई, १९३५

आजका कार्य प्रारम्भ करनेसे पहले दो बाते कह देना आवश्यक प्रतीत होता है। आज इस अवसरपर फूलचन्द[2] और प्याज-चोर मोहनलाल पड्याकी[3] अनुपस्थिति मुझे बहुत अखर रही है। मै १९१८ मे नडियादमे अनाथाश्रममे रहा था, तब इन दोनोके साथ स्नेह-सम्बन्ध बन गया था और वह दोनोकी मृत्युतक बना रहा। दोनोके अनेक मधुर सस्मरण मैने सहेजकर रखे है। मोहनलाल नही रहे, तब सरदारका हृदयद्रावक पत्र मेरे पास आया था। सामान्यत सरदारका हृदय वज्र-जैसा है। चाहे जैसा दु ख आ पडे, वे उसे छाती कडी करके सहन कर सकते है। ऐसा होते हुए भी, जब मैने उनके पत्रमे हृदयद्रावक शब्द देखे, तब मै समझ गया कि ऐसे साथीके बिछोहसे उनको कितनी चोट लगी है। इस जिलेको तो उनका अभाव खलेगा ही, गुजरातको भी खलेगा। मूक स्वयसेवकके जिस आदर्शका मै पोषण करता आया हूँ, ये दोनो वैसे मूक स्वयसेवक थे। दोनोने अपनी सेवाका चिन्तन करते-करते प्राण त्यागे।

फूलचन्दके स्मारकके रूपमे जो बालमन्दिर बनाया गया है, वह मै देखकर आया हूँ। आपकी यह इच्छा कि मोहनलालका भी कोई स्मारक हो, स्वाभाविक है। किन्तु ऐसे छोटे-छोटे स्मारकोसे हम अपनी आत्माको धोखा न दे, तो अच्छा हो। स्थायी स्मारक बनाना हो, तो वह तो ईंट और चूनेके मकानमे पैसा उँडेलनेसे नही बन सकता। इसका अथ यह नही है कि ऐसे स्मारक न बनाये जाये। बल्कि स्मारक बनाते हुए क्या करना चाहिए, यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए। ये गये, किन्तु इनकी जोडका अब हम कहाँ पायेगे, ऐसा कहकर बैठे नही रहना चाहिए। ऐसे स्वयसेवक उठ जाये, तो उनका दु ख तो होना चाहिए, किन्तु उनका अभाव नही खटकने देना चाहिए। बादशाहकी मृत्युके बाद जैसे बादशाहकी गद्दी खाली नही रहती, और हम "बादशाह गये, बादशाह दीर्घायु हो" ऐसा कहते है, उसी प्रकार स्वयसेवक न रहे, किन्तु उनकी सस्था बनी रहनी चाहिए, स्वयसेवकोकी परम्परा कायम रहनी चाहिए। फूलचन्द और मोहनलाल दोनो अपने-आपमे एक-एक सस्था थे। यदि ऐसी सस्थाए न चले, तो मेरे-जैसोका क्या होगा? यानी एक फॉसीपर चढ जाये, तो दूसरा फाँसी पर चढनेके लिए तैयार मिले। इसलिए मै तो यह सुझाव देता हूँ कि यदि हम फूलचन्द और मोहनलालके स्मारकको चिरस्थायी बनाना चाहते है, तो स्मारक

१ नडियाद-स्थित।

२ फूलचन्द बापूजी शाहका १९ अप्रैल, १९३४ को स्वर्गवास हुआ था।

३ मोहनलाल पण्ड्याका ८ मई, १९३५ को स्वर्गवास हो गया था।

बनानेवाले यह सकल्प करे कि हम फूलचन्द और मोहनलाल-जैसा बननेका प्रयत्न करेगे। शेक्सपियरने कहा है, "मनुष्य जो अच्छा करता हे, वह तो उसीके साथ दफना दिया जाता है। बुरा ही बच रहता है।" इसमे कविने कोई सनातन मत्य नही उभारा, उसने तो दुनियाको ताना मारा है।

सच्ची बात तो यह है कि प्रकृति कचरेका सग्रह करके नही रखती। वह तो कचरेको गाडकर, जलाकर उसका खाद बनाकर अपना सौरभ फैलाया करती है। उसी प्रकार हमे अपने बडे-बूढोमे, अपने स्वगस्थ नेताओमे कोई दोप हो तो उन्हे दफनाकर उनके गुणोका सचय करना चाहिए। क्योकि उनके दोप नही, उनके गुण ही हमारी पूजी है। मोहनलाल-जैसोकी अपेक्षा हम अधिक अच्छे हो सकते है, ऐसा माननेमे हम उनके साथ कोई अन्याय नही करते। सब अपने दोप लेकर जन्म लेते है। उन दोपाको मिटाकर, गुणोका विकसित करना, सचित करना हम सबका कत्तव्य है। जिस हदतक ससार अपने उक्त कत्तव्यका नियमित रूपसे पालन नही करता, उस हदतक ससारने अपने उत्तराधिकारकी शोभा नही बढाई।

फूलचन्द बाल-शिक्षण स्मारकके रूपमे जो बालमन्दिर खोला गया हे, वह मै आज देखकर आया हूँ। उसके सचालकोसे मालूम हुआ कि बालकोको मन्दिरतक लानेमे प्रतिमास पचास रुपया वाहनपर खच होता है। बाल-शिक्षण तथा मॉन्टेसरी-पद्धति मै समझता हू। विदुषी मॉन्टेसरीसे मै मिला[1] हूँ। मैने उनसे एक भी पाठ नही पढा, फिर भी उन्होने तो मुझे प्रकट रूपसे प्रमाणपत्र दिया है कि "आप तो मेरी पद्धति पूरी तरह जानते है और इसपर अमल करते आये है।" इस प्रमाणपत्रमे झूठी चापलूसी नही थी, क्योकि यह प्रमाणपत्र तो मैने अपने-आपको पहले ही दे दिया था। अत बाल-शिक्षण क्या है, इसका पूरा भान रखकर मै कहता हूँ कि पचास रुपयेका यह खर्च मुझे भयानक लगा। बालकोको पगु बनानेके लिए पचास रुपये देना, यह मॉण्टेसरी-पद्धति नही है। माण्टेसरी-पद्धति यूरोपमे चाहे जैसी चलती हो, इस देशमे उसका अन्धानुकरण करनेवाले मूख है। फिर अनुकरण कहाँ-कहाँ करोगे? इस पद्धतिमे तो शालाके साथ बगीचा जरूरी होता है। इस मन्दिरमे तो मैने बगीचा नही देखा। मैने पूछा, मन्दिर बालकोके घरसे कितनी दूर है। मुझसे कहा गया, एक मीलसे अधिक दूर नही होगा। मै बच्चोके माता-पिता तथा शिक्षकोसे कहता हूँ कि उन्हे ये पचास रुपये बचाने चाहिए। शिक्षकोको स्वय भोरमे ही बाहर निकल जाना चाहिए और बालकोको अँगुली पकडकर ले जाना चाहिए। बालकोको बग्घीमे लाकर आप फूलचन्दका स्मारक नही बना सकते। फूलचन्द फूलोकी सेजपर सोनेवाला आदमी नही था। वह तो वज्र के समान था। अत मै तो शिक्षकोसे कहता हूँ कि उन्हे माता-पिताओको सूचित कर देना चाहिए कि यदि आप बालकोको पैदल नही भेज सकते तो हमारा त्यागपत्र स्वीकार कीजिए किन्तु हमसे अपने बालकोको

१ १९३१ में, जब गांधीजी दूसरी गोलमेज कॉन्फरेंसमें शामिल होनेके लिए इग्लेंड गये थे, देखिए खण्ड ४८, पृ० १४२।

पगु न बनवाइये। गाडीमे तो नानासाहब[1]-जैसे वयोवृद्ध अथवा अपग लोग बैठे, मै तो नही बैठूँगा। और जब ६६ बरसका बूढा गाडीमे नही बैठेगा तो ढाई बरसके बच्चोको गाडीमे क्यो लाया-ले जाया जाता है?

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, ९-६-१९३५

१७७. वक्तव्य . समाचार-पत्रोको[2]

अहमदाबाद
३१ मई, १९३५

गफ्फार खाँ दुबले तो काफी हो गये है, मगर वे प्रफुल्ल और प्रसन्न है। वे कमजोर दिखाई देते है। बातचीत उनके परिवारके लोगोको लेकर ही चलती रही।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १-६-१९३५

१७८ भेंट : समाचार-पत्रोको

३१ मई, १९३५

गांधीजी ने कई प्रश्नोके उत्तर देते हुए कहा कि बोरसदमें प्लेग लगभग समाप्त हो गया है। उसके बाद बातचीतका रुख ग्रामोद्योगोंसे सम्बन्धित कामोकी ओर मुड गया। यह पूछे जानेपर कि उन्होने वर्धाको अपने सदर मुकामकी तरह क्यो चुना है, गांधीजी ने कहा

इसलिए कि वर्धा भारतके केन्द्रमे स्थित है और वर्धामे ही मुझे करीब दो लाख रुपयेकी लागतकी ऐसी जमीन मिल सकी जिसकी किस्म अच्छी है और जिसमें सिचाईके प्रबन्धके साथ-साथ इमारते भी है। इस जमीनपर तकरीबन ७०० फलोके वृक्ष है। मैने वर्धाका चुनाव इसलिए भी किया कि सेठ जमनालाल बजाज इस बातके लिए बहुत उत्सुक थे कि जो जमीन वे मगनलाल गाधी स्मारकको दान कर देनेकी सोच रहे थे, वह अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ द्वारा ले ली जाये। आखिरी बात यह कि वर्धा आधा गाँव, आधा शहर है। मेरी तथा मेरे साथियोकी यह इच्छा थी कि मुख्य कार्यालय शहरी क्षेत्रमे न बनाया जाये।

१ गोपालदास विट्ठलदास देसाई।

२. उसी दिन दोपहर बाद खान अब्दुल गफ्फार खाँ से साबरमती जेलमें मिलनेके बाद गांधीजी ने यह वक्तव्य जारी किया था।

विनोबा ओर वर्धा-आश्रमम प्रशिक्षित उनका दल तो वहा पहलेसे मोजूद था ही, यह भी एक अतिरिक्त आकर्षण था। हम सबके लिए वर्धाको मुख्यालयके रूपमे चुननेके लिए इन सब कारणोने-पर्याप्त प्रेरणा दी।

दूसरे सवालोके पूछे जानेपर गाधीजी ने कहा कि वे वर्धासे यथासम्भव बाहर नहीं जायेंगे ताकि काम उनकी उपस्थितिमे ही चलता रहे, क्योकि यह कल्पना उन्ही की है। इसके अलावा, यह उचित है कि सघके सभी पदाधिकारी उनके निकट सम्पर्कमे रहे, और उनमें से किसीको जब भी जरूरत हो, मार्ग-दर्शन मिल सके। सोमवारको छोडकर वे रोज १½ घटे साथ बठते है।

यह पूछे जानेपर कि क्या उन्होने गुजरातको असन्तुष्ट होकर छोड दिया है, गाधीजी ने कहा, यह बिलकुल गलत खयाल है। [उन्होने आगे कहा]

मै शारीरिक रूपसे गुजरातसे अलग हो गया हूँ और मुझे इसका पर्याप्त दुख है, लेकिन मै दूसरी तरहसे उसके कामोमे उसके साथ जुड़ा हुआ हूँ।

एक दूसरे सवालके जवाबमें गाधीजी ने कहा कि ग्रामोद्योगके कामके लिए उनकी इच्छा गुजरातमें रहने की तो है, लेकिन ऐसा लगता है कि वहाँ व्यापारिक प्रवृत्ति इतनी अधिक हे कि गुजरातमें ग्रामोद्योगके प्रारम्भिक काम प्रारम्भ करके भली-भाँति चलाना कठिन हे। गाधीजी की रायमें गुजरातके गाँवोपर अन्य क्षेत्रोके बजाय व्यापार-वृत्तिका अधिक असर है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रानिकल, १-६-१९३५

१७९ प्रश्नोके उत्तर[1]

३१ मई, १९३५

यह पूछे जानेपर कि स्त्रियोका परिवारके प्रति क्या रुख होना चाहिए और वे किस हदतक कुटुम्बमें अपना व्यक्तित्व कायम रख सकती है, गाधीजी ने कहा

जो हक पतिको है, वे सभी पत्नीको भी है, इसमे जरा भी सन्देह नही है। दोनोके कर्त्तव्य भिन्न हैं, किन्तु उनके अधिकार कम-ज्यादा नही हैं। स्त्री कमीज-पतलून पहनकर बन्दूक लेकर घूमने निकले, तो उसे रोकनेका अधिकार पतिको नही है। ऐसे कामोका जितना हक पुरुषोको है, उतना ही स्त्रियोको भी है। यदि स्त्रीको सिनेमा न जाना हो, तो पुरुष उसे बाध्य नही कर सकता अथवा यदि स्त्री अकेली जाना चाहे तो पुरुष उसे रोक नही सकता। तात्पर्य यह कि दोनोके साथ-साथ करने के कामोमे, उनमे जितना सहकार, सहयोग सघ सके, उतना अच्छा है।

१ प्रश्न स्त्रियोंके उत्थानका उद्देश्य लेकर काम करनेवाली सस्था 'ज्योति सघ' की सदस्याओंने पूछे थे।

यह सहकार एकांगी वस्तु नहीं है। इसमें नापतोल हो ही नहीं सकती। यह एकपक्षीय चीज़ ही नहीं है। पुरुष कहता आया है कि मैं तेरा मालिक हूं, तू मेरी चीज़ है, मैं जैसे कहूँ, वैसे तुझे चलना पड़ेगा। इस प्रकारकी भावनाके लिए मेरे विचारोंकी दुनियामें कोई स्थान नहीं है। पुरुषके ऐसे आग्रहके विरुद्ध अन्तिम उपाय सत्याग्रह है। स्त्री भी इसका प्रयोग कर सकती है। यह तलवार इकधारी है, दुधारी भी है। इसका प्रयोग चाहे जहाँ सफलतापूर्वक किया जा सकता है। प्रेमकी इस शक्तिके आगे पुरुषको झुकना पड़ता है। अपने पतिके प्रति जिसे अपना व्यक्तित्व सिद्ध करना ही पड़े, उस स्त्रीको मैं यह प्रेमका, सत्याग्रहका मार्ग दिखा रहा हूँ। किन्तु यह मार्ग जैसाकि प्रीतम कविने कहा है, "पावककी ज्वाला" है। इस मार्गपर चलना पड़ेगा, सो भी जूते पहनकर नहीं, नंगे पाँव।

स्त्रियोंकी आर्थिक परतन्त्रता दूर करने के प्रश्नके सम्बन्धमें उन्होंने कहा

स्त्रियोंकी आर्थिक परतन्त्रता दूर करनेके भी अनेक उपाय मैं बता सकता हूं। आर्थिक स्वतन्त्रताका सीधा उपाय यह है कि प्रत्येक स्त्री कोई-न-कोई उद्योग करे। आजकलकी पढ़ी-लिखी बहनें जैसी स्वतन्त्र होती हैं, वैसी नहीं। वे भी उतनी ही परतन्त्र होती हैं। किन्तु यह तो शहरकी और ऊँची जातिकी बहनोंकी बात है। मैं गाँवोंमें घूमा हूँ, और वहाँ मैंने असंख्य बहनोंको आर्थिक स्वतन्त्रताका उपभोग करते देखा है। वहाँ स्त्री पुरुषोंसे भी अधिक मेहनत करती है। यद्यपि स्त्रीको मेहनताना कम मिलता है। सच पूछो तो स्त्री-पुरुषको समान मजदूरी मिलनी चाहिए, यह स्त्रीका अधिकार है। यह ईश्वरी न्याय है। ज्योति संघ यह कर सके, तो कहा जायेगा कि उसने संसारमें एक नया आदर्श सामने रखा।

अब यह खोजना रहा कि हमें कौन-सा उद्योग करना चाहिए। करोड़ों स्त्रियोंमें तुम-जैसी एम० ए०, बी० ए० कितनी होंगी? लेकिन मैं तुमसे कहे देता हूँ कि हिन्दकी करोड़ों स्त्रियाँ आर्थिक स्वतन्त्रताका उपभोग करती हैं। अहमदाबादकी कितनी स्त्रियाँ करती हैं, यह मुझे मालूम करना है। ज्योति संघके लिए आर्थिक परतन्त्रता दूर करना कठिन है, किसानकी स्त्रीके लिए कठिन नहीं है। वे जो अधिकार माँगती हैं, हम-तुम नहीं भोगते। तलाकके अधिकारके लिए ब्राह्मण और बनियेको लड़ना है। अन्य जातियोंको तो यह अधिकार कबका मिला हुआ है। इसीलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम उनपर कोई झूठा तरस मत खाओ। तुम शहरी जीवन बितानेवाली ही परतन्त्र हो।

हम सबको, जैसे एक ईंटपर दूसरी और दूसरीपर तीसरी रखी जाती है, ऐसे मिलकर काम करना है। तुम्हारे कामकी जो सीमा निर्धारित है, तुम उसीमें रहकर काम करो, और उसमें चार चाँद लगाओ। राष्ट्रीय अथवा सामाजिक जीवनमें सक्रिय भाग लेनेकी इच्छा रखनेवालोंको तुम आमन्त्रित कर सकती हो कि यहाँ आओ। और इसमें तुम सफल हो सको, यह मेरा आशीर्वाद है। किन्तु इसके लिए अनेक बहनोंको फकीरी लेनी पड़ेगी, जोगन बनना पड़ेगा। यह हँसी-खेल नहीं है, और यदि खेल है, तो फिर केवल रस्सीपर चलनेवाले नट के खेल-जैसा खेल है। वह एक

लक्ष्यपर दृष्टिको स्थिर करता हे, इष्टका अनुसन्धान करता है, तथा शहनाई और ढोलके सुरके साथ एकतान हो जाता हे, तभी लाठीके समान सीधा रह पाता है। ऐसी ही एकाग्रताके साथ काम करो, तो कुछ हो सकेगा।

स्त्रियोके कर्त्तव्योके सम्बन्धमें गाधीजी ने कहा

स्त्रीका कत्तव्य अग्रेजीमे जिसे 'हार्थ एण्ड होम'— चूल्हा और घर कहते हैं, उसको अक्षुण्ण रखना, उसका रक्षण करना है। पुरुषने यह काम नही किया। वह तो रक्षणके किले और परकोटे वनाकर उनमे वैठ गया हे। वह घरकी रक्षा करने क्या आयेगा? और आया भी तो वह घरकी कैसी रक्षा करेगा? वह तो घरमे भी किले और परकोटे वनायेगा। गोली मारने के लिए उममे छेद करेगा, और दीवारपर काच और कीले ठोकेगा। अन्तमे घरके बच्चे उसपर चढकर मर जायेगे। किन्तु हमे तो घरको सजाना हे। इसलिए मेरी तो राय है कि स्त्रीकी शिक्षा दूसरे ही प्रकारकी होनी चाहिए। इसमे एकका काम नीचा ओर दूसरेका ऊँचा है, ऐसा नही है, बल्कि दोनोका काम एक-दूसरेके पूरकके ममान हे।

[गुजरातीसे]
गुजराती, १६-६-१९३५

१८०. एक सेवककी कठिनाइयाँ

कुछ साथियोकी सहायतासे मै एक आश्रम चला रहा हूँ। उसमें हमारा उद्देश्य अपनेको आदश किसान बनाना है, जिससे कि हम गाँवके लोगो और गाँवके समाजके साथ एकरूप हो जायें, और इस प्रकार उनकी सेवा कर सके। इस उद्देश्यको सामने रखकर खेतीको यहाँ आजीविकाका मुख्य साधन बनाया गया है, और कताई और बुनाई इसमें पूरक उद्योगका काम देती है।

आश्रमका आरम्भ करते समय ऐसा सोचा गया था कि स्वावलम्बी किसानकी जिन्दगी बसर करनेका आदर्श साधनेके साथ-साथ हम लोग हरिजन-सेवा और चरखे आदिके द्वारा गाँवकी भी कुछ सेवा कर सकेगे। मगर हमें इस उद्देश्यमें पूरी निराशा ही हुई है, क्योकि हमें अभीतक आश्रमके लिए कोई अनुकूल स्थान नही मिल सका। आजकल जिस जगह आश्रम है, वहाँ एक-एक दो-दो घरके पुरवे-भर है और ये पुरवे एक-दूसरेसे आधा या कभी-कभी तो एक-एक मीलके फासलेपर हैं।

फिर, एक दूसरी चीजसे भी आश्रमके कामको भारी धक्का पहुँचा है। आहारके विषयमें मैंने कई भारी भूले कीं, और उनका पता मुझे अब चला है। मुझे अब ऐसा मालूम होता है कि गरीबीके आदशको लेकर जरूरतसे

ज्यादा उत्साहके ही कारण हमने अपने आहारका स्तर बहुत नीचा रखा था। उदाहरणके लिए, साग-भाजीको ले लीजिए। सब्जी आश्रममें तो पैदा होती नही थी, इसलिए हमने उसे नियमित रूपसे नही खाया। दूध और दूधसे बनी चीजोको विलासकी वस्तुएँ माना गया इन सब कारणोसे आश्रम-वासियोके स्वास्थ्यको बहुत क्षति पहुँची है। आरम्भमें हम बारह आश्रमवासी थे, पर आजकल हम केवल पाँच ही रहते है।

आश्रम अबतक शारीरिक श्रमसे ही आजीविका प्राप्त करनेके आदर्शको पकडे हुए है।

मित्र तथा सहानुभूति रखनेवाले सज्जन और आलोचक भी टॉल्स्टॉयके 'अपनी रोटी शरीर-श्रमसे कमाने'के सिद्धान्तपर हमारे इस आग्रहको समाज-सेवाके आदर्शके विरुद्ध मानते है, और कहते है कि तुम्हारे आश्रमके कार्यकर्त्ता समाजकी जो सेवा कर सकते थे, वह इस सिद्धान्तके कारण नही कर सके। 'समाज-सेवा' करने के लिए मनुष्य यदि शरीर-श्रमसे अपनी रोटी कमानेके सिद्धान्तके मामलेमें कुछ समझौता कर ले तो यह कब और कहाँतक ठीक माना जा सकता है? 'होना' और 'करना' इन दोनोके बीच यह जो भेद दिखाई देता है, वह अकसर क्या आभास मात्र नही होता? और असलमें 'होना' ही क्या 'करना' नहीं है?

प्रति मास प्रति मनुष्यका भोजन-खर्च ३ रु० और वस्त्रादिका खर्च १ रुपया आया है।

श्री किशोरलाल मशरूवालाके नाम एक सुशिक्षित और निःस्वार्थ कार्यकर्त्ताने जो पत्र लिखा है, यह उद्धरण उसीसे लिया गया है।[1] एक विशुद्ध-हृदय सेवकके प्रयत्नो और उसकी कठिनाइयोका यह हूबहू चित्र है, और जो व्यक्ति सेवामय जीवन बितानेका प्रयत्न कर रहे है, उन सबको इससे कुछ सहायता मिलनेकी सम्भावना है।

प्रयत्न सराहनीय है। यह अच्छा है कि लेखक तथा उसके साथियोको जब कोई भूल दिखाई देती है, तब वे उसे स्वीकारने और सुधारनेमें हिचकिचाते नही।

यह मैं नही जानता कि लेखकने इस पत्रमें जो प्रश्न पूछे हैं, उनका श्री किशोर-लालने क्या जवाब दिया है। पर इस पत्र-लेखकको जिस प्रकारके प्रश्नाने परेशान कर रखा है, उनमें दिलचस्पी रखनेवाले आम पाठकाकी सहायतार्थ उनके उत्तर देनेका प्रयत्न मैं अवश्य करूँगा।

ऐसा मालूम होता है कि शरीर-श्रमसे रोटी कमानेके सिद्धान्तके विषयमें कुछ गलतफहमी हो गई है। यह सिद्धान्त समाज-सेवाका विरोधी तो है ही नही। बुद्धिपूर्वक

१ यहाँ इसके कुछ अंश ही दिये गये है।

किया हुआ श्रम उच्चसे-उच्च प्रकारकी समाज-सेवा है। कारण यह है कि यदि कोई मनुष्य अपने शारीरिक श्रमसे देशकी उपयोगी सम्पत्तिमे वृद्धि करता हे तो उससे उत्तम ओर हो ही क्या सकता है? 'होना' निश्चय ही 'करना' है।

श्रमके साथ जो 'बुद्धिपूवक किया हुआ' विशेषण लगाया है, वह यह बतलानेके लिए कि समाज-सेवामे श्रम तभी खप सकता है जब उसके पीछे सेवाका कोई निश्चित हेतु हो, अन्यथा यह कहना होगा कि हरएक मजदूर समाजकी सेवा करता है। एक प्रकारसे वह समाज की सेवा करता ही है, पर जिस सेवाकी यहाँ बात हो रही हे, वह बहुत ऊचे प्रकारकी सेवा है। जो मनुष्य सबके हितके लिए श्रम करता है, वह समाजकी सेवा करता है, और जितने से उसका पेट भर जाये उतनी मजदूरी पानेका उमे हक है। इसलिए इस प्रकारका शरीर-श्रम समाज-सेवासे भिन्न नही है। अधिकाश मनुष्य जो काम अपने शरीरके पोषणके लिए या बहुत हुआ तो अपने कुटुम्बके लिए करते है, उसे समाज-सेवक सबके हितके लिए करता है। इन सात आश्रमवासियोको आज यह मालूम हो रहा है कि उन्हे अपने अन्न-वस्त्रके लिए मेहनत करने के पश्चात् दूसरी सेवा करनेका समय शायद ही रहता है। ये सेवक अगर अपने काममे कुशल होते, तो ऐसी बात कभी न होती। असलमे वे कायकुशल नही है। खेती-बाडीके मजदूरके रूपमे वे साधारण मजदूरोकी बराबरी कर ही नही सकते। कारीगरोकी कोटिमे भी वे नौसिखुए ही कहे जा सकते है। ईश्वरकी कृपासे प्रत्येक कार्यकर्त्ता अब यह जानता है कि सूत कातनेवाला अपने औजारोको अगर बुद्धिके साथ काममे लाये तो अमुक समयमे वह सूतकी मात्रा सहज ही दूनी कर सकता है अर्थात्, उसकी चरखेकी आमदनी दूनी हो सकती है। यह बात अधिकाश वस्तुओके सम्बन्धमे सत्य है। खेतीमे, इन्ही औजारोके सहारे तरक्की करनेका क्षेत्र इतना विशाल है कि यदि प्रकृति बीचमे न पडे तो किसान अपनी बुद्धिका उपयोग करके नित्य उतने ही घटे काम करते हुए अपनी आमदनी सहज ही चौगुनी कर मकते है। इसका मतलब यह हुआ कि आज जितनी आमदनीके लिए वह मेहनत करता है, उतनी मजदूरी करने की उसे जरूरत न रहेगी। इसलिए ये सेवक जब कुशलता प्राप्त कर लेगे, तब आजकी अपेक्षा बहुत कम समयमे वे अपने अन्न-वस्त्रके लायक कमा लेगे, और हरिजन-सेवा अथवा किसी दूसरे काममे वे अपनी शक्तिको बिना किसी बाधाके लगा सकेगे। जिन्हे अपनी सीमित आयके भीतर अनेक जिम्मेदारियोको निभाना है, उन साधारण गृहस्थोके लिए यह समस्या जटिल हो सकती है, पर जिस त्यागी सेवकको महीनेमे केवल चार ही रुपयेकी जरूरत है, उसका तो चार रुपया कमानेकी मेहनत-मजदूरी कर लेनेके बाद बहुत-सा समय बच सकता है।

लेकिन प्रति मनुष्य तीन रुपये मासिकमे मनुष्यका पेट क्या सचमुच भर सकता है? डॉ० तिलकने बम्बईके लिए जो ५)का हिसाब बाँधा है, अगर वह सही है, तो गाँवके रहन-सहनके लिए ये तीन रुपये ठीक ही है। और डॉ० तिलकने भोजनकी जो सूची दी है, उसमे मै अपना निजी अनुभव जोड दू तब तो कोई कठिनाई रहती

ही नही। डॉ० तिलकने गावकी खुराकमे दूधके चूणको शामिल नही किया है। पर वे यह कहते है कि बिना दूधके काम चल ही नही सकता। इन आश्रमवासियोने दूधका जो त्याग कर दिया था, वह उनकी भूल थी। यह सही है कि करोडो मनुष्योको दूधकी एक बूद भी नसीब नही होती। पर ऐसी तो और भी अनेक चीजे है जो उन्हे नही मिलती। अगर हमे सेवा करने के लिए जीवित रहना है तो उन्हे छोडनेका हमे साहस नही करना चाहिए। इसलिए जिनके बिना हमारा काम चल ही नही सकता, ऐसी चीजे हम न छोडे और गाववालोको इसमे मदद दे कि वे अपने लिए भी उन चीजोको पैदा कर ले। अनछना ओर बिना पालिशका गेहूँ, चावल, बाजरा, ज्वार आदि अनाज और ऐसी हरी भाजिया, जो कच्ची ही खाई जा सकती है, और दूध, और गाँवोमे पैदा होनेवाले आम, अमरूद, जामुन, बेर आदि मौसमी फल स्वस्थ जीवनके लिए जरूरी है। नीमकी पत्ती तो शायद हरी भाजियोकी रानी कही जा सकती है। नीमकी पत्तिया भारतमे सवत्र मिल सकती है। और, मनुष्यके खाने लायक अनेक प्रकारकी ऐसी घास भी है जिसका हमे पता नही। इमली सब जगह मिलती है। यह भी फेक देनेकी चीज नही है। पर इमलीके विरुद्ध एक तरहका जो पूवग्रह है, उसे समझना कठिन है। कीमती नीबूओकी जगह मै अब इमली काममे लाने लगा हूँ, और इससे मझे बहुत ही लाभ हुआ है। आहार-विषयक सुधार शोध का एक अपरिमित क्षेत्र है और इसके ऐसे बडे बडे परिणाम निकल सकते है, जो ससार और खासकर भारतके भूखो मरनेवाले करोडो मनुष्योके लिए काफी महत्त्व रखते है। इसका यह अथ हुआ कि स्वास्थ्य और सम्पत्ति दोनोकी ही उनसे प्राप्ति हो सकती है। रस्किनके कथनानुसार तो ये दोनो चीजे एक ही है। इस छोटे-से आश्रमके सदस्योकी यह धारणा बिलकुल सही है कि वे सदा सन्मागपर चलकर बडीसे-बडी समाज-सेवा करेगे। उनकी सेवाकी सुगध वहा आस-पास फैलेगी और वह सक्रामक सिद्ध होगी। कालान्तरमे यह सेवा-भावना समस्त भारतमे और फिर अखिल विश्वमे व्याप्त हो जायेगी। इस सेवामे एकके कल्याणमे सबका कल्याण निहित है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १-६-१९३५

१८१ पत्र : नारणदास गाधीको

बडौदा
१-जून, १९३५

चि० नारणदास,

[1]के बारेमे क्या तुम कुछ जानते हो? [2]के अनुमार तो ये बहने भारी व्यभिचारिणी है। इसमे तनिक भी सचाई हो तो यह बात मुझे मालूम तो होनी ही चाहिए। उसके बाद [3]को वहा रखनेके बारेमे भी विचार करना होगा। इसलिए इस सम्बन्धमे मेरा मागदशन करना।

हरिलालको कोई ठीक धन्धा ढूढनेमे मदद दो। उसका चुनाव मेरे मनको जच नही रहा है। आज मै बडौदामे हूँ। यहाका कन्या-विद्यालय देखने आया हूँ। रसिक[4] मुझसे मिला था। मानना होगा कि उसने अच्छे अक पाये है। बाल और तनमुखके[5] बारेमे भी ऐसा ही है।

सोमवारको वर्धा पहुँचूगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

हरिलालके पत्रको फिर पढनेपर मालूम होता है कि तुम तो उसे पाठशालामे लेनेको तैयार हो। यदि तुम्हे उसपर इतना विश्वास हो तो मुझे तो यह बात अच्छी ही लगेगी। केशूके साथ बात करना शेष है। मैने उससे वर्धा आनेको कहा है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४८ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१, २ और ३ नाम छोड दिये गये है।
४ वा० गो० देसाईके भतीजे।
५ तनसुख भट्ट।

१८२. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

१ जून, १९३५

भाई खम्भाता,

आपकी बीमारीके बारेमें खबर तो मिलती ही रहती है। अब कैसे है, मुझे लिखियेगा। राजकुमारीने कुछ समाचार दिया, उससे जिज्ञासा और बढ गई है। आपको चगा हो जाना चाहिए। वहा क्या उपचार हो रहा है? शरीरकी स्थिति चाहे जैसी हो किन्तु आशा है, मन तो प्रसन्न होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५५६) से। सी० डब्ल्यू० ५०३१ से भी, सौजन्य तहमीना खम्भाता

१८३ पत्र : अमृतकौरको

बोरसद
२ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

मै वर्धा २ की बजाय ३ तारीखको पहुँचूगा। वर्धा पहुचनेके बाद मै तुम्हे पत्र लिखनेके और कागज तथा लिफाफे भेज दूँगा।

मेरा खयाल है कि दुर्घटनाका असर अबतक खत्म हो चुका होगा।

तुम्हारी पूनियोका क्या हाल है?

हाँ, मै खम्भाता-दम्पतिको बहुत अच्छी तरहसे जानता हूँ। वे दोनो बहुत अच्छे कार्यकर्त्ता है। मैं उनके बारेमे चार्लीके पत्रका उत्सुकतासे इन्तजार कर रहा हूँ। मुझे उनका पता भेजना। साथका पत्र खम्भाता-दम्पतिको दे देना या डाकसे भेज देना।

मीराका कहना है कि वर्धा इस समय भट्ठीकी तरह गर्म है। तुलनामे बोरसद काफी अच्छा है।

तुम सबको प्यार।

बापू

[पुनश्च]

चार्लीसे कहना कि खा साहब उन्हे अपना प्यार भेजते है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१४) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६८७० से भी

१८४ पत्र अमृतकौरको

वर्धा
३ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

सुबह यहाँ पहुँचनेपर मुझे तुम्हारा पत्र तथा नमूने प्राप्त हुए।

मै डॉ० गोपीचन्दका पत्र लौटा रहा हूँ।

अगर डॉ० जी० के विचारोसे अलग तुम यह मानती हो कि पुरी खादीको चुगीकी छूट दिलानेमे समर्थ हुए है, तो उनके साथ इसका श्रेय तुम्हे भी मिलना चाहिए।

बाजार जानेमे तन्दुरुस्तीका नुकसान होता दिखे तो मत जाओ।

मै तुम्हे आकारमे उन नमूनोके अनुसार पत्र लिखने के गाँवमे बने कागज भेजने की उम्मीद रखता हूँ। नमूनेके अनुसार रगके कागज कमसे-कम अभी कुछ दिन और नही भेज सकूगा।

तुम सबके लिए प्यार। अगर मेरी छोटी सखी लज्जासे लाल न हो जाये तो उसे मेरा चुम्बन।

बापू

[पुनश्च]

अभीतक खम्भाताके सम्बन्धमे चार्लीकी तरफसे कोई समाचार नही आया।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१५) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६८७१ से भी

१८५. पत्र : कमलनयन बजाजको

३ जून, १९३५

चि० कमल,

१ कम बोलना।

२ सबकी सुनना लेकिन सही हो वही करना।

३ हर मिनटका हिसाब रखना और जिस क्षणका काम हो, वह उसी क्षण करना।

४ गरीबके समान रहना। धनका अभिमान कभी मत करना।

५ पाई-पाईका हिसाब रखना।

६ ध्यानपूर्वक पढाई करना।

७ इसी प्रकार कसरत करना।

८ मिताहारी रहना।

९ डायरी लिखना।

१० बुद्धिकी तीव्रताकी अपेक्षा हृदयका बल करोडो गुना कीमती है, अत विकास करना। उसके विकासके लिए 'गीता'का, तुलसीदासका मनन आवश्यक उसका है। 'भजनावली'[1] रोज पढना। प्रार्थना रोज दोनो समय करना।

११ अब सगाई की है तो तू खूँटेसे बँध गया है। मनको दूसरी स्त्रीकी तरफ कभी न जाने देना।

१२ मुझे अपने कायके विवरणका एक पत्र हर हफ्ते लिखा करेगा तो तेरा कल्याण होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१९६) से।

१ देखिए खण्ड ४४, पृ० ३९४-४८२।

१८६. पत्र : नारणदास गाधीको

३ जून, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। मै आज ही पहुँचा हूँ। बा बोचासणमे रुक गई है। यहा तो भट्टी सुलग रही हे। लोग कहते है कि ऐसा लगभग पूरे महीने रहेगा।

हरिलालके विषयमे तो तुम्हे लिख ही चुका हूँ। वह तुम्हारी देख-रेखमे रहे, यह मुझे अच्छा लगेगा। [1] के विषयमे लिखना। केशू यही है। आज मौनवार हे। कल उससे बात करूँगा। पाठशालाके न्यासपत्रके बारेमे मुझे याद है। समय मिलते ही उसे निबटा दूगा। मैथ्यूका पत्र आया है। इसके अनुसार उसे कुछ ही दिनोमे वहा पहुँच जाना चाहिए। मैने उसे लिखा था कि वहा पहुँचकर जब वह अपने काममे खरा सिद्ध होगा तभी उसे यात्रा-व्ययका हिसाब चुकाया जायेगा। मेरा खयाल है, बहुत करके यह भी तुम्हे लिख चुका हू।

आशा है, विजया अब बिलकुल ठीक हो गई होगी।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४९ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१८७ पत्र : हीरालाल शर्माको

वर्धा

३ जन, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। पासपोटकी अर्जीकी नकल वापिस करता हू। मनीओरडरमे से जो तुमारे लेना था सो क्यो नही काटा? पुस्तकोका और दूसरा मेरे खातेमे रखो और जो गवाहके बारेमे पैसे बचे है सो मेरे जमा करो। बादमे लेन-देन होगी। इतना हिसाब तो रख सकते हो ना?

५,००० के बारेमे जो अच्छा लगे सो करो। यदि कोई तुमको अपना नाम नही बताता है तो मानो कि वह डरता है। फोडे मिट्टीके प्रयोगसे ही दुरस्त हुए कि और कुछ लगाना पडा था?

बापुके आशीर्वाद

१ नाम छोड दिया गया है।

[पुनश्च]

यहा भी गरमी बहूत तेज हे। २४ घटोतक। भूसावलमे ४ घटे ठहरना पडा। लेकिन थड कलास वेइटीग रुममे नही। १५-१७ की सालोमे थड क्लास वेइटीग रुमका मुझे काफी तजर्बा मिला था।

बापु

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६५ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१८८ तार सी० एफ० एन्ड्रयूजको

वर्धा
४ जून, १९३५

एन्ड्रयूज
मनोर विला
शिमला

खम्भाताके सफल ऑपरेशनसे खुशी हुई। प्यार कहिए।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०९) से। सी० डब्ल्यू० ५०३२ से भी, सौजन्य तहमीना खम्भाता

१८९. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

४ जून, १९३५

चि० अम्बुजम्,

मुझे कल यहाँ पहुँचनेपर तुम्हारा पत्र मिला। जानकर खुशी हुई कि तुम सब पहाडपर हो और पिताजी की तन्दुरुस्ती रोज-रोज सुधर रही है। मै उम्मीद करता हूँ कि तुम यह पूरा माह तो वही गुजारोगी।

हाँ, यहाँ बहुत गर्मी पड रही है। लोग कहते है कि जून-भर ऐसी ही गर्मी रहेगी।

बा बोचासण गई है, हाँ, वह स्थान अपेक्षाकृत काफी ठण्डा है।

मेरा वजन अभी १०४ पौण्डतक पहुँचकर स्थिर हो गया है।

अगर कमलाबाई यहाँ आनेके लिए उत्सुक हे, तो मुझे उसे साथ रखने मे खुशी होगी। पहले वही इस बारेमे मुझे लिखे। पर, इस गर्मीमे वह अभी यहाँ न आये तो अच्छा हो। जुलाईके महीनेमे मोसम काफी ठण्डा हो जायेगा।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०) से, सौजन्य एस० अम्बुजम्माल

१९०. पत्र : शास्त्रीको

४ जून, १९३५

प्रिय शास्त्री,

मै निश्चयपूवक नही कह सकता कि अपने घरमे होनेवाली हर चोरीकी सूचना हमे देनी ही चाहिए। इसलिए मै तो वैसी असाधारण परिस्थितियोके अलावा चोरीकी सूचना नही दूगा। और चोरके रँगे हाथो पकडे जानेपर भी हमेशा मुकदमा चलाना आवश्यक नही है। इसकी शिक्षा यह है कि हमारे पास कीमती चीजे होनी ही नही चाहिए और अगर है तो हमे उनकी रखवालीके लिए दिन-रात अपना चौकीदार रखना चाहिए। तुम्हे अपने पडोसियोसे मैत्री कायम करनी चाहिए और नौकरोसे अपनापन। स्त्रियोको कोई आभूषण नही पहनना चाहिए, यदि सोने, चाँदी या मोती वगैरहका हो तो मगलसूत्र भी नही।

ढेकी अच्छा प्रयोग है। लेकिन अपनी जरूरतका धान तो तुम्हे खुद कूटना चाहिए। वह सबसे सस्ता पडता है

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

१९१ पत्र : वल्लभभाई पटेलको

४ जून, १९३५

भाई वल्लभभाई,

मुझे तुमको लिखना तो था सूरतसे ही, परन्तु वहाँ वक्त कहाँसे मिलता? रास्तेमे लिखना असम्भव था और कल लिख हीं न सका। वापसीका सफर कठिन रहा। भुसावलमें मुश्किलसे जगह मिली। रात बैठे-बैठे बीती।

अपनी आतोका इलाज तुरन्त करो। अभी तो सिफ कृमि ही है और तुरन्त अच्छे हो सकते हो। समय मत गवाओ।

कानूगाने[1] तुम्हारी प्रेरणासे आम भेजे है। गफ्फार खाको आम मृदुला[2] भेज रही हागी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
आबू

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७०

१९२ पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

४ जून, १९३५

चि० हेमप्रभा,

तुमारा खत मिला। शकरलाल और जेराजानीको[3] जो लिखा है सो पढ गया। उन दोनोको मैंने लिखा है। लेकिन तुमको मैं दूसरी ही बात लिखना चाहता हू। हमारी तो उछवृत्ति होनी चाहीये अर्थात् जो दूसरोको चाहीये सो हमे नही। हमको खादीसे प्रेम है और मोह कभी नही। हमे ऐसा अभिमान भी नही कि हम ही सबसे अच्छा कर सकते हैं। इसलिए यदि बरकमतामे यदि हम आसानीसे काम न कर सके तो उसे छोड दे। इससे भी मैंने तो दूसरी बात बताई है। हमारे लिये अब व्यापार नही है। हम तो स्वावलबी खादीका प्रचार चाहते है। बाजारू खादी

१ डॉ० बलवन्तराय कानूगा, अहमदाबादके प्रसिद्ध डॉक्टर।
२ मृदुला साराभाई।
३ विट्ठलदास जेराजाणी।

बनी तो क्या, न बनी तो क्या? बाजारू खादीसे हम खादीका पैगाम नही सिद्ध कर सकते हैं और वह खादी तो चली ही समजो।

इतना कहते हुए भी मै कहूगा कि जबतक यह सत्य तुमारी समजमे न आवे तबतक तुमारे जैसे करना है ऐसे किया करो। इसी कारण मैने जेराजानी ओर बेकरको लिखा है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

सतीशबाबुका लबा खत आया था। उस बारेमे कुछ कहना नही था इसलिये लिखा नही हे।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७१०)से।

१९३. पत्र एस० एल० सोखेको

वर्धा
५ जून, १९३५

प्रिय कर्नल सोखे,[1]

आपको मालूम होगा कि सरदार पटेलके साथ मैने बोरसद-ताल्लुकेके कई गाँवो के घरोको खास तौरसे इस बातकी जाँच करने के लिए देखा कि चूहो और पिस्सुओको नष्ट करने के लिए कैलसिडके उपयोगके कारगर होनेकी क्या सम्भावना है। मैने एक ही नजरमे देख लिया कि यह लगभग असम्भव है, हाँ, अगर आप यह मानते हो कि ईंटके मजिलदार घरोमे, जिनमे वायुरोध की व्यवस्था नही है, पपसे कैलसिड छिडकनेपर वह हर कोने-अँतरे और फर्शकी दरारोमे प्रवेश कर जायेगा तो बात और है। इसी तरह घरोसे मिट्टीके बडे-बडे कच्चे-पक्के बरतनोको भी निकालकर नही फेका जा सकता और इन बरतनोके नीचे और आसपास चूहोको शरण मिलती है। इनके सम्बन्धमे मुझे तो केवल यही एक कारगर उपाय दिखता है कि फर्शको ऐसा बनाया जाये जिससे उसमे चूहोके रहने की कोई गुजाइश नही रह जाये। जब दक्षिण आफ्रिकामे पहले-पहल महामारीका प्रकोप हुआ तो इसी तरीकेको अपनाया गया और वह सफल भी रहा। तरीका यह था कि सभी कच्चे फर्शोको तोड दिया जाता था, हालाकि इसमे दीवारोको बिलकुल बचाकर रखा जाता था। फिर फर्शोको पक्का बना दिया जाता था और ऐसी व्यवस्था कर दी जाती थी जिससे चूहोके रहने की कोई गुजाइश न रह जाये। काफी मात्रामे पत्थर या इट और सीमेटका उपयोग करके यह काम सस्तेमे और आसानीसे कर लिया जाता था। मकान बनवानेवाले एक अनुभवी ठेकेदारसे परामर्श कर डॉ० भास्कर पटेलने नये और चूहारोधक फर्श बनानेके कई कमखर्च तरीके निकाले है। इस उद्देश्यसे पच जारी किये जा चुके है। अगर आप

1. हाफकिन इन्स्टीट्यूट, बम्बईके निदेशक।

इस तरीकेको अपनी स्वीकृति दे दे तो उससे इसे अतिरिक्त उत्तेजन मिलेगा और आपके मार्ग-दर्शनमे उसकी कमियाँ दूर करके उसे पूर्ण भी बनाया जा सकेगा।

अगर आपको कैलसिडके प्रयोगके बारेमे कुछ और कहना हो या चूहारोधक घर बनानेके तरीकेकी आलोचनामे कुछ कहना हो तो आप अपनी आलोचना भेजनेमे सकोच न करेगे। आपको जो भी आलोचना भेजनी हो या सलाह देनी हो, उसका सरदार और मै दोनो स्वागत करेगे।

यहाँ मै यह भी बता दूँ कि कैलसिडके प्रयोगकी सम्भावनाकी जाँचके लिए जो एजेट मेरे बोरसदमे रहते हुए वहाँ गया था, उसने कुछ घरोका निरीक्षण करके डॉ० पटेलको बताया कि उनमे कैलसिडका प्रयोग नही हो सकता। मैने यह भी पाया कि डॉ० भास्कर पटेल द्वारा तैयार किये गये विशेष एमलशनका ठीक प्रयोग और फिर गधकका धूआँ कर देना पिस्सुओको नष्ट करने की दृष्टिसे काफी कारगर सिद्ध हुआ है।

यहाँ मै यह बताये बिना नही रह सकता कि आपने सरदारको और मुझे जितनी अच्छी तरह घुमाकर अपना सस्थान दिखाया, उसके लिए हम दोनो आपके आभारी है।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

१९४. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

५ जून, १९३५

चि० रुक्मिणी,

गिरिराजने तेरा नाम दिया था, किन्तु मै समझा, दामोदरदासकी कोई सम्बन्धी होगी। आज तेरा पत्र पढकर आश्चर्यचकित रह गया। अभीतक तेरी तबीयत खराब होनेकी मुझे कोई खबर नही थी। तेरा पत्र ही नही आया। इसमे मैने मान लिया था कि तुम दोनों खूब मजेमे होगे। अब वहाँ चगी हो जाना। मुझे लिखती रहना।

केशू कलतक मेरे पास था। वह बम्बई गया है। वहाँ मोटरका काम सीखनेकी सोचता है। नवीन[1] यही है। वह बम्बईमे राधामे[2] मिला था। बा बोचासणमे ही रह गई। रामदास बम्बईमे है।

बापूके आशीर्वाद

श्री० रुक्मिणीदेवी बजाज
शक्ति आश्रम
पो० आ० राजपुर, देहरादून

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९७११) से, सौजन्य बनारसीलाल बजाज

१ ब्रजलाल गांधीके पुत्र।
२ रुक्मिणीकी बड़ी बहन।

१९५. पत्र प्रभावतीको

५ जून, १९३५

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। मै जयप्रकाशको लिख रहा हूँ। यह पत्र तू लिफाफेमे उसके पास भेज देना। तूने तो भरसक प्रयत्न किया। तू भविष्यमे भी उसे लिखती रहना। यदि जयप्रकाश अपनी तबीयतका खयाल नही रखता तो तू क्या कर सकती है? तेरा यह एक वर्ष पूरा हो जाये, उसके बाद तेरे भविष्यका विचार अवश्य करना होगा। उस समय यह अभीष्ट होगा कि तू जयप्रकाशके साथ रहे। उसके लिए अपने हाथसे रसोई करे तथा उसके शरीरका खयाल रखे। किन्तु अभी इस बातका विचार निरथक है। मेरा वजन जितना था उतना ही है। सख्त गर्मी पड रही है।

अपना स्वास्थ्य वहाँ बिगाडना नही। सिताबदियारा दो-चार दिनके लिए हो आये तो अच्छा हो। कुछ दिन जयप्रकाशके साथ रह आई, यह अच्छा किया। तेरी छुट्टी मजूर हो गई है। विवाहके दूसरे ही दिन चल पडना। विवाहमे जितनी सादगी रखी जा सके, रखना।

यहा नये आये हुए लोगोमे तो एक चित्रे ही है। अमतुस्सलाम फिलहाल यहाँ है ही। बहुत काम करती है। देवराज[1] आ गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४५०) से।

१९६ आइए, प्रार्थना करे

वर्धागज

६ जून, १९३५[2]

जब कोई मनुष्य गिर पडता है तो वह अपने उद्धारके लिए ईश्वरसे प्राथना करता है। तमिल भाषामे एक कहावत है कि वह निराधारोका आधार है। क्वेटाकी इस भयकर विपत्तिको[3] देखकर मानव-बुद्धि स्तम्भित रह जाती है। इसके आगे हमारे पुनर्निर्माणके तमाम प्रयत्न बेकार है। इस महानाशके विषयमे सम्पूर्ण सत्य शायद कभी मालूम न हो सकेगा। जो बेचारे इस दुघटनामे मर गय, उन्हे फिरसे जीवन-दान नही दिया जा सकता।

१ गांधीजी का टकक।
२ **बॉम्बे क्रॉनिकल**, ७६१९३५ से।
३ ३१ मई, १९३५ का भूकम्प।

पर मनुष्य तो अपना प्रयत्न सदा जारी रखेगा ही। जो बच गये हैं उन्हे सहायता अवश्य मिलनी चाहिए। जहाँतक सम्भव है, वहाँतक पुर्ननिर्माणका काय भी अवश्य किया जायेगा। पर यह सब और इसी प्रकारका और भी काम ईश्वर-प्रार्थनाका स्थान नही ले सकता।

मगर प्राथना की ही क्यो जाये? अगर कोई ईश्वर है तो क्या उसे इस भयकर दुघटनाका पता न होगा? उसे क्या इस बातकी आवश्यकता है कि पहले उससे प्रार्थना की जाये तब कही वह अपने कर्त्तव्यका पालन करेगा?

नही, ऐसी बात नही है, ईश्वरको याद दिलानेकी कोई जरूरत नही। वह तो घट-घटका वासी है। बिना उसकी आज्ञाके एक पत्ता भी नही हिल सकता। हमारी प्रार्थना तो सिफ इसलिए है कि हम अपने अन्तरका शोधन करे। प्राथनाके द्वारा तो हम खुद अपनेको यह याद दिलाते है कि उसके अवलम्बके बिना हम सब कितने असमथ और असहाय है। हमारा कोई भी प्रयत्न तबतक पूर्ण नही कहा जा सकता, जबतक कि उसमे प्राथनाका पुट न हो, जबतक हम निश्चित रूपसे यह स्वीकार न कर ले कि जिस प्रयत्नके पीछे ईश्वरका आशीर्वाद न हो, वह कितना ही अच्छा क्यो न हो, निष्फल जाता है। प्रार्थनासे हम विनम्र बनते है। वह हमे आत्मशुद्धिकी ओर ले जाती है, अन्त निरीक्षण करनेके लिए प्रेरणा देती है।

जो बात मैंने बिहारके भूकम्पके[१] समय कही थी, उसे मै आज भी कहूँगा। हरएक भौतिक विपत्तिके पीछे कोई-न-कोई ईश्वरीय अभिप्राय रहता है। एक समय ऐसा आ सकता है जब पूण विज्ञानकी बदौलत पहलेसे ही भूकम्प आनेकी बात हमे उसी तरह मालूम हो जाये जिस तरह कि ग्रहण पडनेकी खबर पहले ही हो जाती है। मानव-बुद्धिकी यह एक और विजय होगी। पर ऐसी एक नही असख्य विजयोसे भी आत्माकी शुद्धि नही हो सकती, और बिना आत्मशुद्धिके सब व्यथ है।

इसमे कोई सन्देह नही कि जिस प्रकार हम बिहारकी विपदाको भूल गये है, उसी प्रकार क्वेटाकी इस महाविपदाको भी भूल जायेंगे। आन्तरिक शुद्धिकी आवश्यकताको समझनेवाले लोगोसे मै अपनी इस प्रार्थनामे शामिल होनेको कहूँगा कि हे प्रभो, तू मुझपर ऐसी कृपा कर जिससे मे तेरी भेजी विपत्तियोमे अन्तर्हित तेरे अभिप्रायको समझ सकू, उनके फलस्वरूप नम्र बन सकूँ और समय आनेपर स्वयको तेरे समक्ष खडा होनेके योग्य बना सकू, तथा बिना किसी भेद-भावके अपने समस्त मानव-बन्धुओके कष्टोमे भागीदार बननेको सदा तैयार रह सकू।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ८-६-१९३५

१ १५ जनवरी, १९३४ का भूकम्प, देखिए खण्ड ५७।

१९७. पत्र : नारायणदास रतनमल मलकानीको

६ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

मुझे बोरसदमे तुम्हारा पत्र मिला था। अजीब बात है कि ठक्कर बापाने मुझसे उससे भी पहले मिलकर तुम्हारी शिकायत की थी। उनका खयाल था कि मैंने तुम्हारे द्वारा कही गई इकतरफा बातोपर भरोसा कर लिया है। मैंने उन्हे बताया कि तुमने जो कुछ कहा, मेरे तारका उससे कोई सम्बन्ध नही था और मैंने उनकी बात सुने बिना कोई राय नही बनाई है। कुछ भी हो, तुम्हे और मुझे ठण्डे दिलसे सोचना चाहिए। ठक्कर बापा कितने भी नाराज क्यो न हो, उनके मनमे कुछ नही होता। सच्चे या काल्पनिक कारणोसे उनके मनमे जो गुबार जम जाता है, उसे वे इस तरह साफ करते है। मेरी सलाह है वे कुछ भी कहे, उसपर ध्यान मत दो और मतभेद रहनेपर भी वे जैसा कहते हैं, वैसा करो। हमे उनका मन तो खट्टा होने ही नही देना चाहिए।

ऐसा बरताव करो, जैसे वे अब भी पदासीन हो।

आशा है, तुम्हारा घाव अब पूरा भर गया होगा।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५२)से।

१९८. पत्र : मनु गांधीको

६ जून, १९३५

चि० मनु,

मैंने तो तेरे दोनो पत्र भाईको[1] भेजे हैं। तुझे भेजा उनका कार्ड बुरा था। मैंने भाईको लिखा है। यह प्रकरण दुःखद होता जा रहा है। भाईसे डरना तूने छोड दिया, यह अच्छा किया।

तू कहती है, तुझे मेरा कहना मानना है। सब मामलोमे न? सब मामलोमे माने, तो तुझे मोढ जातिमे शादी करने का विचार छोड देना चाहिए। मै अवश्य तेरा विवाह अच्छी जगह कर दूंगा। ऐसी जगह, जहाँ तू पूर्ण सुखी हो। मै जो

१ हरिलाल गांधी, मनु गांधीके पिता।

पसन्द करूगा, उस पसन्दगीमे केवल तेरा हित ही कारण होगा, और कुछ नही। हरिलाल मुझे भयानक बाते लिख रहा हे। मेरी तो इस समय यह इच्छा है कि तू मेरे पास हो। हरिलालने मुझे जो लिखा है, मै उसके बारेमे पूछताछ कर रहा हूँ, उसमे भी तेरी मदद चाहिए। लेकिन तुझे मेरे पास रहना पसन्द हो, तभी तेरा आना मुझे अच्छा लगेगा। तेरे शौक बढ गये हो, तो मैं तुझे सन्तोष नही दे सकूगा, यह भी स्पष्ट है। अत जो तुझे अच्छा लगे, सो करना। मुझे जो लिखे, सो भी स्पष्ट लिखना। तू स्वतन्त्र है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५४३) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

१९९. पत्र · नारणदास गाधीको

वर्धा
६ जून, १९३५

चि० नारणदास,

साथमें हरिलालको लिखे पत्र है, उन्हे पढ़ जाना। इसमे तुम्हारा समय क्यो लू? लेकिन और कोई चारा नही है। यह प्रकरण मै शीघ्र ही समाप्त कर दूगा। लेकिन थोड़ी वेदना तो तुम्हे भोगनी ही पडेगी।

केशूसे बात हुई थी। अब तो वह वहाँ पहुँच गया होगा। कारखाना तो अब वह छोड देगा, फिर इस कारखानेका क्या करोगे? वह मोटर और रेडियोका काम सीखेगा। मैं समझता हूँ, बम्बईमे वह अपने लिए कुछ सहायता जुटा लेगा। देखता हूँ, हमे सतोक[1] और राधाका खर्च उठाना पडेगा।

केशसे यह पूछना तो भूल ही गया कि उसकी अबतक की शोध क्या बेकार हो जायेगी। जब बातचीत थोडे समयमे निबटानी होती है तो कभी-कभी ऐसी महत्त्वकी बाते भी रह जाती है। जो मुद्दे मै साफ नही कर सका, उन्हे तुम करवा लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४५१ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१ स्वर्गीय मगनलाल गाधीकी पत्नी।

२००. पत्र. वि० ल० फडकेके विद्यार्थियोको

६ जून, १९३५

मामासाहबके विद्यार्थियो,

तुम लोगोके नाम-धाम जाने बिना जवाब नही दिया जा सकता। इस प्रकार बिना पते-ठिकानेके पत्र कभी नही लिखना चाहिए। ऐसे पत्र लिखना तुम्हे किसने सिखाया?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८३२)से।

२०१. पत्र : नर्मदाबहन राणाको

६ जून, १९३५

चि० नर्मदा,

अब मुझे सन्देह हो रहा है कि तू मुझे ठीक समझी भी है या नही। मैंने तो तेरा हित समझकर ही जो देखा, वह शम्भुशकरको लिखा था। तू अच्छी और नम्र बन।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७७९)से, सौजन्य रामनारायण एन० पाठक

२०२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

६ जून, १९३५

चि० कृष्णचद्र,

तुमारा पत्र मिला। नीमके बारेमे पत्र मिल जायगा तो भेज दूगा। नीम कभी गरम नही लगता है। उपवासी लोग भी नीम खा लेते है। लेकिन मै तो चाहता हू कि दूध जितना ले सकते है इतना ले लो। गायका सबसे अच्छा है। सब चिता छोड दो। मैंने तो कहा ही है एक वर्ष जो वाचनके उपवासका है सो यहा व्यतीत किया जाय। दिल चाहे तब आ जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७२)से।

२०३ जयरामदास दौलतरामके नाम तारका मसौदा[1]

[६ जून, १९३५ या उसके पश्चात्][2]

जयरामदास दौलतराम
मार्केट रोड
हैदराबाद

जनतासे कहिए कि अभी आन्दोलनका समय नही आया। स्थानीय और उच्च अधिकारियोसे व्यक्तिगत रूपसे मिला जाये। आग लगानेकी योजनाके कारण पता कीजिए। अपनी लाचारी महसूस होनी चाहिए।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

२०४ पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

वर्धा
७ जून, १९३५

प्रिय चार्ली,

तुम्हारा पत्र न पानेसे मेरे चिन्तित हो उठनेका कोई सवाल नही है। क्योंकि, अगर चिन्ताके योग्य कोई बात होती, तो बावजूद हमारे बीच राजकुमारीकी मार्फत सम्पर्कके तुम पत्र लिखनेमे सुस्ती न करते।

वाइसरायके साथ हुए मेरे पत्र-व्यवहारकी नकल नत्थी है। यह सिर्फ तुम्हे जानकारी देनेके लिए भेज रहा हूँ, इसपर किसी तरहकी कार्रवाई करनेके लिए नही। चीजें अपनी गतिसे आप होती रहेगी। ज्यादातर उम्मीद तो इसी बातकी है कि वे किसीके वहा जानेकी बात मजूर नही करेगे।[3]

१ और २ यह जयरामदास दौलतराम और जे० बी० कृपलानीकी ओर से संयुक्त रूपसे भेजे गए ४ जूनके एक तारके उत्तरमें था। उनका तार गांधीजी को ४ जूनको मिला था। तारमें बताया गया था कि अधिकारियोंकी ओर से अड़चन डाले जानेके कारण क्वेटाके भूकम्प पीड़ितोंको सहायता पहुँचानेका काम किस प्रकार असम्भव हो रहा था।

३ भूकम्पके बाद क्वेटामें मार्शल ला लागू कर दिया गया था और किसीको भी शहरमें आनेकी अनुमति नही थी, देखिए पिछला शीर्षक और "पत्र पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको", १०६१९३५ तथा "पत्र अमृतकौरको", १३६१९३५।

मुझे उम्मीद है कि किताबका[1] तुम्हारा काम ठीक चल रहा होगा और तन्दुरुस्ती ठीक बनी होगी।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९८६)से।

२०५. पत्र अमृतकौरको

७ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारे शरीरके क्षीण होते जानेका कारण मेरी समझमे आ गया है। तुम हर चीजको सागोपाग करना चाहती हो। बेशक, साधकको करना तो ऐसा ही चाहिए। लेकिन कोई भी साधक, जितना वह कर सकता है, उससे अधिक काय अपने सिर लेनेके लिए बाध्य नही है। क्या जाने, तुम्हे अपनी प्रवृत्तियोमे भाग लेनेकी इजाजत देकर मैने ठीक किया है या नही। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम शिमलाके सभी सामाजिक समारोहोमे भाग लेना कम कर दो। हो सकता है, देखनेमे ऐसा लगे कि तुम जिन प्रवृत्तियोमे लगी हुई हो, उनका इससे कुछ नुकसान हो, पर उसकी परवाह नही करनी है। भाग लेना बन्द करके अपने समय और शक्तिकी बचत करो।

अब खादीकी बात करता हूँ। पजाबके सभी खादी-भण्डार नुकसानमे नही चल रहे है। शिमलाका तो बराबर घाटेमे चलता रहा है। इसमे शक नही कि उसके प्रबन्धमे खामी है। लेकिन शिमलाके लोग खादीको तुच्छ नजरसे देखते है और वहाँ लोगोकी एक जमात ऐसी है जो खादी पहननेसे डरती है। खादी पहननेवाला व्यक्ति लोगोकी नजरोमे चढ जाता है। माल [रोड] पर एक स्वदेशी-भण्डार खोलने का विचार आकषक तो है, पर उसे अजाम देनेमे जोखिम है। स्वदेशी वस्तुएँ कितनी भी अच्छी हो, तुलनामे हलकी ठहरती है। इन्हे भडकीला बनाने के विचार की उपयोगिताके बारेमे मेरे मनमे सन्देह है। मै कला और भडकीलेपनको अलग-अलग मानता हूँ। रूढ लोक-रुचिका ध्यान रखनेवाली दुकानोकी खिडकियोमे आदमी जो-कुछ देखता है, वह कला नही है। वास्तविक सौदयकी चीजें बनवाना और उन्हे शिमलाकी माल रोडकी दुकानोकी भडकीली चीजोके साथ-साथ रखना मेरी समझमे बडी खर्चीली योजना है और कमसे-कम इस समय तो उस लोभको सवरण ही करना चाहिए। जो दुकान तुम्हारे पास है, उसीमे तुमसे जो हो सकता है, सो करो। उसे और अच्छा बनाओ। उसमे स्वदेशी वस्तुएँ भी रखने लगो। उसे अपनी रुचिके अनुसार जमाओ और कोई दूसरी महँगी जगह लेनेसे पहले वहाँ अनुभव प्राप्त करो। जब तुम जुलाई या अगस्तमे यहा आओगी, तब दूसरे विषयोके साथ हम इस विषयपर भी चर्चा करेगे। वैसे, जितनी जल्दी आ सको, उतना अच्छा।

१ इंडिया एण्ड ब्रिटेन।

क्वेटाके भयानक भूकम्पके बारेमे मैने जो सोचा या किया है,[१] उस सम्बन्धमे तुम्हे सभी कुछ पढनेको मिलेगा। चार्लीको भेजा गया मेरा पत्र[२] भी देखना। उसे मालूम होना चाहिए कि अकेला चना भाड नही फोड सकता। मेरी पद-यात्रा फिरसे शुरू होनेपर उसे मेरी तलाश उडीसा या ऐसी ही किसी जगह करनी पडेगी। तैयारीके तौरपर इस बीच मै १२ मीलके लगभग पहाडियोपर घूम-फिर लेता हू।

मै फालसेके[३] विश्लेषणकी राह देख रहा हूँ।

पत्र लिखने के कागज और लिफाफे बिलकुल तैयार है। कुछ पूनिया भी तैयार है। मै काफी तादादमे ये भेजना चाहता हूँ। भेजते समय मै हरएक वस्तुका उत्पादन-मूल्य भी साथ भेजनेकी उम्मीद करता हूँ। जो कागज ओर पूनिया अभीतक भेजी गई है, उनका मैंने कोई हिसाब नही रखा है। उसके बारेमे तुम्हे फिक्र करने की कोई जरूरत नही है।

सस्नेह,

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३७)से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३४६ से भी

२०६. पत्र : नारणदास गाधीको

७ जून, १९३५

चि० नारणदास,

साथमे दो पत्र है। ध्यानसे पढ़ना। दोनो भाई साथ बैठकर विचार करना और अपनी राय मुझे बताना। मै बिलकुल नही समझ पा रहा हूँ कि क्या करूँ। [४]का [५]के साथ पतन हुआ हो तो भी मेरे लिए बहुत है। इसे मै भयकरसे-भयकर बात मानूँगा। [६] यह आरोप तो लगाता ही है। क्या उसके पास इसका कोई प्रमाण है? इस गन्दगीमे पडे बिना तुम्हारा छुटकारा नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एस० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४५२ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१ देखिए "आइए, प्रार्थना करें", ६-६-१९३५।
२ देखिए पिछला शीर्षक।
३ शमशेरसिंह द्वारा, देखिए "पत्र अमृतकौरको", २०-५-१९३५।
४, ५ और ६ नाम छोड दिये गये है।

२०७ पत्र पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

७ जून, १९३५

भाई पुरुषोत्तमदास,

अपने पत्रमे तुमने जो-कुछ कहा है, मै समझ गया। मै तो यह जानना चाहता हूँ कि इस समय क्या किया जा सकता है। क्या किया जाये कि हम ऐसी मुद्रा-नीति चालू करा सके जो देशके लिए हितकर हो? हम सब भरसक प्रयत्न करते रहे, इस विचारका सहारा मै नही लेना चाहता। बादल सिरपर मँडरा रहा हो तब मात्र प्रयत्न काफी नही है। क्वेटामे जो भूकम्प आया, उसके खिलाफ बेचारे क्वेटा-वासियोका प्रयत्न किस काम आया होगा। मेरी दृष्टिमे तो आजकल राजनीतिक भूकम्प ही चल रहा है। उसे रोकनेमे हम असमथ सिद्ध हो रहे है। इसलिए मै तो भविष्यको सँवारनेकी कोशिशमे लगा हुआ हूँ।

ग्रामोद्योगोकी झझटमें मै तुम्हे नही डालना चाहता। इतना ही आश्वासन देता हूँ कि मेरा यह कार्य सोने-चाँदीकी रक्षाके इस दूसरे कायके आडे नही आयेगा।

मोहनदासके वन्देमातरम्

[गुजरातीसे]

पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास पेपस, फाइल सख्या १५९/१९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

२०८ सच्चा सम्बन्ध

जो सुशिक्षित लोग आश्रम चला रहे है अथवा गाँवोमे बसनेकी इच्छा रखते है किन्तु जिनके शरीर काम-काजके अभावमे अशक्त या क्षीण हो गये है और इसलिए जिन्हे शारीरिक श्रम करते हुए कठिनाई मालूम पडती है तो भी जिन्हे ग्राम-सेवक बनना है — उनका यह कहना है कि यदि उनके साथ एक भी साथी न हुआ तो उन्हे वहा सूना-सूना-सा मालूम होगा। जो लोग आश्रमको किसानो, ग्वालो और कारीगरोकी बस्तीमे परिणत करना चाहते है उन्हे चाहिए कि वे अपने यहाँ मजदूरी पर स्त्री-पुरुषोको रखे और उनके साथ ऐसा बरताव करे गोया कि वे आश्रमवासी ही है। इस तरह वे अपने नौकरोकी घरेलू और आर्थिक स्थिति समझेगे, और उन्हे वे जो मजदूरी देगे उससे अगर उनका काम निकलता होगा तो ही वे उन्हे नौकरी पर रखेगे। वे खुद उनके जीवनमे इस तरह रस लेगे मानो वे आश्रमवासी ही हो।

मजदूरोके साथ अगर इस प्रकारका बरताव किया जाये, तो यह सम्भव है कि जो मजदूरी वे मजदूरोको देगे, बदलेम उन्हे उससे अधिक ही मिल जायेगा। इस प्रकारके व्यवहारसे यह भी देखनमें आयेगा कि वे मजदूर अपने ऊपर बरसाये हुए प्रेमका जवाब प्रेमसे ही देंगे।

इस योजनाके अनसार आश्रमका सस्थापक अपनी तरहसे रहेगा, और मजदूर अपनी तरहसे। मैंने देखा है कि सयक्त भोजनालय अक्सर आश्रमकी अच्छीसे-अच्छी शक्तिको खा जाता है, और आश्रमवासियोके बीच कलह और द्वेषका अड्डा भी बन जाता है। जब फकत मजदूर ही नौकर रखे जायेगे, तब यह नौबत बिलकुल ही नही आयेगी। मजदूरोको जिस तरहका खाना खानेकी आदत पडी होती है, उसे वे छोडते नही, और उसे खाकर वे तन्दुरुस्त भी रहते है। पढे-लिखे आदमियोके स्वाद कुछ भिन्न और अक्सर कृत्रिम हो गये है। मजदूरोका खाना अगर वे खाने लगे तो उनका स्वास्थ्य ही गिर जाये।

मेरे कहने का मतलब यह नही है कि सयुक्त भोजनालयका प्रयोग विफल सिद्ध हुआ है। जहाँ आदर्श समान होते है और जहाँ सब लोग यह मानते है कि उनमे आपसमे पूर्ण बन्धुभाव होना चाहिए वहाँ सयुक्त भोजनालयका होना जरूरी है। मगर मजदूरोसे अभी बहुत वर्षोतक यह आशा नही रखी जा सकती।

मैंने ऊपर जिस योजनाको रखा है उसमे पाखण्डके लिए कमसे-कम गुजाइश है। बुद्धि और श्रमके बीच यह योजना स्वाभाविक एकता स्थापित कर सकती है। दोनो एक-दूसरेकी क्षमताको बढायेगे। इसके अलावा यह भी मुमकिन है कि इस प्रकार जो आश्रम चलाया जायेगा, यह तुरन्त स्वावलम्बी बन जायेगा, और उसका विकास भी तेजीसे होगा।

जो इस नयी योजनाका प्रयोग करेगे, उन काल्पनिक आश्रमोके लिए तो यह बहुत अच्छा है। पर जो ग्राम-सेवक अपने जीवनमे पहली ही बार गावोमे बसने जाता है, वह क्या करे? मेरी यह योजना कुछ आवश्यक हेरफेरके साथ उसपर भी लागू होती है। जिन लोगोके बीचमे उमे बसना है उनसे वह भिन्न प्रकारका मनुष्य है, ऐसा खयाल उसे नही रखना चाहिए। जिन ग्रामवासियोके बीच वह काम करे, उन्हे उसे अपने मित्र और साथी समझना चाहिए। अपनी आवश्यकताके अनुसार जिनकी सेवाकी उसे जरूरत पडे उन्हे वह, उनकी खुशी हो तो, अपने यहाँ काममें लगा ले। और अगर उसमें ग्रामवासियोके अनुकूल पडनेवाली पर्याप्त बुद्धि है तो वह उन सभी ग्राम-वासियोको पैसा देकर कामपर रख सकता है जो आज मजबूरन बेकार बने बैठे रहते हैं और जो, यदि सम्भव हो तो, अपने इस बेकार समयका उपयोग खुशी-खुशी करना चाहेगे।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ८-६-१९३५

२०९ पत्र तहमीना खम्भाताको

वर्धा
८ जून, १९३५

प्यारी बहन,

तुम्हारा ब्योरेवार पत्र पढकर मै बहुत प्रसन्न हुआ। मुझे समाचार देती रहना। आशा है, हर रोज सुधार हो रहा होगा। दीनबन्धु वहाँ है, यह अच्छी बात है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६०९)से।

२१० पत्र जमनालाल बजाजको

[९ जून, १९३५ के पूर्व][1]

चि० जमनालाल,

तुम नैनीतालमें सबसे मिल आये, ठीक किया। मै चाहता हूँ कि तुम पूरे जून मास पहाडपर रहो। तुमने १५ के बादका जो प्रोग्राम बनाया है, वह ३० जून बाद करना। कान अभीतक पूरे तौरसे साफ नही हुआ, यह ठीक नही लगता। क्या बम्बई खबर देते रहते हो? खबर न दी हो तो अब पूरा विवरण भेजो। वह क्या कहता है, यह जानना चाहिए। यदि वे हाथ खीच लेना चाहते हो तो भले ही खीच ले। कान बहना बन्द होना चाहिए।

ओगिल्वीको पत्र लिखनेमे शायद तुमने जल्दबाजी की हो, वह तुम्हारे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे। उसकी स्वीकृति आ जाये तो मुझसे मिलकर उससे मिलने जाओगे, ऐसी आशा करता हू।

डेनमार्कके उस दोस्तको लिखा पत्र इसके साथ है। उसने तो अपना पता बम्बईका दिया है।

मेरीबहन कल आ रही है। मदालसाकी प्रगतिके बारेमें तुम चुप हो।

कमलनयन चला गया। वह काफी उत्साहित था। गगादेवी बगीचेमे आ गई है। मै खानसाहबसे[2] अच्छी तरह मिल पाया। उनकी तबीयत खराब तो बहुत है, पर मजेमे थे। हम लोगोकी भेंटसे उन्हे बहुत अच्छा लगा। सबको बहुत याद कर रहे

१ जमनालालजी ने पत्रके ऊपर मिलनेकी तिथि '९ जून' लिख छोडी थी।

२ खान अब्दुल गफ्फार खाँ।

थे। उन्हे नासिक या यरवडा बदलनेको लिखा है। अब जो हो सो ठीक। अब्दुल गनीके बारेमे कुछ चिन्ता जरूर थी।

[अ० भा० ग्राम] उद्योग-सघका काम धीमा पर नियमित रूपसे चल रहा है। उसका रूप बन रहा है। बाकी सब ठीक है।

एन्ड्रयूज शिमलेमे है। अपनी पुस्तक लिख रहे है। अधिकारियोसे इस वक्त मिलना बन्द कर रखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७१) से।

२११. पत्र : लीलावती आसरको

वर्धा
९ जून, १९३५

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तेरे लिए शिक्षककी व्यवस्था कर रहा हूँ। यह काम मै मगनभाईको[1] ही सौपूगा। उन्हे तू अपने अग्रेजी तथा गुजरातीके ज्ञानका परिचय देते हुए एक पत्र लिख। अग्रेजीमे क्या पढा है, गुजरातीमे क्या पढा हे, व्याकरणका कितना ज्ञान है, आदि सब लिख भेजना। पत्र मुझे भेजना, अक्षर सुन्दर लिखना, चाहे पत्र लम्बा हो जाय तो हर्ज नही। अग्रेजीमे भी पत्र लिखना। यह पत्र लिखना मगनभाई के पतेपर। इसे तू अपनी अग्रेजीकी शिक्षाका आरम्भ समझना, पत्रका उत्तर तुझे तुरन्त मिलेगा। वे अग्रेजी और गुजरातीमे सुधार करके फिर बतायेगे कि क्या करना चाहिए। पक्तियोके बीचमे स्थान रखना और हाशिया भी छोडना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३१) से। सी० डब्ल्यू० ६६०६ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

१ मगनभाई प्रभुभाई देसाई।

२१२. पत्र : जमनालाल बजाजको

९ जून, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। दासके नाम पहुँच साथमें है।

वाइसरायको दो पत्र लिखे, जिनकी नकल साथ है। जवाबमें इन्कार आ गया है अब जब सबको क्वेटासे नीचे भेज दिया है तो उतरनेवालो की सँभाल रखने के अलावा कुछ करने को नही रहता।

तुम नीचे उतरनेमें जल्दी न करना। इस महीनेके अन्ततक तो वहाँ जरूर रहना। यहाँ तो अब भी भट्टी सुलग रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७२) से।

२१३. पत्र क० मा० मुशीको

९ जून, १९३५

भाई मुशी,

जमीयतराम काकाके निधनसे आपका तो एक बडा सहारा जाता रहा।

सीकरके[1] सम्बन्धमे अमृतलालने मुझे पत्र लिखा था। और अधिक समझे बिना कमेटीकी आवश्यकताके बारेमे मै कुछ निणय नही कर सकता। मुझे भय है, इससे कोई शुभ परिणाम नही निकलेगा। मेरी आशका झूठी हो, तो मै उसे पहले समझ लूँ, फिर निणय करूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५७५)से, सौजन्य क० मा० मुशी

१ जयपुर रियासत-स्थित, जहाँ सरकारकी ज्यादतियोंके विरुद्ध सत्याग्रह शुरू किया गया था।

२१४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

९ जून, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला . . .।[1]

क्वेटाके मामलेमें अब क्या किया जाये? सरकार सभी कार्यकर्त्ताओंको निकाल रही है, इसलिए वहाँ जानेकी बात ही नहीं उठती। जहाँ घायल या बिना घरबार-वाले लोग पहुँच रहे हैं, वहाँ तो लोग मदद दे रहे हैं। इससे ज्यादा हम क्या कर सकते हैं? राजेन्द्रबाबूको जैसा तार मिला है वैसा ही मुझे भी कल मिला है। अब तो हमारे लिए मौन धारण करने की बात ही रह जाती है।

भारत-मंत्रीके कार्यालयमें जो तब्दीली हुई[2], उसे मैं शुभ चिह्न नहीं मानता हूँ। तुमने सप्रू साहबका प्रमाणपत्र देखा होगा। किसके आगे हम दुखड़ा रोयें? उन्होंने ही इस बिलकी निन्दा की थी। अब वे ही इसका स्वागत कर रहे हैं।

राजेन्द्रबाबू १२ तारीखको आ रहे हैं। चार घंटे ठहरेंगे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७०-७१

२१५. पत्र : विजया एन० पटेलको

९ जून, १९३५

चि० विजया,

यहाँ मजूरी करने आनेकी अपेक्षा तू अपना अध्ययन आगे बढ़ा, यही उचित है।

पति-पत्नीमें से एक भी यदि परस्पर भाई-बहनके समान रहना चाहे, किन्तु एक घरमें रहकर ऐसा न कर सकें तो उनका कर्त्तव्य हो जाता है कि वे अलग-अलग रहें।

बापूके आशीर्वाद

विजयाबहन नारणभाई पटेल
वरड, वाया बारडोली, तपती

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७०५८)से। सी० डब्ल्यू० ४५५० से भी; सौजन्य : विजया एम० पंचोली

१. साधन-सूत्रमें यह अंश छोड़ दिया गया है।
२. अभिप्राय लॉर्ड जेटलैंडकी जगह सर सैम्युअल होरकी भारत-मंत्रीके रूपमें नियुक्तिसे है।

२१६ पत्र . ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

९ जून, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

इस बार तुमने मुझे बडी सजा की। हमेशा तुमारे खत की इतेजारी, हमेशा नाउमीदी। मरनेके इरादेसे आदमी थोडे ही मरता है! काश्मीरका खतम होनेके बाद यहाँ आ जाओ। काम तो दे दगा। और देखे क्या होता है। क्वेटा तो किसीको जाने ही नही देते है।

प्रभावती आजकल सावली है, बा बोचासण।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३८)से।

२१७. पत्र पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

वर्धा
१० जून, १९३५

भाई पुरुषोत्तमदास,

तुम्हारा पत्र मिला। यह अनुमान तुमने मेरे किन शब्दोसे किया कि मुझे बुरा लगा है।

ग्रामोद्योग सघके विषयमे तो मने तुम्हे अभय दान दिया है और प्रसगवश थोडा-सा विनोद-भर किया है।

तुमने मुझे पत्र लिखा, यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी। लिखते रहना। मेरी चमडी इतनी नाजुक तो कभी थी ही नही कि मुझे झट बुरा लग जाये और यदि कभी थी भी तो मुझे इतने प्रहारक मिल चुके है कि मेरी नजाकत उन्होने रहने नही दी। इसलिए मेरी ओरसे निर्भय रहना।

मेरा प्रश्न यह नही था कि हमे किस तरहकी रिआयते चाहिए, प्रश्न यह था कि हमारी जो हानि हो रही है उसे किस तरह रोका जाये? मेरी कठिनाई यह है कि इस समय हमारी बात सुननेवाला कोई नही है। हम ऐसा कौन-सा कदम उठाये कि जिससे यह हानि होने ही न पाये?

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीमे पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास पेपर्स, फाइल सख्या १५९/१९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

२१८. पत्र : कुँवरजी के० पारेखको

१० जून, १९३५

चि० कुँवरजी,

तुम्हारा और मनुका पत्र भी मिला। मनुने यहाँ आनेका निश्चय किया है, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। १५ के सवेरे कान्ति या कनु उसे लेने स्टेशन जायेंगे। तुमने और भी जो लिखा है, मैं समझ गया हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७२२) से।

२१९ पत्र आलमगीरको

वर्धा
११ जून, १९३५

प्रिय आलमगीर,

मैं मुसलमानोको अपने प्राणोकी तरह प्यारा मानता हूँ या उनसे घृणा करता हूँ, इस बातका उत्तर तो खुद तुम्हे ही दे सकना चाहिए। यदि तुम्हे इस बारेमे कोई शक है, तो मै पत्र के द्वारा इसका समाधान नही कर सकूगा। तुम्हे मेरी सारी जिन्दगीका अध्ययन करना चाहिए और उसीमे से उत्तर पानेका प्रयत्न करना चाहिए।

बापू

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई

२२० पत्र . वसुमती पण्डितको

११ जून, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। तुझे कब्ज रहता है, यह ठीक नही है। नीमकी पत्ती और इमली खानी चाहिए। इमली तो वहाँ बहुत मिलती है। साफ करके खाना।

नारणदासकी बडी इच्छा है कि तू राजकोट जाये। अगर वहाँ तेरी जरूरत न हो तो यह अच्छा ही होगा कि तू राजकोट चली जाये। वह जगह माफिक न आये तो भाग आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४००)से। सी० डब्ल्यू० ६४६ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित

२२१ पत्र . निरुपमा पगालकरको

११ जून, १९३५

चि० निरुपमा,

तुमारा खत मिला है। तुमारे रुदनको रोकनेका इलाज है। तुम अब बालक है। तुमारे तीन-चार वर्ष तक जाहेरमे बोलना ही नही। अभ्यास करना। जब बडी होगी तब अपने-आप बोलेगी और तुमारे सयमसे तुमारी शक्ति बढेगी।

बापुके आशीर्वाद

श्री निरुपमा पगालकर[1]
सुदामा कुटीर
उडीपी
डाकखाना कटपदी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२२६)से।

१ पोस्टकार्ड पर पता अंग्रेजीमें है।

२२२. पत्र हीरालाल शर्माको

११ जून, १९३५

चि० शर्म्मा,

मै तो जानता हूँ पासपोटमें छे २ माससे भी अधिक वीते है। देखे तुमारा क्या होता है? पैसेके बारेमे मै नही समजा हू। पासपोर्ट आनेपर कपडोका देखा जाय और घडी इ० का भी। पेजामा-कुडता आच्छा लिबास है। करेलेका समजा।[१] ठीक है।

बापुके आशोर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६७ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

२२३ पत्र : नारणदास गाधीको

[११ जून, १९३५के पश्चात्][२]

चि० नारणदास,

[३]के मामलेकी तहतक पहुच सको तो अच्छा हो। मेरा तो इसकी जडतक पहुचे बिना छुटकारा ही नही है। बडौदा कन्या विद्यालयकी छाप तो मुझपर अच्छी ही पडी है। लेकिन एक दिनके निरीक्षणसे मनपर पडी छापके आवारपर हम कोई निष्कष नही निकाल सकते। हमे और गहरे उतरना है।

रमणीकलाल और किशोरलाल मुझे लिखेगे। इस सम्बन्धमे वसुमतीसे तो बात कर ही चुका हू। उसे तुम लिखो तो अच्छा हो। रमणीकलालको भी लिखना।

पुरुषोत्तमके स्वास्थ्यपर चोरवाडकी आबोहवाका कोई असर हुआ है या नही? जमनाको कोई लाभ हुआ है क्या? क्या विजया अच्छी हो गई? मैथ्यूको कुछ ही दिनोमे वहाँ पहुँच जाना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिलम (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५४ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१ शर्माजी की पत्नीने उनकी विदेश यात्राके लिए करेले और कुछ अन्य सब्जियाँ सुखाकर तैयार की थी।

२ वसुमती पण्डितके उल्लेखसे। नारणदास गाधी चाहते थे कि वे राजकोट जायँ, देखिए "पत्र वसुमती पण्डितको", ११ ६ १९३५।

३ नाम छोड दिये गये हैं।

२२४ पत्र . शिवसेवक तिवारीको

वर्धा
१२ जून, १९३५

भाईश्री तिवारीजी,

आप लोग चन्दा इकट्ठा करनेका यत्न कर रहे है, सुनकर मुझे आनन्द होता है।

मो० क० गाधी

श्री शिवसेवक तिवारी[1]
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
इन्दौर

वीणा, श्रद्धाजलि अक, अप्रैल-मई १९६९

२२५. तार · जमनालाल बजाजको

वर्धा
१३ जून, १९३५

सेठ जमनालालजी
भुवाली

सम्भव हो तो माहके अन्ततक वही रहो।

बापू

[अग्रेजीसे]
पाँचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० १६४

1. शिवसेवक तिवारी स्वागत समितिके सयुक्त मत्री थे।

२२६ पत्र अमृतकौरको

१३ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा पत्र पढकर मेरी आखे भर आई। शुद्ध मन तथा निःस्वार्थ भावनासे की गई सेवाको परमात्माका आशीर्वाद जरूर मिलेगा।

अगर मै क्वेटा जाता तो तुम दोनोको भी साथ ले जानेमे मुझे खुशी होती। लेकिन यह होना नही था।

हॉ, तुम मुझे खादी-भण्डारको हटाकर माल[1] ले जानेकी आवश्यकताको समझा कर लिखो।

क्योकि मै बाये हाथसे लिख रहा हूँ इसलिए अधिक लिखना सम्भव नही है। दाये हाथको आरामकी जरूरत है।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३८) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३४७ से भी

२२७ पत्र: नारायणदास रतनमल मलकानीको

१३ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

मैंने बापाके सम्बन्धमे पत्र[2] तुम्हे पहले ही लिख दिया है।

अब मुझे पानी-फण्डके बारेमे तुम्हारा पत्र मिला है। मै फिर लिखूगा। मैने जुगलकिशोर बिडलाका एतराज भी देखा है। क्या पहली बार उनके नामका इस्तेमाल उनकी इजाजतके बिना ही किया गया था? अगर उसके लिए उनकी इजाजत पहले ही ले ली गई थी तो दूसरी बार उसके इस्तेमालको गलत नही कहा जा सकता। लेकिन अगर पहली बार उसका इस्तेमाल उनकी इजाजतके बिना ही हुआ, तब

१ मुद्दलेका नाम, देखिए "पत्र अमृतकौरको", ७-६-१९३५।

२ देखिए "पत्र: नारायणदास रतनमल मलकानीको", ६-६-१९३५।

मेरी समझमे उसका जवाब देना कठिन है। मैंने उन्हे खत लिखा था। उन्होने कहा है कि वे बादमे पैसे चुका सकते है।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१७)से।

२२८. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

१३ जून, १९३५

भाई विट्ठलदास,

तुमने तो बहुत बडा प्रश्न उठाया है। जब तुम्हारे मनमे यह प्रश्न था, तब जो प्रणाली तुमने अपनाई है, वह दोषयुक्त कही जायेगी। जो कारण तुम अब बता रहे हो, यही कारण यदि उन्हे अलग करने का था, तो उन्हे अलग तो किया जा सकता था, किन्तु दूसरी ही तरहसे। अब तो प्रश्न यह है गणात्राको[1] दिये गये नोटिसमे जो कारण बताया गया है, क्या सचमुच यही कारण नोटिस देनेका था?

जो नोटिस दिया गया, वह दोषयुक्त तो है ही। यदि काकूभाईको कोई आश्वासन दिया गया था, तो उसका पालन किया जाना चाहिए। अन्य लोगोका व्यवहार खराब तो था ही, किन्तु यदि वे उसके लिए माफी माँगे तो उन्हे वापस बुला लेना चाहिए। यदि यह सब तुम्हे पसन्द हो तो मै नयी नीति निर्धारित करने के प्रश्नको तुरन्त हाथमे ले सकता हूँ और इसका नोटिस भी तुरन्त दे सकता हू। मेरी रायमे यह प्रश्न बडे महत्त्वका है। इसका शुद्ध निणय कर सकने के लिए भी यह जरूरी है कि पहले ये मौजूदा बादल छाट दिये जाये। इन बातोका पूण निणय हुए बिना इतने महत्त्वका काम ठीक तरहसे सुलझाया नही जा सकेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७८८) से।

१ अखिल भारतीय चरखा सघ, बम्बईके, देखिए "पंच-निर्णय", १८-६-१९३५।

२२९ पत्र : नारणदास गाधीको

वर्धा
१४ जून, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारी चिटठी मिली। देखता हूँ कि तुम्हे के[1] किस्सेकी झझटमे डालना ही नही चाहिए।

साथके पत्रपर नजर डालकर पहुचा देना। देखते रहना कि क्या होता है। मनु तो कल मेरे पास आ जायेगी।

केशुके बारेमे समझ गया। वर्कशॉपका क्या हुआ? जो यन्त्र बनाये गये है, क्या उनका उपयोग किया जा सकेगा?

धीरूका पत्र मिला था किन्तु उससे मुझे सतोष नही हुआ। पण्डितजी का पत्र इसके साथ है। गजाननका खच जितना पण्डितजी कहते है, चुका देना। मै धीरूको पत्र लिखनेवाला हूँ। क्या तुम्हे खचके विषयमे फिरसे विचार करना आवश्यक लगता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४५३ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

२३० पत्र प्रभावतीको

१४ जून, १९३५

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। बाबाजी का पत्र तुझ मिला होगा। विवाहके बाद तुरन्त चल पडना। जयप्रकाशका पत्र मुझे मिला है। सरदारके विषयमे तेरा सन्देश मुझे कुमारप्पाने दिया। वियोगीजी[2] के साथ पढाई चल रही है। श्रीनगरमे कोई कताई या धुनाई करता है? न करता हो तो तुझे विचार करना चाहिए। श्रीनगर तो गॉव-जैसा ही है। तुझे घरसे आरम्भ करना चाहिए। श्रीनगरमे तुझे समय भी काफी मिलता होगा।

१ नाम छोड दिया गया है।
२ वियोगी हरि।

वहाँ तेरा दैनिक कार्यक्रम क्या है, सो लिखना। अमतुस्सलाम यही है। मेरा ठीक चल रहा है। बारडोलीसे लक्ष्मी[1] यहाँ आयेगी। मनु भी आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४५२)से।

२३१ बातचीत एक हरिजन-सेवकसे[2]

[१५ जून, १९३५ के पूर्व]

हमें सदियोंसे जमे हुए पूर्वाग्रहोंको जीतना है, इस लक्ष्यको दृष्टिमें रखते हुए राष्ट्रके जीवनमें तुम्हारे ये चार वर्ष किस गिनतीमें आते हैं और कालके अपार सागरमें तुम्हारा यह एक जीवन भी क्या है? और हम पर्याप्त परिश्रम कर चुके हैं क्या? क्या हम काफी कष्ट झेल चुके हैं? बुकर टी० वाशिंग्टनका[3] ही उदाहरण ले लो। जितने कष्ट वाशिंग्टनने उठाये थे, क्या उतने कष्ट हममें से किसीने उठाये हैं? हम लोग हरिजनोंके दुःखोंका वर्णन तो करते हैं, पर क्या हमने कभी उनके इन दुःखोंमें खुद भाग लिया है? हरिजन इतने चतुर तो हैं ही कि वे देख सकते हैं कि भूखे हम लोग नहीं मरते, भूखमें तो वे मरते हैं। हमें स्वच्छ-मीठा पानी मिल जाता है, पर उन बेचारोंको तो गन्दे पोखरोंसे ही पानी भरना पड़ता है।

तुम कहते हो कि हरिजन सेवक संघ तुम्हें पैसा नहीं देता। संघकी दृष्टिसे यह ठीक ही है। हमने आरम्भ ही गलत सिरेसे किया है। हम अपने बलपर खड़े रहने के बजाय बाहरकी सहायतापर निर्भर रहते चले आ रहे हैं। अब ऐसा समय आ गया है, जब हमें दूसरोंके भरोसे चलना छोड़ देना चाहिए। बच्चोंको किसी बरामदे या उनके छप्परोंमें ही बिठाकर क्यों न पढ़ाया जाये, और इस तरह पाठशालाका विकास स्वाभाविक रीतिसे क्यों न किया जाये? छात्रालयके लिए जितने अनाज या साग-भाजीकी जरूरत पड़े, उतनी उन्हींकी मददसे क्यों न वहीं-का-वहीं पैदा कर ली जाये? इस तरह आपके छात्रालयका खर्चा बहुत-कुछ कम हो सकता है। मान लीजिए, त्रिवेन्द्रमकी कोई पाठशाला वहाँसे कोसों दूर दिल्लीपर निर्भर करे, यह बात समझमें आनेवाली तो नहीं है। यह तो बड़ी ही अस्वाभाविक चीज है। शुरू-शुरूमें हो सकता है कि ऐसा करनेकी जरूरत रही हो। पर अब इस बाहरी सहायताकी

१ लक्ष्मी मारुतिदास शर्मा।

२ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र)से उद्धृत। यह हरिजन सेवक अपनी संस्थाओंके लिए हरिजन सेवक संघसे पर्याप्त आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं कर सका था और सेवाकार्यके अपने चार वर्षोंमें वह अपने काममें योग देनेके लिए नवयुवकोंको भी आकर्षित नहीं कर सका था।

३ अमेरिकाके प्रसिद्ध नीग्रो शिक्षा प्रचारक। युवावस्थामें उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा था।

दरकार नही होनी चाहिए। ऐसी पाठशाला चलानेवाला आदमी अगर दिल्लीसे वेतन पाता हो तो वह वहाँ वालो के लिए परदेशी-जैसा ही होगा। अगर वह हरिजनोमे अच्छी तरह घुल-मिल जायेगा तो वे जरूर उसे अपनी दो रूखी-सूखी रोटियाँ दे देगे, और भूखो तो कदापि नही मरने देगे। हर वक्त केन्द्रीय बोर्डकी ओर दृष्टि डालनेमे कोई सार नही है। केन्द्रीय बोर्ड तमाम कामको सुन्दर रीतिसे चलाता रहेगा, पर साधन-सामग्री तो प्रान्तीय सघोको ही जुटानी होगी। लेकिन मेरा मन नित्यप्रति इतने नये सत्योका आविष्कार कर रहा है और मुझे कुछ ऐसा लगता है कि हमे यह पैसा इकट्ठा करनेकी झझट भी अब छोड देनी चाहिए। अगर हमारे पास पैसा नही है, तो काम रुक नही सकता। खोजने की कला-भर चाहिए, अन्य साधन-सामग्री हमारे पास बहुत पडी हुई है।

और हरिजनोके विषयमे हम हताश क्यो हो? प्रतिज्ञा लेकर उसे पालनेवाले आदमी बहुत ज्यादा नही हुआ करते। हमने ही क्या अपनी सब प्रतिज्ञाओका पालन किया है? और उन्हे मुर्दार मास खानेकी जो आदत पड गई है, उसके बारेमे हमे इतना अधिक व्याकुल होनेकी क्या जरूरत है? हम यह तो चाहते ही है कि उनकी यह बुरी आदत छूट जाये, पर इस तरह अधीर होनेसे काम चलनेका नही। जब अनेक सवण हिन्दू मासाहार करते है तो हरिजनोका मुर्दार मास खाना स्वाभाविक ही है। कत्ल किये हुए जानवरका मास और मुर्दार मास, इन दोनोमे शायद ही कोई रासायनिक भेद हो। आपको याद होगा कि डॉ० देशमुखने मुझे लिखा था कि कत्ल किये जानवरोका ताजा मास और ताजा मुर्दार मास इन दोनोंका फर्क समझ पाना असम्भव है। और जहातक तकका सवाल है वह हरिजनोके ही पक्षमे जाता मालूम होता है। एक पैसेवाला हिन्दू अपने खानेके लिए बकरा जिबह करा सकता है, पर बेचारा गरीब हरिजन क्या करे? तुम उसे जिन्दा बकरा भी नही देते, और सयोगसे मरे हुए बकरेका मास उसे मिलता है, तो वह भी नही खाने देते हो। नही, हमें यह समझना चाहिए कि हरिजनोमे ऐसी एक भी बुरी आदत नही है कि जिसके मूलमे हमारा दोष न हो। प्रायश्चित्त सब हमे ही करना है। करोडो सवण हिन्दू मासाहार त्याग दे, तो हरिजन मुर्दार मास खाना आज ही छोड देगे।

प्रश्न क्या हम उनसे यह कह सकते हैं कि वे अपने गदे और टूटे-फूटे घर छोडकर हमारे मुहल्लोमें आकर बस जायें?

उत्तर इस बातको कहना आसान है, पर करना कठिन है। सब सवण हिन्दू अगर सुधारक हो जाये, तो फिर आपका यह प्रश्न उठे ही नही। आज अगर हरिजन सवर्णोंके मुहल्लोमे जाकर रहने लगे तो उनपर जो बीतेगी उससे उनकी रक्षा करना सुधारकोके बसकी बात नही। पर मै यह जरूर कहूँगा कि जहाँ हरिजनोपर हमेशा ही अत्याचार होता रहता हो—जैसाकि नाटारोकी ओर से होता है—तो हरिजन वह स्थान छोडकर चले जायें।

प्र० • हरिजनोंके उपनयन-सस्कारके विषयमें आपकी क्या राय है? जनऊ उन्हें पहनाया जाये?

उ० नही, इसका तो यह अथ होता है कि हरिजन नीचे है और उन्हे ऊँचा बनाना है। नीचापन तो उनमे जरा भी नही है। उनमे जो नीचापन दिखाई देता है वह हमारे ही घोर नीचपनकी परछाई है। मान लीजिए कि मेरा एक लडका रोगी है, तो मै उसका क्या करूँगा ? क्या मै उसे त्याग दूगा ? उसे नीचा मानूगा ? नही, मुझे यह विचार करना पडेगा कि यह बालक मेरे ही पापोसे दु ख भोग रहा है, और इसलिए मुझे उसकी खास सार-सँभाल रखनी चाहिए। पर हरिजनोके विषयमे तो मै यह अक्षरश मानता हूँ कि वे हम लोगोसे बहुत ऊचे हैं। हमने उनके ऊपर अत्याचार करने मे कुछ उठा नही रखा, तो भी वे हमारे साथ बने रहे और अब भी वे हमे नही छोड रहे है। जिस धर्मके कुछ अनुयायी हरिजनोसे यह कहते हो कि तुम्हारे लिए इस धममे स्थान नही, उस धमको हरिजन अब भी मानते हैं, यह मुझे महान आश्चर्यकी बात मालूम होती है। नही, जिस उच्चासनपर हम सैकडो वष अहकारवश आसीन रहे, उससे हमे अब उतरना ही चाहिए और उनके साथ हमे अपना स्वाभाविक स्थान लेना चाहिए।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १५-६-१९३५

२३२ प्रार्थनाका रहस्य

मैने चद पक्तियाँ लिखकर[1] लोगोको क्वेटाके भूकम्पके सम्बन्धमे प्रार्थना और प्रायश्चित्त करनेकी सलाह दी थी। उसके सम्बन्धमे इधर कुछ निजी पत्र-व्यवहार हुआ है। एक पत्र-लेखकने पूछा है

> **बिहारके भूकम्पके समय आपने नि सकोच कहा था कि इसे सवण हिन्दुओको अपने अस्पृश्यता-रूपी पापका दण्ड मानना चाहिए। तब यह क्वेटाका इससे भी अधिक भयानक भूकम्प किस पाप का दण्ड है ?**

लेखकको उक्त प्रश्न पूछनेका अधिकार है। जिस प्रकार बिहारके विषयमे मैने अपना मत खूब विचारपूर्वक प्रकट किया था, उसी प्रकार क्वेटासे सम्बन्धित यह लेख भी मैने विचारपूर्वक ही लिखा है। प्रार्थनाका यह आमन्त्रण निश्चय ही आत्माकी व्याकुलताका द्योतक है। प्राथना पश्चात्तापका एक चिह्न है। प्राथना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होनेकी आतुरताको सूचित करती है। प्राथनापरायण मनुष्य भौतिक विपत्तियोको दैवी दण्ड समझता है। यह दण्ड व्यक्तियो तथा राष्ट्रो, दोनोके लिए होता है। ऐसे सभी दण्ड लोगोको एकसमान नही चौकाते। कुछ दण्डोका प्रभाव तो केवल व्यक्तियोपर ही पडता है। दूसरे कुछ दण्डोका असर जनसमूहो अथवा राष्ट्रोपर मामूली-सा ही होता है। क्वेटाकी-जैसी विपत्तियाँ हमे स्तब्ध कर देती है। रोज-रोज आनेवाली सामान्य आपत्तियोके प्रति अत्यन्त परिचयके कारण मनमें अवज्ञा

१ देखिए "आइए, प्रार्थना करें", ६ ६ १९३५।

का भाव आ जाता है। भूकम्प यदि नित्य होता रहता तो उसकी तरफ हमारा ध्यान भी न जाता। क्वेटाके इस भूकम्पसे भी हमारा मन उतना विचलित नही हुआ है जितना कि बिहारके भूकम्पसे हुआ था।

लेकिन समस्त ससारका कुछ ऐसा अनुभव है कि जब भी विपत्ति आती है, तब समझदार मनुष्य विनम्र होकर भगवान्‌का स्मरण करने लगता है। वह यह मानता है कि ईश्वरने यह मेरे पापोका दण्ड दिया है, और इसलिए अब मुझे अपना आचरण और भी अच्छा बनाना चाहिए। उसके पाप उसे अत्यन्त निबल बना देते है और अपनी उस निबलतामे वह प्रभुको अधीर होकर पुकारता है। इस प्रकार करोडो मनुष्योने अपनेपर पडी हुई विपत्तियोका अपनी आत्मशुद्धिके लिए उपयोग किया है। राष्ट्रोने भी विपत्ति पडनेपर ईश्वरसे मदद माँगी है, इसके भी उदाहरण मिलते है। उन्होने भगवान्‌के आगे विनम्र बनकर प्राथना, प्रायश्चित्त और आत्मशुद्धि के दिवस नियत किये है।

मैंने कोई नयी या मौलिक बात नही सुझाई है। आजकलके जमानेमे, जबकि अश्रद्धा लोगोके लिए फैशनकी वस्तु बन गई है, स्त्री-पुरुषोसे पश्चात्ताप करने के लिए कहा जाये तो उसमे कुछ साहसकी जरूरत तो पडती ही है। पर मै साहसके लिए किसी श्रेयका दावा नही करता, क्योकि मेरी कमजोरियो और विचित्रताओको तो सब जानते ही है। जिस तरह मै बिहार ओर बिहारवासियोको जानता हूँ, उसी तरह अगर मै क्वेटाको जानता होता तो क्वेटाके पापका उल्लेख मै अवश्य करता, यद्यपि यह सम्भव है कि जिस प्रकार अस्पृश्यताका पाप अकेले बिहारका पाप नही था, उसी प्रकार वह पाप भी केवल क्वेटाका ही न रहा हो। किन्तु हम सब — शासक और जनता — यह मानते है कि हमे ऐसे अनेक व्यक्तिगत एव राष्ट्रीय पापोका जवाब देना है। अत यह उन सबको प्रायश्चित्त, प्राथना ओर नम्रताके लिए आमन्त्रण है। सच्ची प्राथनासे अकर्मण्यता कदापि उत्पन्न नही होती। उससे तो निरन्तर निष्काम कम करने के लिए शक्ति तथा उत्साह उत्पन्न होता है। स्वाथका विचार कर आलसी बनकर बैठा रहनेवाला मनुष्य आत्मशुद्धि कभी कर ही नही सकता। आत्मशुद्धि तो नि स्वाथ रीतिसे उद्यम करनेवाला व्यक्ति ही कर सकता है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १५-६-१९३५

२३३. भयंकर बरबादी

राहा (असम)से श्री अन्नदाबाबू लिखते हैं

मुझे आशा है कि अन्नदाबाबूने जिस भयानक बरबादीकी बात बतलाई है उसे असमके कतिपय कायकर्त्ता दूर कर देगे। बिनौलोको अगर वहाँ यो ही फेक देते है तो कोई नवयुवक उन्हे इकट्ठा करके उनसे कुछ पैसा कमा सकता है, क्योकि बाजारमे बिनौलेके अच्छे दाम मिल जाते है। इसमे अज्ञानी लोगोको शिक्षा देनेकी ही बात है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५-६-१९३५

२३४ सत्यानाशी जूआ

मेरे एक मित्रने मुझसे यह कितनी ही बार कहा कि बम्बईमे तथाकथित उच्च वर्गके लोगोमे जो विशेष प्रकारका जूआ या सट्टा जोरासे प्रचलित है, उसपर आप सर्वसाधारणका ध्यान जरूर आकर्षित करे। अपने उन मित्रकी तरह मुझे भी इस बुराईपर पूरा और हार्दिक दुःख है, पर मुझे इसपर कुछ लिखने की हिम्मत नही पडती थी। मुझे ऐसा लगता था कि इस विषयपर मेरा कुछ लिखना बिलकुल व्यर्थ होगा, क्योकि मुझे यह आशा नही थी कि इसे लिखने के बाद इस बुराईको दूर करने का मै कोई अच्छा सगठित रचनात्मक प्रयत्न आरम्भ कर पाऊँगा। इस बुराईपर कुछ लिखू या नही, इस उधेड-बुनमे मै पडा था कि सरदार पटेलने मेरी तलबी की और मुझे बोरसद जाना पडा। गुजरातके गावोको यह जूआ कैसा तबाह कर रहा है, इसकी बडी-बडी भयकर कहानिया मुझे सरदार पटेल और उनके स्वयसेवकोने बोरसदमे सुनाइ। यह सत्यानाशी जूआ वहा प्रचण्ड दावानलकी तरह फैलता जा रहा है। बिना कोई उद्योग-धन्धा किये ही हरएक आदमी धनी बनने के लिए आतुर हो रहा है। जुआरी यह दलील देता हे कि 'कोई न-कोई तो अमुक मालके निश्चित भावका सही-सही अन्दाज लगा ही लेगा, फिर मै क्यो सट्टेसे दूर रहूँ?'

१ पत्र यहाँ नही दिया जा रहा है। पत्र लेखकने लिखा था कि असमके उस भागके गाँवोंमें प्रचलित तेल पेरनेकी रीति बहुत ही पुराने किस्मकी है, जिसमें बहुत सारा तेल नष्ट हो जाता है और वहाँके लोग अक्सर बिनोलोको तो यो ही फेंक देते है। पत्र लेखकका सुझाव था कि अ० भा० च० स० को गाँवमें एक घानी स्थापित करनी चाहिए जिसका गाँवके लोग मुफ्तमें या थोडी खली देकर उपयोग कर सकें।

और सवनाशको गले लगाने दौड पडता है। एक समय गुजरातके जो घर सुखी और सम्पन्न थे, वे अब दिन-दिन तबाह होते जा रहे है।

इसमे कोई सन्देह नही कि जूएकी यह बुराई, हम उसे जो भी नाम दे, है बहुत पुरानी — शायद उतनी ही पुरानी जितनी कि स्वय मनुष्य-जाति। उसके बाहरी रूप और नाम भले ही बदलते रहे हो किन्तु उसके सार-तत्त्वमें कोई परिवर्तन नही हुआ है।

इस जूएके विरुद्ध कानून जरूर होना चाहिए। पर अगर किसी कानूनके पीछे लोकमत न हो तो वह कोई अथ नही रखता। इसलिए लोकसेवकोके लिए यह आवश्यक है कि जिस तरह उन्होने प्लेगके दौरान या भूकम्प-पीडितोको राहत पहुँचानेके समय खूब डटकर उद्योग किया, उसी तरह इस सत्यानाशी जूएको उखाड फेंकने के लिए भी वे कमर कसकर तैयार हो जाये। जबतक इस दुव्यसनका जड-मूलसे नाश न हो जाये, तबतक उन्हे सन्तोष नही मानना चाहिए। एक तरहसे तो यह जूआ प्लेग या भूकम्पसे भी बुरा है, क्योकि यह हमारी अन्तरात्माको नष्ट कर देता है। और जिसकी आत्मा नष्ट हो चुकी, वह पृथ्वीपर भार-रूप ही है। इसमे सन्देह नही कि प्लेग या भूकम्पके सकटके विरुद्ध लडना जितना आसान है, इस महारिपुसे लोहा लेना उतना आसान नही है। जहॉ प्लेग और भूकम्पका सकट दूर करने मे थोडा-बहुत सहयोग पीडित जनोका भी मिल जाता है, वहॉ इस जूएमे जूएके शिकार खुद ही आपत्तिको आमन्त्रित करते है और उसे गले लगाते है। जुआरीका जूआ छुडाना शराबीकी शराबखोरी छुडानेके समान है। इसलिए यह महा कठिन काम है। लेकिन इस बुराईको मिटाने का प्रयत्न तो हमे करना ही है। बम्बई नगरको तो इसने जैसे ग्रस लिया है। गावोकी ओर भी अब इस दुष्टने अपना पजा फैलाना शुरू कर दिया है। गाँवोके लिए यह निश्चय ही खतरेकी घटी है। कोई भी देशभक्त इस खतरेकी घटीको सुनकर बेखबर रहनेका साहस नही कर सकता।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५-६-१९३५

२३५ पत्र. एस० अम्बुजम्मालको

वर्धा
१५ जून, १९३५

चि० अम्बुजम्,

तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे उम्मीद है कि किचीको[1] अब बुखार नही है। उसे क्या हुआ है? जब तुम वहाँ नही होती तो वह किसके पास रहता है? अपना वक्त वह किस तरहसे गुजारता है? क्या उसके पास ऐसी कोई चीज या कोई व्यक्ति रहता है जिसके साथ उसका मन बहल जाता हो?

कमलाने मुझे चिट्ठी लिखी थी। कितना अच्छा हो अगर तुम उसके साथ आ सको।[2] लेकिन मुझे मालूम है कि तुम्हे इस समय अपने पिता या किचीको अकेला नही छोडना चाहिए।

हाँ, क्वेटाका विनाश दिलको हिला देने वाला है। उसके सम्बन्धमे मैने जो-कुछ भी लिखा है, उसपर तुम्हे विचार करना चाहिए।

प्रभा अपने पिताके साथ है। वह जुलाईमे लौटेगी। अमतुस्सलाम यही है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०१)से, सौजन्य एस० अम्बुजम्माल

२३६ पत्र वल्लभभाई पटेलको

१५ जून, १९३५

भाईश्री वल्लभभाई,

भाई बलवन्तरायके[3] साथ चर्चाके दौरान बात निकलनेपर मैने उनसे कहा है कि देवचन्दभाई[4] काठियावाड राजनीतिक परिषद्की कार्यसमितिकी बैठक नही बुलाते, इसके पीछे तुम्हारा हाथ है, और तुम्हारे इस निर्णयको मैने भी उचित माना है।

१ कृष्णस्वामी।
२ देखिए "पत्र एस० अम्बुजम्मालको", ४-६-१९३५।
३ बलवन्तराय मेहता।
४ बढवाणके श्री देवचन्द पारेख।

भाई बलवन्तराय कहते हैं कि पोरबन्दरमें लगाई गई मर्यादाका उल्लंघन कोई नहीं करना चाहता। मैंने कहा कि अगर ऐसा विश्वास तुमको दिला सकें, तो शायद तुम अपना विरोध वापस ले लो। इसके अतिरिक्त तुमसे बात कर लेनेकी सलाह भी मैंने बलवन्तरायको दी है।

ये और कुछ अन्य लोग सीकरके[1] मामलेमें यहाँ आये हैं। इस बारेमें मेरी राय भाई बलवन्तराय बतायेंगे। जल्दी ही अच्छे हो जाओ।[2]

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७१-७२

२३७ सन्देश चित्तरंजनदास स्मारक-भवनके उद्घाटनपर

[१६ जून, १९३५ के पूर्व][4]

मुझे खेद है कि इस माहकी १६ तारीखको होनेवाले समारोहमें मैं उपस्थित नहीं हो सकूँगा। मैं उसके लिए हर प्रकारकी सफलताकी कामना करता हूँ। इस अवसरपर उपस्थित लोग अगर इस बातपर विचार करें कि हमने देशबन्धुके जीवनके जिन गुणोंकी सराहना की है, उन्हें आचरण द्वारा अपने जीवनमें उतारना ही एक सच्चे स्मारककी स्थापना करना है, तो कितना अच्छा परिणाम निकले!

[अंग्रेजीसे]
अमृत बाजार पत्रिका, १८-६-१९३५

१ देखिए "पत्र : क० मा० मुंशीको", ९-६-१९३५।

२ वल्लभभाई पटेलको पीलिया हो गया था।

३ केवड़ातला श्मशान घाटपर जो स्मारक बनाया गया था, उसका उद्घाटन नीलरतन सरकारने किया था।

४ चित्तरंजनदासकी दसवीं बरसी १६ जून, १९३५ को थी।

२३८ पत्र जी० सीताराम शास्त्रीको

१६ जून, १८३५

प्रिय सीताराम शास्त्री,

मै गुडका शबत इस्तेमाल करके देखूगा और उसके प्रभावके सम्बन्धमें आपको सूचित करूगा। अलबत्ता गुडका शर्बत कितने लम्बे अर्सेतक [बिना बिगडे] रह सकता है, इस विषयमे मुझे कोई जानकारी नही हो पायेगी।

हृदयसे आपका,
बापू

श्रीयुत सीताराम शास्त्री
विनय आश्रम
डाकखाना चाँदले, जिला गुन्टूर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९१७१)से, सौजन्य जी० सीताराम शास्त्री

२३९ पत्र : मोहनलालको

वर्धा
१६ जून, १९३५

प्रिय मोहनलाल,[1]

आपका पत्र मिला। जो मुद्दा आपने उठाया है उसकी चर्चा 'हरिजन' मे नही की जा सकती। मै समझता हूँ, डॉ० गोपीचन्दका विचार बिलकुल ठीक है। मै बस एक कदम और आगे जाकर कहूँगा कि सघके सदस्योकी हैसियतसे हमें सरकारसे कुछ करवाने के लिए कोई आन्दोलन नही चलाना चाहिए। हमारा क्षेत्र ऐसे कार्योंतक ही सीमित है जो हम सरकारी सहायताके बिना कर सकते है। सरकार द्वारा इस सम्बन्धमे उठाये हर कदमकी हमे कद्र तो करनी ही चाहिए। अगर कभी सरकार हमारा सहयोग माँगे तो हमे इसमे सहयोग देनेकी पूरी स्वतन्त्रता है। लेकिन सरकार की आलोचना करना या सरकारको कोई कार्रवाई करनेपर मजबूर करने के लिए मचोसे आन्दोलन चलाना हमारे काय-क्षेत्रसे बाहरकी बात है। इस स्थितिकी अव-धारणा किसी स्थायी नीतिके रूपमे नही की गई है, लेकिन मुझे इसमें कोई सन्देह

१ पंजाब हरिजन सेवक सघके मन्त्री।

नही है कि फिलहाल तो अनुसरण करने लायक यही एक ठीक नीति है। हमे यह समझना चाहिए कि फिलहाल हरिजन यह तय नही कर पाये है कि उन्हे क्या करना चाहिए। पहले हमे उनका पूरा विश्वासभाजन बनना है। उसके बाद ही हम सरकारको अपनी इच्छित दिशामे प्रवृत्त होनेको प्रभावित कर सकते है। मै माने लेता हूँ कि यह पत्र आप डॉ० गोपीचन्दको भी दिखायेगे।

आपका,

श्रीयुत मोहनलालजी
लाजपत भवन
लाहौर

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

२४०. पत्र . मुहम्मद अजमल खाँको

१६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

चार दिन पहले प्राप्त आपके पत्र और आज मिली आपकी पुस्तकके लिए धन्यवाद। मै उर्दू तेजीसे नही पढ सकता और मै चाहे जितना चाहूँ लेकिन उसे पढनेके लिए आज मेरे पास अवकाश नही है। अभी मैंने आपकी पुस्तक अपने साथ ठहरे एक मुसलमान दोस्तको दे दी है। उनके पढ लेनेके बाद मै उसे पढने की कोशिश करूँगा और यदि मै कभी अपनी कोशिशमे सफल हो सका तो निश्चय ही आपको अपनी राय भेजूगा। आपको शायद मालूम नही होगा कि 'हरिजन' मे मै किसी पुस्तककी समीक्षा नही करता।

हृदयसे आपका,

मौलवी मुहम्मद अजमल खा
इस्टिटयूट ऑफ डिवाइन ट्रुथ्स
डेरा, इलाहाबाद

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सोजन्य प्यारेलाल

२४१. पत्र : मुहम्मद अबूसालेह ए० निजामीको

१६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

चमडा कमानेपर लिखी गई आपकी पुस्तक मै पढ गया। बहुत असम्बद्ध और अपूर्ण है। बहुत-सी बातोका कोई जिक्र ही नही है। पुस्तक ऐसी नही है जिसके सहारे कोई सीखनेवाला आदमी बिना किसी शिक्षककी सहायताके प्रयोग कर सके। प्रयोगमे लाई जानेवाली वस्तुओका आपने ठीक अनुपात नही बताया। मै सलाह दूंगा कि आप इसके परिच्छेद फिरसे लिखे और पुस्तकको जितनी है, उससे बहुत अधिक तथ्यपूण बनाये। पुस्तक मोटी हो, यह जरूरी नही है, लेकिन सारे तथ्य ठीक-ठीक दिये जाये, यह आवश्यक है। चमडा कमानेवाला कैसे पानीका उपयोग करे, इसके बारेमे आपने बहुत कम कहा है। लेकिन मैने तो इस विषयपर जितना साहित्य पढा है, सबमे पानीकी किस्मपर ज्यादासे-ज्यादा जोर दिया गया है। और अन्तमे, आपने पुस्तककी जो कीमत रखी है उसका प्रकाशन-व्ययसे कही कोई मेल ही नही बैठता। आपकी पुस्तक चन्द धनी लोगोके लिए नही बल्कि बहुत-से गरीबोके लिए है।

हृदयसे आपका,

मुहम्मद अबूसालेह ए० निजामी
बडौदा

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

२४२ पत्र · डॉ० एम० बी० गोडबोलेको

१६ जून, १९३५

प्रिय गोडबोले,[1]

मै तो समझ रहा था कि बहुत पहले आप जो पुस्तक मेरे पास छोड गये थे वह आपको लौटा दी है। तय यह हुआ था कि आपके पूना जाते समय रास्तेमे पुस्तक आपको दे दी जायेगी। पता नही कैसे, यह हो नही सका। आशा है, अब पुस्तक मिल गई होगी। आपका पत्र प्राप्त होते ही भेज दी गई थी।

जहातक उस यत्रका सम्बन्ध है, वह मैने आजमाइशके लिए श्री किशोरलाल मशरूवालाको दिया था। वे दमेके मरीज है और उनसे मैने आपका परिचय भी कराया था। वे उसे आजमाते रहे है और मैने उनसे आजमाइशका लिखित विवरण

१ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें औद्योगिक रसायनके प्राध्यापक।

देनेको कहा है। मिलते ही मै आपको भेज दूगा। जहाँतक मेरी रायका सम्बन्ध है, मै समझता हूँ कि यह लोगोकी श्वास-क्षमता मापनेका बहुत सरल-सा उपकरण है और इसलिए यह स्कूलो और अस्पतालोमे, जहा बच्चो या रोगियोके फेफडोकी क्षमताकी जाचकी जरूरत पडती है, इसका उपयोग हो सकता है।

साथमे श्रीयुत किशोरलालका विवरण है।

हृदयसे आपका,

डॉ० एम० बी० गोडबोले
पोस्ट बॉक्स १९, पूना

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

२४३ पत्र . एल० के० किर्लोस्करको

१६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

मै आपकी मशीनके बारेमे लिखे अपने पत्रके[1] उत्तरकी आशा कर रहा था। जैसाकि मै पहले ही कह चुका हूँ, मै आपसे एक मशीन खरीदना चाहूँगा, ताकि लम्बे अर्सेतक उसकी आजमाइश कर सकू। जो काम मै सोच रहा हूँ वह काम अगर यह मशीन करती है तो सम्भव है कि आपसमे तय की गई कीमतपर मै इसे बडी तादादमे खरीदू। और जो चाहते है वह कीमत अगर आपको नही मिल पाती तो जिस बडे सुझावपर हमने आरम्भिक चर्चा की थी, उसपर कैसे अमल किया जा सकता है, यह तय करने के लिए मै आपके साथ उस सुझावपर ज्यादा विस्तारसे चर्चा करना चाहूँगा।

मेरे नाम लिखा सर डैनियल हैमिल्टनका[2] पत्र आपके देखने के लिए भेज रहा हूँ। अगर आप समझते हो कि जिस उद्देश्यसे वे चाहते है उस उद्देश्यके लिए आप उन्हे अपने चरखेका चित्र दे सकते है तो आप उसे मुझको या उनके पत्रमे दिये गये पतेपर सीधे उनको भेज सकते है।

हृदयसे आपका,

एल० के० किर्लोस्कर
किर्लोस्करवाडी

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

१ देखिए खण्ड ६०, पृ० ३२०।
२ गोसावा जमींदारी, सुन्दरवनके।

२४४. पत्र हीरालाल शर्माको

१६ जून, १९३५

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। पदरहा दिनकी मर्यादा यह कुछ चीज नही है। बडोको भी पदरहा दिनमे पासपोट नही मिलता। अबी ही एक डा०[को] पासपोर्ट मिला। वह अठारह महिनेके बाद।

तुम्हारा यहाँ आना यह अलग बात है। तुम्हारे आनेके बाद द्रौपदी और बच्चो का क्या? क्या वह भाईयोके साथ रहेगी? सब हाल मुझको बराबर दे दो। यहाँ आनेका निश्चय हो जायगा तो भी मै कमरा नही दे रखूगा। तुम्हारे आनेके बाद अलग कमरेका देखा जायगा। लेकिन वह भी पासपोटके बारेमे निणय होनेके बाद। अगर पासपोट मिल भी जाय तो क्या अलग कमरा लेवे? आनेके पहिले तुम्हारे कलेक्टरको लिखना होगा या उनके पास जाना होगा और कहना होगा कि कुछ तहेकिकात करना है तो वर्धा खत भेजे। उसको पूछा भी जाय कि उत्तरकी कब आशा की जाय?

माँके बारेमे लिखा है वह मैं नही समझा हूँ। रामगोपालने शिकायत तो काफी भेजी है लेकिन उसमे कुछ है नही। ऐसा ही उत्तर भेज दिया गया है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, पृ० १६९ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

२४५. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
१७ जून, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारा पोस्टकार्ड पाकर बड़ी खुशी हुई। ठक्कर बापाने एक पत्र भेजा था। मैं चाहता हूँ कि कुछ दिनोतक मुझे रोज समाचार प्राप्त होता रहे।

यहा सब कुशल है।

सबका प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४५) से। सी० डब्ल्यू० ३३७५ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

२४६. पत्र नारायणदास रतनमल मलकानीको

१७ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं बिहार-रिपोर्टका अध्ययन करूँगा और तब शायद फिर कुँओंके सम्बन्धमें पत्र लिखूँ।[1] उम्मीद है कि 'हरिजन' के अगले अंकमें पानी-फण्डके बारेमें भी लिखूँ।

राव बहादुर एम० सी० राजाने जो पत्र तुम्हें लिखा है, उसकी एक नकल उन्होंने मुझे भी भेजी है। उन्होंने गणेशनकी बड़ी तारीफ की है। मेरे खयालसे तुमने उस पत्रका उत्तर दे दिया होगा।

लगता है कि गणेशनने सभीको निराश किया है। ठक्कर बापा तो उसपर जरा भी विश्वास नहीं करते। और अब शास्त्रीका भी भ्रम टूट गया है। और, मैं समझता हूँ, इसी तरह संघकी मद्रास-शाखाके अध्यक्ष और मन्त्रीका भी।

सस्नेह,

प्रो० मलकानी
दिल्ली

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६०) से।

१. देखिए "हरिजनोंके लिए कुएँ", २२-६-१९३५।

२४७ पत्र : वसुमती पण्डितको

१७ जून, १९३५

चि० वसुमती,

यदि शिवाभाईके[1] पास सचमुच तेरे लिए काम हो और वे चाहते हो कि तू उनके पास रहे, तो तूने तो वहाँ एक वष बितानेकी प्रतिज्ञा की ही है। अत शान्त-चित्तसे आनन्दपूवक अपनी प्रतिज्ञाका पालन कर और जो काम सौपा जाये, उसे सावधानीसे कर। कब्ज दूर करने की कोशिश करना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

लक्ष्मी और मनु आ गये हैं।

श्री वसुमतीबहन,
वल्लभ विद्यालय,
बोचासण

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०१) से। सी० डब्ल्यू० ६४७ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित

२४८ पत्र वल्लभभाई पटेलको

१७ ज्न, १९३५

भाईश्री वल्लभभाई,

टोटका तो टोटका ही है। लग गया तो तीर, वर्ना तुक्का तो है ही। अब तो यदि सिफ रसदार फलोपर कुछ दिन बिताओ तो फिर न दवा चाहिए, न कुछ और। दस्त न आये तो एनीमा लेना ही चाहिए। कमोड काममे न लेना तो तुम्हारी ज्यादती ही कही जायेगी। इससे बीमार और सेवा करनेवाले दोनोको सहूलियत होती है। कमोड इस्तेमाल करना तो शुरू कर ही दो।

एन्ड्रयूज कल यहाँ आ रहे हैं। एक-दो दिन रहकर चले जायेंगे।

आजकल यहाँ तरह-तरहके मनुष्योकी अच्छी भीड है। कुमारप्पाके भाई भारतन आये हैं।

१ शिवाभाई गोकुलभाई पटेल, बोचासण वल्लभ विद्यालयके प्राचार्य।

वसुमती बोचासण छोडने की तैयारीमे थी। उससे शिवाभाईने ठहर जानेका आग्रह किया है। मैंने लिखा है कि यदि सचमुच ही उसकी जरूरत हो, तो खुशीसे वह एक वषके लिए वही रहे। इस बारेमे तुम्हे कुछ सुझाना हो तो मणिसे[1] कह देना। फिलहाल मै तुम्हारे पत्रकी आशा नही करता। बीमारी तुरन्त मिटनी ही चाहिए।

अच्छे होनेपर यहाँ आ जाना। राजेन्द्रबाबू तो आयेगे ही। जमनालाल भी जुलाईमे पहुँच जायेगे। उस समय ठडक भी काफी होगी। अब वैसी सख्त गरमी तो नही है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७२-७३

२४९ पत्र नारायणदास रतनमल मलकानीको

वर्धा
१८ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

रविवारको जो पत्र लिखवाया था, वह अभी भेजा नही गया है। इसलिए, इस पत्रको भी उसीके साथ भेज रहा हूँ।

श्रीमती नेहरू द्वारा तुम्हें लिखा गया पत्र, जो तुम मुझे भेजनेवाले थे और जिसे वापस भी चाहते थे, खोजनेपर मुझे कही नही मिला। इसलिए उस पत्रकी तलाश तुम अपने ही कागजोमे करो। उसकी मुझे आवश्यकता नही पडेगी। उसमे लिखी बातोका मै अन्दाज लगा लूगा और आशा है 'हरिजन' के किसी अकमे महिला-सम्मेलनके बारेमे कुछ लिख भी सकूगा।

तुम देखोगे कि आगामी अकसे मै कूप-निधिके बारेमे लगभग हर सप्ताह कुछ-न-कुछ लिख रहा हूँ। मैं पजाब-रिपोटके बारेमे पहले ही लिख चुका हूँ। इस समय बिहार-रिपोर्ट मेरी फाइलमे है और मेरा खयाल है, गुजरात-रिपोट भी। इनमे से कोई एक आगामी अकमे जायेगी।

मै सेठ जुगलकिशोरको भी पत्र लिख चुका हूँ। मैंने उन्हे लिखा है कि उन्हे अपने नामके उल्लेखका बुरा नही मानना चाहिए और यह कि उसकी शुरुआत ठक्कर बापाने प्रशसाके उत्साहमे सर्वथा निश्छल भावसे कर दी थी। मैंने उनसे यह भी कहा है कि अगर उन्हे अब भी कूप-निधिके साथ अपना नाम सयुक्त करने मे कोई बडी आपत्ति है, तो उसे बाजाप्ता हटा दिया जायेगा। इसलिए, अगर इस

१ मणिबहन पटेल।

बारेमे तुमने उन्हे कुछ नही लिखा है तो जबतक मै तुम्हे कुछ न लिखू, तुम्हे उस सम्बन्धमे किसी प्रकारकी चिन्ता करने की आवश्यकता नही है।

डेविड-छात्रवृत्ति कोषके सम्बन्धमे तुम्हे डेविड नामको बनाये रखने मे एतराज क्यो है? अगर कोई उस नामसे परहेज करना चाहता है तो वह उसे हरिजन छात्र-वृत्ति कोष कहे। "नाममे क्या धरा है? गुलाबको कोई भी नाम दे दो, वह फिर भी महकेगा।"

बजट बनाने के लिए दी गई टिप्पणीका मैंने अभी अध्ययन नही किया है।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६१)से।

२५० पत्र : सी० जी० जगन्नाथदासको

१८ जून, १९३५

प्रिय जगन्नाथदास,

आपने नग्नतापर विस्तारसे मुझे पत्र लिखकर ठीक ही किया है।[1] जहाँतक सिद्धान्तका प्रश्न है, मुझे आपसे सहमति जतानेमे कोई सकोच नही है। पर सिद्धान्त हमेशा ही व्यावहारिकतामे परिणत करने योग्य नही होते। तथ्यपूण गणितशास्त्र आदिमे भी, जैसे ज्यामितिमे, सिद्धान्तोपर पूरी तरह व्यवहार नही हो पाता। ज्यामितिशास्त्रका काल्पनिक समकोण कोई भवन नही बना सकता, लेकिन राज तथा बढई लगभग सही समकोणकी सहायतासे अनेक भव्य भवनोका निर्माण करते है। पश्चिमी जगत् और भारत, दोनोमे व्यवहारत नग्नताको प्रतिष्ठा नही है। मेरी समझमे यह मानकर चलना कि सभी पुरुष तथा स्त्रिया मनसे पवित्र होते है, एक बहुत बडी गलती होगी। इसीलिए मै इसे खतरनाक मानता हूँ।

हृदयसे आपका,

बापू

श्रीयुत सी० जी० जगन्नाथदास
४५९, मिन्ट स्ट्रीट
पाक टाउन, मद्रास

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०९१)से।

१ सी० जी० जगन्नाथदासने १५ जूनके अपने पत्रमें नग्नताको अपनानेके सम्बन्धमें अपनी दलील दी थी। तर्क करते हुए उन्होंने कहा था कि वस्त्र धारण करना अप्राकृतिक तथा अस्वास्थ्यकर है और इस प्रथाको त्याग देना चाहिए, जिससे प्रकाश और वायु सेवनके लिए त्वचा सारी बाधाओंसे मुक्त हो जाये।

२५१ पत्र : शार्दूलसिंह कवीश्वरको

१८ जून, १९३५

प्रिय कवीश्वर,

अपवाद केवल डॉ० खानसाहबको ही रहने दिया जाये। डॉ० गोपीचन्दको औपचारिक रूपसे किसी संस्थासे जोड़े बिना आप उनसे, बेशक, जितनी सहायता ले सकते हैं, लें। आप यकीन मानिए कि अगर उन्हें दोनोंमें औपचारिक रूपसे सम्बद्ध कर दिया गया तो किसी-न-किसीको नुकसानमें रहना ही पड़ेगा। यद्यपि वृक्षकी शाखाएँ मूलतः एक ही हैं, लेकिन वृक्षपर उनका अलग-अलग अस्तित्व आवश्यक और उचित है और वे अपनी-अपनी जगहोंपर कायम रहकर और अपने-अपने कर्त्तव्योंका पालन करते हुए मूलकी पूरी सेवा करती हैं। मैं जानता हूँ कि हमारे पास सच्चे सेवकोंकी भारी कमी है और यह कमी तबतक बनी रहेगी जबतक कि हम उनपर एकाधिक जिम्मेदारियाँ डालकर अपने मनमें यह भ्रम पालते रहेंगे कि सभी जिम्मेदारियोंका ठीक निर्वाह हो रहा है। अगर आप मेरी दलीलसे सहमत हैं तो आप डॉ० गोपीचन्दसे जरूरी मदद पाकर ही सन्तुष्ट रहेंगे और उन्हें संसदीय बोर्डसे औपचारिक तौरपर नहीं जोड़ेंगे। औपचारिक सम्बन्धके न होनेसे विवेकशील व्यक्तिको ऐसी स्वतन्त्रता प्राप्त रहती है जो वैसा सम्बन्ध होनेसे नहीं मिल सकती। आप मानते हैं न?

हृदयसे आपका,

सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर
चैम्बरलेन रोड
लाहौर

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

२५२ पत्र . एस० अम्बुजम्मालको

१८ जून, १९३५

चि० अम्बुजम्माल,

तुम्हारी इस परीक्षाकी घडीमे मेरे सम्पूण हृदयका स्नेह और सवेदना तुम्हारे साथ है। ईश्वर दयालु है। वही तुम्हे शक्ति देगा। यह अच्छा हुआ कि तुमने माता-पिताको सूचना नही दी और ऑपरेशन तत्काल करवा लेनेका साहस दिखाया। अगर डॉक्टर इजाजत दे तो कीचीको भी कोडाइ क्यो नही ले जाती?

तुम्हे बगलोरके पतेपर एक पत्र भेजा था। अगर अबतक न मिला हो तो अपने समयसे मिल ही जायेगा।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजीसे अम्बुजम्माल पेपर्स, सौजन्य, नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

२५३ पच-निर्णय

१८ जून, १९३५

अखिल भारतीय चरखा सघ, बम्बईकी दूकानके कायकर्त्ताओकी, वहाके एर्जेटके विरुद्ध शिकायतके सम्बन्धमे, दोनो पक्षोकी सहमतिसे मै इस दु खद प्रकरणमे पडा हूँ।

दोनो पक्षो द्वारा प्रस्तुत किये गये कागज-पत्र मै पढ गया हूँ।

श्री गणात्राको दिया गया नोटिस दोषयुक्त था। नोटिसके बदले पूरा वेतन देकर दोष दूर किया जा सकता है।

नोटिस देनेके बाद कार्यकर्त्ताओने जो व्यवहार किया और जो लेख और पत्रक लिखे वे इतने अशिष्ट थे, जो खादी-सेवकको शोभा नही देते। ऐसे व्यवहारसे कोई सस्था चल नही सकती। अत उन सेवकोको अलग कर देनेका एजेटको अधिकार था।

किन्तु यदि ये कायकर्त्ता सलग्न परिशिष्टमे बताये अनुसार लिखकर खेद प्रकट करे, तो एजेटको चाहिए कि श्री गणात्रा-सहित सबको बिना कुछ भी वेतन काटे वापस ले लिया जाये।

यह प्रस्ताव, कार्यकर्त्ताओके प्रतिनिधि श्री रतुभाई देसाईके हाथमे पहुँचनेके ७२ घटेके भीतर यदि ये कार्यकर्त्ता खेदप्रकाशका पत्र प्रस्तुत न करे, तो वे नौकरीपर नही लिये जा सकेगे और उन्हें दिया गया नोटिस बहाल रहेगा।

एजेटकी राय है कि खादी-भण्डारमे जितने कार्यकर्त्ता है, उतने कार्यकर्त्ताओका भार वहन करने की शक्ति भण्डारमे नही है। मेरे उपर्युक्त निर्णयसे भण्डारकी व्यवस्थामे रद्दोबदल करने, सेवकोकी सख्यामे कमी करने अथवा वतमान वेतनमे कटौती करने की बातमे कोई रुकावट नही आती। सभी खादी-भण्डारोकी वर्तमान नीतिके सम्बन्धमे कितने ही सुझाव देनेका मेरा खुदका विचार है, जिन्हे यहाँ बतानेकी आवश्यकता है।

मै आशा करता हूँ कि कार्यकर्त्ता खुशी-खुशी खेदप्रकाश-पत्र पर हस्ताक्षर करेगे और भण्डारमे अपना स्थान ग्रहण करेगे।

यदि बर्खास्त हुए सब कायकर्त्ता उपर्युक्त निर्णय स्वीकार न करे, तो जो काय-कर्त्ता इसे स्वीकार करे, एजेट उन्हीको कामपर वापस ले ले।

मो० क० गाधी

परिशिष्ट

श्री गणात्राको बर्खास्तगीका नोटिस मिलने के बाद उन्होने और हमने जिस तरहका व्यवहार किया, वह खादी-सेवकको शोभा नही देता। हमने जो पत्र लिखे, उनमे अशिष्टता थी। अपने इस व्यवहारके लिए हमे खेद है। आगे कभी ऐसा व्यवहार न करे, इसके लिए हम प्रयत्नशील रहेगे।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७८९) से।

२५४ पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

१८ जून, १९३५

भाई विट्ठलदास,

यह रहा मेरा निर्णय[1]। इसे तुम्ही रतुभाईको बुलाकर दिखाना और इसकी नकल उन्हे दे देना। मुझे लगता है, यही ठीक होगा। उन भाइयोसे खूब मिठाससे पेश आना। समूची नीतिका प्रश्न मै तुरन्त हाथमे लूगा। इस सम्बन्धमे अपने विचार व्यवस्थित करके टाँक लेना। यदि तुम्हारा दिमाग और शरीर इस मामलेमे न चले तो मुझे बताना। मै तो इसे तुरन्त हाथमें लेना चाहता हूँ।

इन भाइयोको कामपर लगानेके बाद तुम जब चाहो आ सकते हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७९०) से।

१ देखिए पिछला शीर्षक।

२५५ पत्र · रतुभाई देसाईको

१८ जून, १९३५

प्रिय रतुभाई,

मैंने निर्णयका मसविदा[1] तैयार कर लिया। उसकी नकल भाई विट्ठलदास तुम्हे देंगे। समय बचानेके खयालसे तुम्ही वहाँ जाकर वह नकल ले आना।

निणयका तात्पर्य यह है कि गणात्रा सहित तुम सब लोग यदि क्षमाप्राथना नही करते तो तुम्हारा तुरन्त विनाश हो जायेगा। मैंने इस आशासे उक्त निर्णय दिया है कि तुम सब लोग एक कुटुम्बकी तरह रहोगे और भण्डारकी माफत ऐसी निष्ठासे खादीकी सेवा करोगे जैसी तुमने पहले नही की। भण्डारकी व्यवस्थाके सम्बन्धमे तुम्हे जो कहना हो सो मुझे तुरन्त लिख भेजना। इस मामलेको मै तत्काल हाथमे ले लूंगा। भण्डार किसी व्यक्ति विशेषका नही है। यह तो मेरे और तुम्हारे लिए सेवाका साधन है। उसकी व्यवस्थाके सम्बन्धमे सुझाव देनेका तुम्हे भी उतना ही अधिकार है, जितना मुझे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

२५६. पत्र : सोहनलाल ओबेरायको

१८ जून, १९३५

भाई सोहनलाल,

तुमने ठीक ही लिखा है। जैसे तुमारी बहनके हाल हुए है ऐसे बहूत लडकीयोके होगे। मै कुछ लिखनेकी[2] कोशीश करूगा। मेरी आशा है कि तुमारा प्रयत्न सफल होगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

क्या तुमारे पास अच्छी पुनिया नही रहती है? अच्छी रुइ नही रहती है?

श्री सोहनलाल ओबरोई
ए० आई० एस० ए० डिपो
आदमपुर, जि० जालन्धर

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८६३) से।

१ देखिए "पंच निर्णय", १८-६-१९३५।
२ देखिए "टिप्पणियाँ", २२-६-१९३५ के अन्तर्गत 'असहाय विधवाएँ'।

२५७. तार : गृह-सचिवको

१९ जून, १९३५

खानसाहबसे मिलनेकी इजाजत देनेके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। मुझे यह कहते हुए अफसोस हो रहा है कि जबतक अंग्रेजीमें बात-चीत करनेकी शर्त नहीं हटाई जाती, मैं इस इजाजतका इस्तेमाल नहीं करूँगा। मैं वादा करता हूँ कि घरेलू बातों और तन्दुरुस्तीके अलावा किसी विषयपर मैं कोई बात नहीं करूँगा। सरदारने मुझे बताया है कि जब उन्हें खानसाहबसे मिलनेकी इजाजत दी गई थी, तब उन्होंने हिन्दुस्तानी जबानमें बातचीत की थी। मैं प्रार्थना करता हूँ कि अंग्रेजीमें बातचीत करनेकी शर्तको हटा लिया जाये।[1]

गांधी

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य : नारायण देसाई

२५८. पत्र : रा० र० दिवाकरको

१९ जून, १९३५

प्रिय दिवाकर,

इस मुलाकातसे मुझे कोई हैरानी नहीं हुई। इस समय जो परिस्थिति है उसमें मुझे उससे कुछ बेहतर होनेकी उम्मीद भी नहीं है। किसान लोगोंके कमजोर पड़ जानेसे मुझे दुःख नहीं होता, क्योंकि यह एक आम बात हो गई है। नेताओंने भी कोई बहुत अच्छा काम नहीं किया है। इसमें गलती किसीकी भी नहीं है। नेताओं और किसानोंसे जितना अच्छा काम बन पड़ा, उन्होंने किया। यह बहुत कीमती सबक है। अगर हममें से कुछ लोग भी चारों ओर फैली कमजोरी और अँधेरेके बावजूद सत्य और अहिंसामें अपने विश्वासको अडिग बनाये रखें, तो सब ठीक हो जायेगा।

तुम्हारा,
बापू

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य : नारायण देसाई

१. गृह-सचिवने इसे मान लिया था।

२५९ पत्र अमृतकौरको

दुबारा नहीं पढ़ा

वर्धा
१९ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

कोई व्यक्ति अगर अपनी सच्ची असहायावस्थाको निस्सकोच भावसे स्वीकार कर ले तो यह बात उसे कायर नही बनाती, बल्कि हो सकता है यह उसके साहसी बनने की शुरुआत हो। मै तुम्हारी बातको सही मानकर यह लिखवा रहा हूँ। बाये हाथसे लिखना मुझे अच्छा लगता है, लेकिन उस हाथसे मै उतनी आसानी और तेजीके साथ नही लिख पाता जितना दाये हाथसे।

चार्लीने ठीक वक्तपर तुम्हारा पत्र मुझे दे दिया है। जिस प्रकारसे तुम चाहती हो मै अपने हस्ताक्षर करके फोटोकी प्रतियाँ लौटा रहा हूँ।

मुझे कृष्णलाल गोस्वामीकी याद नही है। हो सकता है, जब मै बाहर था तब वे आश्रममे रहे हो। चार्लीका कहना है कि आश्रममे उनसे मिलने की साफ-सी याद उन्हे है। माधवको उनकी बिलकुल याद नही है। चरखेके बारेमे तुमसे उन्होने जो कुछ भी कहा है, वह सही दिखाई देता है और इससे यह जान पडता है कि उन्हे कताई-कलाके सम्बन्धमे कुछ ज्ञान है। पूनियाँ मै चार्लीके साथ भेज रहा हूँ। मुझे बताना कि तुम्हे वे कैसी लगी। तुम्हे तकुए तो वही बनवा लेने चाहिए। अगर तुम्हे बढिया फौलाद न मिले तो वे साधारण लोहेके भी बन सकते है। अगर ठीक तरहसे बनाया जाये, तो इससे कोई खास फर्क नही पडता। बनावट ठीक हो तो कमजोर तकुएपर भी उतनी ही अच्छी कताई हो जाती है। लेकिन नौसिखुएके हाथोमे घटिया लोहेका बना तकुआ फौलादसे बने तकुएकी बनिस्बत जल्दी खराब हो सकता है।

मै तुम्हे पत्र लिखनेके ४५० कागज और लगभग इतने ही लिफाफे भी नौ बण्डलोमे बाधकर भेज रहा हूँ। मै पचास-पचासकी सख्यामे तह करके हाथसे बने किसी सादे कागजकी खूबसूरत जिल्द बँधवाकर उन्हे तैयार करवाने ही जा रहा था कि तुम्हारा पत्र आ गया। तुमने कहा था कि मै बिना जिल्द बधवाये ही कागज भेजू क्योकि तुम्हे खिडकियोको सजाने के लिए उनकी आवश्यकता है। तुमने कीमतके बारेमे भी पूछा है। जो बण्डल चार्लीके साथ तुम्हारे पास भेज रहा हूँ वह, और एक वह जो इससे पहले तुम्हे भेजा गया था, जिस कागजसे बने है उसके मैंने १२ रुपये दिये थे। थोडे-से सफे जो बच गये थे, उनका मैने इस्तेमाल किया है। अब भी १५० पन्ने मेरे पास बाकी है। इन्हे बनाने में जो श्रम पडता है, वह

नही गिना है और लिफाफे बनाने के लिए जो लेई वगैरा तैयार की गई थी, उसकी कीमत भी नही लगाई है। लेई वगैरा तो बहुत सस्तेमे बन जाती है। मेहनत कितने की बैठी, इसका अन्दाज आज तो नही लगा सकता। दो या तीन लोगोने कुछ दिन इस कामको किया था। मैने उन्हे इस कामको करने के समयका हिसाब रखने को नही कहा था। अब मैने तुम्हे कागजो और लिफाफोकी कीमत खुद ही तय करने योग्य काफी बाते लिख दी है। तुम्हे चाहिए कि तुम उन्हे कमसे-कम १२ रुपयेमें बेचो। लेकिन तुम जैसा चाहो, कर सकती हो। पूनियोके बारेमे मै कुछ भी नही कह सकता, क्योकि मुझे सिफ रुईके पैसे ही देने पडते है। रुई खादी-भण्डारसे खरीदी गई थी। लेकिन जो तैयार माल तुम्हे भेजा गया है, उसका मैने कोई हिसाब नही रखा। कच्चे मालकी कीमत डेढ रुपयेसे अधिक नही हो सकती।

जहातक क्वेटा सहायता-निधिकी बात है, मैने कहा था कि इस समय तुम जो-कुछ भी एकत्र कर सको, वह अपने पास रखो। बादमे मै शायद इस सम्बन्धमे तुम्हे कोई निर्देश द। सहायताका यह काम कुछ समयतक चलेगा। निश्चय ही, जबतक इस दिशामे तुम्हारा अपना कोई विचार नही बनता, मेरी सलाहका तभीतक महत्त्व है। जैसे ही तुम यह समझ जाओगी कि तुम्हे अनुदान कहाँ खर्च करना है, तुम निस्सकोच भावसे उसे वहाँ खच करोगी।

एक बातके बारेमे मै चन्दा करने के लिए अवश्य कहूँगा, और वह है हरिजन कूप-निधि। 'हरिजन' के इसी अकमे मैने इसकी चर्चा की है।[1] उसे देखना।

तसवीरोकी हदतक तुम जिस तरहसे चाहो उनका उपयोग कर सकती हो। वे तुम्हारी सम्पत्ति है। मै समझता हूँ कि तुमने अपने उन दो पत्रोमे, जिनका उत्तर मैने नही दिया था, जो भी बाते पूछी थी, उनका इस पत्रमे जवाब मिल गया है। दाये हाथमे कोई खास तकलीफ वही है। यथोचित विश्राग देनेसे वह बिलकुल ठीक हो जायेगा।

तुम दोनोको प्यार।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१६)से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६८७२ से भी

१ देखिए "हरिजनोंके लिए कुँए", २२-६-१९३५।

२६० एक पत्र

१९ जून, १९३५

प्रिय बहन,

मैं जिम्मेदारीके साथ नहीं कह सकता कि उद्धरण सही है। लेकिन मेरी कठिनाई एक मूलगामी कठिनाई है। मैं किस जीससका विश्वास करूँ? आपकी कल्पनाके जीससका या अपनी कल्पनाके जीससका तुम कहोगी कि "बाइबिलके जीससका।" तब प्रश्न उठता है, "किसकी व्याख्याके अनुसार?" जिस मार्गपर ईश्वर मुझे ले जाता है, उस मार्गपर चलकर मैं अपनी कठिनाई सुलझा लेता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई

२६१. पत्र : लीलावती आसरको

१९ जून, १९३५

चि० लीलावती,

तेरे पत्र मिले हैं। काम चल रहा है।[1] गुजरातीकी जाँच तो मगनभाई कर रहे हैं। अंग्रेजी किसी औरको सौंपनी पड़ेगी। तेरा काम मैं पक्का कर दूंगा।

तेरे पास अंग्रेजी और गुजरातीकी कौन-कौन-सी पुस्तकें हैं, लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५७६) से। सी० डब्ल्यू० ६५८८ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

१ देखिए "पत्र : लीलावती आसरको", ९-६-१९३५।

२६२ पत्र : बहरामजी खम्भाताको

वर्धा
२० जून, १९३५

भाईश्री खम्भाता,

तुम्हारा पत्र और दो चैक मिले। तुम्हारी इच्छानुसार करूँगा। तुमने अस्पतालमे जो कष्ट भोगे, वे आश्चयमे डालते है। जो-जो तुमने देखा, उसे अग्रेजीमे लिख डालो ओर दीनबन्धु एन्ड्र्यूजको दिखाओ। इसके बाद उसे उसके प्रबन्धकको भेज देना। यदि वह इसपर ध्यान नही देगा तो हम अगला कदम उठायेगे। यह अस्पताल किसका है, इसका कर्त्ताधर्ता कौन है, यह सब पूछकर मुझे नाम और पता लिख भेजो। तुमने तो जैसे-तैसे निर्वाह कर लिया, पर गरीब लोग क्या करेगे? तुम्हारे तो सीता-जैसी सती पत्नी है, इसलिए तुम्हारी उत्तम परिचर्या होती रही। किन्तु जिसके कोई नही है और जिसकी ईश्वर पर आस्था नही है, उसका क्या हाल होगा? इसलिए अस्पतालमे तुम्हे जो अनुभव हुए है, उनकी सूचना उचित स्थानपर तो भेजनी ही चाहिए। आशा है, तुम्हे रोज-रोज अधिकाधिक आराम होता जा रहा होगा।

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५५८) से। सी० डब्ल्यू० ५०३३ से भी, सौजन्य तहमीना खम्भाता

२६३ पत्र . नरहरि द्वा० परीखको

वर्धा
२० जून, १९३५

चि० नरहरि,

पण्डितजी चाहे तो सगीतकी कक्षा खोले। खर्च तो ठीक लगता है। विवरण-पत्रिका के लिए पाठ्यक्रमका होना आवश्यक है। अमुक अवधिमे तथा प्रति वर्ष विद्यार्थी कितना सीखेगा, यह विस्तारपूवक बारीकीसे बताया जाना चाहिए।

यदि वनमालाका बुखार उतर गया हो, तो भी खुराकमें मैने जो बताया है, यदि वही रखो तो उससे लाभ ही होगा। तुमने अपने लिए मर्यादा बाँध ली, यह

तो अच्छा ही किया। यदि बाहर इस आग्रहकी रक्षा न की जा सके, तो कोई हर्ज नहीं। वनमालाको नित्य घूमने जाना चाहिए और स्नान तो लेना ही चाहिए।

नये [बाल] मन्दिरमें कितने छात्र-छात्राएँ भरती हुई हैं? शिक्षक कौन-कौन हैं? हर महीने कितना खर्च आयेगा?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

क्या जयाबहन अभी वहाँ हैं? वे क्या पढ़ाती हैं?

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८०) से।

२६४ पत्र एफ० मेरी बारको

वर्धा
२१ जून, १९३५

चि० मेरी,

तुमने मुझे शुभ समाचार दिया है। मैं आशा करता हूँ कि कल और अच्छा समाचार मिलेगा। तुम किस जगह ठहरी हो? आरामसे तो हो?

आश्चर्य है कि मार्गरेटको मेरा कोई पत्र नहीं मिला। मैंने अपनी फाइल देखी। उसमें उसका पत्र नहीं मिला। जान पड़ता है कि वह फाड़ दिया गया है। जबतक उत्तर नहीं दिया जाता, मैं पत्रोंको फाड़ता नहीं। उसे मेरा प्यार देना और कहना कि मुझे फिर पत्र लिखे, मैं उसका तुरन्त उत्तर दूँगा। यहाँ सब कुशल है।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च]

मीराने मुझे तुम्हारा पत्र दिखाया है। के० के जुलाईमें किसी भी दिन आनेकी सम्भावना है। शायद वह एक माहतक ठहरे। अब मीराके लिए पत्र लिखना आवश्यक नहीं रहा।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४६) से। सी० डब्ल्यू० ३३७६ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

२६५ पत्र : प्रेमाबहन कटकको

२१ जून, १९३५

चि० प्रेमा,

तेरे सुन्दर पत्रका उत्तर तुरन्त नही दिया जा सकता था। और जब दायाँ हाथ आराम चाहे, तब काम पूरा हो ही नही सकता।

मेरी बाते ऐसी नही होती, जिन्हे लिखकर पूछू। ऐसी बाते तो मैने पूछी ही है। तत्काल पूछने लायक बाते उसी समय खत्म हो जाती है।

तुझे बोरसद ले जानेमे मेरा उद्देश्य यह था कि भविष्यमे ऐसा काम करने मे तुझे सरल मालूम हो और तुझे यह भी बताना था कि महामारीके निवारणमे मेरा ही हाथ था।

भूकम्पका पापके साथ क्या सम्बन्ध है, यह तो मै 'हरिजन' मे लिख चुका हूँ।[1] उसे पढ लेना। बिहारमे किसीको क्रोध नही आया था, इतना ही नही बल्कि सबने समझ लिया था कि यह पापका फल था। ऐक्यके सिद्धान्तसे यह सब फलित होता ही है।

सर्पादिके विषयमे भी मैने 'हरिजन' मे[2] लिखा है। उसे पढ लेना। आजकल लिखे जानेवाले 'हरिजन' के लेख न पढती हो, तो मै उन्हे ध्यानपूवक पढ जानेका सुझाव दूगा। उसकी प्रतियाँ तेरे पास आती तो है न?

जो पति अत्यन्त दुख पा रहा हो, जिसे सेवासे भी राहत नही मिल सकती, उसकी मृत्यु साधनेमे मुझे पाप नजर नही आता।[3] परन्तु पतिको होश हो तो उससे पूछ लेना चाहिए। वह अति दुख पाते हुए भी जीना चाहे तो उसे जीने देना चाहिए।

मालिक ट्रस्टी बने, इसका अर्थ यह है कि अपनी कमाईका अमुक भाग रखकर बाकी सब गरीबो, अर्थात् राज्य अथवा ऐसी ही किसी लोकोपयोगी सस्थाको दे दे।

यदि सब लोग अपनी पूरी कमाई राज्यको दे दे, तो किसीको उद्यम करने की प्रेरणा नही मिलेगी और मनुष्य केवल जड यन्त्र बन जायेगा।

धनिक लोगोके साथ मेरा सम्बन्ध रहने ही वाला है। उन्हे मै दुष्ट नही मानता। और गरीबोको फरिश्ते नही मानता। पूव और पश्चिममे बहुत-से ऐसे धनिक मौजूद है, जो परोपकारके लिए कमाते है। वे पूजाके योग्य है। मै ऐसे बहुत-से गरीबोको जानता हूँ जिनका सग त्याज्य है। मेरी कल्पनाके स्वराज्यमे शेर और

१ देखिए "प्रार्थनाका रहस्य", १५-६-१९३५।

२ देखिए "जीव मात्र एक है", २२-६-१९३५।

३ समाचार प्रकाशित हुआ था कि किसी अभिनेत्रीने गोली मारकर कैसरसे त्रस्त अपने पतिका जीवन समाप्त कर दिया था।

बकरी साथ-साथ एक ही सरोवरमे पानी पियेगे। यह निरी कल्पना ही रहे, तो भी क्या? मुझे क्या चाहिए, यदि यह भी मै न जानू तो मै प्रयत्न काहेके लिए करूँगा?

यह तो सच है कि मै मनुष्योको अच्छी तरह नही परख पाता, परन्तु जो दूसरे को परखनेका दावा करते है, वे भी कहा परख पाते है? इसलिए अपने अज्ञानके लिए मुझे खेद नही है। मनुष्योको नही परख पाता, इसीलिए उनपर विश्वास रखता हूँ।

यदि तुझसे कोई मेरे विषयमे पूछे तो तुझे उत्तर देना ही चाहिए, यह जरूरी नही है। तू ऐसा क्यो नही कहती कि 'मुझे जवाब देना नही आता, उनका काम और विचार मुझे पसन्द है। जो हमे पसन्द हो, उसके पसन्द होनेके कारण हमेशा थोडे ही बताये जा सकते है? इसलिए प्रश्न तो आप उनसे ही पूछिए।' यदि इस प्रकारका उत्तर दे, तो तू बहुत-सी झझटोसे बच जाये। मुझसे ली हुई होने पर भी जिस वस्तुको तू पचा सकी हो वह तो तू जरूर दूसरोको दे सकती है। परन्तु जो वस्तु हमने पचा ली, वह दूसरेकी नही, हमारी ही हो गई। जो हमारी हो गई हो उसके बारेमे शका नही होती और उसके बारेमें हमारे पास जवाब भी बहुत होते ही है।

आज इतना ही काफी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७४) से। सी० डब्ल्यू० ६८१३ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

२६६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२१ जून, १९३५

भाई वल्लभभाई,

मैने जरा भी धीरज नही छोडा। परन्तु वैद्योकी बात मेरे गले नही उतरती। वे नीमहकीम-जैसे होते है। उनकी दवा लग जाये तो तीर। इसमें फँसकर अच्छे भी कैसे हो? हिन्दुस्तानमे प्रख्यात वैद्य तो गणनाथ सेन है। उनका भी यही हाल समझो। इनके पास कुछ दवाइयाँ होती जरूर है, परन्तु उनका असर खत्म होने पर सब शून्यवत् हो जाता है। इसमे तुम्हे फँसानेमे कँपकँपी छूटती है। मै देखता हूँ कि मालवीयजी और मोतीलालजी भी अन्तमे डाक्टरोकी शरण गये। लेकिन यदि तुम अच्छे हो गये हो, तब तो मुझे कुछ कहना ही नही है। महादेवको जब इच्छा हो बुला लेना ।[1]

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७३

१ साधन सूत्रके अनुसार।

२६७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२१ जून, १९३५

चि० कृष्णचन्द्र,

भले प्रात:कालमें शक्ति न रहे कुछ पीनेके बाद आवेगी, बादमें घुमना। सोनेके समय पेट खाली होना चाहीये।

रामनामका जप कुछ भी सेवाकार्य करते हुए करना मुझे तो उत्तम लगता है। बाकी जिसको ऐसे शांति न मीले वह भले एकांतमें बैठकर शांति लेवे।

सच्ची प्रतिष्ठा वह जो सत्यादिके पालन करते हुए सेवासे आती है।

भले-बुरे कृत्यका कर्ता भगवान भक्तोंके लिये ही है न? अभिमानी अभक्त तो मानता है 'मैं ही हूं'। अर्जुन रूपी देहधारी इस देहमें चलता हुआ युद्ध भली भांति करता ही रहता तो अवश्य 'गीता'की कोई जरूरत न थी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७३) से।

२६८. बातचीत : क्वेटाके एक आगन्तुकसे[१]

[२२ जून, १९३५ के पूर्व]

आगन्तुक : पर प्रार्थना क्यों, सेवा क्यों नहीं? क्या सेवा ही प्रार्थनाका सबसे प्रभावकारी रूप नहीं है?

गांधीजी : अवश्य, अगर सेवाका द्वार हमारे लिए खुला होता। मगर ऐसे लाखों मनुष्य हैं जो भूकम्पसे बचे हुए मनुष्योंकी सेवा करने में बिलकुल ही असमर्थ हैं। इसलिए इस दैवी प्रकोपकी बात करने के बजाय उन्हें अपने अन्तरमें झाँक कर देखना चाहिए और आत्मशुद्धि करनी चाहिए। प्रार्थना आत्मशुद्धिके लिए एक आमन्त्रण है।

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। प्रश्नकर्त्ताका नाम नहीं दिया गया है। उसने क्वेटाके भूकम्पके सिलसिलेमें गांधीजी द्वारा लिखित प्रार्थना की आवश्यकतासे सम्बन्धित लेख बहुत रुचिपूर्वक पढ़ा था और गांधीजी को यह बतानेके लिए कि भूकम्पसे कैसा विनाश हुआ है, वह उनके पास क्वेटासे आया था।

किन्तु सेवा-रहित कोरी प्रार्थना क्या निरर्थक नहीं है?

मै यहाँ प्राथनाके बाहरी प्रदशनकी बात नही कर रहा हूँ। मैं तो आत्मनिरीक्षण और आत्मशुद्धिकी बात करता हूँ। इसकी हम सभीको जरूरत है। जाग्रतावस्थाका अपना सारा समय अगर हम सेवा-कायमे लगाते रहते, तो मुझे कुछ नही कहना था। पर यह बात है नही। और जब सेवा-कायमे हमारा सारा समय नही लग रहा है, तब आत्मशुद्धि करने के लिए भगवान्का नाम हम ले तो वह व्यर्थ जानेका नही।

मुझे ऐसा दिखता है। जहातक इस विपत्तिसे उबर निकलनेवालो का सम्बन्ध है—जिनमे हमारे आदमी और आरम्भके दो दिन उद्धारको-रक्षकोका काम करनेवाले टॉमी भी शामिल है—मैं समझता हूँ उन्हे प्राथना करने की सख्त जरूरत है, क्योकि जब विपत्ति आती है उस क्षण तो हम स्तम्भित रह जाते हैं और प्रार्थना तथा मानव-भ्रातृत्वकी दुहाई देने लगते है, लेकिन दूसरे ही क्षण हम भूल जाते है कि ऐसी कोई विपत्ति भी आई थी। शीघ्र ही लोभ-लालच और लूट-खसोटकी प्रवृत्ति हमपर हावी हो जाती है और फलत भूकम्प-जैसी विपत्तियोसे हममे कोई सुधार नही होता।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २२-६-१९३५

२६९. एक बातचीत[1]

[२२ जून, १९३५ के पूव]

गाधीजी यह चरखा[2] मशीन नही है क्या?

[समाजवादी] मैं इस मशीनकी बात नहीं करता। मेरा मतलब तो बड़ी-बडी मशीनोसे है।

आपका मतलब क्या सिगरकी सीनेकी मशीनसे है? उसे भी ग्रामोद्योगकी प्रवृत्तिने सरक्षण दे रखा है। जो मशीने हजारो आदमियोको श्रम करने के अवसर से वचित नही करती, बल्कि जो व्यक्तिको उसके श्रममे मदद देती है और उसकी कायशक्तिको बढाती हैं और जिन मशीनोको मनुष्य अपनी इच्छासे बिना उनका गुलाम हुए चला सकता है, उन सब मशीनोको हमारे इस आन्दोलनने अभयदान दे रखा है।

लेकिन बडे-बडे आविष्कारोके विषयमें, आप क्या करेंगे? क्या आप बिजलीका सम्पूर्ण बहिष्कार कर देंगे?

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। लेखकके अनुसार मशीनोंके पक्षधर एक समाजवादी सज्जनने गाधीजी से पूछा कि क्या ग्रामोद्योग आन्दोलनका उद्देश्य मशीन-मात्रको ही निकाल बाहर करना नहीं है।

२ गांधीजी उस समय चरखा चला रहे थे।

ऐसा किसने कहा? अगर हरएक गावके प्रत्येक झोपडेमे बिजली पहुँचाई जा सके, और लोग अपने औजारोको बिजलीकी सहायतासे चलाये, इसपर मुझे कोई आपत्ति नही। लेकिन तब पावर-हाउस पर ग्राम-समाज या सरकारका आधिपत्य रहेगा, जैसाकि आज गोचर-भूमिपर है। किन्तु जहा बिजली न हो और मशीने भी न हो, वहाके बेकार बैठे हुए लोग क्या करे? आप उन्हे काम देगे या आप यह चाहेगे कि कामके अभावमे उनके मालिक उन्हे बाहर कर दे?

मनुष्य-मात्रके लाभके लिए विज्ञानके जो आविष्कार है, उन सबको मैं अत्यन्त मूल्यवान समझता हूँ। आविष्कार भी किस्म-किस्मके हैं। एक साथ हजारो आदमियोका सहार कर सकनेवाली जहरीली गैसोकी मुझे चिन्ता नही। सार्वजनिक उपयोगके जो काम मनुष्यके हाथकी मेहनतसे नही हो सकते उनके लिए भारी मशीनोका उपयोग अवश्य किया जा सकता है। उन सबपर आधिपत्य सरकारका रहना चाहिए और उनका उपयोग केवल लोक-कल्याणके लिए ही होना चाहिए। जो मशीने अनेक मनुष्योको निधन बनाकर थोडे-से मनुष्योको धनवान बनाने के ही लिए है अथवा जो बहुत-से आदमियोकी उपयोगी मजदूरी छीन लेने के लिए बनाई गई हैं, मेरे विचारमे उनके लिए स्थान नही हो सकता।

समाजवादीके नाते आप भी तो यह नही चाहेगे कि मशीनोका अन्धाधुन्ध उपयोग किया जाये। छापेकी मशीनको ही ले। उसे कौन बन्द करता है? डाक्टरके चीर-फाडके औजारोको ले। ये औजार हाथसे कैसे बन सकते है? इनके लिए बड़ी-बडी मशीनोकी जरूरत तो रहेगी ही। मगर आलस्य मिटाने के लिए तो इसे छोडकर दूसरी कोई मशीन है ही नही। आपके साथ बात करते हुए भी मैं इस मशीनको चला रहा हूँ और देशकी सम्पत्तिमें थोडी-सी वृद्धि भी कर रहा हूँ। इस मशीनको कौन हटा सकता है?

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २२-६-१९३५

२७०. टिप्पणियाँ

असहाय विधवाएँ

एक सज्जनने, जिनके कई स्वजन क्वेटाके भूकम्पमे मर गये है, १७ वर्षकी एक युवतीकी दशाका वर्णन करते हुए एक बडा हृदय-विदारक पत्र लिखा है। यह युवती अपने पति, दो महीनेका एक बच्चा, ससुर और देवर, यानी ससुरालके सभी स्वजनो को क्वेटाके भूकम्पमे गँवा बैठी है। पत्र-लेखक सज्जन कहते है कि यह लडकी किसी तरह बच गई, और जो कपडे उस वक्त उसके तनपर थे वही पहने हुए यहाँ आई है। यह बहन उनके चाचाकी लडकी है। उस भाईकी समझमे यह नही आता कि उसे किस तरह सान्त्वना दी जाये, और उसका क्या किया जाये। यह बात नही कि उस बहनको खुद कोई नुकसान न पहुँचा हो। उसके पैरमे चोट आई है, यद्यपि

सद्भाग्यसे उसकी हड्डी टूटनेसे बच गई है। पत्र समाप्त करते हुए उक्त सज्जन लिखते हैं

> **मैंने उसे उसकी माके पास लाहौरमें रख दिया है। लडकी तथा दूसरे रिश्तेदारोके सामने मैंने धीरेसे जब यह चर्चा छेडी कि अगर इसका पुनर्विवाह कर दिया जाये तो कैसा रहे, तब कुछ लोगोने तो मेरी बातको सहानुभूतिके साथ सुना और कुछने नाराजगी प्रकट की। मुझे विश्वास है कि जो दशा मेरी इस चचेरी बहनकी हुई है, वैसी ही दशा यहाँ अनेक लडकियोकी हुई होगी। क्या आप इन अभागिनी विधवाओके लिए प्रोत्साहनके दो शब्द लिखेंगे?**

मैं नही जानता कि जहाँ सदियो पुराने पूवग्रहोको दूर करने का सवाल है उनके विषयमे मेरी कलम या आवाजका क्या असर पड सकता है। मैंने यह बीसियो बार कहा है कि प्रत्येक विधुरको पुनर्विवाह करने का जितना अधिकार है, उतना ही अधिकार प्रत्येक विधवाको भी है। हिन्दू-धर्ममे स्वेच्छासे पाला हुआ वैधव्यव्रत जहाँ अमूल्य आभूषण-स्वरूप है, वहाँ मजबूरन पाला गया वैधव्यव्रत अभिशाप-स्वरूप है, और मुझे तो यह लगता है कि अनेक तरुण विधवाएँ, यदि वे भयसे मुक्त हो, तो बिना किसी सकोचके अपना पुनर्विवाह करना चाहेगी। और यहाँ जिस भयसे मुक्तिका असली सवाल है वह यह नही कि उन्हे विवाह करने से जबरदस्ती रोका जायेगा, बल्कि वह तो हिन्दू-समाज के लोकापवादका भय है। इसलिए क्वेटाकी इस दुखिया बहनकी-सी स्थितिमे जो अभागिनी तरुण विधवाएँ हो, उन्हे पुनर्विवाह करने के लिए हर तरहसे समझाना चाहिए, और उन्हे ऐसा अभयदान दे देना चाहिए कि अगर वे फिरसे विवाह करना चाहती हो तो समाजमे उनकी जरा भी निन्दा नही होगी। इतना ही नही, बल्कि उनके लिए योग्य वर खोज देनेका भी पूरा प्रयत्न होना चाहिए। यह काम किसी सस्थाके किये नही हो सकता। यह तो खुद उन सुधारकोको करना चाहिए, जिनके कुटुम्ब या सम्बन्धियोमे स्त्रियाँ विधवा हो गई हो। उन्हे अपने-अपने दायरेमे सयम और गुरुताके साथ जोरदार प्रचार-कार्य करना चाहिए। और जहाँ-जहाँ उन्हे इस काममें सफलता मिले, वहाँ उन्हे उसे अधिकसे-अधिक प्रकाशमे लाना चाहिए। भूकम्पमे जो स्त्रियाँ विधवा हो गई है, उन्हे सच्ची राहत केवल इसी तरह दी जा सकती है। यह मुमकिन है कि इस विपत्तिका स्मरण जबतक लोगोके मनमें ताजा बना हुआ है, उसी बीच उनकी सहानुभूति आसानीसे प्राप्त की जा सकती है। और एक बार अच्छे बडे पैमानेपर यह सुधार आरम्भ हो जाये, तो ऐसी भीषण विपत्तिके अतिरिक्त बीमारी आदि के कारण अपने पतिको खो बैठनेवाली बहनो के लिए यदि उनकी इच्छा हो तो, पुनर्विवाह करना आसान हो जायेगा।

तीन सेवा-सघ

खादी-सेवा, ग्राम-सेवा और हरिजन-सेवा, इन तीनो सेवाओके नाम ही भिन्न वास्तवमे ये तीनो हैं एक ही। ये विशुद्ध परोपकारी सस्थाएँ है, और दरिद्रनारा-

यणकी सेवाके अतिरिक्त इनका दूसरा कोई भी ध्येय नही है। करोडो दरिद्रनारायणोमे हरिजन सबसे अधिक पद-दलित है। हरिजनोकी सेवामे सभीकी सेवा आ जाती है। ईश्वरके नामपर हरिजनको पिलाया हुआ एक कटोरा पानी मनुष्य-जातिके समस्त दीन-दलितोको पिलानेके बराबर है।

जिन सघोने इस प्रकारकी शुद्ध सेवाकी कल्पना कर रखी है, उनके साथ पूजी और श्रमका विचार जोडना ही गलत है। अवैतनिक अध्यक्षसे लेकर वैतनिक चपरासियो तक, सब सेवक ही है। प्रत्येक सघका पैसा उसके ट्रस्टका है। इन सघोके व्यवस्थापक-बोर्ड समय-समय पर जो नियम बनाते है, उनके अनुसार ही वैतनिक या अवैतनिक सेवकोको चलना पडता है। जहाँ केवल कर्त्तव्यकी ही कल्पना है, वहाँ अधिकारका प्रश्न ही नही उठता। इसलिए इन सेवा-सघोमे काय करनेवाला जो भी व्यक्ति अपने लिए किसी विशेष सुविधा या अधिकारका विचार करेगा, उसे किसी-न-किसी दिन निराश ही होना पडेगा। कारण यह है कि इन सेवा-सघोमे धीरे-धीरे उनकी आर्थिक स्थिति सुधरनेकी कोई आशा नही, बल्कि वह समय आ गया है या आनेवाला है, जब आर्थिक लाभका त्याग हमे दिन-दिन अधिकसे-अधिक करना पडेगा। 'जब लिये गये कर्जकी अदायगी दान माना जाने लगेगी तभी कर्त्तव्य-पालनको पुण्य-कार्य कहा जायेगा।' कर्त्तव्य-पालनका पुरस्कार कर्त्तव्यके पालनमे ही है। इन सेवाओमे जो सन्तोष है, उसमे तो कोई सन्देह ही नही। पर वह सन्तोष कर्त्तव्य-पालनका है। यह सच है कि सबने इन कामोको विशुद्ध सेवा-भावसे प्रेरित्त होकर नही अपनाया है। इसीलिए इन तीनो सेवा-सघोमें जो सबसे पुराना है उसमे यदा-कदा कुछ गडबड देखनेमे आती है। इस गडबडको दूर करने का एकमात्र मार्ग यह है कि हमे बार-बार अपने मनमे इस बातका स्मरण करना चाहिए कि हम लोग इन सेवा-सघोमे अधिकार प्राप्त करनेकी नीयतसे नही, किन्तु दरिद्रनारायणके प्रति अपना कर्त्तव्य पालनेके लिए ही प्रविष्ट हुए है। हमारे ऊपर किसीका आधिपत्य है तो एक दरिद्रनारायणका, और फिलहाल अगर हम किसीको अपनेसे बडा मान रहे है, तो हम स्वेच्छासे ऐसा करते हैं, क्योकि हम यह भली-भाँति जानते है कि बिना अनुशासनके कोई सस्था चल ही नही सकती। अनुशासनके लिए किसी एक मुख्य व्यवस्थापकका होना जरूरी है। वह प्रधान व्यवस्थापक केवल समकक्षोमे प्रथम है। और एक विशुद्ध सेवक होनेके कारण, सबका प्रमुख बनने के लिए उसे अपने सब साथियोमे अधिकसे-अधिक नम्र होना चाहिए। उसका यह प्रमुख पद दूसरोकी सहमतिपर निर्भर है। लेकिन जबतक वह इसपर रहे, तबतक उसे यह आशा रखनेका अधिकार है कि उसके दूसरे तमाम साथी उसके प्रति पूर्ण हार्दिक निष्ठा रखे और बिना किसी शिकायतके उसकी आज्ञाका पालन करे।

[अग्रेज]

हरिजन, २२-६-१९३५

२७१ जीव-मात्र एक है

गत मास मै कुछ दिनोके लिए बोरसद गया था। वहाँ मैने अपने कई भाषणोमे यह कहा था कि यद्यपि मै यह मानता हूँ कि प्लेगके कीटाणुओसे ग्रस्त चूहे और पिस्सू भी मेरे लिए सगे है, और जीनेका जितना अधिकार मुझे है उतना ही अधिकार उन्हे भी है, तो भी डॉ० भास्कर पटेलके चूहे और पिस्सू मारनेके प्रयत्नका मै बिना किसी सकोचके समथन करता हूँ।

एक सवाददाताने, जिसे मेरी यह चूहो और पिस्सुओसे सगेपनकी बात सुनकर आश्चय हुआ, पर जिसने यह परवाह नही की कि मैने किस सन्दभमे यह बात कही थी, झटसे मेरी वह बात तार द्वारा अपने अखबारको सूचित कर दी। सरदार पटेल की तीक्ष्ण दृष्टि उस अनुच्छेदपर जा पडी, और उससे जो हानि होनेकी सम्भावना थी उसे सुधार देनेके लिए उन्होने मुझसे कहा। मगर उन्होने जो काम मुझे सौप रखा था उससे मुझे फुसत नही थी, इसलिए मैने यह कहकर लिखने की बात टाल दी कि जिन लोगोका इस बातके साथ सम्बन्ध है वे कभी मेरे कहने का गलत अथ नही लगायेंगे।

लेकिन सरदारका कहना ठीक निकला। यह अर्धसत्यवाली खबर तारसे लन्दन भेज दी गई। वहाँ जो लोग यूरोपमें मेरी प्रतिष्ठाकी रक्षाके विषयमे चिन्तित रहते है, उन्हें वह अनुच्छेद पढकर क्षोभ हुआ, यद्यपि इतना तो वे समझते थे कि इस सगेपनके दावेमें मैंने बहुत-कुछ मर्यादाएँ तो रखी ही होगी। उन्होने मेरे पास उस अनुच्छेदकी कतरन लेकर भेज दी। अब कमसे-कम उन प्रेमी मित्रोकी खातिर ही मै बाध्य हूँ कि अपनी स्थितिको साफ कर दूँ, यद्यपि जो अर्धसत्य एक बार चल निकला, उसे एकदम कैसे रोका जा सकता है?

मैं जिन लोगोके आगे वहाँ भाषण दे रहा था, वे उन जगली जानवरोको भी नही मारते, जो नित्य ही उनकी खेतीका नाश करते रहते है। जबतक सरदारने चूहो और पिस्सुओका उन्मूलन करने के अभियानमें अपने प्रचड प्रभावका पूरा उपयोग किया था, उस समयतक बोरसद ताल्लुकेके लोगोने एक भी चूहा या पिस्सू नही मारा था। लेकिन सरदारका उन लोगोपर बहुत, बडा उपकार था, इसलिए उनकी बातका विरोध वे नही कर सकते थे, और उन्होने डॉ० भास्कर पटेलको चूहो और पिस्सुओका सपूर्ण सहार निर्बाध रीतिसे करने दिया। बोरसदमे जो काम हो रहा था उसकी मुझे रोज-ब-रोज खबर मिलती रहती थी।

जो काम वहाँ हुआ था उसका अनुमोदन करने के लिए ही सरदारने स्वभावत मुझे आमन्त्रित किया था। कारण, यह काम अब भी जारी रहना था, हालाकि लोगोको अब यह काम बिना बाहरी मददके खुद करना था। इसलिए इस कामके

प्रति अपने अनुमोदनपर जोर देनेके लिए मैंने अहिसा अर्थात् जीव-मात्रकी अवध्यता तथा एकता-विषयक अपनी अटल श्रद्धा अत्यन्त स्पष्ट शब्दोमे सुना दी।

किन्तु श्रद्धा और कमके बीच यह विरोध क्यो ? विरोध तो बेशक है ही। जीवन एक उच्चाकाक्षा है। उसका ध्येय पूणता अर्थात् आत्म-साक्षात्कारके लिए प्रयत्न करना है। अपनी निबलताओ या अपूणताओके कारण हमे आदश नीचा नही करना चाहिए। मुझमे निर्बलता और अपूणता दोनो ही है। मुझे उनका दु खद भान है। अपनी उन निर्बलताओ और अपूणताओको दूर करने मे सहायता देनेके लिए सत्य-रूप ईश्वरके समक्ष मेरे हृदयसे मूक पुकार प्रतिक्षण उठती रहती है। मै यह मानता हूँ कि साँप, बिच्छू, बाघ और प्लेगके चूहो तथा पिस्सुओसे मुझे डर लगता है। मुझे यह भी स्वीकार करना चाहिए कि खतरनाक दिखाई देनेवाले डाकुओ और हत्यारोसे भी मुझे डर लगता है। मै यह जानता हूँ कि मुझे इनमे से किसीसे भी नही डरना चाहिए। पर यह कोई बुद्धिकी बहादुरीका काम नही है। यह तो हृदयका व्यापार है। सिवा ईश्वरके और सबका भय त्याग देनेके लिए वज्र-सा कठोर हृदय चाहिए। अपनी निबलताओके कारण बोरसदके लोगोको मै यह सलाह तो नही दे सकता था कि आप लोग घातक चूहो और पिस्सुओको न मारे। पर मै यह जानता था कि यह छूट मानवीय निबलताको ध्यानमे रखकर दी जानेवाली एक छूट है।

तो भी अहिसा और हिंसा-सम्बन्धी विश्वासोमे उतना ही अन्तर है, जितना कि उत्तर और दक्षिण दिशामे है, या जितना अन्तर जीवन और मृत्युके बीचमे है। मनुष्य अहिंसा, अर्थात् प्रेम-धर्मके समुद्रमे जब अपने भाग्यकी नौकाको छोड देता है, तो वह विनाशका दायरा नित्य कम करता जाता है, और उतने अशमे जीवन और प्रेमका क्षेत्र बढाता जाता है। जो मनुष्य हिसा अर्थात् घृणामे विश्वास रखता है वह क्षण-क्षण विनाशका क्षेत्र विस्तृत करता जाता है, और उतने अशमे मृत्यु तथा घृणाको बढाता है। यद्यपि बोरसदवासियोके आगे मैने अपने सगो-जैसे चूहो और पिस्सुओके विनाशका समथन किया, तो भी मैने उन्हे जीव-मात्रके प्रति दिव्य प्रेम-धर्मका महान् सिद्धान्त शुद्ध रूपमे बतलाया। यद्यपि इस जन्ममे उस सिद्धान्तका पालन पूणतया मैं नही कर सकता, तो भी इसपर मेरी अटल श्रद्धा तो रहेगी ही। मेरी प्रत्येक असफलता मुझे उस सिद्धान्तके पूर्ण आचरणके अधिकसे-अधिक समीप ले जाती है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २२-६-१९३५

२७२. पशुओके खाद्यके रूपमें मल का उपयोग

अपने बाल्यकालमे पोरबन्दरमे मैंने गायोको अक्सर मनुष्योका मल खाते हुए देखा था। मेरे मनमे इससे बडी वितृष्णा हुई थी ओर आजतक मैं उसे भूल नही पाया हूँ। लेकिन एक पत्र-लेखकने मुझे यह बताया है कि सतारा जिलेमे यह आम बात है। वहाके ग्वाले मनुष्योका मल अधिक मात्रामे प्राप्त करने के लिए पैसे खच करते है, जिससे यह उनके मवेशियोको बराबर मिलता रहे। उसने मुझे बताया कि गायोको मल खिलानेसे दूधकी मात्रा बढ जाती है। पत्र-लेखककी बातकी सचाईमे सन्देह करने के लिए मेरे पास कोई आधार नही था, सो मैंने अपने एक चिकित्सक मित्रसे कहा कि इस विषयमे किसी विशेषज्ञकी सम्मति प्राप्त करे। हतप्रभ कर देनेवाली वह सम्मति निम्न प्रकार है

> साधारणतया मलके अन्दर पोषण प्रदान करनेवाला सैलूलोज तथा नाइट्रोजन होता है। मलमे निहित खास तत्त्व विटामिन 'बी' है, इसका पशुके शरीरपर सम्भवत अनुकूल असर पडता है। मलमे विटामिन 'बी' रहता है, यह बात कूपरने (१९१४) में बताई थी। उसने मलसे बनाई शराबसे बीमार कबूतरोकी चिकित्सा की थी। यह एक आम राय है कि बछडेको ठीक दूध मिलता रहे, इसके लिए गायको काफी मात्रामें विटामिन 'बी' दिया जाना चाहिए (देखिए 'मोनोग्राफ आन विटामिन्स', प्रकाशक — पिकेट टॉम्सन रिसर्च लेबोरेटरी, लन्दन)।
>
> यह बहुत सम्भव है कि मल खानेवाली जिन गायोको यह विटामिन अधिक मात्रामें मिल जाता है, उन्हे अधिक दूध उतरने लगता है।
>
> भूख कम लगना या खुराकका ठीकसे हजम न होना इस बातका प्रमाण है कि खुराकमें विटामिन 'बी' की कमी है और यह बहुत मुमकिन है कि जिन गायोको हरे चारेकी खुराकके साथ खाद्य पदार्थके रूपमें मल भी मिलता है, विटामिन 'बी' प्राप्त होने से उनकी भूख तीव्र हो जाती है, जिससे उनमें चर्बीकी अधिक मात्रा बनने लगती है तथा घास-पातमें रहनेवाली शर्करा अधिक ठीक ढगसे पचकर उन्हे हृष्ट-पुष्ट बना देती है।
>
> जहाँतक मनुष्यके मलमें साधारणत निहित सूक्ष्म जीवाणुओ आदिका सम्बन्ध है, कहा जा सकता है कि उनमें से अधिकाश मृत या मृतप्राय होते है और जो थोडे-से जीवित रहते भी है, वे गायके पेटके गैस-युक्त रसमें मिलने पर मर जाते है।

इस प्रकार मनुष्यके मलका पशुके लिए एक लाभदायक खाद्य होनेका रासायनिक प्रमाण मिल जाता है। लेकिन उसे लेकर उत्पन्न होनेवाली मनोवैज्ञानिक आपत्ति तो बनी ही रहेगी।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २२-६-१९३५

२७३ हरिजनोके लिए कुएँ

यद्यपि भूकम्प-पीडित क्वेटाकी काली छाया अब भी मेरे हृदयपर पड रही है, तो भी देशके उदार दानियोसे यह कहने मे मुझे न तो दु ख है, न सकोच कि उन्हे इन पृष्ठोमे प्रकाशित हरिजन कूप-कोषके लिए चन्दा देनेकी अपीलका तुरन्त उचित उत्तर देना चाहिए। क्वेटाका सहायक तो आज सारा ससार है, पर हरिजनोके मददगार थोडे ही है। क्वेटाका एक भी पीडित मनुष्य न तो प्यासा मर रहा है, और न उसे मजबूरन ऐसा गन्दा पानी पीना पड रहा है जिसे लोग अपने पशुओको भी पिलाना पसन्द न करेगे।

ऐसी भारी विपत्तियोके आनेपर हमे अपना विवेक नही गँवा बैठना चाहिए। शायद कुछ मामलोको छोडकर लोगोकी रँगरेलियाँ एक क्षणके लिए बन्द नही हुई है। क्वेटाकी मुसीबतका यह सारा बोझ क्या गरीब हरिजनके ही घायल कन्धो पर पडना चाहिए? हरिजनोको पीनेका स्वच्छ पानी देने के लिए दाताओने जिस आर्थिक सहायताका सकल्प कर लिया था, उस सहायताका रुख अगर उन्होने दूसरी तरफ मोड दिया, तो उन्हे अन्तर्यामी ईश्वरकी अदालतमे गबनके अपराधियोके रूपमे हाजिर होना पडेगा। इसलिए उचित तो यह होगा कि वे अपने निजी बजटको, न कि परमार्थके बजटको, फिरसे देखे और उसीमे उचित काट-छाँट करे, और हरिजन-कूप-कोषके निमित्त जो रकम वे प्रायश्चित्तस्वरूप सकल्प कर चुके हो, उसमे से तो एक पाई भी वे इधरसे उधर न करे।

प्रार्थनाके लिए जो अपील की गई है, वह बिना किसी अर्थ या अनुभवके नही की गई। अन्तस्तलसे निकली हुई प्रार्थना मनुष्यको शक्ति और साहस देती है, उसे नम्र बनाती है ओर उसे उसका अगला कर्त्तव्य भी बताती है।

पाच बडी-बडी नदियाँ जिस प्रान्तमे बह रही है, उस पजाबके हरिजनोकी जल-सम्बन्धी आवश्यकताओका विवरण पाठक पढकर देखे। क्या यह शर्मकी बात नही है कि पजाबके धनी लोग हरिजनोके लिए स्वच्छ पानीका प्रबन्ध नही कर सकते? कूप-कोषके लिए जो यह एक लाख रुपयेकी तुच्छ अपील निकाली गई है उसमे जल्दसे-जल्द एक लाखसे ऊपर ही रुपया आ जाना चाहिए।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २२-६-१९३५

२७४ पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

वर्धा
२३ जून, १९३५

चि० नरहरि,

मै पहले भाई वेलचन्दको लिखूंगा, फिर तुम्हे लिखूंगा। साथका पत्र भगवानको दे देना। गायोसे सम्बन्धित काम कैसा चल रहा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८१) से।

२७५ पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
२३ जून, १९३५

चि० मेरी,

अगर तुम्हे वहा रहना माफिक आ रहा हो, तो जबतक वे तुम्हे वहाँ रहने दे, तुम वही रहो। मै चाहता हूँ कि तुम वहाँसे मजबूत और तन्दुरुस्त होकर वापस आओ। उनसे पूछो कि फल तुम्हे क्यो माफिक नही आते।

मै अभी पाँच महीने और वर्धासे बाहर नही जाऊँगा, ऐसी सम्भावना है।

हाँ, छोटेलाल वैसे ही है जैसाकि तुमने बताया है।

स्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४७) से। सी० डब्ल्यू० ३३७७ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

२७६. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

२३ जून, १९३५

भाई विट्ठलदास,

एक घरसे और दूसरा दुकानसे लिखा, तुम्हारे दोनो पत्र मिले।

तुम्हे अखबारोमे कुछ नही भेजना है। जब मन मिलेगे तब जरूरत हुई तो भेजेंगे।

रतुभाईने जो किया, वह खेदजनक है। उसे लिख रहा हूँ। तुम अब मुझसे पूछे बिना कोई कदम न उठाना। धीरज रखना। निश्चिन्त रहना। कटौतीके बारेमे भी हम दोनो मिलकर सोचेगे। वल्लभदासको बुलाऊँगा। अपनी समूची योजना भेजना। जरूरत हुई तो रतुभाईको बुलाऊँगा।

लक्ष्मीदासके बारेमे भी जो करो, मुझसे सलाह करके करना। इस समय जब सब-कुछ इस तरह हो रहा है, तब खूब सोच-विचारकर करना होगा।

यह काम करते हुए अपनी तबीयत जोखिममे मत डालना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७९१) से।

२७७. पत्र : पद्माको

२३ जून, १९३५

चि० पद्मा,

तेरे पत्रका उत्तर काडसे देकर दरिद्रनारायणके लिए पैसा बचा रहा हूँ। तुम सबका काम बहुत अच्छा चल रहा है। खूब पढ लेना, लेकिन शरीरको खूब कसना और मेहनत करना मत छोडना। यहाँ तो शरीरश्रम ही चल रहा है, जैसाकि तू 'हरिजनसेवक' मे पढती होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१५१) से। सी० डब्ल्यू० ३५०७ से भी, सौजन्य प्रभुदास गाधी

२७८. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

२३ जून, १९३५

भाई मूलचन्द,

तुम्हारा खत मिला है।

तुम्हारा किस्सा करुण है, लेकिन उसीको धमबधक बना सकते हैं। करुणा धर्मकी पोषक है। धर्मकी परीक्षा भी कठिन समयमे हो सकती है। पत्नी जब पतिकी अनुगामिनी नही रहती है तब सहधर्मिणी तो कहासे हो सकती है?' विधर्मिणी बनने का उसको अधिकार है। जैसा पतिको। लेकिन जब पत्नी विधर्मिणी बनती है तब पतिके सहयोगकी अथवा सहवासकी आशा नही रख सकती है। पतिके तफसे पोषण मीलनेका उसे पूण अधिकार है। जो पति अपनी पत्नीके प्रति निर्विकार रह सकता है, और अन्य स्त्रियोके प्रति निर्विकार रहा है और भविष्यमे रह सकता है, उसको पत्नीका सहवास छोडने का उक्त अवसरमें अधिकार है। इसलिये तुमसे अलग रहकर अपनी इच्छानुसार चलने का उसको पूर्ण अधिकार होना चाहिये। ऐसा करने मे रोषको कोई स्थान नही है। पत्नीको एक भी कटु वचन न कहा जाय। प्रेमभावसे उसे धर्म बताकर असहयोग किया जाय।

रह जाती है बात बच्चोकी। जबतक बच्चे १६ वषकी उम्रके नही हुए है तबतक अधिकार तुम्हारा ही रहता है। उसके बाद किसके साथ रहना और किसकी बात मानना वह बच्चोपर निभर है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८३७) से।

२७९. पत्र : अवधेशदत्त अवस्थीको

२३ जून, १९३५

चि० अवधेश,

माता, पिता, पत्नी आदिके प्रति जो धर्म है उसका त्याग करके समाज-सेवा कभी हो नही सकती है। वह धम सेवा-धर्मका विरोधी नही है। माता, पिता आदि [के] प्रति क्या धर्म है, उसकी क्या मर्यादा है यह जानना आवश्यक है। पत्नीका पालन करना और जहातक वह सहधर्मिणी रह सकती है, वहातक सयममे रहकर उसको साथ देना पतिका धर्म है। मात-पिता अपग है और धनहीन है, उनके और

कोई पुत्र नही है, इस हालतमे उनका पोषण और उनकी सेवा करने का धर्म प्राप्त होता है।

बकरीका दूध लेता हू क्योकि लाचार बन गया था। व्रतके कारण गाय-भैसका तो ले ही सकता न था। व्रतका सकुचित अर्थ करते बकरीका दूध लेनेकी छूटी ले ली।

यदि अगारसे पकाकर कुछ न लेना है तो फलाहारसे ही निपटारा हो सकता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१३) से।

२८० पत्र · श्रीनाथसिहको

२३ जन, १९३५

भाई श्रीनाथसिह,

आपका पत्र मिला। श्री सूर्यनारायणजी को समिति का निणय सम्मेलन दफ्तरसे ही भेजा जाय। उनका पत्र दफ्तरमे भेजने मे भी मेरा यही आशय था।

सम्मेलनके आगामी अधिवेशनके बारेमे मै नागपुरवालो से वार्तालाप कर रहा हू। उसके बारेमे भी तुम्हारा पत्र आ गया है।

मो० क० गाधी

श्री श्रीनाथसिह
मत्रीजी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन
पो० आ० बाक्स ११
इलाहाबाद, प्रयाग

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६६२) से। सी० डब्ल्यू० २९७४ से भी, सौजन्य परशुराम मेहरोत्रा

२८१ तार : हीरालाल शर्माको[1]

वर्धा
२५ जून, १९३५

डॉ० शर्मा
खुर्जा

तार मिला। आ जाओ, यद्यपि दूसरे जहाजकी तारीख मालूम नहीं है। मालूम कर रहा हूँ।

बापू

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, पष्ठ १७० के सामने प्रकाशित अंग्रेजीकी प्रतिकृतिसे

२८२ पत्र : एफ० मेरी बारको

२५ जून, १९३५

चि० मेरी,

जानकर खुशी हुई कि तुम दिन-ब-दिन अच्छी होती जा रही हो। इसलिए, अगर जाँचकी दृष्टिसे वे कभी-कभी बुखार लाना भी जरूरी समझें तो मैं समझता हूँ, हमें इसपर शिकायत नहीं होनी चाहिए।

छोटेलाल अभी नहीं आये। हकीमकी दवाईसे कोई फायदा नहीं हुआ। मुझे उसकी उम्मीद भी नहीं थी।

सस्नेह,

बापूके आशीर्वाद[2]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४८)से। सी० डब्ल्यू० ३३७८से भी, सौजन्य : एफ० मेरी बार

१ यह हीरालाल शर्माके २५ जून, १९३५ के ही तारके उत्तरमें भेजा गया था। वह तार इस प्रकार था : "पासपोर्ट मजूर हो गया है। तारसे सूचित करें कि क्या मैं कलकत्ते [से प्रस्थान करने] के लिए के टूँ।"

२ मूलमें हस्ताक्षर हिन्दीमें है।

२८३. पत्र . एल० के० किर्लोस्करको

२५ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

इस मशीनमें आपकी कोई दिलचस्पी नहीं रह गई, इसका मुझे दुख है। मेरे सुझावमें[१] किसी नये खर्चकी कोई बात नहीं है, इतना ही नहीं, उसमें एक ऐसी तजवीज हे जिसपर आपका कोई खर्च नहीं बैठेगा। अगर इस कामपर कुछ और खर्च बैठे तो वह कर दिया जाये और सम्भव है, उस खर्चका परिणाम यह हो कि पुरस्कार जीतने के लिए आपने जो पुष्कल प्रयत्न किया उसपर हुए वास्तविक खर्चका भी आंशिक या पूरा भुगतान हो जाये।

जब हम वर्धामें मिले थे तब मैंने आपसे कहा था और अब फिर इस बातको दुहरा रहा हूँ कि मैंने जो न्यूनतम बातें सुझाई थीं, यदि मशीन उनकी दृष्टिसे उपयुक्त साबित होती है तो मैं एक ऐसे अनुबन्धके अधीन आपको मशीनोंका आर्डर देना चाहूँगा, जिससे आपका उठाया खर्च धीरे-धीरे पूरा हो जाये। फिलहाल इस प्रस्तावका संघसे[२] कोई सरोकार नहीं है, क्योंकि यह विचार पूरी तरह मेरा है। अगर हम किसी हदतक सन्तोषजनक समझौतेपर पहुँच गये तो मैं इस प्रस्तावमें संघकी रुचि भी जगानेकी कोशिश करूँगा।

मैंने इस बातको भी ध्यानमें रख लिया है कि आप सर डैनियल हैमिल्टनको अपनी मशीनका खाका नहीं दे सकते।

आपका,

श्रीयुत एल० के० किर्लोस्कर
किर्लोस्करवाडी

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

१ देखिए "पत्र एल० के० किर्लोस्करको", १६-६-१९३५।
२ अखिल भारतीय चरखा संघ, देखिए "चरखे में सुधार", २७-६-१९३५ भी।

२८४ पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

दुबारा नहीं पढ़ा

२५ जून, १९३५

चि० अम्बुजम्माल,

दाहिने हाथको आराम दे रहा हूँ लेकिन साथ ही पत्र व्यवहारको समयसे निबटानेकी भी चिन्ता है, इसलिए यह पत्र बोलकर ही लिखवाना पड रहा है।

मुझे ऐसा भय था कि माताजी अपनेको रोक नही पायेगी। वे और तुम दोनो मिलकर इस बातके लिए अधिकसे-अधिक प्रयत्न करो कि तुम्हारे पिताजी के उपचारमे कोई व्यवधान न पडे। मै आशा करता हूँ कि कीचीका घाव अब भी भर रहा होगा। मै जानता हूँ कि खूब तन्दुरुस्त लोगोके लिए भी ये छोटे-मोटे आपरेशन कितने तकलीफदेह होते है। घाव पुरनेमे काफी समय लगता है।

क्वेटाके भूकम्प-पीडिताके लिए भेजा तुम्हारा दान मै अपने पास रख रहा हूँ। ठीक समय आनेपर उसका उपयोग करूँगा। जब तुम्हे झँझटोसे छुटकारा मिल जायेगा तब चाहूँगा कि तुम हरिजन कूप-कोपके लिए चन्दा उगाहो। और तुम शुरुआत अपने माता-पितासे कर सकती हो। यह पुण्य-काय है और इसलिए हरएक को व्यक्तिगत रूपसे यह पुण्य अर्जित करना है। मै मानता हूँ, तुम इसके बारेमे 'हरिजन' मे सब-कुछ पढती रहती होगी।

हाँ, यहाँ बरसात आ गई है और इसलिए तापमान काफी कम हो गया है।

स्नेह।

बापू

श्री अम्बुजम
फेयरीफाल्स व्यू
कोडाइकनाल आब्जर्वेटरी

मूल अंग्रेजीसे अम्बुजम्माल पेपस, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

२८५ पत्र : नारणदास गाधीको

२५ जून, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलाल फिर पटरीसे उतर गया जान पडता है। वह नौकरी छोड बैठा है। तुमने उसे काम देनेका वादा तो किया है, लेकिन क्या यह ठीक किया है? वह अगर सरासर झठ बोलता हो तो तुम्हारे किस काम आयेगा? इधर तो उसके पत्र मुझे तनिक भी सन्तोषजनक नही लगते।

मैथ्यू कैसा चल रहा है? उसे शारीरिक श्रमका कोई काम तो दिया ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५५ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

२८६ पत्र : इन्दौरके दीवानको

[२६ जून, १९३५ के पूव][1]

प्रिय मित्र,

शायद आपको मालूम हो कि ईस्टरके दौरान मैंने हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी कायवाहियोकी[2] अध्यक्षता की थी। सम्मेलनमे एकलिपि-परिषद्की स्थापना की गई। मुझे मालूम हुआ है कि महाविभवने श्री लतीफीकी उस योजनापर सम्मतियोके सग्रहका आदेश दिया है, जिसमे उन्होने रोमन लिपिमे आवश्यक सुधार करके उसे सभी भाषाओके लिए अपनानेकी तजवीज पेश की है। इस सम्बन्धमे राज्यके पास जो कागजात हो वे आप मुझे कुछ समयके लिए दे सके तो आभारी होऊँगा।

फिर, राज्यके कुछ हिन्दी प्रकाशन और देवनागरी लिपिके भी कुछ प्रकाशन है। वे उपलब्ध करा दे तो कृपा होगी।

और अन्तमे, अगर राज्यमे हिन्दीके प्रयोगके सम्बन्धमे जारी किये गये सभी परिपत्रोकी प्रतिलिपियाँ भी मिल सके तो मै उन्हे प्राप्त करना चाहूँगा।

हृदयसे आपका,

श्री दीवान साहब

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

१ देखिए अगला शीर्षक।

२ २० से २३ अप्रैलतक इन्दौरमें आयोजित, देखिए खण्ड ६०, पृ ४८६ ९६।

२८७ पत्र इन्दौरके दीवानको

वर्धा
२६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

मेरे पत्रका आपने इतनी तत्परतासे उत्तर दिया, इसके लिए आभारी हूँ। जो पुस्तके और कागजात मैने माँगे थे, सब मिल गये है। इस भेटके लिए क्या आप लिपि-परिषद्का धन्यवाद स्वीकार करेगे?

अब मुझे सयोजक काकासाहब कालेलकरका एक स्मरण-पत्र मिला है, जिसमे उन पुस्तकोकी एक सूची है जिनकी उन्हे अपने शोध-कार्यके लिए जरूरत है। ये पुस्तके भेजी जा सके तो आभारी होऊँगा।

हृदयसे आपका,

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

२८८ पत्र ओ० वी० अलगेसनको[1]

२६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। जैसा आप कहते है, काश मेरी कलम या शब्दोका वैसा प्रभाव होता।

दैनिक समाचार-पत्रोमे निकलनेवाली पहेली-प्रतियोगिताओके बारेमे आपने जो-कुछ कहा है, वह एक हदतक ठीक ही है। लेकिन यह जुएके मुकाबले, जिसपर मै अपने विचार प्रकट करता रहा हूँ,[2] अधिक सूक्ष्म है। फैशनके रूपमे रूढ हो जानेपर भी जुआ एक बुरी चीज ही माना जाता है। पहेली-प्रतियोगिताको बुरा नही माना जाता। इसलिए इस बुराईसे निबटनेका मुझमे साहस नही है।

हृदयसे आपका,

[अग्रेजीसे]
हिन्दू, ६-७-१९३५

१ पत्र-लेखकने तमिलनाडुकी अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं द्वारा प्रारम्भ की गई पहेली प्रतियोगिताओंकी ओर गांधीजीका ध्यान खींचा था और प्रार्थना की थी कि वे इस बुराईकी **हरिजन**में लेख लिखकर भर्त्सना करें, क्योंकि वह भी जूएका ही एक रूप है।

२ देखिए "सत्यानाशी जूआ", १५-६-१९३५ तथा "टिप्पणियाँ", २९-६-१९३५।

२८९. पत्र एफ० मेरी बारको

२६ जून, १९३५

चि० मेरी,

छोटेलाल अभी-अभी पहुँचे हैं। मैंने कुकरके सम्बन्धमें लिखा गया अनुच्छेद मीराको पढकर सुनाया। उसे इस बारेमें कुछ भी याद नही है। वह उसे खोज तो रही है, लेकिन अभी तक वह मिल नही पाया है। तुम उसे लेकर चिन्तित मत होना। अगर तुम उसके सम्बन्धमें कुछ और विवरण भेज सको और तुम्हारा पत्र मिलने तक वह मुझे न मिले, तो खोजनेमें आसानी होगी।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४९) से। सी० डब्ल्यू० ३३७९ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

२९०. पत्र · सी० जी० जगन्नाथदासको

२६ जून, १९३५

प्रिय जगन्नाथदास,

आप नग्नताके सम्बन्धमे लिखे मेरे पत्रको[1] प्रकाशित करे, इसपर मुझे कोई एतराज नही है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०९३) से।

१ देखिए "पत्र, सी० जी० जगन्नाथदासको", १८-६-१९३५।

२९१. पत्र : लीलावती आसरको

२६ जून, १९३५

चि० लीलावती,

यह रहा तेरा पहला पाठ।[१] अब तू गुजराती तो मगनभाईको सीधे भेज सकती है। मुझे भेजना चाहे तो वैसा करना।

इसे लौटाने मे देर हुई है। तीन दिन मेरे पास पडा रहा। पहले पहलका मामला था, सो मगनभाईको भी देर लगी।

अंग्रेजीका पाठ लगता है, कही गुम हो गया है। खोज करा रहा हूँ। वह नही मिला तो नया पाठ बनाकर भेजूगा। यह काम अब मेरे हाथमे रहेगा।

जो समझमे न आये, यदि वह पूछती रहेगी तो खूब उन्नति करेगी।

यदि तू २० छात्रोकी कक्षामे हो तो तेरे हिस्से शिक्षकका १/२० ध्यान आये। पत्र द्वारा प्रत्येक विद्यार्थीको अलग-अलग व्यक्तिगत ध्यान मिलता है। उद्यमी विद्यार्थीको पत्र-शिक्षणसे बहुत लाभ होता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३३) से। सी० डब्ल्यू० ६६०८ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

२९२. पत्र : लीलावती आसरको

२६ जून, १९३५

चि० लीलावती,

तेरे अंग्रेजी अभ्यास मिल गये है। उन्हे सुधारकर वापस भेज दिया है। मगनभाईने जो कहा है, वह इसपर भी लागू होता है। अपने अक्षर सुधार। कलमसे लिख। धीमे लिख। तेरी अंग्रेजी, जैसी मै सोचता था, उससे अच्छी है। जल्दी सुधर जायेगी। तेरे पास जो पुस्तके है उनकी सूची आनेके बाद लिखूगा कि अभ्यासके लिए कौन-सी पुस्तक काममे लानी चाहिए। अभी तो पाठमालाका पहला भाग ले और

१ लीलावती आसर अंग्रेजीके अपने अभ्यास सप्ताहमें एक बार गांधीजी को भेजा करती थीं जिन्हें वे अपने संशोधनों और टिप्पणियोंके साथ लौटा दिया करते थे। कुछ सामान्य संशोधन यहाँ छोड़ दिये गये है।

उस गुरू कर दे। पहले पाठ सरल लगेंगे। जहांसे कठिन लगे, वहांसे तर्जुमा करना शुरू कर देना। जो भाव समझमें न आये, उसे पूछनेमें बिलकुल संकोच न करना। प्रभावतीकी पाठमालाका पहला भाग यहां है, इसलिए पृष्ठ संख्या टाँक देना काफी होगा। सुझावोंको ठीक तरहसे समझ लेना। जो समझमें न आये तो फिर पूछना।

मैथ्यूका क्या हाल है? वह क्या काम करता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३२) से। सी० डब्ल्यू० ६६०७ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

२९३. पत्र : बनारसीलाल तथा रुक्मिणी बजाजको

२६ जून, १९३५

चि० बनारसीलाल तथा रुक्मिणी,

तुम दानाके पत्र मिले। रोग-मात्रको शुरू होते ही निर्मूल कर देना चाहिए। आशा है, देवेन्द्रके टांसिल ठीक हो गये होंगे। बम्बई जाते समय वर्धा होते हुए जाओगे, यह खुशीकी बात है।

बापूके आशीर्वाद

श्री बनारसीलाल बजाज
ठठेरी बाजार
बनारस सिटी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१५९) से।

२९४. पत्र : पुरुषोत्तम एल० बावीशीको

२६ जून, १९३५

भाई पुरुषोत्तम,

तुम्हारा पत्र मिला।

चरखेमें मैं तो चमत्कार देखता ही हूँ।

तुम्हारा खेतीका प्रयोग सफल हो। उसके सम्बन्धमें मुझे जो लिखने लायक हो, लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२९) से। सी० डब्ल्यू० ४७४८ से भी, सौजन्य पुरुषोत्तम एल० बावीशी

२९५ पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२६ जून, १९३५

चि० नरहरि,

भाई वेलचन्दका पत्र इसके साथ भेज रहा हूं। यदि यह तुम्हें ठीक लगे तो वह जहां हो वहां भेज देना। लक्ष्मीदाससे मैंने बात की थी। भाई वेलचन्द काम पर वापस आ जाये, उसका यह आग्रह मुझे उचित लगता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८२) से।

२९६ पत्र : वनमाला एन० परीखको

२६ जून, १९३५

चि० वनमाला,

अब तेरा शरीर ठीक हो गया है तो उसे ऐसा ही बनाये रखने का प्रयत्न करना। यदि नमक और दाल छोडने से तुझे लाभ हुआ हो तो उन्हें न लेने पर दृढ बनी रहना। जिससे शरीर स्वस्थ रहता हो, ऐसे ही भोजनसे जितना स्वाद चाहिए प्राप्त कर लेना।

हस्तलिखित पत्रिकासे तुम सबका क्या लाभ होगा, मैं समझ ही नहीं सका, तो फिर मेरे आशीर्वादकी क्या कीमत है? फिर भी हो सकता है, उससे तुम्हें कुछ निर्दोष आनन्द प्राप्त हो। अत, आशीर्वाद चाहिए ही, तो लो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ५७८८) से। सी० डब्ल्यू० ३००७ से भी, सौजन्य वनमाला एम० देसाई

२९७. पत्र : जेठालाल गो० सम्पतको

२६ जून, १९३५

भाई जेठालाल,

'सत्यानाशी'[1] से सम्बन्धित जानकारी 'हरिजनबन्धु' में भेजी है। मैंने तेलके बीजोंकी जाँच कर ली है। तलवाके बीजोंकी खोज करूँगा और मिले तो तेल भी निकालूँगा। तुम्हारे दूसरे पत्रकी राह देखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री जेठालाल गोविन्दजी
अनन्तपुर
डाकखाना रेहली
जिला सागर

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८५२) से, सौजन्य : नारायण जेठालाल सम्पत

२९८. पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
२७ जून, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालको सारे पत्र यदि तुम्हारी मार्फत भेजता हूँ तो इसमें एक प्रयोजन है। प्रयोजन यह है कि तुम खान-पीनके काममें हिस्सा न बँटाओ तो भी इससे तुम्हें यह जाननेका मौका मिलेगा कि उसके साथ तुम्हें कैसा सम्बन्ध रखना चाहिए। हरिलालको लिखे मेरे पत्रोंसे तुम देखोगे कि यह प्रश्न मेरे लिए बहुत महत्त्वका हो गया है। लेकिन इन पत्रोंको पढ़नेके बावजूद हरिलालके सम्बन्धमें तुम्हारे मनपर जो छाप पड़े तुम तो उसीके मुताबिक बरताव करना। अगर तुम्हें उसको खिलाना-पिलाना पड़ता हो तो तुम चाहो तो उससे कोई ऐसा काम लो जिसमें किसी तरहका खतरा न हो। लेकिन ऐसा न समझना कि तुम्हें उससे कोई-न-कोई काम लेना ही है या उसके साथ सम्बन्ध रखना ही है। रक्त-सम्बन्धकी भी मर्यादा होती है। यह सम्बन्ध हमें अनीतिकी ओर प्रवृत्त करे, यह नहीं होने देना चाहिए। यदि कोई पराया आदमी हरिलालकी

१. एक वनस्पति। यह "दारूडी" शीर्षकसे ३०-६-१९३५ के *हरिजनबन्धु* में प्रकाशित हुआ था।

स्थितिमे पड़ जाये तो उसके प्रति हमारा जो धर्म होगा, हरिलालके प्रति भी उससे कुछ अधिक करनेका धर्म नही हो सकता। बल्कि परायेके प्रति शायद कुछ अधिक उदारता दिखाई जा सकती है लेकिन हरिलालके प्रति कृपणता ही। मतलब यह कि जहाँ जितना अधिक रक्त-सम्बन्ध हो, वहाँ सख्ती भी उतनी ही अधिक बरती जानी चाहिए। ऐसा करके ही हम शुद्ध न्याय कर सकते है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एम० एम० यू० / २) से। सी० डब्ल्यू० ८४५६ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी

२९९. पत्र : काकुभाईको

२७ जून, १९३५

भाई काकुभाई,

खादी-प्रतिष्ठानमे रहनेवाले रतुभाई आदि कार्यकर्त्ताओंका कहना है कि तुमने उन्हे आश्वासन दिया था कि खर्चमे की जानेवाली कटौतीके कारण किसी भी कार्यकर्त्ताकी छँटनी नही की जायगी। क्या तुमने किसीको ऐसा आश्वासन दिया था? इन लोगोने ऐसा ही कहा है और छपवाया भी है। मैने तुमसे यह प्रश्न इसलिए पूछा है कि नयी नीतिके कारण भण्डार [के काम] मे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन तो करने ही पडेगे।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

३००. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

२७ जून, १९३५

भाई विट्ठलदास,

तुम्हारा पत्र मिला। अभी गणात्राको नोटिस मत देना। टाइपिंगकी जरूरत न हो तो उससे टाइपिंगके सिवाय जो काम लेना हो, सो लेना। टाइपिंगका काम भी हो तो अवश्य लेना। दूसरे परिवर्तनोंके सम्बन्धमे भी अपनी ही ढीलके कारण ढील समझना। ऐसे परिवर्तन जो मुझे सूझेंगे, तो शकरलालसे पत्र-व्यवहार करके भी किये जा सकेंगे। जमनालालजी तो ७ तारीखको आ ही जायेंगे। अतः सब-कुछ तुम्हारी सुविधापर ही निर्भर करता है। मेरा झुकाव खासी कटौतीके पक्षमे है। इसलिए इस सम्बन्धमे मैं तुम्हारी पूरी मदद करूँगा।

१ साधन-सूत्रमें पत्र अधूरा है।

हेमप्रभादेवीका आरोप है कि तुमने उनके पाससे खादी प्रतिष्ठानका माल लेना मंजूर किया था और फिर इनकार कर दिया। यह प्रश्न मैंने पहले भी पूछा था किन्तु इसका उत्तर देना, लगता है, तुम भूल ही गये।

ठाकरलालकी तबीयत खराब है, इसलिए मेरी इच्छा है कि जबतक बने वह ऊटीमें ही रहें। अतः उन्हें जल्दी वापस बुलाने का लोभ मत करना। जैसे-तैसे काम चलाना हमारा कर्त्तव्य है।

साथका पत्र काकूभाईको[1] भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७९२) से।

३०१ पत्र: वल्लभभाई पटेलको

२७ जून, १९३५

भाई वल्लभभाई,

महादेव वहाँ हो या न हो, इसलिए तुम्हें ही लिखवाया है। मुझे विवरण[2] मिल गया और मैंने पढ़ लिया। मैं दूसरी डाकका इन्तजार कर रहा था किन्तु वह भी नहीं आई। बा भी पत्र लेकर नहीं आई इसलिए बादमें तार दिया।

मुझे विवरण जरा भी पसन्द नहीं आया। उसमें केवल तथ्य न देकर हकीकतों और दलीलोंको मिला दिया गया है। पहला अनुच्छेद ही अटपटा लगा, इसलिए मैंने तार दिया। अभी यानी ८ बजे डाक मिली और मैं यह लिखवा रहा हूँ। मैं देखता हूँ कि हमारी समिति नियुक्त करने की बात तुम्हें पसन्द आई है। इसमें मुझे प्रसन्नता हुई, क्योंकि मैं मानता हूँ कि यह समिति हमें काफी मदद दे सकती है। डाक्टरोंकी राय तो स्वतन्त्र मानी ही जायेगी। बात तुम्हारे गले उतर गई है, इसलिए अधिक लिखने की जरूरत नहीं रह जाती। जो बयान तैयार हो, उसे मेरे देख लेनेके बाद ही भेजा जाये तो अच्छा होगा।

महादेवके पास सारी तफसीलें आ गई हों, तो बयान भले यहाँ तैयार करवा सकते हैं अथवा महादेवको एक दिन और रोकने की जरूरत मालूम हो तो रोक लेना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७४

१ देखिए पिछला शीर्षक।
२ बोरसद प्लेग निवारण कार्य-सम्बन्धी।

३०२ पत्र एफ० मेरी बारको

वर्धा
२८ जून, १९३५

चि० मेरी,

ईश्वरका धन्यवाद, कुत्ता आखिर मिल ही गया।[1] क्या तुम कोई और चीज भी यहां छोड़ गई थीं? छोटेलाल बुधवारको वापस आये हैं। अगर तुम्हारा स्वास्थ्य वहाँ सुधर रहा हो, खाने पीनेका ठीक प्रबन्ध हो और किसी व्यक्तिको कोई कष्ट दिये बिना अगर तुम वहां ठहरी रह सकती हो तो तुम कुछ दिन और वहीं रहो, ताकि पूरी तरह स्वस्थ हो जाओ।

मेरी चेजलीका विचार है कि वह ७ जुलाई या उसके आसपास यहाँ आयेगी और कुमारी इथमको[2] भी साथ लायेगी।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च]

मैं जो तुम्हें प्रायः लिखता रहता हूँ वह इसलिए कि तुम्हारे पत्रोंमें जवाब देने योग्य बातें रहती हैं।

अंग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ६०५०) से। सी० डब्ल्यू० ३३८० से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

३०३. पत्र : नारायणदास रतनमल मलकानीको

२८ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

साथमें 'हरिजन'के एक ग्राहकका दिया यह पहला दान भेज रहा हूँ। तुम्हें 'हरिजन'में प्रकाशनके लिए दाताओंकी सूची मुझे हर हफ्ते भेजते रहना चाहिए।

श्रीयुत जुगलकिशोरने[3] मुझे एक बड़ा अच्छा लम्बा पत्र भेजा है। वे शीघ्र ही अच्छा खासा दान देनेवाले हैं।[4] कोषके सम्बन्धमें नामका उपयोग करना बन्द

१ देखिए "पत्र : एफ० मेरी बारको", २६-६-१९३५।

२ मेरी इथम, मेरी चेजलेके निमन्त्रणपर ग्राम-सेवाका कार्य करने के लिए इंग्लैण्डसे आई थीं।

३ जुगलकिशोर बिड़ला।

४ यहाँ साधन-सूत्रमें कुछ भूल जान पड़ती है, जिसे सुधारकर अनुवाद किया गया है।

कर दो और उसके लिए, जैसा मैंने किया है, उसी तरह सिर्फ हरिजन कूप-कोष नामका इस्तेमाल करो।

बापू

संलग्न पत्र १ (चेक)

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६२) से।

३०४ पत्र : लीलावती आसरको

दुबारा नहीं पढ़ा

२८ जून, १९३५

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तू थोड़ा धीरज धर। सब व्यवस्थित हो जायेगा, तब नियमपूर्वक काम चलेगा।

अब तुझे हफ्तेमें एक पत्र लिखना चाहिए। तेरे मनमें आये तो, दो पाठ भी लिख सकती है, एक गुजरातीका और एक अंग्रेजीका। लेकिन वहाँ से रवाना एक ही दिन करना, जिससे टिकटकी बचत हो। तेरा पत्र आने के बाद तीन दिनकी अवधि मगनभाईको और मुझे चाहिए, इससे तू डाकका अन्दाज कर सकती है। यहाँ यदि तेरा पत्र पहुँचने का दिन हमेशा एक हुआ, तो तुझे डाक मिलने का दिन भी हमेशा एक रहेगा।

यदि वजन बढ़ने के साथ-साथ शक्ति भी बढ़ती जाये तो वजन बढ़ने से घबराना नहीं चाहिए। तेरा वजन आसानीसे ११० पौंड हो सकता है।

मेरा लेख[1] तू ठीक समझी है। बालविधवाएँ समाजके दबावमें पड़कर संयम पालने का प्रयत्न करें, इसकी अपेक्षा उन्हें पुनर्विवाह करने को प्रेरित किया जाये, यह मैं ज्यादा ठीक मानता हूँ। जिनमें तीव्र वैराग्य होगा वे तो मना ही करेंगी, और उनका वैधव्य उन्हें शोभा देगा।

अंग्रेजी पुस्तकोंमें तू अभी 'नेलसन रीडर' लेना। उसमें से हर हफ्ते १५ पंक्तियाँ सुन्दरसे-सुन्दर अक्षरोंमें लिख भेजना और उनका तर्जुमा भी सुन्दरसे-सुन्दर अक्षरोंमें लिख भेजना। कागज एक ही आकारके लेना, जिससे अन्तमें तू उन्हें सीकर अपने पास रख सके।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५७५) से। सी० डब्ल्यू० ६५४७ से भी, सौजन्य : लीलावती आसर

१ देखिए "टिप्पणियाँ", २२-६-१९३५।

३०५ पत्र नवीन गाधीको

२८ जून, १९३५

चि० नवीन,

तेरा पत्र मिला। तेरी पढ़ने की अभिलाषाका मै स्तुत्य मानता हूँ। किन्तु मुझ भय है कि मै इस मामलेमे तेरी कोइ सहायता नही कर सकूगा। मै तुझे जितना भी समय दूगा, वह मुझे कम ही लगेगा और ऐसी स्थितिमे ता 'न घरके रहे न घाटके' वाली कहावत चरितार्थ होगी। अत या ता तू अहमदाबादके विनयमन्दिरमें दाखिल हो जा या फिर राजकोट अथवा भावनगरके हाईस्कूलमे। तेरे हाईस्कूलमे जानेकी बात मुझे नही सुहाती, किन्तु मै तेरी लालसाको तुष्ट करना चाहता ह। इसक अतिरिक्त मुझे और कोई रास्ता नजर नही आता। यदि तू मेरे पास आ जाये ता अग्रेजी और गणित पक्का करने में मै तेरी यथाशक्ति सहायता करूँगा किन्तु मुझपर किसी तरहकी शर्त नहीं थोपी जा सकती। मुख्य वस्तु तो यहाँका काय है, अर्थात् सेवा मानकर ही जो-कुछ किया जा सके सो करना। तेरा मेरे पास रहना ही सर्वोत्तम है। मुझे यही पसन्द भी है किन्तु मेरे पास रहनेका मतलब है — सेवाधर्म सीखना और उसमें प्रगति करना। यहाँतक कि ज्ञान-वृद्धि भी उसीके लिए करनी चाहिए।

मुझे निःसकोच लिखता रह। यदि तू मुझे लिखेगा तो मै तेरा पथ-प्रदर्शन करनेका प्रयत्न करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

३०६ श्रमयज्ञ

'गीता' में कहा है, "आरम्भमें यज्ञके साथ-साथ प्रजाका उत्पन्न करके ब्रह्माने उनसे कहा, 'इस यज्ञके द्वारा तुम्हारी समृद्धि हो, यह यज्ञ तुम्हारी कामधेनु हो।' जो इस यज्ञको किये बिना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है।" और बाइबिलका वचन है "तू अपने पसीनेकी कमाई खा।" यज्ञ अनेक प्रकारके हो सकते है। उनमे एक श्रमयज्ञ भी हो सकता है। यदि सब लोग अपनी रोटीके लिए ही परिश्रम करे और उससे अधिक अर्जित न करे, तो दुनियामे अन्नकी कमी न रहे, और सबका अवकाशका काफी समय भी मिले। न तब किसीको जनसंख्याकी वृद्धिकी शिकायत रहे, न कोई बीमारी आये, और न मनुष्यको कोई कष्ट या क्लेश ही सताये। यह श्रम उच्चसे-उच्च प्रकारका यज्ञ होगा। इसमे सन्देह नही कि मनुष्य अपने शरीर या

बुद्धिके द्वारा और भी अनेक काम करेंगे, पर उनका वह सब श्रम लोक-कल्याणके लिए किया गया प्रेममूलक श्रम होगा। उस स्थितिमें न कोई राव होगा न कोई रक, न कोई ऊँच होगा न कोई नीच, न कोई स्पृश्य रहेगा न कोई अस्पृश्य।

'भले ही यह एक अलभ्य आदर्श हो, पर इस कारण हमें अपना प्रयत्न बन्द कर देनेकी जरूरत नही। यज्ञके सम्पूर्ण नियमको — और याद रहे कि यह हमारे जीवनका मूलभूत नियम है — पूरा किये बिना भी अगर हम अपने नित्यके निर्वाहके लिए पर्याप्त शारीरिक श्रम करेंगे तो उस आदर्शके बहुत-कुछ निकट तो हम पहुँच ही जायेंगे।

यदि हम ऐसा करेंगे तो हमारी आवश्यकताएँ बहुत कम हो जायेंगी, और हमारा भोजन भी सादा बन जायेगा। तब हम जीनेके लिए खायेंगे, न कि खानेके लिए जियेंगे। इस बातकी यथार्थतामें जिसे शका हो, वह अपने परिश्रमकी कमाई खानेका प्रयत्न करे। अपने पसीनेकी कमाई खानेमें उसे स्वाद ही कुछ और मिलेगा, उसका स्वास्थ्य भी सुधर जायेगा, और उसे यह मालूम हो जायेगा कि जो बहुत-सी विलासकी चीजें उसने अपने ऊपर लाद रखी थी, वे सब बिलकुल फिजूल थी।

मनुष्य अपने बौद्धिक श्रमकी कमाई क्यों न खाये? नही, यह ठीक नही है। शरीरकी आवश्यकताओकी पूर्ति शारीरिक श्रमसे ही होनी चाहिए। बाइबिलका यह वचन कि "सीजरका प्राप्य सीजरको दीजिए" कदाचित् इस सन्दर्भमें भी सही लागू पडता है।

केवल मस्तिष्कका, अर्थात् बौद्धिक श्रम तो आत्माके लिए है, और उससे मिलनेवाला सन्तोष भी उसके बाहर नही, उसीमें मिल जाता है। उसमें पारिश्रमिक मिलने की इच्छा नही करनी चाहिए। आदर्श राज्यमें डॉक्टर, वकील आदि समाजके हितके लिए ही काम करेंगे, अपने लिए नही। शारीरिक श्रमके नियमपर चलने से समाजमें एक शान्तिमय क्रान्ति पैदा होगी। अस्तित्वके निमित्त सघर्षके स्थानपर पारस्परिक सेवाकी प्रतिस्पर्धा स्थापित करने में मनुष्यकी विजय होगी। पाशविक नियमका स्थान मानवी नियम ले लेगा।

ग्रामोकी ओर जानेका अर्थ यह है कि निश्चित रीतिसे शरीर-श्रमके धर्मको, उसके सारे फलितार्थोंके साथ, स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लिया जाये। आलोचक इस पर यह कहते हैं कि "करोडो भारतवासी आज गाँवोमें ही तो रहते है, तो भी उन बेचारोको वहाँ पेटभर भोजन नसीब नही होता, और भूखो मर रहे हैं।" बात तो यह बिलकुल सत्य है। सद्भाग्यसे हम यह जानते हैं कि वे इस नियमका पालन वहाँ स्वेच्छासे नही कर रहे हैं। अगर उनकी चले तो ऐसा शारीरिक श्रम वे कभी न करे, बल्कि वे किसी नजदीकी शहरकी ओर निकल भागे और वहाँ जगह मिल जाये तो वही बस जाये। मालिकका हुक्म जब जबदस्ती बजाया जाता है, तब उसे परवशता या दासताकी स्थिति कहते हैं। ओर पिताकी आज्ञाका जब स्वेच्छासे पालन किया जाता है, तब वह आज्ञा-पालन पुत्रत्वका गौरव है। इसी तरह शरीर-श्रमके नियमका जब विवशतासे पालन किया जाता है तब उससे दरिद्रता, रोग और असन्तोष उत्पन्न होता है। यह गुलामीकी अवस्था है। उसका स्वेच्छासे पालन किया

जायेगा, तब उससे अवश्य ही सन्तोष और आरोग्यका लाभ होगा। और आरोग्य ही तो सच्चा धन है। चाँदी-सोनेके ये टुकडे सच्ची सम्पत्ति नही है। ग्रामोद्योग सघ इसी स्वेच्छामूलक शारीरिक श्रमकी दिशामे एक प्रयोग

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २९-६-१९३५

३०७. चरखेमे सुधार

सावली खादीका एक अच्छा उत्पत्ति-केन्द्र है। वहा जाच-पडताल करनेपर यह मालूम हुआ है कि कतैया औसतन एक घटेमे एक पाईसे अधिक नही कमाता। सद्भाग्यसे या तो उसकी कमाईके कुछ अन्य साधन है, या उसके कुटुम्बके दूसरे लोग अधिक कमाईका कोई दूसरा धन्धा करते है। लेकिन इतने ज्ञानसे सन्तोष मानकर बैठे रहना खादी-सेवकको नही पुसा सकता। उसे ऐसे उपाय सोचने चाहिए जिनसे कतैया अधिक पैसा कमा सके। इसके तीन माग है — (१) मजदूरी अधिक देना और व्यापारकी खादीके दाम बढाना, (२) ओटनेवाले, धुननेवाले और बुननेवाले से कहा जाये कि वे अपनी कमाईमे से कुछ हिस्सा निकालकर कतैयेको दे दे, और (३) मौजूदा चरखेमे सुधार करना, तथा कतैयेको यह सिखाना कि वह कातनेमे ज्यादा सावधानी बरते।

यदि यह अन्तिम माग सम्भव न हो तो पहले दो मार्गोमे से एक-न-एक तो ग्रहण करना ही होगा। लेकिन मौजूदा चरखेमे और कतैयेकी पद्धतिमे सुधार अवश्य किया जा सकता है। किर्लोस्कर कम्पनीका प्रयत्न परीक्षामे अगर बिलकुल ठीक उतरा होता, तो कतैयेकी मजदूरी आसनीसे नौ पाईतक पहुँच जाती। पर ऐसा नही हुआ। चरखा सघके पास जितने चरखे आये थे, उनमे किर्लोस्कर कम्पनीका चरखा सवश्रेष्ठ था, लेकिन परीक्षकोने गावोकी झोपडियोकी दृष्टिसे जो कसौटी रखी थी, उसपर वह ठीक-ठीक नही उतर सका। वह चरखा मोजूदा चरखोका स्थान नही ले सका। हमे आशा है कि किर्लोस्कर कम्पनी या दूसरे अन्वेषक इस प्रयत्नको छोड नही देगे। पारितोषिक यद्यपि हटा लिया गया है, तो भी मुझे इसमे सन्देह नही कि अगर कोई भी अच्छा प्रयास होगा तो सघ उसकी परीक्षा करने के लिए हमेशा तैयार रहेगा, और अगर वह चरखा सचमुच छोटा और चलनेमे हल्का हुआ तो उसपर पूरा पारितोषिक दिया जायेगा। किन्तु उस सुन्दर दिवसके आनेतक — और कहा नही जा सकता कि वह कभी आयेगा भी या नही — हमे इस मौजूदा चरखेमे अवश्य सुधार करना चाहिए। श्री शकरलाल बैंकर तकुएकी गतिकी तरफ अपना सारा ध्यान दे रहे है। यह एक आवश्यक सुधार है। यह मालूम हुआ है कि चरखेके एक पहियेको एक बार घुमाने से तकुएके बहुत कम — सिफ ३५ — चक्कर होते है। नतीजा यह आया है कि घटेमे औसतन सौ गज सूत निकल जाये तो निकल

जाये, डेढ सौ से अधिक तो निकल ही नही सकता। अधिकसे-अधिक गति ८०० गजतक पहुँची है। अगर तकुएके वेगमे सुधार हो जाये, तो सूतका औसत और मजदूरी आसानीसे दूनी हो सकती है। पतला तकुआ और पतली माल काममे लाने से तथा तकुएकी गर्रीका घेरा कम कर देने से यह हो सकता है। सुधार आसानीसे किस प्रकार हो सकते है, इसके ये तो केवल यहा दृष्टान्त दिये गये है।

लेकिन जबतक खादी-सेवक कताई-शास्त्रमे कुशल नही बनेगे तबतक कुछ भी सुधार नही हो सकता। उनमे शास्त्रीय तथा व्यावहारिक दोनो ही प्रकारका ज्ञान होना चाहिए। उन्हे मोजूदा चरखोकी अत्यन्त सादी बनावटका और उनके हरएक पुर्जेके उपयोगका अध्ययन करना चाहिए। उन्हे स्वय ओटने, धुनने और कातनेकी कलामे प्रवीण होना चाहिए। इसके अलावा उन्हे कतैयेके हितमे अधिकसे-अधिक दिलचस्पी लेनी चाहिए।

इसका मतलब यह हुआ कि खादी-सेवा सघकी रचना नये सिरेसे होनी चाहिए। यह काम जितनी जल्दी हो उससे हम सबको उतना ही लाभ होगा। हम जब यह जानते है कि कतैयेके काममे आसानीसे सुधार हो सकता हे, तब हमे उसके लापरवाहीसे किये हुए कामसे सतोष नही मानना चाहिए।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २९-६-१९३५

३०८. टिप्पणियाँ

जूएका व्यसन

बम्बईसे एक सज्जनने जूएकी बढती हुई बुराईके बारेमे एक करुणाजनक पत्र लिखा है। नीचे पत्रके महत्त्वपूण अशोका स्वतन्त्र अनुवाद दिया जा रहा है

> यह दुष्ट व्यसन जिस तरह गुजरातके गाय-जैसे भोले-भाले किसानोको चौपट कर रहा हे, उसी तरह इसने अच्छे-अच्छे पदवीधारियो, बैरिस्टरो, डॉक्टरो व्यापारियो और राष्ट्रीय चरित्र और नीतिके पहरेदार अध्यापकोतक पर अपना मायाजाल फैला रखा है। सुनते है कि खुद पुलिस-विभागतक के आदमी इस बुराईमे फँसे हुए हैं। स्त्रियो और सुकुमार वयके बच्चोको तथा अधे भिखारियोको भी यह निगोडी लत लग गई है। और यहाके अखबार भी इस दुष्ट व्यसनकी विज्ञापनबाजीपर पनप रहे है। कुछ सुधारक इस दिशामे प्रयत्न कर भी रहे हैं, पर कोई असर नही हो रहा है। दिन-दिन बढती हुई गरीबी ओर तज्जनित बेकारी ही क्या इसका कारण नही है?

मेरा ऐसा खयाल नही है। इसमे सन्देह नही कि जूएके प्रचारमे बेकारीसे उत्तेजन मिलता है। पर इसके कारण कुछ और भी गहरे होने चाहिए। जूएके इस

विकट जालमें जो तमाम वर्गोंके लोग फँसे हुए हैं, इस बातसे ही हमें सतर्क हो जाना चाहिए, और इस व्यसनके कारणोंकी खोज ज्यादा गहराईसे करनी चाहिए।

शक्कर बनाम गुड

शक्करकी तुलनामें गुड आहार-शास्त्रकी दृष्टिसे ज्यादा अच्छा है, इसके पक्षमें नये-नये प्रमाण मिलते ही जा रहे हैं। श्री शकरलाल बैंकरने, जो आजकल ऊटीके आसपासके इलाकेमें घूम रहे हैं, अपने एक रसायनशास्त्री मित्र द्वारा तैयार की गई नीचे दी जा रही तालिका भेजी है। इस तालिकामें उक्त रसायनशास्त्रीको शक्कर और गुडके जो भी नमूने विश्लेषणके लिए सौंपे गये थे, उनमें से हर किलोग्राममें कितना मिलिग्राम ताँबेका अंश प्राप्त हुआ, यह बताया गया है

सिंगनेल्लूर शक्कर	०.६१
अस्का शक्कर	१.९३
गुड अनकापल्ली	७.४८
गुड सिंगनेल्लूर	७.६७
छोआ	५.७
मिसरी (गन्नेकी)	४.९८
मिसरी (ताडकी)	७.४०

इस तरह गुडके स्थानपर शक्करका उपयोग पैसेकी दोहरी बरबादी है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २९-६-१९३५

३०९ पत्र एफ० मेरी बारको

वर्धा
२९ जून, १९३५

चि० मेरी,[1]

लगता है कि तुम वहाँ काफी लम्बे असतक रहोगी। पर तुम वहाँ जितना जरूरी है, उतना अवश्य रहना।

वहाँ मौसम कैसा है? तुम्हारे वार्डमें कुल कितने लोग हैं?

एक-दूसरेके बिस्तरोंके बीच कितना फासला है?

खानेके लिए वे तुम्हें क्या देते हैं?

सस्नेह,

बापूके आशीर्वाद[2]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५१) से। सी० डब्ल्यू० ३३८१ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१ और २ सम्बोधन और हस्ताक्षर हिन्दीमें हैं।

३१० पत्र . बलीबहन एम० अडालजाको

२९ जून, १९३५

चि० बली,

तेरे दोनो पत्र मिले। तू धीरज धारण करके बैठी रह। अन्तमे सत्य अवश्य प्रकट होगा। हरिलाल सभी मर्यादाएँ तोड रहा है। तुझे जवाब देनेकी कोई जरूरत नही है। वह जो-कुछ करे, वकीलकी माफत उससे अपना बचाव अवश्य करना। उसके कारनामोका बुरी तरह भडाफोड करने का तुझे पूरा अधिकार है। दबनेकी कोई जरूरत नही है, न एक भी पैसा उसे देना चाहिए। मै तो उसे लिख ही रहा हूँ। नोटिस वापस भेज रहा हूँ, और जो पत्र तूने वापस माँगा है, वह भी।

बा कल दिल्ली जा रही है । लक्ष्मीकी प्रसूति होनेवाली है इसलिए उसने मनुको बुलाया है। मनु स्वय ही जाना चाहती है, सो जाने दे रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५०५१) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

३११ पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

वर्धा
३० जून, १९३५

प्रिय चार्ली,

अन्य कागजोके साथ तुम्हारे पत्र ठीक वक्तपर मिल गये है। इस बारेमे मै अगाथाको कुछ नही लिखगा। उसके पत्रका यह वाक्य तुम्हे याद होगा — "हम चाहते है कि महात्माजी द्वन्द्वसे ऊपर रहे। क्या मेरा यह सोचना सही है कि पिछले वषकी घटनाओने उन्हें कमजोर कर दिया है?" अगर तुम समझते हो कि घटनाओसे मै कमजोर नही हुआ और मै द्वन्द्वसे परे बना हूँ तो मेरी ओरसे तुम उसे आश्वस्त करो और कहो कि मै "पूरी परिस्थितिसे निराश नही हूँ।" हाँ, रेतकी नीवपर आशाके किले नही बनाता। विश्वासकी चट्टानपर स्थित सत्य ही प्रतिकूल लहरोमे भी अडिग खडा रहता है। किसी भारतीयके इग्लैण्ड जानेकी बातको लेकर मेरे मनमे कोई बडा उत्साह नही है,[1] तो मेरे पास इसके कुछ बडे ही ठोस कारण है। जो श्रेष्ठ लोग हमारे

१ देखिए "पत्र अगाथा हैरिसनको", १५ १९३५।

बीचमे है, उनके लिए यहाँ जरूरतसे ज्यादा काम पडा हुआ है और मेरे मनमे यह बात बिलकुल साफ हे कि जब हम यहाका अपना काम ठीक तरहसे सम्पन्न कर लेगे तब इग्लैण्ड और भारतके बीच सच्ची मित्रता कायम हो जायेगी। वे भारतीय, जो अहिसामे विश्वास करते है, जबतक इस बातको प्रमाणित नही कर देते कि राजनीतिक रूपसे जाग्रत भारतीयोके मनमे अग्रेजोके प्रति घृणा नही है और उनके मनमे उत्कट प्रेम न सही, पर एक सद्भावनाका भाव अवश्य है, तबतक उन्हे इग्लैण्ड कदापि नही जाना चाहिए। आज राजगोपालाचारी इस बातको प्रमाणित नही कर सकते। और इस बातसे क्या फायदा कि वे अग्रेजोके पास जाकर यह कहे कि तुम अपने कर्त्तव्यका पालन करो, जबकि भारतीय मनकी उच्चादर्शहीन प्रवृत्तिसे मुक्ति नही प्राप्त कर सकते और शेष मानवताकी तरह उनसे घृणा करते है, जो उनकी समझमे उनके दुखके कारण है? तुम मेरी बात ठीकसे समझ रहे हो न? मै अगाथाके पत्रमे लिखे सिफ एक वाक्यका उत्तर इतने विस्तारसे इसलिए लिखा रहा हूँ कि मै उसके मनकी पीडाको महसूस करता हूँ और उसे तथा उन सबको, जो उसीकी तरह महसूस करते है, कुछ सुकून देना चाहता हूँ।

शिमलाकी घटनाको तुम्हे शायद कुछ और दिनोतक बर्दाश्त करना पडे। लेकिन अगर कोई तुम्हारी निन्दा करता है तो उससे तुम्हारा क्या बिगडता है? तुमने ठीक बात कही[1] और तुम्हारे सन्तोषके लिए इतना काफी है।

तुम्हारे पत्रके शेष अश तथा साथ भेजे गये कागजोके बारेमे मेरा खयाल है, तुम उत्तरकी अपेक्षा नही रखते। उम्मीद है कि खम्भाताका स्वास्थ्य निरन्तर सुधर रहा होगा। उसने अस्पतालके प्रबन्धके सम्बन्धमे जो शिकायत की है, उसकी जाँच-पडताल करना।

एक चीज जरूर कहना चाहता हूँ। अगाथाके पत्रकी वजहसे तुम अपना कार्यक्रम मत बदलना। जो होता है सो हो। जिस तरहका कठिन परिश्रम अगाथा कर रही है, उसे देखते हुए यह इच्छा करना ठीक ही है कि उसे कुछ राहत दी जाये। लेकिन यह तो तुम्हारे वहाँ पहुँचनेपर ही हो सकता है। फिलहाल तो उससे कहो कि इतनी जल्दी न मचाये और व्यथकी चिन्ता न करे।

तुम सबको स्नेह।

मोहन

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९८९) से।

१ अगाथा हैरिसनको लिखे अपने ७ जूनके पत्रमें सी० एफ० एन्ड्रयूजने क्वेटाके भूकम्पपर "अखबारोंको जारी की गई सरकारी विज्ञप्तियोंमें प्रजातिगत भेद भाव" का उल्लेख करते हुए कहा था कि " अखबार मृत, घायल या बच निकलनेवाले अंग्रेजोंके नामोंसे भरे पड़े थे, और भारतीय सिविल अधिकारियों तकके नाम नहीं दिये गये थे। शिमलाका वातावरण विद्युतवत् था। उनके मस्तिष्कमें तनिक भी सामान्य बुद्धि नहीं दिखाई देती। वे इस भ्रामक विश्वासमें पड़े हुए है कि भारत भरके सारे भारतीय, जो कुछ हुआ है, उसपर खुश है और सिर्फ एक ही व्यक्ति परेशान है और प्रजातिगत भावनाको भड़का रहा है — वह है सी० एफ० एन्डयूज।" (चार्ल्स फ्रीअर एन्ड्रयूज, पृ० २८२)

३१२ पत्र : हीरालाल शर्माको

३० जून, १९३५

चि० शर्मा,

तुम्हारे दो खत मिले। कोनसलके पास विजाकी तजवीज चल रही है। इसीके लिए तुम्हारे कलकत्ता जाना नहीं होगा, ऐसी मेरी उम्मीद है। डा० कैलोगका उत्तर नहीं आया है। आना चाहिये था। मैं दूसरी तजवीज करूंगा। श्री प० के खतमें कुछ है नहीं। मैंने उसको लिखा है कि उसके खतपर मैं कोई ध्यान नहीं दे सकता हूं मैंने इसमेंसे कोई चीजपर वजन नहीं दिया है। इसलिए तुमको भी इस बारेमें कुछ नहीं लिखा।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७२-७३

३१३. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

वर्धा
१ जुलाई, १९३५

चि० अम्बुजम्,

विवाह निर्विघ्न सम्पन्न हो और कृष्णस्वामी तथा उसकी पत्नीको सुखी और सेवामय सुदीर्घ जीवन प्राप्त हो। आशा है, शनिवारतक किचीकी उँगली बिलकुल ठीक हो जायेगी।

कुआ-कोषके बारेमें कोई जल्दी नहीं है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०२) से, सौजन्य एस० अम्बुजम्माल

३१४ पत्र : क० मा० मुशीको

१ जुलाई, १९३५

भाईश्री मुशी,

यदि प्रेमचन्दजी को कीर्तिक (गुडविल)के लिए कुछ देना पडे[1] तो मै व्यक्तिगत रूपसे स्वतन्त्र पत्र निकालना पसन्द करूगा। हिन्दी लेखक तो हमे मिल ही जायेंगे।

यदि प्रेमचन्दजी सेवा-भावसे इस कामको हाथमे ले तभी हम उन्हे निबाह सकते है। हमे उतावली नही करनी चाहिए। जब निणय हो जायेगा तभी हम गुरुदेवसे भिक्षा मॉगेगे। मुझे स्वय तो उन्हे लिखते हुए सकोच होता है क्योकि उनकी इच्छा न होनेपर शायद लिहाजकी वजहसे [वे लिखनेको तैयार हो जाये]। किन्तु समय आनेपर मै महादेवसे लिखवा दूगा या फिर तुम लिख देना। तुम्हारे पत्रकमे मेरा नाम तो कही-न-कही रहेगा ही और उससे [मेरे द्वारा] निमन्त्रण दिये जानेका उद्देश्य पूरा हो जायेगा।

आशा है, पचगनीमे रहने से तुम्हे फायदा पहुँचा होगा।

'हस' का प्रकाशन शुरू करने से पहले पैसेकी व्यवस्था कर लेना भी आवश्यक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५७६) से, सौजन्य क० मा० मुशी

३१५. पत्र : नारणदास गाधीको

१ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालको लिखा मेरा पत्र[2] पढ लेना। उससे तुम शायद अपने कर्त्तव्यको समझ सकोगे। अभी मै आज्ञा देनेको तैयार नही हूँ, किन्तु मुझे लगता है कि बली,[3] कुमी[4] और मनु सही है। यदि तुम्हे ऐसा लगता हो कि वे गलती पर है तो मुझे

१ तात्पर्य प्रेमचन्द और क० मा० मुशीके सयुक्त सम्पादकत्व और स्वामित्वमें प्रकाशित होनेवाले हस नामक हिदी मासिकके कीर्तिकसे है।

२ यह पत्र उपलब्ध नही है, तथापि देखिए "पत्र वल्लभभाई पटेलको", ३-७-१९३५।

३ व ४ बली मणिलाल अडालजा और कुमी तुलसीदास मनियार, हरिलाल गाधीकी सालियाँ।

चेताना। यदि वे तुम्हे सही लगती हो ओर हरिलाल अपने दोष स्वीकार नही करता तो तुम उसे कदापि नही रख सकते। अब उसे किसी भी हालतमे सावजनिक कोषसे सहायताके रूपमे कुछ नही दिया जाना चाहिए। हा, वह काम करके अवश्य पा सकता है। इसमे मेरा सुझाव आ जाता है। इसपर विचार करके तुम्हारा मन जो कहे सो करना।

मैथ्यूका पत्र इसके साथ है। प्रेमाके पत्र ही ऐसे होते हैं कि उनके लिए उपयुक्त उत्तर सहज ही निकल आता है।

कारखाने (वकशाप)का क्या हुआ?

बापूके • आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५७ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

३१६ पत्र : हीरालाल शर्माको

१ जुलाई, १९३५

चि० शर्मा,

कलकत्तेसे खत आया है।[1] स्टीमर १० अगस्टके आसपास जायगी। लिखते हैं तुमारे दस-बार[2] दिन पहले जाना होगा। अमेरीकाके वीसाके बारेमे वे ठीक कर देगे। तुमारे पर वह छपा हुआ किसने भेजा था?[3] निश्चयसे खबर चार-पाच रोजमे आयगे।

दरीयाकी[4] परवा नही है, जाना कलकत्तेसे ही है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७२ और १७३ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१ शायद हीरालाल शर्माकी विदेश यात्राका खर्च उठानेवाले बिड़ला बन्धुओंका लिखा पत्र।

२ बारह।

३ हीरालाल शर्माके एक मित्रने उन्हें कलकत्ताके एक अखबारकी कतरन भेजी थी, जिसमें उनके विदेश यात्राके इरादेकी खबर छपी थी।

४ समुद्र।

३१७ पत्र जी० सीताराम शास्त्रीको

वर्धा
२ जुलाई, १९३५

प्रिय सीताराम शास्त्री,

लगता है, खादी सस्थानम्की रिपोर्टोमे कुछ नही होता, इसलिए आपको मेरी सलाह है कि आप हर महीने रिपोट न भेजे। रिपोट तभी भेजे जब जय या पराजयके अथमे उनमे कुछ नया या उल्लेखनीय हो। हर तफसीलकी ओर सावधानी पूवक ध्यान देनेसे ही उच्चस्तरकी काय-कुशलता आती है। किसी घडीकी यन्त्र-प्रणालीमे एक पेचके ढीलेपनसे भी सारा सन्तुलन उलट जाता है, तब फिर सोचिए कि मानसिक प्रक्रियापर यह बात कितनी अधिक लागू होती होगी। और मानसिक क्रियाका सही होना या उसका काय-कुशल होना इस बातपर निभर है कि हम अपने दैनिक जीवनमे कितने सही ढगसे अपना काम करते है।

अब अदला-बदलीके बारेमे ४५० रुपयेसे भी काम चलेगा। लेकिन राशिको सौ की गणनामे यानी ५०० क्यो न रखा जाये? मै समझता हूँ, स्वर्ण-पदक अनावश्यक है। पुरस्कार जीतनेवालेको सस्थानम्के खद्दरको चुननेकी छूट दी जा सकती है, लेकिन निर्णायक कोई अथशास्त्री होना चाहिए। इसलिए मै श्रीयुत कुमारप्पाका नाम सुझाता हूँ। मै नही समझता कि कई निर्णायकोकी जरूरत है। आप कोई और नाम भी तय कर सकते है। रामदास पन्तुलु शायद बेहतर नाम हो। प्रतियोगियोको अधिक सख्यामे आकृष्ट करनेकी दृष्टिसे नामके बारेमे सोचना शायद सार्थक हो सकता है। और अन्तमे, आप खुद कोई छोटा-सा नोट लिखकर भेज दे। फिर मै अपने ढगसे उसे सँवारकर प्रकाशित करूगा।

छठी भारत भाग्य यात्राका विवरण[1] मै नही छाप रहा हूँ। यह तो उसी पुरानी चीजकी पुनरावृत्ति होगी। लोगोके लिए इतना जान लेना ही काफी है कि यह विनय आश्रमका स्थायी अग बन गया है। अगर आपके पास काफी कायकर्त्ता हो, मै चाहूँगा कि आप कुछको गाँवोमे भेजिए — हर गाँवमे एकको। इससे कार्यकर्त्ताओमे जरूरत पडनेपर अपनी सूझ-बूझसे काम लेनेकी क्षमता और स्वावलम्बन आयेगा। इस तरह हमे तरह-तरहके अनुभव प्राप्त होगे। यह ग्रामोद्धार-कार्य अत्यन्त कठिन है। अगर आप 'हरिजन' के पृष्ठोको ध्यानसे पढते है तो यह बात समझते होगे।

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

१ जी० सीताराम शास्त्री द्वारा "ग्राम-सेवाके सन्देशके प्रचार" के लिए सगठित की गई काय कर्त्ताओंकी "तीर्थयात्रा"। पहली "यात्रा" २७ दिसम्बर, १९३४ से १३ जनवरी, १९३५ तक चली थी। "दूसरी तीर्थयात्रा" के विवरणके लिए देखिए खण्ड ६०, पृ० ३६०-६२।

३१८. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

दुबारा नहीं पढ़ा

२ जुलाई, १९३५

चि० नरहरि,

महादेव कल रात बम्बईके लिए रवाना हो गया। तुम्हारा पत्र मैं वहीं भेज रहा हूँ।

क्या तुम हरिसिंहके किसी सम्बन्धीको जानते हो? तुमने उसे खबर तो दी ही होगी? उसका अग्निसंस्कार तो किया ही गया होगा; उसमें कौन गया था? हरिसिंह कहाँ सोता था? क्या वह सोने लायक ठीक जगह है? वह खाटपर सोता था या जमीनपर? मैं तो यह मानता हूँ कि सभी आखिरी घड़ी आ जानेपर ही दम तोड़ते हैं किन्तु उस घड़ीका पहलेसे पता न चल पाने और मृत्यु अप्रिय होनेके कारण व्यक्तिका इलाज कराने के सिवा और कोई चारा नहीं है। इस दृष्टिसे विचार करें तो जब यह पता ही न चल पा रहा हो कि किसनें काटा है तब उसे साँपका डसा मानकर ही उपचार की व्यवस्था करनी चाहिए। उसे तुरन्त डॉक्टरके यहाँ तो ले जाया ही जा सकता है किन्तु यदि हम वैसा न करें तो बंध बाँधकर, जहाँ काटने का सन्देह हो, उस जगहपर नश्तरसे खून निकालकर उसमें परमेगनेट भरकर, गीली मिट्टी थोपकर और पीड़ितको जगाये रखकर उसका उपचार कर सकते हैं। मुँहमें अँगुली डालकर या नमक मिला गरम पानी पिलाकर उसे वमन भी कराया जा सकता है। यदि काफी मात्रामें नमक मिलाया जायेगा तो तुरन्त वमन हो जायेगा। इसके अतिरिक्त यदि कुछ अन्य उपाय भी हों तो उन्हें डॉक्टरसे जान लेना चाहिए।

भगवानजी से कहना कि उनका पत्र मिल गया है। उनके प्रश्न तो मुझे याद नहीं हैं, अतः वे पुनः लिखें।

बापूके आशीर्वाद

श्री नरहरि द्वा० परीख
हरिजन आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८३) से।

३१९ पत्र · शिवाभाई जी० पटेलको

मगनवाडी, वर्धा
२ जुलाई, १९३५

चि० शिवाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। लगता हे, शुरुआत तो अच्छी हुई है। मेरे विचारसे हमारे ग्रामोद्योगमे भैंस या भैंसके घीका कोई स्थान नही है। जो काम नियमित रूपसे चल ही रहे हैं उनमे हाथ डालने से भला क्या लाभ? हमे व्यापार तो करना ही नही है।

जो लोग गो-सेवाको अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझते है, वे भैंसका प्रचार कदापि नही करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९५१५) से। सी० डब्ल्यू० ४३१ से भी, सौजन्य शिवाभाई जी० पटेल

३२० पत्र वसुमती पण्डितको

२ जुलाई, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। तेरा वहाँ एक वर्षतक दृढतापूर्वक आसन जमाये रखना मुझे तो बहुत ही अच्छा लगा। यदि तेरा मन प्रफुल्लित होगा तो उसके साथ-साथ शरीर भी अपने-आप सुधरेगा और स्वस्थ रहेगा। जो काम तुझे सौंपा गया है, वह तो अच्छा ही है। तुझे अपनी रुचिके अनुसार कुछ-न-कुछ नया सीखते ही रहना चाहिए किन्तु अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखते हुए। आश्चर्यकी बात हे कि प्रभावती अबतक नही आई। साथका पत्र शिवाभाईको दे देना।[1] बा दिल्ली गई हे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०२) से। सी० डब्ल्यू० ६४८ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित

१ देखिए पिछला शीर्षक।

३२१ पत्र नारणदास गांधीको

२ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारे एक प्रश्नका उत्तर देना रह गया था।

वजुभाईने[१] जो लिखा है उसका उत्तर देना आवश्यक है या नही? फुरसत मिलनेपर मुझे तुम्हारा उत्तर अवश्य मिलना चाहिए। फिलहाल तो एक और विस्तृत लेख मुझे मिल गया है। उसे पढ लेनेके बाद मै तुम्हे भेजूगा। इसे पढकर दोनो लेखोके उत्तर मुझे भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५८ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

३२२. पत्र सतीशचन्द्र दासगुप्तको

वर्धा
३ जुलाई, १९३५

प्रिय सतीश बाबू,

यह पत्र मुझे बोलकर ही लिखवाना पडेगा, क्योकि बाये हाथसे मै इतना अधिक पत्र-व्यवहार नही निबटा सकता। साथमे दो पत्र भेज रहा हूँ। इनमे से एकमे जिन पुस्तकाके नाम दिये गये है, उन्हे क्या आप ढूढकर निकाल सकते है? और एक अमेरिकी पत्रिकासे नकल की गई फायर-प्रूफ प्रोसेसकी जाच क्या आप करेगे? उत्तर देते समय दोनो पत्र लौटा दे।

अब बडकामताके बारेमे जो यह छोटा-मोटा तूफान मचाया गया है, उसके सम्बन्धमे इस अभियानपर भी इतना जोर क्यो? क्या यह खादीकी भलाईके लिए है? मैने गुण-दोषोका विवेचन नही किया हे, हालाँकि जहातक खादी प्रतिष्ठानकी बिक्रीका सम्बन्ध है, मैने जेराजाणीको लिखा है। उसका उत्तर भी आ गया है, जो इस आशयका है कि जो-कुछ भी किया गया, विश्वनाथकी पूण स्वीकृतिसे किया गया।

१ वजुभाई शुक्ल, राजकोट राष्ट्रीय शालाम शिक्षक और जमनादास गांधीके सहयोगी।

बडकामताके बारेमे अन्नदा शकरलालको बहुत कटु पत्र भेजते रहे है। शकरलाल वे पत्र मुझे देते रहे है। उनका अध्ययन करने का समय मेरे पास नही है। मैने प्रफुल्लसे मामला तय कर देनेका अनुरोध किया। उनका यह तार आया है "हेमप्रभादेवी, सतीशबाबू से मिला। वे इन कदमोको उचित बताते है। इसलिए बडकामता प्रतियोगिता जारी रहेगी। हेमप्रभादेवीका रुख ऐसा था कि मुझे विस्तृत चर्चा करने की हिम्मत नही हुई।" क्या आप चाहते है कि मै सारे मामलेकी तहकीकात करू या अन्नदासे कोई समझौता कर लेगे?

श्रीयुत सतीशचन्द्र दासगुप्त
कलकत्ता

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

३२३ पत्र श्रीमती एस० श्रीनिवास अय्यगारको

३ जुलाई, १९३५

प्रिय बहन,

मै दाहिने हाथको आराम दे रहा हूँ, इसलिए बोलकर ही लिखाना पडेगा, क्योकि बाये हाथसे धीरे-धीरे ही काम हो सकता है। आगामी रविवार आपके लिए एक महान् दिन है। ईश्वर आपपर और आपके स्वजनोपर कृपा करे और वर-वधूका कल्याण करे। वह उसे स्वस्थ, शक्तिशाली और सेवामय दीघ जीवन दे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

मूल अग्रेजीसे अम्बुजम्माल पेपस, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

३२४ पत्र . नारणदास गांधीको

मगनवाडी
३ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

जेठालालका[1] पत्र काफी दिनोसे मेरे पास पडा हे, किन्तु मै उसे आज ही पढ पाया हूँ। उक्त पत्रकी नकले उसने वल्लभभाई आदिको भेजी है। उसने इसके पहले नानाभाईको पत्र लिखा था और नानाभाईने उसका पत्र मुझे भेज दिया था। नानाभाईने उसे जो उत्तर दिया था, लगता है, उसमें कही गलतफहमी हुई है। उसे मामलेको स्पष्ट कर देना चाहिए। जब उसका पत्र मुझे मिला तो मैंने जेठालालको लिख दिया कि वह जो लिखना चाहे सो लिख दे। उसके उत्तरमे साथका पत्र मिला हे। इसमे से बहुत सी बातोका उत्तर तो मै स्वय ही दे सकता हूँ किन्तु इतना काफी नही है। तुम्हारा आधिकारिक उत्तर मेरे पास होना चाहिए। अत वह भेज देना। हरिलालका पत्र कल मिला था। मै उससे कुछ समझ नही सका।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५९ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

३२५ पत्र · वल्लभभाई पटेलको

३ जुलाई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। महादेवने तुम्हे व्यथ ही घबराहटमे डाल दिया है और खुद भी घबरा रहा है। मैंने तो केवल हरिलाल गाधीको चेतावनी दी थी कि वह मेरे साथ दाव-पेच न खेले और यदि खेलेगा तो शायद मुझे खो बैठेगा। उसने दाव पेच खेला दीखता है, इसलिए लगता हे, वह स्वय ही चेत गया है। नारणदासका ऐसा पत्र आया है कि दो दिन हुए वह भाग गया हे। इसलिए यदि वह वापस न आया तो उसे भागे हुए आज पाच दिन हो गये। उसके भागने स मुझे जरा भी आघात नही पहुँच सकता। इस तरह भागदौड तो वह करता ही रहता था। उसके जीवनमे

१ जेठालाल जोशी, राज्य सभाके भूतपूर्व सदस्य तथा पहले राजकोट राष्ट्रीय शालाके शिक्षक।

परिवतनका कुछ आभास हुआ था। इसलिए मैंने उसके बारेमें आशा अवश्य बाँधी थी। परन्तु ढोंग कबतक चल सकता है? तुम बिलकुल निश्चिन्त रहो। मैं जल्दबाजीमें हर्गिज कदम नहीं उठाऊँगा। अब तो कोई कदम उठाने की बात भी नहीं रही। यों अन्य प्रकारसे स्वास्थ्य अच्छा ही है और काफी सावधानी बरतते हुए चल रहा हूँ। अन्तमें तो 'हरि करे सो होय।' जबतक उसे मुझसे सेवाकाय लेना है, तबतक कोई हानि नहीं होगी। और जब समय आ जायेगा, तब कोई भी उपाय काम नहीं देगा। हिन्दुस्तानका तो श्रेय ही है। मुझे कहीं भी निराशाका चिह्न नजर नहीं आता। ईश्वर सब अच्छा ही करेगा।

अच्छे हो जानेपर शायद यहीं मुकाम करना ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७५

३२६ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

३ जुलाई, १९३५

चि० नरहरि,

विद्यालयके सम्बन्धम तुम्हारा पत्र मैं पढ गया। जयाबहनको कितना वेतन दिया जाता है? हमारी शिक्षा-पद्धतिमें ऐसा कोई-न-कोई दोष अवश्य होगा जिसकी वजहसे हमारे यहाँ जो पच्चीस बहनें है, उनमें से तुम एकको भी प्रशिक्षित नहीं कर सके। और यदि ऐसा हो तो हम यह आशा कैसे कर सकते है कि ऐसी कोई बहन हमें बाहरसे मिल जायेगी जो हमारी शिक्षा-पद्धतिमें ठीक बैठ सके? मुझे तो लगता है कि हमने जैसा बोया है वैसा काटेंगे। तुम यह बिलकुल मत सोचना कि 'हम' में मैं स्वय अपनेको औपचारिकतावश गिनता हूँ। अपनी अपूर्णताको मैं अच्छी तरह समझता हूँ। मैं अपनेको शिक्षक तो मानता हूँ किन्तु 'निरस्त पादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते' की तरह। इतना लिखनेके बाद मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि जैसी बहन तुम चाहते हो वैसी बहन हमें अपनेमें से ही तैयार करनेका निश्चय करना चाहिए। यह कोई[1]

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

१ साधन सूत्रमें पत्र अधूरा है।

३२७ पत्र : वैकुण्ठ एल० मेहताको

३ जुलाई, १९३५

भाई वैकुण्ठ,

महादेव तो वही है। उन्हे लिखा तुम्हारा पोस्टकार्ड मैने पढा।

मैने लल्लूभाईका आपरेशन सफलतापूर्वक होनेका शुभ समाचार भी पढा। आशा है, अब वे अच्छे होगे।

सेठ मथुरादासके साथ हुई [तुम्हारी] बातचीतके बारेमे महादेवने मुझे बताया। उसका मै यह अर्थ लगाता हूँ कि वे प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कर देंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री वैकुण्ठ मेहता
सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे वैकुण्ठ एल० मेहता पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

३२८ पत्र कृष्णचन्द्रको

दुबारा नहीं पढा

३ जुलाई, १९३५

चि० कृष्णचन्द्र,

हमारे हृदयमें देव-दानव, सत्य-असत्य, ज्ञान और अज्ञान, ज्योति और तमसके बीचमे द्वन्द्व युध्ध[1] चल रहा है। उसमे जहातक हमें झूझ[2] सके वहातक झूझे[3] लेकिन कभी अपनी शक्तिके बहार नही। अर्जुन अपनी शक्तिके बहार जा रहा था, भगवानने उसे रोका। जैसे कि अहिंसा उत्तम है लेकिन अगर मै साँपका भय छोड नही सकता हू उस हालतमे क्या-क्या करू? मनसे तो उसे मार चूका हू कर्मसे मारने से हिचकीचा जाता हू तब धर्म कहता है कि तुम तुम्हारा स्वभावके मुताबिक

१ युद्ध।
२ और ३ जूझ।

मार। उसे नही मारने का व्यवसाय व्यथ है। वैसे ही ब्रह्मचय और गृहस्थाश्रमका दृष्टान्त बन सकता है। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य अवश्य अच्छा हे लेकिन जो अपने विकारको नही दबा सकता है, गृहस्थाश्रममे प्रवेश करे। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य मिथ्या व्यवसाय माना जाय। इसमे दो विरुध्ध[1] बात नही आती लेकिन पृथक्क[2] वमकी बात आती है।[3]

हा, प्राथना आवश्यक है ही है। उसीमे निरतर जब स्वाभाविक वम्तु बन सकता है। नीमकी पत्तिया कम मात्रामे लेना पडेगा। तो ऐसा ही किया जाय।

शरीरके बारेमे ओर तो यहा आ जाओगे तभी मुझको पता चलेगा। अभी हृदय दौबल्य होना ही नही चाहिये। मेरे पास रहने से शाति मिल सकती है ऐसा जब मानते हैं तो पीछे फोरन आ जाना चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७५) से।

३२९ पत्र अमृतकौरको

वर्धा
४ जुलाई, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे नाम तुम्हारे पत्र तो प्रेमपत्र-जैसे ही होते हैं—मेरा खयाल है, तुम भी इनपर हर बार घटे-भरसे कम न लगाती होगी, हालाकि तुममे आशु और तीव्र लेखनकी क्षमता हे। अब तो हम लोग एक-दूसरेको अच्छी तरह जान गये हैं, इसलिए तुम बखूबी ऐसा कर सकती हो कि जब जरूरी हो तभी लिखो ओर इस तरह अपना समय बचाओ। वैसे मै तुम्हारे लम्बे पत्रोकी बडी कद्र करता हूँ, लेकिन तुम महत्त्वपूर्ण बाते बताते हुए सिफ एक पोस्टकाड ही लिख दिया करो तो मेरे लिए काफी होगा।

पूनामे तुम्हारे लिए काम निश्चित कर दिया गया है। क्या तुम पूना आते हुए या वहाँसे लौटते हुए अथवा आते-लौटते दोनो अवसरोपर वर्धा होती जाओगी? इन दिनो मौसम पहलेसे काफी ठडा है।

तुम्हारा पत्र मैंने कुमारप्पा[4] को दिखा दिया है। अगर तुम रिक्शावाहकोसे स्थापित कर सको तो यह बहुत बडी बात होगी। वे बडी आसानीसे कात- अपनी अल्प आयमे कुछ वृद्धि कर सकते है।

१ विरुद्ध।
२ पृथक्।
३ देखिए "आदर्श और व्यवहार", १३ ७ १९३५।
४ जे० सी० कुमारप्पा, अक्तूबर १९३४ में सस्थापित अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके सगठन-कर्त्ता और म त्री।

मुझे खेद है कि कृष्णराव तुम्हारे यहासे जा रहा है। मगर आखिरमे तो तुम्हे अपने ही भरोसे रहना होगा। भले ही तुम्हारे हाथ इतने मजबूत न हो कि तुम धुनकी सँभाल सको, लेकिन तुम्हे पीजनेकी क्रिया आ जायेगी, यह अच्छा ही है। उसे जान लेनेके बाद तुम दूसरोकी पिजाईके कामको सुचारु रूप दे सकोगी और उसकी ठीक देख-रेख कर सकोगी। अगर तुम्हारे यहाँकी लडकियाँ कताई सीखे तो उनसे पिजाई करवाने का भी आग्रह रखना। जबतक वे पिजाई न करेगी, कताई भी नियम-पूवक कभी नही कर पायेगी। और पूनियोके लिए दूसरोपर निभर रहना बुरी बात है। अगर वे एक तरहका कताई-क्लब बना ले तो फिर आपसमे कामका बँटवारा भी कर सकती हैं। कुछ लडकियाँ ओटाई कर सकती है ओर कुछ पिजाई, पूनिया कई लडकिया बना सकती हैं और कताई सब कर सकती हैं।

क्वेटा-राहतके लिए तुम्हारे पास जो कपडे हो, उन्हे तुम डॉ० गोपीचन्दको[1] पजाबमे आये शरणार्थियोके लिए भेज सकती हो। हाँ, अगर शिमलामे भी शरणार्थी हो तब तो तुम उन कपडोको उनके बीच वही बाँट सकती हो। अलबत्ता मै यह जरूर सोचता हूँ कि शिमलामे तो बहुत सम्पन्न शरणार्थी ही होगे, जबकि लाहौरमे सबसे गरीब लोग इकट्ठे हुए होगे।

पैसा मै रोक रखूँगा। इसे किसी ऐसे स्थानको भेजा जा सकता है जहाँ अभी की जा रही उगाही खच हो जाये। ऐसी विपत्तियाँ आती है तो प्रारम्भमे तो सदैव अच्छी-खासी राशि जमा हो जाती है।

तुम्हे जो कागज और लिफाफे भेजे हैं, उन्हे बेचने के लिए तुम्हे अपने घरसे बाहर जानेकी जरूरत नही है। उनकी कीमत पानेकी मुझे जल्दी नही है। ओर आखिरमे अगर वे वहा बिक ही न सके तो भी उन्हे बिना किसी घाटेके बेच सकने मे यहाँ कोई कठिनाई न होगी। मै जानता हूँ कि उनपर जितना मुनाफा तुम हासिल कर सकती हो उतना हम नही कर सकते, लेकिन तब भी उन्हे बेचने के लिए तुम बहुत ज्यादा मेहनत तो कभी मत करना।

तुमको जो पूनियाँ भेजी है वे ३० अकके तार देने लायक है, इसलिए उनसे कमसे-कम २५ अकके तार तो निकलने ही चाहिए।

साथका पत्र एन्ड्रयूजको दे देना।

स्नेह।

बापू

श्री० राजकुमारी अमृतकोरबहन
मैनोरविले, शिमला

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३९) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३४८ से भी

1. डॉ० गोपीचन्द भार्गव।

३३०. पत्र . एस० श्रीनिवास अय्यगारको

४ जुलाई, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र पाकर बडी प्रसन्नता हुई। मुझे पूरी उम्मीद है कि जबतक आप बिलकुल ठीक नही हो जाते और आपका स्वास्थ्य सामान्य नही हो जाता, तबतक आप कोडाईकनाल नही छोडेगे।

दो दिन पहले मैने अम्बुजमकी माफत अपना आशीर्वाद भेजा था।[1] उसीसे मुझे शादीकी तिथि मालूम हुई थी। आज श्रीमती अय्यगार और कृष्णस्वामीको भी लिखा है।[2] आपकी शुभकामनाओके लिए धन्यवाद।

हा, मै बिलकुल स्वस्थ-प्रसन्न हूँ। दोनोको मै ईश्वरकी कृपा मानता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

श्रीयुत एस० श्रीनिवास अय्यगार
"श्रीनिकेतन"
कोडाईकनाल

अग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०७५२) से, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

३३१ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

४ जुलाई, १९३५

चि० अम्बुजम,

साथमे दो पत्र भेज रहा हूँ—एक माताजी के लिए और दूसरा कृष्णस्वामीके लिए। माताजी को तुम्हारे पिताजी की इच्छासे लिखा रहा हूँ। आज उनका एक बडा मधुर पत्र मिला है।

बापूके आशीर्वाद

मूल अग्रेजीसे अम्बुजम्माल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१ देखिए "पत्र एस० अम्बुजम्मालको", १-७-१९३५।
२ देखिए "पत्र श्रीमती एस० श्रीनिवास अय्यगारको", ३-७-१९३५।

३३२ पत्र : अमृतलाल नानावटीको

४ जुलाई, १९३५

भाई अमृतलाल,

तुम्हारे छोटे भाईके देहान्तका समाचार पढकर सहज ही दु ख तो हुआ। किन्तु यदि देखा जाये तो बहुत-से सहयोगी होनेके कारण कही-न-कहीसे किसी-न-किसीकी मृत्यु या जन्मके समाचार तो मिलते ही रहते है। अत सुख-दु ख इस तरह समान हिस्सोमे बॅट जाते है कि यह कहना भी अतिशयोक्तिपूण-सा लगता हे कि मुझे दु ख हुआ। इसके अतिरिक्त यदि हम मृत्युके बारेमे विवेकपूवक विचार करे तो यह कोई ईश्वरीय कोप नही बल्कि जन्मसे छुटकारेके रूपमे ईश्वरका दिया हुआ एक उपहार ही है। इस बौद्धिक ज्ञानके कारण मेरी भावनाएँ बुरी तरह कुण्ठित हो गई है। तुम भी मेरे इस ज्ञानमे हिस्सेदार बनकर अपने दु खको भूल जाना और सेवा-कायमे और भी सजग बनने का प्रयास करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७१०) से।

३३३. पत्र : प्रभावतीको

५ जुलाई, १९३५

चि० प्रभा,

इस वार तूने काफी कष्ट दिया। दो पक्तियोका एक पोस्टकाड लिखने मे तुझे समय ही कितना लगता? आशा है, तूने बाबूजी से अनुमति तो ले ली होगी। जैसी परिस्थिति तू बताती है, उसे देखते हुए तो तेरा वहाँ रह जाना आवश्यक था ही। यहाँ रोज वर्षा हो रही है। मेरा भोजन वही हे जो पहले था। मेरी तबीयत अच्छी है किन्तु मैंने अपना वजन नही लिया है। बा और मनु दिल्ली गई है। इस बीच राजेन्द्रबाबू एक बार यहाँ हो गये। अम्तुस्सलाम अभी यही है। बारडोलीसे लक्ष्मी[1] यहाँ आ गई है।

और अधिक लिखनेका समय नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४५१) से।

१ मारुति शर्माकी पत्नी।

३३४ पत्र लीलावती आसरको[1]

वर्धा
५ जुलाई, १९३५

चि० लीलावती,

यदि ये सुधार और टिप्पणियाँ समझमे न आये तो मुझसे पूछ लेना। अपनी लिखावट और सुधारना। अक्षर बडे लिखना और शब्द अलग-अलग रखना।

[तेरे पाठोको सुधारने मे] मुझे कोई परेशानी नही होती। किन्तु मै कोई अन्य शिक्षक नियुक्त कर दूगा। इस बीच [अपने पाठ] मुझे भेजती रहना।[2]

१ सामान्यत कहा जा सकता है कि सजीव वस्तुओके लिए 'एस' का प्रयोग किया जाता है और निर्जीव वस्तुओके लिए 'ऑफ' का, जैसे, "ए मैन्स लैग" किन्तु "ए लैग ऑफ ए टेबल।"

२ 'हैड' का प्रयोग ऐसी क्रियाके लिए किया जाता है जो अगला काम आरम्भ होनेके पहले ही समाप्त हो चुकी हो, जैसे "ही हैड ईटन व्हैन आई वेंन्ट टु हिम", किन्तु "ही एट ऐट १० ओ'क्लाक"। 'हैड ईटन' पूणभूत है और 'एट' सामान्यभूत।

३ 'हैव' का प्रयोग सहायक क्रियाके अतिरिक्त म्ल क्रियाके रूपमे भी किया जाता है। मुख्यत यह क्रिया अधिकार या सम्बन्धका बोध कराती है, जैसे "ही हैज ए बाक्स"—अधिकार, "ही हैज ए सन"—सम्बन्ध।

किसी क्रियाके पूण हो जानेपर 'हैव' के रूपोका प्रयोग किया जाता है किन्तु जब उसका प्रयोग भूतकालको सूचित करने के लिए किया जाये तो 'बी' के रूपोका प्रयोग किया जाता है। उदाहरणोके लिए दूसरी टिप्पणी देखो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१२७ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

१ लीलावती गुजराती पाठोका अंग्रेजीमें अनुवाद करके हर सप्ताह गाधीजी को भेजा करती थी, जि हें वे अपनी टिप्पणियो और सुधारोंके साथ लौटा दिया करते थे। इनमें से कुछ सामान्य सुधार यहाँ छोड दिये गये हैं।

२, इसके बादका अश लीलावतीके पत्रके हाशियेमें लिखा

३३५ पत्र : जानकीदेवी अग्रवालको[1]

५ जुलाई, १९३५

प्रिय भगिनी,

मैंने तो मूलचन्दजी से लिखा है कि किसी तरह तुम्हारेपर बलात्कार न किया जाय।[2] न तुम्हारे उनपर बलात्कार करना चाहिये। तुमको जो कुछ खाना, पीना चाहती है उसकी स्वतन्त्रता होनी चाहिये। लेकिन मूलचदजी के धर्मका स्वीकार नही कर सकती है तो उससे अलग रहकर अपनी इच्छानुसार चल सकती है। ऐसी हालत मे भी तुमको खानेका खच देनेका मूलचन्दजी का धम बन्द नही होता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८३६) से।

३३६. हरिजन-सम्मेलन

१६ जूनको मैसूर राज्य हरिजन सेवक सघके तत्त्वावधानमे मैसूरमे हरिजन-सेवकोका एक सम्मेलन आयोजित किया गया। मैसूर राज्यके दीवान सर मिर्जा इस्माइलने तदथ निम्नलिखित सन्देश भेजा

> यह जानकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई कि गत वषके कार्योंके परिणामका पुनरावलोकन तथा भावी काय-पद्धति निर्धारित करने के लिए मैसूर-राज्य हरिजन सेवक सघ उन कार्यकर्त्ताओके एक सम्मेलनका आयोजन कर रहा है जो दलित वर्गोंके — या अधिक प्रचलित नामका प्रयोग करे तो हरिजन वर्गोंके — उद्धारके सत्कायमे लगे हुए ह। कहने की जरूरत नही कि मै सम्मेलनके हर सम्भव दृष्टिसे सफल होनेकी कामना करता हूँ। जैसाकि सर्वविदित है, महाविभव महाराजा और उनकी सरकारकी तीव्र इच्छा है कि उनकी समस्त प्रजाका — वह चाहे जिस जाति, धम अथवा प्रजातिकी हो — कल्याण हो और वह समृद्ध बने। इसलिए हरिजनोके सामाजिक एव शैक्षणिक उत्थानकी प्रवृत्तियोको महाविभवकी सरकारकी सहानुभूति सदा प्राप्त रही है और भविष्यमें भी रहेगी,

१ मूलचन्द अग्रवालकी पत्नी।
२ देखिए "पत्र मूलचन्द अग्रवालको", २३ ६ १९३५।

यद्यपि उनकी प्रजामें हरिजनोका अनुपात बहुत कम ही है। सरकारने हरिजन-समुदायकी दशा सुधारने के लिए हालके वर्षोमें कई कदम उठाये गये है। इस कायमें जनता तथा हरिजन सेवक सघ-जैसी सस्थाओका सहयोग स्वागत-योग्य है। इस समुदायके सामाजिक जीवनका धरातल ऊपर उठाकर और उसे राज्यके सामाजिक जीवनमे अपनी भूमिका निभाने में समर्थ बनाने के उसके प्रयत्नोकी पूर्ण सफलताकी कामना करता हूँ।

सम्मेलनने स्थानीय महत्त्वके अनेक प्रस्ताव पास किये, जिनमे से कुछ नीचे दे रहा हूँ

यह सम्मेलन सरकारसे अनुरोध करता है कि निम्नलिखित अतिरिक्त सुविधाएँ देने कृपा करे।

(१) इर्विन नहर-क्षेत्र और वाणी विलास सागरमें भी कृषक बस्तियाँ बसानेके लिए भूमि।

(२) गाँवोमें हरिजन बस्तियोके विस्तारके लिए स्थान।

(३) गाँवोमें रहनेवाले हरिजनोके निमित्त पीनेके पानीके कुओकी व्यवस्था के लिए बजटमें स्पष्ट रूपमें एक राशि निर्धारित करना।

(४) जिन हरिजन छात्रावासोको राजकीय सहायता प्राप्त है उनके अनुदानमें वृद्धि करना, हरिजनोको छात्रवृत्तियाँ देना तथा खेल कूदकी सुविधा और पुस्तकालयके लिए लगनेवाले शुल्कोकी माफी।

(५) हाईस्कूल तथा कॉलेजकी परीक्षाएँ पास करनेवाले हरिजनोको नौकरीमें प्राथमिकता।

(६) राज्यके हरिजनोके नैतिक तथा भौतिक उत्थानकी देखरेखके लिए एक विशेष अधिकारीकी नियुक्ति, जिसके लिए एक कमचारी वर्ग और धनकी व्यवस्था हो।

(७) एक शैक्षणिक न्यास-कोषका प्रारम्भ किया जाना और एक सलाहकार समितिका गठन।

(८) मैसूरकी हरिजन लडकियोके लिए नि शुल्क खाने-रहने की सुविधावाले एक छात्रावासकी स्थापना।

(९) जितने भी मन्दिर 'मुजराई' विभागके प्रबन्धके अधीन है उन सबमें हरिजनोको प्रवेश और पूजा करने की अनुमति देना।

हमे आशा करनी चाहिए कि अधिकारीगण ये उचित मागे स्वीकार कर लेगे और इस राज्यमे हरिजनो तथा अन्य लोगोके बीच पूरी तरहसे बराबरीका दर्जा कायम कर दिया जायेगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ६-७-१९३५

३३७. खादीका लक्ष्य

खादीका लक्ष्य इतना ही नही है कि वह शहरके लोगोके लिए मिलके कपडेसे होड लेनेवाली किस्म-किस्मकी रग-बिरगी खादी जुटा दे और इस तरह दूसरे उद्योगो की भाँति चन्द कारीगरोको रोजगार दे दे। उसका लक्ष्य तो यह है कि वह खेतीका एक पूरक उद्योग बन जाये। यह लक्ष्य अभी पूरा नही हुआ है।

इस लक्ष्यकी पूर्तिके लिए खादीको स्वावलम्बी बनाना होगा, और उसके उपयोगका चलन गाँवोमे फैलाना होगा। जिस तरह गाँववाले अपनी रोटी या चावल खुद पका लेते है उसी तरह उन्हे अपने उपयोगकी खादी भी खुद ही तैयार करनी है। उसके बाद खादी बच रहे, तो उसे बेच सकते ह। जबतक खादी-सेवा सघका रग-ढग नही बदलता और चरखा सघ अपनी नीतिमे परिवतन नही करता, तबतक खादीका यह लक्ष्य सिद्ध होनेका नही।

खादी तैयार होनेके पहले कपासकी जो-जो प्रक्रियाएँ होती है, उन सबका ज्ञान खादी-सेवा सघके प्रत्येक सदस्यको होना चाहिए।

स्वावलम्बी खादीपर जब जोर दिया जायेगा, तब व्यापारिक उद्देश्यसे उतनी ही खादी बनेगी जितनी खादीकी शहरवालो को असलमे जरूरत होगी। तब व्यापारिक खादी चरखा सघके हाथमे केन्द्रित रहने के बजाय निजी तौरपर व्यापार करनेवाले व्यापारियोके हाथमें चली जायेगी।

खादीको व्यापारकी वस्तु बनाने के प्रयत्नमे चरखा सघ अबतक बाजार-भावका खयाल रखकर चला है। इसलिए कताईकी मजदूरी दूसरी सभी किस्मोकी मजदूरीकी अपेक्षा कम रही है। इस मजदूरीकी दर भी अलग-अलग प्रान्तोमे अलग-अलग रही है। इसलिए विभिन्न प्रान्तोकी खादीके भावोमे भी फक रहा हे। जिनका ध्येय महज मुनाफा कमाने का है, उनके लिए तो एक-दूसरेका गला काटनेवाली प्रतिस्पर्धाका आश्रय लेना, बल्कि उसे उत्तेजनतक देना भी ठीक है, मगर जिन सस्थाओका एकमात्र हेतु करोडो निर्धनोकी सेवा करना है, उन्हे ऐसी प्रतिस्पर्धामे पडना नही पुसा सकता। बिहारकी कत्तिनको गुजरातकी कत्तिनसे कम मजदूरी क्यो मिले ? नि सन्देह प्रान्त-प्रान्तका रहन-सहन जुदा-जुदा होनेके कारण वहाँ प्रचलित दरोमे भी फक पडता है। पर सघका काम तो वस्तु-स्थितिको चुपचाप स्वीकार कर लेनेसे नही चल सकता। यदि स्थिति न्यायसगत नही है तो सघको उसे बदलना होगा। कोई कारण नही कि एक घटेकी कताईकी मजदूरी एक घटेकी बुनाईकी मजदूरीसे कम हो। सादी बुनाईकी अपेक्षा कताईमे अधिक कुशलताकी आवश्यकता पडती है। सादी बुनाई केवल एक यान्त्रिक प्रक्रिया है। किन्तु सादीसे-सादी कताईके लिए भी हस्तकौशलकी आवश्यकता पडती है। तो भी बुनकरको फी घटे कमसे-कम दो पैसे मिलते है और कतैयेको

सिफ एक पाई ही मिलती है। धुनियेको भी उससे अच्छी ——करीब-करीब बुनकरकी-जितनी ही —— मजदूरी मिलती है। इस वस्तु-स्थितिके ऐतिहासिक कारण है। पर यह बात नही कि ऐतिहासिक होनेकी वजहसे ही वे न्याय्य भी है। अब वह समय आ गया है, जब सघको उसकी देख-रेखमे किये जानेवाले सभी प्रकारके श्रमके पारिश्रमिकको स्थायी नही तो कमसे-कम एक-सा तो बना ही देना है। इस नीतिके कार्यान्वयनके लिए अनेक स्थानोपर बुनकरोसे अपनी मजदूरी कम करने को भी कहना पड सकता हे। ऐसा समय तो शायद कभी न आये जब सब बुनकर खुद अपनी खुशीसे दरोका समान बनाने की प्रक्रियाको स्वीकार कर ले। पर यदि सब प्रकारके उत्पादक-श्रमकी मजदूरीकी दरकी समानताका सिद्धान्त सही हे तो सघको इस आदशके अधिकसे-अधिक नजदीक पहुँचनेका प्रयत्न करना चाहिए। एक ही बारमे यह सब न हो सके तो भी कतैयेके पूरे एक घटेके ठीक कामकी मजदूरीकी दरमे उचित वृद्धि करके इस दिशामे आरम्भ तो कर ही देना चाहिए। विनोबा अपने छात्र-छात्राओको पढाने के साथ-साथ नित्य लगभग नो घटेके हिसाबसे कातने का प्रयोग कर रहे है। एक घटेमे वे जितना सूत कातते है, उसे एक घटेके उत्पादनका मानक समझना चाहिए, और कतैयेको उसके हिसाबसे मानक मजदूरी मिलनी ही चाहिए। मुझे आशा है कि विनोबाके परिश्रमके परिणामोको मै शीघ्र ही प्रकाशित करूँगा।

मेरी योजनाके लिए इतना तो जरूरी है ही कि खादी-सेवकका कातनेवाले के साथ घनिष्ठ सम्पक हो। जो सस्था मजदूरीकी दरमे आशातीत वद्धि करेगी, वह इसकी भी खोज-खबर रखेगी कि जो पैसा वह श्रमिकोको देती है, वह किस तरह खच हो रहा हे। अगर वह पैसा शराबखोरी या शादी-ब्याह आदिमे फिजल बरबाद हो रहा हो तो उनकी मजदूरी बढा देना व्यथ ही होगा। खादीका काम करीब-करीब अस्पश्यता-निवारणके कामकी ही तरह है। उच्च कहलानेवाले वर्गोने नीचेके वर्गोकी इतनी अधिक उपेक्षा की है कि लोग जीनेकी कला ही भूल गये। उनकी यह धारणा बन गई हे कि उन्हे तो विधाताने सिफ मेहनत-मशक्कत करनेके लिए ही पैदा किया है। इन ऊँचे वगवालाको अपने कुकर्मोका दण्ड न मिले, यह कसे हो सकता था? उन्हे भी सजा मिली। वे भी तो जीनेकी कला नही जानते। उन्हे अगर आज 'निम्न वग' से सहायता मिलना बन्द हो जाये, तो आज ही उनका नाश हो जाय। 'निम्न वर्गों' के प्रति 'उच्च वर्गों' ने जो दुर्व्यवहार किया है उसके लिए उन्हे प्रायश्चित्त करने को आमन्त्रित करके इस दोहरी दुरवस्थाको सुधारना ही खादीका ध्येय है।

ग्रामोद्योगके क्षेत्रमे लगे कायकर्त्ताओको भी इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि जिन उद्योगोको उन्होने पुनरुज्जीवित किया है, उनमे काम करनेवाले ग्रामवासियोको सघ द्वारा नियत न्यूनतम मजदूरी मिले।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ६-७-१९३५

३३८. डायरी लिखनेके बारेमें[1]

तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है, इसकी एक एक बात ब्योरेवार तुम्हारी डायरीमे दर्ज रहनी चाहिए। तुम अगर अपने तमाम कामको घंटोमे बॉट सको, तो एक-एक घंटेके कामका ब्योरा भी उसमे होना चाहिए। तुम्हारी डायरी तुम्हारे मनकी आरसी होनी चाहिए। उसमे तुम्हारे भले-बुरे विचारो और स्वप्नो, सबका उल्लेख रहना चाहिए। अच्छे या बुरे जो भी काम तुमने किये हो, उनका भी उसमे उल्लेख होना चाहिए। यह डायरी-रूपी आईना आत्मशुद्धिमे सहायता करता है। मनुष्यका पेट साफ रहे तो शरीर निश्चय ही अच्छा रहेगा। वह बाह्य शौच है। जिस तरह शरीरके आरोग्यके लिए बाह्य शुद्धि आवश्यक है, उसी तरह आत्माके आरोग्यके लिए अन्त शुद्धिकी आवश्यकता है। सच कहा जाये तो अन्त शुद्धि जितनी अधिक होती है, बाह्य शुद्धि साधने के लिए उतना ही कम प्रयत्न अपेक्षित होता है। अर्थात् हमारा अन्तर शुद्ध हो तो बाहरकी शुद्धि तो आप ही हो जायेगी। क्या यह नही सुना है कि योगीके शरीरसे सुगध निकलती है। सुगधका अर्थ यहाँ दुर्गन्धका अभाव है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ६-७-१९३५

३३९. टिप्पणियाँ

हरिजनोके कुओके निमित्त निधिका संग्रह

दिल्ली प्रदेशके हरिजनोके लिए कितने कुओकी आवश्यकता है, इसका एक अनुमान इस सप्ताह प्रकाशित किया जा रहा है। पाठक इस बातको लक्ष्य करेंगे कि भगी जातिके हरिजनोके लिए कुओका क्या मतलब होता है। उन्हे उन कुओका भी उपयोग नही करने दिया जाता जो दूसरी जातियोके हरिजनोके लिए अलग कर दिये गये है। यह सच है कि यह स्थिति केवल दिल्ली प्रदेशमे ही नही है। लेकिन दूसरी जगहोमे भी यह शिकायत है, इससे तो इस विशेष परमार्थ-कार्यका महत्त्व और अधिक उजागर होता है। आशा है, प्रान्तीय सघके प्रधान स्थानीय रूपसे चन्दा एकत्र करेंगे। चन्देकी इन राशियोको सम्बन्धित प्रान्तोमे ही उनकी आवश्यकताओके अनुसार इस मदमे खर्च करनेके लिए अलग रखा जा सकता है।

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। गाधीजी आश्रमवासियोकी डायरियाँ देख रहे थे। एकने उनसे पूछा कि "मुझे अपनी डायरीमें क्या लिखना चाहिए और क्या नही?" इसपर गाधीजी ने यह सलाह दी।

तमिलका पावन ग्रथ

तिरुवल्लुवर एक तमिल सन्त थे। अनुश्रुतियोसे ज्ञात होता है कि वे हरिजन बुनकर थे। उनका जीवन-काल ईस्वी सन्‌की पहली शताब्दी बताई जाती है। उन्होने प्रसिद्ध 'तिरुक्कुरल'—अर्थात् पवित्र नीति-वचनो—की रचना की। तमिल लोग इसे तमिल भाषाका वेद कहते है और एम० एरियलके अनुसार यह "मानव-चिन्तनकी एक उच्चतम और शुद्धतम अभिव्यक्ति" है। इसमे कुल १,३३० नीति-वचन है। इनका अनुवाद कई भाषाओमे हुआ है। अग्रेजीमे तो इसके कई अनुवाद सुलभ है। सबसे हालमे इसका अनुवाद हरिजनो तथा अन्य लोगोके सेवार्थ शेरमादेवी आश्रमकी स्थापना करनेवाले स्वर्गीय वी० वी० एस० अय्यरने किया। राष्ट्रको शेरमादेवी आश्रम तथा यह पुस्तक भेट करके वे चल बसे। अब शेरमादेवी आश्रम हरिजन सेवक सघके हाथोमे है। अनुवादके दूसरे सस्करणकी लगभग हजार प्रतिया अब भी पडी हुई है। मूलत पुस्तकका मूल्य ५ रुपये रखा गया था। अब घटाकर ढाई रुपये कर दिया गया है। पुस्तकमे एक विस्तृत प्रस्तावना भी है, जिसे स्वय अनुवादकने लिखा है। इससे प्राप्त होनेवाला पैसा हरिजन-सेवामे लगाया जायेगा। पाठकोकी रुचि जगाने के लिए मैं यहा दो वचन उद्धृत कर रहा हूँ, जो खास तौर पर चुने हुए नही, बल्कि यहाँ-वहाँसे यो ही उठाकर दे दिये गये है

> **अपने प्राण बचानेके लिए भी किसी अन्य जीवका प्राणहरण न करो, क्योकि अपने प्राण तुम्हे कितने प्यारे है!**

अब गोल्डस्मिथकी इन पक्तियोसे इसकी तुलना कीजिए

> **घाटियोमें उन्मुक्त फिरनेवाली भेडोमें से भी किसीका वध किया जाये, यह मुझे स्वीकार नही, क्योकि जो शक्ति मुझपर दयाकी वृष्टि करती है, उसने मुझे उनपर भी दया करना सिखाया है।**

दूसरा वचन है

> **मृत्यु तुम्हारे लिए निद्राके समान है,**
> **और जीवन निद्राके बादकी जागृतिकी तरह।**

अब इसको वर्ड्सवर्थकी इस पक्तिसे मिलाकर देखिए

> **मृत्यु मात्र निद्रा है—विस्मृतिकी एक अवस्था।**

मत्री, तमिलनाडु हरिजन सेवक सघ, तेप्पाकुलम, त्रिचनापल्लीके नाम निवेदन भेजकर पुस्तक मँगाई जा सकती है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ६-७-१९३५

३४०. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
६ जुलाई, १९३५

प्रिय मेरी,

(जब बापूको मालूम हुआ कि मैं आपके लिए इस पत्रमें "कुमारी बार" सम्बोधनका प्रयोग करने जा रही हूँ तो उन्होने आग्रह किया कि ऐसा न करके मै आपके बप्तिस्मावाले नामसे ही आपको सम्बोधित करूँ।)

यह पत्र मै उन्हींकी ओरसे लिख रही हूँ। आपका इसी २ तारीखका पत्र उन्हे मिला। वे चाहते है कि जबतक डॉक्टर यह न कह दें कि आप बिलकुल स्वस्थ हो गई है और अब अपने काममें फिर लग सकती है तबतक आप मिरजसे न हटें। वे आपके इस विचारसे बिलकुल सहमत हैं कि जब आप लौटें तो पूना होकर लौटने के बजाय सिकन्दराबाद होकर ही लौटें। बापूका यह भी विचार है कि आपके दाँतो और आँखोको फिर वही विशेषज्ञ देखें जिन्होने पहले इलाज किया था। लिहाजा जब भी आपसे बने, आप उनसे जरूर सलाह लीजिए।

मेरिया पीटर्सनके पत्रके सम्बन्धमें बापूने मुझसे यह लिखने को कहा है कि उनके डेनमार्क जानेकी कोई सम्भावना नहीं है।

सस्नेह,

आपकी,
अमृतकौर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५२) से।

३४१. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

६ जुलाई, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्र मिले। मलेरियाको खत्म कर देनेकी कठिनाईको मैं समझता हूँ। यदि चारों ओर गन्नेके खेत हो तो यह काय निश्चय ही कठिन है। किन्तु मच्छरोंके स्वभावकी एक विशेषता है कि वे एक सीमासे आगे नही जा सकते। अत यह सम्भव है कि तुम्हारे स्थानसे सौ एकड दूर खडी फसलका असर तुमपर न हो। चाहे जो हो किन्तु तुम्हे तो अपने आसपास कही भी पानी या सीलन नही होने देनी चाहिए। और मकान टेकरीपर बने होनेके कारण पानी यो भी इकट्ठा नही हो सकता।

खुराक हलकी होनी चाहिए। सलाद आदिकी कच्ची पत्तियां खानी चाहिए। कब्ज कभी नहीं होने देना चाहिए। मच्छरदानी इस्तेमाल करनी चाहिए। मुझे लगता है कि यदि इतनी सावधानी बरती जाये तो मलेरियासे बचा जा सकता है। मुझे इस बातका आश्चर्य है कि लक्ष्मी मेरे कते सूतकी खादी भेज सकी। तो अब मुझे कुछ भेजना है न? मैं यह मानता हूँ कि यदि तुम दोनों सीताको पढ़ाने के लिए समय नहीं निकाल पाते तो तुम्हारे जीवनमें कहीं कोई बड़ी कमी है। इच्छा या अनिच्छा-पूर्वक यदि तुम सन्तानको जन्म देनेके उत्तरदायित्वको स्वीकार करो तो उनके शरीर और मन आदिको संस्कारपूर्ण बनाना भी तुम्हारा कर्त्तव्य है। अतः चाहे जितना काम क्यों न हो फिर भी तुम्हें कुछ समय अवश्य निकालना चाहिए। यह ईश्वरकी कृपा है कि बच्चे जाने-अनजाने शिक्षा पाते ही रहते हैं। तुम चाहो या न चाहो किन्तु तुम्हारे आचार-विचारका अनुकरण बच्चे अवश्य करेंगे। इस दृष्टिसे भी माता-पिताको अपना आचार-विचार सर्वथा शुद्ध रखना पड़ता है। यदि तुम्हारा भाषण शुद्ध होगा तो बच्चोंका भी शुद्ध होगा। यदि तुम प्रार्थना करते होगे तो तुम्हारे बच्चे भी प्रार्थना अवश्य करेंगे। तुम जिस तरह और जो खाओगे-पिओगे, वही वे भी खायेंगे-पियेंगे। अब सिर्फ अक्षर-ज्ञान कराना बाकी रह जाता है। इसमें कितना समय लगेगा? यदि थोड़ी-सी सावधानी बरती जाये तो खेल-ही-खेलमें बच्चोंको शिक्षा दी जा सकती है। जरूरत इस बातकी है कि हमारा जीवन थोड़ा विचारमय हो। इस बातका दृढ़ निश्चय होना चाहिए कि बच्चोंको तुम्हें ही शिक्षा देनी है। तुम उन्हें जो सिखाना चाहते हो, उसका थोड़ा-सा ज्ञान तुम्हें पहले प्राप्त कर लेना चाहिए। इस प्रकार खाते-पीते, उठते-बैठते, घूमते-फिरते बच्चोंको ऐसा अमूल्य ज्ञान प्राप्त हो जायेगा जो वे पाठशालाओंमें कभी नहीं पा सकते। यदि तुम गपशपमें अपना समय गँवाने के बदले इस प्रकार अपना समय बिताओ तो उससे तुम्हारे ज्ञानमें भी वृद्धि होगी और तुम्हारा जीवन अपेक्षाकृत व्यवस्थित हो जायेगा।

सोराबजी और उनके व्यवहारको भूल जाना। सोचकर देखो, तो हलवेकी घटना मनोरंजक है। इस प्रकारकी निन्दासे तुम्हें मनोरंजन करना सीख लेना चाहिए।

लगता है, हरिलाल फिर बहक गया है[1] या गाड़ी रास्तेपर आई ही नहीं थी और वह सिर्फ दम्भ करता हुआ ही आया था। किन्तु उसपर इतना गम्भीर आरोप लगाने के बदले मैं यह मान लेता हूँ कि अब वह बहक गया है। अभी तो यह मेरा वहम है। बादमें जो हो सो सही, जो होगा वह थोड़े दिनोंमें सामने आ जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३९) से। सी० डब्ल्यू० १२५१ से भी, सौजन्य: सुशीला गांधी

१. देखिए "पत्र: वल्लभभाई पटेलको", ३-७-१९३५।

३४२ पत्र : लीलावती आसरको

६ जुलाई, १९३५

चि० लीलावती,

तेरा बहुत विचित्र और दु खद पत्र मिला। दो दिन पहले ही तेरा आशा-भरा पत्र मिला था जिससे मेरे मनपर यह छाप पडी थी कि तू बिलकुल स्वस्थ हो गई है। किन्तु आजके पत्रसे तो ऐसा लगता है, मानो यह किसी दूसरी ही लीलावतीने लिखा हो। दो ही दिनमे इतना उलट-फेर कैसे हो गया? तू राजकोटमे अपनी इच्छासे रही है। मैंने तो तुझे बम्बईमे रहकर भी पढनेका सुझाव दिया था। मैने सदा यह चाहा है कि तू अपनी सामथ्यसे अधिक कुछ भी न करे। एकाएक इतनी अधिक निराशाका कौन-सा कारण आ पडा है? तुझे वहाका वातावरण स्वाथपूण दिखाई देता है तो अन्यत्र भी वह मुश्किलसे ही भिन्न मिलेगा। अत वातावरण तो तू स्वय जैसा बनाना चाहेगी, वैसा ही बनेगा और वैसा ही रहेगा। धीरज रखना और शान्त हो जाना। किन्तु यदि तू धीरज और शान्ति खो चुकी हो तो राजकोट अवश्य छोड देना। तू सवथा स्वतन्त्र है। मेरे साथ किसीका सम्बन्ध होनेसे उसके पख कटते नही बल्कि पख न हो तो उसके नये पख निकल आते है। अत तुझे जिधर उडना हो, उधर उड सकती है। मेरे पास यहा रह सकने की बात एक अलग प्रश्न है। मौका आनेपर हम दोनो इस बारेमे विचार कर लेगे। नारणदासका आश्रय तू कभी मत छोडना। यदि उसका आश्रय छोडेगी तो पछतायेगी। इससे अच्छा पथ-प्रदशक मै तुझे नही बता सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३४) से। सी० डब्ल्यू० ६६०९ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

३४३ पत्र . नारणदास गाधीको

६ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

इसके साथके पत्रोको पढकर तदनुसार आवश्यक व्यवस्था कर लेना। लीलावतीको क्या हुआ है ? उसकी आकुलताकी कोई सीमा ही नही है। वह भली लडकी है किन्तु उसपर विश्वास करके कुछ भी नही किया जा सकता फिर भी तुम उसके पास हो अत मै निश्चित हूँ।[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० य०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६० से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

३४४ पत्र : प्रभाशंकर पट्टणीको

६ जुलाई, १९३५

सुज्ञ भाईश्री,

यह पत्र मै बाये हाथसे लिख डालना चाहता हूँ। चाहे जो हो किन्तु हमारी झोपडियाँ तो यहाँ [भारतमे] ही शोभाप्रद हो सकती है। बाहर जाकर कही सुख थोडे ही मिलनेवाला है ? यह अच्छा हुआ कि इतनी परेशानियोके बावजूद आप दो बार हरिजन-कथा पढ गये। अब जो होना हो सो भले हो। आप अपने स्वास्थ्यका तो ध्यान रखते है न ? चिन्ता करने से परेशानी दूर नही होगी। आप यह जानते है न कि रमाबहन[2] आपके पार्श्वमे है ? यह अन्तिम वाक्य मैं कुछ और तरहसे लिखना चाहता था किन्तु इस प्रकार लिखा गया। किन्तु यह अच्छा लगता है इसलिए मैं इसे बदलता नही। वे एक प्रकारकी दार्शनिक है किन्तु जिस प्रकार हम अपने पास बैठे हुए ईश्वरको नही पहचानते उसी प्रकार सच्चा आश्वासन देनेवाले मित्रको भी प्राय हम नही पहचान पाते। अत यदि उनकी उपस्थितिसे आपको

१ देखिए पिछला शीर्षक भी।

२ प्रभाशकर पट्टणीकी पत्नी।

आश्वासन न मिलता हो तो जैसा मैने ऊपरके वाक्यमे लिखा, उनके होते हुए चिन्ता किस बातकी है। आपके दु खमे हिस्सा बँटानेवाली वे सही महिला है।

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५९४३) से। सी० डब्ल्यू० ३२६० से भी, सौजन्य महेश प्र० पट्टणी

३४५ पत्र नारणदास गाधीको

वर्धा
७ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

अब तुम्हारे लिए हरिलालको और क्या समझाना बाकी रह गया है? किसीसे बलात् पुण्य थोडे ही कराया जा सकता है? इसलिए मुझे लगता है कि पत्रोके आदान-प्रदानके अतिरिक्त फिलहाल तुम्हारे करने को और कुछ रह ही नही गया है। जब ऐसा समय आये कि उसे फिर पश्चात्ताप हो तब देखना कि तुम क्या कर सकते हो।

कनुका[1] बुखार तो कबका उतर गया। तुम यह मानना कि वह यहाँ बिलकुल निश्चित है। कनुके बारेमे तुम्हे, जमना या पुरुषोत्तमको तनिक भी चिन्ता करने की जरूरत नही। मेरी नजरके सामने उसका सारा कामकाज चलता रहता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६१ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

३४६ पत्र . अमृतकौरको

सोमवार, ८ जुलाई, १९३५

प्रिय अमृत,

मैने तुम्हे जो कागज भेजा था, उसका शेषाश साथमे भेज रहा हूँ। मेरे बारेमे अखबारोमे जो खबरे छपती है, उनपर तबतक विश्वास न करो जबतक यहाँसे उनकी पुष्टि न करा लो। मै ४५ मिनटतक दर्दसे चीखता तो जरूर रहा। लेकिन दर्द बन्द होनेपर मुझे तनिक भी कमजोरी महसूस नही हुई और न मेरा वजन घटा। यह नीमकी पत्तियाँ अधिक लेनेसे हुआ था। मै प्रयोग करके यह जानने की कोशिश कर रहा था कि वे अधिकसे-अधिक कितनी ली जा सकती है। ऐसे प्रयोग अपने

१ नारणदास गाधीके पुत्र।

ऊपर ही किये जा सकते है। मेरे प्रयोगोसे मुझे कभी कोई स्थायी हानि नही हुई है। मैने अपने और अपने साथियोके कामकी बहुत-सी महत्त्वपूण खोजे की है। शुरूके दिनोमे मेरे दातोको नुकसान पहुँचा, लेकिन उस प्रसगमे भी प्रयोगमे कोई दोष नही था। वह तो मेरे प्रारम्भिक दिनोके अज्ञानके कारण हुआ था। यदि हमारे डॉक्टरोको देशी आहार और औषधोकी विशेषताओका ज्ञान होता तो मुझ-जैसे लोगोका रास्ता सरल और आसान हो जाता।

मै तुम्हारे लिए और कागज तैयार करवा दूगा।

सच मानो, मै बिलकुल ठीक हूँ।

आज, सोमवारको मुझे लिखने का काम खुद करना पडा।

तुम सबको प्यार।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४०) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३४९ से भी

३४७ पत्र क० मा० मुशीको

८ जुलाई, १९३५

भाई मुशी,

तुम्हारा लेख अच्छा है, लेकिन यह हिन्दीमे होना चाहिए। अग्रेजीमे उसका अनुवाद होना चाहिए। ऐसा नही किया जाता तो वह एक गलत शुरआत होगी। उत्तर भारतके लेखक अग्रेजीको बर्दाश्त नही करेगे। क्या तुमने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह मासिक पत्रिका[1] हिन्दीमे छापी जायेगी? आशा है, अन्य भाषाओके लेख भी देवनागरी लिपिमे ही छापे जायेगे। यदि मेरी यह मान्यता ठीक हो तो तुम्हे अपने लेखमे इसे स्पष्ट करना चाहिए।

परामश-समितिका विचार मुझे पसन्द आया। यदि मुझे इसका पदेन अध्यक्ष बनाया जाता है तो स्वीकृति या अस्वीकृतिका प्रश्न ही नही उठता। यदि मुझे नये सिरेसे अध्यक्ष नियुक्त किया जाता है तो निश्चय ही उसे स्वीकार करने मे मुझे झिझक होगी। विद्वानोके बीच मेरे लिए क्या स्थान हो सकता है? मै तो अपने क्षेत्रमे ही रहना पसन्द करता हूँ।

यदि नये अध्यक्षका चुनाव सम्भव हो तो शान्तिनिकेतनके विधुशेखर शास्त्री या कर्वे विश्वविद्यालयके श्री जोशी इस सम्मानके उपयुक्त पात्र है। मैने सुना है कि श्री जोशी बहुत बडे विद्वान् है। मै उनको व्यक्तिगत रूपसे नही जानता। मेरे इस सुझावपर तटस्थ भावसे विचार करना। मेरे इस सकोचका कारण झूठी विनय तो

१ हस।

तनिक भी नही है। मेरी साहित्यिक योग्यता नही के बराबर है। मुझे सामान्य बुद्धि मिली है, इसलिए मुझमे जो थोडी-बहुत योग्यता है उसका ठीक उपयोग कर सकता हूँ। जब पुस्तिका भेजोगे तो उसकी एक छोटी-सी प्रस्तावना[1] लिख दूगा। विज्ञापनके बारेमे यह कहना है कि अभी तो मै उन्हे देखना चाहूँगा। हम उसपर धीरे-धीरे मर्यादाएँ लगाने की सोचेगे। खुद मै यह चाहूँगा कि सिफ पुस्तके, शिक्षा आदिके ही विज्ञापन दिये जाये। साबुन या हाथकी बनी छडी या खादीसे किसी विशुद्ध साहित्यिक पत्रिकाका क्या सम्बन्ध हो सकता है। हाथकी बनी कलमो या कागज अथवा तसवीरोके विज्ञापन देना तो ठीक रहेगा। विदेशी पुस्तकोके विज्ञापन हम निस्सकोच स्वीकार कर सकते है। लेकिन मेरा यह आग्रह नही है कि इस विषयमे मेरे विचारोके अनुसार ही बरता जाये। जो मर्यादाएँ लगानेपर मै तुम लोगोको बुद्धिपूर्वक समझाकर राजी कर पाऊँगा, वही मर्यादाएँ हम लगायेगे। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५७८) से, सौजन्य कन्हैयालाल माणेकलाल मुशी

३४८. पत्र : सैयद कासिम अलीको

वर्धा
८ जुलाई, १९३५

भाई कासिम अली,

मै लाचार हू। नाटकसे नही लेकिन मूक सेवासे ही ग्रामसुधार हो सकता है। नाटक मेरे पास देखने मे नही आता है। मुझको रजिस्टर भेजा था? मै खोज कर रहा हू। तुम्हारी माली हालत यदि खराब है तो तुम्हारे कुछ-न-कुछ उद्योग वही करना चाहिए। साहित्यसे पैसे पैदा करना यों भी उचित बात नही है।

मो० क० गाधी

सैयद साहब कासिम अली, विशारद
बैतूल

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७५२) से।

१ देखिए "सन्देश 'हंस' को", ५-८-१९३५।

३४९ पत्र : भी० रा० अम्बेडकरको

वर्धा
९ जुलाई, १९३५

प्रिय डॉ० अम्बेडकर,

आपको शायद मालूम होगा कि राजाराम भोले अभी मेरे साथ है। उसे क्या करना चाहिए, इस सम्बन्धमे वह मेरी सलाह चाहता है। उसके बुरे स्वास्थ्यका खयाल रखते हुए मैंने यह सलाह दी है कि अगर वह अपने खाने-कपडेके लिए [1] लेकर कुछ हरिजन-सेवा करने मे सन्तोष माने तो बेहतर होगा। दूसरा विकल्प है व्यवसायका रास्ता अपनाना। उसके यह राह अपनाने के रास्तेमे मुझे कठिनाई दिखाई देती है। उस हालतमे उसे नियमित रूपसे कुछ घटे काम करना पडेगा और अधिकसे-अधिक काम करनेके लिए तैयार रहना होगा, लेकिन जिस आदमीको बराबर क्षय रोगसे ग्रस्त हो जानेका भय लगा हो उसके लिए ऐसा करना घातक होगा। किन्तु मैंने उससे कहा कि उसे आपकी सलाह लेनी चाहिए और आपसे ही मागदर्शन प्राप्त करना चाहिए। उसका कहना है कि वह आपको पहले ही लिख चुका है। मै जानता हूँ कि समयपर उसे आपका उत्तर मिल जायेगा। लेकिन मै चाहूँगा कि आप मेरी खातिर उत्तर भेजनेमे जल्दी करे, ताकि मै राजारामको बतला सक् कि वह क्या करे।

हृदयसे आपका,

डॉ० अम्बेडकर

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

३५०. पत्र नारणदास गाधीको

मगनवाडी, वर्धा
९ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। हरिलालके आखिरी पत्रके बाद ही मै तो आशा छोड बैठा था। मुझे भय है कि उसने पीना तो पहलेसे ही शुरू कर दिया था। जब उसने मलेरियाके बहाने ब्राडी पीनेकी अनुमति माँगी थी तभीसे मै यह मान बैठा था कि उसने फिर पीना शुरू कर दिया होगा। इसलिए मुझे गहरा या हलका धक्का पहुँचनेका प्रश्न ही नही उठता। वह मेरे पास आया इसलिए मैंने उसपर विश्वास

१ साधन-सूत्रमें कुछ अंश छोड दिया गया है।

कर लिया, और अब भी विश्वास करूँगा, किन्तु इससे अधिक और कुछ नही कर सकता।

तुमने तार न देकर अच्छा ही किया। उसे यहाँ भेजकर पैसे मत बरबाद करना। उसका जो होना होगा सो होगा।

लीलावतीका पत्र तो मैने तुम्हे भेजा ही है, और उसका उत्तर भी भेजा है।[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६२ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

३५१ पत्र : लीलावती आसरको

९ जुलाई, १९३५

चि० लीलावती,

आशा है, अब तू शान्त हो गई होगी। तू किस कारण अशान्त हो गई थी? यदि तू अपने स्वभावकी सीमाओके बाहर जाकर कुछ न करे तो इतनी अधिक बेचैन नही रहेगी। भगवान् तुझे सुबुद्धि दे। प्रतिदिन प्रात उठनेपर और रातको सोते समय उससे मानसिक स्थिरताकी याचना करना।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३५) से। सी० डब्ल्यू० ६६१० से भी, सौजन्य लीलावती आसर

३५२. पत्र : हरिगोविन्द गोविलको

१० जुलाई, १९३५

भाई हरि गोविल,

तुमारे तरफसे पुस्तक मिल गई है। तुमारी धम-पत्निको धन्यवाद। दिल चाहे तब वह लिखे।

शब्दकोशके बारेमे और एक हिंदी शिक्षकके बारेमे जो कुछ कहते हो योग्य है। कुछ बन सकेगा तो करूगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२२) से।

१ देखिए "पत्र लीलावती आसरको", ६-७-१९३५।

२ देखिए "पत्र लीलावती आसरको", ६-७-१९३५ भी।

३५३. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

वर्धा
१० जुलाई, १९३५

भाई सतीशबाबु,

तुम्हारा खत मिला है। बरकामताके विषयमे मै हस्तक्षेप नही करू ऐसा तो कैसे हो सकता है? जब चर्खा सघके पास खादी-कामके बारेमे कुछ भी शिकायत आ जाय तो उसका फैसला तो करना ही पडता है। शकरलाल बिमार है और इस झगडेसे उनको गभराहट[1] भी हो गयी है। ऐसी हालतमे उन्होने मुझे लिखा। अन्नदा-के पत्र भी आने लगे है। इसलिए इस झगडेमे कुछ-न-कुछ करना तो होगा ही। मेरी सलाह है कि एक स्टेटमेन्ट तुम्हारे तरफसे भेजी जाय और एक अन्नदाके तरफ-से। और उसके उत्तर एक-दूसरे दे दे। उसपर से दोनोको बुलाने पडे तो बुलाऊगा। अन्यथा वैसे ही निणय दे दूगा। यह तो ठीक है न? हड्डीके बारेमे तो मुझे इन्दौरकी[2] पध्धति[3] अच्छी लगती है। थोडा-सा नाईट्रोजन जाता है उसमे क्या हर्ज है? सभाल रखकर हड्डीको अग्नि दी जाय तो आरामसे सामान्य चक्कीमे पीसने लायक हो जाती हे। चूना पीसने की चक्कीमे सैकडो मन आटा बन सकता है और यह खाद्य बाजारमे जानेके लायक हो सकती है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नक़ल (जी० एन० १७११) से।

१ घबराहट।

२ अप्रैलमें गांधीजी इस उद्योगको देखने गये थे।

३ पद्धति।

३५४. पत्र : प्रेमाबहन कटकको

वर्धा
११ जुलाई, १९३५

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र अभी-अभी मिला। यह पत्र तेरी वर्षगाँठके दिन लिखा गया है, इसलिए आशीर्वाद तो ले ही ले।

कैसी है? कौन-सी वर्षगाठ है, यह तो तू लिखती ही नही। तेरी शुभकामनाएँ अवश्य पूरी होगी। शुभ प्रयत्न करनेवालो के प्रयत्न कभी निष्फल नही होते और अशुभ प्रयत्न करनेवालो के कभी फलते नही। यदि फलते दीखें तो वह केवल आभास-मात्र है।

शेष फुरसतमे लिखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७५) से। सी० डब्ल्यू० ६८१४ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

३५५ पत्र : लीलावती आसरको

११ जुलाई, १९३५

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तू छुट्टियोमे अवश्य आना। तब हम सोच-विचार कर लेगे। वेतनके[1] बारेमे मै नारणदासको लिख रहा हूँ। क्या तू जानती है कि मेरे साथ रहने का क्या मतलब है? इसका मतलब है मजूरिन बनकर रहना। मजदूरी करते हुए जो-कुछ सीखा जा सके, सो सीखना और जो खानेको मिले, सो खाना। यदि तू इसमे प्रसन्न रह सके तो चली आना। यहाँ तुझे अलगसे कोठरी नही मिलेगी। मेरे, बा, या अन्य किसीके लिए भी यहाँका रहन-सहन कठोर है। किन्तु जब तू यहाँ आयेगी तो सब-कुछ स्वय देख लेना। फिलहाल तो वहाँ रहते हुए शान्तिपूर्वक निर्धारित सेवा-काय करती रह।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०१०७) से, सौजन्य लीलावती आसर

१ देखिए अगला शीर्षक।

३५६. पत्र : नारणदास गांधीको

११ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालको तो अब हाथसे गया ही समझो। [1] लीलावतीके पत्र मिलते रहते हैं। और उसके लिए एक पत्र इसके साथ है।[2] यदि शालाके कोषमें से उसे वेतन दिया जा सकता हो तो दे दो। यदि यही उसके सन्तापका कारण हो तो उसका उपाय करना।

मैथ्यूसे शारीरिक श्रमका काम अवश्य लेना। प्रत्येक कक्षा कितने समयकी होती है?

कनु आनन्दपूर्वक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६३ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

३५७. पत्र : परीक्षितलाल ल० मजमूदारको

मगनवाडी, वर्धा
१२ जुलाई, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

अब तो अम्बालालभाई वहाँ पहुँच गये होंगे। वे एक बन्धन-जैसे बन गये हैं किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि मौका आनेपर उन्हें भिक्षाकी झोली भर देनेसे मुक्ति मिल गई है। इसलिए तुम जाना और उन्हें पूरा बजट समझा देना। वे जो दें सो ले लेना और जो कहें सो मुझे लिखना। शंकरलालके आनेपर मैं उनसे बात करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९६०) से। सी० डब्ल्यू० १२६ से भी, सौजन्य परीक्षितलाल ल० मजमूदार

१ साधन सूत्रमें यहाँ कुछ अंश छोड़ दिया गया है।

२ देखिए पिछला शीर्षक।

३५८. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

१२ जुलाई, १९३५

चि० हेमप्रभा,

तुमारा लबा खत मिला। आनद हुआ। इसके सिवा मै तुमारा मानस नही समज सकता था। तुमारे खतमे क्रोध, आवेश और अभिमान है। ऐसा कहना कि चर्खा-सघके सचालकोने बिगाडा है, प्रतिष्ठान ही ने सब-कुछ किया है तो भी प्रतिष्ठानको ही सब-कुछ सहना पडा है, अन्नदा इत्यादि द्वेष करते है — यह सब अनुचित विचार है और अभिमानजन्य है। इन सब बातोका उत्तर मैं खतसे नहि दूगा। तुमारे यहा आ जाना है। तब तुमको शाति मिलेगी और मुझको भी। साथमे सतीशबाबुको लाना। वे न आ सके तो कोई हरज नही। जो निणय करेगे वह आवश्यकता होनेसे उनको बतायेगे और अमल करेगे। जितनी जल्दी से आ सकती है आ जाओ। यहा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७१२) से।

३५९. सलाह : किशूको[1]

[१३ जुलाई, १९३५ के पूव]

निश्चय ही यह कपडा आपके लिए स्वदेशी है, पर यह वह कपडा नही है, जो आपको हिन्दुस्तानमे खरीदना चाहिए। 'जैसा देश वैसा भेस' यह कहावत कुछ निरथक नही है। जिस देशका हम नमक खाते हो, वहाँके रहन-सहन और रीति-रिवाजोके अनुसार चलने का हमे जरूर प्रयत्न करना चाहिए। जब मै दक्षिण आफ्रिकामे था, तब जहाँतक मुझसे हो सकता था, आफ्रिकाकी बनी हुई चीजोको काममे लानेकी कोशिश किया करता था। इसलिए अगर आपको कोई खास आपत्ति न हो तो मै

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। पत्रमें महादेव देसाईने बताया है कि आश्रममें किशू नामक एक जापानी भिक्षु ठहरे हुए थे। उन्हें कुछ कपडेकी जरूरत हुई तो वे बाजारसे सस्ता जापानी कपडा खरीद लाये। कपडेका बडल देखकर गाधीजो ने उन्हें यह सलाह दी थी। देखिए "भाषण वर्धा आश्रममें", २०७-१९३५ के पूर्व।

तो आपसे खादी पहनने के लिए ही कहूँगा। खादी कुछ महँगी तो जरूर मिलती है, लेकिन तब आप जरूरतसे कुछ कम कपडेमे काम चलानेकी कोशिश कर सकते है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १३-७-१९३५

३६० आदर्श और व्यवहार[1]

हमारे अन्दर प्रकाश और अन्धकार, सत्य और असत्य, राम और रावणके बीच शाश्वत सग्राम चल रहा है। यह युद्ध तो हमे अपनी ताकत-भर जारी रखना ही है, पर हमे अपनी मर्यादाओका हमेशा ध्यान रखना होगा। अजुन अपनी मर्यादाओ को भूलने ही वाला था कि भगवान् कृष्णने उसे ऐसा करने से रोका। अहिसा जीवन का नियम है, पर यदि मै साँपसे डरता हूँ तो उस समय मेरा क्या कत्तव्य है? मनसे तो मै पहले ही साँपका वध कर चुका, सिफ मेरी शारीरिक निबलता ही बाधा दे रही है। उस समय मेरा धम कहता है कि 'उसे मार डाल। उसे मारनेसे बचने का तेरा जो यह मिथ्या प्रयत्न है वह त्याग दे।' यही बात ब्रह्मचय और गृहस्थाश्रमके विषयमे भी है। आजीवन ब्रह्मचय एक ऐसी वस्तु है जिसकी कामना हमे अपनी समस्त श्रद्धाके साथ करनी चाहिए, पर जो अपनी विषय-वासनाको काबूमे नही रख सकता, जिसका मन और इन्द्रियाँ कामतृप्तिके लिए तडप रही है, वह तो निश्चय ही गृहस्थाश्रममे प्रवेश करके शुद्ध गृहस्थ-जीवन बिताये। उसके लिए आजीवन ब्रह्मचय-व्रतका प्रयास व्यथ है। आदशमे तो वह वही अखण्ड श्रद्धा रखेगा पर उस आदशतक वह आत्मसयमकी क्रमिक साधनाके द्वारा धीरे-धीरे ही पहुँचनेका प्रयत्न करेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १३-७-१९३५

१ यह महादेव देसाई के "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से लिया गया है। इसके लिखे जानेका प्रसग समझाते हुए महादेव देसाई कहते है "जीव मात्र एक है", २२ ६ १९३५ शीषकसे लिखे लेखमें गाधीजी ने उन सभी प्रश्नोके उत्तर दे दिये है जो उनके विश्वास और आचरणके बीच दिखनेवाले सतही अन्तरको लक्ष्य करके पूछे गये थे। उनसे निजी तौरपर पूछे गये ऐसे ही प्रश्नोका एक उत्तर उन्होंने [शायद "पत्र कृष्णचन्द्रको", ३ ७ १९३५] भेजा जिससे उनकी और जिज्ञासुओकी स्थिति — यदि उसके और भी स्पष्ट किये जाने की गुजाइश थी तो — स्पष्ट हो गई है।"

३६१ पजाबके हरिजन और कुएँ

ऊपर दिया गया पत्र[1] मै खुशीसे छाप रहा हूँ। पजाब हरिजन सेवक सघके मन्त्री लाला मोहनलालसे इस पत्रके सम्बन्धमे यथोचित कार्रवाई करने के लिए कह रहा हूँ। कुओके सम्बन्धमे हरिजनोकी जो भी जरूरते सघकी नजरमे आयेगी, उन सबको पजाब सफाई बोडके ध्यानमे अवश्य लाया जायेगा। हरिजन सेवक सघकी नीति सरकार द्वारा किये कायको दुबारा करने की नही, बल्कि जहा कही सम्भव हो, उससे रह गई कमीको पूरा करने की है। जहाँ जरूरत महसूस होती है, सघ वही कुएँ खुदवा रहा है। यहाँ मै इस बातका उल्लेख कर दूँ कि ब्रिटिश भारतमे कानूनी तौरपर तो हरएक जगह हरिजनोको यह अधिकार है कि सावजनिक कुओका प्रयोग दूसरोके साथ-साथ वे भी कर सकते है, लेकिन व्यावहारिक रूपमे होता यह है कि सवण हिन्दू ओर कभी-कभी दूसरे लोग भी हरिजनोको इनका इस्तेमाल करने से जबर-दस्ती रोक देते है। हरिजन लोग यदि इन कुओका इस्तेमाल करने का साहस करे तो उन्हे सवण हिन्दुओके हाथो कठोर शारीरिक दण्डका भागी बनना पडता है। जहातक मेरी जानकारीका सम्बन्ध है, पजाबमे स्थिति इससे भिन्न नही है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १३-७-१९३५

३६२. मानक मजदूरीकी आवश्यकता

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघने अपने एजेटो और दूसरे लोगोके नाम निम्न-लिखित प्रश्नावली भेजी है, जिसके उत्तर प्रधान कार्यालय, वर्धाके पास आगामी १ अगस्तसे पहले पहुँच जाने चाहिए

> **यह प्रस्ताव किया गया है कि अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके आश्रयमें बनने या बिकनेवाली तमाम चीजोके सम्बन्धमें हमें यह आग्रह रखना चाहिए कि उनको बनानेवाले ग्रामीण कारीगरोको अपने श्रमका पूरा पारिश्रमिक मिले। इसके लिए कामकी मजदूरीका एक मानक निश्चित करना जरूरी होगा। यह मानक कामकी समान मात्राके लिए, स्त्री-पुरुष दोनोके लिए, एक ही होना**

१ पंजाब सफाई बोर्डके सेक्रेटरी के० ए० रहमानका २८ जून, १९३५ का पत्र यहाँ उद्धृत नही किया गया है। पत्र-लेखकने २७ जून, १९३५ के *सिविल एण्ड मिलिटरी गजट*में पजाबके हरिजनोंके लिए पीनेके पानीके विषयमें प्रकाशित एक लेख पढ़कर बताया था कि "गाँववालों को पीनेका पानी उपलब्ध करानेके लिए हालके वर्षोंमें लाखों रुपये खर्च किये गये हैं" और इस सम्बन्धमें "हरिजनों व गैर-हरिजनोंमें कोई भेदभाव" नही किया गया है।"

चाहिए। उसका आधार न्यूनतम निर्धारित उत्पादनके साथ आठ घटेका कार्य-दिन माना जा सकता है। यह मजदूरी मालकी लागतमे शामिल हो जायेगी और कीमत इसके लिहाजसे मुकर्रर की जानी चाहिए। आम तौरपर शायद हम होडवाले बाजारमें कीमतें तय न कर सके, परन्तु उन चीजोके लिए हम ऐसा कर सकते है, जो प्रतियोगिताके क्षेत्रमें नही आतीं और साथ ही उस मालके लिए भी हम ऐसा कर सकते है, जो अपने ऐसे विशेष गुणोके कारण, जिनकी ग्राहक कद्र करते है, पसन्द किया जाता है।

यह प्रश्नावली नीचे लिखे मुद्दोपर आपकी राय प्राप्त करने के लिए भेजी जाती है

१ क्या आपको न्यूनतम दैनिक मजदूरी नियत कर देना और कीमतें तय करके मजदूरोको वह मजदूरी प्राप्त होते रहने की निश्चित व्यवस्था कर देना व्यावहारिक प्रतीत होता है?

२ क्या हमें अपना अन्तिम मानक तय करके उसकी ओर बढना चाहिए या एक न्यूनतम मानक अपनाकर काम शुरू कर देना चाहिए। और तब जैसे-जैसे सफलता मिलती जाये उसे बढ़ाते जाना चाहिए?

३ यह मानक किस आधारपर निश्चित किया जाये? क्या आप फिल-हाल केवल भोजनका विचार करके और यह समझकर कि कपडा अपने-आप तैयार कर लिया जाये, कोई निर्वाह-योग्य मजदूरी सुझा सकते है? क्या आध आना फी घटा बहुत कम होगा?

अखिल भारतीय चरखा सघ और अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ-जैसी परोप-कारी सस्थाओके लिए इस व्यापारिक नियमका अनुसरण करना ठीक नही है कि सबसे सस्ता खरीदे और सबसे महँगा बेचे। चरखा सघने अवश्य ही सबसे सस्ता खरीदने की कोशिश की है। परतु इसकी चर्चा अन्यत्र की जायेगी।[1] खादीके विकासके अपने अनुभवका लाभ ग्रामोद्योग सघको देने की इच्छासे मैने उसके प्रभावमें काम करने-वाले कारीगरोको मिलनेवाली मजदूरीके बारेमे चर्चा छेडी। उसीके परिणामस्वरूप यह प्रश्नावली जारी की गई है।

यह तो पता लग ही चुका है कि एजेटोमे जरूरत की चीजे यथासम्भव कमसे-कम मूल्यमे तैयार करानेकी मनोवृत्ति होती है। काट-छाँट कारीगरोकी कमाईमे न की जाये तो और किसकी कमाईमे की जाये? इसलिए यदि एक न्यूनतम दर तय न कर दी जायेगी तो ग्रामीण कारीगरोको नुकसान पहुँचनेका पूरा डर है, हालाँकि उन्हीकी खातिर ग्रामोद्योग सघ कायम किया गया है।

धीरजके साथ सब-कुछ बर्दाश्त करनेवाले गरीब ग्रामवासियोका हम बडे लम्बे अर्सेसे शोषण करते रहे है। ग्रामोद्योग सघको परोपकारकी आडमे उस शोषणको और भी तीव्र नही कर देना चाहिए। उसका लक्ष्य यह नही है कि गाँवकी चीजे

१ देखिए अगला शीर्षक।

सस्तेसे-सस्तेमे तैयार की जाये, बल्कि यह है कि जीनेके लिए काफी मजदूरीपर बेकार ग्रामवासियोको काम दिया जाये।

यह दलील दी जाती है कि ऐसे किसी कदमसे, जिससे गाँवोमे बनी हुई वस्तुओ की कीमत बढ सकती है, वह हेतु विफल हो जायेगा जिसके लिए ग्रामोद्योग सघकी स्थापना हुई है। इसका कारण बताते हुए यह कहा जाता है कि कीमत बहुत ज्यादा होगी, तो गाँवोमे बनी चीजोको कोई नही खरीदेगा। किसी चीजकी वह कीमत ऊँची कैसे समझी जा सकती है जिस कीमतसे उत्पादकको केवल निर्वाह-योग्य मजदूरी मिले? हमे ग्राहकोको यह शिक्षा देनी होगी कि वे लोगोकी दुरवस्थाको समझे। यदि हमे करोडो मेहनतकशोके साथ न्याय करना है, तो उन्हे अपने कामकी उचित मजदूरी देनी ही होगी। हमे इतनी मजदूरी उन्हे देनी ही चाहिए, जिससे उनका निर्वाह हो सके। हमे उनकी बेबसीका लाभ उठाकर ऐसी मजदूरी नही देनी चाहिए, जिससे एक बार भी उन्हे मुश्किलसे भरपेट खानेको मिले।

यह बिलकुल स्पष्ट है कि सघको मिलके मालसे स्पर्धा करने से इनकार कर देना चाहिए। जिस खेलमे हम जानते है कि हमारी हार होगी, उसमे भाग लेनेसे क्या लाभ? जहाँ बात पैसे की होगी वहाँ तो उत्पादको और व्यापारियोकी बडी-बडी पेढियोके मण्डल, चाहे वे स्वदेशी हो या विदेशी, मनुष्यके हाथोसे बनी वस्तुओको होडमे कभी भी टिकने न देगे। सघ जो करना चाहता है वह यही कि झूठे और मानव-कल्याणका खयाल न करनेवाले अर्थशास्त्रके स्थानपर सच्चे और मानव-हितका खयाल करनेवाले अर्थशास्त्रको प्रतिष्ठित किया जाये। मानवका धम विनाशकारी स्पर्धा नही, बल्कि जीवनदायी सहयोग है। सहृदयताकी अवहेलना करना यह भुला देना है कि मनुष्यकी भावनाएँ भी होती है। यदि हम ईश्वरके प्रतिरूप हैं, तो चन्द आदमियोकी भलाई नही, अधिकाश की भलाई भी नही, बल्कि सबकी भलाई हमारे जीवनका लक्ष्य होना चाहिए।

ग्रामोद्योग सघ-जैसी परोपकारी सस्था उन समस्याओपर विचार करने से बच नही सकती, जो इस प्रश्नावलीमे उपस्थित की गई है। यदि सच्चा हल अव्यावहारिक दिखाई देता हो, तो सघका प्रयत्न उसे व्यावहारिक बनाने का होना चाहिए। सत्य सदा व्यावहारिक होता है। इस तरह सोचे तो सघके कार्यक्रमको प्रौढ-शिक्षणकी सज्ञा देना उचित ही होगा।

और यदि सघको अपने तत्त्वावधानमे काम करनेवाले कारीगरोको निर्वाह-योग्य वेतन दिलाना है, तो उसे कारीगरोके घरके आय-व्यय पर नजर रखनी होगी और यह देखना होगा कि एक-एक पाईका, जो उन्हे दी जाती है, क्या और कैसे उपयोग होता है।

सबसे कठिन प्रश्न तो न्यूनतम या निर्वाह-योग्य मजदूरी तय करने का है। मैंने यह सुझाया है कि किसी अच्छी योग्यतावाले कारीगरके बनाये हुए किसी खास माल की निश्चित मात्राको उसके आठ घटेका कठिन परिश्रम मानकर उसकी आठ आने मजदूरी दी जाये। आठ आने एक सूचक-मात्र है, जो जीवनके लिए आवश्यक वस्तुओ

की एक निश्चित मात्राका सकेत करता है। यदि पाँच आदमियोके परिवारमे दो पूरे काम करनेवाले है तो वे प्रस्तावित दरसे ३० रुपये मासिक कमायेगे। इसमे छुट्टी या बीमारीका एक भी दिन हिसाबमे नही लिया गया है। पाँच खानेवालो के लिए ३० रुपये माहवार कोई बहुत बडी आमदनी नही है। इस प्रस्तावित प्रणालीमे स्त्री-पुरुष या छोटी-बडी उम्रका कोई भेद अनिवार्यत नही रखा गया है। परन्तु जिनके पास प्रश्नावली भेजी गई है, वे अपने अनुभवके आधारपर इन प्रश्नोके उत्तर दे।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १३-७-१९३५

३६३ अखिल भारतीय चरखा संघ

जो बात अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके तत्त्वावधानमे काम करनेवाले कारीगरो पर लागू होती है, वही अ० भा० चरखा सघके प्रवृत्ति क्षेत्रमे काम करनेवाले कारीगरो पर भी लागू होती है। अन्तर केवल इतना ही है कि ग्रामोद्योग सघको पहलेकी किसी परम्परा-परिपाटीकी बाधाके बिना काम करना है। चरखा सघको अगर तमाम कारीगरोके लिए समान मजदूरीका नियम चलाना है तो उसे इन पन्द्रह वर्षोसे चली आ रही परम्परा-परिपाटीको मिटाना होगा। अगणित कतैयोकी सहायता करने मे उसे बुनकरो, जो कतैयोके दसवे भागके बराबर है, और उनके बाद धुनियो, ओटनेवालो और दूसरे कारीगरोकी समस्यासे निबटना होगा। प्रत्येक वर्गकी मजदूरीकी दरमे अन्तर है। बुनकरकी कमाई और कतैयेकी कमाईमे इतना अधिक अन्तर है कि उनमे समानता लाना असम्भव-सा मालूम होगा। कतैयेको जहाँ एक घटेमे २ पाइयाँ मिलती है, वहाँ बुनकरको कमसे-कम एक आना और कभी-कभी दो आने भी मिलते है। कतैयेकी मजदूरीका दो पाईसे बारह पाईपर लाना बहुत बडा सवाल है — खासकर जब हमारा इस बातपर ध्यान जाता है कि कतैयोकी सख्या करीब डेढ लाख है।

मगर चरखा सघको अगर अपने विरदके योग्य बनना है तो उसे उचित काम करनेके लिए अपने अन्दर साहस जुटाना ही पडेगा। कठिनाइयाँ देखकर हमे हिम्मत नही हारनी है, बल्कि बहादुरीसे उनका सामना करना है। जो लोग दरिद्रनारायणके प्रति अपने प्रेमके कारण खादी खरीदते है, उनके बारेमे हमे यह भरोसा रखना चाहिए कि आजतक खादीकी जो कीमत उन्होने दी है उससे अब अधिक भी देगे। अगर यह साबित हुआ कि लोगोपर हमारा ऐसा भरोसा करना गलत था तो खादीकी बिक्री चाहे जितनी गिर जाये, उसके लिए हमे तैयार रहना चाहिए। जो लोग खादीके प्रेमी है वे, खादी कितनी ही महँगी हो जाये, उसे जरूर खरीदेगे — यदि उन्हे यह मालूम है कि खादी खरीदने मे लगाये सौ रुपयेमे से पचानवे रुपये दरिद्रनारायणकी जेबमे जाते है।

पर अन्तमे देखा जाये तो खादीका व्यापारिक उपयोग उसका गौण और छोटेसे-छोटा उपयोग है। ऐसे एक करोडसे अधिक मनुष्य, यानी नगर-निवासी नही निकलेगे, जिन्हे खादी खरीदने की जरूरत पडेगी। इतने मनुष्योको तो पूरा समय काम करने-वाले बीस लाख कारीगर आसानीसे और मजेसे उनकी जरूरतका कपडा दे सकते है। खादीका पहला ध्येय तो यह है कि किसानोका वह एक पूरक उद्योग बन जाये। उन लोगोको यह सिखाना है कि अपने उपयोगके लिए वे खुद अपना सूत कात लिया करे, और उसका कपडा भी खुद ही या तो बुन ले अथवा बुनकरोसे बुनवा लिया करे। जिस तरह वे खुद अपना खाना पकाते है और खुद ही उसे खाते है, उसी तरह खुद ही खादी तैयार करे ओर खुद ही उसे खरीदे, अथवा यो कहिए कि खुद ही उसका उपयोग करे। इस काममे हमने अभीतक शायद ही सच्चे दिलसे हाथ लगाया हो। श्री बैंकर चुपचाप धीरे-धीरे इस प्रकारका परिवतन कर रहे है। जब कि उधर यह परिवतन किया जा रहा है, हमे कतैयेको उसका पर्याप्त पारिश्रमिक देकर उसके प्रति अपना फज पूरा करना चाहिए। उन्हे मजदूरीमे नित्य आठ आने दिये जाये या इससे कम? चाहे जो सीमा बाँध दी जाये, पर उतना पैसा पानेकी योग्यताके लिए कतैयेको प्रति घटा कितना सूत कातकर देना चाहिए? यही प्रश्न ओटनेवालो, धुनियो, बुनकरो और खादीके दूसरे तमाम कारीगरोके सम्बन्धमे हमे हल करना है।

खादीमे जो लोग दिलचस्पी लेते है, और खादी-शास्त्रका जिन्हे जरा भी ज्ञान है, क्या वे मजदूरीकी दरमे इस प्रस्तावित परिवर्तनके सम्बन्धमे अपनी सम्मति भेजने की कृपा करेगे? यदि वे इस परिवर्तनके पक्षमे हो, तो वे यह भी लिखे कि मजदूरी की कमसे-कम क्या दर वे निश्चित करते है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १३-७-१९३५

३६४ सदस्य सचेत हो जायें

श्रीयुत कुमारप्पाने मेरे पास निम्नलिखित सूचना प्रकाशनार्थ भेजी है

साधारण सदस्योको याद दिलाया जाता है कि उन्हे सघके ११ वें उप-नियमके अनुसार बराबर हर तीसरे महीने अपने कामकी रिपोर्ट मन्त्रीके पास भेजनी है। वह उपनियम यह है

"सघके प्रत्येक साधारण सदस्यको अपने कामकी तिमाही रिपोर्ट मन्त्रीके पास इस तरह भेजनी होगी कि सम्बन्धित तिमाही की अवधि पूरी होनेके बाद एक महीनेके अन्दर प्रधान कार्यालयमें पहुँच जाये। यदि किसी साधारण सदस्यके कामकी रिपोर्ट लगातार तीन तिमाहियोतक न आयेगी, तो वह सघका सदस्य नहीं रह जायेगा।"

जिन साधारण सदस्योने अबतक रिपोर्ट न भेजी हो, उनसे यह प्रार्थना है कि वे ३० जून, १९३५ तकके कामकी रिपोर्ट तुरन्त भेज दें।

श्रीयुत कुमारप्पा एक सजग मन्त्री है, और वैसे ही सघके अध्यक्ष श्री जाजूजी भी है। वे दोनो यह मानते है कि किसी भी सस्थाके नियमोका या तो कडाईके साथ पालन होना चाहिए या फिर उन्हे रद कर देना चाहिए। इस उचित नियमके रद किये जानेकी चूकि जरा भी सम्भावना नही है, इसलिए मुझे आशा है कि सघके सदस्य इस नियमका शब्दश और भावनात भी पालन करे।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १३-७-१९३५

३६५. पत्र : छगनलाल जोशीको

वर्धा
१३ जुलाई, १९३५

चि० छगनलाल (जोशी),

तुम्हारा पत्र स्वागतके योग्य है। मै यह मानता था कि अब तुममे और नारण-दासमे ठीक पटने लगी है। किन्तु देखता हूँ कि यह मेरी भूल थी। यह बहुत ही अच्छा हुआ कि तुमने साफ-साफ पत्र लिखा। वहाँकी पाठशालाके सम्बन्धमे मेरे पास एक पत्र आया है। मै जाँच-पडताल कर रहा हूँ। तुम्हारे मनमे जो-कुछ है, क्या उसे तुमने नारणदासके सामने रखा? तुम्हारे पत्रसे मै देखता हूँ कि तुम्हारा झुकाव छोड-कर चले गये शिक्षकोकी ओर है। क्या तुम यह जानते हो कि उनकी माँग क्या है? क्या तुमने इस सबके बारेमे भाई नानालालके साथ विचार-विमश किया है?

बापा[1] लिखते है कि अब तुममे और भाई जीवणलालमे अच्छा समझौता हो गया है। किन्तु तुम्हारे पत्रसे सन्देह होता है। जो हो सो मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३२) से।

१ अमृतलाल वि० ठक्कर।

३६६. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

१३ जुलाई, १९३५

भाई घनश्यामदास,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला है। अच्छा है। मुझे तो कहीं गलती प्रतीत नहीं होती है। लेकिन मुझे पूरा डर है कि जब कुछ शर्त करने लगेंगे तब कुछ नहीं होगा। जैसे कैदीयोंको छोड़ना, डेटेन्युको छोड़ना, अंडामान बंध करना, सत्याग्रहीयोंकी जमीन वापिस करना, आज ऐसी बातें करना शायद अनुचित माना जाय। यह सब जिसके साथ मशविरा करें वह भले करे। आजका वायुमण्डल कायम रहेगा तो मुझे समझौताकी कोई आशा नहीं है। तुमारे साथ मीठी बातें करते हैं उसमें इतना अध्यहार रहता मालुम होता है कि वस्तुस्थिति जैसी है वह ऐसे ही स्वीकृत होगी। यदि यह डर सच्चा है तो समझौताका होना असंभव है। इससे अधिक इस बखत नहीं कह सकता हूं। इसका यह अर्थ नहीं है कि जो प्रयत्न कर रहे हो उसे छोड़ दिया जाय। तुमारा प्रयत्न तो चलना ही चाहिये; जैसे चल रहा है। परिणाम तो ईश्वर के ही हाथमें है। तबियत अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ७९७२ से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

३६७. पत्र : लक्ष्मीनिवास बिड़लाको

१३ जुलाई, १९३५

चि० लक्ष्मीनिवास,

तुमारा खत मिला है। पिताजी पर खत इसके साथ है। एरमेलसे[1] भेज दो। सब अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८०११ से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१. हवाई डाक।

३६८ पत्र : हीरालाल शर्माको

वर्धा
१८ जुलाई, १९३५

चि० शर्मा,

इसके साथ मी० ग्रेगका खत है। उससे पता चला कि वहा कैसे हाल है। इसकी कुछ चिन्ता नही है। फी देना पडेगा तो देंगे। यहा एक भाई आये थे। वह कहते है आजकल कैलागकी ख्याति इतनी नही है जितनी दूसरोकी। मै उनके नाम ठाम इत्यादि [का पता] करूगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१५१) से।

३६९. पत्र : लेसीको

वर्धा
१५ जुलाई, १९३५

प्रिय श्री लेसी,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। आपका प्रश्न इतना महत्त्वपूर्ण है कि मैंने उस विषयपर आपके नामका उल्लेख किये बिना 'हरिजन' मे एक लेख प्रकाशित करने का साहस किया है। मै उस लेखकी एक अग्रिम प्रति इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। शनिवारको इसके प्रकाशनके पहले आप सावजनिक रूपसे इसका कोई उल्लेख नही करेंगे, ऐसी मै आशा करता हूँ।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

३७०. पत्र : प्रभावतीको

१५ जुलाई, १९३५

चि० प्रभावती,

तेरे दोनो पत्र मिले। बाबूजी की अनुमति लेकर तू जबतक चाहे तबतक वहाँ रहना। अब तू जल्दी ही मिलनेवाली है इसलिए अधिक नही लिखता। तुझे वहाँसे क्या लाना चाहिए, ऐसी किसी चीजका नाम मुझे नही सूझ रहा है। वल्लभभाईसे तो अवश्य मिलेगी न? रामदास भी बम्बईमे है। उसका पता है १ ऐश लेन, फोर्ट।[1]

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

बा दिल्लीमे है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४४७) से।

३७१. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

१५ जुलाई, १९३५

भाई खम्भाता,

तुमने अस्पतालके बारेमे जो पत्र लिखा है, उसकी नकल मुझे भेज देना। आशा है, दिन-दिन तुम्हारा स्वास्थ्य सुधरता जा रहा होगा।

तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६१०) से। सी० डब्ल्यू० ४४०० से भी, सौजन्य तहमीना खम्भाता

१ पता अंग्रेजीमें है।

३७२. पत्र : लीलावती आसरको

१५ जुलाई, १९३५

१ जब 'हैव' का अर्थ प्राप्त करना हो तो अनेक स्थानो पर 'गैट' का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे, "आई मस्ट हैव इट" या "आई मस्ट गैट इट"।

२ 'मस्ट' और 'हैव' के प्रयोगमे कुछ बहुत अन्तर नही है।

३ "इफ यू हैड डन दिस" अथवा "हैड यू डन दिस" भी कह सकते है, अर्थात् यदि हम 'इफ' के बदले 'हैड' का प्रयोग करे तो उसका भी वही अर्थ होगा। प्रयोग करने से यह और अच्छी तरह समझमे आ जायेगा।

४ जिस सज्ञासे गिनी जा सकनेवाली वस्तुका बोध होता है उसके पहले आर्टिकल' (उपपद) अवश्य लगाना चाहिए। 'ए' का अथ हम 'एक' माने, इसलिए 'द' का प्रयोग बहुवचनमे किया जा सकता है।

जहाँ 'दैट' का प्रयोग हो वहाँ 'द' का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे 'द' या "दैट मैन हूम यू नो इज हीअर" से यदि बहुत लोग हो तो 'द' या "दोज मैन हूम यू नो आर हीअर।"

आशा है, अब तेरा मन शान्त हो गया होगा। एक दिन नीमके पत्तोका रस अधिक ले लेनेके कारण मेरा पेट थोडी देर दुखता रहा। किन्तु वह तुरन्त जाता रहा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१०१ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

३७३. पत्र : नारणदास गांधीको

१५ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

अब तो हरिलालको बिलकुल भूल जाओ। मैं तो लगभग भूल गया हूँ।

लीलावतीका पाठ[1] इसके साथ है।

वजुभाईने एक पत्र और भेजा है। किन्तु तुम्हारा उत्तर मिलने के बाद यदि आवश्यक लगेगा तो तुम्हे भेज दूगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

धीरूकी माँगके बारेमे तुम क्या सलाह देते हो? तुम्हे यह ध्यान है न कि वह शान्तिनिकेतन जाना चाहता है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६४ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

३७४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

१५ जुलाई, १९३५

चि० नरहरि,

देवशर्माजी के पत्रका यह अश तुमसे सम्बन्धित है। मेरा सुझाव यह है कि इस भाईको तुम रख लेना। इससे हिन्दी शिक्षककी तुम्हारी माँग कुछ हदतक पूरी हो जायेगी। उन्हे सीधे पत्र लिख देना

गाधी सेवाश्रम
डा० गुरुकुल काँगडी
जिला — सहारनपुर (स० प्रा०)

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८५) से।

१ देखिए पिछला शीर्षक।

३७५. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
१६ जुलाई, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारा पत्र मिला था। आशा है, तुम्हारी तबीयत लगातार सुधर रही होगी। यदि तुम एक चाकू, बॉस, टूटी स्लेटका एक टुकडा और एक परकार ले लो तो तुम खुद तकली बना सकती हो। परकारकी सहायतासे तुम उस स्लेटका गोल टुकडा काट सकती हो और फिर चाकूकी नोक या कीलसे स्लेटके उस गोल टुकडेमे एक सीधा छेद कर सकती हो। मनोरजनके तौरपर इसे बनाने की कोशिश करो। त्रिमूर्ति यही है मेरी सी०[1], मेरी आई (अर्थात् इचम)[2] और सुमित्रा। मेरी सी० की शिकायत है कि मैंने उसे दहीके आहारपर रखा है, इससे उसे जुकाम हो गया है।

सस्नेह,

बापू

श्री मेरी बार
वेनलेस टी० बी० सेनिटोरियम
मिरज

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५३) से। सी० डब्ल्यू० ३३८३ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१ मेरी चेजली, कनाडाकी एक क्वेकर।
२ ये मेरी चेजलीकी सलाहपर भारतमें ग्रामोद्धार-कार्य करने के लिए इग्लैंडसे आई थीं।

३७६. पत्र : के० वी० रत्नम्को

१६ जुलाई, १९३५

प्रिय रत्नम्,

श्री कुमारप्पाके द्वारा आपने मुझे जो कलम भिजवाई है, उसके लिए धन्यवाद। कलम मुझे मिल गई है और मुझे ऐसा लगता है कि बाजारोंमें जो विदेशी कलमें मिलती हैं, उनकी जगह यह बहुत अच्छी चीज है।

आपका,
मो० क० गांधी

के० वी० रत्नम् एण्ड ब्रदर्स
रत्नम् फाउन्टेन पेन वर्क्स
राजामुन्द्री

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८१६) से।

३७७. पत्र : भाईलाल पटेलको

१६ जुलाई, १९३५

भाई भाईलाल,

तुम्हारा पत्र और मनीआर्डर मुझे मिल गये थे। तुम अच्छा काम कर रहे हो। तुम्हारा पत्र मैं 'हरिजनबन्धु'को[1] भेज रहा हूँ।

बापूके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३३०१) से।

१. यह पत्र "एक हरिजन-कार्यकर्ताके अनुभव" शीर्षकसे हरिजनबन्धु, २१-७-१९३५ के अंकमें प्रकाशित हुआ था।

३७८ पत्र : कमलनयन बजाजको

१६ जुलाई, १९३५

चि० कमलनयन,

पिताजी से सुना कि [1] अब तुझसे शादी नही करना चाहती, इस कारण कल ही उसे मुक्ति दे दी। हमे यही शोभा देता है। आशा है, तू स्वस्थ होगा। तेरा नसीब अच्छा ही है। इस कारण तुझे योग्य स्त्री ही मिलेगी। फिलहाल तो तू अपने अध्ययन और अपने चरित्रके गठनमें जी-जानसे लग जा। मुझे पत्र लिखना तो बाकी है ही। अपनी अग्रेजी सुधारना। रुचिपूर्वक अध्ययन करना, शरीर मजबूत बनाना। मजदूरी करते हुए ऊबना मत, उसमे शमकी तो बात ही क्या है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०५०) से।

३७९ पत्र : सी० एफ० एन्ड्र्यूजको

वर्धा
१८ जुलाई, १९३५

प्रिय चार्ली,

मुझे खुशी है कि तुम्हारे दिमागसे किताबका बोझ उतर गया है।[2] बेशक, शिमला इसके लिए ठीक जगह थी।

खम्भाताके बारेमे तुम्हारी बात समझता हूँ।[3]

जहाँतक नौजवान बगालीका सम्बन्ध है, कुछ सीखने की इच्छाकी बात छोड दी जाये तो प्रस्तावित पुस्तक[4] यदि बहुत ही श्रेष्ठ कोटिकी न होगी तो उसका

१ नाम छोड दिया गया है।

२ सी० एफ० एन्ड्र्यूजने हालमें अपनी पुस्तक **इंडिया एण्ड ब्रिटेन** समाप्त की थी।

३ देखिए "पत्र सी० एफ० एन्ड्र्यूजको", ३० ६-१९३५।

४ सी० एफ० एन्ड्र्यूज और गिरिजा मुखर्जी द्वारा लिखित **द राइज एण्ड ग्रोथ ऑफ कांग्रेस इन इंडिया**, १९३८ में जॉर्ज एलेन एण्ड अनविन लिमिटेड द्वारा प्रकाशित, देखिए "पत्र सी० एफ० एन्ड्र्यूजको", २९ ७-१९३५ भी।

कोई महत्त्व नही होगा। तुम्हे यह भी बता दूँ कि डॉ० पट्टाभि कांग्रेसका इतिहास[1] लिख रहे हैं।

हाँ, जवाहरलालकी रिहाई[2] एक महत्त्वपूण घटना होगी। यदि जोर-जबर्दस्तीकी बात न रहे तो समाजवादका सिद्धान्त सचमुच बहुत आकषक रहेगा।

सस्नेह,

मोहन

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९०) से।

३८० पत्र : अमृतकौरको

१८ जुलाई, १९३५

प्रिय अमृत,

यह पत्र केवल अपनी यह शुभकामना व्यक्त करने को लिख रहा हूँ कि पूनामे तुम्हारा समय आनन्दपूर्वक बीते।

कहने की जरूरत नही कि बाकीके ४०० रु० के बारेमे तुम वही करो जो ऐसी परिस्थितिमे तुम इस रकमका करती। मै तो इतना ही कहना चाहता था कि जब तुम्हे सन्देह हो तभी तुम मेरी सलाहके लिए रुकी रहो।

एक या दो अगस्तको तुम्हारे आनेकी राह देखूंगा।

इसके साथ चार्लीके लिए एक पत्र[3] भेज रहा हूँ।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१७) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६८७३ से भी

१ बादमें हिस्ट्री ऑफ इंडियन नेशनल कांग्रेस शीर्षकसे प्रकाशित।

२ कमला नेहरूकी बीमारीके कारण कैदकी अवधि समाप्त होनेसे पहले ही वे अल्मोड़ा जेलसे २ सितम्बर, १९३५ को रिहा कर दिये गये थे।

३, देखिए पिछला शीर्षक।

३८१ पत्र · हेमप्रभा दासगुप्तको

१८ जुलाई, १९३५

चि० हेमप्रभा,

तुमारे बीमार तो नही पडना चाहीये। अगर मेरे खतोके कारण बीमार हुई है तो तुमारी आज्ञाकितनाको[1] हानि होती है। मेरे कुछ भी कहने का तुमारे दु:ख मानना नही है। शीघ्र अच्छी हो जाना है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७१३) से।

३८२ पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

वर्धा
१९ जुलाई, १९३५

प्रिय अम्बुजम्,[2]

तुम्हारे पत्रोसे मै कभी ऊब नही सकता, क्योकि तुम्हारी सच्ची खुशीमे मेरी दिलचस्पी है।

तुम किसी आते-जातेके हाथ वह थोडे बडे आकारवाला कुकर भेज सकती हो। अभी उसकी कोई जल्दी नही है।

तुम्हे अच्छी पुत्रवधू मिली, यह जानकर मुझे खुशी हुई।

जब यह सुन लूँगा कि किचीकी अँगुली बिलकुल ठीक हो गई है तब मुझे तसल्ली होगी।

आशा है, पिताजी स्वस्थ होगे।

सस्नेह,

बापूके आशीर्वाद[3]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०३) से, सौजन्य : एस० अम्बुजम्माल

१ आज्ञाकारिता।

२ और ३ साधन सूत्रमें सम्बोधन और हस्ताक्षर हिन्दीमें हैं।

३८३ पत्र : एफ० मेरी बारको

१९ जुलाई, १९३५

चि० मेरी,

इलाजका जो नतीजा निकल रहा है, उसके बारेमे मेरी कोई खास राय नही है। लेकिन यह तो मेरा स्पष्ट मत है कि जब एक बार वहाँ चली गई हो तो और किसी कारणसे न सही, कमसे-कम डॉक्टरोके प्रति न्याय करने के लिए ही इलाज पूरा करवाओ। आखिरकार, हमे उनपर इतना भरोसा तो करना ही चाहिए कि वे क्या कर रहे है, यह उन्हे मालूम है। तुम उतावली मत करो। मुझे आशा है, अन्यथा तुम ठीक होगी। दोनो मेरी यहीपर अनुभव प्राप्त कर रही है।

यहाँ रोजाना हलकी वर्षा हो रही है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५४) से। सी० डब्ल्यू० ३३८४ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

३८४. भाषण : वर्धा आश्रममें[1]

[२० जुलाई, १९३५ के पूर्व]

अपने मेहमानोकी विदाईके समय मै शायद ही कभी कुछ कहता हूँ, पर आज मै कुछ कहूँगा। इसका पहला कारण तो यह है कि हमारे ये अतिथि जापान देशके है, पर दूसरा और मुख्य कारण यह है कि ये भाई जिस ढगसे हमारे यहाँ रहे है, उसके कारण उन्होने हमारे सामने एक सुन्दर उदाहरण कायम कर दिया है।[2] ये हमारे यहाँ चार-पाँच महीने रहे, पर इन्होने जितनी निष्ठा और आत्मत्यागकी वृत्तिसे काम किया है उतनी निष्ठा और आत्मत्यागकी वृत्तिसे किसीने नही किया। ये इस तरह चुपचाप काम करते रहते थे कि हमे शायद ही कभी इनकी उपस्थितिका पता चलता था। इनकी प्रार्थनाकी एकाग्रता देखकर तो कोई भी मुग्ध रह जायेगा। एक ही मन्त्रका दिनमे चार घटेतक, और यो ही जैसे-तैसे पिण्ड छुडानेके लिए नही, किन्तु उत्साह, प्रेम और एकाग्रताके साथ जप करना कोई साधारण बात नही है।

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत।

२ गाधीजी ने यह भाषण जापानी भिक्षु किशूकी विदाईके अवसरपर दिया था। देखिए "सलाह किशूको", १३-७-१९३५ के पूर्व भी।

जब ये यहाँ आये, तब ये न तो भारतकी कोई भाषा जानते थे और न अग्रेजी ही। इसलिए इन्हे अवश्य ही लगा होगा कि वे कहाँ इस देशमे अजनबी-से आ पडे। पर ये अजनबी बने रहने को तैयार न थे। ये हिन्दी पढने लगे, और थोडे ही दिनोमे इन्होने हमारे साथ कुछ बोल लेने लायक हिन्दी सीख ली। पर जिस आनन्दोल्लासके साथ इन्होने इतने दिन हमारे यहा बिताये है, उसकी मै सबसे ज्यादा कद्र करता हूँ। आप लोग कल्पना करे कि आप एक ऐसे अनजाने देशमे जा पडे हो, जहाँ आपकी जान-पहचानका कोई भी नही, जहाँकी भाषा और रीति-रिवाज सभी आपके लिए एकदम नये है, अब आप अपने मनसे पूछिए कि जिस तरह ये हमारे यहाँ रहे है, उस तरह आप भी वहाँ रह सकते है? मुझे लगता है कि मै तो नही रह सकता, न आप लोगोमे से ही कोई रह सकता है। इसलिए मै कहूँगा कि ये भाई अपनी आत्मासे ही आनन्द-रस प्राप्त करते रहते थे। क्योकि जिस परिवेशमे ये आ पडे थे, उसमे इन्हे ऐसा आनन्द मिल ही नही सकता था। किसीने इन्हे कभी क्षुब्ध या रुष्ट होते नही देखा। ये जिधर भी जाते, आनन्द-ही-आनन्द बिखेरते रहते थे। हम इनकी इस बातकी बडी कद्र करते है। यही कारण है कि इनका बिछोह हम सबको खलेगा। हम इन्हे अपने हार्दिक सद्भावके साथ विदा करते है, और आशा करते है कि जितनी जल्दी इनसे हो सकेगा, ये हमारे यहाँ फिर आयेगे।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २०-७-१९३५

३८५. तीसरे दरजेमें यात्राके सम्बन्धमें कुछ उक्तियाँ[1]

[२० जुलाई, १९३५ के पूर्व]

ऊँचे दरजेके गद्दे-तकियेपर आपको अच्छी साफ सीट मिल ही नही सकती। धूल, कचरा और पसीना वगैरा जितना इन गद्दे-तकियोमे जज्ब होता है उतना और किसीमें नही होता। और चूकि ये गद्दे बैठने मे आरामदेह होते है इसलिए लोग इन बातोका खयाल किये बिना उनपर सहज ही बैठ जाते है। तीसरे दरजेकी सीट तो प्रतिदिन धुलती रहती है या धोई जा सकती है, और उसे आप खुद भी जितनी बार साफ करना चाहे उतनी बार साफ कर सकते है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २०-७-१९३५

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। पत्रके अनुसार गांधीजी के एक मित्रने तीसरे दरजेमें कभी यात्रा नही की थी, लेकिन अब इस खयालसे कि तीसरे दरजेमें यात्रा किये बिना उसमें यात्रा करनेवाले यात्रियोकी कठिनाइयाँ दूर नहीं की जा सकती, उन्होंने तीसरे दरजेमें यात्रा करने का निश्चय किया था। इसी प्रसगमें जब गांधीजी से उन्होंने चर्चा छेडी तो गांधीजी ने उपर्युक्त बातें कही।

३८६. अहिंसाका अर्थ

एक अंग्रेज मित्रने मुझे नीचे लिखा पत्र भेजा है

'मद्रास मेल' में प्रकाशित एक रिपोर्टकी नकल मैं इसके साथ भेज रहा हूँ। क्या आप उसे देखने की और मुझे यह बतलाने की कृपा करेंगे कि उसमें आपके शब्दोंको ठीक-ठीक उद्धृत किया गया है या नहीं? और यदि किया गया है तो क्या आप कृपाकर यह समझायेंगे कि यहाँ आपने जो मत प्रकट किया है, उसकी संगति, आप आम तौरपर जो बातें कहते रहते हैं, उनसे कैसे बैठती है? मुझे तो ऐसा लगता है कि आजतक जितने सिद्धान्तोंका उल्लेख मिलता है, उनमें यह सबसे भयंकर है। यह तो किसी भी मनुष्यको कानून अपने हाथमें ले लेने और हत्या या दूसरी किसी भी तरहकी हिंसा करने का आमन्त्रण देता है — बहाना सिर्फ यह रहेगा कि वह या तो खुद डरता है, या फिर उसके लिए हिंसाका एकमात्र विकल्प कायरताका मार्ग है जो हिंसासे भी बुरा है। अगर यह बात है तब तो बोलो जनरल डायरकी जय!

इस महीनेके ७ तारीखके 'मद्रास मेल' की वह कतरन निम्न प्रकार है

एक प्रसिद्ध कांग्रेसीने श्री गांधीको लिखी अपनी चिट्ठीमें आन्ध्र देशके एक गाँवके हिन्दू-मुसलमानोंकी तनातनी और मुसलमानोंकी कथित सीनाजोरीका वर्णन किया था, और साथ ही यह सलाह चाही थी कि ऐसी हालतमें क्या करना चाहिए। उसके उत्तरमें वे अपने एक निजी पत्रमें लिखते हैं:

"प्रिय मित्र,

आपके द्वारा वर्णित यह स्थिति शोचनीय है। लोग अगर अपने मुसलमान भाइयोंसे डरते हैं तो उन्हें शारीरिक बलका प्रयोग करके अपनी रक्षा करने का पूरा अधिकार है।

"ऐसा न करना कायरताका काम समझा जायेगा। कायरता किसी भी तरह अहिंसा नहीं कही जा सकती। कायरता तो खुली हुई और सशस्त्र हिंसासे भी बुरी प्रकारकी हिंसा है।"

मेरे पास उस पत्रकी नकल नहीं है, तो भी जिसे मेरे पत्रकी नकल कहा गया है, उसमें मेरे विचारोंका सार आ जाता है। पत्र-लेखकका न तो मुझे नाम याद है, न मैं उसे पहचानता हूँ। अगर वह कोई प्रसिद्ध कांग्रेसी है तो मेरा खयाल है कि मैं उसे जानता होऊँगा। जैसाकि 'मद्रास मेल' के संवाददाताने कहा है, मेरा वह पत्र एक प्रश्नके उत्तरमें लिखा हुआ निजी पत्र था। इसलिए जिन परिस्थितियोंके

लिए मैंने वह जवाब लिखा था, उन परिस्थितियोंको दृष्टिमें रखकर ही उसे पढ़ना चाहिए। मैंने वह पत्र अगर अपने पास रखा होता तो उसके मुख्य अंश मैं अवश्य यहाँ उद्धृत करता। वह खासा लम्बा पत्र था। लेखकने उसमें गांवके लोगोंकी परिस्थितिका विस्तारके साथ वर्णन किया था और लिखा था कि यहाँके हिन्दू असहाय और भयभीत हो गये हैं। अहिंसा क्या चीज है, यह वे बिलकुल ही नहीं जानते। गाँवके मुसलमानोंका जोरोजुल्म दिन-दिन बढता ही जा रहा है, और दूसरे गाँवोंके मुसलमान आ-आकर इस अत्याचारको और भी शह दे रहे हैं। पत्र-लेखक जानना चाहता था कि ऐसी परिस्थितिमें गाँववाले क्या करें। उसे मैंने वही सलाह दी जो ऐसी परिस्थितियोंमें मैंने हमेशा दी है। सन् १९२० में जब मैं अली बन्धुओंके साथ यात्रा कर रहा था, तब मेरे पास यह खबर आई कि बेतियाके पास एक गाँवमें पुलिसने निरकुशताके साथ मारपीट और लूटपाटकी है। इस विषयपर बेतियाके अपने सार्वजनिक भाषणमें[1] मैंने अपने विचार व्यक्त किये थे, और १५ दिसम्बर, १९२० के 'यंग इंडिया' में इस सम्बन्धमें एक लेख भी लिखा था, जिसका प्रासंगिक भाग इस लेखके अन्तमें उद्धृत किया जा रहा है।

जो आदमी मरने से डरता है और जिसमें प्रतिरोधकी शक्ति नहीं है, उसे अहिंसाका पाठ नहीं पढाया जा सकता। असहाय चूहेको हम सिर्फ इसीलिए अहिंसक नहीं कह सकते कि वह हमेशा बिल्लीके मुंहका ग्रास बना रहता है। उसमें अगर ताकत होती तो वह उस हत्यारी बिल्लीको खुशीसे खा जाता, पर वह तो बिल्लीको देखकर भाग खडा होता है। हम उसे कायर नहीं कहते, क्योंकि प्रकृतिने उसका स्वभाव ही ऐसा बनाया है कि वह इससे भिन्न व्यवहार नहीं कर सकता। मगर जो मनुष्य खतरा देखकर चूहे-जैसा व्यवहार करता है, उसे अगर कायर या नामर्द कहें तो ठीक ही है। उसके दिलमें हिंसा और घृणा भरी हुई है, और खुद मार खाये बिना अगर वह शत्रुको मार सके तो उसे मारना भी चाहता है। ऐसा मनुष्य अहिंसासे लाखों कोस दूर है। उसे अहिंसाका उपदेश देना बिलकुल ही अकारथ है। वीरताका लेश भी उसके स्वभावमें नहीं है। वह अहिंसाको समझ सके, इससे पहले उसे अपने उस जबदस्त हमलावरका, जिसके द्वारा उसे परास्त कर देनेकी पूरी सम्भावना है, सामना करना और उसके आक्रमणसे अपनी रक्षा करते हुए जानतक दे देना सिखाना है। इससे भिन्न कुछ करते हैं तो यह उसकी कायरताको और भी पुख्ता करना होगा और तब वह अहिंसासे और भी दूर जा पडेगा। यह सही है कि मैं किसीको प्रत्याघात करने में मदद नहीं दूँगा, लेकिन अगर कोई तथाकथित अहिंसाकी ओटमें अपनी कायरताको छिपाता है, तो मैं उसे यह नहीं करने दूँगा। अहिंसा किन तत्त्वोंसे बनी हुई है, इस बातसे अनभिज्ञ बहुत-से लोग सच्चे दिलसे ऐसा मानते हैं कि जब कोई खतरा आये — और खासकर जिसमें जान जानेका डर हो — तब सामना करनेके बजाय पीठ दिखाकर भाग जाना अधिक श्रेयस्कर है। अहिंसाके एक शिक्षककी

१ देखिए खण्ड १९, पृ० ९०९३ और १२०२२।

हैसियतसे मेरा यह कर्त्तव्य है कि मुझसे जहातक बन पडे, ऐसे पुंसत्वहीनता-भरे विश्वासको जड न पकडने दूं।

अहिंसा मानव-जातिके हाथोमे सबसे बडी शक्ति है। मनुष्यकी बुद्धिने जो प्रचण्डसे-प्रचण्ड अस्त्र-शस्त्र बनाये हैं, उनसे भी प्रचण्डतर यह अहिंसाकी शक्ति है। संहार कोई मानव-धर्म नही है। मनुष्य अपने भाईको मारकर नही, बल्कि जरूरत हो तो उसके हाथसे मर जानेको तैयार रहकर ही स्वतन्त्रतासे जीवित रहता है। हत्या या अन्य प्रकारकी हिंसा, फिर चाहे वह किसी भी कारणसे की गई हो, मानव-जातिके विरुद्ध एक अपराध है।

किन्तु मै यह बिलकुल स्पष्ट देखता हूँ कि अहिंसा-विषयक यह सत्य दुर्बल और असहाय मनुष्योको नही समझाया जा सकता। उन्हे तो आत्म-रक्षा करने की ही बात समझानी चाहिए।

इसपर शंकाशील लोग यह दलील देंगे 'आप दुर्बल मनुष्यको अहिंसा नही सिखा सकते, और बलवानके पास उसे ले जानेका आपका साहस नही। तो फिर यह क्यो नही मान लेते कि अहिंसा एक निरर्थक सिद्धान्त है?' इसका जवाब यह है कि अहिंसा आचरण द्वारा ही कारगर ढंगसे सिखाई जा सकती है। जब उसकी शक्ति और क्षमताका अचूक प्रदर्शन होगा, तब दुर्बल अपनी दुर्बलता छोड देंगे, और बल-वानोको अपने बलकी निरर्थकताका उसी क्षण पता चल जायेगा और वे नम्र बनकर अहिंसाकी सर्वोत्कृष्टता स्वीकार कर लेंगे। मै यह दिखाने का प्रयत्न विनम्रताके साथ कर रहा हूँ कि सामूहिक प्रवृत्तिमें भी हम इस लक्ष्यको प्राप्त कर सकते हैं। यह बताने का मेरा नम्र प्रयत्न है। इन अंग्रेज मित्र-जैसे आलोचकोसे मेरी यह प्रार्थना है कि वे जरा धीरज रखे।

आन्ध्रके पत्र-लेखकको मैंने जो उत्तर दिया था, उससे इन अंग्रेज मित्रने जो निष्कर्ष निकाला है, वह मेरी रायमे निराधार है। जिस पत्रका मैंने जवाब दिया था, उस पत्रके बिना भी इतना तो स्पष्ट ही है कि जब पुलिसकी सहायता सुलभ है तब तो किसीको अपनी रक्षा आप करने की जरूरत ही नही रह जाती। पुलिस अगर अपना कर्त्तव्य-पालन करती है, तो खुले-आम हमला या मारपीट वह होने ही नही देगी। आत्म-रक्षाके लिए प्रतिरोध करने की कानूनमे इजाजत है। मैंने जिन परि-स्थितियोकी चर्चा की थी, उनके सम्बन्धमे यह मानकर चला था कि वे पुलिस या कानूनकी पहुँचसे बाहर है।

वे अपराध कम ही रोकते है और उसका पता तो और भी कम लगा पाते हैं, वे तो अपराधका दण्ड ही अधिक देते है। इसलिए जहाँ शरीर होम देनेकी तत्परता न हो, वहाँ आत्म-रक्षा करते हुए जूझना ही एकमात्र सम्मानजनक मार्ग है।

> **और यदि भविष्यमें या जब भी ऐसी घटनाएँ हो, वे अपनी रक्षाके लिए तैयार रहे। इस प्रकारकी स्थितिमें वे अपने शरीरकी या सम्पत्तिकी रक्षामें चोट पहुँचानेके बजाय यदि मर्दोंकी भाँति उत्पीडन सह सके और अपनेको लुट जाने दें तो बहुत अच्छा होगा। यह वस्तुत उनकी सबसे बड़ी विजय**

होगी। किन्तु उतनी सहनशक्ति केवल बलसे आ सकती है, दुर्बलतासे नहीं। जबतक यह शक्ति वे अपने अन्दर पैदा नही कर पाते, तबतक उन्हे अन्यायीका सामना [शारीरिक] शक्तिसे करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जब पुलिसका कोई सिपाही किसीको गिरफ्तार करने के लिए नही, बल्कि तग करने के लिए आता है, तब वह अपने अधिकारका अतिक्रमण करता है। तब नागरिकका यह एक अनिवार्य कर्त्तव्य है कि वह उसे लुटेरा माने एव उससे वैसा ही व्यवहार करे। इसलिए वह उसको लूटपाट करने से रोकने के लिए पर्याप्त शक्तिका उपयोग करे। वह अपनी महिलाओंके सम्मानकी रक्षाके लिए निश्चय ही शक्तिका डटकर प्रयोग करे। अहिसाका सिद्धान्त कमजोरो और कायरोके लिए नहीं है, वह तो वीर और शक्ति-सम्पन्नोके लिए है। सबसे अधिक वीर तो वह पुरुष होता है जो मारता नही है, बल्कि कोई उसे मारे तो स्वेच्छासे मृत्युका वरण करता है। वह किसीको मारने से, चोट पहुँचाने से अपना हाथ इसलिए रोकता है कि वह जानता है कि किसीको चोट पहुँचाना गलत काम है। चम्पारन के ग्रामीण ऐसे नहीं है। वे तो पुलिसको देखते ही भागते है। यदि उन्हे कानूनका भय न हो तो वे पुलिसके सिपाहीपर चोट कर देंगे और उसे मार भी डालेगे। इसलिए उन्हे अहिसाका श्रेय नहीं मिलता, बल्कि इसके विपरीत कायरता और अपौरुषका लाछन मिलता है। वे सरकार और मनुष्य दोनोकी नजरोमें निन्दनीय है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २०-७-१९३५

३८७ पत्र. आनन्द टी० हिंगोरानीको

वर्धा
२० जुलाई, १९३५

प्रिय आनन्द,

यह क्या बेहूदगी है! तुमसे कह दिया कि तुम आ सकते हो, तुम्हे और विद्याको[1] इससे ज्यादा और क्या प्रोत्साहन चाहिए था? जब चाहो तुम दोनो या कोई एक यहाँ आ जाओ। मुझसे जितना लेना सम्भव हो, लो।

दोनोको स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्म से, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द टी० हिंगोरानी

१ आनन्द टी० हिंगोरानी की पत्नी।

३८८. पत्र . केवलचन्द के० मेहताको

२० जुलाई, १९३५

भाई केवलचन्द,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे डर है कि मैं बिजलीके बारेमें कुछ नहीं समझता और तात्कालिक उपाय तो मेरे हाथमें है नहीं। आज देशमें ऐसे बहुत-से काम हो रहे हैं जिन्हें रोकने का कोई उपाय नहीं सूझता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७) से।

३८९ पत्र वसुमती पण्डितको

२० जुलाई, १९३५

चि० वसुमती,

गंगाबहनके साथ सफाईके कामके लिए अवश्य निकलना। जो विद्यार्थी आये, उन्हें भी कुछ समयके बाद इस काममें साथ देनेके लिए कहा जा सकता है। सफाईके काममें मेहनत ज्यादा नहीं है और बहुत अधिक समय भी उसमें नहीं लगाना पड़ता।

लगता है, अब तू स्वस्थ हो गई है।

प्रभा[1] बम्बई पहुँचकर बीमार पड़ गई इसलिए यहाँ नहीं आई है।

लक्ष्मी अभी यहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०४) में। सी० डब्ल्यू० ६५० से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित

१ प्रभावती।

३९०. पत्र . हीरालाल शर्माको

२० जुलाई, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत आया था। जो हो सो हो, अमरीका जाना तो है ही।[१] कलकत्ते से खत आया है ता० दस [अगस्त] को जहाज जायगा। तुमारे कलकत्ता जलदी पहोचना है। इसलिये यहा २५ ता० को आ जाओ। यहा दो-तीन दिन रहकर कलकत्ता जाना अच्छा होगा। वहासे ज्यादा सामान नही लाना। आवश्यक अवश्य लाओ।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७८ और १७९ के बीच प्रकाशित अनुकृतिसे

३९१ पत्र · गोविन्दलाल साहको

२० जुलाई, १९३५

भाई गोविदलालजी,

तुमारा खत बहुत दिनोके बाद आया। जब म्युनिसीपालीटीसे वादा कर लिया है तो कुछ कहने का ही नही है। यो भी हरिजन सेवक सघ उस जमीन व मकानका कबजा नही ले सकते है। म्युनिसीपालिटीको देना ही बेहतर है।

तुम सबका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६७७) से। सी० डब्ल्यू० ९७५८ से भी, सौजन्य उ० प्र० सरकार

१ हीरालाल शर्माने अपने पत्रमें सुझाया था कि यदि खर्च बहुत ज्यादा पड़ने वाला हो तो यात्रा रद कर देना ही बेहतर है।

३९२ पत्र : एक ग्राम-सेवकको[1]

[२१ जुलाई, १९३५ के पूर्व]

तुम्हारा पत्र कल ही मिला। पत्र अच्छा है। इसी तरह मुझे कामका विवरण भेजते रहना। इसी आवासको अपनी झोपडी, गुफा या जो-कुछ कहना चाहो सो मानकर यदि तुम लगातार वर्षोतक जमे रहोगे तभी सचमुच कुछ काम हो सकेगा। फिलहाल किसीको भी अपने साथ रहने की अनुमति मत देना। ऐसे लोगोसे माफी माँग लेना। यह हो सकता है कि भली-भाँति स्थिर हो जानेके बाद कोई आकर तुम्हारे पास कुछ समय रह जाये। फिलहाल तो यदि कोई व्यक्ति वहाँ आयेगा तो उससे तुम्हारे काममें विघ्न ही पडेगा। इससे बचना। अपने स्वास्थ्यका भली-भाति ध्यान रखना। यदि तुम बीमार पड जाओ तो किसी आश्रमवासीके साहचयकी इच्छा या आशा मत करना। वहाँ जो है, वही तुम्हारा साथी है। वह भी तुम्हारी सेवा करेगा और यदि न करे तो हरिइच्छा। जहाँ भी जाओगे हरि तो सदा तुम्हारे साथ रहेगा।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, २१-७-१९३५

३९३. पत्र जानकीदेवी बजाजको

वर्धा
२१ जुलाई, १९३५

चि० जानकीबहन,

तुम्हारा पत्र अच्छा है। तुम जो चाहती हो सो मदालसासे धीरजके साथ करना। चिढकर कोई काम कराने का वक्त गया समझ लो। अभी तो दोनो वही[2] रहना। जितना पढ सको, उतना पढना। और जितना लिख सको, उतना लिखना।

रणजीत और सरूपको अपने बच्चे मानकर वहा रखना। कोई तुम्हारी स्वतन्त्रता मे दखल दे सके, ऐसा तो है नही।

१ पत्र-लेखकने अत्यन्त निष्ठापूर्वक अपना काम आरम्भ किया था और सहयोगीके रूपमें किसी व्यक्तिको साथ रखने की इच्छा दृढतापूर्वक त्याग दी थी।

२ अलमोडामें।

यहाँ सब ठीक ही है। ओम् अपने-आपमे मगन है और रामकृष्ण टिकट इकट्ठे करता है और मौज कर रहा है। अब तो वह मेरी बगलमे नही सोता, और यह ठीक ही है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७३)से।

३९४ पत्र : मदालसा बजाजको

२१ जुलाई, १९३५

चि० मदालसा,

तेरे पत्रमे अनुचित कुछ नही है। तेरा कार्यक्रम मुझे पसन्द है। यदि तूने पढना छोड दिया तो कोई बात नही। तुझे जो अच्छा लगे, सो निसकोच खानेका निश्चय ठीक है। उसमे से तू अपने लायक उचित खुराक खोज सकेगी।

जानकीबहनके गुस्सेसे घबराना नही। उसमे जो सार हो, उसकी ओर ध्यान देना।

शरीर गरम रहना ही चाहिए। प्रार्थना और पढते-लिखते समय सीधे तनकर ही बैठना चाहिए। कभी सिर झुकानेकी जरूरत नही। वहा तुझे पूरे कपडे अवश्य पहनने चाहिए।

इन सभी बातोपर ध्यान देना। अब तो तुझे न्याय मिला न?

यह अच्छा है कि तू रणजीतसे पढती है। जबतक चाहे, वही रहना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३१७

३९५ पत्र : बहरामजी खम्भाताको

२१ जुलाई, १९३५

भाई खम्भाता,

अब अस्पतालको भूल जाना चाहिए। वहाँ तुम चगे हो गये इस बातको याद करके ईश्वरका आभार मानते हुए जिस तरह भी हो सकती हो, उस तरह प्राणि-मात्रकी सेवा करना। मेरे हाथको आरामकी जरूरत थी।

तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६११)से। सी० डब्ल्यू० ४४०१ से भी, सौजन्य तहमीना खम्भाता

३९६ पत्र : भगवानजी पु० पण्ड्याको

२१ जुलाई, १९३५

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे आँकडोसे मुझ मदद मिलेगी। आजकल मैं इस सम्बन्धमे अच्छी तरह विचार-विमश कर रहा हूँ। अपना स्वास्थ्य फिर पहले-जैसा बना लेना। यदि तुम पूरे धडकी मालिश करवाओ तो अच्छा हो।

क्या वाडजसे तुम्हारा सम्बन्ध घनिष्ठ होता जा रहा है? क्या तुमने केवल अपना सूत बुनवाकर देखा है? उसे बुननेपर बुनकर ने उसके बारेमे क्या राय दी?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३८९)से, सौजन्य भगवानजी पु० पण्ड्या

३९७ पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२१ जुलाई, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। देवशर्मा जिस व्यक्तिको भेजे उसका उपयोग हिन्दीके प्रचारमे विद्यापीठके बाहर भी किया जा सकता है।[1] उस अँगीठीमे हम बहुत ज्यादा कोयले नही झोक सकते।

वेलचन्दका[2] मामला मैं अब सरदारके साथ तय कर दूगा।

यदि जोशी खादी न पहनता हो तो वह हममे नही खप सकता। इसके अतिरिक्त क्या तुम्हे नारणदासके स्पष्टीकरणसे सन्तोष हुआ?

यदि भास्करराव अब भी तुमसे न मिला हो तो आश्चय है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८७) से।

१ देखिए "पत्र नरहरि द्वा० परीखको", १५७१९३५।

२ वडौदाके वेलचन्द बैकर, देखिए "पत्र नरहरि द्वा० परीखको", २३८१९३५ भी।

३९८ पत्र . जेठालाल जी० सम्पतको

२१ जलाई, १९३५

भाई जेठालाल,

बच्ची झटपट अच्छी हो जाये।

तुम्हारे हृदय-मन्थनके वणनकी प्रतीक्षा करूँगा।

तुम्हारे सुझावोका मै समझ गया हूँ। मै उतावली नही करूँगा। तुम इतने पास हो, इसलिए क्या वर्धा होकर अनन्तपुर जाना ठीक नही होगा ?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९८५३) से, सौजन्य नारायण जे० सम्पत

३९९ पत्र . मूलचन्द अग्रवालको

२१ जुलाई, १९३५

भाई मूलचद,

पतिकी कमाई [मे] मा पत्निका एक-सा हिस्सा है। लेकिन इसका अर्थ यह नहिं कि पत्नि दिल चाहे ऐसे द्रव्यका उपयोग कर सकती है। इसलिए हिसाब रखने का तुमारा निणय योग्य है।[1]

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८३८) से।

१ मूलच द अग्रवालने अपने पत्रमें व्ययके सम्ब धमें अपनी पत्नीके साथ अपने मतभेदका उल्लेख किया था। देखिए ' पत्र जानकीदेवी अग्रवालको ", ५-७ १९३५ भी।

४०० बातचीत : मेरी चेजली और मीराबहनके साथ[1]

[२२ जुलाई, १९३५ के पूर्व][2]

गांधीजी लेकिन आपको इसपर आपत्ति क्या है?[3]

मेरी चेजली यह कि यह अंग्रेजी पोशाक है।

गा० लेकिन अंग्रेजी पोशाकमें जो-कुछ अच्छा है, उसे हम क्यों न अपनायें? अंग्रेज लोग भले ही भारतीय पोशाकको घृणाकी दृष्टिसे देखें और उसमें से किसी भी चीजको अपनानेको तैयार न हों, पर मुझे तो, अंग्रेजी पोशाकमें जो चीजें अच्छी हैं, उन्हें अपनानेमें कोई आपत्ति न होगी।

मे० चे० मगर वह कितनी कलाशून्य है। आधी आस्तीनके लटकते हुए भारतीय कुरतेसे अंग्रेजी जाँघिया बिलकुल मेल नहीं खाता।

गा० तब तो अगर मैं लोगोंसे सोला टोप पहननेको कहूँ तो मेरा खयाल है, आप घबरा ही उठेंगी।

अब अपनी सहेलीकी ओरसे मीराबहन जवाब देने लगीं। उन्होंने कहा कि मैं तो निश्चय ही ऐसी सलाह सुनकर भौंचक्की रह जाऊँगी। सोला टोप बड़ा कीमती होता है और बड़ा गैर-आरामदेह और बेसँभाल भी।

गा० इससे तो यही जान पड़ता है कि इंग्लैंडमें रहते हुए तुम जो टोप पहनती होगी, वह बिलकुल ठीक नहीं आता होगा।

मीराबहन नहीं, ऐसी बात नहीं है। उन दिनों मेरे पास अच्छेसे-अच्छे टोप थे, लेकिन मुझे वे कभी पसन्द नहीं आये। उनको पहननेपर सिर बिलकुल दबा-दबा-सा रहता है और उसमें दर्द होने लगता है।

गा० तब शायद तुम्हारा सिर ही बेडौल रहा होगा। मगर मुझे वास्तवमें ऐसा लगता है कि सोला टोपसे धूपसे बहुत अच्छा बचाव होता है।

मी० पहनना ही पड़े तो मैं तो टोपके बजाय हिन्दुस्तानी पगड़ी पहनना ज्यादा पसन्द करूँगी। धूपसे तो यह भी बचाव करती है।

गा० नहीं, नहीं करती।

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत।

२ मेरी चेजली वर्धासे २२ जुलाई, १९३५ को रवाना हुई थीं। देखिए "पत्र एफ० मेरी बारको", २५-७-१९३५।

३ मेरी चेजली ने, जो कुछ दिन आश्रममें ठहरी थीं, आश्रमवासियों द्वारा काम करते वक्त पहनी जानेवाली पोशाकपर आपत्ति की। इसीपर यह चर्चा हुई थी।

मी० **ठीक है, मगर यह जाँघिये बहुत खराब है। आप जो कच्छा पहनते हैं और ये जो जाँघिये पहनते है, इन दोनोमें स्वर्ग और नरकका अन्तर है।**

गा० ऐसा! तब तो तुमको मुझे समझाना पडेगा कि यह इतना ज्यादा क्यो खटकता है।

मी० मै शायद कुछ ज्यादा कडे शब्दोका प्रयोग कर रही हूँ, मै तो कहूँगी कि इन दोनोमें वही अन्तर है जो दिन और रातमें है।

मे० चे० पर मेरी आपत्तिका कारण यह नहीं है। मुझे तो [हिन्दुस्तानी और अग्रेजी पोशाकोकी] इस अजीब-सी खिचडीसे चिढ़ है। आपका कच्छा हिन्दुस्तानी है। वे ऐसी ही कोई चीज क्यो नहीं पहनते। या तो पूरी हिन्दुस्तानी पोशाक हो या फिर पूरी अग्रेजी।

गा० पूरा अग्रेज बनने के लिए तो मुझे शराबकी दुकानपर भी जाना चाहिए न? जहाँतक मेरे कच्छेकी बात है, मै जानता हूँ कि वह जाँघियेसे बहुत अच्छा है। लेकिन अगर ये सबके-सब उसे पहनने लगेगे तो लोग उनपर यह कहकर हँसेंगे कि ये तो महात्माजी की तरह दिखना चाहते है।

मे० चे०. लेकिन कुरतेके निचले हिस्सेको वे जाँघियेके नीचे तो दबा सकते है?

गा० हाँ, आप लोग तो यही करते है। लेकिन स्वास्थ्यके लिए यह बुरा है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २७-७-१९३५

४०१ तार : हीरालाल शर्माको

वर्धागज
२२ जुलाई, १९३५

डॉ० शर्मा
खुर्जा

वे चाहते है, तुम जल्दी कलकत्ता पहुँचो। तुरन्त आ जाओ।

बापू

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७४ और १७५ के बीच प्रकाशित अग्रेजीकी अनुकृतिसे

४०२. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

२२ जुलाई, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम दोनोंके पत्र मुझे मिल गये हैं। बा का पत्र दिल्ली भेज दिया है। वह और मनु वहाँ हैं। आज-कलमें लक्ष्मीके प्रसवका समाचार मिलना चाहिए।

लगता है, रामदासने हालमें कुछ पैसा गँवाया है। ठोकर खाकर ही उसे अक्ल आयेगी।

हरिलाल आखिरी हदतक पहुँच गया है। सारे दिन नशेमें धुत होकर पड़ा रहता है। इस बार उसने सभी सीमाएँ तोड़ दी हैं।

नारणदास और कुसुम राजकोटमें हैं। नीमू और उसके बच्चे यहाँ हैं। वे स्वस्थ रहते हैं।

जमनालाल यहाँ पहुँच गये हैं। जानकीबहन और मदालसा अलमोड़ामें हैं।

कान्ति और कनु यहीं हैं। आजकल वर्षा और ज्वरका मौसम होनेके कारण सभीको सावधान रहना पड़ता है। उपवास इसकी रामबाण दवा सिद्ध हुई है। सभी मामलोंमें यह भले कारगर न हो, किन्तु नुकसान कभी नहीं पहुँचाती। उपवास या तो आंशिक अथवा पूर्ण हो सकता है। आंशिक उपवासमें प्रोटीन और स्टार्चवाली चीजें नहीं लेनी चाहिए। दाल और दूधमें प्रोटीन होता है। स्टार्च चावल, गेहूँ और आलू आदिमें होता है। अतः आंशिक उपवासमें रसीले फल और हरी सब्जियाँ खाई जा सकती हैं। बुखारमें हरी सब्जियाँ भी नहीं खानी चाहिए। उस समय सिर्फ नारंगी, अँगूर आदिके रसपर रहना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८८०)से। सी० डब्ल्यू० १२५२ से भी
सौजन्य : सुशीला गांधी

४०३ पत्र मनु गाधीको

२२ जुलाई, १९३५

चि० मनुडी,

मेरे पत्रका उत्तर तूने अभीतक नही दिया। इस तरह कैसे बात बनेगी? मैंने तो पूरे दिनका कायक्रम माँगा है न?

यहा राज थोडी-सी वर्षा होती है जिसमे अच्छी ठडक है। मुश्किलसे सूयके दशन होते हैं।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

नैटालका पत्र इसके साथ है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४४) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

४०४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
२३ जुलाई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

लाहौरमे क्या हो रहा है? कुछ समझमे आता है? किसका दोष है? बीमा-कम्पनियोकी तो बाढ आ गई है। मुझे तो जरा भी पसन्द नही है। परन्तु क्या किया जाये? काग्रेसके नामपर बट्टा लगे, यह खतरनाक बात है। परन्तु इस चीजको टुकुर-टुकुर ताकते रहने के सिवा और क्या किया जा सकता है? [1]

[2] स्वच्छ आदमी है। हम ऐसे कामोमे मानापमान का तो विचार भी कैसे कर सकते है?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७६

१ और २ साधन सूत्रमें यहाँ कुछ अंश छोड दिया गया है।

४०५ पत्र . लीलावती आसरको[1]

वर्धा
२४ जुलाई, १९३५

१ इन पदार्थोंके पहले 'आर्टिकल' (उपपद) नही लगता क्योंकि ये गिने नही जा सकते, मापे ही जा सकते है।

२ तूने 'वुड' के जो अन्य अथ बताये है, वे सही है। उनका इसी तरह प्रयोग करने की रूढि है। अग्रेजीमे ऐसे रूढ प्रयोगोको 'ईडियम' (मुहावरा) कहते है।

३ फिलहाल पाठमालाके अभ्यास जारी रखना लाभदायक होगा।

४ तेरा पत्र मगनभाईको दे दिया है।

बापू

[पुनश्च]

तू शान्त हो गई है तो अब शान्त ही रहना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१०२ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

४०६. पत्र : नारणदास गाधीको

२४ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

मैंने लीलावतीको वेतन देनेका सुझाव दिया था किन्तु तुम उस सम्बन्धमे लिखना भूल गये हो। यदि उसे वेतन दिया जा सकता हो तो देना।

यदि धीरूको अहमदाबाद या भावनगर भेजना हो तो भेज देना। यदि वह स्वीकार करे तो दोनो जगह लिखकर पूछ लेना।

१ लीलावतीने पूछा था "(१) क्या द्रव्यवाचक सज्ञाके पहले 'आर्टिकल' (उपपद) लगाना चाहिए, जैसे घी, दूध, गुड, शक्कर, पानी आदि? (२) मैं सिर्फ इतना ही जानती हूँ कि 'वुड' 'विल' का भूतकाल है किन्तु कई बार वर्तमानकालमें भी इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे 'आई वुड लाइक टु डू दिस'। कभी कभी भूतकालमें भी 'वुड' का प्रयोग किया जाता है। 'इ जतो' की अंग्रेजी 'आई वुड गो' होती है। इस वाक्यमें 'वुड' का क्या अर्थ लेना चाहिए? (३) पाठमालामें जो वाक्य दिये गये हैं, क्या उनका गुजरातीसे अंग्रेजीमें अनुवाद करना मुझे जारी रखना चाहिए? (४) क्या मुरब्बी मगनभाईके नाम लिखा मेरा गुजराती पत्र उन्हें मिल गया?"

यदि खाँसी हो तो उसे अभी मत भेजना। भले वह थोड़े दिन वहीं रहकर जितना सम्भव हो, उतना काम करे और अपना स्वास्थ्य सुधारे। यदि माणेकलाल उसका खर्च उठा सके तो उसे अवश्य उठाना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

इन दिनों जो जोशी नामक शिक्षक है, क्या वह खादी नहीं पहनता?

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४६५ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

४०७ पत्र . लुइसेत गियसको

२५ जुलाई, १९३५

प्रिय बहन,

मीराको लिखा आपका लम्बा पत्र पढ़ा। अगर वह भारतीय व्यापारी आपके पास न आया हो तो इससे मालूम होता है कि आपके काममें उसकी रुचि नहीं है। आपको भूलाभाई देसाईको लिखने की जरूरत नहीं है। मैं उन्हींसे यह जानने की कोशिश करूँगा कि उनके क्या इरादे हैं। प्रो० वाडियासे कोई आशा न रखें। वे शायद ही कोई सहायता कर सकें। मेरी तो पक्की सलाह है कि किसी भी कारणसे कर्जेमें न पड़ें, तब अगर प्रकाशित न कर सकें तो प्रकाशन बन्द कर दें।[1] सिवाय समाचार और साहित्य प्राप्त करने के और किसी भी तरहसे भारतसे सहायता मिल सकनेपर निर्भर न रहें। यदि यह छोटा-सा बोझ उठानेवाले साधन-सम्पन्न फ्रांसीसी भी पर्याप्त संख्यामें न हों तो आपको यह काम बन्द करके खुद अपने निजी श्रमका सहारा लेना चाहिए। ईश्वर किसीसे भी, जो सम्भव नहीं है, उसकी अपेक्षा नहीं रखता। आप जो भी करें, उसीके लिए और उसीके नामपर करें। फिर आप जो भी करेंगी, उसके लिए आप नहीं, बल्कि वही जिम्मेवार होगा। हालाँकि यहाँ कई मित्रोंका विचार अन्यथा है, परन्तु मेरा यह निश्चित मत है कि हमें विदेशोंमें प्रचार करनेपर कोई पैसा खर्च नहीं करना चाहिए। हममें जितनी योग्यता और अच्छाई होगी, उसका प्रचार तो अपने-आप होगा, और उससे आगे जो-कुछ किया जायेगा, वह हमारी दुर्बलता छिपाने के लिए ही होगा।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई

१ लुइसेत गियसने अपनी पत्रिका नुवेल द लैंद के लिए आर्थिक सहायता माँगी थी। इसके प्रकाशनमें उनपर ५,००० फ्रांकका कर्ज बढ़ गया था।

४०८. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
२५ जुलाई, १९३५

चि० मेरी,

खुद मैं तो एक पैसा भी नहीं भेज सकता, क्योंकि किसीको देनेके लिए मेरे पास अपना तो कुछ है नहीं। लेकिन जमनालालजी ५० रुपये भेज देंगे। तुम्हारा पत्र उनको दिखाया तो उन्होंने तुरन्त कहा कि वे भेज देंगे। जहाँतक आहारका सम्बन्ध है, तुम्हें अपनी जरूरतोंमें कोई कटौती नहीं करनी है। सेवाके निमित्त स्वस्थ होनेपर पूरा ध्यान दो।

दोनों मेरी सोमवारको सुमित्राके साथ चली गई। मेरी 'सी' और सुमित्राकी आपसमें नहीं बनती है। लेकिन सुमित्रा अपने वादेके मुताबिक छह महीनेकी वह अवधि पूरी कर देनेपर दृढ है।

डॉ० प्रेमनाथने मुझे पत्र नहीं लिखा है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५५) से। सी० डब्ल्यू० ३३८५ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

४०९. पत्र : अब्बास के० वरतेजीको

२५ जुलाई, १९३५

चि० अब्बास,[1]

तुम्हारा सुझाव ठीक है। उसपर अमल करनेकी व्यवस्था की जा रही है। कत्तिनोंकी मजदूरी कुछ बढनी ही चाहिए। यदि इस काममें तुम्हारी मददकी जरूरत हो तो क्या तुम्हें वहाँसे मुक्ति मिल सकेगी?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६३११) से।

१ साबरमती आश्रममें कताई-बुनाईके शिक्षक।

४१० पत्र : क० मा० मुंशीको

२५ जुलाई, १९३५

भाईश्री मुशी,

तुम्हारा पत्र ओर अन्य वस्तुएँ मिल गई हैं।

तुम्हारी विज्ञापन-सूची मुझे तो बहुत अटपटी लगी। हम दोनोका दृष्टिकोण ही अलग हे। ' उसकी बारीकियोमे नही पडूँगा। यदि मै तुम्हे इस बातके लिए राजी कर सकू तो कहूँगा कि तुम्हे केवल पुस्तकोके ही विज्ञापन लेने चाहिए। किन्तु इस मासिक पत्रिकाके प्रबन्धके मामलेमे मुझे दखल देनेका अधिकार नही है। अत सिफ इतना ही कहता हूँ कि इसपर जितना नियन्त्रण लगाया जा सके, उतना लगाना।[1]

गुरुदेवको लिखे तुम्हारे पत्रसे देखता हूँ कि तुमने सलाहकार मण्डलकी बात छोड दी है। यदि ऐसा ही हो तो मुझे यह बात पसन्द है।

जहाँतक मै समझता हूँ, देशी रियासतोके बारेमे भूलाभाई देसाईने जो राय दी[2] वह रियासतोके सरकारसे सम्बन्धके बारेमे लागू होती है, न कि जनताके रियासतसे सम्बन्धके बारेमे। यदि मेरी यह मान्यता सही हो तो भूलाभाईकी रायमे मुझे कोई दोष नजर नही आता। मुझे लगता है कि उनकी रायमे बारीकी हे और वह है भी सही। देशी रियासतो ओर वहाँकी जनताका सम्बन्ध तथा देशी रियासतो और ब्रिटिश भारतकी जनताका सम्बन्ध, ये दो अलग बाते है। भूलाभाईके सामने यह सवाल नही था। भूलाभाईकी राय जब पहली बार अखबारोमे प्रकाशित हुई थी तभीसे मै यह मानता आया हूँ। उनकी राय और कांग्रेसकी नीतिमे मुझे तनिक भी विरोध नजर नही आता। देशी रियासतोकी जनता अपने अधिकार अंग्रेज सरकारसे नही बल्कि रजवाडोसे मागेगी।

गुरुदेवको जल्दी ही पत्र भेज दिया जायेगा। उक्त पत्र महादेव लिखेगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५७९) से, सौजन्य क० मा० मुशी

१ देखिए "पत्र क० मा० मुशीको", ८-७-१९३५।

२ भूलाभाई ने वकील की हैसियत से देशी राज्योंके कुछ राजाओं को सघ (फेडरेशन) में शामिल होने के सवालपर अपनी राय दी थी, यहाँ आशय सम्भवत उसी राय से है।

४११. पत्र : हरिगोविन्द गोविलको

२५ जुलाई, १९३५

भाई हरि गोविल,

तुमारी किताब पढने को प्रयत्न तो कर रहा हू। अखबार पढ लिये है। उसमे बहूत अतिशयोक्ति पाता हू। जितनी सस्था नैसर्गिक उपचारके लिये तुमने देखी है उसका नाम-ठाम मुझे भेजीये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२३) से।

४१२. पत्र : कमलनयन बजाजको

२५ जुलाई, १९३५

चि० कमलनयन,

तुमारा स्वच्छ खत मुझे मिला है। अपने दोषोका स्वीकार कर लेता है सो तो बहूत अच्छा है। अब [एक] कदम आगे जाओ। दोषोको दूर करने का बडा प्रयत्न करो। रोजनिशीमे[1] नित्यकर्म दे सकता है। प्राथना दो बार तो कर ही सकता है। रामधुन तो है ही। आलस्य छोडने के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि नित्य नियम बना लेना और उसपर कायम रहना, भले कम काम हो। व्यायामको नित्य-कर्मका अनिवार्य हिस्सा माना जाय।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०५१) से।

१ डायरीमें।

४१३. पत्र : केवलरामको

वर्धा
२६ जुलाई, १९३५

चि० केवलराम,

मुझे जिन बातोका डर था, वे सब सच साबित हुई। वास्तवमे देखा जाये तो निजी या सावजनिक बेइज्जती-जैसी कोई चीज नही होती। उसमे भी [मुझ-जैसे] सार्वजनिक कार्यकर्त्ताके लिए। मेरी बेइज्जती जनताकी और जनताकी बेइज्जती मेरी बेइज्जती है। हम ही जनता है और जनता ही हम है। विश्व और व्यक्तिमे भेद कहाँ है?

चाहे तुम भाग्यशाली हो या भाग्यहीन, तुम गँवा तो इसीलिए सकते हो न कि कोई तुम्हे उधार देनेवाला है? तुम मेरी सलाह माँगते हो। तुम दो नियमोका पालन करो

१ तुम कुछ भी नही करोगे।

२ स्वतन्त्र रूपसे कोई काम-धधा नही करोगे।

तुम्हारी स्वतन्त्रता तुम्हारी परतन्त्रता है। किसीके यहाँ स्वेच्छासे नौकरी करने मे परतन्त्रता कहासे आ गई? तुम जब किसीको नौकर रखते हो तो क्या उसकी स्वतन्त्रता छीन लेते हो? नौकर और मालिक तो मनुष्यके बनाये हुए भेद है। नौकरीका तात्पय है कुछ नियमोका पालन और मालिक अर्थात् स्वच्छदता। इनमें से तुम किसे पसन्द करोगे? ये सीख मै तुम्हे कबतक देता रहूँगा? तुम्हारी भूलोको मुद्दा बना कर भी यदि मै किसीकी कुछ सहायता कर सकू तो यह केवल [आत्मप्रशसा][1] है। लेकिन इसमे मुझे कोई सार नजर नही आता। अच्छा तो यह हो कि तुम इन गलतियोसे हमेशाके लिए कुछ शिक्षा ले लो।

बढवाणका इलाज अच्छा है। वहाँ तुम्हारा घर है, तुम्हारे उदार पिता है। वहाँ जाओ और अपना स्वास्थ्य सुधार लो। उपवाससे तुम्हारा स्वास्थ्य सुधर जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

१ यहाँ साधन सूत्रमें शब्द स्पष्ट नहीं हैं।

४१४ सलाह आश्रमवासियोंको[1]

[२७ जुलाई, १९३५ के पूर्व]

हमारी योग्यताको जितना छोटीसे-छोटी बातोंसे परखा जाता है उतना बड़ी-बड़ी बातोंसे नहीं। आप जरा अच्छे कागजपर और अधिक साफ-साफ लिख सकते थे। और निश्चय ही अंग्रेजीमें लिखनेका तो आपके पास कोई कारण नहीं था, जब कि आप यही बात गुजराती या हिन्दीमें लिख सकते थे और जैसा कि जाहिर है, आप अंग्रेजी उतनी अच्छी तरह नहीं जानते। 'पाई-पाईका खयाल करो तो रुपया अपने-आप जुड़ जायेगा' – यह नियम केवल अर्थशास्त्रकी दृष्टिसे ही उपयोगी नहीं है। यह एक नैतिक नियम भी है। आपको चाहे जितना छोटा काम करना हो, उसे आप अपने तईं अच्छेसे-अच्छे ढंगसे करें। उसे उतने ही मनोयोगसे करें जितने मनोयोगसे आप वह काम करेंगे जिसे आप अधिकसे-अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। कारण, आपकी योग्यताकी परख उन छोटे-छोटे कामोंसे ही होगी।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २७-७-१९३५

४१५ आरम्भ कैसे करें

खादीके कारीगरोंके लिए मजदूरीकी मानक दर स्थिर कर दी जाये या न्यूनतम मजदूरी दर, मगर कोई परिवर्तन निश्चित प्रतीत होता है। एक विरोधी मतके सिवा, अबतक जो बहुत-सी रायें मिली हैं उनमें से किसीने भी बढ़ी हुई दर निश्चित करनेके मेरे प्रस्तावका विरोध नहीं किया है। आठ आनेवाले प्रस्तावका[2] अभीतक कोई समर्थक नहीं मिला है। कुछ लेखक आठ आनेवाले प्रस्तावको खादीके लिए घातक समझते हैं। वे कहते हैं कि उस सूरतमें खादीकी कीमत इतनी अधिक बढ़ जायेगी कि उसके बहुत थोड़े-से ग्राहक रह जायेंगे। कुछ भी हो, किसी भी उल्लेखनीय परिवर्तनमें कुछ शर्तें तो पूरी करनी ही होंगी। इसलिए समय रहते ही चेत

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। इन दिनों गांधीजी ने आश्रममें दालके स्थानपर खलीका प्रयोग शुरू करवाया था। उन्होंने प्रत्येक आश्रमवासीसे इस परिवर्तनके सम्बन्धमें अपनी प्रतिक्रिया लिखकर बताने को कहा था। तीन व्यक्तियोंने इस परिवर्तनसे असहमति प्रकट की थी, सो दालका प्रयोग तो तुरन्त फिरसे आरम्भ करा दिया गया, लेकिन उन्होंने अपने अपने हस्ताक्षरोंके साथ कागजके जो टुकड़े दिये थे उनसे गांधीजी के लिए "सीख देनेका एक मौका निकल आया।"

२ देखिए "मानक मजदूरीकी आवश्यकता", १३-७-१९३५।

जाना और जहाँ भी सम्भव हो नीचे लिखी बातोपर तुरन्त अमल शुरू कर देना समझदारीका काम होगा

१ कार्यकर्त्ताओको कपास चुनने से लेकर बुनाईतक की सब प्रक्रियाओमे पारगत हो जाना चाहिए, ताकि वे दूसरोको सिखा सके।

२ सगठन करनेवालोको अपने-अपने हल्के या इलाकेके तमाम पीजनेवालो, कतैयो, बुनकरो आदि की सूची तैयार करनी चाहिए।

३ उन्हें मालूम होना चाहिए कि उनके कतैये कौन-सी रुई काममे लाते है और फिर उन्हें इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि उससे जितने नम्बरका सूत कत सकता है उससे ऊँचे नम्बरका सूत वे न काते।

४ कतैयो और दूसरे कारीगरोको चेतावनी दे देनी चाहिए कि अगर वे अपने-अपने घरोमे खादी इस्तेमाल नही करेगे तो उन्हे कोई काम नही मिलेगा।

५ जिन कारीगरोको यह चेतावनी दी जाये उनके लिए ऐसी सुविधाए कर दी जाये जिससे वे अपने परिश्रमके बदलेमे हमेशा खादी ले सके।

६ सूतकी एक-एक गुडी जो मिले उसकी समानता और कस की जाच की जाये और जैसे कम सिकी रोटी नही ली जाती वैसे ही असमान और कमजोर सूत भी न लिया जाये।

७ आम तौरपर प्रत्येक कतैयेका सूत अलग जमा किया जाये और जब एक थानके लायक हो जाये तब अलग ही बुना जाये। इससे खादीके टिकाऊपन, उसकी बनावट तथा उसके स्वरूपमे निश्चित तौरपर सर्वागीण सुधार होगा।

८ इस प्रकार तैयार हुए सब थानोपर कागज चिपका होना चाहिए, जिसपर ओटनेवालो, पीजनेवालो, कातनेवालो और बुननेवालो के नाम, यदि ये सारे काम अलग-अलग लोगोने किये हो तो, दिये जाये।

९ जहाँ कारीगर गृहस्थ हो, वहाँ सम्बन्धित परिवारोको सारी प्रक्रियाएँ अपने ही घरोमे करनेके लिए राजी और प्रोत्साहित किया जाये। जब मजदूरी समान या लगभग समान हो जायेगी तब यह काम आसान होगा।

१० जो परिवार कायकर्त्ताओके प्रभावमे आये उनके जीवन और आय-व्ययका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाये और जो अपनी कमाई विवेकपूवक खच करते है उन्हे मदद दी जाये।

११ सघ जिन कारीगरोकी सेवा करता है उनकी सख्याको ग्राहकोकी कमीके कारण यदि कभी घटाना जरूरी हो जाये, तो पहले उन्हे अलग किया जाये जिनके पास आजीविकाके दूसरे साधन हो। मुझे मालूम हुआ है कि आजकल कई प्रान्तोमे कातने का काम सिर्फ वही बहने नही करती जो सबसे ज्यादा जरूरतमन्द है, बल्कि खाते-पीते घरोकी वे जुगती स्त्रियाँ भी करती है जिन्हे अधिक अच्छे भोजन या कर्ज चुकानेके बजाय अपने लिए छोटी-मोटी चीजे खरीदनेको थोडा-सा रुपया चाहिए।

१२ हर जगह कायकर्त्ताओको धुनकियो और चरखोकी ध्यानपूर्वक परीक्षा करनी होगी। खास तौरपर उन्हे देखना होगा कि चरखोके तकुए कैसे है और वे कैसे

घूमते हैं। कारण, मजदूरीमें प्रस्तावित वृद्धि विशुद्ध वृद्धि ही नही होगी। कुछ हदतक तो वह वृद्धि उतने ही समयमे पहलेसे ज्यादा और बेहतर माल तैयार करने का परिणाम होगी और कुछ अशोमे विशुद्ध रूपसे वृद्धि ही होगी। अगर खादीकी माँग न बढी तो ऐसे किसी भी कतैयेकी मजदूरीमे, जो अपने कामके ढगमे सुधार नही करेगा, वृद्धि होनेकी सम्भावना नही है।

१३ पिछले अनुच्छेदसे यह निष्कर्ष निकलता है कि पहली बार तो सघ आसान शर्तोंपर नये यन्त्र या पुर्जे मुहैया करेगा। माल और तकुओमे परिवतन करने से बहुत-से कतैये तो सहज ही अधिक मात्रामे ज्यादा अच्छा सूत कातने लगेंगे।

ये सब शर्तें तभी पूरी हो सकती है जब कायकर्ता अच्छी तरह समझ ले कि उनके सामने एक बडा लक्ष्य है और वे अध-भखी अवस्थामे या ठीक भोजन न पानेवाले कारीगरो और मजदूरोके एक विशाल परिवारके ही मामूली सदस्य है।

मैंने कपासके उत्पादनकी कोई चर्चा नही की है। आजतक मै बाजारके लिए तैयार की जानेवाली खादीकी ही बात करता आया हूँ। स्वावलम्बी खादीके कुछ और नियम होंगे। यदि कतैये अपनी जरूरतकी कपास खुद पैदा न करेंगे या अगर लगभग हरएक गाँवमे कपास पैदा न की जाने लगेगी तो यह कभी सफल नही होगी। इसका मतलब यह हुआ कि जहाँतक स्वावलम्बी खादीका सम्बन्ध है, कपासकी खेतीका विकेन्द्रीकरण करना होगा। इसके लिए हमे उन गावोके सम्बन्धमे आवश्यक आँकडे एकत्र करने होंगे जिनमे खादी-सेवा की जा रही है। कारण, प्रत्येक कतैये या बुनकरके पास तो जमीन (बहुत थोडी जमीन भी) होगी नही, जिसमे वह अपनी जरूरतकी कपास पैदा कर सके। स्वावलम्बी खादीका सवाल बहुत बडा है और केवल इसीको हल करने के लिए अखिल भारतीय चरखा सघके अस्तित्वका औचित्य ठहराया जा सकता है। यह ऐसा क्षेत्र है जिसमे सघने अबतक कोई उल्लेखनीय काय नही किया है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २७-७-१९३५

४१६. टिप्पणियाँ

नियमोकी पाबन्दीकी जरूरत

प्रान्तोमे हरिजन सेवक सघकी जो अनेक अत्यन्त उपयोगी शाखाए खुल गई है उनकी समुचित व्यवस्थाके लिए बनाये गये नियमोके पालनकी आवश्यकतापर जोर देते हुए केन्द्रीय बोर्ड समय-समयपर प्रान्तीय सघोको गश्ती चिट्ठियाँ लिखता रहता है और प्रोफेसर मलकानी उनकी नकले कृपापूवक मुझे भी भेजते रहते है। जबतक ये शाखाएँ सभी नियमो और केन्द्रीय बोड द्वारा समय-समयपर जारी किये गये तमाम निर्देशोका पालन न करेगी तबतक ये अच्छी तरहसे या आपसमे एक-दूसरेके साथ तथा केन्द्रीय बोडके साथ तालमेल रखते हुए काम नही कर सकेगी। बजटसे सम्बन्धित शर्तो या हिसाब-किताब तैयार करने के बारेमे की जानेवाली अपेक्षाओ को पूरा न करनेपर वित्त-व्यवस्था गडबड हो जायेगी और यह बात इस बोडके लिए, जिसकी अनेक शाखाएँ है और जिन शाखाओमे से प्रत्येकके अधिकारमे बडी-बडी राशिया है, बहुत बुरी होगी। यदि किये गये कार्योके विवरण नियमित रूपसे नही भेजे जायेगे तो केन्द्रके सामने कोई तसवीर ही नही रहेगी और इससे सारा काम अव्यवस्थित हो जायेगा। यदि सदस्य बैठकोमे भाग लेने उपस्थित न होगे तो सघका काम अटक जायेगा, जिससे एक प्रकारका गतिरोध पदा हो जायेगा और अन्तमे कामका सारा सिलसिला ही टूट जायेगा। जब व्यापारिक पेढियोके लिए नियमो और निर्देशोका ठीक-ठीक ध्यान रखा जाना जरूरी माना गया है तब यह सहज ही समझा जा सकता है कि किसी स्वैच्छिक, परमार्थी या प्रायश्चित्तके निमित्त सस्थापित सस्थाके लिए यह कितना अधिक आवश्यक है। इसलिए यह आशा करना उचित ही होगा कि सघके सभी घटक केन्द्रकी अपेक्षाएँ पूरी करने को प्रयत्नशील रहेगे और इस तरह नियमानुसार व्यवहार करके ऐसी स्थिति उत्पन्न करेगे जिससे अस्पृश्यताका यह महा-विकार हमारे बीचसे शीघ्र ही मिट जाये।

श्लीलताके सम्बन्धमें निवेदन

एक भाईने, जो खुद सम्पादक है, एक अखबारकी कुछ कतरने भेजी है। उसके मालिक या व्यवस्थापक एक सुयोग्य लोक-सेवक माने जानेवाले सज्जन हैं। एकको छोडकर ये सभी कतरने दवाओके बारेमे थी। मेरे विचारसे ये सबकी-सब बहुत आपत्तिजनक थी, उनमे अश्लील बाते थी — मनुष्यकी पाशविक वासनाको जगाने और भडकानेवाली। ये विज्ञापन उस अखबारके हालके अकोसे लिये गये थे। उन सबमे सुझाई गई दवाओका सेवन करनेवालो के लिए फिरसे जवानी ओर ताजगी पानेका दावा किया गया था। उनमे जो वणन दिये गये थे वे पढनेवालो के मनको घृणासे भर देते थे। उनमें से कुछ तो सरासर झूठ थे।

पत्र-लेखकने मुझे बताया है कि इस अपराधका दोषी अकेला वही अखबार नही है जिससे य कतरने ली गई है। वे मुझे दूसरे ऐसे अखबारोसे भी, जिन्हे लोक-प्रिय और प्रतिष्ठित पत्र माना जाता है, इस तरहकी कतरने भेजने को तैयार है।

ऐसे अखबारोके मालिकोको शायद यह पता नही होता कि उनमे अश्लील विज्ञापन प्रकाशित किये जाते है। उन्होने शायद उनको पढा भी न हो। मै आशा करता हूँ कि सम्पादक और व्यवस्थापक अपने-अपने अखबारोके विज्ञापनोका अध्ययन करेगे और ऐसे विज्ञापनोको छाँट देगे जो निस्सन्देह आपत्तिजनक है। मै यह भी मानता हूँ कि प्रान्तोके पत्रकार सघ इस मामलेको हाथमे लेगे और अखबार-मालिकोको विज्ञापन स्वीकार करने मे सयम और विवेकसे काम लेनेपर राजी करेगे। उनसे ऐसी अपेक्षा रखना अनुचित न होगा कि वे ऐसे सभी विज्ञापनोको छाट देगे जिनसे सावजनिक नैतिकताके नियमोके दूषित होने या श्लीलताकी भावनाको चोट पहुँचने की सम्भावना है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २७-७-१९३५

४१७. पत्र : जॉन हाईनीज होम्सको[1]

वर्धा
२७ जुलाई, १९३५

प्रिय मित्र,

यह पत्र श्री हीरालाल शर्माका आपसे परिचय करानेके निमित्त है। ये अमेरिकाके लिए बिलकुल अजनबी है। ये रोगोकी प्राकृतिक चिकित्सा-सम्बन्धी विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए अमेरिका जा रहे है। डॉ० केलॉगके बैटिल क्रीक सेनीटोरियमने इनका ध्यान आकर्षित किया है। मुझे अब डॉ० केलॉगके एक प्रतिनिधिसे मालूम हुआ है कि उन्होने शिष्य बनाना बन्द कर दिया है। मै तो श्री शर्माके पथ-प्रदशकके रूपमे आपसे अच्छे किसी आदमीके बारेमे सोच नही सकता। ये वहाँ एक बहुत ही गरीब आदमीकी तरह रहना चाहते है। ये बहुत परिश्रमी है। यदि किसी प्रकार ये अपनी शिक्षा और भोजनके निमित्त कुछ काम प्राप्त कर सके तो उन्हे भी पसन्द होगा और मुझे भी। यदि यह न हो सका तो एक मित्र इनकी सहायता करेगे और इनका तमाम खच वही उठायेगे। आपसे जो भी सहायता बन पडे, इनको देनेकी कृपा कीजिए। मै श्री शर्माको कोई और परिचय-पत्र नही दे रहा हूँ — हरिदासके नाम भी नही। इस सम्बन्धमे आप जो-कुछ भी आवश्यक समझें, करने की कृपा कीजिए। मै जानता हूँ कि जो कष्ट मैं दे रहा हूँ, उसको आप कष्ट नही मानेगे। आपको

१ इस पत्रकी एक नकल हीरालाल शर्माको भी दे दी गई थी।

यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री शर्मा यह अध्ययन केवल रोगी लोगोंकी सेवाकी खातिर ही कर रहे हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७६-७७

४१८ पत्र : छगनलाल जोशीको

२७ जुलाई, १९३५

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे और नारणदासके बीच जो भी थोड़ी-बहुत मिठास है वह भंग हो जाये। अतः मैं तुम्हें पाठशालाके इस झगड़ेसे मुक्त रखूंगा। किन्तु तुम्हारे पत्रसे मैं देखता हूँ कि तुम दोनोंमें आपसमें भयंकर स्वभावगत भेद तो बना ही हुआ है। तुमने एक प्रकारकी सहिष्णुता विकसित कर ली है। इतना ही काफी है कि तुम्हारा काम आसानीसे चलता रहे। जिस चीजके बारेमें तुम मेरा ध्यान आकर्षित करना चाहो उसके सम्बन्धमें मुझे लिखते रहना। उसका जिस तरह उपयोग करना मुझे उचित जान पड़ेगा वैसा मैं करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

रमासे पूछना कि क्या उसके पत्रकी आशा करना ज्यादती है?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५२२) से।

४१९. पत्र : हरिगोविन्द गोविलको

२७ जुलाई, १९३५

भाई गोविल,

भाई हिरालाल शर्मा यह खत दगे। वह नैसर्गिक उपचारका अधिक ज्ञान पानेके लिये अमेरिका जा रहे हैं। बहूत गरीबीसे रहना चाहते हैं। हो सके तो अपने परिश्रमसे आजीविका भी पैदा करना चाहते हैं। उनको सेनेटोरियमके नामठाम दिया जाय; और भी जो परिचय दे सकते हैं दिया जाय। भाई शर्मा कभी हिन्दुस्तानके बाहर नहीं गये हैं।

बापुके आशीर्वाद

श्री हरिगोविन्द गोविल
५४, चौरंगी, कलकत्ता

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२४) से।

४२०. प्रश्नोत्तर[1]

२७ जुलाई, १९३५

प्रश्न : किसी आदर्श गाँवके लिए सफाई तथा आटा, चावल, गुड़, तेल आदि खाने-पीनेके सुधारोंके अतिरिक्त और कौन-कौनसी बातें आवश्यक हैं?

उ० : हरएकमें देखना चाहिये।[2]

प्र० : यदि मुझे यह ठीक पता हो कि माता-पिता आदि सम्बन्धी केवल मोहके कारण ही मुझे किसी सर्वहितकारी कार्यमें सम्मिलित होनेसे रोकते हैं तो क्या मुझको उनकी इस आज्ञाको मानकर बैठ रहना चाहिए?

उ० : तब नहीं मानना धर्म हो सकता है।

प्र० : अपने गुरुजनों (माता, पिता, गुरु तथा शासक वर्ग) की ऐसी आज्ञाका मानना जिससे सत्य, अहिंसा आदि व्रतोंमें से किसी एक व्रतका विरोध पाया जाता हो, ठीक होगा अथवा नहीं?

उ० : नहीं।

१. २५ जुलाई, १९३५ को अवधेशदत्त अवस्थी द्वारा पूछे गये प्रश्नोंके उत्तर।

२. अर्थात् यह तो अलग-अलग गाँवोंकी जरूरतें देखकर तय करने की बात है।

प्र० आयसमाजके दस नियमोमें एक नियम यह भी है कि "प्रत्येक हितकारी नियम पालन करने में स्वतन्त्र तथा सर्वहितकारी नियम पालनमें परतन्त्र रहना चाहिए।" क्या यह ठीक है?

उ० ठीक समजमे नही आता। क्या इसका यह अथ नही होगा कि किसी समाजमे कोई बुरी प्रथा है उसका मिटाना आवश्यक है लेकिन जबतक कुल समाज अथवा बहुमत मिटाने के पक्षमे न हो तबतक प्रथाको मानना चाहिए अर्थात् अकेले ही उस प्रथाका सक्रिय विरोध न करना चाहिए। हा, दूसरे प्रयत्न भले ही करता रहे।

प्र० एक साधारण व्यक्तिके लिए क्या उचित होगा यही बताया जाय। महान् पुरुष जो भी करेगा उसके पीछे तो बहुमत हो ही जाता है।

उ० व्यक्तिको कत्तव्यपर डटे रहना।

प्र० आपने यह बताया है कि जेलके उसी नियमको न मानना चाहिए जो सचमुच स्वाभिमानके विरुद्ध हो। इसलिए यह बताया जाये कि "जोडे-जोडेसे गिनती देना, मार तथा गाली खाते हुए काम करते रहना, हथकडी पहनकर बाल बनवाना, प्राथना न करना, टिकट लेकर परेडपर खडे होना, परेड लगाना, साय-प्रात अनुचित ढगसे तलाशी देना" इन सात बातोमें सचमुच कौन बातें स्वाभिमानके विरुद्ध हैं। क्योकि इन्हीं बातोपर प्राय जेलोमें हर जगह झझट पैदा होते थे।

उ० जिसमे हम धम-हानि माने सो नही करना।

प्र० आपने यह बतलाया है कि पत्नीका पालन करना और जहांतक वह सहधर्मिणी रह सकती है उसका साथ देना पतिका धर्म है। सो यदि पत्नी सहधर्मिणी न हो, विरोधी विचारवाली हो तो पतिका पत्नीके प्रति क्या कर्त्तव्य होना चाहिए। और ठीक ऐसी ही दशामें पतिके प्रति पत्नीका कर्त्तव्य क्या होगा?

उ० दोनोका अलग रहना और पतिका आजीविका देना धर्म है।

प्र० यदि मेरी मौजूदगीमें किसी मौकेपर (विशेषकर दरिद्रनारायण तथा हरिजन) रियासतका किसी भाईको पुलिसका सिपाही अथवा कोई मिथ्याभिमानी (विशेषकर सवर्ण) मनुष्य किसी कारणसे गाली देने अथवा मारने लगे, जैसाकि प्राय हुआ ही करता है, तो ऐसे मौकेपर मेरा क्या कर्त्तव्य होगा?

उ० अन्यायीसे रुक जानेका विनय करना, मजलुमको अहिंसक सहाय देना।

प्र० एक पागल हाथी (अथवा कुत्ता) जो किसी प्रकार काबूमें नहीं आता है और अनेको जानें ले चुका है तो क्या उसको मार देना उचित न होगा? यदि उचित है तो ऐसे ही स्वार्थ तथा काम-क्रोध आदिसे पागल मनुष्योके लिए ऐसी ही अथवा इससे मिलती-जुलती व्यवस्था (राज्यसे) करना उचित ही होगा।

उ० पागल हाथीपर भी यदि सच्चा प्रेम है तो सम्भव है वशमे आये। पागल मनुष्यके लिए स्टेट तो है ही।

प्र०: क्या स्त्रीसे पुरुषमें प्राकृतिक रूपसे कुछ श्रेष्ठता मानी जा सकती है?

उ० नही।

प्र० प्राय स्त्रियाँ पुरुषोकी पोशाक पहननेमें सकोच नहीं करती है जबकि पुरुष स्त्रीकी पोशाक पहनना ग्लानिकी बात समझता है। इसका क्या कारण है?

उ० मेरी समझसे तो स्त्रिया पुरुषत्वको कुछ श्रेष्ठ समझती है। क्योकि पुरुष स्त्रीको दुबल मानता है।

प्र० आपके अगारसे पके हुए अन्न न लेनेका क्या कारण है?

उ० हिसा, खच, समयका बचाव, आरोग्य इत्यादि।

प्र० कुछ कारणोसे मेरी यह धारणा हो गई है कि जबतक विद्योपार्जन करना अभीष्ट हो तबतक राष्ट्रीय अथवा सामाजिक आंदोलनसे सर्वथा पृथक् ही रहे। क्या यह धारणा ठीक है?

उ० इसका निर्णय तुमारे करना है।

बापु

प्रश्नोत्तरोकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२२१) से।

४२१. हिसा बनाम अहिंसा

'हरिजनबन्धु' का एक पाठक लिखता है [१]

हिसा-अहिंसाका द्वन्द्व अनादि है और अनन्त कालतक बना रहेगा। सभी लोग दोनो शब्दोका अलग-अलग अर्थ करेगे और अपनी इच्छा तथा सामथ्यके अनुसार उसपर आचरण करेगे। अत ऐसा लगता है कि इस बहुचर्चित विषयकी और अधिक चर्चा हमे कुछ बहुत आगे नही ले जा सकती। किन्तु दुबलतासे ग्रस्त हमारे आजके वातावरणमे अहिंसाको मै जिस दृष्टिसे देखता हूँ, वह दृष्टिकोण नया-सा जान पडता है और इस कारण अहिंसाके भक्तोको कभी-कभी आघात भी पहुँचता है। अहिसा वीर पुरुषका लक्षण है। कायरता और अहिंसामे घोर शत्रुता है। हमारे भयसे घिरे हुए होने और अहिंसाको विपरीत ढगसे देखने के अभ्यस्त हो जानेके कारण हम उसका सही रूप नही देख पाते।

उपर्युक्त पत्रपर विचार करने के लिए इतनी प्रस्तावना आवश्यक जान पडती है।

हमारे सामने ऐसा कोई प्रमाण नही है कि जहाँ अधिक साँप मारे जाते है, वहाँ औसतन अधिक लोग मरते है। बल्कि इसके विपरीत जहाँ एकमत होकर लोगोने साँपको मारना अपना कर्त्तव्य मान लिया है वहाँ मुश्किलसे ही साँप देखने को मिलते है। किन्तु इस प्रमाणके आधारपर हिसाको धम सिद्ध नही किया जा सकता। अहिसाको प्रमाण देकर ही सिद्ध किया जा सकता है। मारने की प्रथा तो चलती ही आई है। इस दृश्यको देखकर ही किसी वीर पुरुषको ग्लानिका अनुभव हुआ होगा और वह बोल उठा होगा "यह धर्म नही, अधम है। अहिंसा ही सच्चा और शाश्वत धम है।"

१ पत्रका अनुवाद यहाँ नही दिया गया है। पत्र-लेखकने लिखा था कि वह साँपोंके भयसे मुक्त नहीं हो सका है, हालाँकि वह यह जानता है कि अहिसा ही जीवनका धर्म है।

यदि मैने किन्ही विशेष परिस्थितियोमे साँपको मारने का सुझाव दिया हो तो वैसा मैने अहिसा-धमकी उन्नतिके लिए ही किया है, न कि उसका विनाश करने के लिए। अहिसा मानसिक वृत्ति है। यदि मै भयवश किसी साँपको मारू किन्तु मेरा प्रयत्न उससे मैत्री करने का हो तो इसमे मेरी अहिसाको लज्जित होनेका कोई कारण नही है। यदि मै पूरी तरहसे प्रयत्न करूँगा तो मेरा वह प्रयत्न मफल भी हो सकता है।

सर्पादिको न मारने मे हम दयाका उपयोग नही करते बल्कि रूढिसे बँधे होनेके कारण हमे उसमे अहिंसाका आभास मिलता है, इसलिए साँपको नही मारते। हम ऐसा नही कह सकते कि मनुष्य जिनसे डरता है उनपर वह दया दिखाता है। जो बलवान होगा वही निबलपर दया दिखा सकता है। साँपसे डर लगता है, इसलिए उसे पकडकर दूर छोड आनेमे दया कहा है? ऐसा करते हुए हमारे मनमे सामान्यत इस बातका विचार तक नही आता कि किसी दिन हम सापसे मित्रता करेगे। अहिसा तो जाग्रत मनुष्यका धम है। अहिंसाके उपासकको उसका प्रतिक्षण ज्ञानपूवक उपयोग करना पडता है, क्योकि हम चारो ओरसे हिंसासे घिरे हुए है। इस विकट परिस्थिति-मे से सबको यथाशक्ति अपना रास्ता बनाना पडता है।

अब हम साँपको न मारने की क्रियाकी जाँच करे। यदि साँप हमपर हमला करने आए तो हम उसे अवश्य मार डालेगे बशर्ते कि हममें वैसा करने की हिम्मत हो। सामान्यत हम उसे नही मारते, क्योकि वह हमपर हमला नही करता। वह अपने रास्ते जाते हुए भूले-भटके हमारे घरमें पहुँच जाता है। इसलिए हम उसे पकडकर दूर फेक आते है और वह हमपर हमला न करे इस बातकी सावधानी बरतते हुए उसे जितना दुख देना आवश्यक हो उतना दुख देते है। इसके पीछे दया काम नही करती, बल्कि अहिंसाके स्वीकृत धमका पालन न करने के कारण अगले जन्ममे मिलनेवाले दण्डका भय काम कर रहा है। हमने साँपको न मारकर कोई बहादुरी नही दिखाई, और उसे मार देनेमे कोई पराक्रम भी न होता। [मारने और न मारने] दोनो कामोके पीछे भयकी प्रेरणा है। यदि मुझमें सच्ची दया होगी तो मै सापको पकडकर उससे मित्रता करूँगा और अन्य लोगोको भी उसके भयसे मुक्त करूँगा। यह ठीक है कि ऐसा करनेवाले साधुओके किस्से हम सुनते है। सम्भव है कि ये सब गप्प हो, इनमे अतिशयोक्ति हो। किन्तु यदि अहिसा सच्ची वस्तु है तो साँप और मनुष्यके बीच ऐसी मित्रता होना असम्भव नही है।

यदि उपर्युक्त बाते पाठकको स्पष्ट हो गई हो तो वह समझ जायेगा कि जिस वाक्यके बारेमे शका उठाई गई है उसमे शकाकी कोई गुजाइश नही है।[1] किन्तु

१ पत्र लेखकने १४-७-१९३५ के हरिजनबन्धुमें प्रकाशित महादेव देसाईके अनुवाद "आदर्श और व्यवहार" से निम्न वाक्य उद्धृत किया था "अहिंसा जीवनका नियम है, पर यदि मैं साँपसे डरता हूँ तो उस समय मेरा क्या कर्त्तव्य है? मनसे तो मैं पहले ही साँपका वध कर चुका, सिर्फ मेरी शारीरिक निर्बलता ही बाधा दे रही है। उस समय मेरा धर्म कहता है कि 'उसे मार डाल। उसे मारने से बचने का तेरा जो यह मिथ्या प्रयत्न हैं, वह त्याग दे'।"

इसका यह मतलब नही कि जबतक साँपका भय चला न जाये तबतक उन्हे देखते ही मार देना चाहिए। किन्तु जहाँ सापोका भय बना ही रहता है वहाँ उन्हे मारनेमे सकोच करनेकी आवश्यकता नही है, क्योकि उक्त भयके पीछे मनकी अतल गहराईमे उन्हे मारनेकी इच्छा बनी ही हुई है। यदि कोई साँपको मार देता है तो वह निर्भयता अनुभव करता है। अहिंसक व्यक्तिके लिए इससे अधिक दयनीय अवस्थाकी कल्पना मै नही कर सकता। सर्पादिको मित्र बनानेका प्रयास करनेवाला व्यक्ति ऐसी समस्याओको रिवाजके माफिक सुलझाकर ही सन्तुष्ट नही रहेगा, बल्कि ऐसे हिंस्र प्राणियोकी किसी भी तरहसे हिंसा न करके उनके भयसे मुक्त होनेका प्रयास करेगा।

सुन्दर स्त्रीका उदाहरण यहाँ बिलकुल नही घटता। यदि किसीके मनमे सुन्दर स्त्रीके प्रति विकार उत्पन्न हो जाय और वह उसे क्रियान्वित करनेका प्रयत्न करना चाहे तो बहुत-से लोग उसे मारनेको तैयार हो जायेगे। मनुष्य ऐसे विकारोका शमन करता है अथवा जान-बूझकर विकारोको पोसकर अपनी मौत खुद बुलानेका उपाय करता है। सर्पके साथ तुलना तो इस प्रकार हो सकती है। मै किसी स्त्रीपर मोहित हो जाऊँ और अपने मोहको क्रियान्वित करनेकी कोशिश करूँ, इसकी अपेक्षा मुझे अपने मनमे रहनेवाले सपका नाश करना चाहिए, अर्थात् मुझे कुँएमें डूब मरना चाहिए। यह सच्ची अहिंसा होगी और पराक्रमका काम माना जायेगा। इस जगत्मे सर्पादि हमारे लिए प्रतीकस्वरूप हैं। हमारे मनके विकार बुराईके प्रतिबिम्ब हैं। यदि हम अपने मनके विकारोपर विजय पानेका भगीरथ प्रयास करे तो हम अपने मनमे रहनेवाले सर्पादि-रूप बन्धुओके भयसे मुक्त हो जायेगे। किन्तु जबतक हम इस भयको नही छोड पाते तबतक मैत्रीकी इच्छा रखनेके बावजद जो उचित समझे सो करे।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, २८-७-१९३५

४२२ पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
२८ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

इसके साथ हरिलालका पत्र है। जैसा मैंने लिखा था वही बात थी न? क्या अब भी वही हाल है? वह कहाँ रहता है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

साथका पत्र मैं इस खयालसे भेज रहा हूँ कि उसमें शिक्षाकी दृष्टिसे चरखेकी उपयोगितापर विचार किया गया है। पत्रमें जो-कुछ कहा गया है वह हमारे सोचने-समझने लायक है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४६६ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

४२३ पत्र : एल० आर० डूचाको

वर्धा
२९ जुलाई, १९३५

प्रिय मित्र,

खादीके बारेमें दिये मेरे सुझावोंके सम्बन्धमें आपने जो बातें कही हैं, उनके लिए आपका धन्यवाद।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री एल० आर० डूचा
समाज-सेवक
३२२४/ए लिंगमपल्ली
हैदराबाद, दक्षिण

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७४२) से, सौजन्य एल० आर० डूचा

४२४ पत्र · सी० एफ० एन्ड्रयूजको

२९ जुलाई, १९३५

प्रिय चार्ली,

अगर तुमने १७ तारीखके लिए टिकट लिया हो तो तुम्हे शान्तिनिकेतनसे अब बहुत जल्द ही चल देना चाहिए। अन्यथा अन्तमे बडी भागदौड होगी। वेरियरके साथ एक दिन बिताने की बात तो ठीक है, लेकिन तुम्हारे पास कोडाई [कनाल] जानेका समय नही है। एस्थरकी समस्या बहुत कठिन है। मेरा विचार यह है कि मेननको भारतमे तो अवश्य जमे रहना चाहिए, लेकिन तजौरमे नही। सच्चे कौशल का मूल्य तो हर जगह मिलता है।[1]

× × ×

श्रीमती अम्बालाल अहमदाबादमे है। वे लोग अभी हालमें ही लौटे है। वे भली-चगी है।

अगर तुम यूरोपीय पाठकोके लिए काग्रेसके बारेमें कुछ सारपूर्ण चीजे लिख सको तो अच्छा है। लेकिन, वह चीज स्वतन्त्र रूपसे लिखी हुई होनी चाहिए और लेखकके रूपमे केवल तुम्हारा ही नाम होना चाहिए। तुम गिरिजा या किसी और के नामके साथ अपना नाम जोडो, यह नही हो सकता।[2]

[पुनश्च]

तुम्हें बताया या नही कि सुधीरको मैंने तुरन्त पत्र लिख दिया था?
आप्रकाशके बारेमे बताना।

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९१) से।

१ इससे आगेकी दो पंक्तियोंके कई शब्द पढ़े नहीं जा सके, जिससे उनका आशय स्पष्ट नहीं हो पाया। अतः उनका अनुवाद नहीं दिया जा रहा है।

२ देखिए "पत्र सी० एफ० एन्ड्रयूजको", १८-७-१९३५।

४२५ पत्र : पद्माको

२९ जुलाई, १९३५

चि० पद्मा,

यदि मै रगीन कागजका टुकडा काममे लाऊँ तो एक पैसा खर्च अधिक बैठेगा और फिर वह हाथका बना कागज भी नही होगा। बीमार तो पडना ही नही चाहिए। क्या तेरे पास मगनचरखा है? यह बहुत अच्छी बात है कि शीला हरिजन पाठशाला मे पढती है। क्या अन्य सभी कातते है? यहाँ तो आजकल जरूरतसे ज्यादा वर्षा हो रही है।

बापूके आशीर्वाद

नकल (जी० एन० ६१५२) से। सी० डब्ल्यू० ३५०८ से भी, सौजन्य प्रभुदास गाधी

४२६ पत्र . क० मा० मुशीको

२९ जुलाई, १९३५

भाई मुशी,

विज्ञापन-सम्बन्धी मेरे सुझावके प्रति तुम्हारी अनुकूलताके कारण मै उलझनमे पड गया हूँ क्योकि इससे मेरा बोझ बढ जाता है और मुझे ऐसा भय होने लगता है कि मेरे विचारोके अनुसार काम करने की तुम्हारी आदतका मुझसे जाने-अनजाने कही दुरुपयोग न हो जाये और इस प्रकार मै तुम्हारे जैसे साथीको कही खो न बैठूँ। वैसे इसमे कोई सन्देह नही कि इस तरहके सयमसे अखबारकी प्रतिष्ठा बढेगी।

मै भी यह मानता हूँ कि भूलाभाईका सुझाव[1] बहुत प्राविधिक है।

सलाहकार-मण्डलके बारेमे मै समझ गया।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९५८०) से, सौजन्य क० मा० मुशी

१ देखिए "पत्र क० मा० मुशीको", २५-७-१९३५ भी।

२ देखिए "पत्र क० मा० मुशीको", ८-७-१९३५ भी।

४२७. पत्र : प्रभुदास गांधीको

२९ जुलाई, १९३५

चि० प्रभुदास,

तेरा पत्र मिला। मुझे तो तेरा बनाया हुआ चरखा पसन्द आया। इसलिए मैंने काफी मेहनत करके उसपर अधिकार भी कर लिया। मैंने उसमे कुछ सुधार भी किये जो मुझे सूझे। लेकिन तेरा बजट पास नही हो सका। दो व्यक्ति मैं कहाँसे लाऊँ? यदि मारुति[1] अथवा लक्ष्मीदासके[2] मनमे उत्साह पैदा कर सके तो बात बन सकती है। लेकिन आप मरे बिना स्वर्ग नही दीखता। इसलिए मुझे तो लगता है कि तुझे अकेले ही जूझना पडेगा। मुझसे जो हो सकेगा सो करूँगा।

तेरा क्षेत्र निश्चित कर दिया गया है और फिलहाल तू गुलरिया नही छोड सकता। वहाँ जो हो सके सो करना। तेरा पत्र मैं ईश्वरलाल, विनोबा और काकाको पढवा दूंगा। तुझे तनिक भी बेचैन नही होना चाहिए। कताईके बारेमे मेरे आँकडे सही है।

ग्रामोद्योगके बारेमे तू भ्रममे है। जितने उद्योग तूने गिनाये है उनमे यदि उतने ही और जोड दिये जाये तो भी तू यह सिद्ध नही कर सकता कि किसी खास पैमाने के अनुसार मजूरीमे घट-बढ हुई है। जो विषमता है वह स्त्रियो और पुरुषोके बीच है। यह उस सिद्धान्तके अनुसार नही है कि जितनी अधिक जोखिम, उतनी अधिक तनख्वाह। प्रकृतिने सबकी आवश्यकता एक-जैसी रखी है, उनकी सभी उद्योगोमें एक-जैसी मजूरी होनी चाहिए। तूने विषमतामे समता देखी है। यह निरा भ्रम है। इसपर पुन विचार करना। मै यह मानता हूँ कि जो लोग आज अधिक वेतन पा रहे है वे कम नही लेगे। इसका मुझे दुख नही है। कम वेतन लेनेवालो को यदि न्याय मिल जाये तो मुझे सन्तोष हो जायेगा। यदि सभी लोग बुद्धिमान या भले बन जाये तो वे हर कामके लिए समान वेतन स्वीकार कर लेगे। फिर काम यज्ञका रूप ले लेगा। किन्तु वह युग अभी बहुत दूर है। यदि हम उस ओर बढे तो यह काफी होगा।

गोपीनाथजी का लेख मिल जानेपर मै उसे जाँचकर तुझे वापस भेज दूंगा। मै नही जानता कि तू जो इसकी प्रशसा करता है वह कहाँतक उचित है। मैंने तो इससे उलटा कुछ सुना था। किन्तु मैंने उसपर कोई ध्यान नही दिया।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

१ मारुति शर्मा।

२ लक्ष्मीदास आसर।

४२८. पत्र अम्बा गांधीको

२९ जुलाई, १९३५

चि० अबा,

तुम्हारा खत अच्छा है। उसमे निराशाकी बू आती है सही, लेकिन हम निराश न बने। हमारे तो कैसा भी सकट हो उसके बीचमे सेवा करनी है और वह भी प्रसन्न चित्त और श्रद्धासे। लोग सुने तो भी सही न सुने तो भी सही।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

४२९. पत्र एस० सी० डिलार्फको

वर्धा
३० जुलाई, १९३५

प्रिय मित्र,

टॉल्स्टॉय उन शिक्षकोमे से थे जिनके आगे मेरा सिर सहज ही झुक जाता था।

बस इतना ही लिखकर भेज सकता हूँ। मै जो अकसर अपने सामानमे से गैर-जरूरी चीजोकी छँटनी करता रहता हूँ उसीके दौरान बहुत-से विदेशी पत्र नष्ट कर दिये। टॉल्स्टॉयके पत्र भी इसके अपवाद नही रहे। मै अपनी कोई तसवीर नही रखता।

हृदयसे आपका,

एस० सी० डिलाफ
'स्वोबोदा'
रू ६ सेप्टेम्बर, एन० ५
सोफिया (बल्गारिया)

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

४३० पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

३० जुलाई, १९३५

चि० अम्बुजम,

तुमने जो फोटो भेजा है, सुन्दर है। लडकीका चेहरा मुझे बडा अच्छा लगा। वह भोला और निर्दोष है। उनका जीवन पिताजी ओर माताजी के जीवनको तो भरेगा ही, मै चाहूँगा कि तुम भी अपने जीवनके अवकाशको उससे उसी तरह भर जाने दो। आशा है, किचीकी उँगली बिलकुल ठीक होती जा रही होगी।

कुकर कल ही आया।[1] बहुत अच्छा है। कीमत तुमने नही बताई। फल भी समयसे मिल गये थे।

इस बार कुछ ऐसा हुआ कि फल बडे मौकेसे आये, क्योकि इन दिनो यहाँ कई लोग बीमार है। मगर इसका मतलब यह न समझना कि मै तुमसे और भी फल भेजने को कह रहा हूँ। अभी यहा काफी फल पडे हुए है, क्योकि मुलाकाती लोग कई टोकरे ले आये है।

स्नेह।

बापूके आशीर्वाद

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०४) से, सौजन्य एस० अम्बुजम्माल

४३१. पत्र : जी० सीताराम शास्त्रीको

३० जुलाई, १९३५

प्रिय शास्त्री,

अदला-बदलीकी प्रणाली-विषयक निबन्धके[2] बारेमे मै चुप नही बैठा हुआ हूँ। प्रो० शाहने श्री वैकुण्ठनाथ मेहताका नाम सुझाया है। के०[3] लखनऊके प्रो० रगाका नाम सुझाते है। ये लखनऊके प्रो० राव कौन है? क्या वे आन्ध्रके ह? अगर

१ देखिए "पत्र अम्बुजम्मालको", १९ ७ १९३५।

२ कृष्णा जिला-स्थित गुणाडला खुद्दर सस्थानम्के यू० वेकट कृष्णैयाने विनिमयकी प्रणालीपर सर्वोत्तम निबन्ध लिखनेवाले के लिए पुरस्कारकी घोषणा की थी।

३ शायद जे० सी० कुमारप्पा।

सबसे अच्छा और सबसे अधिक कायल करनेवाले तर्कोंसे युक्त निबन्ध अदला-बदली की प्रणालीके खिलाफ हो तो भी क्या पुरस्कार दिया जाना चाहिए?

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९१७३) से, सौजन्य जी० सीताराम शास्त्री

४३२ पत्र : भगवानजी ए० मेहताको

३० जुलाई, १९३५

भाई भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मै जमनालालजी को भेज रहा हूँ। मै जब उनसे मिलूगा तो अवश्य बात करूँगा। जिस सगाईके बारेमे तुमने बधाई दी है वह टूट गई है। कमलनयन कोलम्बोमे लन्दनकी मैट्रिककी परीक्षाकी तैयारी कर रहा है। यह कहना अनुचित है कि काठियावाडमे ऐसा कोई नही है जो पवित्र जीवन बिताते हुए त्यागवृत्तिसे काम कर सके। इस कथनको सिद्ध नही किया जा सकता। यह कहना जितना सही है कि यथा राजा तथा प्रजा, उतना ही यह कहना भी सही है कि यथा प्रजा तथा राजा। आप भला तो जग भला। क्या तुम छगनलाल जोशीको जानते हो? वह तो गाँवोका दौरा कर रहा है न?

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८२५) से। सी० डब्ल्यू० ३०४८ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

४३३ पत्र : कोतवालको

३० जुलाई, १९३५

भाई कोतवाल,

तुम्हारा मिथ्या लोभ अभीतक क्यो नही जाता? जिसने सेवा की क्या उसकी वह सेवा ही पुरस्कार और प्रमाणपत्र नही है? जिनसे मै सर्वथा अपरिचित हूँ उन्हे क्या प्रमाणपत्र दूँ? तुम्हे तो ऐसी झझटोसे मुक्त हो जाना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५९९) से।

४३४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

३० जुलाई, १९३५

चि० नरहरि,

विद्यालयके बारेमे लिखा तुम्हारा पत्र मै पढ गया। जयाबहनको कितना वेतन दिया जाता है? क्या तुम यह नही मानते कि हमारी शिक्षा-पद्धतिमे कोई ऐसा दोष अवश्य है कि जिससे, हालाँकि हमारे यहाँ कमसे-कम पच्चीस बहने होगी, हम एकको भी वैसा नही बना सके जैसा कि तुम लिखते हो। यदि ऐसा हो तो बाहरसे किसी ऐसी बहनके मिलने की आशा कैसे कर सकते हैं जो हमारे ढाँचेमे ठीक बैठ सके? मुझे तो लगता है कि जैसा हमने बोया होगा वैसा हमे काटना पडेगा। तुम अपने मनमे इस बातका वहमतक मत रखना कि शिष्टाचारके कारण मै अपनी गिनती 'हम लोगो' मे करता हूँ। मै अपनी कमीको भली-भाँति समझता हूँ। मै स्वयको शिक्षक तो मानता ही हूँ किन्तु 'निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते' की तरह ही। यह सब लिखकर मै यही कहना चाहता हूँ कि तुम्हे यह निश्चय कर लेना चाहिए कि जैसी तुम चाहते हो वैसी बहन हमे अपनेमे से ही तैयार करनी है। किसी दिन उक्त प्रयास सफल होगा। बाहर से ऐसी कायकर्त्री प्राप्त करने का प्रयत्न बेकार होगा। यदि इस प्रयत्नमे सफलता मिलने की सम्भावना हो तो भी उसे छोड देनेमे ही हमारा भला और हमारी सेवाकी सफलता है।

क्या तुम बालिकाओको तकलीपर नये ढगसे कताई करना सिखाते हो? यह ढग बहुत ही आसान है। यह देखने मे आया हे कि पन्द्रह दिनमे ही छोटी बालिकाएँ आध घटेमे ८० तारकी गतिसे कातने लगती है क्योकि यह ढग बिलकुल आसान है। समय-समयपर लडकियोकी चरखे और तकलीपर कातने की गति जाँचते रहना।

फिलहाल मै विद्यापीठके बारेमे कुछ नही लिख रहा हूँ।

गोशालाके बारेमे मै लगातार सोचता रहा हूँ। मुझे अब भी यह लगता हे कि या तो हमे किसी पिजरापोलको अपने अधिकारमे ले लेना चाहिए और वहा बेकार पशुओको रखना चाहिए या फिर दुग्धालयके साथ-साथ पिजरापोल भी बनाना चाहिए। ऐसे पशुओको वीडजमे या ऐसी ही किसी अन्य जगहपर रखा जा सकता है। पारनेरकरकी भरवाडोसे सहयोग प्राप्त करने की योजना मुझे अधिकाधिक आकर्षित कर रही है। मै बडे पैमानेपर उसका यहाँ प्रयोग करना चाहता हूँ। डाह्यालालके तैयार होने-भर की देर है। शायद टाइटस आये। उसका तार आया था। पारनेरकरसे मै जो समझ पाया हूँ वह यह कि भरवाडोके पशुओपर हमे पूरा नियन्त्रण रखना चाहिए। हम जैसा कहे वैसा चारा वे पशुओको दे, वैज्ञानिक ढगसे पशुओको दुहे

और उनका पालन-पोषण करे। उनसे जो दूध मिलेगा उसे हम बेच देगे। यदि अतिम दोनो बाते सम्भव न हो तो बात आग मत बढाना।

फिलहाल तो वनमालाको अलोना खानेका अपना व्रत समाप्त करना पडेगा। यदि वह कोई अन्य व्रत ले ले तो अच्छा होगा। तुम शायद भास्कररावसे परिचित हो। वह पहले आश्रममे था और फिर विनोबाजी के पास रहा। मामाकी निगरानीमे भी रहा है। वह बडौदामे है। वह अपने माता-पितासे बहुत दूर रहना नही चाहता। वह गुजराती, सस्कृत और मराठी जानता है। बहुत करके अग्रेजी भी जानता है। अपनी जरूरते पूरी करने के लिए उसे सिफ पच्चीस रुपये महीना चाहिए। मेरा सुझाव है कि तुम उसे विनय मन्दिर या हरिजन आश्रममें रख लो। विनोबा मानते है कि यदि हम उसे ले लेगे तो वह हमारे कामका सिद्ध होगा। वह बहुत कमपरायण व्यक्ति है। शायद तुम्हे जानता भी हो। यदि तुम विद्यापीठ या हरिजन आश्रममे उसका उपयोग कर ही न सको तो मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८४) से।

४३५ सन्देश · लीग कौंसिल, लदनको[1]

वर्धा

[१ अगस्त, १९३५ या उसके पूर्व][2]

मै शान्तिके लिए प्राथना और उसकी आशा ही कर सकता हूँ।

[अग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २-८-१९३५

१ इतालवी अबीसीनियाई सकटके सिलसिलेमें अपनी बैठकके पूर्व अविलम्ब स देश भेजने के लिए किये गये लीग ऑफ नेशसके अनुरोधके उत्तरमें।

२ तारीख "वर्धा, १ अगस्त," १९३५ के अन्तर्गत, "हमारे विशेष सम्वाददाता" की ओरसे भेजी गई सामग्रीके रूपमें प्रकाशित।

४३६. वक्तव्य इतालवी-अबीसीनियाई सकटके सम्बन्धमें

[१ अगस्त, १९३५ या उसके पूर्व][१]

मुझे मालूम हुआ है, लोगोके पूछने पर गाधीजी ने यह स्पष्टकर दिया है कि उन्होने चन्देके लिए ऐसी कोई अपील जारी नहीं की है।[२] गाधीजी इतालवी-अबीसीनियाई सकटके सिलसिलेमें किसीसे भी मुलाकात नहीं करना चाहते, जिसका कारण वे यह बताते है, यदि वे अपनी रायपर अमल नहीं कर सकते तो मात्र मौखिक रूपसे उसे व्यक्त करना कोई महत्त्व नहीं रखता।

[अग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, २-८-१९३५

४३७. वक्तव्य : समाचार-पत्रोको

वर्धागज
१ अगस्त, १९३५

रायटर एजेसी द्वारा लॉड जेटलैडके नामसे प्रसारित इस वक्तव्यको[३] पढकर मुझे आश्चय हो रहा है कि श्री एम० आर० मसानीने मेरे प्रस्तावका[४] विरोध करते हुए हिसाकी वकालत की थी। मेरा प्रस्ताव था कि काग्रेसके सिद्धान्त-पत्रमे "वैध तथा शान्तिपूण" शब्दोके स्थानपर "सत्यनिष्ठ तथा अहिसात्मक" शब्द रखे जायें।

मेरे मनमे उस अवसरकी स्मृति बडी स्पष्ट है और मैं निश्चित तौरपर कहता हूँ कि उनके भाषणमे हिसाकी वकालत-जैसी कोई भी बात नही थी। अन्य अनेक व्यक्तियोकी भाति उनको भी राजनीतिक सिद्धान्त-पत्रमे बहुत-कुछ धार्मिक किस्मकी शब्दावलीके प्रयोगपर आपत्ति थी।

१ "वर्धा, १ अगस्त," १९३५ की तिथि पंक्तिके अ तर्गत प्रकाशित।

२ साधन सूत्रमें बताया गया था कि "देशमें तो इसकी कोई जानकारी नही, पर लगता है विदेशोंमें ऐसी अफवाह फैल गई है कि गाधीजी ने अबीसीनियामें रेडक्रास सेवाके भारतीयोका एक स्वयसेवक दल तैयार करने के लिए चन्देकी अपील जारी की है। लगता है, यह अफवाह ल दनसे चलकर अमेरिका पहुँच गई है और ऐसा कदम उठाने के लिए अमेरिकासे बधाईका एक तार पाकर गाधीजी को आश्चर्य हुआ है।"

३ भारत मत्री, एम० आर० मसानीका पासपोर्ट जब्त किये जानेके सम्बन्धमें कॉमन्स सभामें लॉर्ड फैरिंगडन द्वारा पूछे गये प्रश्नके उत्तरमें तत्कालीन भारत म त्री द्वारा दिया गया।

४ बम्बईमें २६ अक्तूबर, १९३४ को हुए भारतीय राष्ट्रीय काग्रेसके वार्षिक अधिवेशनमें। देखिए खण्ड ५९ पृ० २५२।

इसलिए मैं आशा करता हूँ कि सम्राट्के अधीन सबसे अधिक जिम्मेदारीके एक पदपर आसीन लार्ड जेटलैंड वैसी दो टूक भाषा प्रयोग करन। स्वय पसन्द नही करेगे जसी भाषाका प्रयोग करते वे बताये गये हैं।

[अंग्रेजीसे]

बाम्बे क्रॉनिकल, २-८-१९३५

४३८. पत्र : हीरालाल शर्माको

१ अगस्त, १९३५

चि० शर्मा,

यह कया बात है कि तुमारे तरफसे कोई खत नही है? श्री ब्रजमोहनके खत से पाता हू अमरीकाका खच बहूत है। इतना होना नही चाहीये। वहा जाकर देखोगे। मजदूर बनकर रहने मे खर्च कम होना ही चाहीये। सब ठीक चल रहा होगा। सब हाल दे दो।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७९ के सामने प्रकाशित प्रतिकृति से।

४३९. पत्र : आप्रकाशचन्द्र मेहताको

वर्धा

२ अगस्त, १९३५

प्रिय आप्रकाश,

इस उम्रमे तुम्हारी कसौटी हो, यह बात तुम्हारे लिए अत्यन्त पीडाजनक क्यो होनी चाहिए? बल्कि यो कहे कि इस नये प्रयोगमे उम्र तुम्हारे विरुद्ध है। किसी अजनबीके लिए, चाहे वह जितना योग्य हो, यह कसौटीकी बात मानी जा सकती है। खास तौरसे यह बात ऐसे व्यक्तिपर लागू होती है जो तुम्हारी तरह किसी नये उपक्रममे लगे। ऐसा क्यो मान लेना चाहिए कि दुनिया हमे वैसा ही समझे-जाने जैसा हम स्वय अपने को समझते है? हर प्राथनामे प्रतिदिन हम जिन ग्यारह प्रतिज्ञाओको[1] दुहराते है उन्हे याद रखना। वह श्लोक इस विनतीसे समाप्त होता है कि हम उन प्रतिज्ञाओका पालन पूरे विनयसे करे। विनय शान्ति और सच्चे आनन्दकी कुजी है।

तुम्हारे अनुभवके बारेमे तुम्हारे प्रथम पत्रकी प्रतीक्षा मैं किंचित् अधीरतासे कर रहा हूँ।

१ देखिए "पत्र कृष्णचन्द्र को", १४-५-१९३५।

वहाँ अमलाको[1] ढूढकर उससे मिलना और मैत्री करना।

स्नेह।

बापू

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

४४० पुर्जा: अवधेशदत्त अवस्थीको[2]

२ अगस्त, १९३५

लिखा करो और उत्तर देनेकी चेष्टा करूगा। जब आनेका दिल हो तब लिखो। मै यही हूगा तो मैं सम्मति भेजने का प्रयत्न करूगा।

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२२३)से।

४४१. टिप्पणियाँ

एक देश-सेवकका स्वर्गवास

पुरुलियाके निवारणबाबू, जिनका अभी हालमे स्वर्गवास हो गया है, बहुत विनम्र स्वभावके अत्यन्त सज्जन पुरुष थे। वे हरिजनोके सच्चे सेवक थे और उसी तरह समस्त दीन-हीनके सच्चे बन्धु थे। अहिंसाकी अनुपम सुन्दरताका उन्होने खूब गहरे जाकर साक्षात्कार किया था और उसे अपने जीवनमे उतारने का वे अहर्निश प्रयत्न करते रहते थे। उनका जीवन उनके अनेक मित्रो और अनुयायियोके लिए प्रेरणाप्रद था, और वे भारीसे भी भारी सकटके समय निवारण बाबूसे पथ-प्रदर्शन तथा आश्वासन की आशा रखते थे। उनके मित्रो और अनुयायियोको उनके जीवनकी स्मृति सदा शक्ति और सन्मागपर उत्तरोत्तर प्रगति करने की स्फूर्ति देती रहे।

सर्वस्व-दान

महान् हरिजन-सेवक श्री ज्वालाप्रसाद मडेलिया अब इस लोकमे नही है। केन्द्रीय हरिजन सेवक सघके वे कोषाध्यक्ष थे। और जिस ध्येयको लेकर वे चल रहे थे, तथा जिसके प्रति उनका प्रेम अनुपमेय था, उसके वे कैसे अद्भुत सरक्षक थे। आजकल प्राय जिस अर्थमे धनी शब्दका प्रयोग होता है वह वैसे धनी नही कहे

१ मार्गरेट स्पीगल।

२ यह अवधेशदत्त अवस्थीको लिखे पत्रपर ही एक ओर लिखा गया था। अवस्थी आश्रम छोड़ने वाले थे।

जा सकते थे। पर वे बिडला मिल्स, दिल्लीके सेक्रेटरी थे, और वहा उन्होने जो-कुछ कमाया, जो-कुछ उनके पास था, वह सब वे दान कर गये हैं। अपने जीवनकालमे भी उन्होने परोपकारी कार्योमे दिल खोलकर पैसा दिया। वे एक जन्म-सिद्ध सुधारक थे। विधवाओका उद्धार-काय उन्हे उतना ही प्रिय था जितना कि हरिजनो का, और अपनी वसीयतमे वे इन्ही दोनोके लिए अपना सवस्व दान कर गये हैं। उनके इस दानका व्यय उनके मूल स्थान पिलानीमे किया जायेगा।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ३-८-१९३५

४४२. वस्त्र-स्वावलम्बन

शहरवाले तो खादी-उत्पादनकी किसी भी क्रियामे हाथ लगाना नही चाहते या लगा नही सकते अत उनके लिए बनाई जानेवाली खादीकी सफलताकी शर्तें एक प्रकारकी है जब कि वस्त्र-स्वावलम्बनके प्रयोगकी सिद्धिके लिए उससे भिन्न ही प्रकारकी परिस्थितियाँ अपेक्षित है। बेचने के लिए जो खादी बनाई जाती है उसमे कपास बोने और उसकी फलियाँ चुनने से लेकर सूत बुननेतक की प्रत्येक क्रिया अनेक आदमियोके बीचमे आसानीसे बाँटी जा सकती है। खास करके जहाँ मजदूरी सबको करीब-करीब एक-सी दी जाती हो, वहाँ तो क्रियाओका यह विभाजन और भी आसान हो जाता है। विभिन्न मनुष्योको विभिन्न क्रियाओमे किसीकी देख-रेखमे, और सहकारिताके आधारपर लगाया जाये तो परिणाम अधिक अच्छा आयेगा। लेकिन जहा कोई चीज अपने घुरेलू उपयोगके लिए ही बनानी हो, वहाँ तो एक ही कुटुम्ब या एक ही व्यक्तिमे सारी क्रियाओका केन्द्रीकरण जितना अधिक होगा समय और धनकी उतनी ही बचत होगी। किसी मनुष्यके पास यदि ऐसी थोडी-सी भी जमीन हो, जिसे वह कम ही सही पर पर्याप्त समयतक अपनी कह सके, और उसपर वह नित्य परिश्रम करे तो वह अथवा उसके कुटम्बके आदमी फुरसतके समय सिफ थोडे हाथ-पैर चलाकर अपनी जरूरत-भरकी खादी बना सकते हैं। उसे केवल इतना ही बता देनेकी जरूरत है कि हरएक मनुष्य करीब-करीब मुफ्तमे ही अपनी जरूरत-भरकी खादी किस तरह बना सकता है। खादी-उत्पादनमे यदि मजदूरी देनी पडे, और मजदूरीकी दर प्रति घटेके हिसाबसे समान रखी गई हो, तब सबसे अधिक पैसा कताईकी क्रियापर बैठेगा। कारण यह है कि एक गज खादीके लिए सूत कातने मे जितना समय लगता है वह कताईसे पहलेकी या बादकी किसी भी क्रियासे अधिक होता है। कोई मनुष्य अगर कपास खुद ही ओट ले, खुद ही धुन ले और खुद ही कात ले — और इतना तो वह आसानीसे कर सकता है — तो उसे खादी करीब-करीब उसी कीमतपर मिल जायेगी जिस कीमतपर मिलका कपडा। किसी पदाथकी लागत उसके उत्पादनपर खच किये गये श्रमकी कीमतसे गिनी जाती है। इसलिए जब सारा श्रम स्वय उपभोक्ताका ही हो और वह भी फुरसतके समय किया गया हो,

तब लागत लगभग कुछ भी नही होती। स्वावलम्बी खादी बिचौलियोको बिलकुल उडा देती है। यह गॉवोके करोडो अधभूखे लोगोकी आमदनी प्रत्यक्ष रूपमे बढानेका सबसे सरल उपाय है।

परन्तु क्या ग्रामवासी कभी स्वावलम्बी खादीको अपनायेगा? हॉ, यदि हममे श्रद्धा के साथ-साथ वैज्ञानिक कौशल हो या ऐसी सजीव श्रद्धा हो जो पहाडोको हिला दे और हम मजदूरको उसके कामके लिए आवश्यक सारी कुशलता प्रदान करे। यह बेशक कठिन है। परन्तु कठिन हो या आसान, उसका अभीतक किसी बडे या सगठित पैमानेपर अथवा किसी सुकल्पित योजनाके अनुसार प्रयत्न नही किया गया। जबतक कोई सुकल्पित, भारतव्यापी प्रयत्न गाँववालो को यह शिक्षा देने का न होगा कि वे अपना कपडा आप तैयार कर ले और इस तरह उनके देहात मे जो थोडी-बहुत सपत्ति बाकी है उसका अनावश्यक रूपमे वहॉसे चला जाना रोका नही जायेगा, तबतक चरखा सघका अस्तित्व उचित नही माना जायेगा। कारण, जैसा मै कुछ समयसे इस पत्रमे आग्रह कर रहा हूँ, खादीका सन्देश यही है कि स्थानीय उत्पादन और स्थानीय उपयोगके द्वारा वह देहातमे सवत्र काम आने लगे। प्रत्येक गाँवमे, उन गॉवोमे भी जहॉ पहले कपास कभी नही बोई गई हो, कपासकी खेती कराकर कार्यारम्भ करना पडेगा। कपासकी खेतीके विकेन्द्रीकरणके बिना देहातमे खादीकी सावत्रिक उत्पत्ति सम्भव नही होगी। हमारे पास इसके प्रामाणिक उदाहरण है कि जमीनके विवेकपूर्ण सुधार और सँभालसे मरुस्थल भी लहलहाते उद्यान बन गये है। इसलिए प्रत्येक ग्राममे वहीके उपयोगके लिए काफी कपास उगा लेना असम्भव नही होना चाहिए। इससे खादी ग्रामवासियोके लिए सस्ती ही नही हो जायेगी, परन्तु खादीका टिकाऊपन भी बढ जायेगा। अनुभवने अन्तिम रूपसे प्रमाणित कर दिया है कि सूतकी मजबूती और पैदावारपर काममे लाई जानेवाली रुईकी किस्मका और कपासको चुनने, साफ करने, ओटने, धुनने और कातने की पद्धतिका प्रभाव पडता है। जिस रुईसे ढाकाकी प्रसिद्ध मलमल तैयार हो सकी थी उसपर होनेवाली तमाम प्रक्रियाओमे कोमलता रहनी चाहिए। तभी तो वह 'शबनम' मे बदली जा सकती है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३-८-१९३५

४४३ उद्‌गार शरीर-श्रमके विषयमे[1]

जो लोग शरीर-श्रम नही करते, उनसे तुम ईर्ष्या क्यो करते हो? दुनियामे हरएक आदमी अपने पसीनेकी ही कमाई खायेगा ऐसी कल्पना तो मैंने कभी नही की। मैंने तो एक स्वण-नियम-भर बतला दिया है। उसपर चलने के लिए तुम खुद तैयार हो या नही? यदि हा, तो जिस मनुष्यमे इस नियमपर चलने की तैयारी या शक्ति नही है उसके प्रति तुम्हे द्वेष नही रखना चाहिए। मै तो दूध और फल खाता हूँ उन्हे अगर शुद्ध शरीर-श्रम करके प्राप्त नही करता तो इसका यह अथ हुआ कि मै दयाका पात्र हूँ, इससे शरीर-श्रमके उक्त नियममे कोई न्यूनता नही आती। ब्रह्मचय-व्रतका पालन थोडे-से इने-गिने लोग ही करते होगे पर इससे क्या उन्हे ब्रह्मचयका पालन न कर सकनेवाले करोडो मनुष्योके प्रति द्वेष करना चाहिए? वे तो द्वेषके नही, दयाके पात्र है। मैंने तो जिस आदर्शतक हमे पहुँचना है वह बतलाया है। हरएक मनुष्य उसका यथाशक्ति पालन करे। अगर आपसे किसी भी तरहका शारीरिक श्रम नही हो सकता तो उसके लिए आप दुख न करे। आप दूसरा जो शुद्ध धन्धा कर सकते हो वह करे, और इतना ध्यान रखे कि आपके लिए जो लोग पसीना बहाते हैं उनका आप शोषण न करे। आप यह मानते है कि डॉक्टरो आदिको शारीरिक श्रम करने के लिए फुरसत नही मिलती, तो उनके लिए आप चिन्ता न करे। ये लोग यदि शुद्ध सेवा-भावसे समाजकी सेवा करेगे तो समाज इतना ध्यान तो रखेगा ही कि उन्हे भूखो न मरना पडे।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ३-८-१९३५

४४४ पत्र : नारणदास गाधीको

३ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारे दोनो पत्रोके उत्तरमे अभी तो मैं कुछ नही लिखना चाहता। मै ये पत्र सम्बन्धित व्यक्तियोको भेज रहा हूँ। फिलहाल तो मैंने वे सरदार और नरहरि को पढने को भेजे है, क्योकि उन्हे भी वैसे ही पत्र मिले थे। इस मामलेमे उन्हे

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। अपने इस लेखमें गांधीजी के उक्त उद्‌गारोंको गूँथते हुए महादेव देसाईने प्रस्तावनाके रूपमें लिखा था "गांधीजी जो कि बहुत ही सादीसे-सादी बातें कहते है वे भी कुछ लोगोंको पहेली सी मालूम होती है। इनमें से एक है गांधीजी का शरीर श्रमका आग्रह।" देखिए "श्रमयज्ञ", २९ ६ १९३५ भी।

कुछ नही कहना है। जोशीकी पोशाकके बारेमे जो बात थी वह मैने तुमसे पहले ही पूछ ली थी। उसका पत्र अभी मुझे नही मिला है। उसपर क्या आरोप था? यदि ऐसे सहायक शिक्षक शालामे खादी पहनकर आये तो वह पर्याप्त माना जायेगा। उनसे अधिककी आशा नही की जानी चाहिए। यदि उनकी खादीपर श्रद्धा हो तो अच्छा होगा।

फिलहाल तो मेरा काम बहुत बढ गया है क्योकि बुजुर्ग साथी इकट्ठे हुए ह।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६७ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

४४५. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

३ अगस्त, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारे इतने गहरे पानीमें जाना नही। जितना हो सके इतना करो। खोटा रुपैया तो महादोष था। दूसरेमे भी निबलता तो थी ही। निर्बल तो हम सब हैं। भगवान हमको बचाये रखे। यहा आजकल तो काफी ठडक है। बारीस बध होनेसे गरमी होगी ही। मेरा कुछ अभिप्राय है कि तुमारे आलमोडे-जैसे स्थानमे स्थिर होना होगा। वहा भी सेवाक्षेत्र तो काफी है। यहा कुशल।

बापुके आशीर्वाद

श्री ब्रजकृष्ण चाँदीवाला
कटरा खुशालराय
दिल्ली

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३७) से।

४४६. पत्र : जमनालाल बजाजको

वर्धा
३ अगस्त, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम थैलीके लिए द्रव्य एकत्र करने इदौर जा रहे हो। इस सिलसिलेमे तुमने मुझसे तीन बाते जानना चाही है—(१) यह रुपया किस प्रकार खर्च किया जायगा, (२) कोई अकित दान इसमे लिया जाय या नही? और (३) इसके खचके लिए कोई ट्रस्ट या कमिटी आप बनाना चाहते है या क्या व्यवस्था सोची है?

इनके सम्बन्धमे मेरा खुलासा यह है कि मेरी माग मुख्यत दक्षिण भारतमे हिन्दी-प्रचारके लिए है, किन्तु आवश्यकता देखकर दूसरे प्रान्तोमे भी जैसे बगाल, आसाम, सिन्ध, गुजरात, पजाब आदि जहा हिन्दी भाषाका प्रचार या प्रवेश नही है मै इस रकमको लगाना चाहता हू। इनमे से किसी प्रान्तके कार्यके लिए अथवा इस कार्यके लिए आवश्यक प्रचारक तैयार करने के लिए कोई दाता अकित रकम देगे तो थैलीके लिए उसे स्वीकारने मे कोई आपत्ति न होनी चाहिए।

अब रही बात ट्रस्ट या कमिटी की। सो सब रुपया मिल जानेपर ट्रस्ट या कमिटी बनाकर अथवा किसी रजिस्टर्ड सस्थाके द्वारा मेरी देख-रेखमे रुपया खर्च करने का मेरा इरादा है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७४)से।

४४७ पत्र : सत्यदेवको

३ अगस्त, १९३५

भाई सत्यदेव,

आप तो नया सप्रदाय चला रहे है। उसमे मेरी चोच नही डूबेगी। इसलिए मै आपको यहा आनेका कष्ट क्यो दू? आप लाहौरसे अवश्य बोध करते रहिये।

मैने आपका अगला पत्र ठीक सुन लिया था। उसके बाद ही उत्तर दिया था। 'विशाल भारत' मे अश्लील बाते मैने नही पाई है। मैने उसको सच्चा आदमी पाया है। उनके सब विचारोसे मै सहमत नही हू। लेकिन यह कोई दोषकी बात नही है। आपके सिवाय और किसीकी तरफसे मैने उनके बारेमे शिकायत नही सुनी है। आप उनको मानते है।

मेरे इर्द गिर्दमे रहनेवालो मे से किनको आपने सच्चे और ईमानदार नही पाये? आप सचोट प्रमाण दे तो उनका त्याग करुगा। शायद महादेवको छोडकर औरोको तो आप जानते भी नही होगे।

आपका,
मो० क० गाधी

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

४४८. पत्र : ईश्वरदासको

३ अगस्त, १९३५

भाई ईश्वरदास,

तुम्हारा दोनो खत मिले है। मै देखता हू तुमको प्रश्न पूछने का व्याधि है। इसलिए मै उत्तर नहि दुगा। जो-कुछ 'हरिजन' और 'हरिजनसेवक' से मिले उससे सतुष्ट रहो। और यथाशक्ति उसमे से जो पसन्द आवे उसका पालन करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

४४९. पत्र : वालजी गो० देसाईको

वर्धा
४ अगस्त, १९३५

चि० वालजी,

बगालकी खादी-विषयक तुम्हारा लेख मैने अस्वीकार कर दिया है। मुझे कुछ ऐसा खयाल है कि मैने इस सम्बन्धमे तुम्हे लिखा है। गायका दूध बढाने के सुझावके बारेमे मै देखूँगा। ग्रामोद्योग सघका पैसा आदि बैकमे रहे इसमे फिलहाल मुझे कोई बुराई नजर नही आती।

लोगोको जीवाणुविहीन बनाने के बारेमे मै कोई पक्की राय नही दे सकता। मेरा रुख उसके विरुद्ध है। अपने पापोका फल भोगने के सिवा और कोई चारा नही है। ऐसा जबरदस्ती किया जाये तो उसमे बहुत अनर्थ बढने और अत्याचार होनेका भय है। अपविकासका सिद्धान्त मुझे तो निराधार लगता है।

गोविन्दलालने गोविन्दनगरके बारेमे मुझे लिखा था। वह मामला ऐसा नही है जिसमे हम हाथ डाले। भले वह नगरपालिकाके पास जाये।

तुम्हे कौन-सी पुस्तके चाहिए? यदि मुझे उनकी सूची भेज दो तो मै उन्हे मँगवानेकी व्यवस्था करूँगा। किन्तु मै तुम्हे आँखोको दावपर लगाकर रतजगा नही करने दूगा। आशा है, तुम सब कुशलपूर्वक होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४७३)से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

४५०. पत्र : घनश्यामदास बिडलाको

४ अगस्त, १९३५

भाई घनश्यामदास,

तुमारा खत मिला है। अगले भी सब मिले है। मेरे खतमे ऐसा भाव तो नही था कि तुमारे केस रजु करनेमे कुछ भी गलती थी। जहातक मुझे स्मरण है मेरे कहनेका मतलब यह था कि तुम तो सब-कुछ ठीक ही कर सके लेकिन मुझे डर रहा है कि समझोताके अथ करनेमे अनेक दिक्कत पैदा होनेवाली है। लेकिन मैं निश्चिन्त हू। जो होनेका है सो होगा ही। हम अपने कर्त्तव्यका निडरतासे पालन करे। तुमारा काम हो जानेसे अवश्य आ जाना। वहा बेकार बैठना भी अच्छा नही लगेगा। हा, शरीर अच्छा करनेके लिये रहना उचित लगे तो अवश्य रहना।

हरिजन सघकी सब बाते तो मिला करती होगी।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८०१३ से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

४५१. पत्र : लक्ष्मीनिवास बिडलाको

४ अगस्त, १९३५

चि० लक्ष्मीनिवास,

तुमारा खत मिला है। अगले सब खत मिले थे। पिताजीके लिये खत तो भेजता हू। अगर वे निकल चुके है तो मुझे लिखो अथवा तार दो।

सब कुशल होगे।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८०१८ से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

४५२ पत्र मूलचन्द अग्रवालको

४ अगस्त, १९३५

भाई मूलचद,

तुमारे दोनो खत मिले है।

बहिष्कार मिटानेका इलाज बहिष्कारका दुख ही नही मानना।

बापु

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५७) से।

४५३. सन्देश : 'हंस'को

वर्धा
५ अगस्त, १९३५

'हंस' हिन्दुस्तान-भरमें अनोखा प्रयत्न है। यदि हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषा बनना है तो ऐसे मासिककी अत्यावश्यकता है। प्रत्येक प्रान्तकी भाषामें ये लेख लिखे जाते हैं उसका परिचय राष्ट्रभाषा द्वारा सबको मिलना चाहिये। बहुत खुशीकी बात है कि अब ऐसा परिचय दिल चाहे उनको 'हंस' द्वारा प्रतिमास आधा रुपयेमें मिल सकेगा।

मो० क० गांधी

सी० डब्ल्यू० ७५८२ से, सौजन्य : क० मा० मुंशी

४५४. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

५ अगस्त, १९३५

चि० अमला,

तुम अकारण ही सन्देहशील हो रही हो। और अब तो पाँच शिष्योंकी दादी बन जानेपर तुम महादेवकी, मेरी और अपने सभी स्नेहियोंकी उपेक्षा कर ही सकती हो। मैंने सतीशबाबू से कह दिया है कि तुमको तुरन्त पूनियाँ भेज दें। मुझे आशा है कि अबतक वे तुमको मिल भी गई होंगी। मुझे इस बातकी खुशी है कि अब तुमको अपना जीवन ठीकसे जमता दिख रहा है।

स्नेह।

बापू

श्री अमलाबहन स्पीगल
शान्तिनिकेतन, बरास्ता बोलपुर

[अंग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

४५५. पत्र : क० मा० मुंशीको

५ अगस्त, १९३५

भाई मुशी,

पत्रक तो तुमने बहुत आकर्षक निकाला है। तुम भला साज-सज्जामे कोई कसर क्यो रखने लगे। यदि पत्रककी तरह आकर्षक लेख भी हमे मिलते रहे तो फिर और क्या चाहिए।

अपना सन्देश[1] इसके साथ भेज रहा हूँ। इसका 'ब्लाक' बनवाने का लोभ मत करना।

लेख-सम्बन्धी तुम्हारी माँग पूरी करना शायद मेरे लिए मुश्किल हो। यदि समय मिला तो कुछ लिख डालूगा। क्या तुम कुछ सुझा सकोगे?

पहलेसे ही पर्याप्त ग्राहक बना लेनेका ध्यान रखना।

टडनजी से थोडी बाते हुई थी और सो भी अनायास ही। मुझे उनसे कुछ विशेष नही कहना था। मेरे कहने का तात्पय यही था कि उन्हे सूचित करते रहना आवश्यक था।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७५८१) से, सौजन्य क० मा० मुशी

४५६. पत्र : ना० र० मलकानीको

वर्धा
६ अगस्त, १९३५

प्रिय मलकानी,

जहाँतक हरिजी[2] की बात है, अन्त भला सो सब भला। उन्होने विकेन्द्रीकरणका सुझाव दिया है। मुझे कार्यकारिणीकी सदस्य-सूची भेज दो और लिखो कि किन-किनके आनेकी सम्भावना है। हरिजी यदि मण्डलके सदस्य न हो तो उनको आमन्त्रणपत्र भेज देना।[3]

तुम्हारा,
बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१६) से।

१ देखिए "सदेश 'हस' को", ५-८-१९३५।

२ हृदयनाथ कुँजरू।

३ हरिजन सेवक सघ बोर्ड।

४५७ पत्र : शिवप्रसाद गुप्तको

[६ अगस्त, १९३५][1]

प्रिय शिवप्रसाद,

तुम्हारा पत्र मिला। अपनी बीमारीमे भी तुम अपने देशको नही भूले। काग्रेस से मेरे अलग होनेके बाद काय-समितिकी बैठक पहली बार यहाँ हुई। यहाँ हो या कही और, इससे कोई फर्क नही पडता। तुमने पूछा है कि काग्रेससे अपनेको अलग कर लेनेके बाद भी मै उसमे इतनी रुचि क्यो लेता हूँ और मै उसको सलाह-मशविरा और अपनी राय क्यो देता रहा हूँ। मेरा खयाल है कि तुमको मालूम ही होगा कि मैने काग्रेससे अपने-आपको अलग करते समय ही कह दिया था कि यदि मुझसे किसी विषयमे पूछा जायेगा तो मै अपनी राय अवश्य दूगा। काग्रेसका नियन्त्रण करना एक बात है और काग्रेसजनोको राय देना बिलकुल ही दूसरी बात। काग्रेस कमेटीकी बैठके यही हुई थी, पर मै उनमे कभी शरीक नही हुआ। उसकी सारी कारवाईके बारेमे मुझे अबतक बिलकुल कोई जानकारी नही है। जब भी सदस्य लोग मुझसे सलाह करना या मेरी राय लेना चाहते थे तो वे मेरे आवासपर आ जाते थे और मै बडी खुशीसे उनको अपनी सलाह दे देता था। ऐसा न करने का मुझे कोई कारण नही दिखाई पडता। मै काग्रेसके हितके लिए ही उससे बाहर आ गया हूँ। मै काग्रेसके आदर्शोंको तो नही त्याग सकता। इसलिए यदि मै जान-बूझकर उसको अपनी सलाह देनेसे इन्कार कर दूँ, तो अपने धमसे च्युत हो जाऊँगा।

अब परिषद्-प्रवेशकी बात ले। मै समझता हूँ कि इस समय परिषदोमे प्रवेश करना धम है, हालाँकि वह मेरा धर्म नही है, क्योकि मैने अपना जीवन किसी और ध्येयके लिए अर्पित कर दिया है। इन दिनो कानूनकी अहिसात्मक अवज्ञा ही मेरी साधना है। मेरे इस ध्येयकी पूर्तिमे परिषद्-प्रवेश बाधा सिद्ध होगी। तुम जानते ही हो कि एक व्यक्तिका भोजन दूसरेके लिए विष हो सकता है।

आशा है, मैने तुम्हारे सभी प्रश्नोके उत्तर दे दिये है और ये तुमको सन्तुष्ट कर सकेगे।

परिषद्-प्रवेशकी समस्या मुझपर छोड दो और तुम खुद ग्रामोद्योग तथा हिन्दी-प्रचारके काममे पूरी तरहसे जुटे रहो। इनमे तन-मनसे जुट जानेपर तुमको अन्य

१ शिवप्रसाद गुप्तके उत्तरसे जो मूल पत्र के साथ ही प्रकाशित हुआ था।

समस्याओके बारेमे सोचने का समय ही नही मिलेगा। ईश्वर तुमको शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ दे।[1]

बापूके आशीर्वाद

[अग्रेजीसे]
सर्चलाइट, ६-९-१९३५

४५८ पत्र मार्गरेट स्पीगलको

वर्धा
७ अगस्त, १९३५

चि० अमला,

तुम्हारा पत्र कमालका है। किसीको भी विश्वास नही था कि तुम अपना सिर घुटाने जा रही हो और यदि तुम घुटा चुकी होगी तो अब फिरसे केश जमने लगे होगे। आशा है कि नाती-पोते[2] भले-चगे होगे।

सस्नेह,

बापू

[अग्रजीसे]
स्पीगल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१ **हिन्दू**, ३०८१९३५ के अनुसार श्री गुप्तने उत्तरमें लिखा था "मेरे मनमें तो यह बात एक क्षणके लिए भी नही जम पाती कि आप परिषद् प्रवेशकी हिमायत कैसे कर सकते है जब कि परिषदोमें प्रत्येकको सम्राट्के प्रति वफादारीकी शपथ लेनी पडती है और पता नही आप काग्रेसक लाहौर तथा कराची-अधिवेशनो द्वारा स्वीकृत प्रस्तावो की इसके साथ कैसे पटरी बठाते है।"

गाधीजी के सचिव, श्री महादेव देसाईने पत्रकी प्राप्ति स्वीकृति देते हुए लिखा था 'आपका पत्र बापूजी को मिल गया। जहाँतक शपथवाली बात है, बापूजी का कहना है कि परिषद् प्रवेशका निर्णय अपने देशकी वर्तमान स्थितिको देखते हुए किया गया था और जो लोग शपथ लेंगे, उनका सरकारके खिलाफ कोई काम करना ठीक नही होगा। स्वराज्य प्राप्तिके सघर्षका यह भी एक दौर है और वह इस दौरको अत्यावश्यक मानते हैं।"

२ उनके शिष्य, देखिए "पत्र मार्गरेट स्पीगलको", ५८१९३५।

४५९. पत्र : जी० ए० गवईको[1]

[८ अगस्त, १९३५ के पूव][2]

प्रिय गवई,

आप मेरे पास जो एक दिलचस्प दस्तावेज छोड गये थे उसे मै पढ गया हूँ। मेरी राय है

सभी नियमोकी व्याख्या इस ढगसे की जानी चाहिए कि उससे उनके उद्देश्यको आगे बढानेमे सहायता मिले। इस मामलेमे उद्देश्य है — हरिजनोका हित। इसलिए चारका चुनाव अनिवार्य तो नही है, परन्तु यदि चारसे अधिक उम्मीदवार हो तो निर्वाचक-मण्डलको चारका चुनाव करना ही पडेगा। नाम तो निश्चय ही हर अवस्था मे वापस लिये जा सकते हैं। हरिजनोमे से खडे होनेवाले प्रत्येक उम्मीदवारको आम निर्वाचन-मण्डलसे खडे होनेका भी अधिकार है। यदि पृथक् निर्वाचक-मण्डल रखने में बडा झमेला-सा महसूस हो, तो हरिजन लोग जब भी चाहे लगभग सवसम्मतिसे अपने इस विशेषाधिकारको त्याग सकते है। समझौतेमे ही ऐसी व्यवस्था कर दी गई है।

कहने की जरूरत नही कि मेरी राय किसी भी तरहसे विधि-विशेषज्ञकी राय नही मानी जा सकती। यह तो एक ऐसे व्यक्तिकी राय है जिसने समझौता सम्पन्न कराने मे हाथ बँटाया था।

मो० क० गा०

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई। **बॉम्बे क्रॉनिकल,** ११-८-१९३५ से भी

१ बॉम्बे क्रॉनिकलके अनुसार (दलित वर्गोकी ओरसे) विधान परिषद्के सदस्य जी० ए० गवईने वर्धामें गाधीजी के साथ अपनी एक भेंटके दौरान "पूना समझौतेकी अपनी व्याख्या और प्राथमिक निर्वाचनके प्रश्नके सम्बन्धमें मध्य प्रान्त परिसीमन समितिके सदस्यो द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण उनको समझाया था।"

२ महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीमें इस पत्रको अगले शीर्षक ("पत्र एक विद्यार्थीको", ८८१९३५) के पहले स्थान दिया गया है।

४६० पत्र एक विद्यार्थीको[1]

८ अगस्त, १९३५

मैदान छोडकर भागना अगर शर्मनाक है, तो व्यक्ति शरीरसे कितना ही कम-जोर क्यो न हो, वह अपने स्थानपर डटा रहेगा और वही जान दे देगा। यही अहिसा और वीरता होगी। वह चाहे कितना ही दुबल क्यो न हो, वह अपनी समूची शक्तिसे अपने विरोधीपर चोट करेगा और इस कोशिशमे काम आ जायेगा। यह वीरता तो है, पर अहिसा नही। खतरेका सामना करना जब उसका कत्तव्य हो, तब पीठ दिखाना कायरता होगी। पहलेवाली स्थितिमे तो व्यक्तिके हृदयमे प्रेम या कल्याणकी भावना होगी। और दूसरी तथा तीसरी स्थितियोमे व्यक्तिके मनमे घृणा या अविश्वास तथा भय ही रहेगा।

आपका,
मो० क० गा०

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई। **हरिजन**, १७-८-१९३५ से भी

४६१ पत्र वसुमती पण्डितको

वर्धा
८ अगस्त, १९३५

चि० वसुमती,

तेरे दोनो पत्र मिल गये। यह प्रसन्नताकी बात है कि तेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। अब तू जो-जो काम कर सके वे किया कर। गगाबहनसे कहना कि

१ महादेव देसाईने अपने "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) में विवरण दिया था "**हरिजन**के नियमित पाठक एक विद्यार्थीने गाधीजीसे पूछा था कि उसका अपना आचरण यहाँ बताई गई परिस्थितिमें कायरतापूर्ण माना जायेगा या सहज माना जायेगा। उसमें परिस्थितिका वर्णन इस प्रकार किया था "शरीरसे मैं बड़ा दुबल हूँ, और मैं जब भी लम्बे तगड़े, अक्खड़ भरे बदमाशोको देखता हूँ तो सहज ही उनसे कतरा जाता हूँ। जिसके सामने हम कभी ठहर ही नही सकते, उस दैत्यके सामने पड़नेसे बचना कायरतापूर्ण क्यो समझा जाये? बिल्लीके सामने पड़नेसे भागनेवाले चूहेको क्या कायर कहा जायेगा?"

उसका पत्र मिल गया है। उसमें ऐसी कोई विशेष बात नहीं है जिसका उत्तर देना आवश्यक हो। वह मुझे जब-तब लिखती रहे और जब कुछ पूछना आवश्यक हो तो पूछ लिया करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०५) से। सी० डब्ल्यू० ६५१ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित

४६२ पत्र नारणदास गांधीको

८ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

मैथ्यू जिस पत्रकी बात लिखता है वह मुझे नहीं मिला। उसकी माँग हमारे सिद्धान्तके विरुद्ध है। काफी चेतावनी देनेके बावजूद वह माँग करता है। फिलहाल तो हम उसके माता-पिताके लिए कुछ भेजनेमें असमर्थ हैं, और न उसे अभी मेरे पास आना चाहिए। जबतक खाने-पीनेका खर्च-भर लेकर रह सके तबतक वह अपनेको स्थायी मान सकता है। जब उसपर हम पूरी तरह विश्वास करने लगेंगे तो उसकी योग्यतानुसार माता-पिताके लिए भी हम कुछ दे सकेंगे। किन्तु यह अभी बहुत दूर की बात है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४८६ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

४६३. एक पत्र[1]

८ अगस्त, १९३५

तुम्हारे पास ऐसा कौन-सा विशेष सन्देश है जिसके कारण अखबार निकाल रही हो? यों तो आजकल अखबार निकालना एक पेशा बन गया है। क्या तुम्हारे पास इससे बेहतर कोई और पेशा नहीं रहा? इसे छोड़ो।

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई

१ यह एक महिलाके पत्रके उत्तरमें लिखा गया था। यह पत्र १७-८-१९३५ के हरिजनमें भी छपा था।

४६४ पत्र लीलावती आसरको[1]

९ अगस्त, १९३५

१ 'व्हैन' वाला उपवाक्य [मुख्य उपवाक्यके] पहले आ सकता है और बादमे भी। 'व्हैन' का प्रयोग सभी कालाम किया जाता है, जैसा कि गुजरातीमे किया जाता है, जैसे "व्हैन यू कम, वी शेल प्ले"।

२ "बिफोर यू कम, आई शैल हैव गान"। 'बिफोर' पहले। "सिन्स यू हैव कम, वी हैव बीन आल वेल"। तुम आये हो तबसे 'सिन्स'—तबसे या क्योकि। स्वतन्त्र वाक्य बनानेमे 'एगो' का प्रयोग नही किया जाता। 'लाग एगो' बहुत समय पहले, 'इयस एगो'—बरसा पहले, इस तरह, 'एगो' का प्रयोग काल सूचित करने के लिए किया जाता है।

३ 'लार्ज' का प्रयोग निर्जीव पदार्थाके लिए ही किया जाता है, 'ए लार्ज वैसल'—बडा बर्तन, किंतु 'ए बिग बॉय'।

'बिग' का प्रयोग दोना स्थितियोम किया जा सकता है। 'स्माल' और 'लिटिल' के प्रयोगके बारेमे भी यही नियम लाग होता है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१०३ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

१ लीलावती आसरने लिखा था (१) "पाठमालाका यह चौदहवाँ पाठ पूरा हो गया अब पन्द्रहवाँ शुरू करना है। यह अपूर्ण भूतकालके बारेमें है। उससे मैं एक उदाहरण दे रही हूँ "व्हैन आई केम यस्टर्डे यू वर राइटिंग"। यहाँ 'व्हैन' वाला वाक्य पहले आया है। दूसरा वाक्य नीचे लिखे अनुसार है "वी वर कमिंग टु स्कूल व्हैन द बेल रंग"। अब पहले वाक्यमें 'व्हैन' पहले आया है और दूसरे वाक्यमें बादमें है। क्या इन दोनो प्रयोगोंमें कोई अंतर है? क्या इस सम्बन्धमें कोई नियम है कि 'व्हैन' पहले कब आता है और बादमें कब? क्या 'व्हैन' का प्रयोग सदा भूतकालमें ही किया जाता है? (२) एक बात और। मैं 'सिन्स' का सही प्रयोग नहीं जानती। 'सिन्स', 'बिफोर' और 'एगो' इन तीनोंमें क्या अंतर है? (३) 'लार्ज' और 'बिग' ये दोनो क्या समानार्थक शब्द हैं? क्या इन दोनोका एक ही स्थानपर प्रयोग किया जा सकता है? इसी प्रकार 'स्माल' और 'लिटिल' के बारेमें भी बतायें।

४६५. पत्र : लीलावती आसरको

९ अगस्त, १९३५

चि० लीलावती,

तुझे अपनी लिखावट और अधिक सुधारनी चाहिए। तू नियमका पालन नही करती यह उचित नही है।

तूने अपना खच कम करके अच्छा ही किया। धीरजसे सब-कुछ अवश्य ठीक हो जायेगा। अपना खच इतना कम मत कर देना कि भविष्यमे निर्वाह न कर सके। जो-कुछ करे, सोच-समझकर करना।

तेरे हल किये हुए पाठोमे मै जो सुधार करता हूँ यदि वे समझमे न आये तो पुन पूछ लेना। यदि तू एक ही तरहका और एक ही आकारका कागज काममे लाये और सुधारोके लिए जगह रखे तो उन पाठोको सँभालकर रखने मे सुविधा होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०१०३) से, सौजन्य लीलावती आसर

४६६ पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
९ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

कल मैंने तुम्हे बहुत उतावलीमे पत्र[1] घसीट मारा था। साथमे लीलावती और मैथ्यूके लिए पत्र है। मैथ्यूका पत्र ध्यानसे पढकर उसे दे देना। तुम भी उससे दृढतापूर्वक बात करना। यदि वह तुम्हे परेशान करे तो उसे छुट्टी दे देना। यदि वह ध्यानसे और मन लगाकर पढाये तथा किसी तरहका शारीरिक काम करे तभी उसे रखना। वह खाने-पीनेकी क्या व्यवस्था करता है?

क्या हरिलालका किराया तुमने चुकाया? जूनागढमे शराब क्यो नही मिलेगी? वह कोई भी काम ढगसे सीधा रहकर नही करेगा। हाँ, इतना अवश्य है कि इससे तुम्हे वहाँ कम परेशानी होगी बशर्ते कि वह लौट न आये।

राधा और सन्तोकके बारेमे समझ गया। प्यारेलालके बारेमे तुम्हारा सुझाव ठीक है। वह दे देनेमे ही हमारा निस्तार है।

१ देखिए "पत्र नारणदास गांधीको", ८-८-१९३५

वजुभाईका एक अन्य पत्र साथमे है। इसमे कुछ विशष नही था इसलिए मैने तुम्हे नही भजा था। उसे शालाका काम-काज नही सौपना चाहिए। शालाको तो तुम्हे ही गढना है। मै अभीतक उसे तुम्हारा पत्र ही नही भेज पाया हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

४६७. चर्चा : खादी-उत्पादनके पुनर्गठनके सम्बन्धमे[1]

[१० अगस्त, १९३५ के पूर्व]

प्रश्न बिहारमें आज करीब पाँच हजार स्त्रियाँ चार-चार, छह-छह पैसेके लिए भी दस-दस मीलसे हमारे खादी-केन्द्रोमें आती हैं। खादी हम अधिक खपा सके तो और भी अधिक स्त्रियाँ सूत कात-कातकर लायेंगी। खादीकी खपत आज अगर बन्द हो जाये तो बेचारी उन गरीब स्त्रियोकी क्या दशा होगी?

गाधीजी बात बिलकुल सही है। बगाल और दक्षिण भारतके गाँवोमे भी ऐसी ही स्थिति है, यह मै जानता हूँ। पर मै आपकी बातको उलटे ढगसे रखता हूँ। फर्ज कीजिए कि आप आज कत्तिनोको प्रति घटा दो पाई देते है। दो पाईकी जगह अगर आप मजदूरीमे एक पाई देने लगे तो आप पाँच हजार नही बल्कि दस हजार स्त्रियो को काम दे सकेगे। और मान लीजिए कि उन असहाय स्त्रियोने आपकी दी हुई एक पाई भी लेना स्वीकार कर लिया तो क्या उन्हे एक पाई देनेका आप साहस कर सकेगे? मैं कहता हूँ कि आपकी हिम्मत कभी नही पडेगी। इसका मतलब यह हुआ कि आपको ऐसी एक सीमा तो निश्चित करनी ही पडेगी कि जिससे नीचे फिर आप जा ही नही सकते। आप चाहे तो उसे 'लाचारीकी सीमारेखा' कहे। पर उस सीमाको अगर निश्चित करना ही है, तो क्यो न उसे एक बार स्थायी रूपसे निश्चित कर दे? भले ही उसके कारण खादी-उत्पादनमे लगे हुए कुछ लोगोको फिलहाल नुकसान ही क्यो न होता हो। जहाँ खरीदारोकी सख्या मर्यादित है, और उत्पादकोकी सख्या अमर्यादित, वहाँ आपको कुछ उत्पादक तो कम करने ही पडेगे। तो फिर विचारपूर्वक कमसे-कम मजदूरीकी ऐसी एक राशि क्यो न निश्चित कर दी जाये कि जिससे इन गरीब कत्तिनोको पेट भरने लायक तो पैसा मिलने लगे? नही तो हम आज अनजानमे उनका जो शोषण कर रहे है, उसका कभी अन्त नही आनेका।

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। पत्रमें महादेव देसाई सूचित करते हैं कि जबसे गाधीजी ने "मानक मजदूरीकी आवश्यकता", १३-७-१९३५ पर लेख लिखा तबसे यह प्रश्न सर्वत्र चर्चाका मुख्य विषय बन गया था। उस दिन कांग्रेस कार्य समितिके राजेन्द्रप्रसाद, वल्लभभाई पटेल, जयरामदास दौलतराम, जमनालाल बजाज, पट्टाभि सीतारमय्या, गंगाधरराव देशपाण्डे, जे० बी० कृपलानी आदि सदस्य जब गाधीजी के समक्ष उपस्थित हुए तो इस विषयपर स्वभावत चर्चा छिड गई।

कागज तैयार करनेवाला एक भाई हमे एक जगहसे कागज भेजा करता है। वह अपने मजदूरोको डेढ आना रोज देता है। उसे आशा हे कि अभी और भी सस्ता कागज बन सकता है। मैंने उसे लिख दिया है कि मुझे तो तुम्हारा ऐसा सस्ता कागज नही चाहिए।

तो अब आप खादीकी परिभाषा बदल देंगे? 'हाथका कता और बुना हुआ कपडा' इस व्याख्यासे अब काम नहीं चलने का। अब तो खादी उस कपडेको कहना चाहिए जो हाथका कता और बुना हो, और जिसकी कताई-बुनाईकी मजदूरी अमुक दरसे दी गई हो।

इसमे तो कोई शका ही नही। दु खकी बात यह है कि इस चीजका आपको इतनी देरीसे पता लगा।

पर कताई तो एक पूरक धन्धा है। आप इतने बरसोसे ससारको यही सन्देश देते आये है। कतैया अपने फुरसतके समयमें ही कातता है।

इसका जवाब 'हॉ' और 'नही' दोनो ही है। मुझे यह मालम है कि हजारो स्त्रियाँ ऐसी है जो सारे दिन कातती है। कातना उनका सहायक धन्धा नही, किन्तु मुख्य धन्धा है। ओर मान लीजिए कि उनका वह मुख्य धन्धा नही है, तब भी दूसरा कोई भी काम एक घटा करने की आप जितनी मजदूरी देते ह उतनी मजदूरी सूत कातनेवाली स्त्रियोको क्यो न दे?

आपको शायद यह पता न होगा कि गुटूर जिलेमें कितनी ही जगह लोग कताई का काम छोडकर चावल कूटने का काम करने लगे है, क्योकि उसमे उन्हे ज्यादा मजदूरी मिलती है।

मुझे मालूम है। पर आपने जो यह कहा है उससे तो मेरी ही बातकी पुष्टि होती है। लोग तो वह काम पसन्द करेगे ही जिसमे उन्हे ज्यादा पैसा मिलेगा। तब कताईके कामके लिए भी दूसरे कामोके जितनी ही मजदूरी देकर क्यो न हम उसे एक प्रतिष्ठित धन्धा बना दे?

इसे अमलमें लाना बहुत ही मुश्किल है। न जाने कितनी कठिनाइयाँ आयेंगी। कत्तिनें कभी हमारी शर्ते माननेवाली नही। आप उनका बाकायदा रजिस्टर रखनेके लिए कहते है। आप उनसे अमुक नम्बरका, अमुक समानताका और अमुक ही मज-बूतीका सूत कतवाना चाहते है। यह सब कैसे हो सकेगा?

इन कठिनाइयोको तो पार करना ही होगा। यह क्या मै नही जानता कि अभी बहुत समयतक तो हमे अनेक तरहकी शिकायते सुननी पडगी? कुछ लोग यह कहेगे कि अपने कपडे लायक सूत खुद ही कात लेनेकी बात हम कत्तिनोके गले नही उतार सकते, तो कुछ यह कहते आयेगे कि जितना हमे चाहिए उतना सूत कातकर कत्तिने हमे देती ही नही।

पर मान लीजिए कि वे हमारे नियम स्वीकार कर ले, और जिन चरखो और तकुओसे वे काम चलाते है उनसे बढ़िया चरखे और तकुए उन्हे हम दे दें, तो यह

स्पष्ट है कि वे अधिक सूत कातेंगे और जितना पैसा उन्हे आज मिलता है उससे दूना या दूनेसे भी ज्यादा पैसा वे सहजमे कमा लेगे।

सो तो वे सहजमे ही कर लेगे — आपकी किसी खूबीके कारण नही। अधिक उत्पादनका मतलब अधिक कमाई है, यह तो स्पष्ट ही है। लेकिन हमने उन्हे जिस न्यायसे वचित रखा है उनके साथ वह न्याय करनेकी दृष्टिसे हम क्या करने जा रहे है?

हमे यह विचार ही अपने दिलसे निकाल देना चाहिए कि खादीको मिलके कपडेके साथ प्रतिस्पर्धा करनी है। मिलका कपडा मिलका कपडा है, और खादी खादी है। मिलका कपडा पैदा करनेवालेको तो यही धुन सवार रहा करती है कि कपडा सस्तेसे-सस्ता कैसे तैयार किया जाये। हमे यह धुन रहनी चाहिए कि खादी-उत्पादकके साथ न्याय किस तरह हो और उसे यथोचित मजदूरी किस तरह मिले। इन दोनोका मुकाबला हो ही नही सकता। आप कहते है कि इस सलाहको अमलमे लानेमे कठिनाई पडेगी, तो मेरा यह कहना है कि अपने कमचारी कम कर दे, विज्ञापन देना बन्द कर दे, और प्राइवेट व्यापारके लिए खादी-उत्पादकको आप जो प्रोत्साहन देते है वह न दे। जिन लोगोने केवल खादी ही पहननेकी दृढ प्रतिज्ञा कर ली है, उनकी इसमे परीक्षा हो जायेगी। वे या तो खादी खुद अपने हाथसे बना ले या जो कारीगर खादी तैयार करते है उन्हे पेट भरने लायक मजदूरीका पैसा दे। यह खादीधारियोकी आत्मशुद्धिका प्रश्न है। हमे यह नही भूलना चाहिए कि हमारा ध्येय दरिद्रनारायणकी सेवा है। कठिनाइयाँ तो आयेगी ही, उन्हे हम धीरे-धीरे हल कर सकते है।[१]

[अग्रजीसे]
हरिजन, १०-८-१९३५

४६८. बम्बईका खादी-भण्डार

बम्बईका खादी-भण्डार चरखा सघका सबसे बडा खादी-भण्डार है। यह किसी एक व्यक्तिकी सम्पत्ति नही है। वह तो चरखा सघकी सम्पत्ति है और चरखा सघ दरिद्रनारायणका ट्रस्टी है। अत दरिद्रनारायणका हितसाधन ही उसका मुख्य कर्त्तव्य है। यद्यपि मध्यम वर्गके कुछ लोगोको एक प्रतिष्ठित काम दिलानेमे वह साधनरूप रहा है तथापि उसे उन्हे नौकरी दिलानेवाला महकमा नही समझना चाहिए। चूँकि खादीके सम्बन्धमे अब नयी नीति अपनाई जा रही है, इसलिए नयी नीतिकी आव-

१ महादेव देसाईने अपने लेखमें इस चर्चाका उपसहार करते हुए लिखा है "सबकी साधारणतया इस एक बातपर सहमति थी कि जहाँ जहाँ हो सके वहाँ यह प्रयोग शुरू कर दिया जाये, और कत्तिनोको भले ही भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न भिन्न दरसे मजदूरी दी जाये, पर आज जिस दरसे उन्हें मजदूरी दी जाती हैं, वह तो अवश्य ही बढ़ा दी जाये।"

श्यकता अनुसार कर्मचारियोकी सख्या घटाई जा रही है। श्री जेराजाणीजी अपनी शोधक बुद्धिसे सोच-सोचकर नये-नये डिजाइनोकी खादी वहाँ मँगवाते थे, भारतवषके तमाम भागोसे आई हुई -इस खादीकी बिक्री बढाने का असाधारण प्रयत्न वहाँ होता रहा है। परन्तु इस प्रयत्नसे व्यवस्था-खर्च इतना अधिक बढ गया कि उसकी तुलनामे दरिद्रनारायणकी दृष्टिसे परिणाम बहुत कम आया और इससे प्रान्तीय कायकर्त्ताओका ध्यान अपने मुख्य कार्यसे हट गया। उनका काम तो यह था कि वे खादीको अपने-अपने प्रान्तमे स्वावलम्बी या लोकप्रिय बनाये। खादीका सार्वत्रिक मिशन सच्चे प्रान्तीय प्रयत्नके बिना पूरा नही किया जा सकता। वह खादीको यथासम्भव असख्य उत्पत्ति-केन्द्रोमे बाटने से ही हो सकता है। बेशक, कुछ खादीकी जरूरत बम्बई-जैसे बडे नगरोके लिए सदा रहेगी, क्योकि वे खुद उसे कभी पैदा नही करेगे। यह एक स्वस्थ माँग होगी और वह असाधारण प्रयत्नके बिना पूरी की जा सकेगी। शहरकी खादीकी दुकानोमे हमे जो तरह-तरहके नमूने दिखाई देते है, वे इसीलिए सम्भव हुए कि सघने शहरी जनताकी विविध रुचियोको पूरा करने की कोशिश की। परन्तु यदि खादीको अपना मिशन पूरा करना है तो वह समय आ गया है जब उत्पत्ति-केन्द्रोकी तरफ ध्यान मोडा जाये। परन्तु वे बहुत ही थोड़े है। जैसे प्रत्येक घर पकाये हुए भोजनकी उत्पत्तिका केन्द्र है, उसी तरह प्रत्येक घरको नही तो प्रत्येक गाँवको खादीकी उत्पत्ति का केन्द्र बनना पडेगा। रसोईघरकी अथव्यवस्था किताबोकी अथव्यवस्थासे बिलकुल भिन्न है। खादीकी अथव्यवस्थाकी भी यही बात है। तब प्रस्तावित परिवतनका अथ यह है कि चरखा सघके द्वारा या उसकी तरफसे चलाये जानेवाले बडे भण्डारोके कमचारियोमे काफी कमी की जाये। इसका यह अथ भी है कि प्रमाणित खानगी उत्पादक बिलकुल खत्म चाहे न किये जाये पर उनकी सख्या जरूर कम हो जाये। अभी यह कहना कठिन है कि यह-सब कैसे होगा। श्री शकरलाल बैकर मनोयोगपूवक इसे अमलमे लानेकी योजना बना रहे है और खास इसी उद्देश्यसे वे सारे भारतका दौरा कर रहे हैं।

पर इस बीचमे खादी-प्रेमियो और दरिद्रनारायणके भक्तोको इतना तो जान ही लेना चाहिए कि खादी इससे कुछ महँगी जरूर हो जायेगी, और खादी-सेवकोको अपना कौशल और भी अधिक बढाना होगा, एव खादीकी उत्पत्ति तथा बिक्रीसे सम्बन्ध रखनेवाले तमाम वर्गोके बीच स्वार्थत्यागकी भावना और भी अधिक विकसित करनी होगी। खादीकी कीमतोमे उत्तरोत्तर जो कमी हुई है, उसे खादी-भण्डारोने अपने लिए हषका विषय माना है। मुझे वह दिन याद है जब मैने बहुत ही मोटी खादीका पहला थान एक रुपया गजसे भी ऊपर बेचा था। आज तो वैसी खादी कोई दो आनेमे भी नही लेगा। खादी-भण्डार उसे बेचेगे भी नही। इसमे सन्देह नही कि खादीके हरएक विभागने जो बढती हुई कार्यकुशलता प्राप्त की है उसीसे खादी इतनी सस्ती हुई, पर इसमे सबसे ज्यादा बेचारी कत्तिनका पेट काटा गया है। लेकिन यह कत्तिन ही तो दरिद्रनारायणकी प्रत्यक्ष मूर्ति है—सारे हिन्दुस्तानमें सबसे कम मजदूरी उसीको दी जाती है। चरखा सघने यह अच्छा किया जो एक जमानेसे

बेकार पडे हुए लोगोके लिए अपनी शक्तिके अनुसार बहुत बडे पैमानेपर कामका एक जरिया तो तलाश दिया। एक घटेकी मजदूरी एक पाई ही क्यो न मिलती हो, पर कुछ मिलने तो लगा। लेकिन अगर सघको अपने ट्रस्टका दायित्व पूरा करना है तो उसे कत्तिनको कमसे-कम इतनी मजदूरी तो देनी ही होगी कि जिससे वह अपना पेट भर सके। अगर वह प्रतिदिन आठ घटे काम करती है तो कताईकी प्रति घटा इतनी मजदूरी तो उसे मिले कि जिससे वह अपनी गुजर-बसर कर सके। कितना पैसा दिया जाये आज यह प्रश्न नही है। अभी तो हमारे सामने यह प्रश्न है कि कत्तिनोको जिस दरसे मजदूरी दी जाती है उसमे वृद्धि होनी ही चाहिए। चरखा सघकी रिपोर्टोंमे अब यह उल्लेख नही रहना चाहिए कि खादीकी कीमतमे पहलेसे कितनी कमी हो गई है, बल्कि अब सघको अपनी रिपोर्टोंमे यह दिखलानेमे गर्व होना चाहिए कि कताईकी मजदूरी की दर पहलेसे कितनी बढा दी गई है। न चरखा सघको तबतक सन्तोष होगा और न मुझे ही, जबतक कि कताईकी प्रति घटेकी मजदूरी बुनकरकी मजदूरीके बराबर नही हो जाती। और खरीदारोको यह याद रखना चाहिए कि वे उस महान् ट्रस्टके सदस्य है, भले ही उनका नाम कागज पर दर्ज न हो, और कत्तिनोका हर तरहसे खयाल रखना उनका धर्म है। एक बार यह सम्बन्ध हृदयसे जान लिया जाये तो फिर खादीकी नित नयी उन्नतिमे कोई कठिनाई आ ही नही सकती। क्या ही अच्छा हो कि तमाम खादी-प्रेमी अपना कर्त्तव्य समझ ले और उन अश्रद्धालु खादी-कार्यकर्त्ताओकी शका निर्मूल कर दे जिनका यह खयाल है कि जनता कभी इतनी महँगी खादी खरीदेगी ही नही।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १०-८-१९३५

४६९. पत्र : भुजगीलाल छायाको

वर्धा
१० अगस्त, १९३५

चि० भुजगीलाल,

तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहे और अपनी सामर्थ्यके अनुसार तुम जो कर सको सो करना। अन्य लोग जो कहे वह धर्म नही है, हम जो माने वही धर्म है। अन्य लोग हमारे मनको कैसे पहचान सकते है? अत तुम भगवान्से पथ-प्रदर्शनकी प्रार्थना करना। वही एक सच्चा पथ-प्रदर्शक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २६०७) से।

४७०. पत्र : परीक्षितलाल ल० मजमूदारको

१० अगस्त, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

तुम्हारे पत्र मिलते रहे हैं। तुम चन्दा अच्छा उगाह रहे हो। मैंने शंकरलालसे भी बात की थी। बापाके आनेपर उनसे भी बात करूँगा। हम तो ईश्वरपर भरोसा रखकर काम करते रहें।

यह दु:खकी बात है कि हरिजनोंको सतानेकी घटनाएँ घटती रहती हैं। ऐसा लगता है कि ऐसे मामलोंको अदालतमें ले जानेपर ही निस्तार होगा। ऐसे हर मामलेमें स्थानीय रूपसे आन्दोलन तो होना ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

सरदारका कहना है कि हरिजन पाठशालाओंके लिए ताल्लुका बोर्डसे आर्थिक सहायता माँगना हमारा कर्त्तव्य है और माँगनेपर सहायता मिल सकती है। इस सुझावपर विचार करना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४०२८)से। सी० डब्ल्यू० १२८ से भी; सौजन्य : परीक्षितलाल ल० मजमूदार

४७१. पत्र : मनु गांधीको

१० अगस्त, १९३५

चि० मनुड़ी,

डाक निबटा देनेके बाद तेरा पत्र मिला। बा की बीमारीकी खबर तो मुझे कल ही मिल गई थी अत: आज पत्र लिखा है। आशा है, तू आनन्दपूर्वक होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४६) से; सौजन्य : मनुबहन एस० मशरूवाला

४७२ पत्र : काशी गांधीको

१० अगस्त, १९३५

चि० काशी (गांधी),

वानप्रस्थमें से गुजरते ही हमारी कसौटी शुरू हो जाती है। यह अशांति क्यों? अगर हमने सब-कुछ कृष्णार्पित कर दिया हो तो उसकी एक निशानी यह है कि हमसे हमारा आन्तरिक आनन्द कोई नहीं छीन सकता। ऐसे अर्पणमें यदि अभी भी कुछ शेष रह गया हो तो जीवनके इस नये चरणमें प्रवेश करते हुए हम उसको भी अर्पित कर दें। नीमूके बच्चे मेरे साथ हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०७०६) से, सौजन्य : छगनलाल गांधी

४७३. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

१० अगस्त, १९३५

चि० ब्रजकिशन,

तुमारा खत मिला। पनचक्कोके चावल यदि अक्षत हो तो कोई दोष नहीं है।

मुझे गाली मिलती है सो अच्छा लगता है। इसका बडा लाभ यह है कि सब बिगाड दूर हो जायेगा। मेरी पूजा करना और मेरा कहना नहीं करना उससे मुझे गाली देना मैं बहुत अच्छा समजता हूं। पूजारी कभी कुछ नहीं करेंगे क्योंकि उनको नहीं करने की आदत हो गई है। गाली देनेवाले तो दिलसे मुझको बुरा मानते हैं जब उनका भ्रम टूट जायेगा तब सब-कुछ करेंगे।

कृष्णनको बलात्कारसे भेजने में क्या लाभ हो सकता है। उसको मुक्त किया तब तो वह निकला। यदि जिनको सिपुर्द किया था वे नहिं चलाते हैं तो क्या उसे चलाने का तुमारा धर्म नहीं है? अच्छा तो वही होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३६) से।

४७४ पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
११ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिल गया। सरकारकी अनुमति लेकर शुरूसे आजतक का सारा पत्र-व्यवहार छाप देना चाहिए। कमेटीकी[1] नियुक्ति करनेवाला पत्र भी छाप देना चाहिए। यह सब छापकर हमें तो सबूत जुटाने में लग जाना चाहिए। यदि लल्लूभाई-का[2] शरीर काम देने लायक हो गया हो तो अच्छा ही है। वे गहराईमें उतर सकते हैं या नही, इसके बारेमें मुझे पूरा सन्देह है। यदि कुंजरू आ जाये तो मुझे अच्छा लगेगा। गिल्डर और बहादुरजी हो, तो काफी होगा। तीसरे जरा कमजोर हो तो भी हर्ज नही।

बलवन्तरायके बारेमें मैं समझ गया। हम तो जो उचित है सो करते रहें। 'सर्वेण्ट' [आफ इडिया] के लेखपर मैंने नजर डाली थी। पूरा पढ़नें का समय भी नही था। राजेन्द्रबाबू वह लेख ले गये हैं।

[3]का पता मालूम हो सके तो साथका पत्र उन्हे भेज देना।

महादेवके लिए तो इसके साथ मैं सब-कुछ भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

यदि विट्ठलभाई वाले रुपयोंके बारेमें कुछ सूझा हो तो लिखना।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७६-७७

१ वल्लभभाई पटेलके निदेशनमें बोरसदमें प्लेग राहत कार्य किया गया था, सरकारका कहना था कि यह कार्य वैज्ञानिक ढगसे नही किया गया, उक्त कमेटी इसी आरोपकी जाँचके लिए नियुक्त की जा रही थी।

२ सर लल्लूभाई शामलदास।

३ साधन सूत्रमें नाम छोड़ दिया गया है।

४७५. पत्र : ना० र० मलकानीको

वर्धा
१२ अगस्त, १९३५

प्रिय मलकानी,

साफ दीख रहा है कि तुमने सचिवकी हैसियतसे कोई खास काम नही किया है, नही तो तुम अपनी डाक मेरे पास न भेजते। तुमको शायद मालूम न हो कि दक्षिण आफ्रिकाके अपने प्रवासके उस पूरे कालमे मैने सचिवके कायके अतिरिक्त अन्य कुछ किया ही नही था। इसलिए मुझे तुमसे सहानुभूति है। पर तुमको जब-तब अनेक मालिकोसे मिलनेवाली निराशा ओर झिडकियोके बीच भी अपनी शान्ति कायम रखनी होगी और विनोदशीलता बनाये रखनी पडेगी। स्वयसेवक होनेसे कोई फक नही पडता बल्कि स्वयसेवक हो तो उसे और भी ज्यादा फटकारे सुननी-सहनी पडेगी और उसपर भी कहना पडेगा 'धन्यवाद, श्रीमान्'। ससारमे जितने भी उल्लेखनीय सचिव हुए है वे ऐसी ही खरी धातुके बने हुए थे। तुमको भी उन्हीकी श्रेणीका बनना हे। मिलनेपर और अधिक बाते होगी।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च]

साथका पत्र बा के लिए हे।

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१०) से।

४७६ पत्र : द्रौपदी शर्माको

१२ अगस्त, १९३५

चि० द्रोपदी,

आज शर्मा[1] रवाना होगे। वह जबतक कलकत्तेमे भी था तो मुझे कुछ चिन्ता तुमारे लिये नही थी। अब तुमारे हाल जानते रहना मेरा कर्त्तव्य हो गया है। मुझे तुमारे और लडकोके हाल बताओ। तुमारे रहन-सहनकी बात लिखो। तुमरा रोजका कार्यक्रम लिखो। तुमारे मददगार कौन है सो भी लिखो।

बापुके आशीर्वाद

१ द्रौपदी शर्माके पति, हीरालाल शर्मा, जो अमेरिका जा रहे थे

[पुनश्च]

वहा कुछ किताब कन्या आश्रमकी रही है ?

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १८४ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

४७७. पत्र : श्रीपाद दामोदर सातवलेकरको

१२ अगस्त, १९३५

भाई सातवलेकर,

प्रेमवश होकर जो पत्र मुझे लिखा है उसके लिए मै आभारी हू। मेरा ख्याल है कि वह सापमे विष ही नही था। पायलेगावकरजी[1] ने भी कहा था बहुत विषैला नही है। कटवाने की कोशीश करते हुए भी किसीको नही काटा। तो भी तुमारी चेतावनी बिलकुल योग्य है।

मो० क० गाधो

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७७७) से, सौजन्य श्री० दा० सातवलेकर

४७८. पत्र : प्रेमाबहन कटकको

वर्धा
१३ अगस्त, १९३५

चि० प्रेमा,

पत्रोको निबटाने के लिए आज मैंने अढाई घटेका मौन लिया है। पत्रोको एकके-बाद-एक निबटाते हुए तेरा ९-७-१९३५ का पत्र मेरे हाथमे आया है।

केलकरसे[2] मिलकर बहुत अच्छा किया। यदि तू उन्हे अपना काम दिखाने ले जाये तो अच्छा हो।

गन्दे कामका वही हाल है जो तूने लिखा है। महारोवाला अश मैं 'हरिजन-बन्धु'मे दे रहा हूँ। तेरा नाम-पता नही दूगा।

पूनाके प्रस्तावपर अमल होनेपर मुझे लिखना। हिटलरके विषयमे दूसरी पुस्तक कौन-सी है ?[3]

१ साँपोको बशमें करने की अपनी शक्तिके लिए प्रसिद्ध एक साधु। नागपंचमीके दिन (४ अगस्त, १९३५) को उन्होने एक साँप गांधीजी के गलेमें डाल दिया था।

२ एन० सी० केलकर।

३ **बापुना पत्रो – ५ कु० प्रेमाबहेन कटकने**, पृ० २३०३२ पर प्रेमाबहन लिखती है कि हिटलरकी लिखी **माई स्ट्रगल** नामक पुस्तक उन्होने और गांधीजी ने पढ़ी थी, किन्तु दूसरी पुस्तकके नामका उल्लेख उन्होंने नही किया।

अब तेरा प्रश्न। रूसके उदाहरणका नमूनेके तौरपर उपयोग करनेमें खतरा है। एक तो यह है कि हमें उसका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है, दूसरा यह कि उसे अभी बहुत समय नहीं हुआ है, तीसरा यह कि वहाँ जो-कुछ होता है वह जबरन कराया जाता है। इसलिए हम रूसको अलग करके सोचें। हमारे लिए अपने बीच इतना करना अनिवार्य है। हिंसाके द्वारा न तो कुछ करना चाहिए, न कराना चाहिए। इसलिए धनिकोंसे न्याय प्राप्त करनेका सबसे आसान उपाय यह है कि वे अपने प्राप्त किये हुए धनका अच्छेसे-अच्छा उपयोग करें। इससे यह परिणाम निकल सकता है कि ऐसा करते हुए वे बहुत अधिक धन उपार्जन करनेका लालच ही छोड़ दें। यह परिणाम निकले तो कोई हानि नहीं और न निकले तो भी ठीक ही है। उलटे इतना धन सँभालकर रखनेकी झंझट किये बिना उसका लाभ मिल जाता है। और यदि बहुत-से धनिक न्यासी बन जायें, तो हमारे लिए कहनेको कुछ नहीं रह जाता। तेरे तर्कके मूलमें यह शंका निहित है कि धनिक कभी अपनी सम्पत्तिके न्यासी नहीं बनेंगे। यदि यह शंका सच हो तो भी चिन्ता नहीं, क्योंकि अन्तमें तो सत्यकी विजय है ही। जो लोग अपनी जरूरतसे ज्यादा सम्पत्ति रखते हैं वे चोरी करते हैं। और चोरीका धन कच्चा पारा है। वह पच नहीं सकता। अन्तमें वह चोरका नहीं रहेगा, यह विश्वास रखकर हम तो अहिंसक उपाय ही करते रहें।

यदि अब भी समाधान न हुआ हो तो फिर पूछना। तेरा प्रश्न महत्त्वपूर्ण है, और यदि अहिंसाको तूने पूरी तरह समझ लिया होगा तो मेरा उत्तर तुझे पूर्ण लगना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

लक्ष्मी बारडोली गई है। प्रभावती और अमतुस्सलाम भी यहीं हैं। बा दिल्लीमें हैं। लक्ष्मीके लड़का[1] हुआ है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७६) से। सी० डब्ल्यू० ६८१५ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कंटक

४७९. पत्र : रामदास गांधीको

१३ अगस्त, १९३५

चि० रा[मदास],

तेरा पत्र मिला। अन्तमें तो सबको भाग्य जहाँ ले जाता है वहाँ जाना ही पड़ता है इसलिए उसीके अनुसार तू भी बरतेगा। लेकिन जिस तरह भाग्य है उसी तरह पुरुषार्थ भी है। पुरुषार्थ अपने बसकी बात है इसीलिए शास्त्र हमें भाग्यपर भरोसा न करनेकी शिक्षा देते हैं। इसीसे "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"[2]

१. राजमोहन देवदास गांधी।
२. भगवद्गीता, २/४७।

वाला श्लोक रचा गया। इसका अथ बेशक ऐसा किया जा सकता हे "तुझे पुरुषाथ करने का ही अधिकार है, भाग्यको जानने का कदापि नही। पुरुषार्थ करके जैसे राम रखे वैसे रह।" कभी-कभी 'गीता' का मनन करता है या नही? 'राम-गीता' पास रखता है या नही?

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

४८०. पत्र : एफ० मेरी बारको[1]

वर्धा
१४ अगस्त, १९३५

मेरे नये सचिवके बारेमे तुम्हारा क्या खयाल है?
सस्नेह,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५६) से। सी० डब्ल्यू० ३३८६ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१ गांधीजी ने अपनी क़लमसे अमृतकौरके पत्रके अन्तमें इतना जोड़ दिया था। वर्धासे भेजे गये इसी तिथिका वह पत्र निम्न प्रकार था

"बापूको तुम्हारा ११ तारीखका पत्र मिल गया है। उनको खुशी है कि तुम्हारे स्वास्थ्यमें सतोष जनक प्रगति हो रही है। नीम और इमलीकी पत्तियोको त्याग देनेकी सूचना बिलकुल गलत है। मुरब्बा अच्छा है, इसकी गवाही मैं दे सकती हूँ, और अच्छा हो यदि तुम अगली बार यहाँ आते समय उसकी विधिकी जानकारी लेती आओ। बापू कहते है कि तुमने बड़ा अच्छा किया कि अपनी "स्वास्थ्य परीक्षा" स्वय ही करना सीख रही हो। तो अब अस्पतालके लोगोंको कष्ट देनेकी जरूरत तुमको नही रह जायेगी। अफसोस! अब मुझे यहाँ एक सप्ताह ही और रहना है। यहाँ सब कुछ बड़ा अच्छा रहा। मेरी और बापूकी ओरसे स्नेह।"

४८१ पत्र हीरालाल शर्माको

१४ अगस्त, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। अच्छा किया सब तारीख दी है। मैंने द्रोपदीको खत[1] लिखा है।

तुमारे रवाना होनेका तार ब्रजमोहनजी से मिल गया था। तुमारे अगले खत मिल चुके थे। तुमारे जहाजके अनुभवका बयान अब मिलेगा।

कन्या आश्रमकी कुछ किताब तुमारे पास थी क्या? छोटेलालने यह यादि[2] भेजी है। अगर मुझको कुछ तुमने कहा है तो मैं भूल गया हूं।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

लिस्ट पीछे दिया है।

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १८६ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

४८२. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

१४ अगस्त, १९३५

भाई सतीशबाबु,

तुमारा खत मिला। मैं कुछ समजा हू। मेरे पर कुछ उसका बोज-सा प्रतीत होता है। इतनी कमिटी, इतनी किताब, इतनी प्रवृत्ति एक व्यक्तिपर लादना अच्छा हो सकता है? लेकिन इस बारेमे मैं कुछ अभिप्राय निश्चित नही कर सकता हू। मुझे प्रतिष्ठानमे रहना चाहीये। वगैर अनुभवके कुछ भी टीका करने का मुझे अधिकार नही है। यहा आओगे तब थोडी बाते कर लेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७१४) से।

१ देखिए "पत्र द्रौपदी शर्माको", १२-८-१९३५।

२ सूची।

४८३. पत्र एस० अम्बुजम्मालको

१४ अगस्त, १९३५

चि० अम्बुजम,

आज तुमको हिंदी खत लिखता हू। पढ सकती है या नही, लिखो। आपत्ति हो तो इग्रेजीमे लिखुगा।

किचीकी देखभाल हम क्या करनेवाले हो सकते है? अतमे तो ईश्वर ही सभाल सकता है।

नीमु आजकल मेरे साथ रहती है। कानु बीमार है। बहुत दुबल हो गया है। लक्ष्मी बारडोली गई है। कुमारप्पा बीमार थे लेकिन अब अच्छे है। उनकी बहिन यहा दस दिन रह गई। अब यहा राजकुमारी अमृतकोर और खुरशेद बहिन है। प्रभावती और अमुतुल तो है ही।

तुमारे फल मिल गये है। शहद भी अच्छा। जब दिल चाहे तब फल व शहद भेजो लेकिन दोनो सस्ते हो। क्योकि ये ही चीज नित्य चलती तो है ही।

मेरा खुराक दूध, नीम और दूसरी पत्तीया और फल है। कोई बार फल छोडता हू।

बापुके आशीर्वाद

मल पत्रसे अम्बुजम्माल पेपस, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

४८४. पत्र · निर्मलकुमार बोसको

वर्धा
१५ अगस्त, १९३५

प्रिय निमलबाबू,

आपका इसी ५ तारीखका पोस्टकार्ड मिला। आखिर मै आपका लेख आवश्यक सुधारोके साथ भेज पा रहा हूँ। विलम्बके लिए खेद है। आशा है, सुधारोको पढनेमे आपको कठिनाई नही होगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५०९) से।

४८५ पत्र: मणिलाल और सुशीला गाधीको

१५ अगस्त, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

कही डाक न निकल जाये इसलिए बहुत जल्दीमे यह घसीटे दे रहा हूँ। यहा सब कुशल-मगल है। आजकल मै बहुत व्यस्त हूँ। एक मिनट खाली नही मिलता। कहा जा सकता है कि हरिलाल शराबके कुडमे पडा रहता है। यह खयाल कि उसमे सुधार हुआ है सब गलत साबित हुआ। वह जैसा था उससे कही ज्यादा बिगड गया है। किन्तु 'जबतक साँसा तबतक आसा' के अनुसार हमे मान लेना चाहिए कि यदि बचा रहा तो किसी दिन सुधर जायेगा।

बा और मनु दिल्लीमे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८४१) से। सी डब्ल्यू० १२५३ से भी, सौजन्य सुशीला गाधी

४८६ पत्र: रसिक देसाईको

१५ अगस्त, १९३५

चि० रसिक,

चाहे जो कारण रहा हो तूने पत्र तो लिखा।

हर तरहसे आश्रमका गौरव बढाना। क्वेटाका पैसा भेजने का सबसे सहज उपाय इन्स्योर्ड रजिस्ट्री पत्र द्वारा भेजना है। यह रकम तू सेठ जमनालाल बजाजको वर्धा भेज सकता है। आशा है, तेरी गाडी ठीक चल रही होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री रसिक देसाई
शामलदास कॉलेज छात्रावास
भावनगर, काठियावाड

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६२१) से।

४९०. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१६ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला[१]। [१] के बारेमे [२] को लिख रहा हूँ। ऐसी घटनाएँ मनुष्य को नास्तिक बना देती है। इसका इलाज यही है कि जो जाग्रत है, वे अधिक जाग्रत बने।

जयकरने[३] अभी पूनामे भाषण दिया था। उसम तिलक स्वराज कोषकी कडी आलोचना की गई है। उसकी रिपोर्ट हरिभाऊने[४] भेजी है। मैने जयकरसे पुछवाया है कि क्या यह रिपोट सही है? जवाब आने पर लिखूगा।

उस श्रमजीवीका पत्र और उसका जवाब साथमे है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

[५] के नामका पत्र साथमे है। उनका पता तलाश करके इसे उन्हे भेज देना।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७८

४९१. विकेन्द्रीकरण?

हरिजन सेवक सघकी कार्यकारिणी समितिकी इसी माहकी तारीख ३० को होने वाली बैठकमे जिन कई महत्त्वपूर्ण विषयोकी चर्चा होगी उनमे से एक विषय यह है कि क्या सघके कार्यकी व्यवस्थाका विकेन्द्रीकरण करने की जरूरत है। कुछ प्रान्तीय बोड यह महसूस करते है कि विकेन्द्रीकरण कर देनेसे सघका ध्येय और भी अच्छी तरह सम्पादित होगा।

सेठ घनश्यामदास बिडला और श्री अमृतलाल ठक्करका आग्रह था कि व्यवस्था केन्द्रीकृत होनी चाहिए। इसका मुख्य कारण यह था कि पैसे तो केन्द्रने ही इकट्ठे किये थे, प्रान्तीय बोर्डोके अध्यक्षोको सेठ घनश्यामदासने निर्वाचित किया था और सघकी नीति भी क्रमश केन्द्रीय बोडने ही बनायी थी।

१, २ व ५ साधन-सूत्रमें नाम छोड दिये गये है।

३ मुकुन्दराव रा० जयकर, नरम दलके नेता।

४ हरिभाऊ फाटक, पूनाके कांग्रेसी कार्यकर्ता।

सघके कारोबारको एक ही केन्द्रसे चलाने की नीतिसे मै सहमत रहा हूँ, तो भी मेरी इच्छा हमेशा ही यह रही है कि उपयुक्त अवसर आते ही यह कारोबार सघकी विभिन्न शाखाओमे विभक्त कर दिया जाये। मुझे इसमे सन्देह नही कि केन्द्रीय बोडकी भी यही इच्छा रही हे। पर यह तो तभी हो सकता है, जब प्रान्तीय बोड अपनी जरूरतका पैसा स्वय इकट्ठा कर लेनेके लिए तैयार और समथ हो। गॉव-गॉवमे हरि-जन सेवक सघ हो, और उसके लिए हर गाव खुद पैसा इकट्ठा कर लिया करे इससे अधिक प्रिय मुझे और क्या हो सकता है? ऐसा दिन जब आयेगा, तब अस्पृश्यताका सवथा नाश भी हो गया होगा। आज तो बदकिस्मतीसे यह मानना पडेगा कि अब भी इस आन्दोलनको सारे देशमे जो इने-गिने थोडे-से सच्चे सुधारक है वही चला रहे हैं। इन सबमे अपने-अपने कायक्षेत्रसे पैसा इकट्ठा कर लेनेकी शक्ति नही है, और किस तरहकी नीतिसे काम चलाना चाहिए इसका भी सबको पूरा पता नही है। 'नीति' शब्दका मै जान-बूझकर उपयोग कर रहा हूँ। क्योकि ध्येय क्या है यह तो सभी जानते है, पर सच्चे सुधारकोको कैसी-कैसी सख्त मर्यादाओके अन्दर काम करना पडता है इस बातका सबको पता नही है। निर्णय करने मे जरा-सी भूल हो गई, या उतावलीमे कोई काम कर बैठे, या बिना सोचे-समझे कोई बात ही कह दी, तो सारा किया-कराया काम मिट्टीमे मिल सकता है। इसलिए सघके कायकी नीति उन्ही थोडे-से आदमियोको अपने नित्यके कार्यानुभवके आधारपर काफी सावधानीके साथ बनानी होती है, जिनके मनमे हरिजनोकी सेवा करने और हिन्दू-धर्मका अस्पृश्यता-रूपी यह महान् कलक धो डालने के अतिरिक्त दूसरा कोई विचार ही नही।

हरिजन-सेवकोको यह जानकर दु ख होगा कि प्रधान कार्यालयके बही-खातोमे ८०,००० से अधिक ही रकम बतौर पेशगीके प्रान्तीय बोर्डोके नाम पडी हुई है। इसका मतलब यह हुआ कि जिन प्रान्तीय बोर्डोके नाम यह रकम पेशगी पडी हुई है, वे अपने निर्धारित हिस्सेका पैसा इकट्ठा नही कर सके। यह भी एक दु खकी बात है कि अधिकाश प्रान्तीय बोर्डोने ऑकडे और तथ्य सघ द्वारा निश्चित किये हुए रूपमे नही भेजे। तीसरी उल्लेखनीय बात यह है कि सघके मन्त्रियोके सतत जागरूक रहते हुए और उनके कई बार दौरा करनेपर भी, जिला सघो ने, उन्हे जिस तरह काम करना चाहिए था उस तरह नही किया। यह सब कहने का अथ यह नही है कि प्रान्तो तथा जिलोके हरिजन-सेवकोने कुछ किया ही नही। निस्सन्देह 'हरिजन' में समय-समयपर जो रिपोर्ट निकलती रहती है उन्होने यह सिद्ध कर दिखाया है कि हरिजन सेवक सघकी शाखाओको काम आरम्भ किये अभी थोडा ही समय हुआ है, पर इतने ही समयमे उन्होने कितनी अद्भुत प्रगति की है। मगर इस वक्त तो मेरा हेतु उधार नामा जॉचना है कि जिससे हरिजन-सेवक एक सच्चे निणयपर पहुँच सके। यह भी सम्भव है कि मैंने जिन त्रुटियोकी ओर ध्यान आकर्षित किया है वे त्रुटियाँ केन्द्रीकरणकी नीतिपर आवश्यकतासे अधिक आग्रह रखने का परिणाम हो। अगर एसा है तो जो लोग विकेन्द्रीकरणके पक्षमे है उन्हे अपना मामला साबित करना पडेगा। केन्द्रीय बोडको अगर इसकी जरूरत महसूस हुई होती, तो वह यह कभी का कर

चुका होता। आगामी बैठक केन्द्रीय बोर्डकी कायकारिणी समितिकी है। उसमे केवल सात सदस्य है, और अध्यक्ष उसमे उपस्थित नही हो सकेगा। अत प्रत्येक प्रान्तके हरिजन-सेवकोसे मेरा यह निवेदन है कि वे इस विषयपर अपनी निश्चित राय सघ-के मन्त्रियोके पास भेज दे, साथ ही अपनी रायके समथनमे तथ्य और आकडे भी सक्षिप्त रूपमे भेजे। हरिजन-सेवाका काय दया-धर्मका कार्य है, और इसमे एक प्राचीन धमके जीवन-मरणका प्रश्न अन्तर्निहित है। इसलिए इस कायको आगे बढाने के लिए हमे अपनी शक्ति-भर एक भी उपाय नही छोडना चाहिए। ऐसे विषयोमे व्यक्तिगत दृष्टिसे विचार करने का कोई मूल्य ही नही।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १७-८-१९३५

४९२. मिश्र खाद

इन्दौरमे 'इन्स्टिट्यूट ऑफ प्लाट इडस्ट्री' नामकी एक वैज्ञानिक सस्था है। जिनकी सेवा करने के लिए वह कायम की गई, उनके लिए वह समय-समय पर पत्रक प्रकाशित करती है। इनमे से पहला पत्रक खेतकी बेकार समझी जानेवाली चीजोसे कपोस्ट (मिश्र खाद) बनाने के तरीको और उसके फायदोका बयान करता है। गोबर और मैला उठाने, साफ करने या फेकने का काम करनेवाले हरिजनो और ग्रामसेवको के लिए वह बहुत उपयोगी है, इसलिए मै कम्पोस्ट बनाने की प्रक्रियाके वर्णनके साथ उसके फुटनोटोको भी जोडकर लगभग पूरे परचेकी[1] नकल नीचे देता हूँ।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १७-८-१९३५

४९३ सर्प-विष

हॉफकिन इन्स्टीट्यूटके निदेशक डॉ० सोखीने मुझे भारतीय सर्पोके बारेमे एक विवरण भेजने की कृपा की है। चूकि अब गॉवोमे हमारे सहकर्मी फैलते जा रहे है और चूँकि दुर्भाग्यवश वहाँ शहरी सुविधाएँ सुलभ नही है, इसलिए उनको ऐसी बातोके बारेमे जानकारीसे लैस करना बहुत जरूरी हो गया है जिनका सामना गाँवोमे आम तौरपर करना पडता है। इनमे सबसे खतरनाक है साँपका काटना, जो तुरन्त ही आवश्यक उपचार न हो पानेपर अनेक बार प्राण-घातक सिद्ध होता है। मै उस विवरणके महत्त्वपूर्ण अश नीचे दे रहा हूँ।[2] पूरे विवरणमे साँपोकी पहचानके

१ यहाँ नहीं दिया जा रहा है, यह **हरिजन** में प्रस्तुत और बाद के अंकमें क्रमश प्रकाशित हुआ था।

२ देखिए परिशिष्ट १।

बारेमें उपयोगी जानकारी दी गई है। पर सारा विवरण पारिभाषिक शब्दावलीसे इतना लदा है कि ग्राम-कार्यकर्त्ता उसे समझ नही पायेगे। इसलिए म विवरणके उस अशको छोड रहा हूँ।

चूकि दसमे से नौ साप जहरीले नही होते और वे चूहोसे खेतोकी रक्षा करने आदिमे बडे उपयोगी रहते हैं, इसलिए जहरीले साँपोको गैर-जहरीले साँपोसे अलग करके पहचानने की यदि कोई सरल विधि मिल जाये तो बडा उपयोगी रहेगा। इसमे रुचि रखनेवाले पाठक तबतक नीचे दिये इस बहुत ही सादा-से इलाजपर गौर करे [1]

कर्नल सोखीने तो मुझे आगाह किया है कि सर्प-विषमारक दवा की सुइया लगाने के अलावा जहरीले सापोके काटने का दूसरा कोई भी अचूक इलाज नही है, फिर भी मैं 'रिटर्न टु नेचर' [प्रकृतिकी ओर लौट चलो] के लेखक जुस्टके अनुसार उनके द्वारा सफलतापूर्वक प्रयुक्त इस इलाजको यहाँ बतलाने का लोभ सवरण नही कर पा रहा हूँ। मैने भी सर्प-दशके दो या तीन मामलोमे और बिच्छूके डक मारने के अनेकानेक मामलोमे इसका सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। इलाज यह है कि काफी मात्रामे मिट्टी लेकर दशके स्थानपर उसकी पट्टी-सी लेप दी जाये। यथा-सम्भव अधिकसे-अधिक साफ मिट्टी लेकर शीतल जल मिलाकर ठण्डी पुलटिस बना ली जाये। फिर उसकी एक इच मोटी तह फैलाकर जिस अगपर दश लगा हो उसपर लेप दी जाये और एक गीले कपडकी पट्टी बाध दी जाये। यदि एडीमे काटा हो, तो उस पैरमे घुटनेतक पुलटिस लगानी चाहिए और यदि अँगुलीमे काटा हो तो पूरे हाथमे पट्टी बाँधनी चाहिए। जितने अधिक स्थानपर हो, उतना ही अच्छा। उपर्युक्त विवरणमे बताये गये अन्य सब इलाज भी निस्सन्देह किये जाने चाहिए। और यदि दवाकी सुई लगा दी जाये तो फिर मिट्टीका यह इलाज अनावश्यक होगा। मुझे विश्वास दिलाया गया था कि यदि समय रहते सुई लगा दी जाये तो निश्चय ही वह विषको मार देगी। मिट्टी द्वारा किया जानेवाला इलाज सोलहो आने कारगर ही है, ऐसा भी मै नही कह सकता। कारण मैने इसके प्रयोगसे जिन लोगोको ठीक किया है उनके बारेमे मुझे यह ठीक-ठीक जानकारी नही रही है कि उनको अत्यधिक विषैले साँपोने ही काटा था। मिट्टीका यह इलाज हानिरहित है और गावोमे बडी सरलतासे किया जा सकता है और फिर लेखकने इसकी बडी प्रशसा की है, इसी-लिए मै इसे सुझा रहा हूँ।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १७-८-१९३५

१ देखिए परिशिष्ट १।

४९४. पत्र : ना० र० मलकानीको

वर्धा
१७ अगस्त, १९३५

प्रिय मलकानी,

इसी महीनेकी १५ तारीखका तुम्हारा पत्र आज मिला है, लेकिन नये न्याससे सम्बन्धित दस्तावेज और कागजात नही आय ह।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६४)से।

४९५ पत्र . लीलावती आसरको

१७ अगस्त, १९३५

चि० लीलावती,

तेरी प्रसादी मिली। तू स्थिरचित्त बन, सीख और सेवा कर।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३६) से। सी० डब्ल्यू० ६६११ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

४९६. पत्र निरजन स्वामीको[1]

१७ अगस्त, १९३५

भाई निरजन स्वामी,

तुम्हारे लेखोमे छापने-जैसा मुझे तो कुछ मिला नही। फिर भी तुमने इतना लिखने और सोचने-विचारनेकी जो मेहनत उठाई है वह बिलकुल बेकार तो कभी नही जायेगी।

१ उर्फ़ मकनजी गोपालजी।

चि० वल्लभसे[1] मै क्या कहूँ? उसके बारेमे विनोबा सोच लेगे। वहाके प्रबन्धमे मै हस्तक्षेप कर ही नही सकता, किन्तु इतना मै जानता हूँ कि नालवाडी आश्रमके सचालनका काफी बोझ वल्लभ पर है।

बापू

श्री निरजन स्वामी
ओलपाड

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४६६) से।

४९७ पत्र: नारणदास गाधीको

१७ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालके बारेमे हम क्या कर सकते है? वह सभी चीजोको सन्देहकी दृष्टिसे देखता है और स्वयको निर्दोष मानता है। जूनागढमे वह कोई तमाशा खडा न करे तो अच्छा हो।

मैथ्यूके बारेमे तुमने इतना अधिक सन्तोष व्यक्त किया है, उससे मुझे प्रसन्नता होती है। यदि वह दत्तचित्त होकर अपना काम करेगा तो वहा भी अपना नाम रोशन करेगा। तुम्हे पूरी तरहसे विश्वास हो जानेपर यदि तुम उसे अधिक दे सको तो देना। किन्तु उससे शारीरिक श्रम तो लेना ही चाहिए, और उसे हिन्दी भी अवश्य सीखनी चाहिए।

साबरमतीसे जो पैसा उन्होने मँगाया है सो भेज देना।

वजुभाईने अपने अन्तिम पत्रमे जो पता दिया है वह मुझे भेज देना, मुझे उसकी जरूरत है। मै अभी उसे पत्र नही लिख सका हूँ।

प्राध्यापक जोशीका पत्र वापस लौटा रहा हूँ। यदि उसे खादीपर श्रद्धा है तो वह खादीकी धोती क्यो नही लेता? अब तो बहुत महीन धोतिया मिल जाती है। यदि वह स्वय ही काते तो बहुत सस्तेमे धोती बन सकती है। उसे छुट्टी दे देनेकी तो कोई वजह ही नही है। उसका पत्र मुझे पसन्द आया। यदि तुम उक्त पत्र नरहरिको भेज दो तो अच्छा हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७० से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१ वल्लभ स्वामी।

४९८. पत्र ईश्वरदासको

१७ अगस्त, १९३५

भाई ईश्वरदास,

तुमने जो श्लोक बनाये हैं वह तो गुरु शिष्यके बारेमें है। और वह भी ऐसे मौकेपर जब दोनो एक स्थानपर रहते है। न मैं गुरु हू न तुम शिष्य हो। मैंने किसीको शिष्य नही बनाया है। सो तो तुम्हे मालूम है न? तुम्हारे प्रश्नमे एक प्रकारका आलस्य पाता हू। प्रश्न ऐसे रहते है जिनका प्रश्न मेरे लेखोमे आ ही गये है। लेकिन वाचन, मनन चाहिये ना?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

४९९ सेवाकी रीति

एक बहन एक गाँवमे करीब एक सालसे रहती है, ओर वहाँ ग्रामवासियोकी सेवा करती है। धीरे-धीरे वह अपना सेवा-माग तय कर रही है। कठिनाइयाके बहुत-सारे पहाड वह लाँघ चुकी है। किसानोके साथ हल चलाती है, रास्ता साफ करती है, स्त्रियोको सूत कातना सिखाती है और बालको तथा वयस्कोको पढाती है। वह अपने अनुभव मुझे भेजती रहती है। अभी हालमे उसने जो अनुभव लिख भेजा है उसे अत्यन्त उपयोगी समझकर मैं यहाँ उद्धृत करता हूँ[1]

> **एक दिन महारवाडेमें एक बकरी मर गई। महार लोगोने मुर्दार जानवरका मास खाना या उसका चमडा उतारना दोषास्पद समझकर छोड दिया है। मैं चमारवाडेमें गई, पर महारकी छुई हुई लाश लेनेके लिए चमार तैयार नहीं थे। तब मैंने कहा कि अब माँगवाडा चलना चाहिए। मैंने लाश खुद ही अपने सिरपर रख ली। लोग आँखें फाड-फाडकर देख रहे थे। मैं सीधी माँगवाडेमें गई, और माँग लोगोने वह लाश ले ली और कहा, "बहनजी, तुम खुद ही अपने सिरपर लादकर इसे क्यो लाईं? हमें कहला भेजतीं, तो क्या हम आते नहीं?" मैंने कहा, "मुझे यह बतलाना था कि काम गदा नही होता, मनुष्य गन्दा होता है। मुझे तो कोई शर्म थी नहीं, इसलिए तुम्हे किसलिए कष्ट देती?"**

१ यहाँ केवल कुछ अंशोका ही अनुवाद दिया गया है। पत्र लेखिका सम्भवतः प्रेमाबहन कटक थी, देखिए "पत्र प्रेमाबहन कटकको", १३-८-१९३५।

इस उदाहरणसे यह प्रकट होता है कि भाषणोसे काम नही चलता। दूसरोसे हम जो काम कराना चाहते है वह हमे खुद ही करके दिखाना चाहिए, तभी काम चलेगा।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, १८-८-१९३५

५०० पत्र . भगवानजी ए० मेहताको

१८ अगस्त, १९३५

भाई भगवानजी,

मैने तुम्हे हाथका बना थोडा-सा कागज भेजा है। आशा है, वह मिल गया होगा। उसका बीजक इसके साथ है।

देहाती नरकुल और स्याही तो राजकोटमे जितनी चाहिए उतनी मिल सकती है। बोहरा लोग दोनो चीजे बेचते है। ऐसी चीजे यहाँसे भेजनेकी जरूरत नही। नरकुल तो हमारे खेतोमें होता है। उनमें से कुछ तरहके जो बहुत कडे और चमकदार होते है, सब जगह नही होते। किन्तु बास तो जहाँ चाहिए वहाँ मिल जाता है। मुझे याद है कि बचपनमे हम सब भाई शौकिया बासकी कलमे बनाकर देखा करते थे। और घरमे नरकुलकी कलमके अतिरिक्त और कुछ नही था। अंग्रेजी स्कूलमे जानेके बाद निबवाले होल्डरोने घरमे प्रवेश किया और आपसमे दोनोसे लिखनेकी होड चला करती थी।

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८२६) से। सी० डब्ल्यू० ३०४९ से भी, सौजन्य भगवानजी अ० मेहता

५०१ पत्र . परीक्षितलाल ल० मजमूदारको

वर्धा
१८ अगस्त, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

तुम्हारा पत्र दु:खद कथा पत्रका है। इस मामलेमे अखबारोने [घटनाका] विवरण बढा-चढाकर नही बल्कि सक्षेपमे दिया है। तुमने सरकारी अधिकारियोकी मदद लेकर अच्छा ही किया। अत्याचारियोको सजा मिलनेपर ही निस्तार होगा। इसीमे कमसे-कम हिंसा है। जबतक अहिसकोकी सख्या और शक्ति परिमित है तबतक राज्यकी हिसा सबसे कम दोषपूर्ण मानी जायेगी। सरकारी अधिकारियोकी सहायता लेनेके बावजूद तुम अपने ढगसे अन्य उपाय तो करोगे ही। क्या ऐसा कोई व्यक्ति नही है जो

राजपूतो और बारैयोको समझा-बुझा सके? हममे से किसीको हरिजनोके बीच रहना चाहिए। मै समझता हूँ, उस विभीषण-रूपी राजपूतको प्रोत्साहन मिलता ही होगा।

पाठशालाओके बारेमे तुमने उपयोगी सूचनाएँ दी है। तुम्हारा पत्र मै सरदारको भेज रहा हूँ। बापाके आनेपर मै हमारे बजटके बारेमे बातचीत करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४०३६)से। सी० डब्ल्यू० १२७ से भी, सौजन्य परीक्षितलाल ल० मजमूदार

५०२ पत्र कस्तूरबा गाधीको

१८ अगस्त, १९३५

बा,

बहुत प्रतीक्षाके बाद तेरा पत्र मिला। तू जल्दी अच्छी हो जा। नीमू आदिकी फिक्र मत करना। नीमू आनन्दपूवक है। बच्चे भी यहा पहुँचने के बाद कुछ पनपे है। कानो मेरे साथ ही खाने बैठता है। कभी सुमित्रा भी बैठ जाती है और कभी नही बैठती। उषा बढती जा रही है। नीमूका सितार भी थोडा-बहुत बजता रहता है। अमतुस्सलाम खूब सेवा करती है। राजकुमारी अभी यही है। २१ तारीखको यहाँसे रवाना होगी। खुर्शेदबहन तो यहा है ही। २२ तारीखको गोसीबहनके आनेकी सम्भावना है। हरिलालके पत्र मिलते रहते है। जो उसके मनमे आता है सो लिखता रहता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १५४६) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

५०३ पत्र: मनु गाधीको

१८ अगस्त, १९३५

चि० मनुडी,

तुझे बुखार कदापि नही आना चाहिए था। अब इस तरह रहना कि बुखार आये ही नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४७) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

५०४ पत्र देवदास गांधीको

१८ अगस्त, १९३५

चि० देवदास,

लक्ष्मीकी दाढके लिए, यदि गरम पानीमें परमेंगनेट डालकर कुल्ले न कराये हो तो करा देखना। इसका अच्छा असर होता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४८) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

५०५ पत्र वल्लभभाई पटेलको

१८ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

साथमें [1]का पत्र है। इस बेचारेको तो कमेटीके बारेमें कुछ पता ही नहीं। क्या तुमने कोई कदम उठाया?

किशोरलालने कल बताया कि तुम्हें तो सख्त बवासीर हो गया है और अब खून भी जाने लगा है। ऑपरेशन कराना पड़ेगा। यह तो शरीरके भीतर इकट्ठी हुई गन्दगीका नतीजा है। मुझे पूरा हाल लिखना। इस हालतमें तुम्हारा ऑपरेशन भी अच्छा तो नहीं कहा जा सकता। इसलिए उसके बिना काम चल सके तो चला लेना ठीक होगा। गौरीशंकर या डॉ० मेहताकी[2] मदद लो तो ठीक होगा। शायद गौरीशंकर अच्छी मदद कर सकें। बहुत-से लोग केवल पेट ठीक करके ऑपरेशनसे बच जाते हैं। यदि तुम अहमदाबाद वाले नीमहकीमकी गोदमें सिर रख सकते हो तो इस प्राकृतिक नीमहकीमकी गोदमें भी रख सकते हो, फिर भले ही सिर रहे या न रहे। तुम बीमार रहो यह हमें पुसा नहीं सकता। अमृतलाल कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

साथमें परीक्षितलालका पत्र है। यह तुम्हारे पढ़ने लायक है। दोनों मामलोंके बारेमें।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७९

१ साधन सूत्रमें नाम छोड़ दिया गया है।
२ डॉ॰ दिनशा मेहता।

५०६ पत्र . मणिलाल और सुशीला गांधीको

१९ अगस्त, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

आज भी दो-चार शब्द लिखने का ही समय मेरे पास है। क्या मैं तुम्हे लिख चुका हूँ कि देवदासको पुत्र प्राप्त हुआ है? लक्ष्मी और बालक सकुशल हैं। बा ओर मनु अभी दिल्लीमें ही हैं। नीमू आजकल मेरे साथ है। कानो ज्वरसे पीडित है। बुखार उतरता-चढता रहता है। वह जल्दी अच्छा हो जायेगा।

फिलहाल महादेव सरदारके पास बम्बई मे है। शायद कल यहाँ पहुँच जायेगा। नवीन यहाँ आ गया है। अभी तो यहाँ रहेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८४२) से। सी० डब्ल्यू० १२५४ से भी, सौजन्य सुशीला गांधी

५०७ पत्र कृष्णचन्द्रको

वर्धा
१९ अगस्त, १९३५

चि० कृष्णचन्द्र,

तुमारे विह्वल होनेका कोई कारण नही है। सेडीमेन्ट[1] बद होगा ही। व्यायाम ज्यादा होना चाहीये, कटी-स्नानका अभ्यास रखो, प्राणायाम खुल्ली हवामे करो। नीमकी मात्रा कम कर सकते हो। दूसरी कच्ची भाजी भी लेना। दूध सवथा नही छूट सकता है। फल लेना। स्वादकी बात छुट जानेसे आवश्यक खुराक लेनेमे सकोच नही रखना। आखरमे जिम्मेबारी तो मेरे सर पे है। दलीया अवश्य खाओ। रोटीका असर यदि ऐसा है तो उसमे तेल आता है वह कारन हो सकता है। इसका सशोधन आवश्यक है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७७) से।

१ अवसाद, मूल में गांधीजी ने अंग्रेजी शब्दका प्रयोग किया है।

५०८ एक पत्र

वर्धा
२० अगस्त, १९३५

प्रिय मित्र,

इसी महीनेकी १९ तारीखका आपका पत्र मिला, जिसके साथ फिलीपीनके समाचार-पत्रकी एक कतरन भी है। उसमे दी गई जानकारी एकदम गलत है। मैंने अबीसीनियाके बारेमे कोई वक्तव्य[1] नही दिया है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २२-८-१९३५

५०९. पत्र वल्लभभाई पटेलको

२० अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। कमेटी अच्छी बन गई। काम तुरन्त निबट जाये, यही आवश्यक है।

मोरारजी और चन्दूभाई यहाँ २५ तारीखको सवेरे पहुँच रहे है।

तुम्हारे बवासीरका क्या हाल है?

कुमारप्पाके चेहरेपर अब भी बुखारकी हलकी-सी झलक बनी हुई है। सिविल सर्जनको दिखलानेवाला हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८०

१ देखिए "वक्तव्य समाचार पत्रोंको", १८१९३५।
२ साधन सूत्रमें कुछ अंश छोड दिया गया है।

५१० पत्र तुलसी मेहरको

२० अगस्त, १९३५

चि० तुलसी महेर,

तुमने जो अनुभव पाया है उसका उपयोग वहा होता होगा।

जितने वहाके कागज भेज सकने है इतने भेजो। उसे बेच सकुगा। सब कुशल है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६५४९) से।

५११ एक पत्र

२१ अगस्त, १९३५

वैसे मैने कभी भी इसके बारेमे इस तरहसे नही सोचा था जैसे आपने पेश किया है, लेकिन अब जब मुझे उकसाया गया है तो सोचना पड रहा है। मुझे सबसे पहला विचार यह आ रहा है कि ऊँचेसे-ऊँचे स्तरके क्रिया-कलापके लिए मनुष्यकी स्वतन्त्रतामे विश्वास करना नितान्त अनावश्यक है। परन्तु आपके दूसरे प्रश्नका उत्तर यह है कि मै सदासे व्यक्तिकी सापेक्ष स्वतन्त्रताको ईश्वरीय इच्छाकी सर्वशक्तिमत्ताके अधीन मानता आया हूँ। मै जीवनके कुछ सामान्य अनुभवोके आधारपर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ। बन्दीको तनहाईकी कोठरीमे भी हिलने-डुलनेकी — चाहे जितनी थोडी हो — स्वतन्त्रता तो रहती है और सोचने-विचारनेकी तो पूरी स्वतन्त्रता रहती है। आपने जो प्रश्न रखा है, उसके अनुसार तो मस्तिष्क तक ईश्वरीय इच्छाके अधीन पूर्ण रूपसे बन्दी है, फिर भी तथ्य यही है कि ईश्वर हमे करोडो फालतू बाते सोचने देता है। इससे मै यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि व्यक्तिको कुछ स्वतन्त्रता तो रहती है, भले ही वह एक छोटेसे-छोटे कण-मात्रके बराबर हो। ईश्वरीय इच्छाकी पूर्ण अधीनता स्वीकार करनेकी सबसे खरी कसौटी यही होगी कि क्या उस कण-मात्र स्वतन्त्रता तकको पूर्णत त्याग दिया गया है।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई

५१२ पत्र क० मा० मुशीको

वर्धा
२१ अगस्त, १९३५

भाई मुशी,

तुम्हारी पुस्तक मिल गई है। पुस्तकका कैसा स्वागत होता है, मुझे लिखना। शेष सब काकाने मुझे बताया है।

बापूके आशीर्वाद

एडवोकेट क० मा० मुशी
रिज रोड, बम्बई

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५८४) से, सौजन्य क० मा० मुशी

५१३ पत्र मदालसा बजाजको

२१ अगस्त, १९३५

चि० मदालसा,

बहुत दिनोके बाद तेरा पत्र मिला। तेरी जो मर्जी हो सो खाना, बशर्ते कि तू बीमार न पडे। तू जो भी सयम पालना चाहे, इस बातका ध्यान रखना कि पालन स्वाभाविक होना चाहिए। कोई जल्दी नही है। क्रोध त्याग देना और बालक बनकर रहना। आश्रमका जीवन व्यतीत करने से स्वतन्त्रता आती है, उद्दण्डता, अविनय और अभिमान कभी नही आते।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३१८

५१४ चर्चा निर्वाह-योग्य न्यूनतम मजदूरीके सम्बन्धमे – १[1]

[२२/२३ अगस्त, १९३५][2]

गाधीजी हमे अपनी सीमाएँ जान-समझ लेनी चाहिए। वे ऐसी है कि उनको जानकर हम भौचक्के रह जायेगे। इसके लिए यदि हमको टूली स्ट्रीटके तीन दर्जियो[3] की भमिका निभानी पडे तो भी कोई परवाह मत कीजिए। हमारे ससाधन अत्यन्त ही स्वल्प तथा सीमित है। हम लम्बी-चौडी योजनाओपर धन नही बहा सकते और हम सभी तरहके साधनोको भी नही अपना सकते। हो सकता है कि हमे काय-कर्त्ता और एजेट न मिल पाये आर हमे अपनी शाखाएँ भी इनी-गिनी ही और बहुत दूर-दूर खोलनी पडे। लेकिन मुझे ऐसी कोई जल्दी भी नही है कि समूचे देश-भरमे ऐसी सस्थाओका एक जाल तुरन्त बिछ जाये। हमारी नीति तो किसी ओरसे अपेक्षा किये बिना अपने कर्त्तव्यमे जुटे रहने की है। यदि हम पाये कि कोई उद्योग निर्वाह-योग्य न्यूनतम मजूरी अदा करने मे समथ नही है तो उसे बन्द कर देना चाहिए। हमे इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए कि हम जिस किसी उद्योगको हाथमे ले उसमे अदा की जानेवाली मजूरी समुचित निर्वाहके लायक हो।

डॉ० प्रफुल्ल मै जिन दिनो एक वेतनभोगी अधिकारी था, उन दिनो हिसाब लगाकर देखता था कि मेरे नौकरोको अपने और अपने ऊपर निभर रहनेवाले परि-वारके सदस्योके ठीक ढगसे निर्वाहके लिए कितने रुपयोकी जरूरत पडेगी और उसीके अनुसार मै उनको वेतन दिया करता था। वह प्रतिमास बीस रुपये बठती थी। अब कपडो और अन्य आवश्यकताओको मिलाकर, वह ३० रुपये प्रतिमास बैठेगी।

गाधीजी (हँसते हुए) तब अगर आप तैयार हो, तो हम बगालके लिए एक रुपया प्रतिदिन न्यूनतम मजूरी निर्धारित कर दे। आप एक अधिकारीकी हैसियतसे पहले जो सब किया करते थे अब वही आपको सघके एक सदस्यकी हैसियतसे करना है। निश्चय ही, मै तो चाहूँगा कि न्यूनतम मजदूरी अधिकसे-अधिक निर्धारित की जा

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके प्रबन्धक मण्डलकी बैठक वर्धामें हुई थी।

२ सर्चलाइट, ३०८१९३५ से।

३ इग्लैंडके साउथवार्क नगरकी टूली स्ट्रीटके तीन दर्जियोंने एक बार कॉमस सभाके नाम अपना एक शिकायतनामा भेजा था, जिसे इस प्रकार आरम्भ किया गया था "हम इग्लैंडकी जनता ।" इससे एक मुहावरा बन गया है, जिसका आशय है — अपने आपको समस्त जनताका प्रतिनिधि मानकर, छोटे मुँह बडी बातें बघारनेवाला कोई व्यक्ति।

सके और उसमे परिवारके कमसे-कम एक और सदस्यके निर्वाहके लिए गुजाइश रखी जाये। पर आप जितना कर सकते है उतना ही तो करेगे।

बम्बईमें प्रान्तीय सहकारी बैंकके प्रबन्ध-निदेशक, श्रीयुत वैकुठनाथ मेहताने कहा कि इस प्रश्नके सिलसिलेमें जितनी जल्द कुछ किया जाये उतना ही अच्छा, क्योकि जब हमारा आग्रह है कि बडे पैमानेपर सगठित उद्योगोमें मजूरी तथा कामके प्रश्नोका समुचित हल निकलना ही चाहिए तो असगठित उद्योगोमें भी इन प्रश्नोकी ओर ध्यान देना हमारा कर्त्तव्य हो जाता है। इसकी कठिनाइयाँ बहुत स्पष्ट है, लेकिन मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि यदि जनताको भली-भाँति समझा दिया जाये कि इन वस्तुओकी खरीदपर खर्च होनेवाले उसके धनका ९५ प्रतिशत या इससे कुछ अधिक ही अश सीधा उत्पादकोको ही मिलता है तो वह खर्च उसको खलेगा नहीं।

श्रीयुत शकरलाल बैंकरने सतुलित भोजनमे लेखी जानेवाली न्यूनतम वस्तुओकी कीमतोके प्रान्तवार आँकडे जमा करनेके महत्त्वपर जोर दिया, लेकिन उन्होने वर्तमान उद्योगोमें मजूरीके प्रश्नपर अमल करनेकी कुछ कठिनाइयाँ बतलाईं।

गाधीजी ने यह स्पष्ट किया कि हम केवल उन उद्योगोको ही ले रहे है जो ठप हो गये है या होते जा रहे है और जिनका हम पुनरुद्धार करनेका प्रयास कर रहे है। उन्होने कहा कि हम मौजूदा उद्योगोमें कोई व्यवधान नहीं डालेगे। क्या न्यूनतम मजूरी निर्धारित कर देनेसे ग्रामवासियोकी स्थिति कठिन हो जायेगी? क्या उनको मिट्टीके भाँडे और दीये-जैसी अपनी रोजमर्राकी जरूरतकी छोटी-छोटी चीजोंके बारेमें कोई फर्क पडेगा? इनके लिए शहरी लोगोको कुछ ज्यादा कीमत देनी पडे, तो क्या गावके लोगोको भी वही कीमत देनी पडेगी? शहरोसे बिलकुल सटे हुए गाँवोके लोगोको तो अपेक्षाकृत दूरके गाँवोकी तुलनामें अभी भी दूध की कुछ अधिक कीमत देनी ही पड रही है। गाधीजी ने कहा

यह तो अनिवार्य था। पर गाँवोके लोग अपने यहा कीमतोकी पटरी बैठा लेगे। इसके अलावा, हमारा सघ ठीकसे चल निकलनेपर जहा बढई और लुहारो और कतयोको कुम्हारोसे बर्तन खरीदते वक्त कुम्हारोकी न्यूनतम मजदूरीके आधारपर निर्धारित कीमत अदा करनी पडेगी, वहाँ उनको अपनी तैयार की हुई चीजोकी भी वही कीमत मिलेगी जो उनकी अपनी न्यूनतम मजूरीके आधारपर निर्धारित की जायेगी, इसलिए उनको कुम्हारोकी बढी हुई कीमतोसे कोई शिकायत नही रह जायेगी। लेकिन वह तो काफी दूरकी बात है। अभी तो हमको उन वस्तुओपर ही ध्यान देना चाहिए जो गाँवोसे शहरोमें भेजी जाती है और हमे ऐसी वस्तुएँ निर्वाह योग्य न्यूनतम मजदूरीके आधारपर निर्धारित मूल्यसे कमपर लेनेसे इन्कार करना चाहिए।[1]

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ३१-८-१९३५

१ बैठकमें स्वीकृत हुए प्रस्तावके लिए, देखिए "एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव", ३१-८-१९३५।

५१५. पत्र अमृतकौरको

वर्धा
२३ अगस्त, १९३५

प्रिय अमृत,

वादेके मुताबिक तुम्हारा तार आ गया। और मुझे खुशी है कि तुम्हारी जगह खाली पड़ी है। मैं जब भी अपने आसनपर बैठता हूँ, तुम्हारी अनुपस्थिति महसूस करता हूँ। तुम इस सबका एक अनिवार्य अंग बन गई थीं, और तुम अपने पीछे इतनी सारी चीजें छोड़ गई हो, जो तुम्हारी याद दिलाती रहती हैं। थर्मस हमेशा तुम्हारी याद दिलाता रहता है। साइट्रोनेलकी शीशी भी मुझे मेजपर पड़ी मिली। मेरा खयाल है, उसे भी तुम जान-बूझकर छोड़ गई थीं। टोकरियाँ अभी वहीं हैं। चुकन्दर लगातार यहाँ पहुँच ही रहा है। मुझे उसे ठीकसे पकानेकी फिर कोशिश करनी चाहिए। देखती हो, तुमने क्या कर दिया है!

आशा है, जैसा मैं चाहता था वैसा प्रमाणपत्र शम्मीने दे दिया होगा।

तुमने कुमारप्पाको दावत दी है कि वह जब भी शिमला जाये तुम्हारे यहाँ मेहमानी करे। सिविल सर्जनने कल उसे देखा था और हलका-सा ज्वर रहनेके कारण उन्होंने उसे एक-दो महीनेके लिए पहाड़ जानेकी सलाह दी है। मैं उसे आगे जाँच-पड़तालके लिए बम्बई भेज रहा हूँ। तुम अगर सचमुच किसी भी तरहकी कोई असुविधा महसूस किये बिना उसे रख सको, तो उसके बाद वह शिमला जानेको तैयार हो सकता है। अगर कर सको तो मुझे तार दे देना। लेकिन तुमको किसी भी तरहकी कोई असुविधा लगे तो मना करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

तुम दोनोंको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४१) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३५० से भी

५१६ पत्र छगनलाल जोशीको

२३ अगस्त, १९३५

चि० छगनलाल,

लगता है, तुम 'हरिजन' नही पढ़ते। यदि तुम हड्डियोकी खाद बना डालो तो वह अवश्य बिक जायेगी। हर गावमे एक जगह हड्डिया इकट्ठी करके, 'हरिजन'[1] मे बताये अनुसार उन्हे हलका-सा भूनकर आटेकी तरह बारीक पीस लो। फिर तुम उसे जहा भेजना चाहो वहाँ भेज सकते हो। तुम इस खादका रियासतके कृषि विभागको बेच सकते हो। जबतक उपयोगमे न आये तबतक तुम उसे गोदाममे संग्रह करके रख सकते हो, क्योकि यह बिगडती नही। माससे खाद कैसे तैयार करनी चाहिए यह भी 'हरिजन' मे बताया जा चुका है। इस खादका पैसा तो एक बडी पेढी भी देती है। माससे खाद बनाने की क्रिया हड्डियोका चूर्ण बनाने की अपेक्षा कठिन है किन्तु फिर भी उसे घरपर तैयार किया जा सकता है। मै उसकी सविस्तार नकल करवाकर तुम्हे भेज दूगा। आँतोसे तात बनती है, इसे जेठालाल बनाता है। शरीरका ऐसा कोई भाग नही जिसका उपयोग न हो सके। रक्तका भी उपयोग किया जा सकता है किन्तु वह प्रक्रिया मै भूल गया हूँ। किन्तु मै उसे प्राप्त कर लूगा। अभी मै पूरी तरह व्यवस्था नही कर पाया हूँ। मुझे आशा है कि व्यवस्था हो जाने पर उसकी माँगको स्थायी बना सकूगा। हड्डियोकी खाद या अन्य चीजे काठियावाडसे बाहर भेजने की जरूरत नही होनी चाहिए। जो किसान हमारी सुने उन्हे बहुत कम दामपर ये चीजे बेची जा सकती है क्योकि अभी तो हमे उनकी लागत कीमत बहुत ही कम पडेगी।

यदि मैथ्यू वहाँ भी नही टिक पायेगा तो मै लाचार हो जाऊँगा। उसके लिए मैंने बहुत परेशानी उठाई है।

रमाके बारेमे मै समझ गया। बच्चोका ठीक विकास हो रहा है, इससे मुझे सन्तोष है।

बा तो दिल्लीमे है। वह बहुत सख्त बीमारी भोग चुकी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५२३) से।

१ इस विषयपर एस० सी० दासगुप्तके लेख **हरिजन**में ३०-११-१९३४ और १४-१२-१९३४ के अंकोंमें प्रकाशित हुए थे।

५१७ पत्र . लीलावती आसरको

२३ अगस्त, १९३५

चि० लीलावती,

यदि तू अभ्यासाथ प्रश्नोके अपने हलके साथ ही प्रश्नोके नीचे खाली जगह छोड दिया करे तो मेरे सुधारोको पढने मे तुझे अडचन नही होगी।

प्रश्नो पर क्रम-सख्या डालनी चाहिए। 'आइ विल' भविष्य-कालका सूचक है। मध्यम और अन्य पुरुषमे 'वुड' इच्छाको सूचित करता है। तेरे पाठोमे जहाँ इन शब्दोका प्रयोग नजर आये वहाँ उक्त नियमको लागू करके देखना।

१ इसी वाक्यमे 'इफ' और 'विल' का प्रयोग किया जा सकता है। 'इफ' समुच्चय बोधक है और 'विल' यहाँ क्रियापद है।

२ "यू विल हैव रिसीव्ड माई लेटर।" "आई होप यू आर हैपी।"

३ "दो य आर गुड, यट विल आई नाट हट यू।" 'स्टिल' और 'यट' के अथमे नही के बराबर अन्तर है।

४ "ही मस्ट बी पनिश्ड" का अर्थ है—उसे सजा मिलनी ही चाहिए।

"ही शेल हैव बीन पनिश्ड" का अर्थ है—उसे सजा मिली ही होगी। 'मस्ट और शेल हैव' मे बहुत फर्क नही है। यह ठीक है कि मध्यम या अन्य पुरुषमे व्यवहृत 'शैल' 'मस्ट' का अथ देता है।

५ [1]

६ 'दो' और 'यट' या 'स्टिल' का प्रयोग एक ही वाक्यमे किया जाता है। 'यट' या 'स्टिल' 'दो' के पूरक है।

आशा है सभी उत्तर तेरी समझमे आ जायेगे। यदि कोई समझमे न आये तो दुबारा पूछने मे सकोच मत करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३७) से। सी० डब्ल्यू० ६६१२ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

१ साधन सूत्रके अनुसार।

५१८ पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२३ अगस्त, १९३५

चि० नरहरि,

यद्यपि तुम्हारा १८ तारीखका पत्र मेरे सामने दो दिनसे पडा हुआ है किन्तु मै उसे आज ही पढ पाया हू।

भाई वेलचन्दका रुख मुझे पसन्द है। कुछ थोडे-से कुएँ बनाये जाये और उनपर पण्ड्याके नामका पत्थर भले लगाया जाये। किन्तु मेरे विचारसे उनके नामकी शोभा तो तभी होगी जब वह किसी बहुत कठिनाईसे पूरा होते काम के साथ सम्बद्ध हो। यह काम कैसे किया जाये, यह वे हमपर छोड दे। जिस प्रकार तिलक स्वराज्य-कोषने अपने को और लोकमान्य को अमर बना दिया उसी प्रकार पण्ड्या ग्रामोद्धार-कोष अपने को और पण्ड्याको अमर बनाये। भाई वेलचन्द जो रकम अलग निकालना चाहते है उससे उक्त उद्देश्य कुछ तो जरूर पूरा होता है। फिलहाल इससे अधिक रकम तो हम खच भी नही कर सकते।

किन्तु यह तो मेरा और तुम्हारा विचार हुआ। सरदारसे मेरी बातचीत हुई थी। वे निश्चय नही कर सके। वे स्वय वेलचन्दको लिखनेवाले थे। लिखने के बाद निणय करके मुझे सूचित करेगे। तबतक हमे प्रतीक्षा करनी होगी। लगता है, अब वहा दुग्धालयका काम अच्छी तरह चल रहा है। तुम दूधका क्या उपयोग करते हो? भगतवाला मामला महादेवने मुझे सुनाया। बहुत विचित्र मामला लगता है।

रतिलालके बारेमे भी सुना। लगता है, तुम्हारे पास भरपूर काम है।

सुरेन्द्र वहाँ क्यो पहुँचा है? मुझे इसकी कोई खबर ही नही मिली।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८८) से।

५१९ पत्र . वल्लभभाई पटेलको

२३ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

'टम्स'[१] तो कल ही तैयार कर ली थी और भाई वैकुण्ठके साथ भेजी जा रही है। उनसे बाते भी कर ली है।

साथमे 'साँज' की कतरन लौटा रहा हूँ। इस तरहकी विरोधी हलचले तो अभी ओर भी होगी। कमेटी काम करने लग जाये तो छुटकारा मिले।

कुमारप्पाके हलके ज्वरसे सिविल सजन जरा चौक उठा है। वह बम्बईमे जाच कराने को कहता हे। वे दो-एक दिनमे वहाँ पहुच जायेगे। फिर मै उन्हे शिमला भेजने की सोच रहा हूँ। राजकुमारीका निमत्रण है। कुमारप्पाकी जाच डॉ० जीवराज से करवाना। तुम वहा हो इसलिए मै किसी और को नही लिख रहा हू। मैंने तो उसे आपके पास रहने को कहा था। परन्तु शूरजी यहा है, वह उन्हे खीच रहा है। [वर्धाके सिविल सजन] साहनी उनके गले और फेफडोकी जाच कराने को कह रहे है।

वेलचन्द जो दान देना चाहते है उसके बारेमे यदि तुम किसी निणयपर पहुँच सके हो तो सूचित करना। उनका नरहरिके नामका पत्र साथमे है। मेरा तो अब भी यह खयाल है कि उनके दानसे उनकी इच्छानुसार कुछ कुए बनवाकर बाकी रकम ग्रामोद्धारमे ही खच की जाये। यदि तुम इस रकमको गुजरातमे ही खच करना चाहो तो वैसा कर सकते हो। फिर भी तुम अपने स्वतन्त्र विचार मुझे बताना।[२]

विटठलभाईवाले पैसोके बारेमे भी यदि विचार कर लिया हो तो सूचित करना। मोतीलालके[३] नाम लिखा पत्र अच्छा है।

मोरारजी और चन्दूभाई २५ तारीखको आ रहे है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८०-८१

१ प्लेग निवारण कमेटीके लिए।

२ देखिए पिछला शीर्षक।

३ मोतीलाल सीतलवाड, प्रसिद्ध वकील।

५२० टिप्पणियाँ

हरिजन और नाटार

यह प्रश्न हमारे सामने अब भी वैसा ही है। उस अत्याचार-पीडित प्रदेशके एक कार्यकर्त्ताने मेरे पास एक लम्बी रिपोर्ट भेजी है। उसे देखने से मालूम होता है कि नाटारोकी मनोवृत्तिमे अधिक सुधार नही हुआ है। जो थोडा-सा सुधार हुआ है, उसका कारण यह नही है कि वे अपने किये अन्यायको महसूस करने लगे है या उनमे समझ आ गई है। उसका बडा कारण तो उनका यह भय है कि अगर उन्होने हरिजनोका कोई नुकसान किया तो कही उनपर फोजदारीका मुकदमा न चल जाये। और इधर हरिजनोमे हरिजन सेवक सघके कार्यकर्त्ताओने जो काम किया है वह भी एक कारण हो सकता है। हरिजनोके दिलमे नाटारोके अत्याचारोका जो डर समाया हुआ था उसे दूर करने के प्रयत्नमे हरिजन-सेवक कुछ सफल तो हुए है। स्थायी सुधार तो तभी सम्भव है जब, जैसाकि रिपोर्टमे सूचित किया गया है, वहाँ हरिजनो और नाटारोके बीच खूब लगकर काम हो। हरिजनोकी अपेक्षा नाटारोको समझानेकी शायद ज्यादा जरूरत है। उनकी अकथनीय असहिष्णुताकी वजह उनकी इतनी ज्यादा दुष्टता नही है, उसका ज्यादा बडा कारण निस्सन्देह उनका अक्षम्य अज्ञान ही है। इसलिए कितनी ही भारी-भारी कठिनाइया आडे क्यो न आये, सघ-वालोको उनसे जरा भी विचलित हुए बिना निर्भयताके साथ अपनी सारी सेवा-शक्ति वहाँ लगा देनी चाहिए। अगर हरिजन-सेवकोकी श्रद्धा अन्ततक अटल बनी रही तो यह हो नही सकता कि उन्हे विजय न मिले।

बाध्य नही

भादरण ताल्लुका (बडौदा-राज्य) के पीपलाव ग्रामनिवासी कुछ बुनकरोने मुझे लिखा है कि

> **दो सालका अर्सा हुआ कि हम लोगोने मुर्दार मास न खानेका निश्चय किया और इसीसे ढोरोकी लाशें उठाने और उनकी खाल उधेडनेका काम भी छोड दिया, मगर इस गाँवके चमार और भगी यह सब काम बराबर करते है। गाँवके पाटीदारोको यह सहन नहीं हुआ। उनकी दृष्टिमें हमने यह भारी गुस्ताखीका काम किया। इसलिए उन्होने हमारे सख्त बहिष्कारकी घोषणा कर दी, तमाम सामाजिक सम्बन्ध तोड़ दिये। हमारे कुएँका पानी खराब कर डाला और हमारे छप्परोपर पत्थर फेंकने लगे। अब आप बतायें, ऐसे में हम क्या करे?**

अस्पृश्यता-निवारणकी अपनी प्रगतिशील नीतिके लिए बडौदा-राज्य काफी प्रसिद्ध है। मुझे भरोसा है कि तथाकथित सवर्ण हिन्दुओके द्वारा जहाँ भी गरीब असहाय

हरिजन सताये जाये, वहाँ राज्यके अधिकारी आवश्यक हो तो अतिरिक्त प्रयत्न करके भी उनकी मदद करेगे। प्रगतिशील भादरण के सुधारकोका भी यह फर्ज है कि वे इन गरीब बुनकरोको हर तरहसे मदद दे, और पीपलावके पाटीदारोको जाकर समझाये कि अपने बुनकर भाइयोके साथ उन्हे ऐसा अत्याचारपूण बरताव नही करना चाहिए। मुर्दार मास छोड देनेके लिए बुनकर बधाईके पात्र है। पर इसके लिए उन्हे यह जरूरी नही कि वे ढोरोकी लाशे उठाना और उनकी खाल उतारना छोड दे। यह तो एक फायदेका और प्रतिष्ठित पेशा है। साथ ही, यह एक आवश्यक समाजसेवा भी है। लेकिन इस कामके लिए वे मजबूर नही किये जा सकते। अगर एक प्रतिष्ठित धन्धा आज अपमानजनक समझा जाता है, तो उसके ऐसे समझे जानेका उत्तरदायित्व सवण हिन्दुओपर ही है। इसमे अचरज ही क्या, अगर पीपलावके बुनकर अपनी अपमानजनक अवस्थाका भान होनेपर उससे छुटकारा पानेके लिए एक ऐसे धन्धेको छोड बैठे है, जिसकी बदौलत वे आज तिरस्कृत या पतित समझे जाते है। पीपलाव गावके लिए तो यह अच्छा ही है कि वहाँके चमारो ओर भगियोमे अभी वग-चेतना का उदय नही हुआ है, और वे अब भी लाशोको उठाने और चमडा उधेडनेका वह धन्धा कर रहे है, जिसे समाजने गलतीसे एक नीच काम मान रखा है। अगर ये उच्च कही जानेवाली जातिया अपने से किसी भी अन्य जातिके लोगोको नीच समझने की पापपूर्ण प्रथाको समाप्त करने का अपना स्पष्ट कत्तव्य पूरा नही करती, तो निश्चय ही हमारा सारा सामाजिक ढाँचा टुकडे-टुकडे हो जायेगा। किन्तु उस अवस्थाके आनेसे पहले अधिकारियो और सुधारकोका यह फज है कि पीपलाव गाँवके गरीब बुनकरोके साथ जिस जालिमाना बरतावके होनेकी खबर आई है, उससे असहाय हरिजनोकी रक्षा करने मे उन्हे अपनी शक्ति-भर कुछ उठा नही रखना चाहिए।

झूठे विज्ञापन

अभी कुछ दिन हुए, मैने इन स्तम्भामे पाठकोका ध्यान[1] अश्लील विज्ञापनोकी ओर खीचा था। अब कलकत्तेसे एक सज्जनने प्रसिद्ध अखबारोसे कुछ ऐसे विज्ञापन काट-काटकर मुझे भेजे है, जो निरे झूठसे भरे हुए है। मालूम होता है कि आजकल बगाल और शायद अन्य प्रान्तोमे भी हिन्दुस्तानी चाय पीनेके पक्षमे बडा प्रचण्ड प्रचार हो रहा है। चायके एक विज्ञापनका नमूना देखिए। यह बगलाका अनुवाद है।

'चाय पीओ और हमेशा जवान दिखो'

जलपाईगुडी
१५ मई

उतरती अवस्थामें भी जवानी और ताकत कायम रखने में चाय मदद देती है। यह बात, लगता है, श्रीयुत नेपालचन्द्र भट्टाचार्यके अनुभवसे प्रमाणित हुई है। भट्टाचार्यजी की अवस्था आज अडतालीस वर्षकी है, पर देखने से उनकी

१ देखिए "टिप्पणियाँ", २७-७ १९३५।

उम्र चौंतीस सालसे अधिक नहीं जँचती। उनका कहना है कि उनकी इस तरुणाईका कारण है चाय पीना। चौदह सालकी उम्रसे उन्होंने चाय पीना शुरू किया था। तबसे वे बराबर बिना नागा चाय पी रहे हैं। और इधर दो सालसे वे करीब ३० प्याले चाय नित्य नियमित रूपसे पीते हैं। इस सम्बन्धमें वे अपनी एक खास विशेषता रखते हैं। चाय तैयार होते ही वे तुरन्त नहीं पीते, उसे कुछ देरतक रखी रहने देते हैं, और सारी ही चाय नहीं पी जाते, थोडी-सी चायदानीमें छोड देते हैं। एक-एक बार में छह प्यालेसे लेकर दस-दस प्यालेतक चाय भट्टाचार्य पी जाते हैं।

यह तो ऐसे-ऐसे विज्ञापनोकी एक बानगी है। इसे पढते हुए ऐसा मालूम होता है, गोया यह अखबारके अपने सम्वाददाताकी रिपोर्ट हो। चाय पीनेके पक्षमें यह विज्ञापन एक ऐसा दावा हमारे सामने रखता है, जिसे मनुष्यके अनुभवका कही भी समर्थन नही मिलता। देखने मे तो इससे उलटा ही आता है। चायके पक्षमें वकालत करनेवाले भी बहुत ही थोडी चाय पीनेकी सलाह देते है। हिन्दुस्तानके लोग अगर चाय न पीये, तो इससे उनकी कोई हानि तो होगी ही नही। मगर दुर्भाग्यसे यह चाय और अहानिकर कही जानेवाली ऐसी ही दूसरी पीनेकी चीजें, अब हम लोगोमें जड जमा चुकी है। मेरा कहना यह है कि हमें विज्ञापन देते समय सचाईका उचित ध्यान जरूर रखना चाहिए। लोगोकी, खासकर हिन्दुस्तानियोकी यह एक आदत बन गई है कि किताब हो या अखबार, उसमे छपे हुए एक-एक शब्दको वे 'ब्रह्मवाक्य' मान लेते हैं। अत विज्ञापन बनाने मे अधिकसे-अधिक सावधानी रखने की जरूरत है। ऐसी-ऐसी झूठी बाते, जिनकी तरफ उक्त पत्र-लेखकने मेरा ध्यान आकर्षित किया है, बडी ही खतरनाक होती है। नित्य तीस-तीस प्याले चाय पी डालना — यह क्या है? इससे शरीर और दिमागमे भला ताजगी आयेगी? इससे तो पाचन-शक्ति कमजोर पड जायेगी और शरीर क्षीण हो जायेगा। हलकी-सी चायके दो प्याले पी लेनेमें शायद नुकसान नही होता, और मनुष्यका शरीर इतनी ही चाय पचा सकता है। फिर हिन्दुस्तानमें चायकी पत्तियाँ असलमे उबाली जाती है और इस तरह उनका सारा 'टैनिन' पानीमे खिच आता है। कोई भी डॉक्टर यह प्रमाणित कर देगा कि मेदेके लिए यह 'टैनिन' अच्छी चीज नही है। चाय पीना तो बस चीनी लोग जानते है। पत्तियोको वे छन्नीमें रखकर उनपर खौलता हुआ पानी डालते हैं। पत्तियोको वे चायदानीमे कभी नही डालते। पानीमे पत्तियोका सिर्फ रग उतर आता है। उनकी वह चाय हलके पीले रगकी दिखती है, ऐसी लाल रगकी नही, जैसीकि हिन्दुस्तानमें साधारण रीतिसे बनाई जाती है। तेज चाय तो जहर है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २४-८-१९३५

५२१. ग्रामसेवकोके प्रश्नोके उत्तर[1]

१-५ जहाँतक ग्रामोद्योगोके कार्यक्रमका सम्बन्ध है, देशी राज्योके और ब्रिटिश भारतके गाँवोमे कुछ भी अन्तर नही है। ग्रामसेवकको किसी भी हालतमे अधिकारियो से सघर्षका अवसर नही आने देना चाहिए।

६-८ ग्रामसेवकको मुख्य बात यह याद रखनी है कि वह ग्रामवासियोकी सेवा करने के लिए ही गाँवमे गया है, और यह न केवल उसका अधिकार बल्कि उसका धर्म है कि वह वहा ऐसा उपयुक्त आहार तथा जरूरतकी ऐसी अन्य चीजे अवश्य लेता रहे जिनसे वह अपने शरीरमे सेवा-कार्य करनेके लिए आवश्यक स्वास्थ्य और बल बनाये रखे। यह सही है कि ऐसा करते हुए ग्रामसेवकको अपनी रहनीपर ग्राम-वासियोकी अपेक्षा कुछ अधिक खर्च करना पडेगा, पर मेरा ऐसा खयाल है कि ग्राम-वासी ग्रामसेवककी जरूरी चीजोको ईर्ष्याकी दृष्टिसे नही देखते। ग्रामसेवकका अन्त - करण ही उसके आचरणकी कसौटी है। वह सयमसे रहे, स्वादके लिए कोई चीज न खाये, विलासितामे न पडे, और जबतक जागता रहे तबतक सेवा-कार्यमे ही लगा रहे। फिर भी यह सम्भव है कि उसके रहन-सहनपर कुछ लोग टीका-टिप्पणी करे। पर उस आलोचना या निदाकी उसे परवाह नही करनी चाहिए। मैने जिस आहारकी सलाह दी है वह सब गाँवोमे मिल सकता है। दूध आम तौरपर गाँवमे मिल जाता है, और बेर, करौदा, महुआ वगैरा अनेक फल भी गाँवोमे आसानीसे मिल जाते हैं। इन फलोको इसीलिए हम कोई महत्त्व नही देते क्यो कि वे आसानीसे मिल जाते है। गाँवोमे अनेक तरहकी पत्ती-भाजियाँ काफी प्रचुरतासे मिलती है, पर हम

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। किसी काठियावाड़ी राज्यके एक गाँवमें ग्राम सेवाकी दृष्टिसे बसे हुए कुछ नवयुवकों द्वारा पूछे गये ये प्रश्न इस प्रकार थे (१) स्वराज्यके कामके लिए किसी देशी राज्यका गाँव पसन्द करना चाहिए या ब्रिटिश भारतका? (२) ग्रामोद्योगोंके कार्यक्रमकी दृष्टिसे इन दो में से कौन सा गाँव पसन्द करना चाहिए? (३) ब्रिटिश भारतके गाँवोंमें ग्रामोद्धारका काम तुलनात्मक दृष्टिसे क्या अधिक जरूरी नही है? (४) यदि हाँ, तो तमाम ग्रामसेवक ब्रिटिश भारतके गाँवोंमें जाकर क्यों न बस जाये? (५) क्या इस विषयमें कांग्रेस कोई निश्चित आदेश नही निकालेगी? (६) ग्रामसेवक अपनी रहनीका क्या स्तर रखें? गाँवके लोग जिस तरह रहते हैं, उस तरह तो ग्रामसेवक नहीं रह सकते। आप ग्रामसेवकोको दूध और फल देनेसे मना नही करते। किन्तु ग्रामवासियोंको तो ये चीजें कभी नसीब होती नहीं। तब ग्रामसेवकोका दिल इन चीजोंको किस तरह ग्रहण कर सकता है? (७) यह एक निर्विवाद बात है कि हमारे देशमें करोड़ो मनुष्य भूखो मर रहे है। हम भी अगर भूखें रहें तो उनकी सेवा हम किस तरह कर सकते है? भूखे रहकर तो सेवा होती नही। किन्तु कुटुम्बका नियम भिन्न है। कुटुम्बमें एक भाई दूसरे भाईको भूखों नही मरने देगा, बल्कि अपने हिस्सेकी रोटीमें से उसे टुकड़ा दे देगा। (८) जीवनकी कमसे कम आवश्यकताएँ क्या होनी चाहिए?

केवल अपने अज्ञान या आलस्यके कारण उन्हे उपयोगमे नही लाते। मैं खुद आजकल ऐसी अनेक प्रकारकी हरी पत्तिया खा रहा हूँ जिन्हे मैंने पहले कभी जीभपर नही रखा था। पर अब मुझे ऐसा मालूम होता है कि मुझे ये सब पत्तिया पहलेसे ही खानी चाहिए थी। गावमें गाय रखना पुसा सकता है और अपना खच तो वह खुद निकाल सकती है। मैंने यह प्रयोग किया नही है, किन्तु मुझे लगता है कि यह चीज सम्भव होनी चाहिए। मेरा यह भी खयाल है कि ग्रामसेवकके जैसा आहार ग्रामवासियोको भी मिल सकता है और उसे वे ले सकते हैं, और इस तरह ग्राम-सेवकके जैसा रहन-सहन रखना ग्रामवासियोके लिए भी कोई असम्भव बात नही है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २४-८-१९३५

५२२. वस्त्र-स्वावलम्बन

बिहारके मधुपुर खादी-केन्द्रसे यह खबर आई है कि १० गाँवोमे १९ व्यक्तियोने अपने काते हुए सूतकी १६६।। गज खादी अपने उपयोगके लिए बुनवायी और २२ गावोमें ८२ व्यक्तियोने अपना काता हुआ सूत देकर उसके बदलेमे ७०९ गज खादी उक्त केन्द्रसे ली। समाचार सुन्दर है।

मलाबारके पय्यानूर और नीलेश्वर गाँवसे यह सुन्दर समाचार आया है कि वहाँ कपासका बीज लोगोको दिया गया और उन्होने स्वय सूत कातने का सकल्प करके वह बीज बोया। हमारे देशमे खुद सूत कातने के लिए कपास बोनेका चलन जब गाँव-गाँवमे चल जायेगा, तब खादी लोगोको सिफ उनकी फुरसतके वक्तमे की हुई मेहनतके मोल पड जायेगी। अपने घरोमे कपास बोनेवालो को खादीकी तमाम क्रियाएँ सीखनी होगी। असममे अनेक घरोमे रेशमका काम इसी तरह होता है। रेशमका प्रचार घर-घर नही हो सकता। रूईको हम व्यापक रूप दे सकते है, और एक जमानेमें तो वह सार्वत्रिक थी भी। ऐसा करने का मतलब यह है कि राष्ट्रकी आयमे वृद्धि भी खासी अच्छी हो जायेगी और जो करोडो मनुष्य इस देशमे कई महीने बेकार पडे रहते हैं उन्हे काम देनेके लिए एक सर्वांग सुन्दर योजना भी बन जायेगी।

कहने मे तो यह चीज आसान है, पर इसे व्यावहारिक रूप देना बडा मुश्किल है। मगर यह असम्भव तो किसी भी तरह नही। इसमे कोई भारी पूँजी लगाने की जरूरत नही। जो क्रियाएँ सीखनी हैं, वे अत्यन्त सरल है। और जिन औजारोकी जरूरत पडती है वे सब गाँवमे मौजूद है, या झट बनाये जा सकते है। बडीसे-बडी बाधा तो यह है कि लोग नई लीकपर चलने या बुद्धि लगाने के लिए तैयार नही। कई पीढियोतक मजबूरन बेकार पडे रहने और उस बेकारीके कारण भूखो मरते रहने से उनमे आज न तो आशा रही है, न शक्ति। उनकी जीनेकी इच्छातक मर गई है। लोगोमे जीवित रहने की भी इच्छा न रहे, इस निराशासे बढकर विपत्ति किसी राष्ट्रके

लिए और हो ही क्या सकती है? पर जिन लोगोमे यह निराशा नही आई है उन्हे अपने ध्येयपर अखण्ड श्रद्धा रखकर पहलेसे भी अधिक उत्साहके साथ काम करना होगा। निश्चय ही उनकी श्रद्धा बडेसे-बडे पवतोको भी लाँघ जायेगी। इस सुजला-सुफला भूमिमे जहाँ बिना भारी श्रम और सूझके काफी अन्न और वस्त्र पैदा किया जा सकता है, हताश होनेकी कोई जरूरत नही।

किन्तु इस आशाको हमे खादी-शास्त्रके निरन्तर बढनेवाले ज्ञानके आधारपर प्रगतिशील कार्यमे परिणत करना है। चरखा सघकी ओरसे समय-समयपर जो सूचनाएँ निकलती है, उनका खादी-सेवकोको अनुसरण करना चाहिए, और उन्हे जिन ग्रामवासियोकी सेवा करनी है, उनकी तमाम आपत्तियोको भी पहलेसे ही जान लेना चाहिए। इसके लिए उन्हे ग्रामवासियोके प्रगाढ सम्पकमे आना चाहिए। इस सम्पकके साथ-साथ उनके हृदयमे ग्रामवासियोके प्रति सहानुभूति और विश्वासकी वृत्ति होनी चाहिए। ग्रामवासियोके सामने उन्हे आश्रयदाताके रूपमे नही जाना चाहिए। उन्हे तो वहाँ उन स्वयसेवकोके रूपमे जाना चाहिए, जो अबतक अपने कर्त्तव्यके सम्बन्धमे असावधान रहे है। इतनी प्रारम्भिक शर्तोंका अगर पालन किया जाये, तो बाकीका सारा काम आपसे-आप उस तरह चल निकलेगा, जिस तरह कि नित्य रातके बाद दिन आ जाता है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २४-८-१९३५

५२३ पत्र रावजीभाई एन० पटेलको

२४ अगस्त, १९३५

चि० रावजीभाई,

डाहीबहनकी दवा हरिभाई कर सकते है, उनसे दवा कराने मे क्या तुम्हे सन्तोष नही होगा? यदि तुम चचलबहनको समझा सको तो अवश्य समझाना। जब एक ही जैसे दो कत्तव्य आ पडते है तो बहुत मुश्किल पैदा हो जाती है। तुम वहाँ की स्थितिसे अपेक्षाकृत अधिक परिचित हो तो तुम जैसा ठीक समझो, उस तरह उसका पथ-प्रदर्शन करना।

यदि तुम वहाँ गायका अच्छा और शुद्ध घी तैयार करा सको तो यह काम अवश्य करना। किन्तु घी-उत्पादकको क्या मिलता है, यह पता लगा लेनेके बाद ही उसमे हाथ डालना। हमे उत्पादकोके जीवनमे प्रवेश करना है। अत वे क्या खाते-पीते है, कहाँ रहते है, कहाँ सोते-बैठते है, कैसा आचरण करते है और क्या करते है आदि बातोकी हमे जानकारी होनी चाहिए। अत तुमने नमूनेके तौरपर मुझे जो घी भेजा है उसका इतिहास तुम्हे जानना चाहिए। तुम्हारे सभी भण्डारोमे हर वस्तुका इतिहास दिया जाना चहिए, उदाहरणके लिए—"लिबासीके भरवाड मेघराज द्वारा तैयार किया गया, जिसने काममे घटे लगाये, दूधकी कीमत ,

प्रति घंटा मजदूरी , आढतियाका कमीशन ।" और यह सूचना हर ग्राहकको दी जानी चाहिए। मुझसे यह मत कहना कि इसमें बहुत-सा समय चला जायेगा। यदि काम एक बार ढगपर आ जायेगा तो फिर उतना समय नहीं लगेगा। संघ चाहे जो दर तय करे किन्तु तुम तो दो पैसे प्रति घंटेसे कम मजदूरी मत देना। जिन वस्तुओं का प्रति घंटा औसत उत्पादन निकाला जा सकता है उनमें कामकी मजदूरी तुम्हें घंटेके हिसाबसे तय करनी चाहिए। यह इस प्रकार किया जा सकता है। जैसे यदि एक सामान्य कातनेवाला १५ अकका ४०० [गज][1] सूत एक घंटेमें कातता हो तो हम उसे १५ अकके ४०० [गज][2] की दो पैसे मजदूरी दें। आजकल 'हरिजन' में बहुत-सी नयी चीजोंकी चर्चा की जा रही है। मैं चाहता हूँ कि वे सब लेख तुम पढ़ते रहो। दिवालियेपनकी प्रथा चचलके पिता-जैसे लोगोंकी सहायताके लिए आरम्भ हुई थी। बादमें धूर्तोंने उसका दुरुपयोग किया, इससे वह प्रथा बदनाम हो गई। किन्तु मैं तो यह सलाह अवश्य दूँगा कि उन्हें उक्त प्रथाका सहारा लेकर चिन्तासे मुक्ति पा लेनी चाहिए। उसके बाद भले ही वे बाकी बचे कर्जको पटा देनेकी आशा मनमें सँजोये रहें। फिलहाल तो नादान लेनदारोंकी नादानीके कारण वे निश्चिन्ततापूर्वक कोई काम भी नहीं कर सकते।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९००६)से।

५२४. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

वर्धा,
२४ अगस्त, १९३५

बा,

तुझे तो वहाँ भगवान्ने ही भेजा था न? फिर वहाँ मनु भी है। इसलिए मैं निश्चिन्त बैठा हूँ। तू सिंहनी है और बीमारियोंसे डरनेवाली नहीं है।[3] अतः तुझसे जो बन सके सो दृढतापूर्वक करती रहना। रामकी शरण लेना। मनुसे रोज पत्र लिखवाती रहना। अन्सारी तो वहाँ होंगे ही। इतना काफी है। उनसे अच्छा और कोई डॉक्टर नहीं है। बहुत करके ब्रजकृष्ण भी वहीं है। और फिर प्यारेलालके लोग तो वहाँ हैं ही।

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १५४९)से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

१ और २ मूल में 'तार' ही था, जिसे बाद में गांधीजी ने सुधार दिया था, देखिए "पत्र रावजीभाई एन० पटेलको", २७-९-१९३५।

३ देवदासको टाइफाइड हो गया था।

५२५. पत्र : मनु गांधीको

२४ अगस्त, १९३५

चि० मनुड़ी,

मुझे रोज देवदासके समाचार देती रहना। तेरा पोस्टकार्ड मिल गया है। आशा है, तू अब बिलकुल ठीक हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५५०) से; सौजन्य : मनुबहन एस० मशरूवाला

५२६. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

२४ अगस्त, १९३५

चि० जयसुखलाल,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। शंकरलालने भी मुझे तार दिया था। जो होनेवाला होता है सो तो होता ही है। उसमें किसको दोषी मानें? मेरी नजरमें उमियाके[1] लिए एक ही जगह है; वह है तुम्हारे पास अमरेलीमें। अमरेलीमें जिस डॉक्टरकी मदद मिले हमें उसीमें संतोष मानना चाहिए। सभी सामान्य सुविधाएँ वहाँ मिल जायेंगी। बम्बई या किसी अन्य जगह जाना मुझे निरर्थक लगता है। यदि वहाँका अस्पताल अच्छा हो और उसे आसानीसे वहाँ रखा जा सके तो वह वहीं रहे। मैं समझता हूँ कि उसकी बीमारीमें प्राकृतिक चिकित्सा पर्याप्त होगी, बशर्ते कि उसमें इतनी श्रद्धा और इतना धीरज हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

१. जयसुखलाल गांधीकी कन्या उमिया अग्रवाल।

५२७ पत्र वल्लभभाई पटेलको

२४ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

एन्ड्रयूज बीमार पड गये, इसलिए रुक गये है,

जयकरका जो उत्तर आया, वह साथमे है। अभी तो इसे सँभालकर रख लेना। मैने पूछा है कि उनकी किससे बाते हुई थी? [तिलक स्वराज फण्डके] प्रबन्धमे क्या दोष देखा?[१] उनका जवाब मिलनेपर तुम्हे भेजूगा। उनकी मरजी हो वैसा करे।

देवदासका तार साथमे है। कहना होगा, उसने हमे स्तब्ध कर दिया है।[२] मैने तार किया है कि पूर्ण आराम ले और उपवास करे तो कोई खतरा नही है। राजाजी तो जायेगे ही। बा और मनु भी वही है। अन्सारी-जैसे डाक्टर है। फिर क्या चाहिए? मै बिलकुल निश्चिन्त हूँ।

कुमारप्पा आज वहाँ पहुँच रहे है। उनके लिए जो करना जरूरी हो वह करना। कल मैने लिखा है।[४] डॉक्टरी जाँच हो जानेपर वापस भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८२

१ साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ अंश छोड़ दिया गया है।

२ देखिए "पत्र वल्लभभाई पटेलको", १६-८-१९३५।

३ देखिए "पत्र कस्तूरबा गांधीको", २४-८-१९३५, पा० टि० ३, देखिए अगला शीर्षक भी।

४ देखिए "पत्र वल्लभभाई पटेलको", २३-८-१९३५।

५२८. पत्र देवदास गांधीको

२४ अगस्त, १९३५

चि॰ देवदास,

तेरे तारसे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। जब मैं वहाँ[1] था तभी मैंने तेरा अनियमित जीवन तो देखा ही था। वह मुझे जरा भी नहीं रुचा। अभी तो तू ऑफिसमें अकेला है। फिर, तुझे लक्ष्मीकी[2] देखभाल भी करनी पड़ती है और खानेकी अनियमितता बनी रहती है। बा और मनु वहाँ है और फिर ताराकी[3] बीमारी। इतना सब बोझ तेरी शक्तिसे बाहर लगता है। अब भी अगर मेरे तारके अनुसार अमल करने लगा हो तो बहुत है।[4]

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

५२९. पत्र : द्रौपदी शर्माको

२४ अगस्त, १९३५

चि॰ द्रौपदि,

तुमारा खत मिला। ऐसे ही लिखा करो। साथमे शर्माका खत है। उसे पढ़कर वापिस करो। लड़कोमें से जो लिख सके उसको लिखने का कहो।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ॰ १८९ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

१. दिल्लीमें।

२ देवदास गांधीकी पत्नी।

३ देवदास गांधीकी पुत्री।

४ साधन-सूत्रमें पत्र अपूर्ण है।

५३०. पत्र · वियोगी हरिको

२४ अगस्त, १९३५

भाई वियोगी हरि,

'हिं० स्व०'[1] मे किसने लिखा है? मैंने ऐसी कुछ बात किसीके सामने कही थी सही। उसी दिन मुझे स्मरण है कि महादेवने कहा था कि 'ह० [रिजन] बन्धु' और 'ह०[रिजन] से०[वक]' में गलतीया आ जाती है इसी [लिए] कैसा अच्छा होना यदि अनुवाद यहासे भेजा जाता। महादेवने गूजरातीके अनुवाद आरभ भी कर दिया। गलतीया हो जाती है इसमे दोष किसीका नहिं निकाल सकते है। अनुवाद बहूत कठिन कार्य है। दो भाषापर जब एक-सा काबू रहता है तब ही अच्छा अनुवाद हो सकता है। मुझे खेदके साथ कबूल करना पडेगा कि मै तीनमें से एक भी अखबार नही पढ पाता हू। 'हरिजन'की सब वस्तु मेरी दृष्टिसे गुजराती है इसलिये उसमे क्या रहता है मै जानता रहता हू। लेकिन दूसरे दो में क्या आता है वह नहिं जानता। महादेव कुछ पढ लेता है सही लेकिन हम सब दयाके पात्र है। कामका बोज इतना रहता है कि जितना हो सकता है इससे ईश्वरका अनुग्रह मानकर सन्तुष्ट रहते है।

सासीके[2] बारेमे मलकानीसे बात करने की आशा रखता हू।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७३)से।

५३१. पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
२५ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालके बारेमें सन्तोषजनक समाचार कैसे मिल सकता है?

मैथ्यूका जो हो जाये सो ठीक। जबतक वह मेरी शर्तोंका पालन नहा करता तबतक उसे अधिक नही दिया जा सकता।

वजुभाई आदिको लिखे पत्रकी नकल इसके साथ है। आज ही मैं यह लिख पाया हूँ।

१ हिन्दू स्वराज, मूलमें ये प्रारम्भिक अक्षर ही दिये गये हैं।
२ उत्तर भारतकी एक जन जाति।

साँपको गलेमे डालने को मै उत्सुक नही था। मै समझता हूँ कि यह साँप जहरीला नही था। जमनालालजी इस आदमीको अच्छी तरह जानते थे। फिर भी तुम्हारी चेतावनी ठीक है। मुझे इस प्रकार ऐसे प्रयोगोमे नही पडना चाहिए।[1]

अम्तुस्सलाम यही है। वह काममे बहुत व्यस्त रहती है इसलिए नही लिखती। मै अब उससे लिखने को कहूँगा।

शर्माको रवाना कर दिया है। वह प्राकृतिक चिकित्साका ज्ञान प्राप्त करने गया है। उसकी सादगी, सत्यवादिता और उत्साहकी छाप मेरे मनपर पडी है। देखूँ, इस प्रयोगका क्या परिणाम निकलता है।

पिताजी की तबीयतके बारेमे मै क्या कहूँ? वे दोनो अभी [जीवनकी डोरको] खीचते जा रहे है, यही आनन्द और आश्चर्यकी बात है। उन्हे मेरे दण्डवत् प्रणाम तो तुम हर पत्रमें मान ही लिया करो।

नवीन यहाँ पहुँच गया है। उसे अंग्रेजी और गणित सिखाये जा रहे है। मै उससे बढई आदिका काम भी लेनेवाला हूँ। तुम्हारे पास जो छोटा-सा कारखाना है क्या तुम उसका उपयोग करते हो? यदि न करते हो तो मै उसे यहाँ ले लूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४७१ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

५३२ पत्र : अनसूयाबहन साराभाईको

२५ अगस्त, १९३५

चि० अनसूयाबहन,

तुम्हारी वार्षिक प्रसादी मिली है। स्वास्थ्य ठीक रखना। काम बहुत है, हम थोडे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (जी० एन० ११५६१) से।

१ देखिए "पत्र श्रीपाद दामोदर सातवलेकरको", १२-८-१९३५ भी।

५३३ वस्तु-विनिमय प्रणालीके विषयपर निबन्ध-प्रतियोगिता

वर्धा
२६ अगस्त, १९३५

श्री उप्पुलर वेकटकृष्णय्या बेजवाडाके निकट गुनडालामे १९२७ मे सस्थापित खद्दर सस्थानम्के न्यासी हैं। उनको वस्तु-विनिमयकी प्रणालीपर बडा विश्वास है और वे अपनी सस्थाके आतरिक तथा बाहरी लेन-देनमे, विशेषकर खाद्य तथा वस्त्रोके उत्पादन एव वितरणके मामलेमें, इसी प्रणालीको कुछ हदतक अमलमे लाते रहे हैं।

उनका विश्वास है कि वर्तमान वार्षिक मन्दीका एकमात्र इलाज यही है और उनका खयाल है कि यह प्रणाली वर्तमान मौद्रिक प्रणालीके कारण उत्पन्न होनेवाली अनेक बुराइयाको दूर कर सकती है। उनका यह भी विश्वास है कि भारतमे कृषिके विकास, खादी और अन्य हस्त-शिल्पो तथा ग्रामोद्योगोके पुनरुद्धारके लिए और अहिसाके सिद्धातके प्रचार तथा व्यवहारके लिए वस्तु-विनिमय प्रणालीको अपनाना अत्यावश्यक है। उनका मत है कि यह प्रणाली अहिसाके सिद्धान्तमें ही निहित है। यह जानने की उनकी उत्कट अभिलाषा है कि इस प्रणालीके वैज्ञानिक अध्ययन तथा विश्लेषणकी कसौटीपर उनके विचार कहाँतक खरे सिद्ध होते हैं। इसलिए उन्होने इस विषयपर लिखे जानेवाले सर्वोत्तम निबन्धपर एक पुरस्कार देनेका आयोजन किया है और अपनी इस इच्छाकी घोषणा कराने के लिए उन्होने मुझे माध्यम बनाना पसद किया है। मैंने भी वस्तु-विनिमय प्रणालीपर निबन्ध आमन्त्रित करने के लिए माध्यम बनने की सहर्ष सहमति दे दी है। पुरस्कार जीतनेवाले को उसकी पसन्दके मुताबिक पाँच सौ रुपये नकद या सस्थानम्में ही बुन कर तैयार की गई पाँच सौ रुपयेके मूल्यकी असली टिकाऊ खादी दी जायेगी। नकद राशि मेरे पास जमा कर दी गई है।

निबन्धमे (जो अग्रेजीमें होना चाहिए) वस्तु-विनिमय प्रणालीका आरम्भिक इतिहास, इसके ह्रासके कारण और इसके पुनरुद्धारकी वर्तमान सम्भावनाओपर प्रकाश डालना चाहिए। उसमे यह भी बतलाया जाना चाहिए कि पिछले कालमे इसका क्या काम रहा है और यह विश्वके भावी आर्थिक जीवनमे कौन-सी भूमिका निभा सकती है, विशेष तौरपर यह दर्शाते हुए कि भारतीय ग्राम-जीवनके कुछ या सभी कार्यक्षेत्रोमें इसे कैसे और कहाँतक अपनाया जा सकता है। निबन्धमे इस विषयकी चर्चा होनी चाहिए कि इस प्रणालीके सफल परिचालन तथा विकासके लिए अनुकूल परिस्थितियाँ क्या होगी और उसके लिए किस हदतक सरकारकी सहायता दरकार है और यह भी बतलाया जाना चाहिए कि यदि इस प्रणालीको अपनाया जाये तो

विनिमय किस प्रकारका हो और उसका तरीका क्या हो। निबन्धमे इस बातकी भी चर्चा की जानी चाहिए कि भारतके आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारके विकास पर वस्तु-विनिमय प्रणालीके क्या-क्या प्रभाव पड़ेंगे।

प्रोफेसर के० टी० शाह, श्री वैकुण्ठ एल० मेहता और प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पाने परीक्षक बनने की सहमति देनेकी कृपा की है। प्रोफेसर कुमारप्पा इसके मन्त्रीका काम भी सँभालेगे। सभी निबन्ध उनके नाम मगनवाडी, वर्धाके पतेपर भेजे जाने चाहिए और वे ३१ अगस्त, १९३६ की दोपहरतक उनको मिल जाने चाहिए। यदि कोई भी निबन्ध परीक्षको द्वारा निर्धारित मानदण्डका न हुआ, तो कोई पुरस्कार नही दिया जायेगा। परीक्षाके परिणामकी घोषणा ३१ दिसम्बर, १९३६ तक कर दी जायेगी। पुरस्कृत निबन्धका प्रतिलिपि-अधिकार खद्दर सस्थानमको रहेगा। मुझे आशा है कि पुरस्कारकी राशिके नही, बल्कि विषयके महत्त्वके कारण ही इस पुरस्कारको जीतने के लिए एक काफी बडी सख्यामें प्रतियोगी आगे आयेंगे।

मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ३१-८-१९३५

५३४. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

२६ अगस्त, १९३५

चि० अम्बुजम,[1]

प्रभावती लगभग तीन सप्ताह पूर्व लौट आई थी। वह बिलकुल ठीक है। बा अभी दिल्लीमें ही है और अब देवदासकी परिचर्या कर रही है। देवदासकी हालत काफी खतरनाक है। बीमारीका अन्त पक्षाघातमें भी हो सकता है। राजगोपालाचारी वहाँ जा रहे है।

फिलहाल मै कभी-कभी ही फल लेता हूँ। अनेकानेक लोग मौजूद है जिनकी जरूरत मेरे मुकाबले कही ज्यादा है।[2] मै जब-तब सेब या सतरे ले लेता हूँ। मेरे बारेमे चिन्तित मत होना। शरीरके लिए जरूरी होनेपर मै जरूरतके मुताबिक पर्याप्त फल लूगा।

तुमने 'रामायण' के सम्बन्धमे लिखी जिस किताबका हवाला दिया है, वह मैने नही पढी है।

१ साधन-सूत्र में सम्बोधन हिन्दी में है।
२ यहाँ साधन सूत्रमें कुछ भूल रह गई जान पड़ती है, जिसे सुधारकर अनुवाद किया गया है।

मुझे आशा है कि किची जिस बैंकमें काम सीख रहा है, वहीं उसे माकूल जगह मिल जायेगी।

सस्नेह,

बापूके आशीर्वाद[1]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०५) से, सौजन्य एस० अम्बुजम्माल

५३५. पत्र: सी० आर० श्रीनिवासनको[2]

२६ अगस्त, १९३५

काम इतना अधिक है कि मैं वास्तवम, और शाब्दिक अर्थोंमें भी, जैसे बिलकुल रीत गया हूँ। जब भी माँगा जाये तब एक सन्देश प्रस्तुत कर देनेकी प्रतिभा मुझमें है नहीं। गाँवोंका यह काम इतने अधिक श्रमकी अपेक्षा रखता है और इतना दुष्कर है कि यदि मेरी चले तो सभी किस्मका लिखना-लिखाना बन्द करके, अपने-आपको किसी एक गाँवमें खपा दूं और अपनी सामर्थ्य-भर वही काम करता रहूँ, और मैं चाहूँगा कि यह काम चुपचाप, पूरी शान्तिसे करूँ। इन परिस्थितियोंमें यदि मैं आपको सन्देश न भेज पा रहा हूँ तो आप मुझे क्षमा करने की कृपा करेंगे।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई

५३६ पत्र: ग० वा० मावलकरको

२६ अगस्त, १९३५

भाई मावलकर,

मणिबहनके अभी-अभी मिले पत्रसे मालूम हुआ कि तुम्हारी पत्नीको हलका टाइफाइड बुखार हो गया है। आशा करता हूँ, बुखार उतर गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२४४) से। एस० एन० २२८६० से भी

१ साधन-सूत्रमें यह हिन्दीमें है।

२ मद्राससे प्रकाशित स्वदेशमित्रन् वाले।

५३७ पत्र : देवदास गांधीको

२६ अगस्त, १९३५

चि० देवदास,

आज तार तो भेजा है। तेरे तारकी आशा थी, लेकिन आया नही। तू करे भी तो क्या? और वहासे तार भेजने की सूझे किसे? बा का पूरा पत्र आया है, यह अच्छी बात है? बा ने लिखा है कि तू घबरा गया है। लेकिन बीमारीके कारण तू घबराये क्यो? हम अन्तिम परिणाम जानते है और उसके लिए तैयार है तो फिर घबराये क्यो? लेकिन तेरे बिदा लेनेमे बहुत देर है। लेकिन अभी तुझे इसी देहसे बहुत-सी सेवा करनी है। इसलिए सकल्प करके तू स्वस्थ हो जा। मै तो तुझे खुराक आदिके बारेमें ही सलाह दे सकता हूँ। ईश्वर तेरी रक्षा करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपस, सौजन्य प्यारेलाल

५३८ पत्र अवधेशदत्त अवस्थीको

२६ अगस्त, १९३५

चि० अवधेश,

जो धर्म तुमारे सामने तात्कालिक पैदा हो उसका पालन करने से सब अच्छा ही होगा।

जो सदस्य अपनी सस्थाके नियमोको जान-बूजकर भग करते है उनको उस सस्थामे रहने का कोई अधिकार नही है।

बापुके आशीर्वाद

श्री अवधेशदत्त अवस्थी,
गाँव – रम्पुरवा
पो० बडवापूर
जि० बहराइच, स० प्रा०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१८) से।

५३९. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
२७ अगस्त, १९३५

प्रिय अमृत,

चौंको मत। मै बायें हाथसे लिख रहा हूँ, जिससे कि दाहिना सोमवारको ठीकसे काम कर सके।

तुम्हारे दो पत्र और तार ठीक समयपर आ गये थे। तुम्हारे यहाँ गुजाइश हो सके, तो शायद देवदास भी पहुँचेगा। बेचारा! उसे पक्षाघात होनेका खतरा है। जमनालालजी ने कल तार दिया था कि अन्सारीने उसे आबोहवा बदलने के लिए शिमला जानेकी सलाह दी है। शिमलाका नाम उन्होने तुम्हारी वजहसे ही लिया होगा। शिमलामे और ऐसी क्या खासियत हो सकती है? मै तो सिर्फ इसलिए लिख रहा हूँ कि उसके अनुरोधके लिए तुम पहलेसे तैयार रहो। यदि अनुरोध किया जाये तो तुम पहलेसे तय कर सको कि क्या कहोगी। मै एक बार फिर तुमको आगाह किये देता हूँ। यदि समझो कि नही करना है तो कभी भी मना करने में सकोच मत करना। मैत्री बनाये रखने का यही एक तरीका है। मेरे लिए तुम एक मित्रसे कही अधिक प्रिय बन गई हो। लेकिन अगर तुम्हे रानी बिटिया बने रहना है तो मुझे तुम्हारी वफादारीपर अनुचित भार नही डालना चाहिए। इसपर भी मेरा जीवन साथी-सँगातियोसे इतना भरा-पूरा है और सम्बन्धोमे इतनी प्रगाढता आ जाती है कि मुझसे अन्तरग सम्बन्ध रखनेवाले हर व्यक्तिको अधिकसे-अधिक भार वहन करना पडता है। ईश्वर तुमको अपने ऊपर स्वय लिया यह भार वहन करने की सामर्थ्य दे!

शम्मीको अब उतनी ऊँचाईसे शिमलासे कुमारप्पाको स्वास्थ्य-सम्बन्धी हिदायतें नही भेजनी पडेगी, क्योकि कुमारप्पाको अब वह अपनी प्रत्यक्ष देखरेखमे रख रहा है। उससे कहना कि मै उसका भेजा हुआ चुकन्दर रोज नियमपूर्वक खा रहा हूँ। अमतुस्सलामने उसे ठीकसे पकाने का तरीका मालूम कर लिया है।

गोपीचन्दजी के साथ पुरीके बारेमे मेरी कोई ज्यादा बात नही हुई। तुम्हारे भेजे प्यारेलालके पत्रसे मुझे लगता है कि शिमलामे उसका मन नही रमा। क्या वहाँका ही कोई ऐसा आदमी नहीं जो यह काम सँभाल सके? मै जी० को लिख रहा हूँ।

चौधरीका दिया कागज तुमको कैसा लगा? तुम जैसे कागज चाहती हो, उनका नाप और रगोके नमूने मुझे भेज देना।

मण्डलकी बैठके[1] काफी अच्छी रही। तुम मौजूद रहती तो बहुत अच्छा होता। लेकिन मै जानता हूँ कि तुम्हारे लिए चले जाना ही ठीक था। बेशक, तुम यहाँ जब भी आ सको, आओगी और अपना काम सँभाल लोगी।

अपने दोनो विश्वस्त नौकरोको मेरी ओरसे स्नेह देना और कहना कि मुझे दुख है कि मै चाहते हुए भी उनका और अधिक परिचय प्राप्त नही कर सका। लेकिन मेरे पास काम इतने रहते है कि ऐसी बातोके लिए समय नही मिल पाता।

हम सबकी ओरसे स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४२) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३५१ से भी

५४० पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२७ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई

बाबोके[2] टॉसिल्सका हाल कल मणिके पत्रसे मालूम हुआ। इतनेसे बच्चेके इतने बडे टॉसिल्स? इसका क्या कारण हो सकता है? क्या डॉक्टर कुछ बता सकेंगे? [3]

दरबार[4] और भास्कर बीमार है। ऐसी स्थितिमे तुमने क्या मार्ग निकाला? क्या महादेव की जरूरत है?

मोरारजी और चदूलाल दो-तीन दिन ठहरेगे। अमेरिकाके स्वामी योगानन्द यहाँ है।

देवदासका पत्र ही तुम्हे भेज रहा हूँ। राजा[5] आज यहाँसे गुजरे थे। जमनालालका तार आया है, उससे मालूम होता है कि अभी तो जान खतरेमें नही है।

बापूके आशीर्वाद

१ देखिए "चर्चा निर्वाह-योग्य न्यूनतम मजदूरीके सम्बन्धमें", २२/२३-८-१९३५।

२ विपिन, डाह्याभाईका बडा पुत्र।

३. साधन-सूत्रमें कुछ अंश छोड दिया गया है।

४. गोपालदास अम्बाईदास देसाई।

५ चक्रवर्ती राजगोपालाचारी।

[पुनश्च]

मोराग्जी एक-दो दिनमे वहाँ आयेगे। उन्हे रोक लेना। देवदासका पत्र रामदासको भेज देना।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८३

५४१. पत्र : लीलावती आसरको[1]

[२७ अगस्त, १९३५ के पश्चात्]

यह कोई नही समझा होगा कि [पत्र] मेरा था। प्रथम पुरुषमे भी 'वुड इच्छाको सूचित करता है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१२८ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

५४२ पत्र क० मा० मुशीको

वर्धा
२८ अगस्त, १९३५

भाई मुशी,

मैंने तुम्हे जो सन्देश[3] भेजा है, तुम उतने मे ही सन्तोष करना। आजकल तो आश्रममे इतने लोग रह रहे हैं कि मुझे एक मिनटकी भी फुरसत नही मिलती। आज रात तो ११ २५ के बाद सोनेको मिला और १ ५० पर उठ गया हूँ। यह पत्र लिखते समय २ ४० हुए है। सुबह ६ बजेसे दैनिक कामोमे जुट जाना है।

बापूके आशीर्वाद

एडवोकेट मुशी
रिज रोड, बम्बई

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५८५) से, सौजन्य क० मा० मुशी

१ और २ लीलावती आसरक २७ अगस्त, १९३५ के पत्रके हाशियेमें गांधीजी ने ये पंक्तियाँ लिख दी थी। अपने इस पत्रमें लीलावती आसरने गांधीजी को लिखा था कि उसके द्वारा भेजा गया पिछला एक पत्र उसे वापस लौटा दिया गया है।

३ इसके लिए, देखिए "सन्देश 'हंस' को" ५ ८ १९३५।

५४३ पत्र . सी० एफ० एन्ड्रयूजको

२८ अगस्त, १९३५

प्रिय चार्ली,

गुरुदेवकी जरूरतोका[1] भार तुमको अपने ऊपर ले लेना चाहिए। मै सोलहो आने सहमत हूँ कि उनको उगाहीके लिए खुद नही निकलना चाहिए। मै देखूगा कि मै इसमे कितना-कुछ कर सकता हूँ।

बेशक, तुमको दोड-धूप बन्द करके लेखन-कार्यमे जुट जाना चाहिए — पत्रिकाओके लिए नही, बल्कि स्थायी महत्त्वकी चीजे लिखने मे।

ओर तुमको मॉड और प्रोटीनयुक्त खाद्योसे बचना चाहिए। तुम्हारे लिए तो फल, कच्चा दूध, विना उबले अडे, ये ही चीजे ठीक है।

सस्नेह,

मोहन

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१५६) मे।

५४४ पत्र अमृतकौरको

२८ अगस्त, १९३५

प्रिय अमृत,

जब तुमको कण्ठ-प्रदाह हो गया तो उतनी साफ हवामे तुम्हारे रहने और बढिया शहद तथा ताजे फल खानेका क्या फायदा? आशा है, अब वह सब ठीक हो गया होगा।

मै तुम्हारा पत्र कुमारप्पाको दे रहा हूँ। मै जानता हूँ कि उमे वहा अकेलापन नही सतायेगा।

तुमको यह कागज और आवरण कैसा लगा? सब यही तैयार किया गया है। क्या किनारी ज्यादा खुरदरी है? रग कैसा लगा?

तुमको चावल और तकली भेजने की याद रखूगा।

१ विश्वभारतीके लिए चन्दा, देखिए खण्ड ६२, "पत्र रवीन्द्रनाथ ठाकुरको", १३ १० १९३५।

देवदासके बारेमे मुझे कुछ अच्छा समाचार मिला है।
तुम दोनोको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५८३) से, सौजन्य अमृतकौर, जी० एन० ६३५२ से भी

५४५ पत्र एफ० मेरी बारको

वर्धा
२९ अगस्त, १९३५

चि० मेरी,

मेरा खयाल है कि सालके बाकी महीनोके दौरान मैं वर्धामे रहूगा। क्या तुम उन काग्रेसियोके नामका पता लगा सकती हो, जिन्होने इमारतोको तोडा-फाडा था? यदि वहा काग्रेसियोने ऐसी हरकते की है, तो मैं अपने प्रति मिशनरियोका सदेह समझ सकता हूँ। वे लोग कैसे विश्वास करे कि जहा ऐसी हरकते की गई है, मेरी कोई परवाह न करते हुए ही की गई है? यदि पूर्णत नीरोग हो सको, तो तुम्हारा इलाज और लम्बा खिचने की मुझे कोई परवाह नही। मेरी इथम नागपुरके मेयो अस्पतालमे है। सुमित्रा बैतूल अस्पतालमे है। हम उनके लिए प्रार्थना करे। फिलहाल खादीका काम गडबडा गया है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५७) से। सी० डब्ल्यू० ३३८७ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

५४६ पत्र पुरुषोत्तम एल० बाविशीको

२९ अगस्त, १९३५

भाई पुरुषोत्तम,

तुम्हारे पत्र और बीज मिल गये है। फिलहाल मीराबहनने खेतीका काय-भार छोड दिया है। यह सब डाह्याभाईके हाथमे हे। तुमसे जितना होता हे उतना करते हो, इतना पर्याप्त हे। कैक्टसके बारेमे मै समझता हूँ। कैक्टसके तुम क्या-क्या उपयोग मानोगे? क्या तुमने कभी इसका तजुर्बा किया है?

तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२८) से। सी० डब्ल्यू० ४७८९ से भी, सौजन्य पुरुषोत्तम एल० बाविशी

५४७ तार: वाइसरायको

वर्धा

३० अगस्त, १९३५

कमला नेहरूके स्वास्थ्यके बारेमे जर्मनीसे अभी-अभी एक एक्सप्रेस तार मिला है। "लगातार मतली और कै के कारण हालत गम्भीर।" इस गम्भीर समाचारको देखते हुए मै पण्डित जवाहरलाल नेहरूकी तुरन्त बिना शर्त रिहाईका अनुरोध करता हूँ, जिससे कि वे यदि सम्भव हो तो अगले मगलवारको 'डच एयर मेल'का विमान पकड सके।[1]

[अग्रेजीसे]

लीडर, ५-९-१९३५

१ इसी प्रकारके तार बंगाल और संयुक्त प्रान्तके गवर्नरोंको भेजने का समाचार था। भारत सरकारने भारत मन्त्रीसे परामर्श करने के बाद २ सितम्बरको जवाहरलाल नेहरूको बिना शर्त रिहा कर दिया। वे ३ सितम्बरको अलमोडा जेलसे इलाहाबादके लिए और वहाँसे ४ सितम्बरको जर्मनीके लिए रवाना हो गये।

५४८ पत्र कुँवरजी के० पारेखको

३० अगस्त, १९३५

चि० कुँवरजी,

कान्ति सावली गया है। उसे लिखे तुम्हारे पत्रसे मालूम हुआ कि तुम बीमार पडे हो। ऐसा कैसे हुआ? तुम कबसे बीमार हो? बली आजकल पत्र कहा लिख पाती है? यदि तुम्हे उत्तर नही मिलता तो क्या इसका कारण रामीका आलस्य ही नही हो सकता? क्या रामी जब चाहे तब वापस नही लौट सकती? तुम्हे आरामकी जरूरत है तो क्यो नही राजकोटमे ही आराम लेते?

बापूके आशीर्वाद

श्री कुँवरजी खेतशी
झण्ड् फार्मेसी
सयानी रोड, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७२३) से। सी० डब्ल्यू० ७०३ से भी, सौजन्य नवजीवन न्यास

५४९ पत्र कान्ति गाधीको

३० अगस्त, १९३५

चि० कान्ति,

तेरी अनुपस्थितिसे रामचन्द्रनको बहुत आश्चर्य और दु ख हुआ। उसका कहना है कि वह तुझसे मिले बिना कदापि नही जायेगा। वह तो कहता है कि "मै उसके पीछे-पीछे सावली जाऊँगा।" मैने जब यह कहा कि मै उसे वापस बुला दूगा, तभी वह शान्त हुआ। उसका तेरे प्रति असीम प्रेम है। ऐसी स्थितिमें मै उससे सोमवारसे पहले जानेको कैसे कह सकता हूँ? तू सोमवारको जल्दी ही पहुँच जाना। इससे पहले तो तू पहुँच नही सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३००) से, सौजन्य कान्तिलाल गाधी

५५० पत्र वालजी गो० देसाईको

३० अगस्त १९३५

चि० वालजी,

चित्रेके बारेमें समझ गया हूँ। लेख मिल गया है। मुंशीको मैंने जो प्रमाणपत्र दिया है वह, साहित्यके इतिहासके लिए उन्होंने जो सामग्री जुटाई है, उसके बारेमें है। उसे तुम प्रकाशित पुस्तकमें देख सकोगे। उनके उपन्यासोंका कथा-प्रवाह मनुष्यको कहाँ ले जाता है इस दृष्टिकोणसे मुझे उनकी पुस्तकें जिस मात्रामें पढ़नी चाहिए उतनी मैंने नहीं पढ़ी हैं। उस दृष्टिकोणसे पढ़ी भी नहीं जा सकती। वैसे मुंशीने तो स्वयं यह चाहा ही है कि मैं उनकी पुस्तकें पढ़कर अपनी सम्मति दूँ। आशा है, तुम सब कुशलपूर्वक होगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री वा० गो० देसाई
गोविन्दनगर
नैनीताल (म० प्रा०)

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४७४) से, सौजन्य वा० गो० देसाई

५५१ पत्र बलवन्तसिंहको

३० अगस्त, १९३५

चि० बलवन्तसिंह,

ईश्वरभाईका खत उसे दो, कातिका कातिको। तुमारे खत मिले हैं। हिसाब पढ़ लिया है। पैसे तो है ना? चाहिये तब लिखो। हिसाब अच्छा है। भाजी इ० की शोध की सो अच्छा किया। मैंने माफी[1] माग ली वह तो आत्मकल्याण के लिये। उसका असर तुमारेपर गहरा पड़ा यह समजकर मुझे आनंद होता है। तुमारे में काम करनेकी शक्ति तो काफी है ही। मावलीमें तुमको स्थिरचित्तता प्राप्त हो जायगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८८०) से।

१ देखिए "पत्र बलवन्तसिंहको", १५-८-१९३५।

५५२ पत्र एक ग्राम-सेवकको[1]

[३१ अगस्त, १९३५ के पूर्व]

अगर आप वहा अच्छा और शुद्ध गायका घी बनवा सके तो इस उद्योगपर अपना ध्यान अवश्य केन्द्रित कीजिए। मगर पहले तो आपको इस बातका पता लगाना चाहिए कि क्या इससे घी बनानेवाले को गुजारेके लायक मजदूरी मिल जाती है। हमे श्रमिक-वर्गके जीवनमे प्रवेश करके यह पता लगाना चाहिए कि वे क्या खाते-पीते है, कहाँ और कैसे रहते है, उनपर कितना कर्ज है, आदि। इस तरह मुझको आप घी का जो नमूना भेजे, उसका मुझे सारा इतिहास बता सकना चाहिए। आपको अपनी दुकानमे एक बही रखनी चाहिए जिसमे ये सारी तफ्सीले दर्ज हो (१) घी बनानेवाले का नाम और ठिकाना, (२) उसे बनाने मे लगनेवाला समय, (३) कितने दूधसे उतना घी बना, (४) उस घी की कीमत, (५) बनानेवाले को प्रतिघटा मिलनेवाली मजदूरी, (६) बिचोलियेका हिस्सा और ढुलाई-खर्च। आप अपनी दुकानमे जो भी चीज रखते या बेचते हो, उसकी यह विवरणिका अवश्य लगी होनी चाहिए और जो भी आपसे वह चीज खरीदता है उसे उस विवरणिकाकी माग करने का अधिकार है। आपको मुझसे यह नही कहना है कि यह तो बडा उकतानेवाला काम है और आपके पास इसके लिए समय नही है। जब एक बार सिलसिला शुरू कर दिया जायेगा तो वह नित्यकी एक साधारण बात हो जायेगी और उसमे ज्यादा समय नही लगेगा। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ न्यूनतम मजदूरी चाहे जितनी नियत करे, आप तो किसी भी हालतमें प्रतिघटा आधा आनेसे कम न दे। इस काममे कोई कठिनाई नही होगी। किसी चीजको तैयार करने मे कितने घटे लगे है इसका पता करके उस हिसाबसे उसकी मजदूरी और कीमत तय कर दीजिए। उदाहरणके लिए, किसी सामान्य कतैयेको १५ अकका ४०० गज सूत कातने मे एक घटा लगता है। इस हिसाबसे आप १५ अकका ४०० गज मजबूत और एकसार सूत कातने के लिए मजदूरीमे आधा आना दीजिए।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३१-८-१९३५

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। उक्त ग्राम सेवकने गांधीजीसे पूछा था कि क्या वह खेतीके सहायक उद्योग की तरह घी बनवाने के कामपर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकता है और अगर कर सकता है तो उसे यह काम किस तरह करना चाहिए। १९-१० १९३५ के **हरिजन**में उसके अच्छा घी प्राप्त करने के अनुभव प्रकाशित हुए थे।

५५३ एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव

गत सप्ताह अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके बोडने अपनी नियतकालिक बैठकमे दो दिनोतक पूरा विचार-विमश करने के बाद सवसम्मतिसे निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया

> **चूँकि इस सघके उद्देश्यमे यह बात भी शामिल है कि जो उद्योग मिट गये है या मिटते जा रहे है, उनके पुनरुद्धारके लिए प्रोत्साहन देकर ग्रामीण जनताका नैतिक तथा आर्थिक उत्थान किया जाये, इसलिए बोर्डका व्यवस्थापक-मण्डल चाहता है कि सघकी देख-रेखमें तैयार की जानेवाली या बिकनेवाली सभी चीजोके लिए प्रत्येक कारीगरको एक न्यूनतम मजदूरी मिलनी ही चाहिए। यह न्यूनतम मजदूरी इस आधारपर तय की जाये कि कोई कारीगर आठ घटेतक कुशलताके साथ जितना काम करे, उसकी कमसे-कम इतनी मजदूरी उसे अवश्य मिले कि उससे शास्त्रीय रीतिसे निर्धारित उसकी आहार विषयक न्यूनतम आवश्यकताएँ पूरी हो जायें। इस बातका ध्यान रखना सघसे सम्बन्धित सभी लोगो और सस्थाओका कत्तव्य होना चाहिए कि जिन उद्योगोंको वे प्रोत्साहन दे रहे है, उनमें लगे कारीगरोको कभी भी निर्धारित मान से कम मजदूरी न मिले, और साथ ही उन्हे इस बातका बराबर खयाल रखना चाहिए कि जब और जैसे-जैसे परिस्थितियाँ अनुकूल होती जायें, मजदूरीके इस मानमें धीरे-धीरे वृद्धि करते जाना है ताकि एक दिन वह इस स्तरतक पहुँच जाये कि कारीगरके परिवारका भरण-पोषण उस परिवारके कमाऊ सदस्योकी कमाईसे भली-भाँति हो सके।**

यदि इस प्रस्तावपर ईमानदारीके साथ अमल किया गया तो निश्चित है कि इसके दूरगामी परिणाम निकलेगे। इसपर अमल करके हम श्रमिकोको, चाहे वे सामान्य मजदूर हो या कुशल कारीगर, वह न्याय प्रदान कर सकेंगे जो उन्हे बहुत पहले प्राप्त होना चाहिए था। इस प्रस्तावित मजदूरीका ठीक हिसाब पैसोमे लगाने मे मुश्किल तो पडनेवाली है ही। सदस्यो और एजेटोको तीन तरहकी तालिकाएँ तैयार करनी पडेगी

१ विभिन्न प्रान्तोमे अलग-अलग क्षेत्रोमें मजदूरी करनेवाले पुरुष और स्त्रियाँ प्रतिघटा कितना पैसा कमाती है?

२ मजदूरके रहने और काम करने के अपने-अपने इलाकोमे उनका नित्यका आहार क्या है और उसपर कितना खर्च बैठता है?

३ विभिन्न प्रदेशोमे पैदा होनेवाले मुख्य खाद्य पदार्थोको ध्यानमे रखकर प्रत्येक प्रदेशके सम्बन्धमे विशेषज्ञो द्वारा शास्त्रीय विधिसे तैयार कराया गया न्यूनतम आहार-प्रमाण और उसकी लागत।

मुझे जो तथ्य-आँकडे मिले है, उनसे यह प्रकट होता है कि पजाबको छोडकर सारे हिन्दुस्तानमे जनसाधारण जिन खाद्य पदार्थोपर गुजारा करता है, उनसे उसे पर्याप्त पोषण नही मिलता।

न्यूनतम आहार-प्रमाणके विषयमे जो पुस्तिका सबसे अधिक सहायक हो सकती है, वह है बम्बई प्रान्त बाल एव स्वास्थ्य सप्ताह सघ (डिलाइल रोड, बम्बई ११) की ओरसे डॉ० एच० वी० तिलक द्वारा तैयार की गई पुस्तिका। उसका नाम है 'बैलेन्स्ड डाइट' और कीमत चार आने है। मराठी और गुजरातीमे इसका अनुवाद भी हो चुका है। इसमे जिस आहारकी सिफारिश की गई है उसमे सोयाबीन-सहित कई तरहके साबुत अनाज (जिनमे से कुछको भिगोकर अकुर निकलने के बाद खानेको कहा गया है), मलाई-उतरे दूधका चूर्ण और साग-भाजी शामिल है। एक सफेद चूहेको जब अच्छी तरहसे कुटे चावलकी भरपूर मात्रा और थोडे-से साग और दूधपर रखा गया तो उसका वजन १३ ग्राम था। उसी चूहेको जब सन्तुलित आहार दिया गया तो उसका वजन बढते-बढते ५५ ग्रामतक पहुँच गया। इस पुस्तकमे जिस आहारकी सिफारिश की गई है, उसका निर्णय सावधानीपूर्वक अनेक प्रयोग करने के बाद किया गया है। बम्बईमे इस आहारपर ५ रुपये प्रति मासका खर्च बैठता है। इसमें मुझे शका है कि बम्बई-जैसी जगहमे भी गरीबोके आहारमे सोयाबीन और मलाई-उतरे हुए दूधके चूर्णका समावेश किया जा सकता है या नही। डॉ० तिलकने दालोको अकुरित करने और जौ का माल्ट बनाने की जो सिफारिश की है वह गृहस्थोके घर मुश्किल है। गाँवोमे तो इस चीजको दाखिल करना प्राय असम्भव है। मलाई उतरा हुआ दूध गाँवोमे मिलता नही, और मुझे इस बातका पता है कि सैकडो गाँवोमें ताजे दूध या अच्छे घी की एक बूद भी दुर्लभ है। मै इन कठिनाइयोका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ कि विशेषज्ञ लोग डॉ० तिलकके तैयार किये हुए इस आहार-प्रमाणके आधारपर अपने-अपने प्रान्तोके गाँवोके लिए ऐसा प्रमाण ढूढ निकाले जो वहाके लिए अधिक अनुकूल भी पडे और जिससे वही परिणाम भी निकले जो परिणाम डॉ० तिलक द्वारा निश्चित किये हुए आहारके आये बताये जाते है। जबतक ग्राम-सेवक अपने प्रभावमे आनेवाले मजदूरो या कारीगरोको इस लायक नही बना देते कि वे स्वय अपने और अपने आश्रितोके लिए यथेष्ट आहार जुटा सके तबतक हमें चैन नही लेना चाहिए। चीजोकी कीमते कम करने के बजाय हमे बराबर इस बातकी फिक्र होनी चाहिए कि उन्हे बनाने मे लगे मजदूरो और कारीगरोको अपने गुजारेके लायक मजदूरी मिल सके। हमे यन्त्र-निर्मित विदेशी या देशी मालसे होड करने का विचार ही मनसे निकाल देना होगा। शक्ति-चालित यन्त्रो द्वारा वस्तुनिर्माण करनेवाले चन्द लोगोको उनकी जरूरतसे ज्यादा मिले और करोडो मजदूर-कारीगर लगभग भुखमरी की अवस्थामें रहे, इस स्थितिको कायम नही रहने देना चाहिए। राजकीय सरक्षणके

अभावमें लोक-मतको ही इस तरह प्रशिक्षित करना चाहिए जिससे लोग देशके मजदूरोंके शोषणमें हाथ न बटायें।

बिक्रीकी खादी तैयार कराने के काममें जो खादी सेवक लगे हुए हैं उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि जो बात दूसरे ग्रामोद्योगों पर लागू होती है, वह बिक्रीके लिए तैयार की हुई खादीपर भी उतनी ही लागू होती है। कतैयेसे लेकर बुनकर तक खादीके सभी मजदूर-कारीगरोंको वह मजदूरी तो मिलनी ही चाहिए जिसकी तजवीज इस प्रस्तावमें की गई है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ३१-८-१९३५

५५४. हमारा कर्त्तव्य

अस्पृश्यताकी चक्कीमें एक तरहसे गुजरातके हरिजन जितने पिस रहे हैं उतने शायद और कहींके नहीं। धोलकामें एक हरिजनको एक सवर्ण हिन्दूने मार डाला और वह हत्यारा ३०० रुपये जुर्माना देकर साफ छूट गया। कविठा गांवके हरिजनोंने एक सार्वजनिक पाठशालामें अपने बच्चे भेजने का साहस किया, तो वहाँके तथाकथित राजपूतोंने उन असहाय लोगोंको बड़ी बेरहमीसे मारा-पीटा। काठियावाड़में तो आज यह हाल है कि वहाँ कई क्षेत्रोंके अनेक गांवोंमें सवर्ण हिंदू हरिजनोंको बेहद सता रहे हैं, और सो सिर्फ इसीलिए कि वहाँ ढोरोंमें महामारी फैल गई है। लोगोंके मनमें वहाँ यह वहम समा गया है कि जादू-टोना करके या अन्य उपायोंसे हरिजन ये बीमारियाँ फैलाते हैं। हरिजनोंको हमेशा अपने जान-मालका भय लगा रहता है। सुधारक लाचारी महसूस करते हैं। राज्य या तो उदासीन है, या फिर ताकतवर सवर्णोंके मुकाबलेमें वह भी अपनेको असहाय समझता है। कारण स्पष्ट है। हरिजनोंको यह पता ही नहीं कि इस अत्याचारका आखिर क्या इलाज किया जाये। अपनी रक्षा करने की उनमें इच्छा-शक्ति ही नहीं है। उन्हें अपनी मानवीय गरिमाका या मानव-बन्धुओंसे अपनी रक्षा स्वयं कर सकने की अपनी सहज क्षमताका तनिक भी बोध नहीं है। सुधारकोंको वहाँ हरिजनोंको सतानेवालों का अज्ञानान्धकार दूर करना है। सवर्णोंको यह खबर ही नहीं है कि वे यह सब क्या कर रहे हैं। पर्चे छपा-छपाकर लोगोंमें बाँटे जायें। पर अत्याचार करनेवाले सवर्ण लोग शायद ही कभी अखबार या पर्चे वगैरह पढ़ते हैं। उनकी एक अपनी ही दुनिया है और वे उसीमें मस्त रहते हैं। उन्हें समझानेका तो सिर्फ एक रास्ता है, और वह यह कि उनसे व्यक्तिगत रूपसे सम्पर्क स्थापित किया जाये। जरूरत हो तो उनके घरोंमें जाकर उनसे मिला जाये। उनके गांवोंमें सभाएँ की जायें। कितनी ही नाराजी प्रकट कीजिए, कितनी ही तकरीरें बघारिए, इससे उनका अज्ञान दूर होनेका नहीं। जल्दीसे-जल्दी उन लोगोंका अज्ञान दूर करने का उपाय तो यह है कि उनमें यह प्रचार किया जाये कि किस तरह ये पशु-रोग छूत लगने से फैलते हैं और किस प्रकार सावधानीके साथ

उपचार करके उन्हे फैलने से रोका जा सकता है या रोगग्रस्त पशुओको रोगमुक्त किया जा सकता है।

इसका यह अर्थ हुआ कि प्रचारकोको धीरजके साथ लगातार काम करना होगा। और जिन राज्योमे हरिजन सताये जाये, उन राज्योसे भी कहा जाये कि वे उन गरीबोकी रक्षा करे। जहा सुधारक अच्छी-खासी सख्यामे हो वहाँ वे हरिजनोके बीच जाकर बस जाये और यदि उनके वहाँ रहनेसे भी हरिजनोका सताया जाना नही रुकता तो हरिजनोपर पडनेवाली मुसीबतोको वे भी उनके साथ-साथ झेले। अज्ञान-निवारणकी इस प्रवृत्तिमे सनातनियोकी भी मदद लेनेकी कोशिश करनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि गुमराह और अज्ञानी सवर्णोके द्वारा बिलकुल बेकसूर हरिजनोपर किये जानेवाले क्रूरतापूर्ण अत्याचारोका कोई भी समझदार सनातनी समर्थन नही करेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३१-८-१९३५

५५५ पत्र : अमृतकौरको

१ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

यहाँ काम सीखनेवाले आजकल जो कागज तैयार कर रहे है उसकी कतरनका एक टुकडा भेज रहा हूँ। यह मै तुमको कागजकी रंगत और उसका पतलापन देखने के लिए भेज रहा हूँ। इसमें सफाई नही है। जल्द ही हम देशमे तैयार होनेवाला बढियासे-बढिया कागज बहुत ठीक लागतपर तैयार करने लगेंगे। मुझे जितनी उम्मीद थी, उससे पहले ही अब देवदास तुम्हारे पास पहुँच जायेगा। तुम्हारा स्नेह-पत्र मै देवदासके पास भेज रहा हूँ। कुमारप्पा शायद ४ तारीखको नागपुरसे चलकर ६ को तुम्हारे पास पहुँच जायेगा।

मैने चावलकी एक बोरी अविनाशीलिंगमके हाथ तुमको भेजी है। चावल सस्ता पर काफी बढिया है। मैने दूना रेल-भाडा भरा है। इसलिए कि मालगाडीसे भेजने पर महीने-भर बाद कही तुमको मिल पाता और फिर खराब होनेका खतरा अलग। पता नही, मैने यह ठीक किया या नही। शिमलामे तो चावल खराब नही होना चाहिए, अलबत्ता बिना कुटा चावल अधिक दिनोतक सहेजकर नही रखना चाहिए। यदि भेजे हुए चावलकी मात्रा तुम्हारी जरूरतसे बहुत ज्यादा हो, तो बाकीको बेच देना। इसका बिल अगर भेजा नही गया है तो मै इसके साथ ही भेज रहा हूँ।

तकली भी अविनाशीलिंगमके हाथ भेजी है।

यदि देवदास आ जाये तो तुमको खादी-प्रचारके लिए उससे काम लेना चाहिए। वह कातना जानता है।

इन दिनो यहाँ काफी भीड है। हरिजन-मण्डलके सदस्य हमारे यहाँ आये हुए है।

जानकीप्रसादने अपने [उपवासके] सत्रह दिन पूरे कर लिये। उसकी दशा असाधारण रूपसे अच्छी रही। उसने शहद, नीबू और पानीके साथ उपवास तोडा।

तुम्हारे भेजे सेब मै नही-खा सका। मेरे पास बहुत-से लोग है, जिनकी जरूरत मुझसे कही बडी है।

तुम दोनोको स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४४) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३५३ से भी

५५६ पत्र : छगनलाल जोशीको

२ सितम्बर, १९३५

चि० छगनलाल,

हड्डियोसे खाद बनानेके बारेमें[1] तो तुमने पढ ही लिया होगा। अन्य चीजोके बारेमे मैने एक लेख विशेष रूपसे लिखवाया है। उसे ध्यानपूवक पढना और तदनुसार स्वय प्रयोग करना अथवा किसी अन्य व्यक्तिसे कराना। वैसे यह प्रयोग स्वय किया जा सकता है। तुम किसीको यहाँ भेजकर उसे प्रशिक्षित भी करा सकते हो। लक्ष्मीदास एक आदमीको भेजनेवाला है।

सघका विवरण मैने पढनेकी आशासे सँभालकर तो रख ही छोडा है किन्तु मै नही जानता कि उसे कब पढ पाऊँगा। अपनी व्यस्तताको तो सिफ मै ही जानता हूँ।

यह सच है कि मैने फल खाना छोड दिया है। वे बहुत महगे है। सस्ते फल मै अवश्य खा सकता हूँ किन्तु आजकल कोई फल सस्ता है ही नही। सन्तरेके छिलके जरूर सस्ते है और जब वे बच जाते है तो मै उनका मुरब्बा बना लेता हूँ। इससे मुझे कम गुडकी आवश्यकता पडती है और फल खानेका आधा उद्देश्य पूरा हो जाता है। मै अभी उसको आजमा रहा हूँ। बाकी तो हरी सब्जियाँ और दूधका सहारा है। इसके अतिरिक्त शहद तो होता ही है। इससे कोई हानि नही पहुँचती। देखा जाये, कहाँतक इस खुराकपर रहा जा सकता है। इस बातका तुरन्त निर्णय नही किया जा सकता। मै हरी पत्तियोके अतिरिक्त कुम्हडा, लौकी आदि भी खाता हूँ, जो यहाँ बगियामे होती है। आजकल भिंडी और कुम्हडा उतर रहा है और भाजी भी उतर रही है।

भणसाली बहुत मर्यादित ढगसे आचरण कर रहा है। वह मेरे नियन्त्रणको स्वीकार कर लेता है। अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखता है और अत्यन्त प्रफुल्लित रहता

१ देखिए "पत्र छगनलाल जोशीको", २३ ८ १९३५।

है। यदि उसपर बहुत अधिक नियन्त्रण लगाऊँ तो मै उसे गँवा बैठूगा इसलिए मै उतना ही नियन्त्रण लगाता हूँ जितना कि वह सहन कर सके। उसने एक अलग ही माग स्वीकार कर लिया है। अत ऐसी स्थितिमे उससे मेरी अपनी या हम लोगो की तुलना कैसे की जा सकती है? यह कौन जानता है कि कौन सही रास्तेपर है? क्या ऐसा नही हो सकता कि हम दोनो ही सही रास्तेपर हो? एक अन्धा दूसरे अन्धेका इन्साफ कैसे कर सकता है? यदि दोनो खाईमे गिरने से बच जाये तो यह उनके लिए तारीफकी बात होगी। मैने तुम्हारा सदेश भणसालीतक पहुँचा दिया हे। जब वह हँसता है तो कमरा गृज उठता है। यहाँ आश्रम-जैसा एकान्त नही है। बडे कमरेमे एक कोना उसका हैं, जिसमे कान्ति, नवीन तथा दो-चार अन्य लोग है। उसमे जरा भी जगह नही बचती।

यहाँका दृश्य देखने लायक है। जिस कमरेमे मै हूँ उसमे महादेव, कनु, मीरा-बहन तो स्थायी रूपसे टिके ही हुए है, अन्य लोग भी आते-जाते ही रहते है। एक दूसरे कमरेमे फिलहाल नीमू और उसके तीन बच्चे तथा तीन अन्य बहने रहती है। अमतुस्सलाम अपना पूरा दिन भोजनालयमे बिताती है या फिर मेरे कमरेमें। और जब प्रभावती यहा होती है तो वह भी यही करती है। जब वर्षा होती है तो हम सब लोग कमरे या बरामदेमे और जब नही होती तो छतपर खुलेमे सोते है। इससे तुम्हे यहाँकी स्थितिका कुछ अन्दाज हो जायेगा। खानेका खच औसतन सातसे-साढे सात [आने ?] है, जिसे हम घटाना चाहते है। जो हो सो ठीक है। हम उसे पाँच तक लानेकी आशा करते हैं।

जो सज्जन सरकारी पाठशालामे पढाते है यदि वे हमारे आदर्शोंके विपरीत व्यवहार न करे तो फिलहाल उनकी सेवा लेनेमे मुझे तनिक भी अटपटा नही लगेगा। इस भाईके चरित्र और खादी-प्रेमके बारेमे मैने यथासम्भव जाँच-पडताल की थी। उनका पत्र भी मुझे सन्तोषजनक लगा था। उनका खादीपर विश्वास है, और अधिक-तर उसीका प्रयोग करते है। वे अभी खादीकी धोतीतक नही पहुँच सके है। खादीकी टोपी और खादीकी पोशाकके बारेमे उनका अपने उच्चाधिकारियोसे झगडा भी हुआ था, जिसमे उनकी जीत हुई। जिस बहनके बारेम आरोप लगाया जाता था उससे उनका सम्बन्ध आज भी बना हुआ है। किन्तु उनका कहना है कि उक्त सम्बन्ध सदा निर्दाष रहा है। उनका पत्र मुझे विश्वासजनक लगा है। मेरी यह जाँच-पडताल अभी हालमे पूरी हुई है। मै तुम्हे इसमे डालना नही चाहता था, किन्तु अब यदि तुम इस मामलेपर कुछ प्रकाश डाल सको तो डालना।

इस सम्बन्धमे मैने सरदार और नरहरिसे पत्र-व्यवहार किया है। इस मामलेमे सरदारके पास कहने को कुछ नही है। ऐसा लगता है कि नरहरिको नारणदासके वक्तव्यसे सन्तोष हो गया है। नारणदासका उक्त वक्तव्य वजुभाई और जेठालालको भी भेजा गया है और उनका उत्तर माँगा है। नारणदासके वक्तव्यमे मुझे कुछ कहने लायक नही लगा। ऐसा लगता है कि वजुभाई और नारणदासके बीच कुछ मूलभूत सैद्धान्तिक मतभेद है किन्तु मुझे वे भी स्पष्ट नजर नही आते, सिवा इसके कि नारण-

दासने उद्योगोपर ज्यादा जोर दिया हो ओर शिक्षकोसे भी वैसी आशा की हो। मै इसे सैद्धान्तिक मतभेद नही मानता। क्या तुमने वजुभाई ओर जेठालालके पत्र पढे है? यदि तुम उसमे रस लेने और समय देनेको तैयार हो तो वह वक्तव्य मै तुम्हे भेज दूगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

रमा और बच्चोको आशीर्वाद। आजका पत्र पहले के लम्बे पत्रोकी याद दिलाता है। सप्ताहमे सोमवारके अतिरिक्त अन्य दिन मै ज्यादातर बाये हाथसे लिखता हूँ।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३३) से।

५५७. पत्र . मनु गाधीको

वर्धा
२ सितम्बर, १९३५

चि० मनुडी,

तेरे लिए अलगसे यह पत्र है। क्या तू फिर बीमार पड गई? यदि बहुत सावधानी से रहा जाये तो बीमार ही क्यो हो? अब तो थोडे दिनमे तू यहा आ ही जायेगी न? कुवरजी ने तुझे राजकोट भेजने को लिखा है। रामीको उसने बुला लिया है। वह बीमार रहता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५५१) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

५५८ पत्र : नारणदास गाधीको

२ सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा कल्याण ही है। मै जानता हूँ कि वहाँ लगातार तुम्हारी कसौटी हो रही है। किन्तु तुममे धीरज है, श्रद्धा है इसलिए सब ठीक ही होगा। वहाँ भी किसीको काम सभालना ही चाहिए। माता-पिता तो हैं ही। अत तुम्हे वहाँ आजकल अनायास ही सेवा करने का सौभाग्य मिल रहा है। ऐसा लगता है, मानो भगवान्ने तुम्हारे लिए सभी कर्त्तव्योको निभाने की व्यवस्था कर दी हो।

हाँ, दवदामको लकवा मार जानेका डर था। अब तो ठीक है। किन्तु दुबला हो गया है। वह शायद बा के साथ शिमला जायेगा। यह सब लिखनेकी बात मुझे मुश्किलसे ही सूझती है।

मैथ्यूके बारेमें मैं समझ गया। यह कागज यहीं तयार किया गया था। यह पहला ही थान है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७२ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

५५९ पत्र : कृष्णचन्द्रको

वर्धा
प्रातःकाल ३ बजे, ३ सितम्बर, १९३५

चि० कृष्णचंद्र,

जब श्रद्धासे मानोगे कि सब कामोंमें परमात्मा साक्षी है और सब काम, सब विचार, सब वचन उसीको अर्पण करोगे तब परम आनंदका अनुभव करोगे और परमात्माकी हस्तीका अनुभव अवश्य करोगे। याद करो 'यत्करोषि यदश्नासि' इ०।[1]

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७६) से।

५६० तार : जवाहरलाल नेहरूको

४ सितम्बर, १९३५

ईश्वरको धन्यवाद। आशा है तुम भले-चंगे होगे।[2]

[अंग्रेजीसे]
लीडर, ६-९-१९३५

1. *भगवद्गीता*, ९/२७।
2. इसके उत्तरमें, जवाहरलाल नेहरूका इसी तिथिका निम्न तार था : "आज शाम विमानसे आ रहा हूँ। सप्रेम।" देखिए "तार : वाइसरायको", ३०-८-१९३५ भी।

५६१ पत्र जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
४ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

तुम समझ सकते हो कि तुम्हारा तार पाकर मुझे कितनी राहत मिली होगी। हमेशाकी तरह महादेव ही यह पत्र लेकर जा रहा है। काश ! मैं खुद आता, लेकिन मुझे नही आना चाहिए। तुम दोनोकी दिलचस्पीकी सभी बातोके बारेमे खुले दिलसे मुझे अपनी राय देना। अगर कोई बहुत ही बडी, काबूसे बाहरकी बाधा न हो तो अगले वर्ष तुमको काग्रेसकी नौकाकी पतवार सभाल लेनी चाहिए। वहाँ पहुँचकर कमलाकी हालतके बारेमे तार जरूर देना। तुम्हारी रिहाईकी खबरसे ही उसको काफी राहत मिली होगी।

आशा है, तुम्हारी सेहत ठीक रही होगी।

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपस, १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

५६२ पत्र : अमृतकौरको

४ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

यहाँ तैयार किया जानेवाला यही सबसे पतला कागज है। तुम देखोगी ही कि इसके दोनो तरफ लिखा जा सकता है। उसने स्याही-सोख भी तैयार किया है। और उसने भरोसा दिलाया है कि इनमे काफी सुधार होगे। यह कागज-उद्योग वरदान-जैसा साबित हो सकता है। यदि ऐसा हुआ, तो वह इस बातका प्रमाण होगा कि सूझबूझ और मेहनत दोनो हो तो गाँवोके लिए कितना-कुछ किया जा सकता है। मुझे उम्मीद है कि तुम्हारी सहायतासे मै कागज तैयार करनेवालो को आठ आने रोजसे भी कुछ अधिक दिलाने मे सफल हो सकूगा।

तुम्हारे लिए भेजा गया चावल अविनाशीलिंगमके ही पास है। वह कहता है कि उसे तुम्हारा स्थान नहीं मिला। उसने मुझे रेल-भाड़ा अदा नहीं करने दिया। तुम खुद देखोगी कि बोरीकी कीमत मामूली ही है। रेल-भाड़ा वस्तुकी कीमतसे दूना है। पता नहीं, उतना सारा चावल भेजकर मैंने ठीक किया या नहीं। शायद तुमको पता नहीं था कि एक बोरीमें कितना आता है। बोरियाँ भी तरह-तरह की होती हैं।

कुमारप्पा और देवदासको अपने यहाँ ठहराने का अनुरोध मैं कर चुका हूँ और अब ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा। बस, यही आशा करता हूँ कि वे तुम्हारे ऊपर भार-स्वरूप नहीं होंगे। सचमुच तुमसे यह अपेक्षा बिलकुल नहीं है कि तुम उनपर अपना कुछ समय भी लगाओगी। गरीब आदमियोंके लिए तो पहाड़ोंके फैशनेबल स्थानोंमें जानेकी बात सोचनातक मुहाल है। इस शरारतके लिए तुम्हीं जिम्मेवार हो। मेरी गरीबी क्या तथाकथित ही है?

शम्मीको सच्चे गरीबोंको नहीं भुलाना चाहिए। नीमकी पत्तीके तत्त्वोंका विश्लेषण मुझे मिलना ही चाहिए।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४५) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३५४ से भी

५६३ पत्र कमलनयन बजाजको

४ सितम्बर, १९३५

चि० कमलनयन,

देरसे ही सही किन्तु तेरा पत्र मिला, यह ठीक हुआ।

अरे, यदि रामनामका जप भी नियमसे करेगा तो तेरा भला ही होगा।

तू वहाँ हाथका बना कागज इस्तेमाल नहीं करता, उसकी कोई चिन्ता नहीं। ऐसा करने के लिए तेरे मनमें उत्साह और गरीबोंके प्रति अत्यन्त सहानुभूति होनी चाहिए। जब ये तेरे स्वभावका अंग बन जायेंगे तो तू स्वतः यह सब करने लग जायेगा। जो-कुछ तू अपने मनके उत्साहसे करेगा वही सार्थक होगा और वही तुझे फलेगा।

वहाँ बैठकर तू ब्रिटिश और अन्य विदेशियोंमें भेद करने के फेरमें मत पड़ना।

कपड़ोंके सम्बन्धमें एक बात कह देना चाहता हूँ। यदि तू वहाँ स्वेच्छासे खादी पहनने का आग्रह न रख सके तो उसे छोड़ देना। तुझे जिसमें सुविधा हो

वही पोशाक पहनना ओर जिसमे सुविधा लगे उसी कपडेकी पोशाक बनवाना। मै समझता हूँ कि इतने मे तेरे सभी प्रश्नोका उत्तर आ जाता है।

अत विदेशी या मिल के कपडेका ओवरकोट पहना जा सकता है, मोजे और कसरत करने की बनियान आदि पहने जा सकते है। यदि ये सब चीजे हाथकी बनी प्राप्त करने का प्रयत्न करे तो उसमे कोई बुराई नही है। यदि वैसा न करे तो कोई पाप नही माना जायेगा।

वहाँ तेरा मुख्य काम मेहनतसे अपनी पढाई करना, निर्भयता, वीरता, दृढता, उद्यम, उदारता, दया, प्रेम आदि गुणोका विकास करना तथा सादगी और विनम्रता बढाना है। वहाके जीवनका निरीक्षण करना। पल-पलका सदुपयोग करना। अपनी दैनन्दिनी रखना।

तेरा पत्र मै वापस लौटा रहा हूँ। यदि कुछ छूट गया हो तो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २८६-८७

५६४ पत्र · वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
५ सितम्बर, १९३५

भाई वल्लभभाई,

महादेव कल जवाहरलालसे मिलने प्रयागकी तरफ गये, आज जवाहरलालका तार आया है, उससे मालूम होता है कि महादेव उससे मिल नही पायेगा, क्योकि वह आज शामको रवाना हो जायेगा।[1]

बम्बई सरकारने अपने जवाबको जितना जहरीला बनाया जा सकता था, उतना बनाया है। उसका अर्थ स्पष्ट है। सचाईको दबाने का प्रयत्न किया जायेगा। मेरे खयालसे अब हमे पत्र-व्यवहार प्रकाशित नही करना चाहिए। कमेटीकी रिपोर्ट मिल जानेपर उसके साथ प्रस्तावनाके रूपमे कमेटीकी उत्पत्ति बताने के लिए जितना आवश्यक हो उतना ही अश प्रकाशित करे। इसमे क्या तुम्हे कोई दोष जान पडता है? यह वाछनीय है कि कमेटीका काम तुरन्त पूरा हो जाये।

आशा है, बाबा ठीक हो गया होगा। फिलहाल तो मेरे आस-पास एक-न-एक बैठक होती ही रहती है।[2]

१ देखिए "पत्र जवाहरलाल नेहरूको", ४-९-१९३५ की पाद-टिप्पणी २। महादेव देसाई द्वारा जवाहरलाल नेहरूको लिखे गये पत्रके लिए देखिए परिशिष्ट २।

२ साधन सूत्रमें कुछ अंश छूटा हुआ है।

महादेव परसों वापस आयेंगे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८४

५६५ पत्र जयन्ती एन० पारेखको

५ सितम्बर, १९३५

चि० जयन्ती,

यह आश्चर्यकी बात है कि तू मेरे कामको नही समझ सका। मैंने तो यह कहा है न कि मेरी सभी गति-विधियाँ स्वराज्यके लिए ही होती हैं। मेरी हर साँस उसके लिए है। उस लक्ष्यको और भी जल्दी प्राप्त करने के लिए मैं कांग्रेस छोडकर हरिजनोद्धारके काममे पडा और अब ग्रामोद्योगोमे लगा हुआ हूँ। सर्व देवोको किया गया नमस्कार केशवको ही पहुँचता है।

इस समय कान्तिकी मदद करना तेरा कत्तव्य है। तुम दोनो भाई कोई ईमानदारीका धन्धा करके नत्थूभाईको ऋणसे मुक्त करो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२६२)से।

५६६. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
६ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

तो मरीजोके[१] वहा पहुँचनेसे पहले ही तुम्हारी दैनिक डाक-सेवा शुरू हो गई। यह 'शकुतला'के तुम्हारे रिहर्सल-जैसा ही रहा। अगली बार यहाँ आनेपर यदि सचिवकी हैसियतसे अपने कामसे थोडा समय निकाल सको तो तुम अपनी कुछ कला यहाँकी बालिकाओको भी सिखा देना। मेरा खयाल है कि वहाँ तुम्हारा रिहर्सल अग्रेजीमे ही हुआ होगा। अनुवाद किसका था? अभिनय किस-किसने किया था?

१ तात्पर्य जे० सी० कुमारप्पा और देवदाससे है।

हाँ, अगर तुम खादीकी एक निश्चित न्यूनतम मात्रा खरीदने और अपने भण्डारमे मिलका कपडा बिलकुल न रखने की गारटी दो तो तुमको विक्रेता मिल जायेगा और एक निश्चित अवधितक के लिए उसका मोजूदा किराया अदा कर दिया जायेगा। तुम अन्य सभी स्वदेशी वस्तुएँ बेच सकती हो। लेकिन मुझे चिन्ता इस बातकी है कि तुम्हारे कन्धोपर वित्तीय तथा प्रशासकीय दायित्व पहले ही इतना अधिक है कि उसे और बढाना नही चाहिए। यदि ठीक ढगके कार्यकर्त्ता मिल जाये ओर तुम्हारा वित्तीय दायित्व बिलकुल सोलह आने पाव-रत्ती निर्धारित हो जाये तो निश्चय ही तुम स्वदेशीका कारबार चला सकती हो। मै जिन विभिन्न उद्यमोसे सम्बन्धित हूँ उनके क्षेत्र इतने बडे-बडे है कि उनमे चाहे जितना पैसा लगाया जा सकता है। अबतक यदि ऐसा नही किया गया है तो सिर्फ इसलिए कि वे मेरे काबूसे बाहर न हो जाये। फिर, इनकी रचना भी इस तरह की गई है कि इन्हे सहज ही सुरक्षाकी गारटी प्राप्त है, क्योकि इनमे निजी लाभकी गुजाइश नही रखी गई है। इसलिए मुझे समाजके सबसे निचले और दबे-पिसे लोगोकी सेवाके लिए अर्पित तुम्हारी योग्यता, लगन और आत्माकी पवित्रता ही दरकार है। ईश्वरकी कृपा है कि यह मै पा ही गया हूँ।

विजयसिहका पत्र मै लौटा रहा हूँ। मुझे वह खास अच्छा नही लगा। लेकिन मुझे उसके बारेमे राय देनेका कोई अधिकार नही। तुम एक-एक पाईका ठीक हिसाब रखने का आग्रह करना।

महादेव एक दिनके लिए जवाहरलालसे मिलने गया है। पर मुझे आशका है कि वह चन्द घण्टे बाद ही पहुँचा होगा। जवाहरलाल उसके अनुमानसे पहले ही विमानपर सवार हो गया था।

आशा है, तुम अपनी सामर्थ्यसे अधिक मेहनत नही कर रही होगी।

सप्रेम,

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४६) से, सौजन्य अमृतकौर, जी० एन० ६३५५ से भी

५६७ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

६ सितम्बर, १९३५

चि० अम्बुजम,

मुझे खुशी है कि तुम्हारा थोडा घूमना-फिरना हो जायेगा। तुम अपनी प्रवृत्तियाँ हरिजन-काय, खादी और हिन्दीतक ही सीमित रखो, यह तुम्हारे लिए बेशक अच्छा होगा। तुम त्रिवेन्द्रम जा रही हो, इसलिए तुम वहाके जिस सरकारी मधुमक्खी पालन-केन्द्रके बारेमे सुनते है, उसे भी देख सकती हो। वहाके रामचन्द्रको तो जानती हो न? उसे ढूढ निकालना। वह हरिजन सेवक सघका मन्त्री और हमारा एक श्रेष्ठ कायकर्त्ता है।

मुझे आशा है, अगर किचीकी उँगली हमेशाके लिए टेढी रह जाती हे तब भी शरीर-रचना-सम्बन्धी कोई खराबी सामने न आयेगी।

मै बादाम तो लेता हूँ, लेकिन कभी-कभी। जबतक न कहू, मुझे बादाम बिलकुल मत भेजना।

स्नेह।

बापू

मल अग्रेजीसे अम्बुजम्माल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

५६८ पत्र क० मा० मुशीको[1]

६ सितम्बर, १९३५

भाई मुशी,

इस मामलेपर विचार करना। यदि तुम्हे लगे कि इसमे हम जीत सकते है तो तुम जलगाँव जाना या अन्य किसीको भेज देना। जानेवाले व्यक्तिको रेलके किरायेसे अधिक देनेकी सामर्थ्य इन भाइयोमे नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५८९)से, सौजन्य क० मा० मुशी

१ यह पत्र देवकीनन्दन, खादी भण्डार, जलगाँवके ११ सितम्बर, १९३५के निम्न अग्रेजी पत्रके साथ क० मा० मुशीको भेजा गया था "हमारा एक दीवानी मुकदमा अतिरिक्त प्रथम श्रेणीके सब जज की अदालतमें है, जिसकी सुनवाई २७ सितम्बरको होगी। खादी भण्डारने यह मामला सरकारके खिलाफ दायर किया है। इस बारेमें हमने महात्माजी की राय ली थी और उन्होने आपके पास जानेको कहा। मामलेके बारेमें महात्माजी का आपके नाम लिखा पत्र हम साथ भेज रहे है, आदि।"

५६९ पत्र : गोवामलको[1]

६ सितम्बर, १९३५

भाई गोवामल,

मुझे पद्मावतीका पत्र नही मिला। मुझे आशीर्वादकी बात बिलकुल याद नही है। यदि उसने आशीर्वाद लिया भी होगा तो किन परिस्थितियोमे लिया था, यह मैं कैसे कह सकता हूँ। तुम्हे ऐसे कामोमे मेरा समय नष्ट नही करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

महात्मा गाधी और जबलपुर, पृ० ४७ पर प्रकाशित गुजराती पत्रकी अनुकृतिसे

५७० पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

६ सितम्बर, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

इस हालतमे एक वषतक नायर रह सके तो अच्छी बात है। आश्रम न चल सके तो उसे कलकत्तेसे बुला लो।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३५)से।

१ गोवामलने पूछा था कि क्या गाधीजी ने केरल की एक लड़की, पद्मावतीके अन्तर्जातीय विवाह पर आशीर्वाद देकर उस विवाहका समर्थन किया था। यह पत्र उसीके उत्तरमें लिखा गया था।

५७१. चर्चा: स्वामी योगानन्दके साथ[1]

[७ सितम्बर, १९३५ के पूव][2]

गाधीजी दुनियामे पाप क्यो है, इस प्रश्नका उत्तर देना कठिन है। मै तो वही जवाब दे सकता हूँ जिसे मै एक ग्रामीणका जवाब कहूँगा। जगत्मे प्रकाश है तो अन्धकार भी है। इसी तरह जहाँ पुण्य है, वहाँ पाप होगा ही। किन्तु पाप और पुण्य तो हम मत्य मानवोके लिए ही है। ईश्वरके आगे तो पाप और पुण्य-जैसी कोई चीज ही नही है। ईश्वर तो पाप ओर पुण्य दोनोसे ही परे हे। हम अज्ञानी ग्रामवासी उसकी गहन लीलाका वर्णन मनुष्यकी वाणीमे भले करे, पर हमारी भाषा ईश्वरकी भाषा नही है।

वेदान्त कहता है कि यह जगत् मायारूप है। यह भी अपूर्ण मानवकी तोतली वाणीमे ही किया गया निरूपण है। इसीलिए मै कहता हूँ कि मै इन बातोमे पडता ही नही। यदि मुझे ईश्वरके निगूढतम रहस्योमे एक बार झाँकनेका भी अवसर मिले तो भी मै उन्हे झाककर देखने की कोशिश न करूँ। कारण, मुझे तो पता ही नही होगा कि वह सब जानकर मैं क्या करूँगा। हमारे आध्यात्मिक विकासके लिए इतना ही जानना काफी है कि मनुष्य जो-कुछ अच्छा काम करता हे, उसमे ईश्वर निरन्तर उसके साथ रहता है। यह भी ग्रामवासीका ही निरूपण है।

योगानन्द यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है और निस्सन्देह वह ऐसा ही है, तो वह हमें पापसे मुक्त क्यो नही कर देता?

मै इस प्रश्नकी भी उधेडबुनमें नही पडना चाहता। ईश्वर और हम बराबरीके नही है। बराबरीवाले ही एक-दूसरेसे ऐसे प्रश्न पूछ सकते है, छोटे-बडे नही। गाॅव-वाले यह नही पूछते कि शहरवाले अमुक काम, जिसे यदि वे स्वय करे तो निश्चय ही सर्वनाश हो जाये, क्यो करते है।

आपके कहने का आशय मै अच्छी तरह समझता हूँ। आपने यह बडी जोरदार दलील दी है। पर ईश्वरको किसने बनाया?

ईश्वर यदि सर्वशक्तिमान् है तो अपना सिरजनहार उसे स्वय ही होना चाहिए।

ईश्वर निरकुश सत्ताधारी है या लोकतान्त्रिक भावनासे सबका खयाल करके चलनेवाला सत्ताधारी है?

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। इस "वीकली लेटर" के अनुसार "स्वामी योगानन्द अभी अमेरिकाकी यात्रा करके लौटे ही थे।" राँची जाते हुए वे गाधीजी से मुलाकात करने के लिए वर्धा उतरे थे।

२ **गाधी—१९१५-१९४८ ए डिटेल्ड क्रॉनोलॉजी** के अनुसार यह चर्चा २६,२७ अगस्तको हुई थी।

मै इन बातोके बारेमे बिलकुल नही सोचता। मुझे ईश्वरकी सत्तामे तो हिस्सा बँटाना नही हे, इसलिए ये प्रश्न मेरे लिए विचारणीय नही है। मै तो, मेरे आगे जो कत्तव्य हे, उसे करके ही सन्तोष मानता हूँ। जो-कुछ है या हो रहा है, वह क्यो और कैसे, इन सब प्रश्नोकी चिन्तामे मै क्यो पडूँ?

पर ईश्वरने हमे बुद्धि तो दी है न?

बुद्धि तो जरूर दी है, पर वह बुद्धि हमे यह समझने मे सहायता देती है कि जिन बातोका हम ओर-छोर नही निकाल सकते उनमे हमे माथापच्ची नही करनी चाहिए। मेरा तो यह दृढ विश्वास है कि सच्चे ग्रामवासीमे अद्भुत व्यावहारिक बुद्धि होती है, और इसीलिए वह कभी इन पहेलियोकी उलझनमे नही पडता।

अब मै एक दूसरा ही प्रश्न पूछता हूँ। क्या आप यह मानते है कि पुण्यात्मा होनेकी अपेक्षा पापी होना आसान है, अर्थात् ऊपर चढ़ने से नीचे गिरना आसान है?

ऊपरसे तो ऐसा मालूम होता है। पर असल बात यह है कि पापी होनेकी अपेक्षा पुण्यात्मा होना सहज हे। कवियोने निश्चय ही यह कहा तो है कि नरकका मार्ग आसान है, पर मै ऐसा नही मानता। मै यह भी नही मानता कि ससारमे अच्छे आदमियोकी अपेक्षा पापी लोग अधिक है। अगर ऐसा है तो ईश्वर स्वय पापकी मूर्ति बन जायेगा। पर वह तो अहिसा ओर प्रेमका साकार रूप है।

क्या मै आपकी अहिंसाकी परिभाषा जान सकता हूँ?

ससारमे किसी भी प्राणीको मन, वचन और कर्मसे हानि न पहुँचाना अहिसा है।

अब मै दूसरे विषयपर आता हूँ। क्या आप सन्तति-निग्रहके मुकाबले सयमको अधिक पसन्द करते है?

मेरा यह विश्वास है कि किसी कृत्रिम रीतिसे या पश्चिममे सुझाई मोजूदा रीतियोसे सन्तति-निग्रह करना आत्मघात है। मैने यहा जो 'आत्मघात' शब्दका प्रयोग किया है उसका अर्थ यह नही हे कि प्रजाका समूल नाश हो जायेगा। आत्मघात शब्दका प्रयोग मै यहा ऊँचे अर्थमे कर रहा हूँ। मेरा आशय यह है कि सन्तति-निग्रहकी ये रीतियाँ मनुष्यको पशुसे भी बदतर बना देती है, यह अनीतिका मार्ग है।

पर हम यह कहाँतक बर्दाश्त करे कि मनुष्य अविवेकके साथ सन्तान पैदा करता ही चला जाये? मै एक ऐसे आदमीको जानता हूँ जो नित्य एक सेर दूध लेता था और उसमें पानी मिला देता था, ताकि उसे अपने तमाम बच्चोको बाँट सके। बच्चोकी सख्या हर साल बढती ही जाती थी। क्या इसमें आप पाप नही मानते?

इतने बच्चे पैदा करना कि उनका पालन-पोषण न हो सके पाप तो है ही, पर मै यह मानता हूँ कि अपने कमके फलसे छुटकारा पानेकी कोशिश करना तो उससे भी बडा पाप है। इससे तो मनुष्यकी मनुष्यताका नाश होता है।

तब लोगोको यह सत्य बतलाने का सबसे अधिक व्यावहारिक माग क्या है?

सबसे अधिक व्यावहारिक माग यह है कि हम सयमका जीवन बिताये। उपदेश से आचरण ऊँचा है।

मगर पश्चिमके लोग हमसे पूछते है, "तुम लोग अपनेको पश्चिमके लोगोसे अधिक आध्यात्मिक मानते हो, फिर भी हम लोगोके मुकाबले तुम्हारे यहाँ बालकोकी मृत्यु अधिक सख्यामें क्यो होती है?" महात्माजी, क्या आप ऐसा मानते है कि लोग अधिक सख्यामें सन्तान पैदा करे?

मै तो यह माननेवाला हूँ कि सतान बिलकुल ही पैदा न की जाये।

तब तो सारी ही प्रजाका नाश हो जायेगा।

नाश नही होगा, प्रजाका और भी सुदर रूपातरण हो जायेगा। पर यह कभी होनेका नही, क्योकि हमे अपने पूवजोसे यह विषयवृत्तिका उत्तराधिकार युगानुयुगसे मिला हुआ है। युगोकी इस पुरानी आदतको काबूमे लानेके लिए बहुत बडे प्रयत्नकी जरूरत है, तो भी वह प्रयत्न बहुत सरल है। पूण त्याग, पूण ब्रह्मचर्य ही आदश स्थिति है। जिससे यह न हो सके, वह खुशीसे विवाह कर ले, पर विवाहित जीवनमे भी वह सयमसे रहे।

जनसाधारणको सयममय जीवनकी बात सिखाने की क्या आपके पास कोई व्यावहारिक रीति है?

जैसाकि एक क्षण पहले मै कह चुका हू, वह रीति यह है कि हम पूण सयमकी साधना करे और जनसाधारणके बीच जाकर सयममय जीवन बिताये। अगर कोई भोग-विलास छोडकर सयममय जीवन बिताये तो उसके आचरणका प्रभाव जनतापर अवश्य पडेगा। ब्रह्मचय और अस्वाद-व्रतके बीच अविच्छिन्न सम्बन्ध है। जो मनुष्य ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहता है, वह अपने प्रत्येक कायमे सयमसे काम लेगा, और सदा नम्र बनकर रहेगा।

मै समझ गया। जनसाधारणको सयमके आनन्दका पता नही, और हमें यह चीज उसे सिखानी है। पर मैने पश्चिमके लोगोकी जिस दलीलके बारेमें आपसे कहा है, उसके सम्बन्धमें आपका क्या मत है?

मै यह नही मानता कि हम लोगोमे पश्चिमके लोगोकी अपेक्षा अधिक आध्यात्मिकता है। अगर ऐसा होता तो आज हमारा इतना अध पतन न हो गया होता। किन्तु इस बातसे कि पश्चिमके लोगोकी उम्र औसतन हम लोगोकी उम्रसे ज्यादा लम्बी होती है, यह साबित नही होता कि पश्चिममे आध्यात्मिकता है। जिसमे अध्यात्मवृत्ति होती है उसकी आयु अधिक लम्बी होनी चाहिए, यह बात नही है, बल्कि उसका जीवन अधिक अच्छा, अधिक शुद्ध होना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ७-९-१९३५

५७२. हरिजन सेवक सघके प्रस्ताव

हरिजन सेवक सघके बोर्डकी कार्यकारिणीकी ३० अगस्तसे २ सितम्बरतक होनेवाली बैठकमे कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गये। उनमे से एक निम्न प्रकार है

विशेष रूपसे आमन्त्रित श्रीयुत हृदयनाथ कुँजरूकी उपस्थितिमें समितिकी इस बैठकमें सघके वित्त और प्रबन्धके विकेन्द्रीकरणके प्रश्नपर चर्चा की गई, सयुक्त प्रान्त (पूर्वी)की स्थिति तथा अन्य प्रान्तोसे आई सम्मतियोपर विचार किया गया। चर्चाके अन्तमें पण्डित कुँजरूने अपने प्रान्तीय बोर्ड तथा जिला समितियोकी सलाहसे प्रयोगके तौरपर सयुक्त प्रान्त (पूर्वी)के लिए एक अलग योजना तैयार करके कार्यकारिणी समितिकी आगामी बैठकके विचारार्थ प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया।

बैठकमे पास किया गया दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव निम्नलिखित था

हम निश्चय करते है कि १९३५ सितम्बरकी [२४][1] तारीखको, अर्थात् जिस तारीखको पूना-समझौते पर हस्ताक्षर हुए थे उस दिन, प्रधान कार्यालय, दिल्ली द्वारा तदथ जारी किये गये निर्देशोके अनुसार 'हरिजन दिवस' मनाया जाये।

यह आशा करना स्वाभाविक ही है कि उस दिन भारत-भरके हरिजन-सेवक हरिजनोके साथ निकटतर सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न करेगे और सभी लोग इस कार्यके प्रति अधिक समर्पणकी भावना अपनायेंगे।

तीसरा महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव इस प्रकार था

यह तय किया जाता है कि चरखा, ग्रामोद्योग तथा हरिजन सेवक सघोकी प्रवृत्तियोमें सामजस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया जाये और इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए सुझाव यह है कि चरखा सघ तथा ग्रामोद्योग सघसे विधिवत् स्वीकृति लेकर इन तीनो भगिनी सस्थाओके मन्त्रियोकी एक सयुक्त समिति बनाई जाये।

ये तीनो प्रवृत्तियाँ रचनात्मक है और तीनोके क्षेत्र कई बातोमे एक-दूसरेसे मिलते है। इसलिए यदि इनसे सम्बन्धित कार्यकर्त्ताओके बीच जहाँ भी सम्भव हो वहाँ यदि अधिक सामजस्य और तालमेल हो तो बहुत-सा पैसा, समय और शक्ति बचाई जा सकती है और तीनो सस्थाओके कार्यमे तीव्रता लाई जा सकती है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ७-९-१९३५

१ साधन सूत्रमें "२५" ही है, जिसे बादमें गांधीजी ने सुधार दिया था, देखिए "टिप्पणियाँ", १४-९ १९३५ और २१ ९-१९३५।

५७३. खानगी खादी-उत्पादक सावधान

कतैयो और खादी-उत्पादनमे लगे अन्य लोगोको पर्याप्त मजदूरी देनेंकी जो नीति निर्धारित की जा रही है, उसके साथ ही जिन लोगोको निजी तौरपर खादी तैयार करने के प्रमाणपत्र दिये गये हैं उनका प्रश्न भी उठता है, जिसपर गम्भीरतासे विचार करना आवश्यक है। ये लोग काफी मात्रामे खादी तैयार करते है। खादी से मजदूरी कमानेवालो के प्रति सघका जितना दायित्व है, इनके प्रति उससे कुछ कम नही है। उनके साथ जो अनुबन्ध हुए है उन्हे तो पूरा करना ही चाहिए। किन्तु इतना कर लेनेके बाद सघका कर्त्तव्य पूरा हो जाता है। चरखा सघका पूरा तन्त्र कतैयोके हकमे काम करनेवाले एक न्यासकी तरह चलाया जाता है या चलाया जाना चाहिए, और इन कतैयोकी अवस्थामे उत्तरोत्तर सुधार करना आवश्यक है। खानगी उत्पादकोको प्रमाणपत्र मुख्यत कतैयोके लाभके लिए ही दिये गये हैं। उत्पादकोको जो भी मुनाफा 'कमाना है, कतैयोकी सेवा करके ही कमाना चाहिए, लेकिन आज तो जो स्थिति हमारे देखने मे आती है वह यही है कि वे उनका पेट काटकर मुनाफा कमाते है।

किन्तु ये उत्पादक यदि सघके प्रत्यक्ष एजेटोकी पक्तिमे आ जानेको तैयार हो तो उनके नाम जारी किये गये प्रमाणपत्रोको वापस लेनेकी जरूरत नही है। लेकिन उनकी पक्तिमे आनेके लिए उन्हे अपनी काय-पद्धतिमे आमूल परिवतन करना होगा। उन्हे अपने मुनाफेमे कमी करके भी सन्तुष्ट रहना पडेगा, बल्कि हो सकता है, उन्हे नुकसान उठाना पडे। सघकी जरूरतोके मुताबिक उन्हे कतैयो तथा जिन अन्य लोगोको वे काम देते हो, उनके रजिस्टर रखने हैं। उन्हे मजदूरी अदा करने के प्रमाण देने हैं और उससे सम्बन्धित ऑकडे इकट्ठे करके सघके समक्ष प्रस्तुत करने है। यह काम शायद उनको बहुत भारी लगे। खादीकी कीमतमे होनेवाली सम्भावित वृद्धिसे उनको जो जोखिम है वह शायद इतनी बडी हो कि वे उसे उठा न सके। ये उत्पादक जो मुनाफा कमाते है उसके लिए इन्हे निस्सन्देह बहुत कठिन परिश्रम करना पडता है और इस परसे सघकी उनसे जो अपेक्षाएँ होगी, वे शायद उन्हे बहुत भारी लगें। जिन्हे ऐसा लगता हो उन्हे तो अभीसे अपना-अपना कारोबार समेटना शुरू कर देना चाहिए। जो लोग अपना-अपना खादी-कार्य चालू रखना चाहते हो उन्हे सघके एजेंटोसे सम्पक स्थापित करना चाहिए। हाँ, उन्हे इतना जान लेना चाहिए कि शर्तोंका पालन करने मे तनिक भी चूक होनेसे प्रमाणपत्र रद किये जा सकते है। उन्हे नुकसान हो या न हो, सघके साथ हुए उनके अनुबन्धके कायम रहने की यह अनिवार्य शर्त है कि वे पूरी ईमानदारीसे काम ले। इसलिए इस काममे केवल उन्ही को बने रहना चाहिए जो खादी-प्रेमी हो और दरिद्रनारायणके

भक्त हो। ऐसे लोग तो दरिद्रनारायणके हितका खयाल करके अपने नुकसानकी भी परवाह न करेगे। जो लोग खुद खादीका उपयोग न करते हो और अपने-अपने घरमे उसका इस्तेमाल न करते हो उन्हे ऐसी आशा नही रखनी चाहिए कि उनके अनुबन्ध कायम रहेगे।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ७-९-१९३५

५७४ कोढ और उसकी रोकथाम

सावली भी गरीब कतैयो और बुनकरोके बीच रहनेवाले खादी-सेवकोका एक केन्द्र है। सावलीमे कोढ का दौरदौरा है और इसमे आश्चर्यकी कोई बात नही, क्योकि इन मेहनतकशोको सिफ दो रोटियॉ जुटाने के लिए भी कडी मशक्कत करनी पडती हे, कतैयोको पूरे घटे-भरकी मेहनतके लिए अधिकसे-अधिक दो पाइया मिलती है। महीने-भरके भोजनपर उनका औसत खच एक रुपया आता हे।

इन सेवकोने पूछा हे कि वे उन कोढियोका क्या करे। वे तो बिना किसी रुकावटके सबसे मिलते-जुलते है। उनमे से अनेक अपनी रोजीके लिए या अपने सगे-सम्बन्धियोका हाथ बॅटानेके लिए काम करते है। उनकी बनाई हुई वस्तुओका क्या किया जाये? अपने इन अभागे देशवासियोकी सेवा वे किस तरहसे करे?

इडियन कौसिल ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर लेप्रॉसी रिलीफ एसोसिएशन (ब्रिटिश साम्राज्य कुष्ठरोगी सहायता सघकी भारतीय परिषद्)ने 'लेप्रॉसी डायग्नोसिस, ट्रीटमेट एण्ड प्रिवेन्शन' शीर्षक एक पुस्तिका प्रकाशित की है, जिसका पाचवॉ सस्करण निकल चुका है। लेखक है — डॉ० म्यूर, एम० डी०। रोकथामसे सम्बन्धित उसके अध्यायसे पर्याप्त उद्धरण दे रहा हूँ [1]

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ७-९-१९३५

१ यहाँ नहीं दिया जा रहा है।

५७५ पत्र लालचन्द जे० वोराको

वर्धा
८ सितम्बर, १९३५

भाई लालचन्द,

तुम तो ठीक प्रवृत्तिया चलाते जान पडते हो। सबका सहयोग साधकर ओर सेवावृत्तिसे ऐसी प्रवृत्तिया चलाई जाये तो जरूर लाभदायक साबित होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४९७) से। सी० डब्ल्यू० ९१२७ से भी, सोजन्य लालचन्द जे० वोरा

५७६ पत्र अमृतकौरको

वर्धा
९ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

अभी दाहिने हाथसे ही कुछ पक्तिया तुमको लिख दू। वैसे मै महसूस करता हूँ कि यदि मै अभी कुछ वर्षोतक मौनके दिनके लिए अपने दाहिने हाथको लिखने लायक बनाये रखना चाहता हूँ तो मुझे मौन-दिवसके अतिरिक्त सप्ताहके अन्य सभी दिन अपने दाहिने हाथको आराम देना ही चाहिए। ऐसा केवल सावधानीके तौर पर कर रहा हूँ।

तुम्हारे सेब मै खा रहा हूँ। लेकिन तुम जब भी सेब भेजो उनके साथ हर बार कुछ अनुल्लघनीय आदेश मत जारी किया करो। मै तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे लिए जब भी आवश्यक होगा मै फल खानेसे परहेज नही करूँगा।

महादेव इलाहाबाद गया था जवाहरसे मिलने, पर वह बादमे पहुँचा और वहासे सरदारके बुलावेपर उनके पास चला गया है। इसलिए सचिव का काम खुर्शीद[1] कर रही है। वह पूरा समय दे रही है और आज उसी तरह खट रही है जैसे उस सोमवारको तुमको खटना पडा था।

अमतुस्सलामने बीमारीके बाद अभी-अभी खटिया छोडी है और पाया कि उसकी जगह मीराने ले ली है।[2] और आज बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है। पर मुझे आशा है कि उसकी बीमारी गम्भीर नही होगी।

१ दादाभाई नौरोजी की पौत्री।

२ मीराबहन मलेरियासे पीड़ित थी।

बा ओर देवदास आज तुम्हारे पास पहुँच गये होगे। आशा करता हूँ कि उनके कारण तुमको कोई बहुत परेशानी नही होगी। शम्मी मुझे कुमारप्पा और देवदास दोनोके बारेमे अपनी चिकित्सीय टिप्पणी भेजेगा।

पता नही, तुम्हारी चावलकी बोरी कितने दिन चलेगी। अगली बार तुम अपने आसपास की जगहसे धान मॅगा लेना और छिलका उतारने की एक चक्की रखवा लेना। वही तरीका सबसे सस्ता ओर हमारी ग्राम-भावनाके अनुरूप रहेगा।

निरन्तर फैलते-फूलते परिवारको स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४७) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३५६से भी

५७७ पत्र : ना० र० मलकानीको

९ सितम्बर, १९३५

प्रिय मलकानी,

तुम्हारा कागजोका पुलिन्दा मिल गया। तुम देखोगे कि 'हरिजन'[1] मे तुम्हारी सभी इच्छाएँ पूरी कर दी गई है। मैने हरिजी को भी लिख दिया है।[2] मैने पिछले सप्ताह 'गुलिस्ता'[3] को लिख दिया है कि मुझे माफ करे। मै जैसे बिलकुल रीत गया हूँ। तुम जानते ही हो कि मेरे हाथमे कितना काम है। इसलिए तुम्ही मेरी ओरसे सभी 'याचको'को समझा दो कि मुझे माफ करे।

सस्नेह,

बापू

प्रोफेसर मलकानी
हरिजन सेवक सघ, बिडला मिल्स
दिल्ली

अग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ९२४) से।

१ देखिए "टिप्पणियाँ", १४-९-१९३५।

२ देखिए "पत्र : वियोगी हरिको", ७-९-१९३५।

३ बच्चोंकी एक पत्रिका। अखिल भारतीय बालकनजी बारीके अध्यक्ष शावकराज भोजराज दादाने सन्देश भेजने का अनुरोध किया था।

५७८ पत्र · कान्ति एन० पारेखको

९ सितम्बर, १९३५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। व्यापार अवश्य कर। लेकिन भले ही उसमे करोडोका लाभ क्यो न हो, विदेशी वस्तुओके व्यापारसे बचना ताकि देशको नुकसान न हो।

शान्ताके बारेमे मुझे पता नही था। मुझे उसके व्यवहारसे आश्चय नही होता। तू पहले चार पैसे कमा ले फिर विवाह करना। यदि उस समय वह मुक्त हो और तुम दोनो चाहो तो उससे विवाह कर सकता है। अन्यथा कोई दूसरा जोडीदार खोज लेना।

मै यह नही चाहता कि मेरे सभी विचार तुम सबको पसन्द आने ही चाहिए। तुम स्वतन्त्रतापूवक विचार करके तदनुसार आचरण करो, यही तो सत्याग्रह है। कौडी-कौडी ईमानदारीसे कमाना। नत्थूभाई इसके सिवा और कुछ कदापि नही चाहेगे। मुझे जब-तब लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मैने तेरा पत्र फाड दिया है। उक्त पत्र और किसीने नही पढा था।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२७०) से।

५७९ पत्र : वसुमती पण्डितको

९ सितम्बर, १९३५

चि० वसुमती,

मैने तेरे दोनो पत्र पढे। तेरा कायक्रम ठीक जान पडता है। जब चाहे तब आनेकी छूट तो तुझे मिली ही हुई है तो फिर मेरे पत्रकी राह क्यम देखना? कही बेटी पितासे घर आनेकी अनुमति माँगती होगी? गगाबहनसे कहना कि मुझे समय न मिल पानेके कारण मै उसे लम्बा पत्र लिखने की अपनी इच्छाको रोक रहा

हूँ। जमनी जानेके पहले प्रताप और उसकी पत्नी तारामती मुझसे मिल गये। काफी बाते हुई। फुरसत मिलनेपर उसके बारेमे लिखूगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०६) से। सी० डब्ल्यू० ६५२ से भी, सोजन्य वसुमती पण्डित

५८० पत्र वल्लभभाई पटेलको

९ सितम्बर, १९३५

भाई वल्लभभाई,

साथके पत्रपर नजर डाल लेना। मैंने जवाब नही दिया। शायद तुम इन्हे पहचान लो। यदि कुछ किया जा सकता हो तो करना। तुम्हारा बोझ कुछ-न-कुछ तो हलका हुआ होगा।

सरकार द्वारा पूना-समझौतेको परोक्ष रूपसे भग करने की अफवाहे मेरे कानोमे आ रही है। देखे क्या होता है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८५

५८१ पत्र पी० कोदण्डरावको

वर्धा
१० सितम्बर, १९३५

प्रिय कोदण्डराव,

यह कहना गलत है कि मैंने सविनय अवज्ञाका अपना विचार थोरोकी रचनाओसे लिया है। थोरोका सविनय अवज्ञा-सम्बन्धी लेख[1] मुझे जब मिला तबतक दक्षिण आफ्रिकामे सत्ताके प्रतिरोधका आन्दोलन काफी आगे बढ चुका था। परन्तु उन दिनो उसे निष्क्रिय प्रतिरोध आन्दोलन कहा जाता था। चूँकि वह शब्द अपूण लगता था, इसीलिए मैंने गुजराती पाठकोके लिए 'सत्याग्रह' शब्द गढा था। फिर जब मैंने थोरोके अत्यन्त सारगर्भित निबन्धका शीर्षक देखा तो अग्रेज पाठकोको अपने सघर्षकी बात समझाने के लिए मैंने उसी शब्द-पदका प्रयोग आरम्भ कर दिया। परन्तु मैंने

१ देखिए खण्ड ७, पृ० २१४-१५ तथा खण्ड ४१, पृ० ६०१-२ भी।

पाया कि सविनय अवज्ञा शब्द भी सघर्षके अर्थको सम्पूर्णताके साथ व्यक्त नही कर पाता। इसीलिए मैंने दूसरा शब्द अपनाया — सविनय प्रतिरोध। अहिंसाका सिद्धान्त तो सदासे हमारे सघषका एक अविभाज्य अग रहा है।

आपकी सलाहके मुताबिक श्री पियसनको एक प्रति भेजी जा रही है। मेरा ख़याल है, आपने बहुत ठीक किया है। महादेव फिलहाल बम्बईमे है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

श्रीयुत कोदण्डराव[1]

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२८०) से। **गांधी ऐंड द अमेरिकन सीन,** पृ० १८-१९ से भी

५८२ पत्र · अमृतकौरको

१० सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

कुमारप्पा के ज्वरको लेकर मुझे कोई परेशानी नही। शम्मीकी देखरेखमे वह एकदम निरापद है।

राजेन्द्रबाबू को मैंने तुम्हारा नाम सुझाया हो, ऐसा मुझे याद नही पडता। यदि तुम सचमुच समझती हो कि तुमसे काम नही सँभलेगा तो निस्सकोच मना कर दो। यदि पुस्तिका काग्रेसके दृष्टिकोणसे लिखी जानी हो, तो यह काम तुमको हाथमे नही लेना चाहिए। हाँ, यदि महिलाओके दृष्टिकोणसे अपेक्षित हो, तो मुझे ऐसा कोई व्यक्ति याद नही पडता जो इसे तुमसे ज्यादा अच्छी तरह कर सके। लेकिन तुम कुछ और नये दायित्व अपने ऊपर लो, यह सोचकर खुद मुझे डर-सा लगता है। इसलिए इस दूसरे दृष्टिकोणसे पुस्तक लिखने का दायित्व तुम अपने ऊपर ले लो, यह चाहते हुए भी कहूँगा कि इसका निणय तो तुम स्वय ही कर सकती हो कि उतना समय तुम निकाल पाओगी या नही। जरूरी नही कि वह बाकायदा एक पुस्तक ही हो। सुगठित शैलीमे लिखी अठपेजी आकारकी २५ पृष्ठोकी एक छोटी-सी पुस्तिका काफी ठीक रहेगी। हा, यदि तुमको लगे तो अधिक भी लिख सकती हो।

कागज तुमको यथाशीघ्र मिल जायेगा। अबतक नमूने नही मिले।

क्या मैंने तुमको कल लिखा था कि मीरान खाट पकड ली है? उसे अभी-अभी वही भेजा गया है जहाँ कुमारप्पाको रखा गया था। कुमारप्पासे कहना कि

१ भारत सेवक समाजके। वे उस समय अमेरिकामें थे, देखिए खण्ड ६०, पृ० १४४।

अमतुस्सलामको अब उसका काम मिल गया है, और वह पूरी तरह सक्रिय है। वह तो भूल भी गई है कि अभी कल ही वह बीमार थी।

बा से कहना कि लक्ष्मीको बँगलेमे ठहराना है।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च]

देवदासके बारेमे तार अभी-अभी मिला है। ईश्वरको धन्यवाद।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४८) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३५७ से भी

५८३. पत्र : गिरिधारीलाल बत्राको

१० सितम्बर, १९३५

प्रिय डॉ० बत्रा,

पुस्तकोकी पेटियाँ सही-सलामत पहुँचा दी गई है। अभीतक उन्हे खोला नही गया है और कुछ समय और खोला भी नही जायेगा। चित्र भी सुरक्षित पहुँच गये है।

मैंने आपको जल्दीमे लिख दिया कि उन्हे पुस्तकालयकी दीवारोपर टाँगा जायेगा, लेकिन मुझे शीघ्र ही यह दिख गया कि आपका प्रस्ताव मानकर मैंने गलती की। मैंने मित्रोको बराबर इस बातसे हतोत्साह किया है कि वे भेटोके साथ याद-दाश्तकी ऐसी चीजोको जोडने की इच्छा मनमे न रखे। इससे भी बडी बात यह है कि पुस्तकालयके नियमनका काम मै नही, बल्कि न्यासी लोग करेगे और मै तो न्यासियोमे से भी नही हूँ।

इसलिए जल्दबाजीमे दिये मेरे उत्तरके लिए क्षमा करेगे और मुझे उसमे परिवतन करने दे। अगर मै चित्रोका कोई अन्य अच्छा उपयोग करूँ तो क्या उससे आपको सन्तोष होगा? मैंने न्यासियोके साथ आपके प्रस्तावपर चर्चा नही की है, हालाँकि श्रीयुत कुमारप्पाके सामने उल्लेख किया था और उन्होने मेरे विचारसे सहमति प्रकट की।

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

५८४ पत्र : प्रेमाबहन कटकको

१० सितम्बर, १९३५

चि० प्रेमा,

राखी समयपर मिल गई थी। जुन्नरके कागज मिले। अच्छे थे। पूरी गड्डी मुझसे, जिसे उसकी अधिक आवश्यकता थी, उस खुर्शीदबहनको[1] दे दी। खादी मिल गई। उसका उपयोग करूँगा। सूत इकट्ठा तो हो रहा है। इसपर बहुतोंकी नजर पड़ती रहती है। और मेरी कताई भी कितनी? जिस दिन १६० तार हो जाये वह मेरे लिए आनन्दका दिन होता है।

आजतक तो मैं यही समझता रहा हूँ कि देशी कलमें बहुत आती हैं। जिससे मैं लिख रहा हूँ वह देशी मानी जाती है। मैं पूछताछ करूँगा।

समाजवादियोंमें बहुत-से लोग भले हैं, कुछ त्यागी हैं, कुछ तीव्र बुद्धिवाले हैं, कुछ ठग हैं। लगभग सभी पश्चिमके रंगमें रँगे हुए हैं। किसीको भारतके गाँवोंका सच्चा परिचय नहीं, शायद उसकी किसीको परवाह भी नहीं है।

गनीमत है, तेरी रसोई पसन्द आई।

लक्ष्मीबाई ठुसे[2]का नाम तो याद नहीं।

काका तुझे भले न्योता दें। लेकिन तेरा कर्त्तव्य तो वही रहने का है।[3] मैंने अपने विचार नहीं बदले हैं। तुझे लालच दिया गया, इससे देव अस्वस्थ हो गये हैं। उन्हें मेरी ओरसे आश्वस्त कर देना। तेरी ओरसे तो वे आश्वस्त हैं ही।

हिटलरके बारेमें तू जैसा कहती है लगभग वही मुझे भी लगा है।

यदि मेरी विचारधाराके बारेमें एक बात याद रखी जाये तो सब-कुछ समझमें आ जायेगा। मेरी तटस्थता परिणामके कालके बारेमें है, कार्यके बारेमें कभी नहीं। परिणामके बारेमें भी नहीं। धनिक धनको छोड़े या न छोड़े, यह कहने में परिणामके विषयमें लापरवाही नहीं है, उसके विषयमें निश्चिन्तता है। हमारा कदम ठीक होगा तो आगे-पीछे एक ही परिणाम निकलेगा। और अवश्य निकलेगा।

बन्दरसे मनुष्यके पैदा होनेकी बात मेरे गले नहीं उतरती। वैसे, इसमें

१ दादाभाई नौरोजीकी पौत्री।

२ पूना की पुरानी कांग्रेस कार्यकर्त्री।

३ **बापुना पत्रो–५ कु० प्रेमाबहेन कंटकने** में प्रेमाबहन लिखती है कि काका कालेलकर ने सासवड़ में चल रहे ग्रामसेवा-कार्यको जिम्मेदारी शंकरराव देव को सौंपकर मुझसे वर्धाके महिलाश्रमके संचालनका भार सँभाल लेनेको कहा था।

सन्देह नही कि मनुष्यकी देह धारण करनेवाले जीवने वानरादिकी देह जरूर धारण की है।

आततायीको मारने की बात मुझे पसन्द नही आई। आततायी किसे माना जाये? फिलहाल तो मैं यह मानता हूँ कि हत्यारो वगैराको जेलमे डालना पडेगा। परन्तु यह अहिंसा है, ऐसा कभी कहने का मुझे स्मरण नही है, मेरी यह मान्यता तो है ही नही। मैंने यह कहा है कि आजकी परिस्थितिमे यह अनिवार्य हो सकता है। इसका अर्थ इतना ही है कि मेरी अहिंसा अभी बहुत अपूर्ण है और इसलिए ऐसी हिंसाका उपाय मुझे मिला नही है। पतनको पतनके रूपमे देखने मे ही सत्य है।

अहिंसाके बिना प्राप्त की हुई सत्तामे दरिद्रनारायणका स्वराज्य हो ही नही सकता। स्वराज्य-प्राप्तिमे जिस हदतक अहिंसा होगी, उसी हदतक दरिद्रोकी दरिद्रता मिटेगी। पूर्ण अहिंसा तो न मुझमे है, न तुममे या और किसीमे। परन्तु अहिंसाको माननेवाले दिन-दिन अधिक अहिंसक बनेंगे और इससे उनका सेवाक्षेत्र बढता जायेगा। हिंसाके पुजारीका क्षेत्र संकुचित होता जायेगा और अन्तमे अपनेतक ही सीमित रह जायेगा।

केलकरको निमन्त्रित करके अच्छा किया।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

बा देवदासको लेकर शिमला गई है। देवदास काफी बीमार था। आजकल यहाँ रोगियोकी काफी खाटे है। मीरा बीमार है। अमतुस्सलामको भी बीमार ही कहा जायेगा। नीमू और उसके बच्चे मेरे साथ ही है। लक्ष्मी दिल्लीसे आज आ रही है। वह मद्रास जा रही है। प्रभा यही है।

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० १०३७८) से। सी० डब्ल्यू० ६८१६ मे भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

५८५ पत्र . रामेश्वरदास बिडलाको

१० सितम्बर, १९३५

भाई रामेश्वरदास,

तुमारा खत और चेक मिल गये है। अक्टोबरके बाद मै अब तो आशा नही रखूगा। भीड पडेगी तो हाथ लबाउगा। सरदारको और राजेन्द्र बाबूको देते रहोगे यह यथार्थ है।

[1]का खत मुझे नही मिला है। [2]के पास गई सो अच्छा है। यदि कोई उसको बचा सके तो वह [व][3] ही है। और सच्ची शक्ति लेकर आई होगी तो अवश्य कुछ-न-कुछ असर डाल सकेगी। तब तो विलायत जाना सफल हुआ मानेंगे।

घनश्यामदासको अलग खत नही लिखता हु। उनसे कहो यहा होकर ही कही जाना है जाय। मेरा रहना यही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७९७३) से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

५८६ तार अकलेसरियाको[4]

[१२ सितम्बर, १९३५ या उसके पूर्व][5]

दुख हुआ। कृपया उनसे कहिए उपवास बन्द करे और चगे होकर वहाँ लोगोमे विनम्रताके साथ अपना सन्देश प्रचारित करे। दूसरेके हितोके लिए उपवास करने से पहले उनको अपनेको उसके योग्य बना लेना चाहिए। मै उनसे पहले ही कह चुका हूँ कि उपवास करने का अभी बिलकुल भी समय नही आया है।

[अंग्रेजीसे]

अमृत बाजार पत्रिका, १३-९-१९३५

१, २ और ३ नाम छोड दिये गये है।

४ अकलेसरियाके उस तारके उत्तरमें, जिसमें उन्होंने रामचन्द्र शर्माके "आमरण अनशन" के बारेमें गाधीजी की सलाह माँगी थी।

५ "वर्धागज, १२ सितम्बर", १९३५ की तिथि पंक्तिके अन्तर्गत प्रकाशित।

५८७ पत्र जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
१२ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

कितना अच्छा रहा कि तुम कमलाके पास पहुँच गये। उसके लिए यही महौषध है। मैं इसके साथ ही उसके लिए एक छोटा-सा पत्र रख रहा हूँ। तुम्हारे भेजे हुए सदेसे यहा ठीक-ठीक मिल रहे है। और सरूप भी जो समाचार पाती है यहा भेज देती है। हमें आशा करनी चाहिए कि अन्त भला ही होगा। डॉ० अटलको उनके सन्देशो तथा पत्रोके लिए धन्यवाद दे देना। उनसे बडी मदद मिली है। मुझे उम्मीद है कि जबतक यह कठिन समय रहेगा, तुम नियमित रूपसे पत्र लिखते रहोगे। टाइपशुदा सामग्री[1] मेरे पास है। समय मिलते ही मैं उसे पढ जाऊँगा।

महादेवको एक जाचमे वल्लभभाईका हाथ बँटाने बम्बई जाना पडा। वह अभी वही है। राजगोपालाचारी अभी-अभी लक्ष्मी और उसके बच्चेके साथ आये है। देवदास बुरी तरह बीमार था। अन्सारीने उसे शिमला रवाना कर दिया है। मुझे मीराकी देखभाल करनी पड रही है। वह बुरी तरह बुखारमें पडी हुई है।

मैं चाहूँगा कि तुम अगले वर्ष अध्यक्ष चुने जानेके लिए राजी हो जाओ। तुम्हारी स्वीकृतिसे कई कठिनाइयाँ हल हो जायेंगी। यदि तुम इसे ठीक मानो, तो मुझे तार दे देना।

क्या इन्दुका सब ठीक-ठाक हो गया?

खुर्शीद यही है। वह तुमको साधारण डाकसे पत्र भेजेगी।

हम सबकी ओरसे प्यार।

बापू

[अंग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१ १९३६ में प्रकाशित जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा की।

५८८ पत्र वि० ल० फडकेको

१२ सितम्बर, १९३५

चि० मामा,

तुम्हारे लेखको मैंने रद्दीकी टोकरीमें पधरा दिया है। योग्य पुरुष अथवा स्त्री द्वारा प्रयास करने का कोई निषेध नहीं है। ऐसे प्रचारक न तो 'हरिजनबन्धु'में विज्ञापन देनेपर मिलेंगे और न वे [हरिजन सेवक] संघके कार्यालयमें फलते हैं। वे तो तपस्याका प्रसाद होते हैं। तुम भी वैसे क्यों नहीं बनते?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८३३) से।

५८९. पत्र : दिलखुश बी० दीवानजी को

१२ सितम्बर, १९३५

भाई दिलखुश,

तुमने जो प्रश्न किशोरलालको भेजे हैं उन्हें आज ही पढ़ गया हूँ। प्रश्न अच्छे हैं। जो गरीब विद्यार्थी अपने पहनने लायक खादी तैयार करवाने के लिए ही कातते हैं उनकी कताईकी मजदूरी चाहे जितनी ज्यादा या कम रख सकते हो। यदि इस तरह उत्पादित खादी अपनी जरूरतसे ज्यादा हो तो उसकी दर किसी भी खादी-मण्डलमें प्रचलित दरके मुताबिक रखी जा सकती है। बाजारमें बेची जाये तो वह इस तरह बेची जाये जिससे खादीकी बिक्रीमें मददगार हो सके।

अगर कताई-प्रवृत्ति केवल मिर्च-मसाले, पान-बीड़ी आदिका खर्च निकालनेके लिए [अंशकालिक] हो तो कीमतें कमसे-कम रखी जा सकती है। लेकिन अगर कताई, घी-दूध वगैरहका खर्च निकालने के लिए की जाती हो तो घंटे-भरकी मजदूरी उसके लिए काफी होनी चाहिए। तुम इसे नया सिद्धान्त मान सकते हो, लेकिन मेरी दृष्टिमें वह नया नहीं है। पहले मैंने जो-कुछ लिखा है, उससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है। इसलिए यह कोई नया सिद्धान्त नहीं है, बल्कि जो कुछ आधारके रूपमें पहले कहा जा चुका है उससे निकलनेवाला तर्कसंगत परिणाम है। अनुभवसे देखने में आता है कि हजारों बहनें केवल कताईसे ही अपनी रोटी कमाती हैं। इन्हें

कताईकी क्या दर दी जाये, यह प्रश्न मेरे सामने उपस्थित हुआ। तब मुझे कहना पडा कि इन्हे ज्यादा नही तो इतना तो मिलना ही चाहिए जिसमे इनका गुजारा हो सके। ऐसा न कर पाय तो हमे इनको कोई ऐसा धन्धा बताना चाहिए जिसस इनका गुजारा हो सके। इतनेमें तुम्हारे प्रश्नोका उत्तर आ जाता है। न आता हो तो खुशीसे फिर पूछो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
मोटाना मान, पृ० ७१

५९०. पत्र : अमतुस्सलामको

[१२ सितम्बर, १९३५ के पश्चात][1]

प्यारी बेटी,[2]

कानमका[3] दिल जबतक नही जीता है तबतक कुछ नही किया।

मेरे पैर छूनेसे मुझे कुछ हो जानेका डर नही है। लेकिन इस बुतपरस्तीको टालना चाहता हूँ। मैं अपनेको ऐसा पाक नही मानता हूँ।

बाल काटने से कोई फायदा मैं महसूस नही करता। हा, सेवा करने में बीचमे आते है तो किसीसे भी कटवा ले।

मैं नही कहता तू नापाक है। तू अपनेमे कुछ ऐब नही पाती है तबतक मुझे क्या डर हो सकता है? कानपुर वगैरा जाना न जाना तेरे दिलकी बात है।

बापु

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०१) से।

१ "मेरे पैर छूने से मुझे कुछ हो जानेका डर नहीं है", इस वाक्य से तिथि का अनुमान लगाया गया है। १२ सितम्बर, १९३५ को गांधीजी ने टहलते समय सहारे के लिए किसी लड़की के कन्धेपर हाथ रखने की आदत छोड़ दी थी, देखिए "एक त्याग", २१ ९ १९३५।

२ साधन-सूत्रमें यह उर्दूमें है।

३ **बापू के पत्र–८ बीबी अमतुस्सलामके नाम** में अमतुस्सलाम ने बताया है कि बा शिमला में बीमार थीं, इसलिए रामदास गांधी के पुत्र कानम की देखरेख का भार उन्हें सौंपा गया था।

५९१ पत्र अमतुस्सलामको

[१२ सितम्बर, १९३५ के पश्चात][१]

इसमे मै कुछ बता थोडा सकता हू? वह तो प्रेमसे जीना जा सकता है। यह प्रेम अपने-आप पैदा हो सकता है। यह तो पुरानी बात चली।

लिख देनेकी भी बात नही है। तेरेसे जो हो सकता है अपने आप वही करो।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०८) से।

५९२ पत्र ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

वर्धा
१२/[१३][२] सितम्बर, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा खत मिला।

जो खर्च कमी करने का तुमने लिखा है सो सही है। कृष्ण नायर को एक वर्ष कलकत्तेमे रहने दो। दरम्यान तुमसे और हरयानसिहसे जो हो सके सो करो। एक ही व्यक्तिपर जो वस्तु निर्भर रहती है उसे अन्तमे टूटना ही है और कृष्ण नायरको दिल्लीमे कहा तक रखोगे? इस बखत अनायाससे मैने कृ० ना०मे धनिकोके प्रति छिपी हुई घणा देख ली। वह भी समझ गया, अभी भी उसे इस चीजको हृदयगत करना बाकी है। इसलिये तुमने जो लिखा है वो सच है। उसका बगालमें रहना कल्याणकारी है। आस्ते-आस्ते सब चीजको साफ कर लेना। दरम्यान दूसरे आश्रमवासी है उनकी भी परीक्षा हो जायगी। आश्रमवासी उसिको कहा जाय जिसको मात-पिता इ० रिश्तदारोसे कोई आर्थिक अथवा दूसरा भानिके सबध नही है और जिसकी अन्न-वस्त्रादिको छोडकर और कोई हाजत नही है। और जो अहिसादि एकादश व्रतके पालनमे तत्पर रहता है। इस वास्ते जिसको कुछ भी बचाने का रहता है वह आश्रम-वासी कभी न माना जाय इस दृष्टीसे किसीको १० रुपयेसे अधिक न दिया जाय, और खाते-पिते १०मे से जो बचे वह आश्रमको वापिस मिले। यदि कोई ऐसे है, जिनकी सेवाकी हमे आवश्यकता है, जो खुद सेवक है लेकिन बाह्य उपाधिया होनेके

१ कानम के उल्लेख के आधारपर, देखिए पिछला शीर्षक।

२ पत्रकी विषय वस्तु से स्पष्ट है कि गांधीजी ने यह पत्र १२ सितम्बर को लिखना शुरू किया था किंतु राजगोपालाचारी के पहुँच जाने क कारण लिखनेमें व्याघात पडने से वे इसे अगले दिन ही पूरा कर सके थे, देखिए "पत्र जवाहरलाल नेहरूको", १२ ९ १९३५ भी।

कारण अधिक लेनेके सिवाय सेवा नहि कर सकता है, उसको तनखा देकर हम रख सकते हैं, बजटमे हमारे पास जितने द्रव्य रह सकते उससे अधिक खर्च न करे। ये सब बात आज जितने काम करनेवाले है उनको पढा सकते हो। जिससे तुमारे शिरपे बोज नही रहेगा और हमारा काम निपट जायेगा। मेरा स्वास्थ्य अच्छा। मेरा खोराक दूध-भाजी और कभी-कभी फल है। यह खत दो हिस्सेमे लिखा और लिखवाया गया है, लिखते-लिखते कुछ-ना-कुछ विघ्न आता हि रहा। इतने मे कल राजाजी आ गये उनन सुनाया कि तुम बिमार हो गया है, यह कैसे? आशा है की अब तो आरोग्य हो गया होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३४) से।

५९३. पत्र : पुरुषोत्तम एल० बाविशीको

१३ सितम्बर, १९३५

भाई पुरषोत्तम,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। तुम्हारे मनमे जो गाँव है, मुझे उसका नाम लिख भेजो। विनोबाका अभी कुछ पक्का नही हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२७) से। सी० डब्ल्यू० ४७५० से भी, सौजन्य पुरुषोत्तम एल० बाविशी

५९४ पत्र . वल्लभभाई पटेलको

१३ सितम्बर, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। राजाजी मेरे पास बैठे है। तुम्हारा हुक्म[1] सुना दिया। वे कहते है कि अधिकसे-अधिक १७ तारीखको तो उन्हे चले ही जाना चाहिए। पापा मद्रास आयेगी और उसका लडका जो बीमार था, उनकी बाट देख रहा है। वे मानते है कि तुम उनसे काँटोके ताजके[2] बारेमे ही बाते करना चाहते हो।

१ यह कि उन्हें एक सप्ताह वर्धा में रोके रखना चाहिए।

२ कांग्रेस का अध्यक्ष-पद स्वीकार करने के बारे में।

अगर यही बात हो तो वह व्यर्थ है। वे कहते हैं कि उन्होने भूलाभाईको कोई वचन नही दिया। वे यह ताज पहनने की स्थितिमे बिलकुल नही हैं। उन्हे शारीरिक और मानसिक थकावट बहुत है। उनकी सम्मतिसे मैंने जवाहरलालसे पुछवाया है।[1] इसके बावजूद यदि तुम सोमवारतक भी आ सको तो ठीक हो। मगलवारको उन्हे जाने ही देना होगा। आजकल यहाँकी आबहवा खराब है।

मीरा अच्छी है, मगर दो बजेसे बुखार चढ रहा है। फलोकी कीमत इसलिए जाननी है कि यदि उसी भावमे यहा मिल जाये तो यहीसे लेकर काम चला ले।

सिदीके[2] बारेमे गलतफहमी हो रही है। हमे लोगोसे जबरदस्ती कुछ भी नही करवाना है। चुपचाप काम ही करते रहना है। शेष मिलनेपर। यदि तुरन्त मिलना नही हो सका तो विस्तारपूर्वक लिखूँगा। जल्दबाजी जरा भी नही करूँगा।

मै बलसाडवाले [व्यक्ति]के बारेमे समझता हूँ।

कमेटीकी रिपोर्टमे जितनी कम दलीले होगी उतनी ही वह अच्छी होगी। विशेषण तो हरगिज न होने चाहिए। महत्त्वकी बातोपर उसका निर्णय और भविष्यके लिए सूचना, उसे बिलकुल निर्दोष पुस्तिका बना देगे। उसे भी बन्द करना हो तो भले ही कर दे। यह मेरी राय है।

भाऊ जमनालालजी की चालमें रहता मालूम होता है। उसे नियमित रूपसे पैसे मिलते रहे इतना ही काफी है।

[3]का किस्सा बडा विचित्र है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८६-८७

१ देखिए "पत्र : जवाहरलाल नेहरूको", १२-९-१९३५

२ देखिए "पत्र : मीराबहनको", २६-५-१९३५ की पाद टिप्पणी।

३ साधन-सूत्रमें नाम छोड दिया गया है।

५९५ बातचीत निर्वाह-योग्य मजदूरीके सम्बन्धमें – २[1]

[१४ सितम्बर, १९३५के पूर्व]

यह तो सघके नामसे ही स्पष्ट है कि हमारा ध्येय उन कतैयोका प्रतिनिधित्व करना, अर्थात उनकी अवस्था सुधारना है जिन्हे आज सबसे कम मजदूरी मिलती है। इसलिए हमे उनकी अवस्थामे क्रमिक सुधार करके दिखाना है। आपको बिलकुल प्रारम्भमें कही मेरी वह बात याद रखनी चाहिए कि हरएक घरमे एक चरखा हो और हरएक गावमे एक या अधिक करघ। वह बात जितनी तत्कालीन परिस्थितिपर लागू होती थी उतनी ही आजकी परिस्थितिपर भी लागू होती है। यही स्वावलम्बी खादीका आदर्श है, और अगर मै आपको अपनी बात समझा सकू, तो मै आपसे यह कहूँगा कि कतैयोकी जितनी सेवा आप उनकी खादी बेचकर कर रहे है, उससे अधिक सेवा आप उनसे खुद उन्हीके उपयोगके लिए खादी तैयार कराकर कर सकते है। अपनी रोटियाँ हम अपने घरमें ही बना लेते है, गावोमे होटल तो कही है नही, इसी तरह तमाम ग्रामवासियोको अपने लिए खादी खुद ही बना लेनी चाहिए। यह बात नही कि उनमे कुछ लोग अतिरिक्त खादी तैयार नही करेगे, लेकिन उनका अतिरिक्त खादी तैयार करना माँगपर निर्भर होगा। शहरके जो लोग हमारी खादी खरीदना चाहेगे उनसे तो हम आडर लेगे ही, और वह खादी हम जिन कारीगरोसे तैयार करायेंगे, उन्हे नित्यकी आवश्यकताओके अनुसार प्रति घटा पर्याप्त मजदूरी दी जायेगी। सम्भव है कि इससे खादीका मौजूदा भाव फिलहाल कुछ चढ जाये। लेकिन

१ महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। पत्र में खादी कार्यकर्त्ताओ की दलीलो का सार निम्न प्रकार दिया गया है "(१) यह कहना गलत है कि हम गरीब कतैयो का शोषण कर रहे है। उलटे, जो लोग जापानी या दूसरा विदेशी कपड़ा आसानी से खरीद सकते हैं, वे हमारी महँगी खादी खरीदते है। यह शोषण नही देशानुराग है। (२) न्यूनतम निर्वाह योग्य मजदूरी तय कर देने से यह हो सकता है कि कुछ बहुत ही थोड़े से कतैयों को थोड़ा पैसा और मिल जाये, पर उन हजारों की क्या हालत होगी जो बेकार हो जायेंगे? (३) खुद कतैये भी पेट भरने लायक किन्तु अनिश्चित मजदूरी के बजाय थोड़ी किन्तु स्थायी मजदूरी अधिक पसन्द करेंगे। अगर इसपर मतसंग्रह किया जाये, तो वे अपनी राय इस पेट भरने लायक मजदूरी के खिलाफ ही देंगे। (४) हमने कतैयों की मजदूरी नही घटाई है, खादीके दाम में जो कमी की गई है उसका कारण यह है कि इधर रुई का भाव गिर गया है, और बुनकरों की मजदूरी भी कम हो गई है। (५) जब राजनीतिक परिस्थितियाँ अनुकूल थी तब तो इस सम्बन्ध में हम कुछ कर सकते थे, पर आज वातावरण इस परिवर्तनके हक में नहीं है।"

हम लोगोकी गरीबीका अब और बेजा फायदा नही उठाना चाहिए। मैंने यह कभी नही कहा कि शोषण जान-बूझकर किया जाता है। हम लोगाने गत पन्द्रह वर्षोमे जो-कुछ किया है, उसका पूरा उत्तरदायित्व मै अपने ऊपर लेता हूँ। और जा-कुछ हमने किया हे वह अनिवार्य था। पर अब हमे एक नयी लीकपर चलना है। सवहारा लोगोकी तरफ हमने सदियोसे ध्यानतक नही दिया है, और हमने सरासर बेजा तोरपर यह तो मान रखा है कि हमे उनके श्रमका उपयोग करने का हक है, पर यह बात हमारे ध्यानमे कभी नही आई कि अपनी उचित मजदूरी मॉगने का उन्हे भी तो कोई हक है, ओर जिस तरह रुपया-पैसा हमारी पूजी हे उसी तरह श्रम उनकी पूजी है। अब वह समय आ गया हे जब हमे उनकी आवश्यकताओका, उनके कामके घटोका, उनके अवकाशके समयका और उनके जीवन-स्तरका विचार जरूर करना चाहिए।

यह दलील देना व्यथ है कि कतैये बजाय इसके कि थोडे-से लोगोको ऊँची दरसे मजदूरी मिले, यह चाहेगे कि मजदूरी थोडी मिले पर सबको मिले। हर शोषक और हरएक दास-स्वामी यही दलील देता है, और सच तो यह है कि गुलामोमे कुछ ऐसे आदमी थे, जिन्हे गुलामीकी जजीर बडी प्यारी लगती थी। पर आपको यह भय क्यो है कि उनमें से अधिकाश बेकार हो जायेगे? क्या हम उन्हे कोई दूसरा धन्धा नही बतला सकते? आश्रमे सीताराम शास्त्रीने उन्हे कताईके बजाय धान-कुटाईके काममे लग जानेको प्रोत्साहित करने मे तनिक भी आगा-पीछा नही किया है, क्योकि धान-कुटाईमे ज्यादा पैसा मिलता है। हमे अपने-आपको धोखा नही देना चाहिए। उनकी गरजका हमने अबतक नाजायज फायदा उठाया है, और उनकी दृष्टिसे हमने इस प्रश्नपर कभी विचार ही नही किया है।

सतीशबाबू को यह डर था कि इस न्यूनतम मजदूरीकी बातसे अनेक तरहकी धोखेबाजीके लिए रास्ता खुल जायेगा। इसपर गाधीजी ने कहा कि यह डर तो हमेशासे ही है। मजदूरीकी दर अभी बढ़ी तो है नहीं, पर धोखेबाजी आज कहाँ नहीं होती? यह तो एक ऐसा प्रश्न है जिसे स्वतन्त्र रीतिसे ही हल करना होगा। मै इस बातसे पूरी तरह सहमत हूँ कि खादी-कार्यकर्त्ताओके बीच यह जो प्रतिस्पर्धाका वातावरण है, वह अवश्य दूर हो जाना चाहिए और मुझे विश्वास है कि खादीके पीछे जो यह व्यापारी वृत्ति है, उसके दूर होते ही प्रतिस्पर्धाका वातावरण नष्ट हो जायेगा।

सतीशबाबू को इस बातकी भी चिन्ता थी कि खादीके कारीगरकी मजदूरी किसानकी मजदूरीसे किसी हालतमें ज्यादा नहीं होनी चाहिए। गाधीजी ने कहा कि किसानकी मजदूरी! ऐसी तो कोई चीज ही नहीं है। भारतके अनेक भागोमें किसान को अपनी जमीनसे शायद ही पेट भरने लायक उपज मिलती हो, और जिस किसानके पास अपनी जमीन नहीं है और वह पट्टेकी जमीनपर काश्त करता है, उस बेचारेकी पैदावार तो इतनी भी नहीं होती कि उससे जमीनका लगान ही भर सके। गाधीजी ने कहा

नहीं, किसानकी स्थितिका तो कोई मानक हो ही नहीं सकता। पेटके लिए रोज रोटी-भर मिलती जाये, यही एकमात्र मानक है। इससे कम मजदूरी देनेका प्रयत्न करना अपराध कहा जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १४-९-१९३५

५९६ टिप्पणियाँ

हरिजन-दिवस

हरिजन सेवक संघके केन्द्रीय कार्यालयने निम्नलिखित परिपत्र जारी किया है:

हरिजन सेवक संघ सितम्बर मासके अन्ततक अपने अस्तित्वका तीसरा वर्ष पूरा कर लेगा, और सवर्ण हिन्दू तथा हरिजन नेताओं द्वारा सम्मत पूना-समझौते पर पूनामें २४ सितम्बर, १९३२ को हस्ताक्षर हुए थे। इसलिए हरिजन सेवक संघके जीवनमें सितम्बरके अन्तिम सप्ताह, और विशेषकर २४ सितम्बरकी तिथिको महत्त्वपूर्ण मानना सर्वथा स्वाभाविक है। इसीलिए संघकी कार्यकारिणीने हालमें ही वर्धाकी अपनी बैठकमें प्रस्ताव पास किया है कि सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनों दोनोंको देश-भरमें २४ सितम्बरका दिन इस प्रकार मनाना चाहिए:

(क) उस दिन सभी हरिजन-सेवक सुबह हरिजन बस्तियोंमें जाकर हरिजनोंके समक्ष सफाईके महत्त्वके बारेमें भाषण करें और उनके लिए व्यक्तिगत तौरपर कुछ-न-कुछ सेवा-कार्य, वह चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, अवश्य करें।

(ख) शामको हरिजन और गैर-हरिजन बच्चोंको खेल-कूद तथा मनोरंजनके लिए खुले स्थानोंमें ले जाया जाये।

(ग) जुलूसों, कीर्तनों या भजन-मण्डलियोंका आयोजन किया जाये। जहाँ भी हो सके, सार्वजनिक सभाएँ आयोजित करके उनमें जन्मजात अस्पृश्यताको मिटाने के हिन्दू-जाति के पवित्र संकल्पको दोहराया जाये।

(घ) संघके सदस्यों-सहयोगियोंकी सूचीमें लोगोंके नाम दर्ज किये जायें।

(ङ) हरिजन कुआँ-कोषके लिए जोश और मुस्तैदीके साथ चन्दा जमा करना — जो इस वर्षके कामका प्रमुख हिस्सा है — जारी रखा जाये।

मुझे आशा है कि हरिजन और गैर-हरिजन दोनों वर्गोंके सभी सुधारक — चाहे वे किसी भी दलके क्यों न हों — संघकी इस अपीलपर तुरन्त कार्रवाई करेंगे।

टिप्पणियाँ

हरिजन-मण्डलोको चेतावनी

श्री मलकानीके पत्रका एक अश इस प्रकार है

मेरे पास प्रान्तीय मन्त्रियोके पत्र आने शुरू हो गये है। उनमें कहा जा रहा है कि हरिजन-कल्याण-कार्योंपर होनेवाले व्ययका पच्चीस प्रतिशत भाग भी नये चन्देसे पूरा करना कठिन लगता है। श्रीयुत गोपालस्वामीके पत्रकी सलग्न प्रतिसे प्रकट होता है कि चन्देमें ढिलाई आनेका खतरा है। २२ अगस्तकी तिथितक प्रान्तीय मण्डलोको दिये गये अग्रिम धनकी बकाया राशि ८१,४५५ रुपये १० आने २ पाई तक पहुँच चुकी थी। मोटे तौरपर देखा जाये तो यह राशि सभी मण्डलो और उनकी शाखाओके दो महीनेके खर्चके बराबर बैठती है। मुझे लगता है कि अनेक समितियोने तो आदत-सी बना ली है कि वे नयी उगाही करनेके बदले अग्रिम धनकी राशि खर्च करती जाती है। यदि यह प्रवृत्ति बढ़ने दी गई —— और हो सकता है कि अगली १ली अक्तूबरके बाद यह और जोर पकडे —— तो एक बडी विषम स्थिति पैदा हो जायेगी और अग्रिम धनकी राशियाँ न मिलने से हो सकता है कि विभिन्न केन्द्रोमें बकाया की राशियाँ इतनी बडी-बडी हो जायें कि नित्य प्रतिका सामान्य काम चलना भी दूभर हो जाये। इस मामलेमें असम सबसे बडा अपराधी है और उससे अन्य प्रान्तोको सबक लेना चाहिए। असममें थैलियोके रूपमें मिली सारी-की-सारी राशि उसे सौप दी गई थी। उसमें से कोई कटौती भी नही की गई थी, और उसे थैली-कोषमें से कल्याण-कार्योंपर व्यय होनेवाली पूरी राशि और 'क' तथा 'ख' मदोके लिए दो तिहाई राशियाँ अनुदानोके रूपमें मिल सकती थीं। फिर भी, उसने अपनी देनदारी बहुत ही अधिक बढा ली है, और अग्रिम राशियाँ खच कर डाली है। मै आपका आभार मानूँगा यदि आप हमारी अग्रिम राशियाँ और नई उगाहियोके सम्बन्धमें सतकता बरतनेका महत्त्व बतलाने की कृपा करे।

इसपर अपनी ओरसे कुछ कहने की जरूरत ही नही रह जाती। यदि प्रान्तीय मण्डल, जिला मण्डल और अन्य शाखाएँ अपने हाथमे थोडी रकम देखकर गफलतमे पडी रहेगी तो एक दिन वे पायेगी कि उनके पास बिलकुल कोई ससाधन नही रह गये है। भाग्य सतर्कता बरतनेवाले का ही साथ देता है, काहिलोका नही। मै जानता हूँ कि केन्द्रीय कार्यालय इस अत्यन्त ही चोखी नीतिका शब्दश पालन करेगा। इसलिए बडा अच्छा हो, यदि सभी शाखाएँ समय रहते चेत जाये और यह काम जारी रखने के अपने-अपने ससाधन तलाश ले। यदि वे ठोस काम करे तो स्थानीय उगाहीसे ही उनको ऐसे ससाधन मिल जायेगे। यदि नही करेगे तो वह एक सकेत होगा कि हमे बोरिया-बिस्तर समेट लेना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-९-१९३५

५९७ भ्रान्तियाँ

घटनाओं और चीजोको ध्यानपूर्वक देखनेवाले एक सज्जन लिखते हैं

आपके जिस पत्रका मैं जवाब दे रहा हूँ उसमें निर्दिष्ट दिशाओमें काम करने की काफी ज्यादा गुंजाइश है। गृह-उद्योगोका अपना एक स्थान है। पर अगर साफ-साफ पूछा जाये तो मैं यह कहूँगा कि मेरे खयालमें ये गृह-उद्योग बडे-बडे उद्योगोका स्थान नहीं ले सकते। इन बडे-बडे उद्योगोके सचालकोके आर्थिक हितोको एक तरफ रख दें तो भी मेरा यह खयाल है कि इस प्रकारके जो बडे-बडे उद्योग स्थापित हो चुके है या स्थापित हो सकते है, उन्हे नष्ट करने का प्रयत्न करना देशके हकमें अच्छा नही होगा। यन्त्रोके खिलाफ सबसे बडी आपत्ति यही उठाई जाती है कि काम-धन्धेमें लगे हुए आदमियोका काम ये यन्त्र दिनपर-दिन छीनते चले जा रहे ह। नतीजा यह होता है कि बेकारी बढ़ती ही जाती है। मुनाफेके वितरणकी जो मौजूदा प्रणाली है, सम्भव है, उसमें फेरफार करने की जरूरत हो। पर फुरसतके समयका अगर सदुपयोग हो सके तो वह और बहुत-सी बातोसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज होगी। सिफ लोगोको भारी तादादमें काममें लगाने के लिए मेरे विचारमें यह जरूरी नहीं कि हम इन यन्त्रोको खारिज कर दे, जिनसे पैसेकी बचत भी होती है और काम भी अच्छा और अधिक मात्रामें होता है। इन यन्त्रोको बहुत-से लोगोको अवकाश और भोजन दे सकना चाहिए। 'बहुत-से लोगो' में मै ऐसे लोगोको भी शामिल करता हूँ, जिनका इस उद्योगके साथ दूरका भी सम्बन्ध नहीं है। भारतकी जन-सख्या एक तो यो ही अधिक है, और वह बराबर बढती ही जा रही है — यह देखते हुए मुझे तो डर है कि ऐसा समय शायद कभी नही आयेगा जब यहाँ हरएक आदमीको ठीक-ठीक सुख-सुविधा दी जा सके। ज्यो-ज्यो लोगोमें शिक्षा और स्वच्छताका प्रचार होगा, त्यो-त्यो उनकी आयु बढ़ेगी और मृत्यु-दरमें कमी होती जायेगी। जन-सख्याकी दृष्टिसे देखें तो स्थिति तब और भी बुरी हो जायेगी। इसलिए माफ करें, मुझे यह कहना ही पडेगा कि इस दिन-दिन बढ़ती हुई आबादी के रोकने के उपाय करना ही हमारा सबसे पहला काम होना चाहिए, और यह काम बिना सन्तति-निग्रहके नही हो सकता। मै यह जानता हूँ कि आप इस चीजके खिलाफ है। मगर आज चूंकि आप सफाई, आहार-सुधार, ग्रामोद्योग आदिके द्वारा आर्थिक पुनर्रचना पर ही अपना

सारा ध्यान दे रहे है, इसलिए मै आपसे यह प्रार्थना करता हूँ कि जरा विचार करके देखिए कि क्या यह भी आपके ध्यान देनेकी चीज नहीं है?

जिन सज्जनने यह पत्र लिखा हे, वे ईमानदारीसे विचार करनेवाले व्यक्ति है, तो भी जैसाकि मुझे लगता हे, जिन दोनो सघोको ध्यानमे रखकर उन्होने लिखा हे उनके कायका लक्ष्य वे बिलकुल नही समझ सके। बडे-बडे उद्योगोको हटाकर उनकी जगह ले लेना या उन्हे नष्ट कर डालना तो इन सघोका लक्ष्य ही नही हे, उनका लक्ष्य तो यह हे कि मृत या मृतप्राय उद्योगोको पुनरुज्जीवित किया जाये, ओर उनके द्वारा उन करोडो लोगोको रोजगार दिया जाये, जिन्हे मजबूरन पूरी या आधी बेकारी मे रहना पडता हे। यह ध्वसात्मक नही, रचनात्मक कायक्रम हे। ये बडे-बडे उद्योग करोडो बेकार लोगोको कभी भी काम नही दे सकते, और न उन्हे ऐसी कोई आशा ही है। उनका मुख्य उद्देश्य तो अपने चन्द मालिकोके खजाने भरना है, करोडो बेकारोको काम देना उनका सीधा उद्देश्य कभी रहा ही नही। खादी और दूसरे ग्रामोद्योगोके सचालकोको ऐसी कोई आशा नही है कि निकट भविष्यमे उनकी प्रवृत्तियोका बडे-बडे उद्योगोपर कोई असर पडेगा। यदि वे कोई आशा कर सकते है तो यही कि ग्रामवासियोकी अँधेरी कोठरियोमे — जिन्हे झोपडिया कहना भी भाषाका दुरुपयोग करना हे — प्रकाशकी एक किरण पहुँचाई जाये। इन सम्माननीय पत्र-लेखक महोदयका कहना है कि फुरसतके समयका अगर सदुपयोग हो सके, तो वह और बहुत-सी बातोसे अधिक महत्त्वपूण चीज होगी, मगर ऐसा कहकर तो, मालूम होता हे, उन्होने अपने पक्षका खण्डन स्वय ही कर दिया है। जिन प्रवृत्तियोको वे पसन्द नही करते, उन प्रवृत्तियोका उद्देश्य उस ध्येयको ही तो पूरा करना है जो उनकी दृष्टिमे है। निठल्ले पडे हुए करोडो लोगोके फुरसतके समयका सदुपयोग करना ही इन प्रवृत्तियोका ध्येय है।

इसमे यन्त्रोके गलत उपयोग और दुरुपयोग — अर्थात करोडोको नुकसान पहुँचानेवाले उपयोग — के खिलाफ कोई मुहिम नही चलाई जा रही है। हिन्दुस्तानके सात लाख गावोमे फैले हुए ग्रामीण जन-रूपी करोडो जीवित यन्त्रोके विरुद्ध इन जड यन्त्रोको प्रतिद्वन्द्वितामे नही लाना चाहिए। यन्त्रोका सदुपयोग हुआ तो तब माना जायेगा जब वे मानव-प्रयत्नमे सहायक हो और उसे आसान बना दे। आज यन्त्रोंका जैसा उपयोग किया जा रहा है, उससे चन्द लोगोमे सम्पत्तिके सिमटते जानेका सिलसिला उत्तरोत्तर जोर पकडता जा रहा है और उन करोडो नर-नारियोकी पूरी उपेक्षा हो रही है जिनके मुखका ग्रास ये यन्त्र छीनते जा रहे है। अखिल भारतीय चरखा सघ तथा अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ द्वारा चलाई जानेवाली प्रवृत्तियोकी परिकल्पना इस उद्देश्यको ध्यानमे रखकर की गई है कि अत्यन्त सवेदनशील मानव-यन्त्रोसे सरोकार रखने की झझटसे बचते हुए इन निर्जीव यन्त्रोका प्रयोग करके विपुल सम्पत्ति एकत्र करने की सनकका जो कुपरिणाम सामने आ रहा है, उसे जहाँतक बने, शामिल किया जा सके।

पत्र-लेखकको यह भय है कि ऐसा समय कभी नही आयेगा कि जब हर आदमीको ठीक-ठीक सुख-सुविधा दी जा सके। जो लोग गाँवोमे काम कर रहे है, उन्हे ऐसा कोई भय नही है। बात इससे उलटी है। गाँववालो के निकट सम्पर्कमे आने और गावोकी स्थितिसे अधिक परिचित होनेसे उनकी यह आशा बढती ही जा रही है कि अगर ग्रामवासियोसे उनकी यह पुश्तैनी काहिली छुडाई जा सके तो वे सबके-सब ठीक-ठीक सुख-सुविधासे रह सकते है और इसके कारण वर्तमान व्यवस्थामे कोई बडा उलट-फेर भी न हो। इसमे शक नही कि ऐसी परिस्थितियाँ है जिनसे सामान्य लोगोका उत्पीडन होता है और हमे इनपर काबू पाना होगा। कुछ ऐसी परिस्थितिया है जिन्हे बसमे करना आवश्यक होगा। पर जिसे परम्परा-सिद्ध हितोवाला वर्ग कहा जाता है, उसकी ओरसे यदि कुछ सहयोग मिले तो यह कार्य भी इस तरह सम्पन्न हो जायेगा जिससे किसीको कोई विशेष कष्ट न होगा।

वर्तमान जन-सख्याके लिए ठीक-ठीक सुख-सुविधाकी व्यवस्था करने के विषयमे पत्र-लेखकको जो भय है, उससे स्वभावत उनके मनमे जनाधिक्यका भय पैदा हो गया है। इस दशामे तो सतति-निग्रह ही तर्कसगत उपाय हो जाता है। मेरे लिए सतति-निग्रह एक अधकूप है। वह अज्ञात शक्तियोके साथ खेलने-जैसी बात है। यदि मान भी लिया जाये कि कुछ स्थितियोमे कृत्रिम उपायोके द्वारा सतति-निग्रह करना उचित है, तो भी मुझे ऐसा लगता है कि करोडो लोगोके लिए यह चीज बिलकुल ही अव्यवहार्य है। उन्हे गर्भाधान रोकने के उपायोसे सतति-निग्रहकी बात समझाने की अपेक्षा मुझे तो यह ज्यादा आसान मालूम होता है कि उन्हे सयमके साथ रहने की बात समझाई जाये। हमारा यह छोटा-सा भूमण्डल कोई कल का बना हुआ खिलौना नही है। यह ससार तो न जाने कितने लाख वर्ष पुराना है, लेकिन आजतक तो यह कभी भी जनाधिक्यके कारण कष्टमे नही पडा है। तब कुछ लोगोके मनमे एकाएक इस सत्यका उदय कहाँसे हो गया है कि यदि गर्भाधान रोकने के कृत्रिम उपायोसे जन्म-दर न रोकी गई तो आहारके अभावमे भू-मण्डलका नाश हो जायेगा। मुझे तो लगता है कि पत्र-लेखक मित्र एक भ्रान्तिसे दूसरी भ्रान्तिमे पडते गये है, और अन्तमें वे जहा जा फँसे है वह है, जैसा अबतक कभी नही सुना गया है, वैसे व्यापक पैमानेपर गर्भ-निरोधके साधनोके प्रयोगका दलदल।

अग्रेजीसे]

हरिजन, १४-९-१९३५

५९८ कुष्ठ-रोगियोंमें प्रजनन

कुष्ठ-रोगी सेवा संस्थाकी भारतीय शाखा (इंडियन ऑग्ज़िलियरी टु द मिशन टु लेपर्स)के अवैतनिक मंत्री श्री ए० डोनाल्ड मिलरने मुझे लन्दनसे एक पत्र भेजा है। उसे नीचे दिया जा रहा है।[1] कुष्ठ-रोगियोंके उद्धारकी पेचीदा समस्यामें तनिक भी रुचि लेनेवाले सभी मानवतावादी लोग इसे गहरी दिलचस्पीके साथ पढ़ेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-९-१९३५

५९९ पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
१४ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारे वक्तके पाबन्द, भरे-पूरे पत्र पाना मेरे लिए एक सौभाग्यकी बात है। दो मरीजोंको तुम्हारी देखरेखमें सौंपकर मुझे तो उनके बारेमें बिलकुल कोई चिन्ता नहीं रह गई है। प्यारेलालसे कहना कि उसके पत्र मुझे मिल गये हैं। मैं उसकी बातोंको शब्दशः सच मानकर चलता हूँ और इसलिए फिलहाल उसको उत्तर न देकर समयकी बचत कर रहा हूँ। महादेव अबतक नहीं लौटा। शायद सोमवारसे पहले न लौटे।

डॉ० गोपीचन्द भार्गवको तुम्हारा उत्तर बिलकुल ठीक है। मैं तुम्हारी इच्छाके मुताबिक पत्र नष्ट किये दे रहा हूँ। जो दायित्व तुम सँभाल नहीं सकती, उनको अपने ऊपर लेनेसे तुमको साफ इनकार कर देना चाहिए।[2]

मीरा अभीतक पूर्ण स्वस्थ नहीं हो पाई है। उसकी एक और रात बड़ी बेचैनीमें कटी। बुखार उतर तो रहा है, पर धीरे-धीरे ही।

राजाजी अभी यहीं हैं। वे शायद मंगलवारको जायेंगे। लक्ष्मी और नया मेहमान दोनों सकुशल हैं। ताराको अब भी बार-बार बुखार आ जाता है, और मनुको भी। वे सब जमनालालजी के बँगलेमें टिके हैं।

१ देखिए परिशिष्ट ३।

२ देखिए "पत्र अमृतकौरको", १०-९-१९३५ भी।

बा और देवदाससे कहना कि उनको पत्र लिखने का समय मुझे नहीं मिल पा रहा है। उनको अलगसे लिखे गये पत्रोंका काम तुमको लिखे गये मेरे पत्रोंसे चल जाना चाहिए।

सबको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४९) से, सौजन्य अमृतकौर, जी० एन० ६३५८ से भी

६०० पत्र विश्वनाथको

१४ सितम्बर, १९३५

प्रिय विश्वनाथ,

न तो बाबाको[1] और न माँ को[2] ही तुमपर दबाव डालना चाहिए था। मुझे पत्र लिखने का तुमको पूरा अधिकार है, और अब तो, खैर, तुमने लिखा ही है। मुझपर तो तुम्हारा दोहरा हक है। एक तो ऐसे संगठनका एक सदस्य होनेके नाते जिसका प्रधान मैं हूँ और दूसरा इस नाते भी कि तुम दो ऐसे व्यक्तियोंसे[3] सम्बन्धित हो जो अनेक वर्षोंसे मेरे हर शब्दको आदेशके रूपमें स्वीकार करते आये हैं। इसलिए पत्र लिखकर तुमने अपने खरे अधिकारपर आग्रह करने के साथ ही मेरे प्रति अपने एक कर्त्तव्यका निर्वाह भी किया। तुम पत्रमें काफी भटक गये हो, पर इस बातसे तुम्हारे पत्रका महत्त्व किसी भी प्रकारसे या किसी भी रूपमें कम नहीं होता। उलटे, उसका महत्त्व इससे और बढ़ जाता है कि तुमने मुझसे वह कहने का साहस किया है जिसे तुम खरा सत्य मानते हो, भले ही मैं उसे सत्यके सर्वथा विपरीत ही मानूं। बहुधा हम गलतियोंके कुछ थपेड़े खाते हुए ही सत्यतक पहुँचते हैं, ऐसी गलतियोंके थपेड़े जो तबतक हमको गलतियाँ नहीं लगतीं। खादीके प्रति तुम्हारे मोह ने — यह मोह प्रेमसे भिन्न है — तुमको गलतियोंके जालमें फँसा दिया है। अखिल भारतीय चरखा संघ प्रधान कार्यालय है और सम्बद्ध संस्थाएँ उसकी शाखाएँ हैं। प्रधान कार्यालयको जो अधिकार प्राप्त हैं, वे शाखाओंको नहीं हैं। और हो भी नहीं सकते। मुझे किसी समय किन्हीं खास परिस्थितियोंमें जो नीति बिलकुल ठीक और त्रुटिहीन लगती थी, हो सकता है, बदली हुई परिस्थितियोंमें या उन्हीं परिस्थितियोंकी अधिक गहरी समझ आनेपर, वह नीति त्रुटिपूर्ण दिखने लगे। पर यदि मैं ऊपरी समरूपता बनाये रखने के लिए संस्थाके हितोंकी बलि चढ़ा दूं तो मैं संस्थाका प्रधान बनने योग्य नहीं हूँ। और फिर बाबा और माँ ने अपने साथ और

१, २ और ३ सतीशचन्द्र दासगुप्त और उनकी पत्नी हेमप्रभा दासगुप्त।

अपनी बनाई हुई सस्था के साथ व्यवहार करने के मामलेमे मुझे जितनी छूट दे रखी है, उतनी मैं दूसरोके साथ शायद नही बरत सकता। मुझे ऐसी आशका कतई नही है कि वे कभी भी मुझे गलत समझेगे। इसलिए तुमको प्रतिष्ठानके सम्बन्धमे किये गये मेरे प्रत्येक कार्यको बाबा और माँ के साथ मेरे सम्बन्धकी पृष्ठभूमिमे रखकर देखना-समझना पड़ेगा। ये सम्बन्ध स्वय उनके ही बनाये हुए है। प्रतिष्ठानके बारेमे बस इतना ही कहूँगा।

अब मेरे नये प्रयोगकी बात लो। चूकि तुम मानते हो कि खादी-आन्दोलनका प्रणेता मैं ही हूँ, इसलिए उसके विकासका नियमन करने और यहातक कि उसे नष्ट करने का भी अधिकार मुझे मिलना ही चाहिए। किसी चीजको बनानेवाला फिर नये सिरेसे भी सृजन कर सकता है। और यदि मुझे लगता है कि अपनी बनाई चीजको अमुक रूप देकर मैंने गलती की है, तो अपनी मर्जीके मुताबिक उसे एक नया रूप देनेका अधिकार मुझे तबतक रहना ही चाहिए जबतक उसकी देखरेखमे हाथ बँटाने-वाले अपने सहकर्मियोका समथन मुझे मिल रहा है। तुम यह तो मानोगे ही कि यदि सहकर्मियोकी आलोचनाके बावजूद मेरा विवेक इस सृजनके सम्बन्धमे किसी चीजको ठीक समझे, तो तुम-जैसे सहकर्मियोकी आलोचनाके भयसे उसपर अमल न करना मेरे लिए अपने ही सृजनके प्रति गद्दारी करना होगा। मै समझता हूँ कि तुमने जो मुद्दे उठाये है उन सभीका जवाब इसमे आ जाता है। तुम जितनी बार भी चाहो मुझे तबतक लिखते रह सकते हो जबतक मै तुमको अपनी रायसे सहमत न कर लू या फिर तुम इस निष्कषपर न पहुँच जाओ कि मै तुमको कभी भी सहमत नही कर सकूगा।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गाधी

[पुनश्च]

तुम्हारी इच्छाके मुताबिक मै तुम्हारे पत्रको बिलकुल ही निजी पत्र मानूगा।

श्रीयुत विश्वनाथ
खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर, कलकत्ताके निकट

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७२९) से।

६०१ पत्र : ग० वा० मावलकरको

१४ सितम्बर, १९३५

भाई मावलकर,

जिस प्रकार तुम्हे गृहस्थ जीवनकी परीक्षाओमे से गुजराना पडता है उसी प्रकार दूसरोको भी गुजरना पडता है। इतना ही आश्वासन हम ले सकते है न? किन्तु आशा है, अब तो सब-कुछ ठीक हो गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२४५) से।

६०२ पत्र जी० वी० गुरजलेको

वर्धा
१५ सितम्बर, १९३५

प्रिय गुरजले,

तुम्हारा पत्र मिला। बडा विषादपूण है। तुमको इस तरह हथियार नही डाल देने चाहिए। पर यदि तुमने निराशाके कारण ऐसा नही किया है तो तुम्हारा यह सकल्प सराहनीय है कि तुम आश्रममे बने रहोगे और मित्रो द्वारा भेजी गई सहायता पर ही निर्भर रहोगे। एक अनिवार्य शत यह है कि यदि वे एक पाई भी न भेजे, तो भी तुमको प्रसन्नचित्त रहना है। तुम पत्रोके जरिये अपने मित्रोसे अपील कर सकते हो और सस्था चलाने मे अनवरत रूपसे वही लगे रह सकते हो। तुमको मेहनतका कोई ऐसा काम भी करना चाहिए जिससे ग्रामोद्योगोको बढावा मिले और साथ ही तुमको थोडी आमदनी हो जाये। तुम यदि कोई अच्छी योजना सोच सको, तो तुमको छुटकारा मिल जाये। तुम्हारे पत्रमे एक बात है, जिससे मुझे चिन्ता हो गई है। तुमने लिखा है कि तुम्हारे हर काममे हाथ बँटानेवाली तुम्हारी पत्नी अब तुम्हारे खिलाफ हो गई है। इसका क्या मतलब है? वह तुम्हारे खिलाफ क्यो हो गई है?

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

श्रीयुत गोविन्दराव गुरजले
कृपा आश्रम
तिरुवणैनल्लूर (दक्षिण भारत)

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४०३) मे।

६०३ पत्र के० जी० राखडेको

१५ सितम्बर, १९३५

प्रिय मित्र,

पत्रके लिए बहुत धन्यवाद। मैंने श्री त्रिवेदीको सुझाव दिया है कि पैसा मुझे हस्तान्तरित कर दिया जाये। फिर तुरन्त मैं सालुकर स्मारक समितिके निर्माणके काममे लग जाऊँगा, ताकि न्यास कायम किया जा सके।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत के० जी० राखडे
छिदवाडा

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

६०४. पत्र : नारणदास गाधीको

१५ सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

पिताजी को मै अलगसे पत्र लिख रहा हूँ।

'चरखा द्वादशी' मे[1] सम्बन्धित पत्रक अच्छा है, किन्तु उसमे से तुम कितना करा पाओगे यह तो तुम्हारा विस्तृत विवरण मिलनेपर ही पता चल सकेगा। खादीके प्रति आजकल मध्यवर्गकी बहुत श्रद्धा देखने मे नही आती, हालाँकि कुछ व्यक्तियोकी श्रद्धा अवश्य बनी हुई है। मुझे तो तभी सन्तोष होगा जब राजकोट-जैसे शहरमे तुम्हे अच्छी सख्यामे कातनेवाले मिल जायग।

वहा कारखानेका जो सामान पडा हुआ है यदि तुम उसका उपयोग न करते हो तो मै यहाँ आसानीसे उसका उपयोग कर सकता हूँ। किन्तु यदि उसका तुम्हारे लिए कोई उपयोग हो तो मै उसके बिना भी काम चला सकता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७३ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१ भाद्र वदी २, विक्रम सम्वत् के अनुसार गाधीजी का जन्म दिवस कताई दिवस के रूप में मनाया गया था, जो १९३५ में २४ सितम्बर को पड़ा था।

६०५ पत्र खुशालचन्द गाधीको

१५ सितम्बर, १९३५

आदरणीय भाईकी सेवामे,

आपकी तपस्या तो फलीभूत हुई। आप और अधिक तपस्या करते रहे और वह फलीभूत होती रहे ताकि मै आपके आशीर्वाद पाता रहूँ।

मोहनदासके दडवत् प्रणाम

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

६०६ पत्र वल्लभभाई पटेलको

१५ सितम्बर, १९३५

भाई वल्लभभाई,

मणिलालका[1] तार मुझे भी परेशान कर रहा था। मैने तो आखिर साथकी नकलके अनुसार पत्र लिखा है। अच्छा किया कि तुमने महादेवको रोक लिया। मेरी गाडी तो दिन-दिन अधिक देहाती बनती जा रही है। उसके मोटे-मोटे पहिये और सडकपर तीन-चार इच मोटी धूलकी तहके बीचसे जब रास्ता तय करना है तो उतावली कैसी? मगर मै आशा करता हूँ कि अब तो तुम मगलवारको यहा पहुँच ही जाओगे। सिफ उसी दिन राजाजी यहाँ रहेगे। शामको तुम उन्हे मुक्त कर देना।

सिन्दीके बारेमे तुम बेकार ही घबरा रहे हो। इस बारेमे मै तुम्हे पूरी तरह सन्तुष्ट कर दूगा।

[2]का मामला निपट जाये तो अच्छा हो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८९

१ मणिलाल कोठारी।

२ साधन सूत्रमें नाम छोड दिया गया है।

६०७ पत्र मीराबहनको

[१६ सितम्बर, १९३५][1]

चि० मीरा,

इसे पढ जाओ और कोई सुझाव हो तो उसके साथ इसे लौटा दो। यदि इतनी मेहनतके लायक शक्ति शरीरमे महसूस न करो, तो मत पढना।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४८१) से, सौजन्य मीराबहन। जी० एन० ९४८० से भी

६०८ पत्र . राजेन्द्रप्रसादको

१६ सितम्बर, १९३५

प्रिय राजेन्द्रबाबू,

मैने अनिच्छासे अंग्रेजीमे लिखना शुरू कर दिया है। महादेव कल सरदार और घनश्यामदासके साथ लौट रहा है।

आपको चगा हो जाना चाहिए और तब यदि आ सके तो जल्द ही यहाँ आ जाना चाहिए। देवदास प्यारेलालको नही भेज सकता। यदि आप न आ सके, तो मुझे महादेवको आपके पास भेजना ही होगा। आप अकेले न छूट जाये। इसलिए तार द्वारा अपनी मशा बतलाने की कृपा कीजिए।

बापू

[पुनश्च]

मीराबहनको मलेरियाने बुरी तरह जकड लिया था। कलसे उसे बुखार नही रहा। चिन्ताकी कोई बात नही।

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७६८) से, सौजन्य राजेन्द्रप्रसाद

१ जी० एन० रजिस्टर के अनुसार यह पुर्जा सितम्बर १९३५ में मौन दिवस को लिखा गया था। इसके पाठ से स्पष्ट है कि यह मीराबहन के बीमारी से उठने के कुछ ही समय बाद लिखा गया था, देखिए अगले दो शीर्षक भी।

६०९. पत्र . अमृतकौरको

१६ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारे प्रिय पत्र मुझे हमेशा ठीक समयपर मिलते रहते हैं। ईश्वर तुमपर कृपालु हो। तुमको अपनी आँखोपर बहुत ज्यादा जोर नहीं डालना चाहिए और उनको खराब नहीं कर लेना चाहिए।

डॉक्टर घरमें ही मौजूद है, इसलिए मेरा यह सुझाव देना उचित न होगा कि देवदास जितना लेना चाहे उससे अधिक भोजनका उससे आग्रह न किया जाये। ज्यादा अच्छा रहेगा कि उसे धीरे-धीरे ही आगे बढ़ने दिया जाये। यह सब सामान्य व्यक्तिका सुझाव ही है और इसपर उतना ही अमल किया जाये जितनेके यह योग्य हो।

दो पत्र साथमें हैं।

सबको स्नेह।

बापू

[पुनश्च]

मीरा ठीक हो गई है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५५०) से। सौजन्य अमृतकौर, जी० एन० ६३५९ से भी

६१० पत्र मणिलाल और सुशीला गांधीको

१६ सितम्बर, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्र मिले। आज तो मेरे पास जरा भी समय नहीं है। एक तरफ मीराबहनकी खटिया पड़ी है और दूसरी तरफ नीमू, लक्ष्मी आदि भी यहीं हैं। और मैं तो 'हरिजन' के काममें अन्य सोमवारोंकी अपेक्षा अधिक व्यस्त हूँ। राजाजी और किशोरलाल मेरा एक महत्त्वपूर्ण लेख सुधार रहे हैं। इस बीच मैं यह पत्र लिखे दे रहा हूँ। देवदास और बा शिमलामें हैं। अब देवदास कुछ ठीक है। प्यारेलाल उसकी सेवामें लगा है। चिन्ता करने की कोई बात ही नहीं है। राजाजी ने नवागत शिशुका नाम राजमोहन रखा है।

सरदार, घनश्यामदास और महादेव कल बम्बईसे यहाँ आ रहे हैं।

सीता और अरुणकी शिक्षाके बारेमें मैं [अपने मतपर] दृढ़ हूँ। यह निश्चित मानना कि वे तुमसे जो पा सकते हैं वह उन्हें और कहीं नहीं मिल सकेगा। यदि उन्हें भली-भाँति तैयार कर दिया जाये तो बड़े होनेपर उन्हें कुछ खास सीखना होगा तो वे स्वयं ही सीख लेंगे। मणिलाल जिस प्रकार खाने-पीनेके लिए समय निकालता है उसी प्रकार उसे प्रतिदिन एक निश्चित समय उनके लिए भी अवश्य निकालना चाहिए। मनुष्य अपने लिए नियम बना ले तो फिर तदनुसार आचरण करना सहज हो जाता है। जिस प्रकार हर सप्ताह 'इंडियन ओपिनियन' का निबटाना तुम अपना कर्त्तव्य मानते हो, उसी प्रकार यदि बच्चोंके शिक्षण-कार्य को अपना कर्त्तव्य मान लो तो समय निकल ही आयेगा।

एजेंटसे रसाईसे जितनी बातचीत हो सके उतनी करना। यह मानकर कि एजेंट का पद अभी बन्द होनेवाला तो है नहीं, उससे जितना सार्वजनिक काम लिया जा सके उतना लेना चाहिए। हम जैसे हैं उस अवस्थामें एकाएक कैसे परिवर्तन हो सकता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८४३) से।

६११ पत्र लीलावती आसरको

१६ सितम्बर, १९३५

मुझे इस वर्षके अन्ततक कही नही जाना है। अत अक्तूबरमे मै यही रहूँगा। पेंसिलसे लिखने के सम्बन्धमे तेरी शिकायत सही है। अबसे मै स्याहीसे ही सुधार किया करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१०४ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

६१२ पत्र बलवन्तसिंहको

मगनवाडी, वर्धा
१७ सितम्बर, १९३५

चि० बलवन्तसिह,

देवीके सामने बकरीयोके भोगका बयान दु खद है। हम इस सदीओकी भ्रमणा को क्षणमे दूर नही कर सकते, जबतक हमने लोग समझ सकते है ऐसी सेवा नही की तबतक हमारी बात सुनने के लिये उनके हृदय तैयार नही होगे। बुध्धिका विकास इससे भी कठीन है। और अहिसक प्रवृत्ति मात्र हृदयस्पर्शी रहती है, बुध्धिस्पर्शी कम हृदय-स्पर्श निस्वार्थ सेवासे बहूत जल्दी हो सकता है। इसलिये आज तो हमारे इन देवीओ को बकरीओका भोग चढानेवालो मे सेवाकार्य करना है। और मोका मिलने से उनका भ्रम दूर करायेगे। याद रक्खो कि जो दृश्य तुमको अणपढ लोकोमे देखा वही दृश्य पढे हुए लोकोमे कलकत्तेमे देखने में आता है, और वहा बहूत पैयमाने मे।

दूसरी घटना भी उसी प्रकारकी[१] समझो, अगरचे इतनी दु खद, इतनी असह्य नही है। उसमे भी इलाज वही है। मुझे पता नही कि कृष्णदास बीज, इत्यादि ले गया है कि नही, तुम्हारा खत उसके जानेके बाद मेरे हाथमे आया।

हा, जो मरीज दिल्लीसे आये है वह हरिश्चद्र ही है। डा० पिगले मालीश इ० करते है उनको और हरिश्चद्र दोनोको उमेद है कि वह अच्छे हो जायेगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८८१) से।

१ बलवन्तसिंह ने एक महिला को सोने का एक आभूषण चोरी करने के आरोप में लोगो द्वारा तग किये जाते देखा था। उनके बीच बचाव करने और कहने सुनने पर उसने आभूषण लौटा दिया था।

६१३ पत्र ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

मगनवाडी, वर्धा
१८ सितम्बर, १९३५

चि० ब्रिजकृष्ण,

इतने वर्षोंके बाद तुमने जो प्रश्न पूछा हे वह आश्चय है। पापोके लिए क्षमा [का] अथ क्या है ? और क्षमा कौन करे ? क्यो करे ? ऐसी भाषाका प्रयोग होता हे सही, लेकिन ऐसी भाषा प्रयोग करते है उनको शका आती ही नही, क्योकि मनुष्य क्षमाका आरोपण करके शुद्ध बन जाता है। तात्विक दृष्टिसे पापका फल भोगना ही है। जो मनुष्य ज्ञानपूवक भोगता है वह दुबारा पाप नही करता है और शुद्ध हो जाता हे। यही तो क्षमा है। क्षमाका अर्थ तो ऐसा कभी नही है कि मनुष्य पाप करता रहे और क्षमा मागता रहे। जिसके पापकी क्षमा हुई है वह दुबारा पाप करता ही नही, और करता है तो क्षमा हुई नही। दूसरी बात यह हे कि हम प्रत्येक दर्दको पापकी सजा क्यो माने ? दर्दोको ईश्वरकी प्रसादी क्यो न समझे ? अर्थात् दोनो अथ निकाल सकते है और दोनो अथके माफत हम आत्मोन्नति कर सकते है।

नायरने मुझे भी लिखा है। अब मै ज्यादा दखल नही देता हू। तुम ही नायरको लिख दो। आश्रमके लिये उनकी खूब आवश्यकता जचे तो भले अभ्यास मौकुफ करके आ जाये। और आये तो उसको पूण सत्ता दी जाय। और आर्थिक मदद चाहे सो दी जाय, सलाहके रूपमे जो कहना है सो कहा जाय। दिल चाहे सो करे।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३३) से।

६१४ पत्र · लीलावती आसरको

[१९ सितम्बर, १९३५के पश्चात्][1]

चि० लीलावती,

जिस प्रकार तुझसे देर हुई उसी प्रकार मुझसे भी दो दिनकी देर हुई है। तेरा अगला पाठ मै भेज चुका हूँ। तुम सबने अच्छी मेहनत की है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०५० से भी, सौजन्य लीलावती आसर

१ यह पत्र लीलावती आसरके १९ सितम्बर, १९३५ के पत्रके जवाबमें लिखा गया था।

६१५ पत्र अगाथा हैरिसनको

वर्धा
२० सितम्बर, १९३५

प्रिय अगाथा,

मैं इधर हफ्तोसे तुमको नही लिख पाया हूँ, हाँ, जब-तब दूसरोसे तुमको अपनी ओरसे लिखवाता जरूर रहा हूँ। यह सब उसके अलावा रहा जो महादेव और चन्द्र-शकरने तुमको लिखा होगा। जवाहरलालकी रिहाईके सिलसिलेमें तुम्हारी कार्रवाई बडी ही तत्परतापूण और शानदार रही। तुमने बहुत ठीक कहा है कि वह कार्रवाई राजनीतिक कम और मानवतावादी अधिक थी। मुझे इस बातकी भी खुशी है कि अधिकारियोने अवसरके अनुरूप चुस्ती दिखाई और पर्याप्त राहत देनेमे मिनट-भरकी भी देर नही होने दी। यहाँ भी हम अपनी ओरसे प्रयत्नमे लग गये थे। और फिर सारा मामला कितनी अच्छी तरह निबट गया। सतहपर दिखनेवाले चारो ओरके अन्धकार और अवसादके बीच जवाहरलालकी रिहाई एक प्रकाश-बिन्दुके समान चमक रही है। मै जानता हूँ कि तुम धन्यवाद नही चाहती। यदि चाहो तो गाडियाँ-भर धन्यवाद तुमको मिल सकते हैं। मै जानता हूँ कि तुमने जैसी पहल की है यदि न की होती तो मुझे घोर निराशा होती। तुमने अपनी ओरसे ऐसी ही तत्परतापूण और निर्णायक कारवाई करने की आशा रखने का मुझे अभ्यस्त बना दिया है। फिर भी उन सभी लोगोको धन्यवाद अवश्य देना जिन्होने तुम्हे सहायता दी और तुम्हारे कठिन उद्देश्यको इतने पूण रूपसे सफल बनाया। विमान द्वारा बेडेनवीलर[1] पहुँचकर तुमने बहुत अच्छा किया। मै वहाके तुम्हारे विवरणकी राह बडी उत्सुकता से देख रहा हूँ। यदि यह कहा जा सकता हो कि मनुष्य ईश्वरकी योजनाओमे कोई परि-वर्तन कर सकता है तो निस्सन्देह कहना होगा कि जवाहरलालकी रिहाई इन सफल प्रयत्नोके परिणामस्वरूप ईश्वरकी योजनामें निश्चय ही कमलाके जीवनके दिन बढ गये है। लेकिन मै इस हदतक तो पुरान विचारोका आदमी हूँ ही कि मानू कि ईश्वरकी इच्छाके बिना एक पत्ता भी नही हिलता [अर्थात् वही हुआ जो ईश्वरकी इच्छा थी]। उस स्थितिमे भी, यह सोचकर मुझे पर्याप्त सन्तोष प्राप्त होता है कि तुमने और अन्य मित्रोने ईश्वरकी योजना पूरी करने के लिए मिल-जुलकर प्रयत्न किया और इसलिए जब तुम लोग अपना कत्तव्य करने मे लगे थे, अदृश्यमे ईश्वरके दूत कह रहे थे "शाबाश! बहुत अच्छा।"

१ कमला नेहरूको देखने के लिए।

घनश्यामदासको आज सुबह अचानक जाना पड गया। कल उनको एक तार मिला था कि उनकी मा को बुखार हो गया है। नही तो वे यहाँ कमसे-कम चार दिन और ठहरते। लेकिन उन्होने वहाँके अपने कामका खासा अच्छा विवरण मुझे साराशमे दे दिया था। चार्लीने यहाँकी परिस्थितिके बारेमे तुम्हे सब-कुछ बतला ही दिया होगा। उसने जो बतलाया होगा उससे आगे मै और कुछ नही कह सकता। आशा है, इस समुद्र-यात्रासे उसे कुछ लाभ हुआ होगा। उसे विश्रामकी बडी जरूरत थी। मेरी बडी इच्छा है कि वह यहाँ तैयार की गई योजनाओके अनुसार ही चले, मतलब यह कि वह कैम्ब्रिज या ऐसी ही किसी दूसरी जगह रहे और वहाँ अपने आपको स्थायी किस्म की कोई चीज लिखने मे लगाये और जब कोई ऐसा विषय आये जिसके सम्बन्धमे केवल वही प्रकाश डाल सकता हो या मार्ग-दर्शन कर सकता हो तब वह तुम्हारे लिए सुलभ रहे। मुझे आशा है कि तुम इस योजनाको बढावा दोगी। मै जानता हूँ कि वह तुमको कितना मानता है। इसलिए यदि चाहो तो तुम उसके सम्बन्धमे 'मोहिनी'की भूमिका का सदा सफल निर्वाह कर सकती हो। अब मुझे लिखना बन्द कर देना चाहिए।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४९२) से।

६१६ पत्र: जी० वी० गुरजलेको

२० सितम्बर, १९३५

प्रिय गुरजले,

तुम्हारा पत्र मिला। मै उसके बारेमे कुछ भी नही कहूँगा। बस, ईश्वरसे प्राथना करूँगा कि उन कठिन व्रतोको पूरा करने मे तुम्हारी सहायता करे।[1]

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३८४) से।

१ देखिए "पत्र जी० वी० गुरजलेको", १५-९-१९३५ भी।

६१७ पत्र : आनन्द टी० हिंगोरानीको

२० सितम्बर, १९३५

प्रिय आनन्द,

अगर मुझे समयसे तुम्हे पत्र भेज पाना है तो बोलकर ही लिखवाना पडेगा। विद्यापर बार-बार बीमारीका यह प्रकोप होना, यह बुरी बात है। आशा हे, दिल्ली मे जो खास इलाज किया गया उससे उसे फायदा हुआ होगा। अगर तुम वालजीका[1] निमत्रण स्वीकार कर सको तो बेशक अच्छा रहेगा। मुझे इस बातकी भी खुशी है कि तुम्हे कराचीके अपने हरिजन-कार्यसे उम्मीद है। खुद मै तो हरिजनाको कपडे देनेका खर्चा लेनेके विरुद्ध हूँ। मै उन्हे गरीब-बेचारा मानने को तैयार नही हूँ। और अगर मुझे पहनने-ओढने की चीजे देनी पडती है तो मै हमेशा खादीका सहारा लेता हूँ। लेकिन सबके लिए एक ही नियम बना देना सम्भव नही है। इसलिए तुम्हे ऐसे हर मामलेमें अपने विवेकसे काम लेना चाहिए और या फिर जैसा तुम्हे ठीक लगे वैसा करना चाहिए या जयरामदाससे[2] पूछना चाहिए। और जब शका हो तो कुछ ऐसा करो जिससे गलती भी हो तो सही दिशामे हो।

तुम दोनोको प्यार।

बापू

श्रीयुत आनन्द हिंगोरानी
फीरोजपुर

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द टी० हिंगोरानी

१ वालजी गो० देसाई।
२ जयरमदास दौलतराम।

६१८ पत्र भगवानजी ए० मेहताको

२० सितम्बर, १९३५

भाई भगवानजी,

जमनालालजी को लिखा तुम्हारा पत्र मै उन्हे भेज दूगा। तुम अपनी लडकियोके लिए छॉट-छाटकर दौलतमन्द आदमी ही क्यो चुनते हो? देवचन्दभाई के बारेमे तुम्हारा पत्र मिल गया है। यह पत्र उन्हे भेजने से यदि वे तुमसे मिलनेवाले होगे तो भी नही मिलेगे। इसलिए मैने तो उन्हे अलगसे ही पत्र लिख दिया है। इसका जो परिणाम निकलेगा, वह मै सूचित कर दूगा।

मो० क० गाधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८२७) से। सी० डब्ल्यू० ३०५० से भी, सौजन्य भगवानजी ए० मेहता

६१९ पत्र: जमनालाल बजाजको

२० सितम्बर, १९३५

चि० जमनालाल,

सुनता हूँ कि तुम्हारे आनेकी तारीख आगे बढती जा रही है। अलमोडामे और अधिक रुकने के लिए बढ रही है, यह मुझे अच्छा लगता है। तुमको आराम करने की बहुत आवश्यकता हैं। वहॉ बैठे हुए भी तुम पूरा आराम ले सको यह तो सम्भव है नही। पत्र तो लिखने ही पडते होगे। लोग भी वहॉ मिलने-जुलने आते होगे और वहाका काम तो है ही। उसके बावजूद जो परेशानी तुम्हे यहॉ उठानी पडती है वह वहॉ नही है, इस कारण जाडा शुरू होनतक यदि तुम वहॉ रहो तो भी मुझे अच्छा लगेगा। फिर वहाँका जाडा तो प्रसिद्ध है। इससे भी अधिक अच्छा जाडा शिमलाका माना जाता है, और जाडेमे शिमलाका रहन-सहन वर्षासे भी सस्ता होता है। बगले नाममात्रके किरायेपर मिल जाते हैं। साग-सब्जी, फल वगैरह ढेरके-ढेर और सस्ते मिलते हैं और चारो ओरका दृश्य अत्यन्त आकषक होता है। सर्दी लोगोकी कल्पनामे ही होती है। लाहौरमे जितनी ठड लगती है उसकी अपेक्षा वहॉ कम लगती है, इसलिए मै तो तुम्हे सर्दियोमे वहॉ रहने की भी छुट्टी दे दूगा।

तुम जहाँ रहोगे काम तो वहाँ भी करते ही रहोगे। पूरा एक वष शातिसे पहाडपर बिता दो तो मेरा खयाल है कि तुम्हारा कानका दर्द शान्त हो जायेगा। मदालसाका शरीर अच्छा बन जायेगा और जानकी मैया अच्छी घुडसवार बन जायेगी बशर्ते कि वे अपनी हड्डिया न तोड ले। मै यह अवश्य चाहता हूँ कि तुम चरखा सघकी बैठकमे उपस्थित रहो। पर अगर तुम्हे सन्तोष हो तो मै तुम्हारी उपस्थितिके बिना भी काम चला सकता हूँ। हमने नयी नीतिके बारेमे काफी विचार-विमर्श कर लिया है। तुम्हे जो कहना हो सो तुम वहाँसे लिखकर भेज सकते हो। यदि खादी प्रतिष्ठान, मेरठ और कश्मीरके भडारके विषयमे विचार करने की बात हो तो इनके बारेमे भी मेरे विचार बन चुके है।

इस सम्बन्धमे भी तुम अपनी राय भेज सकते हो और फिर जो हो जाये उसे सहन करो।

अब रही काग्रेसकी कायसमितिकी बैठक। यदि तुम इसमे भी न आओ तो काम चल जायेगा। इस सबसे मै तुम्हे केवल इस शर्तपर मुक्त कर सकता हूँ कि यह सारा समय तुम किसी पहाडी स्थानपर बिताओगे। अगर तुम नीचे उतरते हो तो फिर दोनो बैठकोमे शामिल होना तुम्हारा धर्म हो जाता है। तुम जालधर जानेवाले थे सो क्या वहा नही गये? राधाकृष्ण[१] और सरदार ऐसा समझते है कि शायद तुम नही गये। अब सरदारको वहाँ जाना पडेगा। यहाँ सब ठीक चल रहा है। बालकोबा गौरीशाकरकी देखरेखमे केवल दूधका प्रयोग कर रहे है। अब ठीक है। इसके साथ भगवानजी का पत्र है। तुमने जिस आदमीके बारेमे लिखा था मैने उससे मिलने को कह दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७५) से।

६२० पत्र : नारणदास गाधीको

२० सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा 'चरखा द्वादशी' का कायक्रम सफल हो। मेरे लिए खादीमे धर्म और अर्थ दोनो समाविष्ट है। और मै खादीका जो अथ समझता हूँ उसका वैसा अर्थ जो भी करेगा उसे भी वैसा ही अनुभव हुए बिना नही रहेगा। अत मै तो यह चाहता ही हूँ कि तुम्हारे यज्ञमे जितने अधिक लोग भाग लेगे, उस हदतक वे अपना और देशका कल्याण करेगे।

बापूके आशीर्वाद

१ जमनालाल बजाज के भतीजे।

[पुनश्च]

यदि जमनादास वहाका काम काज सभाल ले तो तुम्हारे लिए यहा मेरे पास काफी काम है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७८ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

६२१ पत्र पी० जी० मैथ्यूको

[२० सितम्बर, १९३५][1]

प्रिय मैथ्यू

समयकी इतनी तगी रहते हुए दाहिने हाथसे लिखना कितना कठिन है, यह क्या तुम समझ नही सकते?

बापू

अग्रेजीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

६२२ पत्र हीरालाल शर्माको

२० सितम्बर, १९३५

चि० शर्मा,

तुमको कोलबो पत्र भेजा उसके बादमे पत्र भेज ही नही सका हू। यो तो तुमारे अमरीकासे खत आनेके पहले लिखना ही क्या था? लेकिन ऐसा भी नही। मेरे दिलमे तो हमेशा तुमको लिखने का रहता था। मै वखतके अभावसे भेज ही नही सका। दैव जाने अब यह कब मिलेगा। पोर्ट सूदानका तुमारा खत मिल गया। कोलबोका भी मिला था। दोनो आकर्षक थे। जैसे सुखसे दिन वहाँ कटे ऐसे ही अमरीकामे हो। जो किताब तुम्हे चाहिये उसकी पैरवी करूगा। मेरा कुछ ख्याल है कि अमरीका पहोचने के बाद उस किताबकी आवश्यकता शायद ही हो, तो भी मै तजवीज करूगा।

१ साधन सूत्रमें यह पत्र नारणदास गाधीको लिखे गुजराती पोस्टकार्ड (देखिए पिछला शीर्षक) के नीचे लिखा हुआ है।

द्रोपदीका मुझे एक बहूत ही छोटा खत आया था। उसके बाद कुछ नही है। अगरचे मैने उनको लिखा है। अमतुलसलामको बडी शिकायत है कि उसको भी कुछ खत नहि मिलते है। तुमको तो मिलते होगे। कुछ मुझे बताने का हो तो बताईए।

कन्याश्रमकी किताबोके बारेमे छोटेलालसे बाते करने के बाद मै लिखुगा।

तुमारे खत तो नियमपूर्वक आते रहेगे।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामे मेरे जीवनके सोलह वष, पृ० १९६-९७के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

६२३ टिप्पणियाँ

एक भूल-सुधार

प्रो० मलकानीने पत्र लिखकर सूचित किया है कि हरिजन-दिवस इस महीनेकी २५ नही बल्कि २४ तारीखको मनाया जाना है, क्योकि पूना-समझौते पर इसी तारीखको हस्ताक्षर हुए थे।[१]

रेशम और ऊन

हाथके कते और हाथके बुने ऊनी और रेशमी कपडे शुद्ध खादीसे जुडे हुए है और इसे उनसे सहारा भी मिलता है। उधर इन दोनोको कुछ-कुछ सहारा चरखा सघसे मिलता है — ऊनको खासकर काश्मीरमें, और रेशमको बगालमे। अब सवाल यह उठ खडा हुआ है कि न्यूनतम मजदूरीका नियम ऊन और रेशमकी कत्तिनो पर कहाँतक लागू होता है। यह नियम तो खादीसे भी अधिक ऊन और रेशमकी कताई पर लागू होता है। ईश्वरकी कृपासे ये उद्योग आज भी अपने पैरोपर खडे रह सकते है। ऊनी और रेशमी कपडोपर ज्यादा मुनाफा लिया जा सकता है, और इस तरह खादीकी कीमत घटाने मे इनसे मदद मिलती हे। इसलिए ऊन और रेशमकी कत्तिनोको उचित मजदूरी देना हमारा एक ऐसा कत्तव्य है कि जिससे हम किसी भी कारणसे जी नही चुरा सकते। ग्रामोद्योग सघके प्रस्तावके पीछे जो विचार है और चरखा सघ जो प्रयत्न कर रहा है, उसका अर्थ यह है कि इन दोनो सघोके कार्यक्षेत्रमे काम करनेवाले कारीगरो और मजदूरोको कमसे-कम इतनी मजदूरी तो दी ही जानी चाहिए जिससे उनका गुजारा हो सके। और यह देखते हुए कि मजदूरीकी जो दर अन्तमे नियत की जायेगी वह न्यूनतम ही होगी, जहाँ भी सम्भव हो वहा न्यूनतम दरसे अधिक मजदूरी देनेकी ही प्रवृत्ति होनी चाहिए। इसका मतलब यह हुआ कि ग्रामोद्योग सघ और चरखा सघ किसी भी उत्पादकको प्रमाण-पत्र तब तक नही दे सकते जबतक कि वे अपने यहाँके कारीगरो व मजदूरोका ठीक-ठीक रजिस्टर न रखे और कारीगरो और मजदूरोको निश्चित दरसे मजदूरी देनेका सबूत

१ देखिए "हरिजन सेवक सघके प्रस्ताव", ७-९ १९३५ और "टिप्पणियाँ", १४ ९ १९३५ भी।

न दे सके। इसका यह भी अर्थ निकलता है कि उन ऊनी और रेशमी कपडोको, जो प्रमाण-पत्र प्राप्त उत्पादकासे न खरीदे गये हो, कोई भी प्रमाणित खादी-भण्डार नहीं रख सकता।

स्व० न्यायमूर्ति रानडे और चरखा

एक सज्जनने मेरे पास एक रोचक विज्ञापन भेजा है। स्वर्गीय न्यायमूर्ति रानडेने यह विज्ञापन ९ दिसम्बर, १८८० को भारतीय पत्रोमे प्रकाशित कराया था

हमारे देशके अनेक भागोमें कपासकी खेती होती है, और अनेक जगहोमें चरखेपर सूत कातने का उद्योग खासे बडे पैमानेपर चल रहा है, क्योकि चरखे पर कते सूतकी अब भी काफी ज्यादा माँग है। इन परिस्थितियोमें, कताईकी रीतिमें अगर सुधार कर दिया जाये तो यह चीज गरीब और मेहनती लोगोके लिए लाभदायक साबित हो सकती है। इसी उद्देश्यसे कताईके यन्त्रका यह विज्ञापन प्रकाशित किया जा रहा है। उस यन्त्रमें नीचे लिखे सुधार होने चाहिए

१ रुई साफ करने के लिए एक यन्त्र हो, जो या तो खुद चरखेका एक हिस्सा हो या उससे अलग चीज हो।

२ बजाय एक धागेके उससे पाँच धागे निकले और इस तरह सूतकी कुल उत्पत्ति पाँचगुनी बढ जाये।

३ सूत एकसार होनेके अलावा कमसे-कम इतना महीन कतना चाहिए जितने महीन सूतकी खादी बुनी जाती है। सूत इससे मोटा न हो।

४ यन्त्र मजबूत होनेके अलावा सादा होना चाहिए, और ठीक ठीक तथा अविराम चलने लायक होना चाहिए।

यह यन्त्र किसी सग्रहालयमें बतौर एक नमूनेके रखने के लिए नहीं चाहिए, बल्कि जब चलाया जाये तो वह हमेशा बिलकुल ठीक-ठीक काम दे। ये यन्त्र (ऊपर की गई फरमाइशके अनुसार) १५ मई, १८८१ के पहले आ जायें। उन सबकी जाँच निष्णात व्यक्तियो द्वारा कराई जायेगी। और जिस मशीनको परीक्षक पसन्द करेगे उसके बनानेवाले को ५०० रुपयेका पुरस्कार दिया जायेगा।

उस यन्त्रके निर्माताको हमारी माँगपर उचित कीमत लेकर २५ मशीनें तक देनेका जिम्मा लेना पडेगा, और उसे यह भी गारटी देनी होगी कि चलने के चार महीनेके अन्दर अगर यन्त्र बिगड़ जायें, तो वह उन्हे ठीक कर देगा।

इसलिए जो लोग इस प्रयोगको आजमाना चाहे, उन्हे तदनुसार इस विज्ञापनके प्रकाशनकी तारीखसे दो महीनेके अन्दर हमें लिखित सूचना दे देनी चाहिए।

श्री हट्टीबेलगलकर (जो नीचे हस्ताक्षर करनेवालोमे से एक है) शुक्रवार पेठ, पूनासे खुद मिलकर अथवा उन्हे जवाबी पत्र लिखकर इस सम्बन्धमे विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

पूना शहर (सही) श्रीनिवास शेषो हट्टीबेलगलकर
९-१२-१८८० पेंशनर रिकॉर्ड कीपर, एस० डी०
(सही) महादेव गोविन्द रानडे

भारतके पत्रकारोसे हमारा अनुरोध है कि इस विज्ञापनको वे अपने-अपने पत्रोमे एकाधिक बार छापें, ताकि इसपर अधिकसे-अधिक लोगोकी नजर पड सके।

जैसाकि स्व० गोखले कहा करते थे, रानडेकी तीक्ष्ण दृष्टिसे कोई भी चीज बच नही पाती थी, और जिस चीजसे उनके दीन-दुखी देशवासियोको कोई लाभ पहुँच सकता था, उसे उन्होने कभी अपने मनमे नगण्य नही समझा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २१-९-१९३५

६२४ एक त्याग

१८९१ मे जब मै इग्लैडसे लौटा तो अपने परिवारके बच्चोको लगभग अपनी ही निगरानीमे ले लिया और उनके साथ — बालक-बालिकाओ दोनोके — कन्धोपर हाथ रखकर घूमने की आदत भी डाल ली। ये बच्चे मेरे भाइयोके थे। उनके बडे हो जानेपर भी यह सिलसिला जारी रहा। और जैसे-जैसे परिवारका विस्तार होता गया, यह सिलसिला भी बढते-बढते इस सीमातक पहुँच गया कि अब इस ओर लोगोका ध्यान खिचने लगा।

जहाँतक याद आता है, अभी कुछ साल पहलेतक मुझे इस बातका कोई एहसास नही था कि इस सिलसिलेको कायम रखकर मै कोई गलती कर रहा हूँ। लेकिन तभी साबरमतीमे एक आश्रमवासीने मुझसे कहा कि इस तरह आपका बडी उम्रकी लडकियो और स्त्रियोके कन्धोपर हाथ रखकर चलना श्लीलताकी लोक-स्वीकृत धारणाओके खिलाफ जाता है। लेकिन इस विषयपर अन्य आश्रमवासियोसे चर्चा करने के बाद मैने इसे जारी ही रखा। हालमे दो सहयोगी वर्धा आये तो उन्होने कहा कि सम्भव है, आपकी यह आदत दूसरोके लिए एक बुरा उदाहरण बन जाये, इसलिए आप इसे छोड दीजिए। उनकी दलील मुझे जँची नही। फिर भी, मै इन मित्रोकी चेतावनीकी उपेक्षा नही करना चाहता था। निदान मैने पाँच आश्रमवासियोसे इस पर सोच-विचार कर सलाह देनेको कहा। अभी वे विचार कर ही रहे थे कि एक निर्णायक घटना घटी। किसीने मुझे बताया कि विश्वविद्यालयका एक तेजस्वी छात्र

एकान्तमे एक लडकीके साथ, जो उसके प्रभावमे है, तरह-तरहका अमर्यादित व्यवहार करता है और दलील यह देता है कि वह तो उसे अपनी बहनकी तरह प्यार करता है और कुछ चेष्टाओ द्वारा अपने इस प्यारका प्रदशन किये बिना उससे रहा ही नही जाता। अपने इस व्यवहारके तनिक भी कलुषित होनेकी बात सुनकर वह बिगड उठता है। वह युवक क्या-क्या करता था, इसका वणन यदि मै कर पाता तो पाठक बेहिचक कहते कि उसके उस व्यवहारमे कलुष भरा हुआ था। उस पत्रको पढकर मै और उसे पढनेवाले दूसरे लोग इसी निष्कषपर पहुँचे कि या तो वह युवक पक्का पाखण्डी है या फिर घोर आत्म-प्रवचनामे पडा हुआ है।

खैर, इस जानकारीने मुझे विचारमे डाल दिया। दोनो सहयोगियोकी चेतावनी मुझे स्मरण हो आई और मनमे यह स्वाभाविक सवाल उठा कि यदि मुझे मालूम हो कि वह युवक अपने बचावमे मेरी आदतकी नजीर पेश कर रहा है तो मुझे कैसा लगेगा। यहाँ मै यह बता द कि जिस लडकीके साथ युवक ऐसी हरकतें करता है वह यद्यपि उसे सर्वथा निष्कलुष और भ्रातृवत मानती है, किन्तु ये हरकते उसे पसन्द नही है, बल्कि इनपर वह आपत्ति भी करती है, लेकिन उसे रोकने का साहस उसमे नही है। इस घटनासे मै जिस आत्म-चिन्तनमे प्रवृत्त हुआ, उसके परिणामस्वरूप उस पत्रको पढने के दो-तीन दिनोके अन्दर ही मैने यह आदत छोड दी और इस महीनेकी १२ तारीखको मैने वर्धा आश्रमके निवासियोके समक्ष इसकी घोषणा भी कर दी। ऐसा नही कि यह निणय करते समय मेरा मन दु खी नही हुआ। जब मै उस तरह घूमा करता था उसके दौरान या उस आदतके कारण मेरे अन्दर कभी भी कोई अपवित्र विचार नही जगा। मेरा वह आचरण किसीकी नजरसे छिपा हुआ नही था। मै मानता हूँ कि मेरा वह आचरण पिताके जैसा था और उसके कारण मेरे मार्ग-दशन और अभिभावकत्वमे रहनेवाली अनेक लडकियाँ मुझे अपना इतना विश्वास दे पाई जितना उनसे शायद किसीको नही मिला होगा। मै ऐसे ब्रह्मचर्यमे तो विश्वास नही करता जिसके निर्वाहके लिए स्त्रीका पुरुषके स्पशसे और पुरुषका स्त्रीके स्पर्शसे बराबर बचते रहना आवश्यक हो और तनिक-सा प्रलोभनका प्रसग आते ही वह भग हो जाये, किन्तु साथ ही मै जैसी आजादी बरतता रहा हूँ उसमे समाये खतरोसे भी मै बेखबर नही हूँ।

इसलिए ऊपर मैने जिस जानकारीका उल्लेख किया है उसके प्राप्त होते ही मुझे यह आदत छोड देनी पडी, चाहे वह अपने-आपमे जितनी भी निष्कलुष रही हो। मेरे हर कामपर हजारो स्त्री-पुरुषोकी निगाह लगी रहती है, क्योकि मै एक ऐसा प्रयोग कर रहा हूँ जिसके लिए लगातार चौकसी रखना जरूरी है। मुझे ऐसा काम करने से बचना चाहिए जिसका औचित्य सिद्ध करने के लिए दलील देनेकी जरूरत पडे। मेरा वह व्यवहार कोई ऐसा उदाहरण नही था जिसका चाहे जो अनुकरण करने लगे। इस युवकके मामलेने मेरे लिए एक चेतावनीका काम किया है। इस चेतावनीको मैने इस आशासे स्वीकार किया है कि जिन लोगोने मेरे दृष्टान्तसे प्रभावित होकर अथवा उससे प्रभावित हुए बिना इस दृष्टिसे कोई भूल की होगी वे

मेरे इस त्यागके परिणामस्वरूप उसे सुधार लेगे। निर्दोष युवावस्था एक अमूल्य निधि है। इसे क्षणिक उत्तेजनाके लिए, जिसे आनन्दकी गलत सज्ञा दी गई है, व्यथ नही गँवाना चाहिए। और इस प्रसगमे जिस कमजोर दिल लडकीका उल्लेख हुआ है वैसी लडकिया इतना साहस तो अवश्य बटोरे कि वे उन युवकोकी हरकतोका, चाहे वे अपनी हरकतोको जितना भी निर्दाष बताते हो, विरोव कर सके जो या तो घोर कपटी है या जिन्हे यही नही मालूम कि वे सचमुच क्या कर रहे है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २१-९-१९३५

६२५. गुड-परिरक्षण[1]

ध्यातव्य — यह सच है कि गुडको बहुत दिनोतक, खासकर बरसातके मौसममें सुरक्षित रख पाना कठिन है, लेकिन मुझे एक सज्जनने, जिन्हे मेरी समझसे जानकार व्यक्ति मानना चाहिए, बताया है कि राबको, अर्थात उबालकर गुड बनाने के लिए निकाले गये ईखके रसको, चाहे जितने दिन रखा जा सकता है और ऐसा माना जाता है कि उसे इस तरह सुरक्षित रखने से उसकी गुणकारिता ओर बढ जाती है। ईखकी फसल शुरू हो, उस समय यह प्रयोग करके देखने लायक है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २१-९-१९३५

१ यह महादेव देसाई के "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) के साथ एक टिप्पणी के रूप में प्रकाशित हुआ था। इस साप्ताहिक पत्र में महादेव देसाई ने एक अनुभवी डॉक्टर से हुई अपनी बातचीत का वर्णन किया है। उक्त डॉक्टर पहले मदिरा पान, मास भक्षण और धूम्रपान किया करते थे, कि तु समय रहते सचेत हो गये और मदिरा तथा धूम्रपान का पूरा त्याग कर दिया और मासाहार भी लगभग छोड़ ही दिया। अब वे अध कुटे चावल, हाथ चक्की के पिसे आटे और साग भाजी तथा ताजे दूधपर रह रहे थे। बातचीत के दौरान उ होने सुझाया था कि **हरिजन** में गुड के महत्त्वपर जोर दिया जाना चाहिए, क्योंकि यह चीनी से तो हर तरह से श्रेष्ठ है और ग्लूकोज आदि विदेशी चीजों से बहुत सस्ता भी, लेकिन कठिनाई सिर्फ यह है कि हमारी कुछ चीजें ज्यादा दिनोंतक रखी नहीं जा सकती।

६२६ पत्र जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
२२ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

ये तीन पत्र लिखकर तुमने बडा अच्छा किया। उनसे हमे कमलाके बारेमे सारी जानकारी ठीक-ठीक मिल गई। मुझे आशा है कि तुम फिलहाल यह सिलसिला जारी रखोगे। मैंने जनताकी मागका देखते हुए ही तुमको तार दिया था कि हररोज तार भेजते रहना। पर हालतमे कोई परिवतन न होनके कारण तुमने तार न भेजकर ठीक किया, प्रेषक का नाम न देकर भी ठीक ही किया। वहा तुम्हारी उपस्थिति जिस प्रकार कमलाके लिए अमृत-स्वरूप है उसी प्रकार तुम्हारे मित्रोको यहाँ उससे बडा सन्तोष मिला है। मै इस हवाईडाकसे कमलाको अलगमे पत्र नही लिख रहा हूँ।

तुम्हारी पाण्डुलिपि देखना बस शुरू ही करने जा रहा हूँ। सिद्धान्तोके निरूपणके मामलेमे तुममे सहमत होनेमे मुझे कोई कठिनाई नही दिखती। पर ठोस परिस्थितिके स्तरपर आनेपर हम सामान्यतया उसी भाषाका प्रयोग करते है जो मैने प्रयुक्त की है। काग्रेस अब एक इतना बडा सगठन बन गया है कि उसका पूरा सचालन किसी भी एक व्यक्तिके वशका नही रह गया है। लेकिन किसीको दायित्व तो सँभालना ही पडेगा। और जनता कुछ-न-कुछ मार्ग-दशन चाहती है। मैने इसीलिए पूछताछ की है।[१] तुम यदि निर्वाचित हो जाते हो, तो वह उस नीति और उन सिद्धान्तोकी खातिर ही होगा जिनके तुम पक्षधर हो। इसलिए मै चाहता हूँ कि तुम मुझे बतला दो कि तुम काँटोका यह ताज पहनने के उम्मीदवारके रूपमे अपने नामका प्रस्ताव रखने की अनुमति दोगे या नही।[२]

मै समझता हूँ कि कमलाकी हालतकी ज्यादा ठीक जानकारी मिलनेतक इदिरा अभी तुम्हारा इन्तजार करेगी।

मै काग्रेसका सविधान भेज रहा हूँ।[३] यदि तुम इसपर ध्यान देनेकी स्थितिमे हो, तो मै चाहूँगा कि तुम इसके बारेमे सोच विचारकर अपनी आलोचना मुझे लिख भजो।

१ देखिए "पत्र जवाहरलाल नेहरूको", ४ ९ १९३५ और १२ ९ १९३५।

२ देखिए परिशिष्ट ४ और ५ भी।

३ इसमें महादेव देसाईने जोडा था "सविधान को डाक से भेजने के लिए जरूरी डाक टिकट खरीदने का समय नही रह गया था। इसे अगली हवाईडाक से भेजा जायेगा।"

जहाँतक कांग्रेसकी वर्तमान नीतिका सम्बन्ध है, मैं उसके ब्योरेवार अमलके लिए तो किसी भी तरह जिम्मेदार नहीं माना जा सकता, पर उसे यह रूप मुख्यत मैंने ही दिया है। वह बहावके साथ बह चलनेकी नीति नहीं है। वह शान्तिपूर्ण कार्रवाईको दृष्टिमें रखकर जनताकी शक्तिको एकजुट करनेके एक ही मुख्य विचार पर आधारित है। लेकिन तुम्हारी अनुपस्थितिमें हम बस किसी तरह घिसटते रहे हैं। अब चूंकि तुम रिहा हो गये हो, तुमको मार्ग-दर्शन करना है और अपने उन पुराने सहयोगियोंको साथ लेकर चलना है जो तुम्हारा हार्दिक समर्थन करें। जहाँतक मैं समझता हूं, वे जहाँ तुम्हारा अनुगमन नहीं कर पायेंगे वहाँ भी तुम्हारा विरोध नहीं करेंगे। तुम वहाँ कमलाकी शुश्रूषामें लगे हुए हो, इसलिए इस तरहकी और अधिक चर्चा करके मुझे तुमको परेशान नहीं करना चाहिए।

सस्नेह,

बापू

जवाहरलाल नेहरू
हेम्स वाल्डेक
बेडेनवीलर, बेडेन, जर्मनी

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय। फाइल सं० ३००१/एच०, पृ० ३/५, पुलिस कमिश्नर कार्यालय, बम्बई से भी

६२७ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

२२ सितम्बर, १९३५

चि० नरहरि,

रामजीभाईका पत्र इसके साथ है। लगता है कि फिर कहीं कोई गलतफहमी हुई है। जो आवश्यक हो सो करना और मुझे सूचित करना। आशा है, गोशाला अच्छी तरह चल रही होगी। यदि सरदारको समय मिल जाये तो वेलचन्दके मामलेको निबटा लेना। आशा है, वनमाला ठीक हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०६८) से।

६२८ पत्र अमृतकौरको

वर्धा
२३ सितम्बर, १९३५

दुबारा नहीं पढा

प्रिय अमृत,

चोधरीको लिखे तुम्हारे पत्रने प्रभाव दिखाया है। उसने पत्रको बहुत ठीक भावनासे ग्रहण किया है। क्षमा-याचनाका तो कोई प्रसग था नही। मगनवाडी तुम्हारा घर है और यदि तुम अपने ही घरमे अपने लोगोसे ही खरी-खरी बाते नही कर सकती, तो फिर कहाँ करोगी? अवसर आनेपर तुमको फिर यही करना चाहिए।

यह आकार विशेषकर तुम्हारे लिए तैयार किया गया है। लेकिन तुम मुझे इसके बारेमे अपने विचार अवश्य बतलाना। जिनमे बास आने लगी हो, उनके लिए तुमको कोई कीमत नही देनी पडेगी। क्या हवामे रखने और धूप दिखाने से बास चली गई है?

पुरीको अपनी ब्योरेवार आलोचना अविलम्ब भेज देनी चाहिए। यहा आने तक नही रुकना चाहिए। मुझे अँधेरेमे नही रखना चाहिए।

मै तुम्हारे भेजे हुए सेब खूब डटकर खा रहा हूँ। मुझे उनकी जरूरत भी थी। सेबो और मुसम्बियोने दवाका काम किया है।

मीराको बुखारसे छुटकारा मिल गया है। लेकिन अब भी बहुत कमजोरी है और उसका पाचन-तत्र जैसा चाहिए वैसा काम नही करता। उसे ईनोज फ्रूटसाल्टकी काफी बडी मात्रा लेते रहनेपर भी पेटकी सफाईके लिए एनिमा लेना पडता है। पर उसके बारेमें चिन्ताकी कोई बात नही।

तुम दोनो जबतक प्यारेलालको दूध और अपने यहाँका उतना बढिया मक्खन लेनेको तैयार नही कर लेते, तबतक न तो तुमको परिचारिकाके और न शम्मीको ही एक अच्छे चिकित्सकके रूपमे पूरे नम्बर दिये जायेगे।

मैने 'हरिजन' मे सप-दशके बारेमे जितनी-कुछ सामग्री दी है[1] क्या उसमे जोडने के लिए शम्मीके पास और कुछ है? क्या जहरीले और गैर-जहरीले सापोको अलग पहचानने का कोई आसान तरीका है? क्या वह इस विषयपर किसी पुस्तककी सिफारिश करेगा?

उसके खयालसे कुमारप्पा कबतक स्वस्थ होकर वहाँसे छुट्टी पा सकेगा?

१ देखिए "सर्प विष", १७-८-१९३५।

तुम्हारे अतिथियो[1] (!) के लिए कुछ पत्र भेज रहा हूँ।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च]

तुम पहाडासे नीचे उतरकर कब आनेवाली हो? तुमको बीमारोकी खातिर शिमलामे अपनी निश्चित अवधिसे अधिक नही रुकना चाहिए।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५५१) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३६० से भी

६२९ पत्र नारणदास गांधीको

२३ सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारे हर्षके अश्रु-बिन्दु मैं तुम्हारे पत्रमे देख पाता हूँ। आज मेरी जो स्थिति है, यदि मैं उसी स्थितिमे आखे मूदू तो तुम हर्षके ऐसे और अधिक अश्रु-बिन्दु गिराना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७५ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

६३० पत्र: पुरुषोत्तम गांधीको

२३ सितम्बर, १९३५

चि० पुरुषोत्तम,

तेरा पत्र मिला। यदि मैं तुझे पहचानता न होता तो तेरा पत्र न मिलनेपर मुझे बुरा ही लगता। किन्तु यह मानकर मैं अपनेको सान्त्वना दे लेता हूँ कि तूने किसी सदुद्देश्य — या तो अपना या मेरा समय बचाने — के कारण ही मुझे पत्र नही लिखा। अपने स्वभावके अनुसार तो मैं यह चाहूँगा कि तेरे-जैसे लोग मुझे पत्र लिखते रहे क्योकि इस प्रकार मैं तुझे कही अच्छी तरह पहचान सकता हूँ और पहचान ही नही सकता बल्कि मदद भी कर सकता हूँ।

१ प्यारेलाल, कुमारप्पा और देवदास।

काठियावाडमे चल रहे हरिजन-कार्यका विवरण अभीतक मै पढ नही पाया हूँ हालाकि पढने की इच्छा तो है। तूने छगनलालके बारेमे जो लिखा है उससे मै चौका हूँ। वहाका हरिजन-काय बिगडना नही चाहिए। और इस काममे जीवनलाल की दिलचस्पी घटने की बात भी पुसाती नही। क्या तू कोई सुझाव दे सकता हे? तेरा पत्र मिलने के बाद अब यह कैसे हो सकता है कि मै शान्त होकर बैठा रहूँ। तूने जो लिखा है क्या मै छगनलालको उसकी सूचना दे सकता हूँ?

क्या यह माना जा सकता है कि तू अब बिलकुल स्वस्थ हो गया है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

६३१. पत्र सतीशचन्द्र दासगुप्तको

वर्धा
२४ सितम्बर, १९३५

प्रिय सतीशबाबू,

मलकानीके साथ आपका पत्र-व्यवहार मै पढ गया हूँ। मै उसके नाम अपने पत्रकी एक प्रति सलग्न कर रहा हूँ। इसीसे सारी बात पता चल जायेगी। शर्माके बारेमे यह है कि हम दोनोने एक ही दिन एक-दूसरेको अपने-अपने पत्र डाकसे रवाना कर दिये। विश्वनाथको अपने ऊपर काबू पानेमे मदद देनी पडेगी।[1] मै ऐसा तो नही मानता कि मैने उसे तनिक भी समझ लिया है, पर अन्नदाके साथ हुए पत्र-व्यवहारसे मेरे मनपर कुछ ऐसी छाप पडी है कि उसकी गिनती आपके विश्वस्त कार्यकर्त्ताओमें है। लेकिन वह बात ठीक हो या गलत, उसके प्रति लापरवाहीके कारण वह भटक जाये ऐसा नही होने देना है। इसलिए यदि वह मेरे पास अकेला आनेको तैयार न हो तो चाहे आपको अपने कामकी थोडी उपेक्षा ही क्यो न करनी पडे, उसे अपने ही साथ ले आइए। लेकिन यह तभी जब आप समझते हो कि मेरे साथ रहने से उसका रोग और बढने की सम्भावना नही हे। यह आपको सिर्फ यह जतलानेके लिए लिख रहा हूँ कि मै उसकी मानसिक दशाको लेकर चिन्तित हूँ। उसके लिए कौन-सा इलाज ठीक रहेगा, इसका अन्तिम रूपसे निर्णय तो आपको ही करना चाहिए।

बापू

श्रीयुत सतीशबाबू
कलकत्ता

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७३०) से।

1. देखिए "पत्र विश्वनाथको", १४-९-१९३५।

६३२ पत्र बी० जी० खेरको

२४ सितम्बर, १९३५

प्रिय खेर,

यह पत्र तो मुझे जब स्वामी यहा था तभी लिखना चाहिए था, लेकिन लिख ही नही पाया और फिर ध्यानसे बिलकुल उतर गया। कल दोपहर बाद स्वामीका याददिहानीका पत्र मिला तो याद आया। जो-कुछ ठक्कर बापाने लिखा है और मैंने स्वामीको बताया है उसके बीच मुझे कोई अन्तर्विरोध नही दिखता। हरिजन सेवक सघ पढरपुरमे जायदाद रखने का प्रत्यक्ष दायित्व नही ले सकता, लेकिन वह अधिकाश न्यासी मुहैया करेगा ओर जैसे-जैसे किसी भी कारण से स्थान खाली होगे, आगे भी करता रहेगा। इसके पीछे विचार यह है कि सघको कोई आर्थिक दायित्व अपने सिर नही लेना चाहिए। जब वह ऐसे न्यासी नियुक्त कर देगा जो जायदादकी व्यवस्था आर्थिक तथा अन्य दृष्टियोसे भी कर सकेगे तो उसका दायित्व पूरी तरह निभ जायेगा। यह विचार मेरी सलाहपर अपनाया गया। सघको जितनी सम्पत्ति दी जा रही है उसकी देखभाल करने के लिए उसके पास काफी कार्यकर्त्ता नही है। पढरपुरका यह सुझाव इसलिए विचारार्थ स्वीकार किया गया कि आपकी और स्वामीकी उसमे रुचि है और आप दोनोका दातासे सम्बन्ध हे और मै मानता हूँ कि अस्पृश्यता तथा अन्य विषयोमे उसके विचार काफी प्रगतिशील और उदार है तथा वह अस्पृश्यताके विरुद्ध सघके आन्दोलनका पूरा समर्थन करता है। आशा है, बूवाकी दृष्टिसे इतना सन्तोष जनक है और यह सब बता देनेसे बात काफी स्पष्ट हो जाती है। अगर और कुछ स्पष्ट करना जरूरी हो तो लिखने मे सकोच न करे। श्री कावडे दो दिन यहाँ रहे थे और उन्हीसे मालूम हुआ कि अक्तूबरके पहले हफ्तेमे बूवाके वर्धाके आसपास कही रहने की आशा है। अगर ऐसा हो तो आप उससे कहे कि वह कुछ दिन मेरे साथ गुजारे ताकि मै व्यक्तिगत स्तरपर उसे जान सकू और पढरपुरकी धर्मशालाकी व्यवस्था-के सम्बन्धमे उसकी इच्छा समझ सकू। स्वामी और कावडेसे मेरी जो बातचीत हुई उसकी दृष्टिसे मै यह सलाह दूगा कि न्यासका दस्तावेज तैयार करते हुए आपको न्यासियोको रेहन, हस्तान्तरण आदिका पूरा अधिकार देना चाहिए। हाँ, इस बातका ध्यान तो रखना ही होगा कि उसका उपयोग केवल हरिजनोके लाभके लिए ही किया जाये। मैने स्वामीको समझा दिया है कि मै न्यासियोको यह अधिकार सौपा जाना दस्तावेजका महत्त्वपूर्ण अश क्यो मानता हूँ।

हृदयसे आपका,

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

६३३ पत्र वालजी गो० देसाईको

२४ सितम्बर, १९३५

चि० वालजी,

बहुत ज्यादा काम होनेके कारण मै तुम्हे नही लिख सका। मुशीकी रचना न आकर्षक है और न अश्लील। उनके द्वारा ब्रह्मचयका मजाक उडाने मे मुझे कोई बुराई नही लगी। प्रस्तावना लिखने के पहले मै लगभग पूरी कृति पढ गया था। मुझे उनका प्रयास अच्छा लगा था। बात यह है कि मुशीको मै व्यक्तिगत रूपसे जानने लगा हूँ इसलिए मै उनका पक्षपात करने लगा हूँ। उनमे त्यागकी शक्ति है। वे मुझे सच्चे व्यक्ति लगते है। किन्तु उसका यह अथ नही कि मुझे उनकी सभी बाते पसन्द आती है। लेकिन हमे सभी लोगोको अहिसक अर्थात् उदार दृष्टिसे देखना चाहिए, यहाँतक कि सबको उनकी सीमाके अनुसार आकना चाहिए। इतनेमे तुम्हे सभी प्रश्नोके उत्तर मिल गये न? तुम्हारा लेख मिल गया है। आशा है, तुम सब आनन्दपूवक होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४७४) से, सौजन्य वा० गो० देसाई

६३४. सन्देश : जन्म-दिवसपर[1]

[२४ सितम्बर, १९३५ या उसके पश्चात्][2]

अगर हम पूरा वष सोकर गँवा दे तो कुछ समयके लिए इस तरह जोश-जनून दिखाने से क्या फायदा? अब तो प्रत्येक मजदूरको आठ घटेतक एक विशेष मापदण्डके

१ और २ महादेव देसाई के "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। इस पत्र में महादेव देसाई ने सूचित किया है कि "कुछ वर्ष पूर्व जब गाधीजी को मालूम हुआ कि उनका ज म दिन सार्वजनिक रूप से मनाया जाता है" तब उन्होंने कहा कि 'यह दिन दरिद्रनारायण के हित सूत कातकर मनाया जाये।' तब से इस दिन किसी न किसी प्रकार का खादी कार्य किया जाता रहा है। इस वष उनके हिन्दू [विक्रम] सवत्‌वाले जन्म दिन और ईस्वी सन्‌वाले ज म दिन मे नौ दिनो का अ तर था। लोगों ने उस दिन अपना सारा समय अतिरिक्त कताई करने या खादी बेचने अथवा खादीके लिए च दा इकट्ठा करने में लगाया। चूँकि २४ तारीख को (अर्थात् हि दू सन् के अनुसार उनके ज म-दिवस को) हरिजन दिवस भी पडा, इसलिए भारत के कई स्थानोपर हरिजनों की विशेष सेवा करने की कोशिश की गई। लेकिन गाधीजी इतने से ही स तुष्ट होनेवाले न थे। "

अनुसार काम करने के लिए एक न्यूनतम मजदूरी सुलभ कराने का निश्चित आदश हमारे सामने है। इसलिए हममे से कुछ लोगोको अकेले-अकेले अथवा कईको साथ मिलकर प्रतिदिन आठ घटे कातने का प्रयत्न कग्ना चाहिए, ओर साथ ही प्रत्येक व्यक्ति और प्रतिदिनकी कताईका नियमित हिसाब रखना चाहिए, ताकि उसके आधार पर एक मानक ओसत कताईका अनुमान लगाया जा सके। मेरे दीर्घायु होनेकी आपकी कामनाके पीछे जो गहरी भावना है, उसे मै समझता हूँ। लेकिन आप तो भली-भाँति जानते है कि मनुष्य चाहे जितना प्रयत्न करे, सिरजनहारने मेरी जितनी आयु निश्चित कर रखी होगी, उसमे एक क्षण भी नही जुड सकता। तथापि, जबतक मास है, हम एक-दूसरेके कल्याण और दीर्घायुके लिए प्रभुसे प्राथना करते रहेगे औग अन्य प्रकारसे भी तदर्थ प्रयत्नशील रहेगे।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १२-१०-१९३५

६३५ पत्र भुजगीलाल छायाको

मगनवाडी, वर्धा
२५ सितम्बर, १९३५

चि० भुजगीलाल,

तुम्हारे पत्रका उत्तर विलम्बसे दे रहा हूँ। हरिलालसे मिलने का प्रयत्न कग्ना ही नही चाहिए। अपने भविष्यका निर्णय तुम्हे स्वय ही करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २६०५) से।

६३६ पत्र छगनलाल जोशीको

२५ सितम्बर, १९३५

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। बलवन्तराय द्वारा दिखाई गई उपेक्षाकी बात पढकर भी मेरा दुख हलका नही होता। यदि तुमने उसे मेरा पहला पत्र पढवाया हो तो उससे वैसा कहना या लिखकर सूचित करना। भगियोके मकान विलम्बके बावजूद सन्तोष-जनक ढगसे पूरे हो गये, यही बधाईकी बात है।

क्या तुम्हे भावनगरमे दक्षिणामूर्त्ति की मार्फत ऐसा कोई व्यक्ति नही मिल सकता जो भगियोको ऋणसे मुक्ति दिलाने का काम हाथमे ले सके? वालजी का [भतीजा] रसिक शामलदास कॉलेजमे पढता है। कॉलेजके विद्यार्थी अध्ययन करते हुए मौन

भावसे समाज-सेवा करते दिखाई देते हैं। जरा रसिकको लुभाकर तो देखो! यदि वह इस काममें हाथ डाले तो शायद अपने साथी मित्रोंको भी आकर्षित कर सके।

पन्द्रह मन हड्डियोंसे एक टोकरा खाद भी नहीं निकली, इसका मतलब यह हुआ कि उन्हें आवश्यकतासे अधिक जलाया गया था। हड्डियाँ सिर्फ 'चार'[1] की जानी चाहिए, अर्थात् उन्हें इतना ही जलाना चाहिए कि वे काली पड़ जायें। कोयला बनाते समय लकड़ियोंको जितना जलाया जाता है उसकी अपेक्षा हड्डियोंको कम जलाना चाहिए। ऐसा करने से हड्डियोंका वजन मुश्किल से ही कम होता है। मैंने स्वयं खाद बनाकर देखी है। इस प्रयोगका प्रदर्शन मगनवाड़ीमें किया गया था। और अब नालवाड़ीमें समय-समय पर ऐसा किया जाता है। ईंधनके लिए काटकर निकाली हुई बाड़की सूखी टहनियों-जैसी चीजोंका प्रयोग किया जाता है। लकड़ी इस्तेमाल नहीं करनी चाहिए, और रहठा (अरहर आदिका जलावन) तो इस्तेमाल किया ही नहीं जा सकता। घासके तिनकोंकी बजाय अधिक टिकनेवाला इंधन काममें लाया जाता है, ताकि पूरी तरह जल जानेके बावजूद वह हड्डियोंको न जला सके। यह याद रखना चाहिए कि हमें हड्डियोंका कोयला भी नहीं बनाना है। 'चार' करने का मतलब हड्डियोंको काला-भर करना है। वे धुआँ छोड़ने लगें, इससे थोड़ा ही और आगे बढ़ना है। इस प्रकार जलाई गई हड्डियोंमें से थोड़े-से नाइट्रोजनके सिवा और कुछ भी नहीं उड़ता। फास्फोरस तो बिलकुल नष्ट नहीं होता। यदि फास्फोरस निकल जाये तो हड्डियोंका सार-तत्त्व ही नष्ट हो जाता है। थोड़ी-सी हड्डियाँ इकट्ठी कर तुम्हें स्वयं दो-चार बार प्रयोग करके निपुणता प्राप्त कर लो। कहीं तुमने पन्द्रह मन हड्डियाँ एक साथ जलाने का प्रयत्न तो नहीं किया न?

हड्डियों और आटे आदिकी मिलें तो खुलती ही रहेंगी और यह भी सही है कि लोग उनपर टूट पड़ेंगे। किन्तु बड़ी संख्यामें व्यभिचारियोंके फैल जानेके बावजूद ब्रह्मचारी मेरुकी भाँति अविचल रहता है न? या इससे भी आगे बढ़कर देखें तो मृत्यु सभीके सिरपर झूल रही है किन्तु फिर भी सारी दुनिया मौतके दिनको दूर रखने का स्तुत्य प्रयत्न करती है न? इसी प्रकार यदि हम भी प्रयत्न करना अपना कर्त्तव्य समझें, फिर भले हम बार-बार असफल ही क्या न होते रहें, इसके बावजूद हम निडरता और श्रद्धापूर्वक तथा प्रफुल्लित चित्तसे अपना काम करते ही रहें। लाभांश देनेकी सामर्थ्यमें मिलोंकी सफलता निहित है, किन्तु हमारी सफलता हमारे कार्य करने में ही है। पुरुषार्थी फलकी आशा करता ही नहीं। रेलगाड़ीमें बैठकर हरिद्वार जानेवाला तनिक भी पुरुषार्थ नहीं करता। किन्तु कन्याकुमारीसे जमनोत्री तककी पद-यात्रा करनेवाले के बारेमें यह कहा जा सकता है कि वह कुछ पुरुषार्थ करता है। मैंने यहाँ 'कुछ' विशेषणका प्रयोग किया है क्योंकि जमनोत्री पंचेन्द्रियगोचर है। ग्रामोद्योग-सम्बन्धी हमारा पुरुषार्थ भी इसी प्रकारका है। सच्चा पुरुषार्थ तो अगोचर वस्तुके बारेमें ही हो सकता है। विमानोंका प्रचलन होनेपर भी पैरोंकी आवश्यकता बनी ही रहेगी। इसी प्रकार असंख्य मिलें हो जानेके बावजूद ग्रामोद्योगोंकी उपयोगिता

१ झुलसाना, मूल में अंग्रेजी शब्द का प्रयोग किया गया है।

बनी ही रहेगी। ओर जैसे विमानोकी सख्या बढ जानेपर शरीरसे काम न लेना मूर्खता होगी उसी प्रकार मिलोके बढ जानेपर ग्रामोद्योगोको छोड देनेमे भी मूखता होगी। हम देशको इस मूर्खतासे बचाने के लिए प्रयत्न कर रहे है। इसमे हारके लिए कोई स्थान है ही नही।

समढियाला गावके किसानोकी स्थितिके विवरणसे यह ज्ञात होता हे कि मैने जो गावोकी सफाईको पहला स्थान दिया हे वह उचित ही हे। मनुष्यकी शिक्षाके इस प्रथम अगको भी लोग भूल बैठे है, इसका कारण यह है कि उच्च वर्गोंने निम्न वर्गोकी उपेक्षा करके घोर पाप किया है।

यदि धीरू तोतारामजी के पास किसान बनने या उनकी सेवा करने के शुभ उद्देश्यसे गया हो तो उसे, तुम्हे और रमाको धन्यवाद। हरिलालको तो मै अब भूल गया हूँ।

के[1] चरित्रके सम्बन्धमे अपनी जाच-पडतालके बारेमे तो मै लिख ही चुका हूँ। उनका पत्र मुझे तो बहुत ही निर्मल जान पडा। ऐसा लगता है कि वे राजकोटमे बहुत-सी सस्थाओसे सम्बद्ध है। उन्होने अपने पत्रमे यह सुझाव दिया है कि उसमे जिन तथ्योका उल्लेख किया गया है यदि मै चाहूँ तो उस सम्बन्धमे और अधिक जाँच-पडताल कर सकता हूँ। और इस सम्बन्धमे नारणदासके मनमे कोई सन्देह नही है। भाई जेठालालने मेरे सामने कोई खास सबूत पेश नही किया है, इसलिए मैने आगे किसी तरहकी जाँच-पडताल नही की। किन्तु यदि तुम मेरे सामने कोई खास सबूत पेश करो तो मै आगे जाँच-पडताल करने को तैयार हूँ। क्योकि वह द्वार अभी खुला हुआ है। लेकिन मै स्वय तटस्थ हूँ। न्यायाधीशके सामने पक्ष-विपक्षमे ज्यो-ज्या प्रमाण इकट्ठे होते जाते है त्यो-त्यो उसका निणय बदलता जाता है, वही स्थिति मेरी है। नारणदासका पत्र मैने जेठालाल जोशीको भेजा हे। किन्तु उसने उक्त पत्रकी प्राप्ति स्वीकृति तक नही भेजी। यह तुम उसे याद दिलाना और यदि उसे मेरा पत्र न मिला हो तो मुझे लिखना। मैने नारणदासके पत्रकी नकलतक नही रखी। मेरा पत्र किस दिन डाकमे डाला गया था उसकी तारीख मेरे रजिस्टरमे मिल सकती है। जेठालाल तुम्हारे साथ उसी मकानमे रहता है। इसलिए यदि तुम इस मामलेमे पडना चाहो तो अवश्य पडना। नारणदासके पत्रमे तुमने देखा होगा कि वह किसी भी दोषको स्वीकार नही करता। इतना याद रखना चाहिए कि हमे [2] के चरित्रकी अथवा वह पूरी तरह खादी पहनता है या नही, सिर्फ इसी बातकी जाँच-पडताल नही करनी है। इसमे तो नारणदासका विचार दोष ही हो तो हो। इस सम्बन्धमे मै अभी किसी निर्णयपर नही पहुँच सका हूँ। किन्तु खास शिकायत तो पाठशालाके पूरे प्रबन्ध ओर शिक्षकके रूपमे नारणदासकी योग्यताके बारेमे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३४) से।

१ और २ साधन-सूत्रमें नाम छोड दिये गये हैं।

६३७ पत्र : नारणदास गाधीको

२५ सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

भाई जमनादासको लिखा पत्र इसके साथ हे । कुसुमको भी लिख रहा हूँ। तुम्हारी झोली अच्छी भरी जा रही है। अमतुस्सलामकी प्रेरणासे यहाँ भी काम चल रहा है। एक चरखा प्रतिदिन सोलह घटे २ तारीख तक चलता रहेगा । कल तो अनायास ही २४ घटे चला । कान्ति रात होते ही कातने बैठा और ४ ४५ तक कातता ही रहा। फिर प्राथनाके लिए आया। क्योकि अठारहो अध्याय तो उसे और महादेवको ही कण्ठस्थ है । कन्हैया तो ऐसे कामोमे जी-जानसे जुट ही जाता है। नवीन भी इसमे जुट गया है । ऐसा लगता हे कि उन सबको यह अच्छा लगता है। क्या मैथ्यू इस काममे भाग लेता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४८६ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

६३८ पत्र क० मा० मुशीको

२५ सितम्बर, १९३५

भाई मुशी,

तुम दोनोकी शुभकामनाओको अन्य अनेक शुभकामनाओमे जोड देता हूँ। किन्तु होगा तो वही न जो भगवान चाहेगा । भाग्यके लिखे को कौन मिथ्या कर सकता है? क्या तुमने इस बातका विचार किया कि मै साहित्य परिषद्‌मे कैसा लगूंगा? ऐसे ही किसी अवसरपर वर्षो पहले जब मेरा नाम सुझाया गया था तो स्वर्गीय रमणभाईने कहा था कि "इन्हे तो मैट्रिकके विद्यार्थीके बराबर भी गुजराती नही आती।" उस समय यह टिप्पणी सुनकर उनके इस कथनका मैने पूरी तरहसे समथन किया था। तबतक मेरा युग तो शुरू हो ही चुका था अत जिन लोगोने रमणभाईकी यह खरी टिप्पणी सुनी उन्हे दु ख हुआ था। किन्तु मैने इस टिप्पणीमे शुद्ध हेतु और न्यायबुद्धि ही देखी थी। हम लोगोकी प्रीति अन्धी होती है। वे ऐसा मानते

है कि यदि कोई व्यक्ति किसी चीजमे कुशल हो तो उसे सभी चीजोमे कुशल होना चाहिए। परिणाम यह होता है कि यदि उसकी समझ अपक्व हो तो उस बेचारेकी मुसीबत ही हो जाये। १९१५-१६ मे की गई रमणभाईकी उक्त टीका आज भी अक्षरश सही है। अत आगामी परिषद्के लिए जबसे मेरे नामका सुझाव दिया गया है तभीसे मैं भयसे सिहर रहा हूँ। क्या तुम यह नही मानते कि परिषद्को गुजरातकी एकता और सस्कृतिका प्रतीक बनाने की आकाक्षा करके तुम उसके काय-क्षेत्रको सीमाहीन बना रहे हो? और मेरे सभापति बन जानेसे उक्त आशा फलीभूत होनेकी सम्भावना मुझे तो बिलकुल नजर नही आती। मेरी मानसिक स्थिति हूबहू यही है। यह सब जान लेनेके बावजूद यदि सभीकी यह इच्छा हो कि मुझे ही सभापति होना चाहिए और यदि परिषद्की बैठक अगले वष होनेवाली हो तो उस समय मुझे पुनर्विचार करने का मोका देना।[1] तुम स्वागत-समितिके वकील बनकर मेरे पास आये हो किन्तु अब मेरी तरफसे वकालत करना और स्वागत-समितिको लिख देना कि मेरी दलीलको तुम तो समझ गये हो और यह स्वीकार करते हो कि परिषद्के सभापतित्वसे मुझे मुक्त रखा जाना चाहिए।

'हस'की सलाहकार-समितिके बारेमे मै तो समझता था कि जो-कुछ मुझे कहना था वह मै कह चुका हूँ।[2] किन्तु महादेवने अभी-अभी तुम्हारा सँदेसा मुझे दिया। मै देखता हूँ कि तुमने पन्द्रह भाषाएँ गिनाई है, जिनमे से तीनको तुमने भी अस्वीकार कर दिया है, अत बारह बची। बारह भाषाओके लिए अधिकसे-अधिक बीस नामोकी मर्यादा निश्चित कर उनमे से तुम्हे जो नाम ठीक लगे उन्हे चुन लो। मुझे चुननेमे दिक्कत होगी, क्योकि मै सबको पहचानता नही। मुझे जो कहना था वह सख्याके बारेमे ही था, और यदि सख्याके बारेमे तुम्हे मेरा तर्क उचित लगता हो तो उतने नामोका चुनाव तुम्हे ही करना चाहिए। तुम जो चुनाव करोगे वह मुझे स्वीकार होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५९२) से, सौजन्य क० मा० मुशी

१ गांधीजी ने इसके बारहवें अधिवेशन का सभापतित्व किया था जो ३१ १० से २ ११-१९३६ तक अहमदाबाद में हुआ था, उनके अध्यक्षीय और समापन भाषणो के लिए देखिए खण्ड ६३।

२ देखिए "पत्र क० मा० मुशी को", ८ ७ १९३५।

६३९ पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

मगनवाडी, वर्धा
२६ सितम्बर, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। इस तरह हिम्मत हारने से थोडे काम चलनेवाला है। पत्रके द्वारा मै ज्यादा नही समझा सकता। परीक्षितलाल वहा पहुँच जाये तब कुछ समय निकालकर आ जाना।

यह सच बात है कि लडकियोको हम उतना नही दे सकते जितना कि देना चाहिए। किन्तु यह भी सच है कि ऐसा काम करनेवाली स्त्री कार्यकर्त्रियाँ भी हमारे पास नही है। भगवान् कठिनाइयाँ इसलिए पैदा करता है कि हम उन्हे जीत सके, न कि उनसे घबराकर भाग खडे हो।

भगवानजी को छुट्टी देकर ठीक किया। पुरातन चाहे तो भले ही गाँवमें जाये। तुम जो सुधार करना चाहते हो उन्हे और उनके अतिरिक्त जिन्हे हम सोच सकते हो, ऐसे सब सुधारोको हम अवश्य कार्यान्वित करे। सिफ इतना याद रखे कि जो-कुछ हमने शुरू किया है उसमे जबतक कोई नैतिक बुराई नजर न आये तबतक हम उसे बन्द नही कर सकते। तुम यहाँ आओ इस बीच इस बारेमे सोच-विचार कर लेना। जो छोटी लडकिया तुम्हे परेशान करती है क्या अनसूयाबहन उन्हे अपनी निगरानीमे रख सकती है? यदि अनसूयाबहनको जगहकी तगी हो तो क्या वह अपना बालमन्दिर हरिजन आश्रममें ले जा सकती है?

चमडे और दुग्धालयका काम तो तुम वहाँ बैठे हुए भी कर सकते हो। जमीन आदि की जो सुविधा तुम्हे वहाँ है वह अन्यत्र कहाँ मिल सकेगी? वालुजकर यहाँ अपना काम जिस तत्परता और चतुराईसे कर रहा है उससे मुझे आशा बँधती है कि वह थोडे समयमे विभिन्न स्थानोपर चर्मालय चलाने मे समर्थ हो जायेगा। नासिकमे ऐसा ही चर्मालय आरम्भ करने की बात उसने स्वीकार कर भी ली है। वहाँ इमारत भी बननी शुरू हो गई है और इमारत पूरी होते ही वहा तुरन्त काम शुरू हो जायेगा। जब तुम यहा आओगे तो तुम्हे यह भी देखने को मिलेगा। इस काममें कही कोई नुकसान न हो, इसका निश्चय उसने अभीसे कर लिया है और इस सम्बन्धमे विभिन्न योजनाओपर विचार किया जा रहा है। मुझे लगता है कि आर्थिक दृष्टिसे यहाँका काम सतीशबाबूवाले कामकी अपेक्षा अधिक सफल होगा। सतीशबाबूवाले काममे अबतक काफी पैसा फँस चुका है। आय तो जब होगी तब होगी। वालुजकरके काममे पैसा बहुत-कम लगाया गया है, और तब भी चमडा पकाया जाने लगा है, कामके लिए काफी मोची है और सीखनेवाले भी तैयार हो रहे है।

यह याद रखना कि जन-सेवकको सन्तुलित रूपसे चारो गुण प्रदर्शित करने चाहिए — अर्थात्, ब्राह्मणका ज्ञान, क्षत्रियका अपलायनम्, वैश्यका विशुद्ध प्रबन्ध और शूद्रका अश्रान्त शारीरिक श्रम। हम सबमे क्षात्र-वृत्तिकी अत्यधिक कमी है। हमारे मनमे तुरन्त कायरता आ जाती है। हम अकेले खडे होते ही थरथराने लगते है। कठिनाई-रूपी बाघको देखते ही, हम चाहे अकेले हो या बहुत-से, भागने लगते है। इनमे से कोई आरोप अकेले तुम अपनेपर मत ले लेना। मै जो-कुछ अपने चारो ओर और स्वय अपने मे भी देखता हूँ, उसीकी ओर इशारा कर रहा हूँ। किन्तु मै भागकर आखिर कहाँ जाऊँगा? अत मेरी स्थिति उस वणिककी-सी है जो घोडेपर बँधा हुआ था। यदि तुमने यह कहानी न सुनी हो तो कभी मुझसे पूछ लेना। मै यह कहानी रसपूर्वक कह सुनाऊँगा और यदि तुम जल्दी नही आ सके तो पत्रमे लिख भेजूगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८९)से।

६४०. पत्र लीलावती आसरको

२७ सितम्बर, १९३५

बीसवें पाठमें से आपके आनेके पहले मैंने अपना पाठ लिख लिया होगा।[1]

"आई शेल हेव रिटन माई लेसन व्हेन यू विल कम" ('व्हेन यू कम' ज्यादा अच्छा है)। दूसरे वाक्यमे "द ओल्ड वुमन विल हेव फिनिश्ड ग्राइडिग बाजरा बिफोर द गर्ल्स विल रीच होम।" ('रीच होम' ज्यादा अच्छा है)।

भविष्यमे होनेवाली दो क्रियाओमे से जो पहले पूरी होनेवाली हो उसमे पूर्ण भविष्यके रूपका प्रयोग किया जाता है। अब २०वा पाठ करना। पाठमालाका पहला भाग पूरा हो जानेपर सोचूगा कि क्या किया जाना चाहिए।

अब भविष्यमे पेंसिलका इस्तेमाल नही करूँगा।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४)से। सी० डब्ल्यू० १०१०६ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

१ लीलावती आसर ने गाधीजी से बीसवें पाठ के कुछ वाक्यों का अनुवाद कर देने का अनुरोध किया था क्योंकि पूर्ण भविष्य उनकी समझ में नही आया था।

२ लीलावती आसर ने गाधीजी को सूचित किया था कि पेंसिल से किये गये सुधार स्पष्ट नही होते।

६४१ पत्र रसिक देसाईको

मगनवाडी, वर्धा
२७ सितम्बर, १९३५

चि० रसिक,

तेरा पत्र मैंने सँभालकर तो नहीं रखा किन्तु उसकी भाषा इतनी ज्यादा खराब थी कि उसका अर्थ समझने के लिए उक्त पत्र मुझे दो-तीन बार पढना पडा। यह स्वाभाविक है कि तुम दोनो जनोका यह तात्पर्य न रहा हो किन्तु उसका अर्थ तो यही था कि तुम्हारा पैसा निश्चित रूपसे सहायता-कायमे खर्च करने के लिए ही है, किन्तु मुझे उसका विवरण भेजना चाहिए। और उस विवरणमें यह दिखाना चाहिए कि पैसा इन-इन व्यक्तियोको दिया गया है। यदि कान्तिने तुझे यह लिखा हो कि मुझे मिलनेवाले कोषका उपयोग नही होता तो यह सही नही हे। यो कहा जा सकता है कि मेरे पास कुछ कोषोका पैसा पडा हुआ है जिसका अभीतक उपयोग नही हुआ है किन्तु कान्तिने वही लिखा हो जैसा तू मानता है तो क्वेटा सहायता-कोषके लिए पैसा तुझे भेजना ही नही चाहिए था। और यदि तूने अपना कर्त्तव्य समझकर मुझे पैसा भेजा था तो कान्तिके शब्दोको उद्धृत करते हुए यह लिखना चाहिए था कि तेरे पैसोका तुरन्त उपयोग होना चाहिए और ये पैसे मेरे पास पडे नही रहने चाहिए।

आशा है, अग्रेजी भाषामे लिखने का दोष तो अब तू और भी स्पष्ट देख सकेगा। आश्चर्यकी बात तो यह हे कि इतने बरस मेरे साथ रहनेपर भी तू यह नही समझ सका और न इस बातको स्वीकार कर सका कि अग्रेजी भाषाका चाहे कितना भी अच्छा ज्ञान क्यो न हो किन्तु लिखने-बोलने मे उसका उपयोग बहुत आवश्यक होने पर ही किया जा सकता है। तेरे पत्रमे अविनय तो कही नही थी इसलिए माफी माँगने की जरूरत नही है। किन्तु आश्रममे तूने जो-कुछ सीखा है यदि वह सब गँवा बैठेगा तो अवश्य माफी मागनी होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६२२) से। सी० डब्ल्यू० ४३५४ से भी

६४२ पत्र : रावजीभाई एन० पटेलको

२७ सितम्बर, १९३५

चि० रावजीभाई,

पिछली बार तुमने जो थोडा-सा घी भेजा था वह भी बहुत ही खराब निकला था। उसे फिरसे तपाना पडा था[1]। स्वामीने तो चखते ही कहा था कि यह घी आपसे कैसे खाया जायेगा? मालगाडीसे भेजा जाये तो भी घी अच्छा होना चाहिए और यदि अच्छी तरह पैक किया गया होगा तो चूनेका कोई डर नही रहेगा। यदि ऐसा अच्छा घी न मिल सके तो भेजना बन्द कर देना चाहिए। जो लोग घी तैयार करते है उनके यहाँ हमारे किसी आदमीको जाकर उन्हे घी बनाना सिखाना चाहिए और जो अच्छा पका हुआ घी हो वही साफ डिब्बोमे पैक करवाना चाहिए। घी को तपाने के लिए भी कलाकी पूरी जरूरत होती है। इस बार तो जो भेजा सो भेजा। उसे जाँचकर देखूँगा और तुम्हे सूचित करूँगा।

'चार सौ तार' के स्थानपर 'चार सौ गज' पढना।' वहाँकी दर तुम स्वय ही निश्चित कर सकते हो जिससे कत्तिनको कमसे-कम डेढ पैसा प्रति घटा मिले। प्रतिगज या तार की दर हर प्रान्तमे अलग-अलग हो सकती है किन्तु हर प्रान्तमे युक्ताहारके खच-लायक मजदूरी अवश्य मिलनी चाहिए।

डाहीबहनकी आँखोका इलाज आनन्दमे ही हो सका और वह अच्छी हो गई यह एक शुभ समाचार है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९००७)से।

१ देखिए "पत्र रावजीभाई एन० पटेलको", २४-८-१९३५।

६४३ पत्र मथुरादास त्रिकमजीको

२७ सितम्बर, १९३५

[1]के प्रश्नोके[2] तेरे उत्तर बिलकुल ठीक है। ऐसे प्रश्न तो जब चाहे तब पूछे जा सकते है। और जब कोई जिम्मेदार आदमी पूछे तो उत्तर देना ही पडता है। ऐसे प्रश्नोके बारेमे समयका बन्धन लागू नही होता। सामान्य व्यक्तियोकी स्मरण-शक्ति सदा कमजोर होती है। किन्तु जनताका सेवक धीरज नही छोड सकता। उन्हे उत्तर देनेको सदा ही तैयार रहना चाहिए। अत मैने तेरा उत्तर अपने नामसे भेज दिया है।

वर्धामे तो कुछ भी नही चल रहा है। और जब वल्लभभाई यहा आये तब भी कुछ नही था। जब घनश्यामदास आये तो वल्लभभाई भी उनकी बातें सुनने चले आये। शायद यह कि इस बातचीतमे घनश्यामदासने विलायतमे जो पराक्रम किया, उसके विवरण और सामान्य गपशपके अतिरिक्त और कुछ नही था। सौभाग्य से यह सच्ची बात तो अखबारवालो की नजरमे ही नही आई, अन्यथा तरह-तरहके अनुमान लगाये जाते और उससे घनश्यामदासको परेशानी होती।

उस समय राजाजी का यहाँ होना तो एक आकस्मिक घटना थी। वे लक्ष्मीको लेकर लौट रहे थे इसलिए उन्हे यहा उतरना ही था। क्योकि घनश्यामदास आने-वाले थे इसलिए मैने उन्हे दो दिन रोक लिया। मुझे याद नही पडता कि किसीने मेरे राजनीतिमे भाग लेनेकी बात भी उठाई हो। [3] मै यह नही समझ सका कि [4]ने ऐसी बेसिर-पैरकी बात क्यो कही।

मैने पुछवाया है। तू उससे क्यो नही पूछता?

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० १५९

१, ३ व ४ यहाँ मूल में कुछ अंश छोड दिया गया है।
२ तिलक स्वराज कोष के बारे में।

६४४ पत्र . नारणदास गाधीको

२७ सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

यह पत्र तो खानापूरीके लिए है।

मैथ्यूको लिखा मेरा पत्र मिल गया होगा, यहा एक चरखा लगातार सोलह घटे चलता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७७ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

६४५ हिन्दी प्रचार-सप्ताह

ऊपर दी गई सूचनाको[1] मेरी सिफारिशकी दरकार नही। सस्था द्वारा किया गया ठोस कार्य ही उसकी अपनी सिफारिश होनी चाहिए। दक्षिण भारतके लोगोको उसे पर्याप्त वित्तीय समर्थन देकर सिद्ध करना चाहिए कि वे उसकी कितनी कद्र करते है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

६४६ 'धर्मान्तरण' के बारेमें

पिछले दिनो फेडरेशन ऑफ इण्टरनेशनल फेलोशिपके सदस्य श्री ए० ए० पॉलने मुझसे इन स्तम्भोमे अपनी 'धर्मान्तरण' विषयक स्थितिपर प्रकाश डालने को कहा था। इसपर मैंने उनसे यह कहा था कि जिन बातोका आप मुझसे उत्तर चाहते

१ यहाँ नही दी जा रही है। हरिहर शर्मा द्वारा लिखित इस सूचना में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की उत्पत्ति और प्रगति का विवरण और उसकी कार्यकारिणी परिषद् का यह निर्णय दिया गया था कि "३० सितम्बर से ६ अक्तूबर, १९३५ तक हिन्दी प्रचार सप्ताह आयोजित किया जाये। जिससे कि हिंदी का सन्देश दक्षिण भारत के घर घर में पहुँचाया जा सके और चन्दा जमा किया जा सके।" परिषद्ने "सप्ताह के दौरान सभा के यथासम्भव अधिकसे अधिक नये सदस्य बनाने" की इच्छा भी व्यक्त की थी।

हो उन्हें प्रश्नोंके रूपमें लिख भेजें। परिणामस्वरूप उन लोगोंकी मान्यताओंकी एक सूचीके साथ उनका यह पत्र आया है

आपको याद होगा कि एक महीनेसे कुछ ऊपर हुआ, मैंने आपको लिखा था कि क्या आप अपने 'धर्मान्तरण' विषयक विचारोंको एक वक्तव्यके रूपमें प्रकाशित कर देंगे। आपने मेरे पत्रके जवाबमें यह लिखा था कि अगर आप अपने विचारोंको प्रश्नों या मान्यताओंके रूपमें लिख भेजें तो मुझे ज्यादा आसानी होगी। मद्रास इंटरनेशनल फेलोशिपकी कार्यकारिणी-समितिके अनुरोधपर हमारे एक ईसाई बन्धुने हमारी मान्यताओंकी यह सूची तैयार कर दी है, और समितिने मुझसे इसे आपके पास इस अनुरोधके साथ भेज देनेके लिए कहा है कि आप 'हरिजन' में इन प्रश्नोंका उत्तर प्रकाशित करने की कृपा करेंगे। बेशक, आप यह तो देखेंगे कि ये प्रश्न ईसाई धर्मकी दृष्टिसे ही तैयार किये गये हैं, पर हमारी समितिका यह खयाल है कि ये प्रश्न प्रचारमें विश्वास रखनेवाले उन अन्य धर्मोंपर भी उतने ही लागू हो सकते हैं जो आज धर्मान्तरणके कार्यक्रममें लगे हुए हैं। तो क्या मैं यह आशा करूँ कि इन प्रश्नोंके सम्बन्धमें आप अपनी विचार-स्थिति स्पष्ट कर देंगे?

मान्यताएँ

१ धर्मान्तरणका मतलब हृदयका पापसे विमुख होकर ईश्वरमें अनुरक्त होना है। यह ईश्वरका कार्य है। पापका अर्थ है, ईश्वरसे बिलगाव।

२ ईसाई यह मानते हैं कि मानव-जातिके कल्याणार्थ ईसा पूर्णावतारके रूपमें प्रकट हुए थे। वे पापोंमें हमारा उद्धार करते हैं। पापीको वही ईश्वरकी शरणमें ले जा सकता है और इस तरह उसे वास्तवमें जीने योग्य बना सकता है।

३ ईसाई लोग, जिनके लिए ईश्वर ईसा मसीहके माध्यमसे एक जीवन्त वास्तविकता और शक्ति बन गया है, ईसाके सम्बन्धमें बोलना और पृथ्वीको वे मुक्तहस्तसे जो वस्तु देने आये थे, उसकी घोषणा करना अपना सौभाग्य और कर्त्तव्य समझते हैं।

४ यदि इस सन्देशको सुनकर किसी मनुष्यका हृदय इतना अधिक प्रभावित हो जाये कि वह अपने पापोंके लिए पश्चात्ताप करके ईसाके शिष्यके रूपमें नया जीवन बिताना चाहे, तो उसे ईसाके अनुयायियोंके सम्प्रदाय — ईसाई-धर्म संघ — में दाखिल कर लेना ईसाई उचित समझते हैं।

५ ईसाई ऐसे सभी मामलोंमें इस बातकी थाह लेनेका भरसक प्रयत्न करेगा कि उस आदमीकी श्रद्धा सच्ची है या नहीं और उससे जितना बनेगा, उसे धर्म-परिवर्तनके परिणाम समझायेगा और ऐसा करते हुए अपने कुटुम्बके प्रति उस मनुष्यका क्या कर्त्तव्य है, इसपर वह खास जोर देगा।

६ ईसाई अपनी शक्ति-भर पूरा प्रयत्न करेगा कि किसीका धर्मान्तरण करने में वह अपने मनमें स्वार्थकी भावना न आने दे और न जिसका धर्मान्तरण करे, वही भौतिक सुख-ऐश्वर्यके लालचके कारण इस तरह अपना धर्म बदले।

७ चूंकि ईसा पूर्ण जीवनका दान देनेके लिए पृथ्वीपर अवतरित हुए थे और यह इतिहास-प्रसिद्ध बात है कि ईसाई-धर्ममें आनेसे अनेकोंका जीवन ऊँचा उठ गया है, इसलिए यदि ईसाई-धर्ममें आनेसे किसीकी सामाजिक उन्नति होती है तो ईसाई-धर्मकी दीक्षा देनेवाले किसी ईसाईपर यह दोषारोपण नहीं करना चाहिए कि उसने उस आदमीको भौतिक प्रलोभन देकर ईसाई बनाया है, क्योंकि कहने की जरूरत नहीं कि ऐसे प्रलोभनका प्रयोग धर्मान्तरणके साधनके रूपमें नहीं किया जायेगा।

८ सच्ची श्रद्धासे ईसाई-धर्ममें आनेवाले के शरीर, मन और आत्माकी सार-सँभाल रखना यदि ईसाई अपना कर्त्तव्य समझता है तो वह ठीक ही करता है।

९ ईसाइयों पर यह दोष लगाना ही नहीं चाहिए कि वे रुपये-पैसेका प्रलोभन देते है। जब हिन्दुओंके समाज-दर्शनमें ही कुछ ऐसे तथ्य मौजूद है, जिनपर ईसाइयोंका कोई काबू नहीं है और जो अपने-आपमें हरिजनोंके लिए धर्मान्तरणके प्रलोभनका काम करते है तो ईसाइयों पर धर्मान्तरणके लिए भौतिक प्रलोभन देनेका आरोप नहीं लगाना चाहिए। (किन्तु इस विषयमें पाँचवीं और छठी मान्यताएँ भी देखिए।)

इन मान्यताओंकी पूर्व-पीठिका समझने के लिए पाठकोंके लिए यह जान लेना जरूरी है कि मुख्य प्रश्न मेरे और श्री ए० ए० पॉलके बीच चल रही एक चर्चाके दौरान उठा था और इस चर्चाका विषय था मुख्य रूपसे या पूर्णतः हरिजनोंसे आबाद एक गाँवके लोगोंका सामूहिक धर्मान्तरण। इस 'धर्मान्तरण' के विषयमें पाठकों को शायद किसी आगेके अंकमें ज्यादा पढ़ने को मिलेगा। अभी तो उनके लिए इतना समझ लेना ही काफी है कि इन मान्यताओंकी कसौटीपर सामूहिक धर्मान्तरणकी पद्धतिको ही परखना है।

इन मान्यताओंको मैंने कई बार पढ़ा है, और उन्हें जितना ज्यादा पढ़ता हूँ उतना ही ज्यादा महसूस करता हूँ कि ये व्यक्तिगत सम्पर्कपर ही लागू हो सकती हैं, किसी मानव-समूह पर तो कभी नहीं। अब पहली मान्यताको ही लीजिए। इसमें पापकी परिभाषा 'ईश्वरसे बिलगाव' बताई गई है। "धर्मान्तरणका मतलब हृदयका पापसे विमुख होकर ईश्वरमें अनुरक्त होना है। यह ईश्वरका कार्य है" — ऐसा कहते हैं इन मान्यताओंके लेखक। यदि धर्मान्तरण ईश्वरका कार्य है तो उसके हाथों से मनुष्यको वह कार्य क्यों ले लेना चाहिए? और ईश्वरसे कोई कार्य छीननेवाला मनुष्य कौन होता है? वह तो उसके हाथोंमें एक विनम्र साधन-मात्र हो सकता है।

इसी तरह वह यह भी तय नही कर सकता कि किसके हृदयमे क्या है। मै तो अकसर सोचा करता हूँ कि क्या हम खुद जानते है कि स्वय हमारे हृदयोमे क्या है। "आदमी, तू अपनेको पहचान" — यह वाक्य किसी आकुल हृदयमे ही अनुगुजित हुआ होगा। और जब हम स्वय अपने विषयमे इतना कम जानते है तो अपने पडोसियो या बहुत दूरके अपरिचित-अनजाने लोगोके बारेमे कितना कम जानते होगे? हो सकता है, वे अनेक बातोमे हमसे बिलकुल भिन्न हो और यह भी हो सकता है कि इनमे से कुछ बाते अत्यन्त महत्त्वपूण हो। तीसरी मान्यताका सम्बन्ध ईसाइयोके धार्मिक विश्वाससे है, जो उन्हे पीढी-दर-पीढी विरासतमें मिलता आया है। इस विश्वासमे निहित सत्यको हजारो जन्मजात ईसाइयोसे कभी भी स्वय परखकर देखने को नही कहा गया है, जो उचित ही है। मगर इस हालतमे इसे उन लोगोके सामने प्रस्तुत करना जिनका लालन-पालन एक भिन्न धमके परिवेशमे हुआ है, निश्चय ही खतरनाक बात है। अगर मै अपने अनपरखे धार्मिक विश्वासको अन्य धर्मावलम्बीके समक्ष, जिसका धर्म मेरी जानकारीकी हदतक शायद उतना सच्चा हो जितना मेरा है, प्रस्तुत करता हूँ तो यह मेरी धृष्टता ही जान पडेगी। बहुत सम्भव है कि मेरा धर्म मेरे लिए काफी अच्छा हो और उसका उसके लिए। जिस प्रकार विषुवदीय क्षेत्रमे रहनेवाले के लिए उसका छोटा-सा कच्छ बहुत ठीक होगा उसी प्रकार ठडे मुल्कमे रहनेवाले के लिए उसका मोटा ऊनी कोट बहुत उपयुक्त होगा।

पहली मान्यताकी तरह तीसरीका सम्बन्ध भी धमके निगूढ तत्त्वोसे है, जिन्हे सामान्य जन समझ नही पाते, किन्तु श्रद्धासे ग्रहण कर लेते है। जो लोग उस धर्मके परिवेशमे पीढी-दर-पीढी रहते चले आ रहे है, उनके बीच तो ये पर्याप्त उपयोगी है, किन्तु जो किसी और धर्मके परिवेशमे पले-बढे है उन्हे तो वे सवथा अटपटे ही लगेगे।

अन्य पाच मान्यताओका सम्बन्ध धर्म-प्रचारक जिनका धर्मान्तरण करना चाहता है, उनके बीच उसके आचरणसे हैं। मुझे तो इन मान्यताओको व्यवहारमे उतारना लगभग असम्भव प्रतीत होता है। जब प्रारम्भ ही गलत है तो उसके बाद जो कुछ किया जायेगा वह सब आवश्यक रूपसे गलत ही होगा। उदाहरणके लिए, कोई ईसाई अपने श्रोताओकी नवोदित श्रद्धाकी सचाईको कैसे परख सकेगा? क्या उनसे हाथ उठवाकर? या कि व्यक्तिश उससे बातचीत करके? अथवा कुछ थोडी देरकी परीक्षाके आधारपर? हम चाहे जिस कसौटीके बारेमे सोचे, वह एक न्यूनतम सीमातक भी सही परिणाम नही प्रकट कर सकेगी। मनुष्यके हृदयमें क्या है, यह तो केवल ईश्वर ही जानता है। क्या ईसाइयोको स्वय अपने शरीर, मन और आत्माके इतना अधिक शुद्ध और सक्षम होनेका पूरा भरोसा है कि "सच्ची श्रद्धासे ईसाई-धर्ममे आनेवाले के शरीर, मन और आत्माकी सार-सँभाल रखना" अपना उचित कर्त्तव्य मानने मे उनके मनमे कोई दुविधा न हो?

सबसे महत्त्वपूर्ण है अन्तिम मान्यता, जिसे पढकर स्तब्ध रह जाना पडता है। कारण, इसमे यह बात बिलकुल स्पष्ट कर दी गई है कि शेष आठोका प्रयोग

बेचारे हरिजनो पर पूरी तरहसे करना हे। लेकिन वास्तविकता यह हे कि वह पहली मान्यता ही कतिपय महानतम मनीषियो ओर तत्त्ववेत्ताओके लिए आजतक एक गुत्थी बनी हुई है। मूल पाप क्या हे, वह कोन बता सकता ह? कौन कह सकता है कि ईश्वरसे बिलगावका मतलब क्या हे? ओर ईश्वरके साथ ऐक्य प्राप्त करने का अथ क्या है? क्या ईसा मसीहके सन्देशका प्रचार करने का साहस करनेवाले सभी लोगोको पूरा भरोसा है कि वे स्वय ईश्वरसे ऐक्य प्राप्त कर चुके है? अगर उन्हे ऐसा भरोसा नही है तो इन गूढ विषयोके सम्बन्धमे हरिजनोके ज्ञानकी परीक्षा कौन करेगा?

उपयुक्त मान्यताओके प्रति तो मेरी प्रतिक्रिया यही है। आशा है, इसे पढनेवाले कोई भी ईसाई भाई इसका बुरा नही मानेगे। अगर मै इन मान्यताओके सम्बन्धमे अपनी सच्ची स्थिति न बताता तो मै अपने अनेक इसाई-मित्रोके साथ अप्रामाणिक व्यवहार करने का दोषी बनता।

अब कुछ शब्दोमे खुद अपनी निष्पक्ष राय भी बता दू। मै मानता हूँ कि धर्मान्तिरणका जो स्वीकृत अथ है उस अर्थमे मनुष्यको एक धर्मसे दूसरे धर्ममे दीक्षित किया ही नही जा सकता। यह तो बिलकुल निजी विषय है—सम्बन्धित व्यक्ति और उसके ईश्वरके बीचका विषय। अपने पडोसीके धमके प्रति मेरा बुरी नीयत रखना मुनासिब नही होगा, बल्कि मुझे उसका उतना ही आदर करना चाहिए जितना स्वय अपने धमका करता हूँ। कारण, मै मानता हूँ, मेरे लिए जितना सच्चा मेरा धर्म है, विश्वके अन्य महान् धम भी कमसे-कम अपने-अपने अनुयायियोके लिए तो उतने ही सच्चे है। मैने ससारके सभी धर्मग्रन्थ श्रद्धापूवक पढे है, इसलिए उन सबकी खूबियोको पहचानने मे मुझे कोई कठिनाई नही होती। जिस प्रकार मै खुद अपना धर्म बदलने की कल्पना नही कर सकता, उसी प्रकार किसी ईसाई या मुसलमान, अथवा पारसी या यहूदीसे अपना धर्म बदलने को कहने की कभी सोच नही सकता। मगर इससे जिस प्रकार खुद मेरे सहधर्मियोके दोषोकी ओरसे मेरी आखे बन्द नही हो जाती उसी प्रकार उन धर्मोके अनुयायियाकी त्रुटियोकी ओरसे भी मेरी आँखे बन्द नही होती। और यह देखते हुए कि अपने आचरणको अपनी श्रद्धाकी ऊँचाईतक ले जानेमे मेरी पूरी सामर्थ्यकी कसौटी हो रही हे, दूसरे धर्मावलम्बियोके बीच उसका प्रचार करने की मै कल्पना ही नही कर सकता। 'दूसरोके मुसिफ न बनो, नही तो कभी खुद भी इंसाफकी तराजूपर तोले जाओगे'—यह एक ऐसा सुनहला नियम है जिसका आचरण अपने जीवनमे हर-एकको करना चाहिए। मुझे दिन-प्रतिदिन इस बातकी अधिकाधिक प्रतीति होती जा रही है कि बडी-बडी ओर समृद्ध ईसाई धम-प्रचारक सस्थाएँ भारतकी सच्ची सेवा तो तभी कर पायेगी जब वे अपने मनको इस बातपर राजी कर ले। उन्हे अपनी प्रवृत्तिया केवल मानव-दयासे प्रेरित सेवा-कायतक ही सीमित रखनी है और उनके पीछे भारतको या कमसे-कम भारतके भोले-भाले ग्रामीण लोगोको ईसाई बना लेनेका उद्देश्य नही रखना है, क्योकि ऐसा करके तो वे उसके उस सामाजिक ढाँचेको ध्वस्त कर देगे जो अपने तमाम दोषोके

बावजूद न जाने कितने युगोसे बाहर और अन्दरसे होनेवाले प्रहारोको झेलकर भी आजतक ज्योका-त्यो खडा है। वे, यानी ईसाई धर्म-प्रचारक, और हम चाहे या न चाहे हिन्दू-धममे जो-कुछ असत्य है, उसे तो एक-न-एक दिन नष्ट होना ही है। जीवित रहने के लिए प्रत्येक जीवन्त धममे समय आनेपर अपने अन्दर नयी ताजगी और स्फूर्तिका सचार करने की शक्ति होनी चाहिए।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

६४७ सोयाबीन

कहते है, सोयाबीनमे बहुत अधिक पोषक तत्त्व होते है। इसलिए बॉम्बे प्रेसिडेन्सी बेबी एड हेल्थ वीक एसोसिएशन (बम्बई प्रान्तीय बाल एव स्वास्थ्य सप्ताह सघ) द्वारा प्रकाशित पुस्तिका सख्या ७ का निम्न अश[1] उद्धृत कर रहा हूँ, ताकि आहार-सुधारक प्रयोग करके देख सके।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

६४८ आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय और कतैयोका कल्याण

खादी-प्रतिष्ठानमें आचाय प्रफुल्लचन्द्र रायकी गहरी रुचि रही है और अपनी बचतमे से वे उसे मुक्तहस्त होकर दान देते रहे है। अब उन्होने प्रतिष्ठानसे कतैयोकी मजदूरीमे वद्धि करने और उसकी मुख्य प्रवृत्ति खादीको स्वावलम्बी बनाने की योजनाकी सिफारिश करते हुए मुझे नौ तथ्यपूर्ण बाते[2] लिख भेजी है। ये बाते अपने-आपमे तो महत्त्वपूण है ही, इनसे यह भी प्रकट होता है कि खादीमे उनकी कैसी गहरी श्रद्धा बनी हुई है और इस उम्रमे भी इसमे उनकी कैसी सक्रिय रुचि है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

१ यहाँ नही दिया जा रहा है।
२ देखिए परिशिष्ट ६।

६४९ पत्र अमृतकौरको

वर्धा
२८ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

इस पत्रको बोलकर लिखाना ही ज्यादा अच्छा रहेगा। देवदासकी सेहतमे आने-वाले इन उतार-चढावोसे मै तनिक भी चिन्तित नही होता। मै जानता हूँ कि उसकी हालत वहाँ सुधारपर है। और मै यह भी जानता हूँ कि उसकी चिकित्सा अच्छेसे-अच्छे हाथोमे है। प्यारेलालका वह खबर देनेवाले ने कोई भला नही किया। सच तो यह है कि वास्तवमे मैने इतना अच्छा पहले कभी महसूस नही किया था।

तुमने पिछली बार जो सेब भेजे थे, लगभग सारे मैने ठिकाने लगा दिये थे। साथमे मै मुसम्बियाँ भी ले रहा था। इसलिए इस मामलेमे भी चिन्ताकी कोई बात नही है। फल लेनेकी जरूरत मुझे जब भी महसूस होगी, मै जरूर लूगा। हरी पत्तियाँ लेना भी मैने छोडा नही है। कुछ दिनोतक नीमकी पत्तिया लेनेकी गुजाइश ही नही रह गई थी। इसलिए उनको छोड दिया था। लेकिन उन दिनो फलो और फलोके मुरब्बोके सेवनके कारण सभी भाजियाँ छोड देनी पडी थी। पर अब मैने नीमकी पत्तिया फिर शुरू कर दी है। मै कब्जसे बचनेके लिए उबली हुई भाजीका सेवन करता रहा हूँ, पर सेब शुरू करनेपर मैने उसे बन्द कर दिया था। इसलिए तुम मेरी सेहतके बारेमें कोई चिन्ता मत करो।

अब बा के बारेमें। वह यदि वहाँ खुश न हो और यदि उसके बिना वहाँका काम चल सकता हो, तो मै समझता हूँ उसे वहा रखना ठीक नही। मुझे पूरा भरोसा है कि तुम्हारी देखभाल और परिचर्याके चलते देवदासको वहा उसकी उप-स्थितिकी जरूरत नही है। इसलिए यदि वह वर्धा आना चाहे तो तुम आने देना। वह अकेली बखूबी सफर कर सकती है। उसे सहायता उन स्टेशनोपर दरकार होती है जहाँ वह उतरती है। सो तुम कालका, अम्बाला और दिल्लीके स्टेशनोपर इसका इन्तजाम बडी आसानीसे कर सकती हो। स्टेशनपर कोई उसे मिल जाये और ठीक डिब्बेमे बैठा दे, बस।

मै तुम्हारे उस पत्रके इन्तजारमे हूँ जिसमे तुम अपना कार्यक्रम मुझे लिखोगी। यदि देवदास और कुमारप्पाके कारण तुमने अपने कार्यक्रममे कोई रद्दोबदल की तो मुझे बडा बुरा लगेगा। यदि वे तुम्हारे चले आनेके बाद वहाँ मेनरविलेमे न रह सकते हो और उनका ज्यादा लम्बे अर्सेतक ठहरना जरूरी हो तो उनको किसी और जगह या किसी दूसरे पहाडी स्थानपर चले जाना चाहिए। और मेरा अपना खयाल है कि दोनोको यदि नवम्बर नही तो कमसे-कम अक्तूबरके अन्ततक उस

स्वास्थ्यप्रद जलवायुमे रहना ही चाहिए। देवदासको तो शायद कुछ ज्यादा ही अर्से तक रहने की जरूरत पडे।

तुम्हारे सेब और पत्र अभी-अभी आये है। बा यदि अपना टिकट इस्तेमाल करने का अधिकार खो देती है, तो उसे, अर्थात् देवदासको किराया भरना चाहिए।

सस्नेह,

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५५२) से, सौजन्य अमृतकौर, जी० एन० ६३६१ से भी

६५० पत्र : छगनलाल जोशीको

२८ सितम्बर, १९३५

चि० छगनलाल,

चरखा द्वादशीके दिन लिखा तुम्हारा पत्र मिला। राष्ट्रीय शालामे चलनेवाले अखण्ड चरखा कायक्रममे तुम भाग ले रहे हो यह तो बहुत ही अच्छा लगता है। अमतुस्सलामके प्रयाससे यहाँ भी प्रतिदिन १६ घटे चरखा चल रहा है। इसमे १६ व्यक्ति एक-एक घटा देते है। चरखा प्रात ५ बजेसे रातके ९ बजेतक चलता है। लगभग ३,५०० तार सूत निकलता है। मैने इस कायक्रममें कुछ सुधारोका सुझाव दिया है और प्रतिदिन नियमपूर्वक अखण्ड चरखा चलाने के मेरे सुझावपर भी चर्चा हो रही है।

ऐसा लगता हे कि तुम मेरे उस लेखको[1] भली-भाँति नही समझे हो। मैने उक्त त्याग लोगोके दबावके कारण नही किया।

जब मोरारजी और चन्दुलाल अपनी भावनाएँ प्रकट करने यहाँ आये तो उस समय मुझपर उसका कोई असर नही हुआ और यदि हुआ भी हो तो उक्त त्याग करने लायक नही हुआ। किन्तु जब युवकको बचाने का प्रश्न मेरे सामने उठ खडा हुआ तो मेरा हृदय उसी क्षण बदल गया। दूसरोको बचाने के विचार से मैने अपने जीवनमे बहुत-कुछ किया है।

किन्तु मैने अपना यह सिद्धान्त भी नही बनाया है कि लोगोकी भावनाओके दबावको कदापि स्वीकार न किया जाये। हालाँकि यह भी सच है कि लोक-भावनाओ के वशीभूत होकर कोई काम करने के पक्षमे मै नही हूँ। मेरा नियम तो यह है जहाँ

१ देखिए "एक त्याग", २१-९-१९३५।

लोगोकी भावनाओके वशीभूत होनेसे किसी प्रकारकी अनीति या मानहानि न होती हो वहाँ परेशानी उठाकर भी लोगोकी भावनाओके अनुसार काम करना चाहिए। उदाहरणके लिए, यदि लोगोकी भावनाओका प्रश्न न हो तो मै बहुत करके सवथा नग्नावस्थामे रहूँ। मेरे अपने स्वास्थ्यके लिए लाभदायक होनेके अतिरिक्त इसमे मुझे और भी बहुत-से नतिक लाभ नजर आते है। इससे मेरी सयम-वृत्तिको अधिक पोषण मिलेगा। इसके बावजूद मै केवल लोक-भावनाओके वशीभूत होकर यह स्तुत्य कदम नही उठाता।

जीवनलालके त्यागपत्रका तो मुझे तुम्हारे पत्रसे ही पता चला। इस सम्बन्धमे तुम्हे और अधिक प्रकाश डालना चाहिए था। इस सम्बन्धमे यदि मुझे आखिरकार निर्णय देना ही पडा तो उस स्थितिमे तुम जो-कुछ लिखोगे उससे मुझे अवश्य सहायता मिल सकेगी। अब तो यह प्रश्न जब मेरे सामने आयेगा तब तुमसे यदि कुछ पूछना आवश्यक हुआ तो मै स्वय ही पूछूगा। आशा है, मेरा इससे पहलेका पत्र[1] तुम्हे मिल गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३५) से।

६५१ पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

२८ सितम्बर, १९३५

चि० प्रेमा,

आज तो बोलकर ही लिखाना पडेगा। दाया हाथ केवल सोमवारको 'हरिजन'के लिए काममे लेता हूँ। बाकी दिनोमे बाये हाथसे लिखता हूँ। ऐसा करने मे समय तो लगता है। इसके सिवा तेरे पत्रका उत्तर तुरन्त देना चाहिए। १६ तारीखके आसपास जरूर आना। थोडा-थोडा करके जितना समय तुझे चाहिए उतना दूगा। घूमते हुए समय दूँ तो ठीक होगा न? तू यहा रहने का समय तय करके न आये तो अच्छा होगा। दो दिन अधिक लगे तो भले ही लग जायें। यहाँ फैले हुए सब काम तू धीरे-धीरे देखे तब अच्छा होगा और बाते भी अलग-अलग समयमें होगी तो ज्यादा अच्छा रहेगा। मेरा सूत प्रभावतीने इकटठा कर रखा है। भेजने को भी मैंने उससे कह रखा है। तेरी प्रेरणासे हिटलरकी पुस्तक पढ रहा हूँ। लेनिनके विषय मे मैक्स्टनकी लिखी हुई पुस्तक[2] भी पढी। हिटलरके बारेमे एक और पुस्तक मँगा रखी है। तेरा कोठरीका वर्णन आकषक है। तुझसे द्वेष करने के बहुत-से कारण है। मुझे

१ देखिए "पत्र छगनलाल जोशीको", २५ ९ १९३५।

२ जेम्स मैक्स्टन की पुस्तक लेनिन, १९३२ में प्रकाशित हुई थी।

विश्वास है कि मेरे त्यागका[1] सारा हाल जब तू जानेगी तब तू भी मुझसे सहमत हो जायेगी।

जमनालालजी बहुत करके दूसरी या तीसरी तारीखको आ जायेंगे। मुझे तो ऐसा याद है कि तेरे दोनो प्रश्नोके उत्तर मै अपने पिछले पत्रमे दे चुका हूँ। लेकिन तेरे इस पत्रमे उक्त पत्रकी प्राप्तिका कोई उल्लेख नही देखता। मै दुबारा सक्षेपमे उत्तर दे रहा हूँ। कोढ आदि रोगोसे ग्रस्त लोगोको जबरन नपुसक बनाने की प्रथाको अपनाने मे बहुत-सी मुश्किले आती है। इससे अनेक प्रकारके अनथ पैदा होनेकी सम्भावना है। फिर किसी भी रोगको असाध्य मान लेना भी ठीक नही। सयमका प्रचार करके जो परिणाम निकले उतनेसे सन्तुष्ट रहना ही मुझे तो निरापद लगता है। पग-पगपर मुझे कायरताकी गन्ध आती है। कायर कतैया सूतमे पडी हुई गाठको चाकूसे सुलझायेगा। कुशल कतैया धीरज ओर कलासे गाँठ खोलेगा और सूतको अविच्छिन्न रखेगा। अहिसक मनुष्य असाध्य मानी जानेवाली व्याधिसे पीडित लोगोके लिए ऐसा ही कुछ उपाय करेगा।

विदेशोमे हमारा नियमित प्रचार-कार्य मुझे तो रेलगाडीके साथ बैलगाडीकी प्रतियोगिता-जैसा लगता है। हम यदि प्रचार-कायमे सच्ची बातपर एक हजार खर्च कर सकते हो, तो प्रतिपक्षी करोड खर्च करने की सामर्थ्य रखता है। इसलिए मेरा यह दृढ विश्वास है कि हमे अपने-आप होनेवाले प्रचार-कार्यसे सन्तोष मान लेना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७७) से। सी० डब्ल्यू० ६८१७ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

६५२. एक प्रमाणपत्र

वर्धा
३० सितम्बर, १९३५

श्री के० एस० सावन्त लगभग एक सप्ताहतक मेरे साथ रहे है। ये हरिजन है और पेशेसे मूर्त्तिकार। इन्होने बॉम्बे स्कूल ऑफ आटमे पूरी शिक्षा ली है। मै इनके इस आग्रहको टाल नही सका कि इनको मेरे कमरेमे किसी भी तरहसे मेरा बिलकुल भी ध्यान बँटाये बिना बैठकर अपने कामकी अनुमति दी जाये। यह इनकी हार्दिक इच्छा थी और इन्होने इस सुविधाका भरपूर उपयोग किया है। इनकी कलाका मूल्याकन तो विशेषज्ञ ही कर सकते है। परन्तु मैने देखा है कि श्री सावन्त विविध प्रतिभाओके धनी है। इन्होने इन दिनो मेरे साथ रहते हुए बडा अध्यवसाय

१ तात्पर्य **हरिजनबन्धु,** २२-९-१९३५ के अंकमें प्रकाशित "एक त्याग" शीर्षक लेख से है।

दिखाया और अपने काममे पूर्णत दत्तचित्त रहे। हमने इनको पूरा मिलनसार पाया है और ये आते ही हमारे साथ घुलमिल गये। ये कला-प्रेमियो और धनाढ्योकी ओरसे प्रोत्साहन पानेके लिए सुपात्र है। मै इनकी सफलताकी कामना करता हूँ।

मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २८३२) से।

६५३ पत्र अमृतकौरको

३० सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

पक्की बात है कि तुमने जो सेब भेजे है वे तुम्हारे अपने बगीचेके नही है। जानती हो, उनका रेल-भाडा कितना पडा? यह तो एक अच्छी चीजमे अति करना है। मुझे तो यहाँ बाजारमे मिलनेवाले फलोपर ही बस करने दो। यदि दवाके रूपमे उनकी जरूरत होती, तो मै तुमको और भेजने के लिए लिख देता लेकिन वैसी जरूरत नही है। मेरा खयाल है कि बीमारोके लिए मुझे एक ही फलकी जरूरत है — सतरे या मुसम्बिया। और ये लगातार मिलते रहे, इसका प्रबन्ध मैने कर लिया है। हो सकता है, यह भी मेरा खयाल ही हो, लेकिन मुझे यदि कमसे-कम दवाओपर निर्भर रहना है तो ऐसा लगता है कि मुझे शहद और सतरे लेते रहना चाहिए। और तुमको मै विश्वास दिलाता हूँ कि इन चीजोका मै लगभग जी खोल कर इस्तेमाल कर रहा हूँ। इसलिए मेरी खातिर सेब खरीदना बन्द कर दो। तुम्हारे अपने बगीचेमे अगली बार सेब आनेपर मै बडी खुशीसे अपना हिस्सा ले लूगा।

आज शाम बा के आनेकी उम्मीद कर रहा हूँ। मुझे उससे देवदास और कुमारप्पाके बारेमें सारे ताजे समाचार मिल जायेगे, हालाकि मै समझता हूँ कि तुम मुझे जितनी पूरी, विस्तृत सूचना देती रही हो, उसमे वह अधिक कुछ जानकारी जोड नही पायेगी।

कुमारप्पाके भाई, जे० एम० यहाँ आये है। वे आज शाम बम्बई जा रहे है। दोनो एक ही साचेमे ढले है — शक्ल-सूरत और जीवनके प्रति अपने उदार दृष्टि-कोण तथा देश-प्रेममे दोनो कितने समान है!

आशा है, तुम भली-चगी होगी। यह कहने का तो कोई फायदा नही कि सामर्थ्यसे अधिक श्रम मत करना। मै समझता हूँ कि तुमने अपने-आपको ऐसे किसी भी अनुरोध, परामर्श या आदेशपर भी अमल करने के सवथा अयोग्य बना लिया है।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च]

मीरा अब बिलकुल स्वस्थ हो गई है। मैंने तुमको बतलाया था या नही कि हमने कुमारप्पाके अपने कार्यालयवाले कमरेके ठीक पीछे उसके लिए एक छोटा-सा केबिन बना दिया है। कल वह उसमें चली भी गई और अब काफी खुश है।

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५५३) से, सौजन्य अमृतकौर, जी० एन० ६३६२ से भी

६५४ पत्र . मनोरजन चौधरीको

३० सितम्बर, १९३५

प्रिय मित्र,

श्री किरणप्रभादवी[1] द्वारा उगाये कपासके पौधेके सम्बन्धमे आपने जो जानकारी मुझे दी है, मै उसका उपयोग कर रहा हूँ। आप मुझे उनकी रुईका नमूना भेज दे तो अच्छा होगा। मै उसे स्वय कातूगा ओर यदि सुलभ हो तो उसके बीज भी भेज दे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

श्री मनोरजन चौधरी
बी० पी० हिन्दुनिसा
२११, बहूबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता

अग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७६९) से।

१, मनोरजन चौधरीकी पत्नी।

६५५. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

३० सितम्बर, १९३५

चि० अम्बुजम,

तुम्हारे पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा था। आखिर वह आ गया है। तुमने जो फल भेजे थे उनकी पहुँच सूचित करते हुए तुम्हें लिखा[1] तो था।

तुम्हें जल्दी शक्ति प्राप्त करनी चाहिए। तुम अपने शरीरके साथ खिलवाड़ नहीं कर सकतीं। वह ईश्वरकी सेवाके लिए सौंपी गई थाती है।

रामचन्द्रनके देहान्तका समाचार पाकर दुःख हुआ। इसका मतलब परिवारका एक सदस्य खो बैठना है। ऐसा पुराना और निष्ठावान् सेवक खो बैठने का मतलब क्या है, मैं समझता हूँ।

मीरा अब बिलकुल ठीक है। बा आज शिमलासे लौटेगी। अभी इतना ही।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजीसे : अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

६५६. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

३० सितम्बर, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

सीता दुर्घटनाग्रस्त हुई किन्तु ऐसा तो होता ही रहता है। इस कारण हमें शकुन या अपशकुनका अनुमान नहीं करना चाहिए। यदि तुम दोनोंको उसका स्कूल जाना ही ठीक लगता हो तो वैसा करना ही उचित होगा। हालाँकि मैं तो अपनी राय पर दृढ़ हूँ। तुम्हारे पास जो-कुछ है वह सब सीताको देना तुम्हारा कर्त्तव्य है। जब वह समझदार हो जायेगी तो उसमें इच्छानुसार वृद्धि कर लेगी। किन्तु तुम्हारे विचारोंके सामने मैं अपने विचारोंको निरर्थक मानता हूँ। क्योंकि आखिर उसका भविष्य तो तुम्हें ही बनाना होगा। अपनी कठिनाइयों और महत्त्वाकांक्षाओंको भी तुम्हीं अच्छी तरह समझते हो। अतः यह उचित होगा कि मेरे विचारोंको जितना महत्त्व तुम देना चाहो उतना महत्त्व देकर अपनी इच्छानुसार ही चलो।

१. देखिए "पत्र : एस० अम्बुजम्मालको", १४-८-१९३५।

बा आज साँझको शिमलासे आ रही है। देवदास ठीक होता जा रहा है। रामदास थोडा दुबला हो गया है, किन्तु बम्बई छोडना नही चाहता। हरिलाल शराबकी गगामे अपनी हड्डियोको पावन कर रहा है। फिलहाल तो नीमू और उसके बच्चे मेरे ही पास रह रहे हैं।

किशोरलाल यथारीति कभी बीमार, कभी अच्छे रहते हैं। कान्ति, कनु और नवीन यहाँ काममे और पढाई-लिखाईमें लगे रहते है।

आज तो इतनेसे ही सतोष करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८४४) से। सी० डब्ल्यू० १२५६ से भी, सौजन्य सुशीला गाधी

६५७ पत्र रतिलाल सेठको

३० सितम्बर, १९३५

भाई रतिभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे लिए नववर्ष सुखदायी हो और तुम्हारी सेवा-शक्ति बढे। तुमने अपने परिवारके समाचार देकर अच्छा किया। यदि खर्चे-भरको ईमानदारीकी कौडी मिलती रहे तो अधिक [सम्पत्ति]का लोभ क्यो किया जाये? यदि कान्तिलाल सन्तोषजनक रूपसे काम कर रहा हो तो तुम्हारी इतनी चिन्ता कम हो गई। छगनके बारेमे मैं समझता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१७५)से। सी० डब्ल्यू० ४६७१ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

६५८ पत्र: भगवानजी पु० पण्ड्याको

३० सितम्बर, १९३५

दीर्घायु होओ और सत्य तथा अहिसाका अनुसरण करते हुए सेवा करते रहो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ३१३) से, सौजन्य भगवानजी पु० पण्ड्या

६५९ पत्र : हरजीवन कोटकको

३० सितम्बर, १९३५

चि० हरजीवन,

तुम हठ कर रहे हो। जो हठपर उतर आया हो उसे कोई नही समझा सकता। तुम्हारे व्यवहारसे प्रकट होता है कि तुम नियमका पालन कर ही नही सकते। जैसा तुम चाहो वैसा हो तो हो, नही तो तुम आपा खो बैठते हो। यह मेरे साथ वर्षों रहनेका ही परिणाम है क्या? तुम्हे क्रोध है, मुझे दुःख। क्या पता, क्रोध करने मे ज्यादा दोष है या दुःख करने मे? दुःख आसक्तिकी निशानी है। आसक्ति और क्रोध रजोगुणकी निशानी है। मेरा दुःख बहुत दिनोतक नही टिकेगा। तुम्हारा क्रोध भी क्षण-भरको प्रकट होकर शमित हो जाये तो कितना अच्छा हो?

[बापूके] आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

६६० पत्र : शारदाबहन एच० कोटकको

३० सितम्बर, १९३५

चि० शारदा,

तू भी वहां[1] ठीक चल रही जान पडती है।

[बापूके] आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

१. श्रीनगर में।

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

सर्पदंशके सम्बन्धमें डॉ० सोखेकी टिप्पणियोंके अंश[1]

विषोंके प्रकार

नाग और करैतका विष मुख्यत मस्तिष्क ओर सुषुम्नापर असर करता है, जिससे मस्तिष्कमे स्थित श्वास-केन्द्र जड हो जाता है ओर मनुष्यकी मृत्यु हो जाती है।

साधारण सापका विष हृदय और रक्तपर असर करता है, और इसमे मृत्यु रक्तसचारको चालू रखनेवाले केन्द्रके जड हो जाने, अधिक और सतत रक्तस्रावके फलस्वरूप हुई थकावट, या घावके सड जाने के कारण रक्तके विषाक्त हो जाने से होती है।

विष चढने के लक्षण

नाग-विष सबसे पहला शारीरिक लक्षण यह है कि आदमी मदहोशीकी हालतमे पहुँच जाता है। बादमे शरीर पैरोकी तरफसे जड होने लगता है और यह जडता धडसे होकर ऊपर चढते हुए सिरतक पहुँच जाती है। सिर एक ओरको झुक जाता है, और पलको, होठो, जीभ तथा गलेको लकवा मार जाता है। मुँहसे लार गिरने लगती है और बोलना उत्तरोत्तर अधिकाधिक कठिन होता जाता है। बार-बार मतली और उबकाई आती है। सॉस लेना अधिकाधिक कठिन होता जाता है और अन्तमें बन्द हो जाता है। चेहरा विवर्ण और दु खार्त्त हो जाता है। निगलना असम्भव हो जाता है। हृदयपर कोई असर नही होता और सास रुक जाने के बाद भी वह धडकता रहता है। मृत्यु सामान्यत डेढ से छह घटेके अन्दर हो जाती है।

करैतका विष मृत्यु मुख्यत दम घुटने से होती है, लेकिन इसके अतिरिक्त जठर और अँतडियोकी रक्त-धमनियॉ फट जा सकती है, और कई बार बहुत तेज पेट-दर्द भी होता है।

सामान्य सॉंपोका विष रक्तका जमाव रुक जाता है और रक्त-धमनियोकी अन्दरकी परते नष्ट हो जाती है, जिससे शरीरके अनेक भागोमे अन्दर-ही-अन्दर रक्तस्राव होने लगता है। जहॉ घाव लगता है वहॉ पीडा होती है, और वह हिस्सा बहुत सूज जाता है। रक्तस्राव बहुत अधिक हो जाता है, और रक्तका रग भी बदल जाता है। शरीरपर चकत्ते उभर आते है, जिनमे रोगाणु पड जाने की सभावना रहती है। मतली और उलटी बार-बार आती है, लेकिन फालिज नही मारता।

१ देखिए पृ० ३६४-६५।

उपचार

विषैले सापके दशको देखकर स्पष्ट पहचाना जा सकता है। अगर दस मिनट के अन्दर कुछ नही होता है तो ऐसा माना जा सकता है कि साँप विषहीन था, क्योकि विषैले सॉपके दशसे बहुत जल्दी जलन होने लगती है और जहाँ वह दश लगाता है वह स्थान शीघ्र ही सूज जाता है। बीचमे खूब पसीना और उलटियाँ भी आ सकती है। कहने की जरूरत नही कि इन लक्षणोके प्रकट होनेतक उपचार हो चुकना चाहिए—खास कर एटीवीनन सीरम दिया जा चुकना चाहिए। यह सीरम दशित व्यक्तिकी स्थितिके नाजुक दौरमे पहुँचने के पहले ही दिया जा सकता है। जितनी जल्दी दिया जा सके उतना ही अच्छा रहेगा। चूकि चिकित्सा-सम्बन्धी सहायता सामान्यत तुरन्त सुलभ नही हो पाती है, इसलिए उपचार शायद निम्न क्रमसे सम्भव हो

१ **घावके स्थानको बाँधना** अगर दश हाथ-पैरमे कही लगा हो तो जहाँ लगा हो उसके ऊपर एक डोरी कसकर बॉध देनी चाहिए। बन्धन ऐसा होना चाहिए जिससे सभी स्नायु एक ही हड्डीके साथ बँध जाये, उदाहरणके लिए यदि दश उँगलीपर लगा हो तो बन्धन उँगलीके मूलपर बाधना चाहिए, और एक दूसरा बन्धन कुहनीके ऊपर भी बाँधा जा सकता है। अगर दश अगूठेमे लगा हो तो एक बन्धन अगूठेके मूलपर बॉधिए और दूसरा घुटने के ऊपर बॉधना चाहिए। बन्धन लगभग हर दस मिनट बाद ढीला कर देना चाहिए और विषको निम्न प्रकार चूसना चाहिए। ऐसा बन्धन आधे घटेसे बहुत अधिक देरतक नही बॉधे रखना चाहिए, लेकिन थोडे समयका अन्तराल दे-देकर यान्त्रिक रीतिसे विष चूसने की क्रिया चालू रखनी चाहिए।

२ **चीरा** आडा-खडा चीरा लगाकर जहा दश लगा हो उस स्थलको खोल देना चाहिए। चीरा काफी गहरा होना चाहिए, लेकिन चीरा ऐसी सावधानीसे लगाना चाहिए जिससे हड्डीसे ऊपरकी नाजुक खालको नुकसान न पहुँचे और कोई नस न कट पाये। चीरा लगाने के लिए सेफ्टी रेजरके ब्लेडका इस्तेमाल किया जा सकता है। अगर सम्भव हो तो उसे आगकी लपटपर शीघ्रतासे जीवाणुशून्य (स्टरिलाइज) कर लिया जाये।

३ **चूसना** सम्भव हो तो चूसनेवाली प्याली लगाकर अन्यथा होठोसे (जिसमे कोई खतरा नही है, यदि मुँहमे कोई जख्म न हो) विष चूसा जाये।

४ **एटीवीनन सीरमकी सुई** चिकित्सा-सम्बन्धी सहायता मिलते ही यह सुई लगवाई जा सकती है। यह सीरम कसौली का सेंट्रल रिसर्च इस्टीट्यूट बेचता है।

५ **अनुपूरक** हलके-से पोटाश परमैंगनेट (जो हलके गुलाबी रगका होता है) का पतला घोल बनाकर चीरेसे लगे घावको धोना अच्छा रहेगा। परमैंगनेटके कण सीधे घावपर न लगाये, और न कास्टिक तेजाबका इस्तेमाल करना चाहिए।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १७-८-१९३५

परिशिष्ट २

जवाहरलाल नेहरूके नाम महादेव देसाईका पत्र[1]

आनन्द भवन, इलाहाबाद
६ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

मै यह पत्र आनन्द भवनसे लिख रहा हूँ, जहाँ आपसे मिलने की आशा मे अन्य आधे दर्जन लोगोके साथ मै भी भागा-भागा आया, लेकिन उन्ही की तरह मिलने मे विफल रहा। सरूपबहनका ३ तारीखका तार, जिसमे सूचित किया गया था कि आप डच एयर मेल पकडनेवाले है, ४ तारीखको वर्धा पहुँचा। आपका भी ३ का तार उसी दिन मिला। उसी क्षण बापूने तय किया कि मै उसी शामको इलाहाबाद रवाना हो जाऊँ और चाहे जितनी थोडी देरके लिए हो, आपसे मिलने की कोशिश करूँ। सरूपबहनका वह तार जिसमे उन्होने सूचित किया था कि आप प्रस्थान कर चुके है, कल वर्धा पहुँचा, लेकिन तबतक मै इलाहाबादका आधा रास्ता तय कर चुका था। यह बहुत दुख पहुँचानेवाली निराशा थी, लेकिन मुझे यह सोचकर अतीव प्रसन्नता हुई कि आप एक दिन पहले प्रस्थान कर सके। मै आशा करता हूँ और प्रभुसे अपनी इस आशाको फलीभूत करने की प्रार्थना करता हूँ कि आप कमला बहनको पूण स्वस्थताकी अवस्थामे साथ लेकर वापस आये।

साथमे बापू और खुर्शेदके पत्र भेज रहा हूँ। प्रेमोपहारकी तरह बापूने हमारे ही यहाँका हाथका बना कागज, हाथका ही बना एक पेपर-कटर तथा एक चम्मच भेजा था। इन्हे वहाँ भेजने मे तो कोई तुक नही दिखती। आपके लौटने तक हम इससे बहुत अच्छे स्तरकी चीजे बनाने लगेगे, ऐसी हमारी आशा है। आपके वर्धा आने पर आपको उनके नमूने दिये जायेगे।

बापूके मै दो महत्त्वपूर्ण सन्देश लाया था (१) एक तो यह कि बापू चाहते है, आप अगले वर्ष काग्रेसका दायित्व सँभाले तो अच्छा हो। कायसमितिके समक्ष यह सुझाव उन्होने रखा तो उसने उसे सर्वसम्मतिसे स्वीकार कर लिया। आम तौरपर सदस्योका खयाल यह था कि इसी रास्तेसे समितिकी बहुत-सी कठिनाइयो और आजके कटु विवादोसे बचा जा सकता है, और आपकी नीति और कार्यक्रमको ईमान-दारीके साथ और बिना किसी प्रकार की विघ्न-बाधाके आजमाकर देखा जा सकता है। नया सविधान आपको अपनी मर्जीके सहयोगी चुनने का अधिकार देता है, और बादमे जो लोग बाहर चले जायेगे वे आपको यथासम्भव अपना सहयोग देगे, लेकिन

[1] देखिए पृ० ४१८।

आपके रास्तेमे बाधा बिलकुल नही डालेगे। (२) दूसरी बात यह है कि यूरोपमे भी आपको कोई भाषण या वक्तव्य नही देना चाहिए। बापूका विश्वास है कि यदि आप फरवरीतक अथवा वापस आने तकके लिए कोई भाषण आदि न देने का व्रत ले ले तो इससे आपकी और भारतकी भी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

इन दो सन्देशोके अतिरिक्त, निम्न विषयोपर आपके विचार, जो सामान्यतया बिलकुल दो-टूक और बेलाग होते है, जानने को वे बडे उत्सुक थे (१) ग्रामोद्योग सघका कार्य, जिसमे इन दिनो बापूका सारा समय खप रहा है, (२) कौसिल-प्रवेशके सम्बन्धमे बापूके विचार, (३) काग्रेसका वर्तमान सविधान। खुद बापूको पूरा यकीन है कि यह हमारी प्रगतिका बहुत प्रभावशाली साधन है, और यद्यपि ऑकडोके जोड-तोड आदिके रूपमे उसमे काफी भ्रष्टाचार है, फिर भी वह ऐसी चीज है जिसका उपयोग स्वतन्त्रता-प्राप्तिके अन्तिम और सफल प्रयासके लिए देशको तैयार करने के निमित्त किया जा सकता है, (४) न्यूनतम मजदूरीका प्रश्न तथा (५) समाजवादियोका कार्यक्रम और उनके काम करने के तरीके।

यद्यपि रचनात्मक कायक्रमकी प्रगतिकी रफ्तार धीमी है, किन्तु बापूका यह विश्वास अधिकाधिक दृढ होता जा रहा है कि इसके अतिरिक्त और किसी भी साधनसे हम अन्तिम और सफल सत्याग्रह करने की योग्यता प्राप्त नही कर सकते, क्योकि जबतक हम जनसाधारणके हृदयको नही जीतते तबतक कोई बडा काम करके नही दिखा सकते और जबतक हम जनसाधारणके बीच ऐसा गहन रचनात्मक कार्य नही करते जिससे उसकी कमाईमें बढोतरी हो सके और वह ज्यादा बेहतर जिन्दगी जी सके तबतक हम उसके हृदयको नही जीत सकते।

लगभग इतनी बाते आपतक पहुँचाने की जिम्मेदारी मुझे सौपी गई थी। हम आशा करेगे कि कमलाबहनसे मिलते ही उनकी हालतके बारेमे आप तार भेजेगे। जबतक वे ठीक न हो जाये, इसका उत्तर देने की बात मत सोचिए, और अगर आपको जल्दी लौटने की उम्मीद हो तो इसका उत्तर आप न दे तो भी कोई हर्ज नही।

ढेरसे स्नेह-सहित,

आपका,

महादेव

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपस, १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

परिशिष्ट ३

ए० डोनाल्ड मिलरका पत्र[1]

[१४ सितम्बर, १९३५ के पूर्व]

आपने २ जुलाईको श्री शार्पको जो पत्र लिखा था वह उन्होने मेरे पास भेजा है। उसमे आपने कुष्ठ-पीडित लोगो द्वारा सन्तानोत्पत्तिके बारेमे उनकी राय माँगी है, और आपने नैनी, इलाहाबाद आश्रमका उल्लेख किया, जहा श्रीमती हिगिन-बॉटमसे आपने यह जानकारी प्राप्त की कि कुष्ठरोगी सन्तानोत्पत्ति कर सकते है।

इस बातको आपसे ज्यादा अच्छी तरह और कौन जानता है कि इस चीजसे कितने सारे सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक तथा चिकित्सा-सम्बन्धी प्रश्न जुडे हुए है। आदर्श स्थिति और व्यवहारगत स्थिति दोनो हमेशा समान ही नही होती। हमारा जो आदर्श है उसके अनुरूप बनी दुनियामे नही, बल्कि वह वास्तवमे जैसी भी है, उसी दुनियामे हमे यथासम्भव अच्छीसे-अच्छी स्थितिको प्राप्त करना है।

इलाहाबादके मिशनके तत्त्वावधानमे आयोजित एक सम्मेलनमे, जिसमे चिकित्सा-शास्त्रके विशेषज्ञ और बडे-बडे कुष्ठ आश्रमोके प्रबन्धक आये हुए थे, चिकित्सा-समिति ने निम्नलिखित निष्कर्ष पेश किये थे, जिनका अनुमोदन सम्मेलनने किया था

(क) यह सिद्ध नही हो पाया है कि यह रोग जन्मत होता है, लेकिन इसकी छूत लगने की सबसे अधिक सम्भावना बचपनमे ही रहती है। ऐसा पाया गया है कि जिन बच्चोको अपने कुष्ठरोगी माता-पिताओसे जन्मके समय ही अलग कर दिया गया और उसके बाद उन्हे छूतकी सम्भावनासे बचाकर रखा गया, उन्हे यह रोग नही हुआ। इन बातोसे प्रकट होता है कि जिन कुष्ठ पीडित माता-पिताओका रोग सक्रामक किस्मका है उनसे उनके शिशुओ ओर बच्चोको यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र अलग कर देना नितान्त वाछनीय है।

(ख) कुष्ठरोगियोमे, विशेष रूपसे कुष्ठ-पीडित महिलाओमे, प्रजनन-क्षमता काफी होती है और कुष्ठरोगियोके बच्चोको इस रोगकी छूत लगने की अत्यधिक सम्भावना रहती है, और इस रोगके कायम रहने मे इन दोनो बातोका बहुत बडा योग है, इसलिए जहाँतक सम्भव हो, ऐसे स्त्री-पुरुषका एक दूसरेसे अलग रहना वाछनीय है। जहाँ यह सम्भव न हो वहाँ विवाहित कुष्ठरोगियोको इसी शतपर साथ रहने देना चाहिए कि उनके जो सन्तान होगी उसे यथासम्भव छोटीसे-छोटी आयुमे उनसे अलग कर दिया जायेगा। कुशल उपचारसे जिनके रोगमुक्त होने की अच्छी सम्भावना हो, ऐसे माता-पिताको एक-दूसरेसे अलग रखना विशेष रूपसे वाछनीय है। इसका

१ देखिए पृ० ४५१। यहाँ कुछ अंश ही दिये जा रहे है।

एक कारण तो यह है कि इस तरह स्वस्थ पति या पत्नीको उपचाराधीन जीवन-साथीके रोगकी छूत लगने का खतरा भी मिट जायेगा और दूसरा यह कि गर्भावस्थामे अक्सर यह रोग तेजीसे उभरता है।

इधर हालकी जाच-पडतालसे इस धारणाको और भी बल मिला है कि कुष्ठ-पीडित माता तथा उसके बच्चे दोनोके हकमे यह जरूरी है कि ऐसे माता-पिता द्वारा सन्तानोत्पत्तिको प्रोत्साहन नही मिलना चाहिए। इस अवस्थामे माताके शरीर पर बहुत जोर पडता है जिससे रोगको बढने का मौका मिलता है, और उधर यदि माताका रोग सक्रामक स्थितिमे रहता है तो जबतक बच्चा उसके साथ है तबतक उसे छूत लगने का गम्भीर खतरा बराबर बना रहता है।

जब हम आध्यात्मिक पक्षके विषयमे सोचते है तो ऐसे धरातलपर आ जाते है जहाँ सहज ही आचरणका कोई कठोर सिद्धान्त निर्धारित नही किया जा सकता। फिर भी, मै समझता हूँ कि जो समस्या उठाई गई है उसका सबसे श्रेष्ठ समाधान आध्यात्मिक क्षेत्रमे ही मिल सकता है। सुन्दरतर भविष्यके निर्माणके लिए किसी-न-किसी प्रकारका त्याग सबसे अपेक्षित है, व्यक्तिगत त्याग तो सामूहिक कल्याणका असली मर्म है। और कुष्ठ-पीडित स्त्री या पुरुषसे, जो ईश्वरकी कृपापर भरोसा रखता है और उसकी इच्छा जानने को उत्सुक रहता है, जिस त्यागकी अपेक्षा की जाती है वह यह है कि व्यक्तिगत सुख-सन्तुष्टिके पीछे पडकर वह भावी प्राणियोको आपद्-ग्रस्त न बनाये।

गरज यह कि हम इस निष्कर्षपर——और मुझे लगता है कि निश्चित रूपसे इस निष्कर्षपर——पहुँचते है कि आदर्शगत दृष्टिसे देखे तो आश्रमोमे रहनेवाले साधनहीन कुष्ठ-रोगी सहवास करे, जिससे सन्तानोत्पत्ति हो——यह बात न तो चिकित्सा शास्त्रकी दृष्टिसे और न सामाजिक अथवा आध्यात्मिक नजरियेसे अच्छी है।

लेकिन मै तो कह ही चुका हूँ कि "आदर्श स्थिति और व्यवहारगत स्थिति दोनो हमेशा समान ही नही होती", और इसलिए सचाई यह है कि यद्यपि कुष्ठ-सेवा मिशनकी यह निश्चित नीति है कि जो लोग स्वेच्छासे हमारे यहा आते है, अथवा जो हमारे मेहमान है उन्हे विवाहित दम्पतिवाली आवास-सुविधा न दी जाये, फिर भी कभी-कभी परिस्थितिवश इस नीतिका पूरा पालन असम्भव होता है।

आपने अपने पत्रमे इलाहाबाद आश्रमका उल्लेख किया है। यहाँ जो लोग पहलेसे ही दाम्पत्योपयोगी आवासोमे रहते आये है वे तो अब भी रह रहे है, लेकिन प्रमाणोसे यह साबित होता है कि ऐसे आवास अधिकतम भलाईके हकमे नही है, और इसलिए नये दाखिल होनेवालो के आवासकी व्यवस्था या तो सिफ स्त्रियोके रहने के हलकेमे या केवल पुरुषोके रहने के हलकेमे की जाती है।

जब रोगी कानूनी विवशताके कारण किसी आश्रममे आये तब बात कुछ और बदल जायेगी——कमसे-कम सामाजिक दृष्टिसे। तब वह समाज द्वारा दूसरोके जीवन का नियमन करने की जिम्मेदारी निश्चित तौरपर अपने सिर लिये जाने का मामला हो जाता है। लेकिन भारतमे इस मिशनके जितने आश्रम है, उन सबमे रोगी स्वेच्छा

से आते है और हमारे कैदी नही, बल्कि अतिथि होते है। और जिस प्रकार आपके पुराने साबरमती आश्रममे अधिकसे-अधिक कल्याण साधने की दृष्टिसे मेहमानोके लिए कुछ नियम बने हुए थे जिनका पालन उन्हे करना पडता था, उसी प्रकार अपने आश्रमोमे ऐसी नीतिका पालन करके जिससे, जहातक सम्भव हो, कुष्ठरोगियोको सन्तानोत्पत्तिके लिए प्रोत्सोहन न मिले, हम अधिकसे-अधिक कल्याण साधने के लिए प्रयत्नशील है।

क्या अब हमारी कठिनाइयॉ ओर हमारे आदर्श आपके सामने स्पष्ट है ? मै तो आशा करता हूँ कि वे स्पष्ट हो गये होगे।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १४-९-१९३५

परिशिष्ट ४

जवाहरलाल नेहरूके नाम महादेव देसाईका पत्र[1]

वर्धा
२५ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलालजी,

बापूजी आज बहुत व्यस्त है, इसलिए लिख नही सकते। उनके बदले मै लिख रहा हूँ। कुछ दिनोसे आपका कोई समाचार नही मिला है, और हम मानते है कि किसी प्रकारका समाचार न आने का मतलब यह है कि सब कुशल है। प्रगति तो दुखद रीतिसे धीमी होगी ही, लेकिन हमे विश्वास है कि आपकी उपस्थिति अचूक दवाका काम करेगी। और इन्दुको इससे कितनी अधिक राहत मिली होगी, क्योकि आपके बिना वह इस बोझको शायद ही बर्दाश्त कर पाती!

आपसे मिलने के लिए जल्दीमे मेरा इलाहाबाद पहुँचना बेकार नही गया, क्योकि मै साथमे आपकी वह महत्त्वपूण पाण्डुलिपि लेकर आया। उसके तीन भाग (लगभग २७५ पृष्ठतक) मै रास्तेमे ही पढ गया और उनको पढकर मै आनन्द-विह्वल हो उठा। यहॉ काममे लगे रहने के कारण आगे पढने का अवसर नही मिल पाया है, लेकिन खुर्शेद उसे पूरा पढ गई है और अब बापूने आरम्भ किया है। पहला भाग उन्होने आज समाप्त कर दिया और जल्दी ही पूरी चीज पढ जाने की आशा रखते है। कहने की जरूरत नही कि वे यह सारा अध्ययन उसी स्थानमे करते है जिसे 'लाइब्रेरी' (यानी शौचालय) कहते है। आपको यह दिलचस्प बात बताऊँ कि शौचालयके शेल्फपर आपकी पाण्डुलिपिके साथ सिफ एक और पुस्तक हिटलरकी

१ देखिए पृ० ४७३।

जीवनी रखी रहती है। हिटलरकी आत्मकथा ('माई स्ट्रगल') उन्होंने कुछ दिन पूर्व खत्म की।

सस्नेह,
महादेव

[पुनश्च]

साथमें कांग्रेसका संविधान भेज रहा हूँ।

[अंग्रेजीसे]

गांधी नेहरू पेपर्स, १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

परिशिष्ट ५

जवाहरलाल नेहरूके नाम महादेव देसाईका पत्र[1]

वर्धा
२९ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलालजी,

लगता है, बापू आजकी हवाई डाकके लिए भी पत्र नहीं लिख पायेंगे। बहुत-से मुलाकाती आते रहे हैं और अभी, जब डाक भेज दी जानी चाहिए थी, वे कातते हुए एक मुलाकातीसे बातें कर रहे हैं। लेकिन क्षण-भरको बातोंका सिलसिला भंग करके उन्होंने मुझसे कहा कि २० सितम्बरको लिखे आपके उस महत्त्वपूर्ण पत्रकी पहुँच आपको सूचित कर दूं जो यहाँ कल मिला। उन्होंने आपको यह बताने को कहा है कि आप अपना निर्णय[2] सूचित कर पाये हैं, इसकी उन्हें कितनी अधिक खुशी है। इससे अच्छा पत्र और नहीं हो सकता था, और आपने जिस तरह साफ-सीधे शब्दोंमें लिखा है वैसा न लिखा होता तो यह आपके योग्य न होता। बापू आपकी आत्मकथा नियमित रूपसे पढ़ रहे हैं और आज उन्होंने दूसरा भाग समाप्त कर लिया है। आठ भाग हैं, लेकिन उपाध्यायने मुझे सात ही दिये हैं। इलाहाबादसे मैं रवाना हुआ, उस समय तक आठवाँ तैयार नहीं हुआ था। १० तारीखको अ० भा० च० संघकी बैठकमें भाग लेने कृपलानी यहाँ आ रहे हैं। वे आठवाँ भाग साथ लायेंगे।

सस्नेह,
महादेव

१ देखिए पृ० ४७३।
२ कांग्रेसके अध्यक्ष-पदको स्वीकार करते हुए।

[पुनश्च]

दूसरा पत्र भी, जिसमे कमलाके स्वास्थ्यका पूरा हाल बताया गया है, कल मिल गया। कैसी सलीब आप ढो रहे है! ईश्वर आपको शक्ति दे।

महादेव

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपस, १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

परिशिष्ट ६

कत्तिनोका कल्याण[1]

बगालमे खादी-कायको समर्पित खादी प्रतिष्ठानको स्वेच्छा-कताई कार्यके साथ-साथ कत्तिनोको (क्रमश अधिकाधिक मजदूरीपर) काम देना और उनके सूतकी बिक्रीकी व्यवस्था करना क्यो जारी रखना चाहिए, उसके कुछ कारण इस प्रकार है

१ खादीका प्रयोजन कभी भी मशीन (अर्थात् मिल) के बने कपडोसे होड करने का नही है।

२ खादी 'वापस गॉवोकी ओर चलो' के नारेका प्रतीक है।

३ ग्राम-जीवनका मतलब सादगी और 'सभ्य तथा परिष्कृत' शहरी जीवन-पद्धतिसे, अर्थात् सिनेमा, रेस, जूआ तथा ऐसी ही अन्य निरर्थक चीजे जिसके प्रतीक है उससे, अछूतापन।

४ मिलोमे मजदूरोको ज्यादा अच्छी मजदूरी मिलती है, लेकिन वास्तवमे वे मनुष्य नही रह जाते, बल्कि यत्र-जीव और गुलाम बन जाते है।

५ चरखा चलाकर दो रोटी-भरके लायक कमानेवाली स्त्रियॉ (सामान्यत विधवाएँ) इसके सहारे स्वावलम्बी बनती है और अपने पुरुष सगे-सम्बन्धियोपर, जो वास्तवमे निठल्ले बैठे रहते है तथा अपनी आश्रित स्त्रियोसे गुलामोकी तरह काम करवाते है, निभर रहने से उन्हे मुक्ति मिल जाती है। इस तरह इन स्त्रियोको वास्तवमे खून-पसीना एक करनेवाले श्रमसे छुटकारा मिल जाता है।

६ चरखा चलानेवाली स्त्रियॉ यह काम कभी भी पूरे समय नही करती है या करती भी है तो ऐसी स्त्रियोकी सख्या बहुत विरल है। घरके कामकाजसे फुरसत मिलने पर अपने खाली समयमे ही वे कातती है। इसलिए उनके खाली समयके इस श्रमकी तुलना मिलोमे खून-पसीना एक करके काम करनेवाले लोगोकी मेहनतसे करना गलत होगा।

१ देखिए पृ० ४९५।

७ बगालके अधिकाश हिस्सोमे एक ही फसल (आमन धान) होती है। इससे किसानोको सालमे मुश्किलसे तीन महीने काम मिल पाता है। जहाँ दूसरी फसल पैदा की जाती है और फलत जहाँ दो महीने या इससे कुछ अधिक समयके लिए और काम मिल जाता है वहा भी वे सात महीनेतक बेकार बैठे रहते है। इसलिए अगर लोगोको चरखा चलाने के लिए राजी किया जा सके तो उन्हे एक और धन्धा, यानी समय पडने पर काम देनेवाला एक और सहारा मिल जायेगा। इस प्रकार सूखे या बाढ (जिसका प्रकोप कमसे-कम बगालपर बहुधा होता है) के कारण फसलके नष्ट हो जाने पर चरखा चलाना 'वरदान' साबित हो सकता है। फिर लोगोको भूखो नही मरना पडेगा, या राहत-केन्द्रो, भाग्यवश कभी-कभी मिल जाने-वाले मुठ्ठी-भर अनाज या दो रोटियोपर निर्भर नही रहना पडेगा।

८ इससे सिफ कत्तिनोको ही लाभ नही होगा, उनके साथ-साथ बुनकरोकी एक विशाल सख्याको भी रोजगार मिलेगा। सच तो यह है कि कामके हर दिन — खासकर गाँवके हाटवाले दिन — खादी-केन्द्रोके बुनकर धोतियाँ तथा कुरते आदिके कपडे लेकर आते है और बडी उत्सुकतासे पैसेकी राह देखते है। इसके अलावा, सहायक कारीगरोको भी लाभ पहुँचेगा — जैसे चरखा बनानेवाले बढई आदि को।

९ अतराल और तलोराके केन्द्रो (जिनका निरीक्षण आपने १९२५ मे किया था) म एक अद्वितीय प्रयोग चल रहा है। बारह वर्षके कठिन परिश्रम, खर्च और फिर बहुत-से स्वयसेवकोके त्यागके बाद अब यहाँ यज्ञ-भावसे कातनेवालो का एक समूह तैयार हो गया है। अपना कता सूत लेकर आनेवाली बहने उसके बदले साडियाँ, अँगिया और बच्चोके लिए चादर पाने की राह किस आतुरतासे देखती है, यह सरस और हषजनक दृश्य मैने अपनी आँखो देखा है।

प्र० च० राय

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

सामग्रीके साधन-सूत्र

गाधी स्मारक सग्रहालय, नई दिल्ली गाधी साहित्य और सम्बन्धित कागजातका केन्द्रीय सग्रहालय तथा पुस्तकालय, देखिए खण्ड १, पृ० ३५५।

नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

साबरमती सग्रहालय, अहमदाबाद पुस्तकालय तथा आलेख सग्रहालय, जहाँ गाधीजी से सम्बन्धित कागजात सुरक्षित हैं, देखिए खण्ड १, पृ० ३५५।

'अमतबाजार पत्रिका' कलकत्तासे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'गुजराती' बम्बईसे प्रकाशित गुजराती साप्ताहिक।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' बम्बईसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'लीडर' इलाहाबादसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'वीणा' (श्रद्धाजलि अक), अप्रैल-मई, १९६९ इन्दौरसे प्रकाशित मासिक पत्रिका।

'सर्चलाइट' (अग्रेजी) पटनासे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हरिजन' आर० वी० शास्त्री द्वारा सपादित अग्रेजी साप्ताहिक, जो ११ फरवरी, १९३३ को सवप्रथम पूनासे प्रकाशित हुआ था।

'हरिजनबन्धु' चन्द्रशकर शुक्ल द्वारा सपादित गुजराती साप्ताहिक जो १२ मार्च, १९३३ को सर्वप्रथम पूनासे प्रकाशित हुआ था।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' नई दिल्लीसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हिन्दू' मद्राससे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'गाधी एण्ड द अमेरिकन सीन' (अग्रेजी) जी० शेषाचारी, नचिकेता पब्लिकेशन्स लि०, बम्बई, १९६९।

'गुजरात एण्ड इट्स लिटरेचर' (अग्रेजी) के० एम० मुशी, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, १९६७।

'पाँचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद' द० बा० कालेलकर द्वारा सपादित, जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट, वर्धा, १९५३।

'बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने' (गुजराती) मणिबहेन पटेल द्वारा सपादित, नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुना पत्रो – ४ मणिबहेन पटेलने' (गुजराती) द० बा० कालेलकर द्वारा सपादित, नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुना पत्रो – ६ ग० स्व० गगाबहेनने' (गुजराती) द० बा० कालेलकर द्वारा सपादित, नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदाबाद, १९६०।

'बापुनी प्रसादी' (गुजराती) मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदाबाद, १९४८।

'बापूकी छायामे मेरे जीवनके सोलह वर्ष' हीरालाल शर्मा, ईश्वरशरण आश्रम, इलाहाबाद, १९५७।

'बापूज लेटस टु मीरा' (अग्रेजी) मीराबहन द्वारा सपादित, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९४९।

'महात्मा गाधी और जबलपुर' नगरनिगम, जबलपुर, १९६९।

'मोटाना मान' (गुजराती) ईश्वरभाई देसाई, हकूमत देसाई एव कल्याणजी मेहता द्वारा सपादित, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, १९७२।

प्यारेलाल पेपस प्यारेलाल, नई दिल्ली।

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी स्वराज्य आश्रम, बारडोलीमे सुरक्षित।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(२५ अप्रैल से ३० सितम्बर, १९३५ तक)

२५ अप्रैल गांधीजी वर्धामें थे।

२६ अप्रैल क्षयसे ग्रस्त एफ० मेरी बारको पत्र लिखकर उनके इलाजका खर्च उठाने की सूचना दी।

२७ अप्रैलके पूर्व जे० पी० भणसालीसे बातचीत की।

११ मईके पूर्व एक मिशनरी नर्सको मुलाकात दी।

२१ मई या उसके पूर्व वर्धासे ट्रेन द्वारा बम्बई रवाना।
रेलगाड़ीमें ही पियरे सेरेसोलसे बातचीत।

२२ मई बम्बईमें 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के प्रतिनिधिसे भेंट, प्रार्थना-सभामें भाषण।

२३ मई या उसके पश्चात् बोरसद गाँवमें कई सभाओंमें भाषण दिये।

२५ मई हरिजन कूप-कोषके निमित्त एक लाख रुपया इकट्ठा करने के लिए 'हरिजन' में अपील जारी की।

३१ मई नडियाद विट्ठल कन्या विद्यालय और फूलचन्द शाहकी स्मृतिमें बने बाल-मन्दिरके उद्घाटनके अवसरोंपर भाषण दिये।
अहमदाबादकी साबरमती जेलमें अब्दुल गफ्फार खाँ से मुलाकात की।
समाचार पत्रोंको मुलाकात दी। ज्योति संघके सदस्योंके प्रश्नोंके उत्तर दिये।

१ जून बोरसदमें आर्य कन्या विद्यालय देखने गये।

३ जून वर्धा पहुँचे।

६ जून क्वेटाके भूकम्पके बारेमें वक्तव्य जारी किया।

१३ जून कांग्रेस अध्यक्ष राजेन्द्रप्रसादसे क्वेटाकी स्थितिके बारेमें चर्चा की।

१५ जूनके पूर्व एक हरिजन-सेवकसे बातचीत की।

१६ जूनके पूर्व चित्तरंजन दास स्मारक-भवनके उद्घाटनपर सन्देश भेजा।

१८ जून बम्बईके खादी-भण्डारके एजेन्ट और कर्मचारियोंके झगड़ेका पंच फैसला सुनाया।

१९-२१ जून अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके अधिवेशनमें भाग लिया।

२२ जून क्वेटासे आये हुए एक मुलाकातीसे प्रार्थनाकी उपयोगितापर चर्चा की।
एक बातचीतमें बताया कि ग्रामोद्योग आन्दोलनका उद्देश्य मशीनको उखाड़ फेंकना नहीं है।

१३ जुलाई 'हरिजन' में प्रकाशित "मानक मजदूरीकी आवश्यकता" शीर्षक लेखमें आठ घंटेके कठिन परिश्रमके लिए आठ आने मजदूरी देने की सलाह दी।

२० जुलाईके पूर्व वर्धा आश्रममे, केशूके कलकत्ता जाते समय किये गये आयोजनके अवसरपर बोले।

२० जुलाई 'हरिजन' मे प्रकाशित "अहिंसाका अर्थ" शीर्षक लेखमे तर्क देकर अपनी इस मान्यताका समर्थन किया कि "जहाँ शरीर होम देनेकी तत्परता न हो, वहाँ आत्मरक्षा करते हुए जूझना ही एकमात्र सम्मानजनक मार्ग है।"

१ अगस्त या उसके पूर्व लीग कौंसिलको भेजे गये एक लेखमे उन्होने कहा "मैं शान्तिके लिए प्रार्थना और उसकी आशा ही कर सकता हूँ।"
इतालवी-अबीसीनियाई संकटपर एक वक्तव्य देकर इस अफवाहका खण्डन किया कि अबीसीनियामे काम करनेके लिए रेडक्रास संगठनके निमित्त भारतीयोका एक स्वयंसेवक दल तैयार करनेके लिए उन्होने चन्दा देनेकी अपील जारी की है।

१ अगस्त एम० आर० मसानीका पासपोर्ट जब्त किये जानेके संबंधमे कॉमन्स सभामे लॉर्ड जेटलैंडसे लॉर्ड फैरिंगडन द्वारा पूछे गये प्रश्नके उत्तरका एक प्रेस वक्तव्य जारी करके खण्डन किया।

५ अगस्त 'हंस' को दिये गये एक सन्देशमे कहा कि "यदि हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषा बनना है तो ऐसे मासिककी अत्यावश्यकता है।"

१० अगस्तके पूर्व खादी-उत्पादनके पुनर्गठनके सम्बन्धमे कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योसे चर्चा की।

२२-२३ अगस्त अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके प्रबन्ध-मण्डलकी बैठकमे "निर्वाह-योग्य न्यूनतम मजदूरी" के सम्बन्धमे चर्चा की।

३० अगस्त वाइसरायको तार देकर कमला नेहरूके चिन्ताजनक स्वास्थ्यके कारण जवाहरलाल नेहरूकी बिना शर्त रिहाईका अनुरोध किया।

२ सितम्बर अलमोडा जेलसे जवाहरलाल नेहरू बिना शर्त रिहा किये गये।

१४ सितम्बरके पूर्व खादी-कार्यकर्त्ताओसे "निर्वाह-योग्य मजदूरीके सम्बन्धमे" बातचीत।

२४ सितम्बर या उसके पश्चात् गांधीजी का ६७ वाँ जन्म-दिन मनाये जानेके सम्बन्धमे चर्चा।

२८ सितम्बर धर्मान्तरणके बारेमे 'हरिजन' मे लिखे लेखमे फेडरेशन ऑफ इण्टरनेशनल फेलोशिपके सदस्य श्री ए० ए० पॉल की सामूहिक धर्मान्तरण-सम्बन्धी मान्यताओका विवेचन किया।

शीर्षक-सांकेतिका

विविध

साकेतिका

अ

ग

घ

च

छ

ज

ट

ठ

ड

त

थ

द

ध

न

प

फ

ब

भ

म

य

र

ल

स

ह